॥ अर्हम् ॥

श्रीशांतिनाथाय नमः ॥

बृहत्पर्युषणा निर्णय

पूर्वार्द्ध. प्रथम–दूसरा खंड.

कर्त्ता

श्रीमान् परमपूज्य उपाध्यायजी श्री १००८ श्री सु
सागरजी महाराजके लघु शिष्य मुनि-
श्रीमणिसागरजी महाराज.

प्रसिद्ध कर्त्ता

कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, बीकानेर, जयपुर, जेसलमेर,
मुंबई, धूलिया, चालीसगांव वगैरह शहरोंके
जैनसंघकी द्रव्य साह्यतासे

श्रीमत् अभयदेवसूरि ग्रंथमालाके कार्यवाहक कलकत्ता. तथा
श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञानभंडारके कार्यवाहक, शा. पानाचंद भगुभाई, सुरत.

मूलग्रंथ बी. एल. प्रेस, कलकत्तामें छपा.
भूमिकादि, धि आत्माराम प्रिंटिंग ॲन्ड पब्लिशिंग कंपनी, श्री. वि.
ग. जावडेकर द्वारा आत्माराम छापखाना धूलियामें छपा.

श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४४७. विक्रम संवत् १९७८.
वैशाख शुदी ३ मंगल वार.

प्रथम बार ३१५० कॉपी.] भेट [मूल्य सत्य ग्रहण.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्रीचंद्रप्रभस्वामिने नमः ॥

याद रखने योग्य उपयोगी सूचना.

१-आत्मार्थी है! भव्यजीवों खरतरगच्छ, तपगच्छ, कमलागच्छ, अंचलगच्छ, पायचंदगच्छादिकके आग्रहकीबातेंकरनेमें आत्मकल्याण मुक्तिनहींहै, किंतु जिनाज्ञानुसारभावसे शुद्धधर्मक्रियाकरनेमें मुक्तिहै.इसलिये अपने २ गच्छकी परंपरा रूढीको छोडकर जिनाज्ञानुसार सत्यबातकी परीक्षाकरके उसमुजबधर्मकार्यकरो उससे श्रेयहो.

२- श्रीसर्वज्ञ भगवान्के कहे हुए अतीवगहनाशयवाले, अपेक्षा सहित, अनंतार्थयुक्त जैनशास्त्र अविसंवादीहैं, मगर "कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ घिप्पंति निरवसेसाइं। उक्कमकम जुत्ताइं,कारण वसओ निरुत्ताइं ॥ १ ॥" श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रकी वृत्तिके इस महावाक्य मुजब-सामान्य, विशेष, ओपमा, वर्णनक, उत्सर्ग, अपवाद, विधि, भय, निश्चय, व्यवहारादिक संबंधी शब्दार्थ, भावार्थ, लक्ष्यार्थ, वाच्यार्थ, संबंधार्थादि भेदोंवाले गंभीरार्थके भावार्थ संबंधी शास्त्रवाक्योंको समझे बिनाही अभी अविसंवादी सर्वज्ञशासनमें कितने गच्छोंके भेदोंका आग्रह बढगयाहै. देखो- "गच्छना भेद बहु नयण निहालतां, तत्त्वनीवातकरतां न लाजे। उदरभरणादि निजकाज करतांथकां, मोहनडिया कलिकालराजे ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मनी शुद्धि कहो किमरहे, किमरहे शुद्ध श्रद्धान आणो। शुद्धश्रद्धाबिना सर्वकरियाकरी, छारपर निपणो तेह जाणो ॥ २ ॥ पापनहीं कोई उत्सूत्रभाषण जिस्युं, धर्मनहीं कोई जगसूत्र सरिखो। सूत्र अनुसारें जे भविक किरिया करें, तेहनो शुद्ध चारित्र परिखो ॥ ३ ॥ इत्यादि बातोंको विचार कर आत्मार्थियोंको अपना असत्य आग्रहको छोडकर अपनी आत्माको हितकारी, सुखकारी होवे, वैसा सत्य ग्रहण करना चाहिये.

३- कितनेक मुनिमहाशय वर्षोवर्ष पर्युषणापर्वके व्याख्यानमें अधिकमहीनेके व श्रीवीरप्रभुके छ कल्याणकोंके निषेध संबंधी चर्चा उठाते हैं, उससे भोले लोगोंको अनेक तरहकी शंकायें उत्पन्न होती हैं, और कितनेही महाशयतो इन बातोंमें तत्त्वदृष्टिसे सत्यअसत्यका निर्णय किये बिनाही अपने पक्षको सत्य मान्य करके दूसरोंको झूठे ठहरानेका एकांत आग्रह करते हैं। शास्त्रोंमें एकांत आग्रहको और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शंकारूपी शल्यको एकप्रकारसे मिथ्यात्वही कहाहै, उसका निवारण करनेकेलिये और शास्त्रानुसार सत्य बातोंका निर्णय बतलानेकेलिये वर्तमानिक सर्व शंकाओंका समाधान सहित मैंने यह ग्रंथ बनायाहै, मगर मैरी तरफसे किसी तरहका नवीन विवाद शुरूकरनेकेलिये नहीं बनाया. इसलिये इस ग्रंथके बनानेमें सुबोधिका, किरणावली वांचनेवाले कितनेक विद्वान् मुनि महाशयही कारणभूत हैं, पाठक गण इसमें मैरेको किसी तरहका दोषी न समझें, मैंने तो उन्होंकी शंकाओंका समाधान लिखा है.

४- शुद्धश्रद्धाबिना द्रव्यसे व्यवहारमें चाहे जितनेधर्मकार्य करें, तो भी आत्म कल्याण करने वाले नहीं होते, और आग्रही लोगोंकी अभी अलग २ प्ररूपणा होनेसे भोले जीवोंको जिनाज्ञानुसार सत्य बातकी प्राप्ति होना बहुत मुश्किल होरहा है. और अविसंवादी रूप आगम-पंचांगी-प्रकरण-चरित्रादि सर्वशास्त्रोंको मानने वालोंमें पर्युषणा-छ कल्याणक-सामायिकादि विषयों संबंधी शास्त्रकारमहाराजोंके अभिप्रायको न समझनेसे व्यर्थही विसंवाद होरहाहै, उसकानिर्णय करनेके लिये और भव्यजीवोंको शुद्धश्रद्धारूप सम्यक्त्व रत्नकी प्राप्तिके उपकारकेलिये मैंने यह ग्रंथ बनायाहै। मगर किसी गच्छके साधु-श्रावकोंको किसी अन्य गच्छमें ले जानेके लिये नहीं बनाया. किसी गच्छमें रहो, परंतु आपसमें राग द्वेष निंदा ईर्षा अंगतविरोधादिक बखेडे छोडकर शुद्ध श्रद्धापूर्वक आत्मिक कल्याण करनेके लियेही इस ग्रंथकी रचना करनेमें आयी है, इसलिये पक्षपात छोडकर इस ग्रंथको वारंवार पूरेपूरा वांच, विचार, मननकर सत्य समझकरके शांति पूर्वक शुद्ध श्रद्धासहित अपना आत्मसाधन करके आत्मार्थी पाठकगण मैरे परिश्रमको सफल करेंगे.

५-जिनाज्ञानुसार शुद्धश्रद्धापूर्वकभावसे धर्मकार्य करनेका योग महान्पुण्योदयहोवे तब प्राप्तहोताहै, इसलिये उसमें लोकपूजा बहुत समुदायवगैरकी प्रवृत्तिमुजब करना योग्यनहींहै. इसकालमें आत्मार्थीअल्पही होते हैं. कदाचित् गच्छ-गुरुपरंपरा-बहुत समुदाय वगैरह बाह्यकारणोंसे आज्ञामुजब क्रियाकरनेका योग न बनसके तोभी शुद्धश्रद्धा-प्ररूपणा तो आज्ञामुजब सत्यबातोंकीही करना योग्यहै, उससे भवांतरमें सुलभबोधिकी प्राप्ति हो सकेगी. मगर गुरु-गच्छ-लोकसमुदायके आग्रहसे जिनाज्ञा बाहिर क्रिया करतेहुए आज्ञामुजब सत्यबातोंका निषेध करनेसे भवांतरमे दुर्लभबोधिकी प्राप्ति होतीहै,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसलिये भवाभिरुयोंको गुरु गच्छ व लोक समुदायादिकका पक्षरखने-के बदले जमालिके शिष्योंकी तरह जिनाज्ञाका पक्ष रखनाही योग्यहै, अर्थात्-जैसे-अपने गुरु जमालिके उत्सूत्रप्ररूपणाके पक्षकोछोडकर बहुत भव्यजीव भगवान्की आज्ञामुजब माननेलगेथे, तैसेही-अभीभी आत्मार्थियोंको करना योग्य है. यही सम्यक्त्वका मुख्य लक्षण है.

६-मैंरे बनाये इस एक ग्रंथके सामने अनेकग्रंथ लिखेजानेकी मैरेको कोई परवाह नहींहै, देखो-जैसे एकवीतराग सर्वज्ञभगवान्के परोपकारी जैन आगमोंके विरुद्ध हजारों मतवादी अनेक तरहसे अपना २ कथन करते हैं. मगर तत्त्व दृष्टिसे आत्महितकारी सत्य बात क्या है, यही देखा जाता है. तैसेही-मैंरे बनाये इस ग्रंथपरभी १-२ नहीं; परंतु १०-२० लेखकभी अपना २ विचार सुखसे लिखें. मगर जिनाज्ञानुसार सत्य बात क्या है. यही देखना है. झूठे मतवादियोंका यही स्वभाव है, कि- हजारों सत्य बातें छोड देतें हैं, और अतिशयोक्तिमें या क्रोधमें आकर क्लेश बढानेलगजातेहैं, मगर अपनी बात को छोडते नहीं. वैसे इस ग्रंथपर न होना चाहिये यही प्रार्थनाहै.

७- इस ग्रंथमें पर्युषणा संबंधी अधिक महीनेके ३० दिनोंकी गिनतीसहित आषाढचौमासीसे ५० वें दिन दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्वका आराधन करनेका तथा श्रावण भाद्रपद आसोज अधिक महीनें होंवे तब पर्युषणाके पीछे कार्तिकतक१०० दिन ठहरनेका खरतर गच्छ, तपगच्छ, अंचलगच्छ, पायचंदगच्छादि सर्व गच्छोंके पूर्वाचार्योंके वचनानुसार और निशीथचूर्णि, बृहत्कल्पचूर्णि, पर्युषणाकल्पचूर्णि, स्थानांग सूत्रवृत्ति वगैरह अनेक शास्त्रपाठानुसार अच्छी तरहसे साबित करके बतलाया है। जैसे अधिक महीना होंवे तोभी ५० दिने पर्युषणापर्व करनेकी सर्व शास्त्रोंकी आज्ञा है, वैसेही-अधिकमहीना होवे तोभी पीछे हमेश ७०दिन रहनेकी आज्ञा किसीभी शास्त्रमें नहीं है, समवायांगसूत्रका पाठ तो सामान्य रीतिसे अधिक महीना न होंवे तब ४ महीनोंके वर्षाकाल संबंधी है, उसका भावार्थ समझे बिना अधिकमहीना होवे तब अभी पांच महीनोंके वर्षाकालमेंभी उसी सामान्य पाठको आगे करना और १०० दिन पीछे रहनेसंबंधी अनेक शास्त्रोंके विशेष पाठोंकी बातको छोड देना यह सर्वथा अनुचित है।

८-लौकिकटिप्पणामें दो श्रावणादिमहीने होंवे, तब पांचमहीनोंका वर्षाकाल मान्य करना यह बात अनुभवसिद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणानुसार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है,तोभी उनको ४ महीनोंका वर्षाकाल कहनेसे मिथ्या भाषण करने-कादोषआताहै। यदि अभी वर्तमानमें अधिकमहीनेश्रावणादि होनेपर भी जैनशास्त्रानुसार ४ महीनोंका वर्षाकालमानोंगे, तो,पौष-आषाढ अधिक होनेवाला ८८ ग्रहसहित जैनपंचांगभी अभी मानना पडेगा. मगर वो जैनपंचांग तो अभी विच्छेदहै, इसलिये लौकिकपंचांग मुजब व्यवहार करनेमेंआताहै। अब यहांपर विवेकबुद्धिसे न्यायपूर्वक विचारकरना चाहिये, कि-अभी पौष-आषाढमहीनेकी वृद्धिवाला८८ ग्रह सहित जैनपंचांग विच्छेदभी मानना. व लौकिक पंचांग मुजब व्यवहारभी करना. और लौकिक पंचांग मुजब अधिकमहीने दो श्रावण,या दो भाद्रपद,वा दो आसोजभी मानने. फिर ४महीनोंकावर्षाकालभी कहना, यह तो 'बालचेष्टा' की तरह पूर्वापर विरोधी विसंवादी कथनकरना विवेकी विद्वानोंको सर्वथाही योग्य नहींहै। अधिकश्रावणादिमहीने नहींमानने होवे तो अभी अधिकपौषादि वाला जैनपंचांग बतावो अथवा लौकिक पंचांग मुजब अधिक श्रावणादि मानो तो अधिकपौषादिका बहाना बतलाकर ४ महीनोंकावर्षाकाल कहनेका आग्रहछोडो। अधिकश्रावणादिभी मानोंगे और ४ महीनोंका वर्षाकालभी कहोंगे, यह कभी नहीं बन सकेगा. विच्छेद जैनपंचांगकी बातका आश्रय लेना और प्रत्यक्ष विद्यमान बातका निषेध करना, यह न्याय विरुद्धहै। पहिले पौष आषाढ बढतेथे तबभी फाल्गुन और आषाढचौमासा पांच२ महीनोंसे होताथा और अभी श्रावणादिबढतेहैं तब कार्त्तिक चौमासाभी पांचमहीनोंका होताहै.अभी जैनपंचांग विच्छेद होनेसे लौकिक पंचांग मुजब अधिक श्रावणादि मान्यकरके उसमुजब व्यवहार करना युक्तियुक्त व पूर्वाचार्योंकी आज्ञानुसारहै, जिसपरभी अधिक श्रावणादि होवे,तब पांच महीनोंके वर्षाकालमें ५० दिने दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्व आराधन करनेका उल्लंघन करना और पीछे १०० दिन रहने की जगह ७० दिन रहनेका आग्रह करना सर्वथा अनुचित है. देखो-

यद्यपि जैन पंचांगमें ४ महीनोंका वर्षाकाल कहाहै, परंतु जैन पंचांगके अभावसे अभी लौकिक पंचांग मुजब श्रावणादि बढतेहैं, तब पांच महीनोंका वर्षाकालभी मानना पडता है, इसलिये इसका निषेधकरना सर्वथा अनुचितहै.बस ! पौष-आषाढमहिनेकी वृद्धिसहित ४ महीनोंके वर्षाकाल वाला जैन पंचांग शुरू बतावो या लौकिक पंचांग मुजब श्रावणादि बढें तब पांच महीनोंका वर्षाकाल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मान्य करो और जब पांच महीनोंका वर्षाकाल मान्य हुआ तो फिर अधिकमहीना निषेध करनेकी व पर्युषणाके पीछे ७० दिन हमेश रखने वगैरहकी सर्व बातें आपही आप निष्फल हो जाती हैं

इसतरहसे अधिकमहीनेकेनिषेधसंबंधी धर्मसागरजीने 'कल्प किरणावली'में, जयविजयजीने 'कल्प दीपिका'में, विनयविजयजीने 'सुबोधिका'में,कांतिविजयजी-अमरविजयजीने'जैन सिद्धांत समाचारी' में,शांतिविजयजीने'मानवधर्मसंहिता'में,वल्लभविजयजीने जैनपत्रमें, विद्याविजयजीने 'पर्युषणा विचार'में,कुलमंडनसूरिजीने 'विचारामृत संग्रह'में, हर्षभूषणजीने 'पर्युषणास्थिति'में, और वर्तमानिक चर्चाके हेंडबिलें, किताबें वगैरहमें जो जो शंकायें कीहैं,उन सर्व शंकाओंका खुलासा पूर्वक समाधान इस ग्रंथकी भूमिकामें व पीठिकामें और इस ग्रंथमें अच्छी तरहसे लिखनेमें आयाहै, इसलिये जिनाज्ञानुसार धर्मकार्य करनेकी इच्छावाले,सत्यतत्त्वाभिलाषी,आत्माहितैषी पाठक गण इसग्रंथको पूर्णतया वांचकर सत्यसार ग्रहण करें।

९-तीर्थंकर भगवान्के च्यवन-जन्म-दीक्षादिकोंको कल्याणक मानेका आगमानुसार अनादि सिद्ध है,इसलिये श्री महावीरस्वामिभी देवलोकसे देवानंदामाताके गर्भमें आषाढ शुदी ६ को आये; उनको प्रथम च्यवन कल्याणक, और आसोजवदी १३ को देवानंदामाताकेगर्भसे त्रिशलामाताके गर्भमें आये; सो गर्भापहाररूप (गर्भसंक्रमणरूप)दूसराच्यवन कल्याणक माननेका स्थानांग-आचारांग-दशाश्रुतस्कंधादिक आगम पंचांगी प्रकरण चरित्रादि अनेक शास्त्रानुसार और वडगच्छ, चंद्रगच्छ, उपकेशगच्छ (कमलागच्छ) खरतरगच्छ,तपगच्छ, अंचलगच्छ, पायचंदगच्छादि अनेक गच्छोंके पूर्वाचार्योंके ग्रंथानुसार अच्छी तरहसे सिद्ध करके बतलायाहै. च्यवन-जन्म-दीक्षादिकोंको चाहे वस्तु कहो, चाहे स्थानकहो, चाहे कल्याणक कहो. इन तीनोंबातोंमें प्रसंगोपात संबंधानुसार पर्याय वाचक एकार्थवाले शब्द अलग २ हैं, मगर सबका भावार्थ एकही है. उस बातकाभेद समझे बिनाही च्यवन-जन्म-दीक्षादिकाको वस्तु-स्थान कहकर कल्याणक पनेका निषेध करके आगमार्थरूप पंचांगीको उत्थापनकरनेके दोषी बनना किसीकोभी योग्य नहीं है।

१०- श्रीवीरप्रभुके आषाढ शुदी ६ को प्रथम च्यवनकल्याणक मान्यकरके;आसोजवदी १३ को दूसरेच्यवनको कल्याणकपनेका निषेध करनेवालोंको न्यायबुद्धिसे विचार करना चाहिये, कि-तीर्थंकर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भगवान्‌केच्यवनकल्याणकसमय उनकी माता१४महास्वप्न आकाशसे उत्तरतेहुएदेखतीहैं, उसीसमय तीनजगतमें उद्द्योत होता है व सर्व संसारीप्राणीमात्रको सुखकीप्राप्तीहोती है, और इन्द्रमहाराजका आसन चलायमान होनेसे अवधिज्ञानसे भगवान्‌को देखकर विधिपूर्वक पूर्णभक्तिसहित नमुत्थुणंरूप नमस्कारकरके तत्काल माताके पासआकर१४ महास्वप्न देखनेसे स्वप्नोंके अनुसार तीनजगतकेपूज्यनीक तीर्थंकर पुत्र होनेका कहकर इन्द्रमहाराज अपने स्थानपरजाते हैं. और प्रभातसमय फजरमें राजा स्वप्न पाठकोंसे १४ महास्वप्नोंकाफल पूछताहै,तब तीर्थंकर पुत्र होनेका सुनकर हर्ष सहित महोत्सव करता है, और इन्द्र महाराज देवताओं द्वारा उस रोजसे भगवान्‌के माता-पिताके घरमें धन धान्यादिकसे राज्य ऋद्धिकीवृद्धि करवातेहैं इत्यादि तीर्थंकरभगवान्‌के च्यवनकल्याणकके कार्यहोतेहैं, यही सर्व कार्य आषाढशुदी ६के रोज भगवान् देवानंदामाताके गर्भमें आये;तब नहीं हुए,किंतु आसोज वदी १३के रोज त्रिशलामाताके गर्भमें आये; तब उससमय हुएहैं, क्योंकि देखो-आषाढ सुदी ६ को तो प्राचीन कर्मके उदयसे भगवान् ब्राह्मणीदेवानंदामाताके गर्भमें आये. और ८२दिनतकवहां ठहरनापडा,उनको कल्पसूत्रादिक शास्त्रोंमें अच्छेरा कहाहै, इसलिये ८२ दिन तकतो इन्द्रादिक किसीकोभी तीर्थंकरभगवान्‌के उत्पन्न होनेकी मालूम न पडी,मगर संपूर्ण८२ दिन गयेबाद इन्द्रमहाराजको अवधिज्ञानसे मालूमपडी उसीसमय पूर्णहर्षसहित नमुत्थुणंकिया और हरिणेगमेषिदेवको आज्ञाकरके क्षत्रियाणीत्रिशला माताके गर्भमें पधराये, तब त्रिशलामातानें(देवानंदाके १४महास्वप्न हरणकरनेका१स्वप्न नहीं देखा-किंतु)तीर्थंकर भगवान्‌के च्यवन कल्याणककी सूचनाकरने वाले १४ महास्वप्न आकाशसे उत्तरते हुए और अपने मुखमें प्रवेश करते हुए देखे हैं. इसलिये खास कल्पसूत्रके मूल पाठमेंभी "एए चउद्दस सुमिणा, सव्वा पासेइ तित्थयर माया। जं रयणिं वक्कमई, कुंच्छिसि महायसो अरिहा"अर्थात्-जिस समय तीर्थंकर भगवान् माताके गर्भमें आकर उत्पन्न होतेहैं,उस समय यह १४ महास्वप्न सर्व तीर्थंकरमहाराजोंकी मातायें देखतीहैं, वैसेही-त्रिशलामातानेंभी १४ महास्वप्न देखेहैं, इसलिये त्रिशलामाताके गर्भमें आनेकोही शास्त्रकार महाराजोंनें च्यवन कल्याणक मान्य कियाहै, इसीकारणसे समवायांगसूत्रवृत्तिमें देवानंदामाताके गर्भसे त्रिशला माताके गर्भमें आनेको अलग भव गिनकर तीर्थंकर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पनेमें प्रकट होनेकालिखाहै. और 'महापुरुष चरित्र' में तथा 'त्रिषष्ठि-शलाका पुरुष चरित्र' आदिक प्राचीन शास्त्रोंमेंभी ८२ दिन गये बाद इन्द्रका आसन चलायमान होनेसे अवधिज्ञानसे भगवान्‌को देखकर नमुत्थुणं किया और त्रिशलामाताके गर्भमेंपधराये, जब त्रिशलामाता-ने १४महास्वप्न देखे,तब खास इन्द्रने त्रिशलामाताके पासमें आकर तीर्थंकर पुत्र होनेका कहा है, और फजरमें स्वप्न पाठकोंसेभी तीर्थं-कर पुत्र होनेका सुनकर सबको तीर्थंकर भगवान्‌के उत्पन्न होने-की मालूम होगई. इसलिये कल्पसूत्रमें जो नमुत्थुणंका पाठ है, सो-भी आसोज वदी १३ के दिन संबंधी है, किंतु आषाढ शुदि६ के दि-न संबंधी नहींहै, क्योंकि देखो- 'नमुत्थुणं करके त्रिशलामाताके ग-र्भमें पधराये' ऐसा कल्पसूत्रादिमें खुलासालिखाहै, मगर आषाढ शु-दी६को आसनप्रकंपनसे नमुत्थुणं किया और फिर उसके बादमें ८२ दिन गये पीछे त्रिशलामाताके गर्भमें पधराये. या ८२दिन तो इन्द्रको विचारकरते चलेगये. वा पूरे ८२ दिन गयेबाद आसोज वदी १३ को फिर आसन प्रकंपनसे त्रिशलामाताके गर्भमेंपधराये. अथवा ८२दिन ठहरकर पीछे त्रिशलामाताके गर्भमें पधराये. ऐसे पाठ किसीभी शा-स्त्रमें नहींहै. मगर ८२दिन तक तो मालूमभी नहींपडी, परंतु ८२दिन जाने बाद आसन प्रकंपनहोनेसें मालूम पडी, तब नमुत्थुणं किया और उसी रोज पधराये, ऐसे पाठ तो "महापुरुष चरित्र" में तथा " त्रि-षष्ठिशलाका पुरुष चरित्र '' आदि अनेक प्राचीन शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक प्रत्यक्ष मिलतेहैं, इसलिये आसोज वदी १३ कोही ' नमुत्थुणं ' वगैरह च्यवन कल्याणकके तमाम कार्य होनेसे आगम पंचांगीकी श्रद्धावालोंको व श्रीवीरप्रभुकी भक्तिवालोंको यह दूसरा च्यवनरूप कल्याणक मान्य करनाही उचित है, बस ! आसोज वदी १३ कोही नमुत्थुणं करने वगैरह च्यवन कल्याणकके तमाम कार्य होनेका मा-न्यकरो या आषाढ शुदी ६ को नमुत्थुणं करने वगैरह च्यवन कल्या-णकके तमाम कार्य होनेका खुलासा पूर्वक शास्त्रपाठ बतलावो,व्यर्थ विवाद करनेमें कोई सार नहीं है.

११- श्रीआदीश्वर भगवान्‌के राज्याभिषेकमें तो कोईभी क-ल्याणकके लक्षण नहीं हैं, मगर गर्भापहारसे गर्भ संक्रमणरूप दूस-रे च्यवनमें तो च्यवन कल्याणकके सर्व लक्षण प्रत्यक्ष मौजूदहैं, इ-सलिये उसका भावार्थ समझे बिनाही राज्याभिषेककी तरह गर्भाप-हारकोभी कल्याणकपनेका निषेध करना यहभी बे समझ है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१२- श्री आदीश्वरभगवान् १०८ मुनियोंके साथ 'अष्टापद'पर मोक्ष पधारे सो अच्छेरा कहतेहैं, तोभी उनको मोक्ष कल्याणक माननेमें कोईभी बाधा नहीं आसकती. तैसेही-श्रीवीरप्रभुकेभी देवानंदा माताके गर्भमें आनेसे त्रिशलामाताके गर्भमें जाना पडा. सो अच्छेरारूप कहते हैं, तोभी उनको च्यवनकल्याणक माननेमें कोईभी बाधा नहीं आसकती. इसलिये अच्छेरा कहकर कल्याणकपनेका निषेध करना यहभी बे समझही है.

१३- और श्री मल्लिनाथस्वामि स्त्रीपनेमें तीर्थंकर उत्पन्न हुएहैं, तोभी चौवीश तीर्थंकर महाराजोंकी अपेक्षासे सामान्यतासे पुरुषपनेमें कहनेमेंआतेहैं. तैसेही श्रीवीरप्रभुकेभी छ कल्याणक आचारांग-स्थानांगादि आगमोंमें विशेषतासे खुलासापूर्वक कहेहैं, तोभी 'पंचाशक' में सर्व तीर्थंकर महाराजोंकी अपेक्षासे सामान्यतासे पांच कल्याणक कहेहैं, उसकाभावार्थ समझे बिनाही सर्वजिनसंबंधी पांचकल्याणकोंका सामान्य पाठको आगे करके आचारांग-स्थानांगादि आगमोंमें कहे हुए विशेषतावाले छ कल्याणकोंका निषेधकरना यह भी बे समझका व्यर्थही आग्रह है।

१४-इसतरहसे आगमपंचांगीके अनेक शास्त्रानुसार तीर्थंकर, गणधर,पूर्वधरादि प्राचीन पूर्वाचार्योंके कथनमुजब गर्भापहारको दूसरा च्यवनरूप कल्याणकपनाप्रत्यक्षसिद्ध होनेसे.श्रीजिनवल्लभसूरिजी महाराजने चितोडमें छठे कल्याणककी नवीनप्ररूपणाकी, पहिले नहीं थी, ऐसा कहेनाभी बे समझसे व्यर्थही है।

१५-और गर्भापहाररूप दूसरे च्यवनकल्याणकके अतीव उत्तम कार्यको 'सुबोधिका ' टीकामें अतीव निंदनीक कहकरके निंदाकीहै, सोभी भगवान्की आशातनाकारक होनेसे सम्यक्त्वको व संयमको हानीपहुंचानेवालीहै, उसका तत्त्वदृष्टिसे विचारकियेबिनाही विद्वान् कहलानेवाले सर्व मुनिमहाराज वर्षोंवर्ष पर्युषणापर्वके मांगलिक रूप व्याख्यान समय ऐसी अनुचित बातको वांचते हैं, यह बडीही शर्मकी बात है, भवभीरू आत्मार्थियोंको ऐसा करना कदापि योग्य नहीं हैं। इन सर्व बातोंका विशेष निर्णय प्रथम भागकी भूमिकामें और इस ग्रंथके उत्तरार्द्धमें अच्छी तरहसे लिखनेमें आयाहै, उनके वांचनेसे सर्व बातोंका निर्णय हो जावेगा.

१६- सामायिकमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनेसंबंधीभी आवश्यकचूर्णि-बृहद्वृत्ति-लघुवृत्ति-नवपदप्रकरण विवरणरूपवृत्ति-दूसरीवृत्ति-श्रावकधर्मप्रकरणवृत्ति-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वंदित्तासूत्रचूर्णि-श्राद्धदिनकृत्यसूत्रवृत्ति-पंचाशकचूर्णि-वृत्ति-विचारामृतसंग्रह-धर्मसंग्रहवृत्ति-संबोधसत्तरी प्रकरणवृत्ति-जयसोमोपाध्यायजी कृत 'ईर्यापथिकी षट्त्रिंशिका विवरण', श्रावकप्रज्ञप्तिवृत्ति इत्यादि अनेक शास्त्रानुसार श्रीजिनदासगणिमहात्तराचार्यजी पूर्वधर, श्रीहरिभद्रसूरिजी, अभयदेवसूरिजी, हेमचंद्राचार्यजी, देवेंद्रसूरिजी, देवगुप्तसूरिजी, वगैरह सर्व गच्छोंके प्राचीन पूर्वाचार्योंने सामायिक विधिमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करके स्वाध्याय, ध्यानादि धर्मकार्य करनेका बतलाया है, यहीबात जिनाज्ञानुसारहै. पहिले सर्व गच्छोंमें इसीप्रकारसेही सामायिकविधि करतेथे, मगर पीछेसे कितनेही चैत्यवासियोंने अपनीमतिकल्पना मुजब प्रथम इरियावही पीछेकरेमिभंते स्थापन करनेका आग्रहचलायाथा, उनकीपरंपरामुजब अबीभी कितनेकमहाशय प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंतेका स्थापन करनेकेलिये अन्य कोईभी प्रकट अक्षरवाले शास्त्रप्रमाण न मिलनेसे महानिशीथ-दशवैकालिकादिकके अधूरे २ पाठोंसे संबंधके विरुद्ध अर्थ करके सामायिकमें प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते ठहरातेहैं, परंतु उससे अनेक दोष आते हैं, उसका विचारभी कभी नहीं करते हैं. देखो - विसंवादी शास्त्रोंको व विसंवादी कथन करनेवालोंको शास्त्रोंमें मिथ्यात्वी कहेहैं, इसलिये जैन शास्त्रोंको व पूर्वाचार्योंको अविसंवादी कहनेमें आतेहैं, और आवश्यकचूर्णिआदि अनेकशास्त्रोंमेंसामायिकमें प्रथमकरेमिभंते पीछेइरियावहीके पाठमौजूद होनेपरभी महानिशीथ-दशवैकालिकादिसे प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते ठहरानेस सर्वज्ञ शास्त्रोंमें विसंवादरूप यह प्रथमदोषआताहै. और आवश्यक बडी टीका, महानिशीथका उद्धार, दशवैकालिक बडीटीका यह सर्वशास्त्र श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजनें कियेहैं, इसलिये आवश्यक बडी टीकाके विरुद्ध महानिशीथसे प्रथम इरियावही ठहरानेसे इन महाराजके कथनमें विसंवाद आनेरूप यह दूसरा दोषआताहै. आवश्यकादिमें सामायिकके नामसे प्रथमकरेमिभंते पीछेइरियावही खुलासा लिखीहै, महानिशीथके तीसरेअध्ययनमें उपधानसंबंधी चैत्यवंदन स्वाध्यायादिकरनेकापाठहै, दशवैकालिककी टीकामें साधुके गमनागमन (जाने आने) संबंधी इरियावही करके स्वाध्यायादि करनेका पाठहै, इस प्रकार भिन्न २ अपेक्षा वाले शास्त्रोंके पाठोंके संबंध विरुद्ध होकर अधूरे २ पाठोंसे सामायिकमेंभी प्रथम इरियावही ठहरानेसे शास्त्रोंकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मर्यादाका भंगहोनेरूप यह तीसरा दोषआताहै. और सर्व गीतार्थपूर्वाचार्योंने महानिशीथादि देखेथे, उन्होंके अर्थकोभी अच्छी तरहसे जानतेथे, तोभी सामायिकमें प्रथम इरियावही नहींलिखी, जिसपरभी अभी महानिशीथसे सामायिकमें प्रथम इरियावही ठहरानेसे उन सर्व गीतार्थ पूर्वाचार्योंको महानिशीथके अर्थको नहीं जाननेवाले अज्ञानी ठहरानेका यहचौथादोषआताहै. और सर्वपूर्वाचार्योंने सामायिकमें प्रथमकरेमिभंते पीछेइरियावही लिखीहै,उसको उत्थापनकरनेसे सर्व पूर्वाचार्योंकी आज्ञा लोपनेका यह पांचवा दोषभी आताहै. और आवश्यकचूर्णि आदिक सर्व शास्त्रोंके विरुद्ध होकर सामायिकमें प्रथम इरियावही स्थापन करनेसे आगम पंचांगीके उत्थापनरूप यह छठा दोषआताहै. और खास तपगच्छके श्रीदेवेंद्रसूरिजी,कुलमंडनसूरिजी वगैरहोंनेभी सामायिकमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही खुलासा लिखी है, उसकेभी विरुद्ध होकर सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते ठहरानेसे अपने पूर्वज बडील आचार्योंकीभी अवज्ञा करनेरूप यह सातवा दोषभी आताहै. इसप्रकार सामायिकमें प्रथम करेमिभंते और पीछे इरियावही कहनेका निषेध करके प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते ठहरानेसे अनेक दोष आते हैं, इसका विशेष खुलासा पूर्वक निर्णय शास्त्रोंके संपूर्ण संबंधवाले पाठोंकेसहित इसीग्रंथके दूसरेभागकी पीठिकाके पृष्ठ८७से११२ पृष्ठतक और इस ग्रंथमेंभी पृष्ठ ३१० से ३२९ पृष्ठ तक छपगयाहै. वहां सर्व शंकाओंका खुलासा समाधान करनेमें आया है, इसलिये आत्मार्थी भव्य जीवोंको जिनाज्ञानुसार, सर्व गच्छोंके पूर्वाचार्योंके वचनानुसार, प्राचीन अनेक शास्त्रानुसार, तीर्थंकर गणधर पूर्वधरादि महाराजोंकी भाव परंपरानुसार सामायिकमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनाहीयोग्यहै, और प्रथमइरियावही करनेकी अभी थोडेकालकी गच्छकीरूढीके आग्रहको छोडनाही श्रेयरूप है। इस बातको विशेष तत्त्वज्ञ जन आपही विचार लेंगे.

जिन २ महाशयोंको इतना बडा संपूर्णग्रंथ वांचनेका अवकाश न होवे; उनमहाशयोंको इसग्रंथके प्रथमभागकी भूमिका और दूसरे भागकी पीठिकाको अवश्यही वांचनाचाहिये. मैने भूमिका-पीठिकामें अन्य २बातें नहींलिखी,किंतु इसग्रंथकासार और सर्वशंकाओंका थोडेसेमें समाधानमात्रही लिखाहै .इसलिये भूमिका-पीठिका वांचनेवालोंको ग्रंथकासार अच्छीतरहसे मालूम होसकेगा. इतिशुभम्.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसग्रन्थके उत्तरार्द्धके तीसरे खंडकी– जाहिर खबर.

१-इसग्रंथके उत्तरार्द्धके तीसरेखंडमें आगमादि अनेकप्राचीन शास्त्रानुसार,व चंद्रगच्छ,वडगच्छ, खरतरगच्छ,तपगच्छ,अंचलगच्छ, पायचंदगच्छादि सर्वगच्छोंके पूर्वाचार्योंके बनायेग्रंथानुसार श्रीवीर प्रभुके छ कल्याणक मान्यकरनेका अच्छी तरहसे सिद्ध करके बतलाया है. और शांतिविजयजीने 'जैनपत्र'में, विनयविजयजीने 'सुबोधिका'में, कांतिविजयजी-अमरविजयजीनें 'जैनसिद्धांत सामाचारी' में, श्रीआत्मारामजीने 'जैन तत्त्वादर्श'में, धर्मसागरजीनें 'कल्पकिरणावली' 'प्रवचन परीक्षा' वगैरहमें जो जो छ कल्याणक निषेध संबंधी शंकायें की हैं. और शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्रायको समझे बिनाही अधूरे२ पाठ लिखकर उनके खोटे२ अर्थ करके भोले जीवोंको उलटा मार्ग बतलानेकी कौशिश की है, उन सर्वबातोंका समाधान सहित निर्णय इसमें लिखनेमें आया है।

२–और श्रीजिनेश्वर सूरिजी महाराजसे वस्तिवासी-सुविहित-खरतर विरुदकी शुरूयात हुयीहै,इसलिये श्रीनवांगीवृत्तिकारक श्रीअभयदेवसूरिजी महाराज खरतर गच्छमें हुए हैं, यह बात प्राचीनशास्त्रानुसार तथा तपगच्छके पूर्वाचार्योंके बनाये ग्रंथानुसार सिद्धकरके बतलायाहै । और कोई महाशय श्रीजिनदत्त सूरिजी महाराजसे संवत् १२०४में खरतरगच्छकी शुरूयातहोनेका कहतेहैं, सोभी सर्वथा असत्य है. क्योंकि–इन महाराजसे सं. १२०४में खरतरगच्छकी शुरूयात होनेका कोईभी कारण नहीं हुआ है. व्यर्थ झूठे आक्षेप करने बडी भूलहै, देखो-१२०४में तो खरतर गच्छकी तीसरी शाखा हुईहै.इस बातका अच्छीतरहसे खुलासा इसग्रंथमें करनेमें आयाहै.

३–और जैनशास्त्रोंकी यह आज्ञा है, कि–यदि अपनी गच्छ परंपरामें ३-४ पेढीके आगेसेही शिथिलाचार चला आता होवे, तो क्रिया उद्धार करनेवाले दूसरेगच्छके अन्यशुद्ध संयमीके पासमें क्रिया उद्धार करें. अर्थात्- उनके शिष्य होकरके शुद्ध संयम पालें, उससे पहिलेकी शिथिलाचारकी अशुद्ध परंपरा छुटकर, क्रिया उद्धार करवानेवाले गुरुकीशुद्धपरंपरा मानीजावे. देखो जैसे–श्रीआत्माराम जीने ढूंढियोंके झूंठेमतको छोडकर तपगच्छमें दीक्षाली है. इसलिये यद्यपि पहिलेढूंढियेथे तोभी उनकीपरंपरा ढूंढियोंमेंनहींलिखी जावे; किंतु तपगच्छमेंही लिखीजावे. तथा कोई शिथिलाचारी यति अपने गुरु व गच्छको छोडकर अन्यगच्छवाले शुद्धसंयमीके पासमें क्रिया

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उद्धारकरें (फिरसे दीक्षालेंवे) तो उनकी यतिपनेकी अशुद्धपरंपरा छुटकर जिसगुरुके पासमें क्रिया उद्धार किया होगा, उन्हीं गुरुकीशुद्ध परंपरा चलेगी ॥ इसी तरहसे श्रीवडगच्छके जगचंद्रसूरिजी महाराजने अपनेको व अपनी गच्छ परंपराको शिथिलाचारी अशुद्ध जानकर छोडदियाथा और श्रीचैत्रवालगच्छके शुद्ध परंपरावाले शुद्ध संयमी श्रीदेवभद्रोपाध्यायजीके पासमें क्रिया उद्धार कियाथा, अर्थात्-उनके शिष्य होकर शुद्ध संयमी बने थे. और उसके बादमें बहुत तपस्या करनेसे 'तपा' विरुद मिलाथा, उस रोजसे इन महाराजकी समुदायवाले तपगच्छके कहलाये गये. इसलिये श्रीदेवेंद्रसूरिजीमहाराजने और श्री क्षेमकीर्त्तिसूरिजी महाराजने श्रीजगचंद्रसूरिजीमहाराजकी पहिलेकी शिथिलाचारकी वडगच्छकी अशुद्ध परंपरा लिखना छोडकर; इनमहाराजकी चैत्रवाल गच्छकी शुद्ध परंपरा अपनी बनाई 'धर्मरत्न प्रकरण वृत्ति' में और 'श्रीबृहत्कल्प भाष्य वृत्ति' में लिखीहै. यही शुद्ध परंपरा लिखना जिनाज्ञानुसार है, मगर पहिलेकी वडगच्छकी अशुद्ध परंपरा लिखना जिनाज्ञानुसार नहींहै. यह बात अल्पज्ञभी अच्छी तरहसे समझसकताहै. जिसपरभी अभी वर्तमानिक तपगच्छके विद्वान् मुनिमंडल देवेंद्रसूरिजी वगैरह महाराजोंकी लिखी हुई जिनाज्ञानुसार चैत्रवालगच्छकी शुद्ध परंपराको छोड देते हैं. और जिनाज्ञाविरुद्ध शिथिलाचारी वडगच्छकी अशुद्ध परंपराको लिखते हैं. यह सर्वथा शास्त्र विरुद्ध है. इन सर्व बातोंका विस्तार पूर्वक खुलासा इस ग्रन्थके उत्तरार्द्धमें लिखा गयाहै. सोभी छपकर तैयार होगयाहै, इस पूर्वार्द्धके प्रकट हुएबाद, थोडे समयसे उत्तरार्द्धभी प्रकट होगा, सो संपूर्ण तया वांचनेसे सर्व निर्णय हो जावेगा.

विद्वान् सर्व मुनिमंडलसे विनति.

श्रीमान्- विजयकमलसूरिजी, विजयधर्मसूरिजी, विजयनेमिसूरिजी, बुद्धिसागरसूरिजी, विजयवीरसूरिजी, विजयनीतिसूरिजी विजयसिद्धिसूरिजी, आनंदसागरसूरिजी, उ० इन्द्रविजयजी, प्र० श्री कांतिविजयजी-मंगलविजयजी, पं० गुलाबविजयजी- धर्मविजयजी-केशरविजयजी-दानविजयजी-मणिविजयजी- अजितसागरजी, श्री हंसविजयजी-कपूरविजयजी- वल्लभविजयजी-कल्याणविजयजी-लब्धिविजयजी-आनंदविजयजीआदि विद्वान्सर्व मुनिमंडलसेविनति.

आप यह तो जानतेहीहैं, कि-श्रीनिशीथचूर्णिमें वर्षाऋतुमेंही मु-

नियोंको आलोयणालेनेकाकहाहै, और अभी श्रावणादिमहीने बढे. तब पांच महीनोंके दश पक्ष; १५० दिन वर्षाकालके होते हैं, उसमें आ- यंबिल, उपवास, नवकरवाली गुणने वगैरहसे जितने दिन धर्मकार्य होंगे; उतनेही दिन आलोयणाकी गिनतीमें आवेंगे,इसी तरहसे वर्षी और छ मासी तपके दिनोंमें व ब्रह्मचर्य पालने वगैरह कार्योंमेंभी अधि- क महीनेके ३० दिन गिनतीमें आते हैं ॥ इस हिसाबसे धर्मकार्यमें व कर्म बंधनके व्यवहारमें सूर्यके उदय अस्त (रात्रि दिनके) परिवर्तन- के हिसाबसे और अंग्रेजी, मुसलमानी, पारसी, बंगलाकी तारिखोंके हिसाबसेभी आषाढ चौमासीसे जब दो श्रावण होवें; तब भाद्रपद त- क, या जब दो भाद्रपद होवे तब दूसरेभाद्रपद तक ८० दिन होतेहैं, उसके ५०दिन कहतेहैं, और जब दो आसोज होवे तब कार्तिक तक- १००दिनहोतेहैं, उसकेभी ७०दिन कहतेहैं. यहबात संसार व्यवहार- के हिसाबसे, रात्रिदिनके जानेके (समयके प्रवाहके) हिसाबसे, धर्म शास्त्रोंके हिसाबसे, ज्योतिषपंचांगकेहिसाबसे,राज्यनीतिके हिसाब- से, और धर्म-कर्मके अनादि नियमके हिसाबसेभी सर्वथा विरुद्धहै. और अन्य दर्शनियोंके विद्वानोंके सामने जैनशासनको कलंक रूपहै. इसलिये मेहेरबानी करके बहुत समयकी गच्छ परंपराकी रूढीरूप प्रवाहके आग्रहको छोडकर जिनाज्ञाका बिचार करके यह अनुचित रीवाजको वगर बिलंबसे सुधारनेकी कोशिशकरें. इसके संबंधमें स- र्व बातोंका खुलासापूर्वक समाधान इस ग्रंथकी भूमिकाके ४७ प्रक- रणोंमें व सुबोधिकादिककी २८ भूलोंवाले लेखमें और इसग्रंथमें अ- च्छीतरहसे लिखनेमें आयाहै, उसको पूरेपूरा अवश्यवांचे और योग्य लगे उतना सुधाराकरें,पक्षपात झूठाआग्रह शास्त्रविरुद्ध बहुतलोगोंकी समुदाय व गुरुगच्छकी परंपरा हितकारीनहींहै,किंतु जिनाज्ञाही हित कारीहै. परोपदेशकेलिये बहुत लोगबडे कुशल होतेहैं, मगर वैसाही कार्य करनेवाले आत्मार्थीबहुतहीअल्पहोतेहैं, यहभी आपजानतेहीहैं.

और सर्वज्ञ शासनमें कर्मबंधन व धर्मकार्यसंबंधी समय २ का व श्वासोश्वासका हिसाब किया जाताहै, उसमें ८० दिनके ५० दिन और १०० दिनके ७० दिन कहनेवाले, यदि कसाई व व्यभिचारी वगैरह पापीप्राणियोंके कर्मबंधन और साधु मुनिमहाराजोंके व ब्रह्म- चारी वगैरह धर्मी प्राणियोंके कर्मक्षयकरने संबंधीभी ८० दिनके ५० दिन, व १००दिनके ७०दिन कहेंगे, तबतो-सर्वज्ञ भगवान्के प्रवचन- की व धर्म-कर्मकी अनादिमर्यादा भंग करनेके दोषी ठहरेंगे, अथवा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

८०दिनके व १००दिनके धर्म-कर्म समय २ के श्वासोश्वासके हिसाब से सर्वज्ञ भगवान्के प्रवचनानुसार अनादिमर्यादा मुजब मान्यकरेंगे, तो-८०दिनके ५०दिन, व १०० दिनके ७० दिन कहनेकाआग्रह झूठाही ठहरजावेगा. यहभी न्यायबुद्धिसे विचारने योग्यहै, विशेष क्या लिखें.

देव द्रव्य निर्णयः ।

१-वर्तमानिक देवद्रव्यकी चर्चा संबंधी अर्पण बुद्धिसे भगवान्को चढाई हुई वस्तु देव द्रव्यमें गिनी जातीहै, यह बात सर्वमान्य है, इसी तरहसे पूजा और आरतीकी बोलीभी अर्पण बुद्धिसे पहिलेसेही संघ तरहसे भगवान्को चढाई हुई वस्तु हैं, अर्थात्-देवद्रव्यमें जानेका नियम होचुका है, उनको अन्य मार्गमें ले जानेसे बिनाकारण संघकी आज्ञा भंगका व भगवान्को अर्पण कीहुई वस्तु रूपांतरसे पीछी लेनेका दोष आताहै, इसलिये ऐसा करना योग्य नहीं है।

२-भगवान्की पूजा आरतिकी बोली कलेश निवारण करनेके लिये नहींहै, किंतु शुद्ध भक्तिके लिये है, देखो-अपने अनुभवसे यही मालूम होता है, कि-बहुत भाविक जन आज अमुक पर्व दिवस है, मैंरी शक्तिके अनुसार आज १०।२० या १००।२०० रुपये भगवान्की भक्तिके लिये देवद्रव्यमें जावें तोभी कोई हरज नहीं है, मगर आज तो भगवान्की पहिली पूजा-आरति मैं करूं, तो मैंरे कल्याण-मंगल होवे, वर्षभर भगवान्की भक्तिमें जावें, इसी निमित्तसे मैरा द्रव्य भगवानकी भक्तिमें लगेगा. तो मैरी कमाईभी सफल होवेगी, और सुकृतकीकमाईवालेभाग्यशालीको आज भगवान्की भक्तिका पहिलालाभ मिलेगाऐसाकहनेमेंभीआताहै. इत्यादि शुभभावसेबोलीबोलतेहैं, इस लिये कलेश निवारणकेलिये बोली बोलनेका ठहराना योग्य नहीं है.

औरभी देखो-भगवान्केमंदिर बनवाने व प्रतिमा भरवानेमें महान् लाभ कहा है, यह कार्य भक्तिकेलिये धर्म बुद्धिसे करनेकी शास्त्राज्ञा है. तोभी कितनेक बेसमझलोग नामकेलिये या अभिमानसे वा देखादेखीके विरोधभावसे करतेहैं, सो यह अनुचितहै. इसी तरहसे बोली बोलनेका रीवाजभी भगवान्की भक्तिके लिये महान् लाभका हेतु है, तोभी कितनेक बेसमझलोग नामकेलिये या अभिमानसे वा देखादेखीके विरोध भावसेबोलतेहैं. उनको देखकर बोलीबोलनेके रीवाजको भक्ति राग छोडकर कलेश निवारणका हेतु ठहराना योग्यनहींहै.

तथा देवद्रव्यकी तरह साधारण द्रव्यकीभी बहुतही आवश्यकताहै, उसमें बे दरकारीका दोष मुनिमंडल व आगेवानोंपरहै. औ-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रभी देव द्रव्य संबंधी सर्व शंकाओंका समाधान व साधारण द्रव्य-की वृद्धिके लिये उपायवगैरह बहुतबातोंके खुलासे समाधान 'देव-द्रव्य निर्णय' नामा पुस्तकमें लिखनेमें आवेंगे.

निवेदन और उपकार.

इसग्रंथकी कोईबात समझमें न आवे, या वांचते २ कोई शंका होवे, तो इस ग्रंथके कर्त्ताको लिखकर खुलासा मंगवानेका सबको हक है, ग्रंथ संबंधी सब तरहका जवाबदार लेखक है.

इस ग्रंथमें अनुमान ३०० शास्त्रोंके प्रमाण बतलाये गयेहैं, इस ग्रंथके बनवाने संबंधी शास्त्रोंके संग्रह करने वगैरहमें, श्रीमान् जि-नयशसूरिजीमहाराज, श्रीमान् शिवजीरामजीमहाराज, श्रीमान्जिन चारित्रसूरिजीमहाराज, श्रीमान् कृपाचंद्रसूरिजीमहाराज, पन्यासजी श्रीमान् केशरमुनिजीमहाराज, पं०श्रीमान्गुमानमुनिजीमहाराज और कलकत्तानिवासी उ.श्रीमान्जयचंद्रजीगणि व रायबहादुर बद्रीदास जीजौहरीवगैरहोंने जो जो मदतदीहै, उनका मैं उपकार मानता हूं.

संवत् १९७८ वैशाख शुदी ३. हस्ताक्षर मुनि-मणिसागर.

बिनाकिंमतभेटसे पुस्तक मिलनेके नाम व स्थान.

यहग्रन्थ एकहजार पृष्ठकाबडाहोनेसे दो विभागमें प्रकटाकियाहै.

१ बृहत्पर्युषणा निर्णय पूर्वार्द्ध, प्रथम-दूसरा खंड.
२ बृहत्पर्युषणा निर्णय उत्तरार्द्ध, तीसरा खंड.
३ लघुपर्युषणा निर्णयका प्रथम अंक.
४ प्रश्नोत्तर विचार. ५-६-७ प्रश्नोत्तर मंजरीके १-२-३ भाग.
८-९ हर्षहृदय दर्पण १-२ भाग. १० आत्मभ्रमोच्छेदन भानुः.

यह ग्रन्थभी छपनेवाले हैं.

१ देवद्रव्यनिर्णय. २ न्यायरत्न समीक्षा. ३ प्रवचनपरीक्षा निर्णय.

---

१ श्रीमद् अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला कार्यालय, ठे० श्रीजैनश्वेतांबर मित्रमंडल केनिंगस्ट्रीट नं. २१, मु०-कलकत्ता.
२ श्रीमद् अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला कार्यालय, ठे० बडा उपाश्रय देश-मारवाड, मु०—बीकानेर.
३ श्रीजिनदत्तसूरिजी ज्ञानभंडार, ठे० गोपीपुरा-शीतलवाडी देश-गुजरात, मु०—सुरत.
४ जौहरी माठूमलजी धनपतसिंहजी भणशाली, सुंदरबील्डिंग ठे० फतहपुरी, मु०- दिल्ली.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ ॐ ॥

श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

प्रथम भागकी भूमिका

पाहिले इसको अवश्य पढिये.

मांगलिक्यके करनेवाले श्रीस्थंभनपार्श्वनाथ जिनेश्वर भगवान्‌को नमस्कार करके, श्रीजिनाज्ञाभिलाषी सर्व सज्जन महाशयोंको निवेदन किया जाता है, कि-जन्म-मरण-रोग-शोक-आधि-व्याधि संयोग-वियोगादि-उपाधियुक्त दुस्तर संसार समुद्रके परिभ्रमणका दुःख निवारण करनेके लिये, आत्महितैषी पुरुषोंको जिनाज्ञानुसार शांतिपूर्वक धर्मकार्य करना चाहिये। जिसमें वर्तमानिक द्रव्यगच्छ परंपरा बहुत समुदायकी देखादेखीकी रूढिको अहितकारी जानकर त्यागना चाहिये। और सुधारेके जमानेमें गच्छांतर भेदोंकी भिन्न भिन्न प्रवृत्ति देखकर शंकाशील होकर धर्मकार्योंमें शिथिलता करनाभी योग्य नहीं, किंतु 'मेरा सो सच्चा' का आग्रह छोडकर मध्यस्थ बुद्धिसे गुणग्राही होकरके सत्यकी परीक्षाकरके उसको अंगीकार करना, यही मनुष्य जन्मकी सफलताका कारण है।

यद्यपि खंडनमंडनके विवादमें सत्यासत्यका विचार छोडकर अपनापक्ष स्थापन करनेके लिये शुष्कवाद या वितंडावाद करनेवाले आजकल बहुत लोग देखे जाते हैं. मगर दूसरेकी सत्यबात अंगीकार करके अपना असत्य आग्रहको छोडनेवाले बहुतही थोडे देखनेमें आते हैं। जब दूसरेके पक्षका खंडन करनेके इरादेसे उद्यम करनेमें आता है, तब उसपक्षवालेकी अनेक शास्त्र प्रमाणसहित युक्तिपूर्वक सत्यबातकोभी छोडकर भोले जीवोंको अपना पक्ष सत्य दिखलानेके लिये शास्त्रोंके आगे पीछेके संबंध वाले सब पाठोंको छुपाकर थोडेसे अधूरे २ पाठ लिखते हैं. तथा शास्त्रकारोंके अभिप्राय विरुद्ध उनके अर्थ करते हैं. या शास्त्रीय बातको झूठी ठहरानेकेलिये कुयुक्तियें लगानेमें उद्यम किया जाता है. अथवा विषय संबंध छोडकर विषयांतर लेकर निष्प्रयोजन व्यक्तिगत आक्षेप करने लग

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाते हैं. और अपनी या अपने पक्षकारोंकी बडाई करने लगते हैं। मगर शास्त्रोंमें तो कहा है. कि-आत्मप्रदेशगत मिथ्यात्वसेभी प्ररूपणागत मिथ्यात्व अधिक दोषवाला होनेसे अनेक भवभ्रमण करानेवाला होता है।

और अनादिकालसे ११ अंगादिकको देखकर अनंतजीव संसार परिभ्रमणके दुःखसे मुक्त होगये. और अनंतजीव संसार परिभ्रमणके दुःखको बढानेवालेभी होगये। इसका आशय यही है, कि. अतीव गहनाशयवाले, अपेक्षा गर्भित शास्त्रकारोंके अभिप्रायको समझकर वर्ताव करनेवाले मुक्तिगामी होते हैं। और शास्त्रकारोंके अभिप्राय विरुद्ध होकर शब्दमात्रके आग्रहमें पडनेवाले संसारगामी होते हैं.। मगर जो आत्मार्थी होते हैं वो तो शब्द मात्रके विवादको छोडकर तात्पर्यार्थ तरफ दृष्टि करते हैं, और जो आग्रही होते हैं, वो तात्पर्यार्थको छोडकर शब्दमात्रके विवादको विशेष बढाते हैं। इसी ही कारणसे रागद्वेषादि भाव शत्रुओंको हटानेवाला वीतराग सर्वज्ञ भगवान्का कथन किया हुआ अविसंवादी शांतिप्रिय जैनशासनमें अभी विसंवादरूपी विरोध भावको स्थान मिलगया है।

और पहिले तो तीर्थंकर महाराजोंके जितने गणधर होतेथे उतने ही गच्छ [साधु समुदायकी ओलखान] होतेथे और पीछेभी प्रभावकाचार्योंकी बहुत समुदाय होनेसे कुल-गण-शाखा वगैरह होतेथे, मगर सबकी प्ररूपणा और क्रिया एक समान होनेसे संपशांतिसे मिलते हुए आत्मकल्याण करतेथे, उस समय विरोधी प्ररूपणाके अभावसे किसीकोभी कोई तरहकी शंकाका कारण या अपने गच्छके आग्रहका कारण नहींथा. मगर श्रीवीरप्रभुके निर्वाणबाद् पडताकाल होनेसे कितनेक शिथिलाचारी चैत्यवासी होगये, उन्हींसे गच्छोंका आग्रह और भिन्नभिन्न प्ररूपणा विशेष होने लगी. तबसे ही शास्त्रोक्त जिनपूजा विधिमें कुछ अविधिभी होगई, और जैन पंचांगके विच्छेद होनेपर जैनसमाज लौकिक टिप्पणा मानने लगा, उसमें श्रावणादिभी महीने बढते हैं उस मुजब वर्ताव शुरू किया, तबसे महामांगल्यकारी शांतिमय अति उत्तम पर्युषणा जैसे पर्व आराधनमेंभी भेद पडगया. और शासन नायक श्रीवर्द्धमान स्वामिके छ कल्याणक नहीं मानने वगैरह कितनीही बातोंका विवाद

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उपस्थित होगया. उसके विषयमें आगे लिखनेमें आवेगा, मगर इस जगह तो हम केवल पर्युषणा संबंधी थोडासा लिखतेहैं.

जैन पंचांगके अनुसार जब वर्ताव करनेमें आताथा तब पर्युषणासंबंधी " अभिवड्ढियंमि वीसा, इयरेसु सवीसई मासो " इत्यादि निशिथ भाष्य-चूर्णि, बृहत्कल्प भाष्य-चूर्णि-वृत्ति, पर्युषणाकल्पनिर्युक्ति-चूर्णि-वृत्ति वगैरह प्राचीन शास्त्रोंमें खुलासा लिखा है, कि, आषाढ चौमासीसे वर्षाऋतुमें जीवाकुलभूमि होनेसें जीवदयाके लिये, मुनियोंको विहार करनेका निषेध और वर्षाकालमें १ स्थानमें ठहरना उसका नाम पर्युषणा है. इसलिये जब अधिक महिना होवे तब उसको तेरह (१३) महीनोंका अभिवर्द्धित वर्ष कहतेहैं, उस वर्षमें आषाढ चौमासीसे २० वें दिन प्रसिद्ध पर्युषणा करना । और जिस वर्षमें अधिक महिना न आवे तब उसको १२ महिनोंका चंद्रवर्ष कहतेहैं, उस वर्षमें आषाढ चौमासीसे ५० वें दिन प्रसिद्धपर्युषणा करना [वर्षाकालमें रहनेका निश्चय कहना] उसीमेंही उसीदिन वार्षिक कार्य और उसका उच्छव किया जाता है, यह अनादि नियम है. इसलिये निशिथ चूर्णि, पर्युषणा कल्पनिर्युक्ति, चूर्णि, जिवाभिगमसूत्रवृत्ति, धर्मरत्नप्रकरणवृत्ति, कल्पसूत्रमूल और उसकी सबी टीकाओंमें संवच्छरी शब्दकोभी पर्युषणा शब्दसे व्याख्यान कियाहै, और प्रसिद्ध पर्युषणा के दिनसे भिन्न (अलग) वार्षिक कार्योंका दिन कोईभी नहीं है, किंतु एकही है. इसीको पर्युषणा पर्व कहो, संवच्छरीपर्व कहो, सांवत्सरिकपर्व कहो या वार्षिक पर्व कहो, सबका तात्पर्य एकही है । और कारणवश " अंतरा वि य से कप्पइ, नो से कप्पइ तं रयणिं उवायणा वित्तए " इत्यादि कल्पसूत्र वगैरह शास्त्र पाठोंके प्रमाणसे आषाढ चौमासीसे ५० वें दिन पहिले तो पर्युषणा करना कल्पताहै, मगर ५० वें दिनकी रात्रिको उल्लंघन करके आगे करना नहीं कल्पताहै । ५० वें दिनतक पर्युषणाकरनेको ग्राम नगरादि योग्यक्षेत्र न मिलसकेतो, जंगलमेंभी वृक्ष नीचे अवश्य पर्युषण करनाकहाहै । और अभिवर्द्धितवर्षमें २० दिने, तथा चंद्रवर्षमें ५० दिने पर्युषणा न करे और विहार करेतो " छकाय जीव विराहणा " इत्यादी स्थानांगसूत्रवृत्ति वगैरह पाठोंसे छकाय जीवोंकी विराधना करनेवाला, आत्मघाती, संयम और जिनाज्ञाको विराधन करनेवाला कहा है । यह नियम जैन पंचांगानुसार पौष और आषाढ बढताथा तब चलताथा, मगर जबसे जैन पंचांग

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विच्छेद हुआ, तबसे लौकिक टीप्पणा मुजब मास-पक्ष-तिथी-वार-नक्षत्र-मुहूर्तादि व्यवहार जैन समाजमें शुरू हुआ. उसमें श्रावण भाद्रपदादि मासभी बढने लगे. तब जैनसंघने श्रीवीर निर्वाणसे ९९३ वर्षे अधिक महिने वाला वर्षमें २० दिने पर्युषणापर्व करनेकी मर्यादा बंध करी और अधिक महिना हो, चाहे न हो, तो भी५० वें दिन पर्युषणापर्वमें वार्षिक कार्य करनेका नियम रख्खा. सो "जैनटिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगांते चाऽऽषाढ एव वर्धते नान्ये मासास्तट्टिप्पणकं तु अधुना सम्यग् न ज्ञायते ततः पंचाशतैव दिनैः पर्युषणा युक्तेति वृद्धाः" यह पाठ कल्पसूत्रकी सबी टीकाओं में प्रसिद्धही है । उसके अनुसार श्रावण बढे तो दूसरे श्रावणमें और भाद्रपद बढे तो प्रथम भाद्रपदमें ५० दिने पर्युषणा पर्व करना जिनाज्ञा है । और पहिले मास वृद्धिके अभावसे ५० वें दिन पर्युषण करतेथे, तब पिछाडी कार्तिक तक ७० दिन ठहरतेथे, मगर जब मास वृद्धी होनेपर २० दिने पर्युषणा करतेथे, तब तो पर्युषणाके पिछाडी कार्तिक तक १०० दिन ठहरतेथे, यह बात निशिथभाष्य-चूर्णि-पर्युषणाकल्पचूर्णि-बृहत्कल्प चूर्णि-वृत्ति-जीवानुशासनवृत्ति, गच्छाचारपयन्नवृति, स्थानांगसूत्रवृति वगैरह शास्त्र पाठोंसे सिद्ध होती है । और वर्तमानमें श्रावण, भाद्रपद तथा आश्विन बढनेपरभी ५० दिने पर्युषणापर्व करनेसे पिछाडी कार्तिक तक १०० दिन ठहरते हैं । यह भी कल्पसूत्रकी टीकाओंके अनुसार होनेसे जिनाज्ञानुसारही है, इसलिये इसमे किसी प्रकारका दोष नहीं है. ।

इस ऊपरके शास्त्रीय लेखपर दीर्घ दृष्टिसे निष्पक्ष होकर मध्यस्थ बुद्धिसे विचार किया जावे तो स्पष्ट मालूम हो जावेगा, कि-पर्युषणा पर्व करनेमें जैन टिप्पणानुसार या लौकिक टिप्पणानुसार अधिक मास या कोईभी मास वा कोईभी दिन बाधक नहीं है. क्योंकि पर्युषणा पर्व करनेमें ५० दिनोंका व्यवहारिक गिनतीका नियम होनेसे पर्युषणा पर्व दिन प्रतिबद्ध ठहरता है. किंतु मास प्रतिबद्ध नहीं ठहर सकता । और ५० दिनोंकी गिनतीमें अधिक महिनेके ३० दिवस तो क्या मगर एक दिवस मात्रभी गिनतीमें नहीं छुट सकता । जिसपरभी पर्युषणा पर्व-- दो श्रावण होनेपरभी भाद्रपद मास प्रतिबद्ध ठहराना १. अधिक महिनेके ३० दिनोंको बिचमेसे छोड देना २. बीश दिनोंसे पर्युषणा पर्व करने की बातको सर्वथा उडा देना ३. श्रावण भाद्रपद या आश्विन बढनेसे १००

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन होनेपरभी उसको ७० दिन कहनेका आग्रह करना ४. सो सर्वथा शास्त्रकारोंके विरुद्ध है।

अब पर्युषणा पर्व करने संबंधी ५० दिनोंकी गिनती करनेमें अधिक महीनेके ३० दिनोंको गिनतीमेंसे छोड देनेका आग्रह करनेके लिये कितनेक लोग शास्त्रविरुद्ध होकर कुयुक्तियें करतेहैं उसके विषयमें थोडासा लिखते हैं :--

१—कल्पसूत्रादिमें आषाढ चौमासीसे दिनोंकी गिनतीसे ५० वें दिन अवश्यही वार्षिककार्य पर्युषणापर्व करना कहाहै, उसमें अधिक महीनेका १ दिनमात्रभी गिनतीमें नहीं छुट सकता और ५०वें दिनकी रात्रिकोभी उल्लंघन करना नहीं कल्पे, जिसपरभी वर्तमानिक श्रावण भाद्रपद बढनेपर ८० दिने पर्युषणापर्व करते हैं, सो शास्त्र विरुद्ध है इसका विशेष खुलासा इसीही ग्रंथकी आदिसे पृष्ठ २७ तक देखो.

२--अधिक महीनेके ३० दिन जैनशास्त्रोंमें गिनतीमें नहीं लिये, ऐसा कहते हैं सो भी शास्त्र विरुद्ध है, अधिक महिनेके ३० दिनोंको-दिनोंमें, पक्षोंमें, मासोंमें, वर्षोंमें और युगकी गिनतीमें खुलासा पूर्वक गिने हैं, विशेष खुलासा देखो पृष्ठ २८ से ४८ तक.

३—अधिक महीना काल चूलारूप है सो गिनतीमें नहीं लेना ऐसा कहतेहैं, सो भी शास्त्र विरुद्ध है. निशीथचूर्णि, दशवैकालिक वृहद्वृत्ति वगैरह शास्त्रोंमें अधिक महीनेको काल चूलाकी शिखर रूप श्रेष्ठ, [उत्तम] ओपमादीहै और उसके ३० दिनोंको गिनतीमेंभी लिये हैं. इसका विशेष खुलासा देखो पृष्ठ ४९ से ६५ तक। तथा पृष्ट ७५ से ९१ तक.

४-पर्युषणाकल्प चूर्णि तथा निशीथ चूर्णिके पाठसे दो श्रावण होवें तो भी भाद्रपदमें पयुषणापर्व करना ठहराते हैं सो भी शास्त्र विरुद्ध है, दोनों चूर्णिके पाठोंमें अधिक महीना पौष या आषाढ आवे तब उसके ३० दिन गिनतीमें लेकर आषाढ चौमासीसे २० वें दिन श्रावणमें पर्युषणा पर्व करना लिखाहै और अधिक महीना न होवे तब ५० वें दिन भाद्रपदमें पर्युषणा करना लिखाहै। और ५० वें दिनको उल्लंघन करनेवालोंको प्रायश्चित कहा है, इसलिये दो श्रावण होनेपरभी ८० दिने भाद्रपदमें पर्युषणा करना योग्य नहीं है। और अधिकमासके ३० दिन गिनतीमें छोडदेनाभी शास्त्र वि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रुद्ध है. इसका विशेष खुलासा देखो दोनों चूर्णिके विस्तार पूर्वक पाठों सहित पृष्ठ ९१ से १०६ तक

५- जैन टिप्पणामें अधिक महीना होताथा तबभी २० वें दिन श्रावण शुदी पंचमीको पर्युषणा वार्षिक कार्य होतेथे, इसलिये २० वें दिनकी पर्युषणामें वार्षिक कार्य नहीं हो सकते, ऐसा कहनाभी शास्त्र विरुद्धहै इसका विशेष खुलासा देखो पृष्ट १०७ से ११७ तक.

६- श्रावण भाद्रपद या आश्विन बढे तो भी ५० वे दिन पर्युषणापर्व करनेसे शेष कार्तिक तक १०० दिन होते हैं जिसपरभी ७० दिन रहनेका आग्रह करते हैं सोभी शास्त्र विरुद्ध है ७० दिन मास वृद्धिके अभाव संबंधी हैं और मास वृद्धि होवे तब १०० दिन रहना शास्त्रानुसार है। इसका विशेष खुलासा पृष्ठ ११७ से १२८ तक, तथा १७४ से १८५ तक देखो.

७ अधिक महीना होनेसे उस वर्षमें १३ महीने तथा चौमासेमें ५ महीने होते हैं. तब उतनेही महीनोंके कर्मबंधनभी होते हैं, जिसपरभी १२ महीनोंके क्षामणे करने कहते हैं. सो भी शास्त्र विरुद्ध है. अधिक महीना होवे तब १३ महीनोंके क्षामणे करना शास्त्रानुसार हैं; इसका विशेष खुलासा पृष्ठ १३३ से १३६ तक तथा १७० से १७१ तक और पृष्ठ ३६२ से ३७८ तक देखो.

८ अधिक महीनेमें सूर्यचार नहीं होता ऐसा कहनाभी शास्त्र विरुद्धहै, छ छ महीने १८३ वें दिन, सूर्य दक्षिणायनसे उत्तरायनमें और उत्तरायनसे दक्षिणायनमें हमेशा होता रहता है, उसमें अधिक महीनेके ३० दिनोंमेंभी जैनशास्त्र मुजब या लौकिक टिप्पणा मुजबभी सूर्यचार होता है. इसका विशेष खुलासा देखो पृष्ठ १३७ से १३९ तक

९ अधिक महीने के ३० दिनोंमें देवपूजा मुनिदान वगैरह धर्मकार्य करने, मगर उसके ३० दिनोंको गिनतीमें नहीं लेनेका कहना, सो भी शास्त्र विरुद्ध है। जितने रोज देवपूजादि धर्मकार्य किये जावेंगे, उतने दिन अवश्यही गिनतीमें लिये जावेगें, और जैसे मुनिदानादि दिन प्रतिबद्धहैं, वैसेही पर्युषणाभी ५० दिन प्रतिबद्धहै. इसका विशेष खुलासा पृष्ठ १४२ से १४३ तक देखो

१० अधिक महिनेमें विवाहादि शुभकार्य नहीं होते, उसमु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जब पर्युषणा पर्वभी नहीं हो सकते. ऐसा कहनाभी शास्त्र विरुद्ध है, मुहूर्त्तवाले विवाहादि तो मलमास, अधिकमास, क्षयमास, १३ महिनोंके सिंहस्थ, अधिकतिथि, क्षयतिथि, गुरुशुक्रका अस्त और हरि शयनका चौमासा वगैरह कितनेही तिथि-वार-नक्षत्र-मास वगैरह योगोंमें नहीं किये जाते, मगर बिना मुहूर्त्तके धर्मकार्य करनेमें तो किसी समयका निषेध नहीं हो सकता इसी तरह पर्युषणा पर्वभी अधिकमासमे,१३ महीनोंके सिंहस्थमें, और चौमासेमें करनेमे आते हैं। इसमें अधिकमहीना या कोईभी योग बाधक नहीं हो सकता. इसका विशेष खुलासा पृष्ठ १९३ से २०४ तक देखोः—

११– अधिकमहीनेको वनस्पतिभी अंगीकार नहीं करती ऐसा कहनाभी शास्त्र विरुद्ध है, अधिक महीनेके ३० दिन तो क्या १ दिन मात्रभी वनस्पति नहीं छोड सकती, किंतु हरेक समय प्रत्येक दिवसको अंगीकार करती है. इसका विशेष खुलासा पृष्ठ २०५ से २१० तक देखो.—

इत्यादि मुख्य २ बातों संबंधी शास्त्रीय प्रमाण और युक्तिपूर्वक इस प्रथमभागमें अच्छीतरहसे खुलासापूर्वक लिखनेमें आया है.

और इस ग्रंथको पक्षपात रहित होकर संपूर्ण पढनेवाले सज्जनोंको सत्यासत्यकी परीक्षा स्वंय होसकेगी, इससे यहांपर विशेष लिखनेकी कोई अवश्यकता नहीं है।

ग्रंथकारका उद्देश क्या है ?

इस ग्रंथकारका मुख्य उद्देश यहीहै, कि-सबगच्छवाले संपपूर्वक सुखशांतिसे धर्म कार्य करें, मगर पर्युषणा जैसे धार्मिक शांतिके दिनोंमें अधिक महिनेके ३० दिनोंको धर्मकार्योंमें गिनतीमेंसे छोड देनेके लिये तपगच्छके मुनिमहाराज जो खंडन मंडनका विषय व्याख्यानमें चलाते हैं, सो सर्वथा शास्त्र विरुद्ध है.और समयके प्रतिकूल होनेसे-कर्मबंधन, कुसंप व शासनहिलना कराने वालाहै (इसीका निर्णय इस ग्रंथमें अच्छी तरहसे लिखा गया है) उसको (इस ग्रंथके वांचे बाद) अवश्य बंध करना योग्य है.

पक्षपात रहित ग्रंथकी रचना

" पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु । युक्ति मद्वचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः ॥ १ ॥ " इत्यादि महापुरुषोंके न्यायानुसार पक्षपात रहित होकर आगम पंचांगी सम्मत युक्तिपू

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थैक खरतरगच्छ, तपगच्छ, अंचलगच्छादि सब गच्छवालोंके वाक्योंका संग्रह इसग्रंथमें करनेमें आया है। मगर अमुक गच्छवालेके अमुक आचार्यके वाक्य हमको मंजूर नहीं, ऐसा एकांत आग्रह किसी जगहभी करनेमें नहीं आया. और शास्त्रविरुद्ध युक्ति बाधित वाक्य तो कोईगच्छवालेकाभी मान्य करना योग्य नहीं. यह बात सर्व जन सम्मतहीहै, वोही न्याय इस ग्रंथमें रक्खा गया है. इसलिये पाठकगणको किसी गच्छ समुदायका पक्षपात न रखकर अवश्य संपूर्ण अवलोकन करके सार निकालना चाहिये.

इस ग्रंथका लेखक मैं खास संसारीपनेमें तपगच्छका वीसापोरवाल श्रावकथा मगर उपाध्यायजी श्रीसुमतिसागरजी महाराजके पास श्रीसिद्धक्षेत्र (पालीताणा) में विक्रम संवत् १९६० वैशाख शुदी २ को खरतरगच्छमें दीक्षा अंगीकार की,तो भी दोनों गच्छोंके पूर्वाचार्योंपर तथा वर्तमानिक मुनिमहाराजोंपर पूज्यभाव था, और हैभी। मगर जिस २ अंशमें शास्त्र विरुद्ध जिस २ बातोंका झूठाही आग्रह किया गया है,उन २ बातोंकी आलोचना करके शास्त्रानुसार सत्य बातें जनसमाजमें प्रकट करना, यह मैरा खास कर्तव्य समझ कर मैने इस ग्रंथमें इतना लिखाहै। इसमे किसीका पक्षपात न समजना चाहिये. और किसीको नाराज होनेकाभी कोई कारण नही है। वर्तमानिक समयके अनुसार परंपराकी अंधरूढीको त्यागना और सत्यको ग्रहण करना, सब सज्जनोंको प्रिय है। और समय बदलता जाता है. संपसे शासन्नोनतिके कार्य करनेकी बहुत जरुरत है, इसलिये कुसंप वढानेवाला पर्युषणाके व्याख्यानमें आपसका खंडन मंडन चलाना योग्य नहीं है. विशेष दूसरे, तीसरे और चौथे भागमे अनुक्रमसे लिखनेमें आवेगा।

क्षमा याचना तथा अपनी भूल स्वीकार।

इसग्रंथकी रचना करते समय मैरी अल्पवय व अल्प अभ्यास होनेसे, इसग्रंथमें-लेखक दोष, भाषादोष, दृष्टिदोष, पुनरुक्ति दोष, प्रेसदोष व शास्त्रीय पाठोंकी विशेष अशुद्धताके दोषोंकी पाठक गण अवश्य क्षमा करें तथा हंसकी तरह दोष त्यागकर सार ग्रहण करें, और सुधारकर वांचे; दूसरी आवृत्तिमें इन दोषोंका संशोधन अच्छी तरहसे करनेमें आवेगा

और सुबोधिका व दीपिका, किरणावली आदिकमें शास्त्र विरुद्ध जो जो बातें लिखी हैं, उन सब बातोंका निर्णय इस ग्रंथमें लिखा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गया है. उसको समझकर उनके अनुयायी विद्वान् पुरुषोंको उनकी सब भूलोंको क्रमशः अवश्य सुधारना योग्य है, तथा इस ग्रंथमेंभी जो कोई बात शास्त्र विरुद्ध देखनेमें आवे तो जरूर मेरेको लिख भेजना. लिखने वालेका उपकार मानकर अपनी भूलको अवश्य स्वीकार करूंगा, और दूसरी आवृत्तिमें सुधार लूंगा.

यह ग्रंथ विलंबसे प्रकट होनेका कारण।

इस ग्रंथकी रचनाका कारण ग्रंथकी आदिमेंही लिखाहै तथा सुबोधिकादिककी खंडनमंडन संबंधी भूलोंका कारण प्रगटही है। और यह ग्रंथ छपनेपर शीघ्रही प्रगट होने वालाथा. मगर कितनेही महाशयोंका कहनाथा कि-यदि मुनिमंडलकी सभामें, विद्वानोंकी समक्ष, इसविषयका, शास्त्रार्थसे निर्णय हो जावे तो बहुत अच्छा होवे, और ३ वर्ष पहिले दो भाद्रपद होनेसे इसके निर्णयकी चर्चा खूब जोरशोरसे चलीथी, तब मैनेभी मुंबईसे 'पर्युषणा निर्णयका शास्त्रार्थ' करने संबंधी विज्ञापन छपवाकर जाहिर कियाथा. उसपर आनंदसागरजी और शांतिविजयजी हां हां करने लगेथे तो भी आडी २ बातें निकालकर चुप बैठ गये, इसका खुलासा आगे लिखूँगा. और अन्य कोईभी मुनि सभामें निर्णय करनेको तैयार नहीं हुए. इसलिये अब यह ग्रंथ इतने विलंबसे प्रकाशित किया जाता है. ग्रंथ एक-हजार पृष्ठके लगभग होनेसे, ४ भागोंमें अनुक्रमसे यथा अवसर प्रकट होता रहेगा. और मंगवाने वाले साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-यति-श्रीपूज्य-ज्ञान भंडार-लायब्रेरी और साक्षर वर्ग सबको बिना किंमतसे भेट भेजा जावेगा।

१-एक वहेम ॥

तपगच्छके मुनिमहाराजोंने अपनी समाजमें यहभी एक तरहका वहेम ठसा दिया है, कि-अधिकमहीनेमें विवाह सादी वगैरह शुभ कार्य लोग नहीं करते हैं, उसी तरह अधिकमहीनेमें पर्युषण पर्वादि धार्मिक कार्यभी नहीं हो सकते. मगर तत्त्व दृष्टिसे विचार किया जावे तो यहभी एक तरहका एकांत आग्रहसे झूठाही वहेम है, क्योंकि विवाहादि मुहूर्त्तवाले कार्य तो मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्रादि देखकर, वर्ष छ महीने आगे पीछेभी करते हैं. परंतु बिना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुहूर्तके लोकोत्तर धर्मकार्य तो नियमित दिवससे आगे पीछे कभी नहीं हो सकते. इसलिये लौकिक वालेभी मुहूर्त वाले कार्य नहीं करते, मगर बिना मुहूर्तके दान पुण्य परोपकारादि तो विशेष रूपसे करनेके लिये अधिकमहीनेको 'पुरुषोत्तम अधिक मास' कहते हैं, उसकी कथाभी सुनते हैं और सिंहस्थमें नाशिकादि तीर्थोंमें यात्राका मेलाभी भरते हैं। इसी प्रकार वर्तमानिक जैन समाजमेंभी मुहूर्तवालेकार्य अधिकमहीनेमें नहीं करते. मगर बिना मुहूर्तके पर्युषणादि धार्मिक कार्य करनेमें कोई हरजा नहीं है। अधिक महीनेके ३० दिनोंको मुहूर्त्तादि कार्योंमें नहीं लेते, परंतु बिना मुहूर्तके (दिवसोंकी संख्यासे प्रतिबद्ध) धार्मिक कार्योंमें लेतेहैं। बस! इसका मर्म सरल दिलसे न्यायपूर्वक समझ लिया जावे तो अधिकमहीनेमें पर्युषणादि धर्म कार्य नहीं हो सकते. ऐसा एकांत आग्रहका झूठा वहेम आपसेही निकल सकता है. इसका विशेष निर्णय इसग्रंथको बांचने वाले सज्जन स्वयंकर सकेंगे।

२- बे समझ या हठाग्रह॥

अधिक महिनेके अभावमें ५० दिने भाद्रपदमें पर्युषणा करना लिखा है। ५० दिनके अंदर करनेवाले आराधक होतेहैं उपरांत करनेवाले विराधक होतेहैं. इसलिये ५० वें दिनकी रात्रिको किसीप्रकारभी उल्लंघन करना नहीं कल्पताहै. यह बात जैन समाजमें प्रसिद्ध ही है। जिसपरभी सिर्फ भाद्रपद शब्दमात्रको पकडकर वर्तमानिक दो श्रावण होनेपरभी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेका आग्रह करतेहैं, मगर ८० दिन होनेसे शास्त्रविरुद्ध होता है, इसका विचार करते नहीं हैं।

और पर्युषणाके पिछाडी हमेशा ७० दिन रखनेका एकांत आग्रह करते हैं, मगर ७० दिनका नियम अधिक महिनेके अभावसंबंधीहै और अधिक महिना होवे तब निशीथचूर्णि, बृहत्कल्पचूर्णि, स्थानांगसूत्रवृत्ति और कल्पसूत्रकी टीकाओंमें १०० दिन रहनेका कहा है। इसलिये ७० दिन या १०० दिन यथा अवसर दोनों बातें मान्य करने योग्य हैं। जिसपरभी १०० दिन संबंधी शास्त्रप्रमाणोंको छोडकर सिर्फ ७० दिनके शब्द मात्रको आगेकरके १०० की जगहभी ७० दिन रहनेका आग्रहकरतेहैं. इसलिये उपरकी दोनों बातें संबंधी शास्त्रीय अपेक्षाकी बे समझ है, या समझने परभी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हठाग्रह है। इसका विचार तत्त्वज्ञ पाठकगणको करना चाहिये।

३– कहतेहैं मगर करतेनहीं, यहभी देखिये-आग्रह !

अधिकमहीनेके ३० दिनोंको गिनतीमेंसे छोडदेनेके आग्रह करनेवाले दो श्रावण होवे तो भी भाद्रपद तक ५० दिन हुए ऐसा कहतेहैं, मगर प्रत्यक्ष प्रमाण व न्यायकी युक्तिसे विचारकर देखा जावे तो यह कहना सर्वथा अनुचित मालूम होता है। देखिये– किसी श्रावक या श्राविकाने आषाढचौमासीसे उपवास करने शुरू किये होवें, उसको बतलाईये दो श्रावण होनेपर ५० उपवास कब पूरे होवेंगे और ८० उपवास कब पूरे होवेंगे ? इसके जवाबमें छोटासा बालक होगा वहभी यही कहेगा, कि–५० दिनोंके ५० उपवास दूसरे श्रावणमें और ८० दिनोंके ८० उपवास दोश्रावण होनेसे भाद्रपदमें पूरे होवेंगे। इसीतरह साधुसाध्वीयोंके संयमपालनेमें, तथा सर्व जीवोंके प्रत्येक समयके हिसाबसे ७।८ कर्मोंके शुभाशुभ बंधन होनेमें और धार्मिक पुरुषोंके धर्मकार्योंसे कर्मोंकी निर्जरा होनेमें व सूर्यके उदय अस्तके परिवर्तन मुजब दिवसोंके व्यतीत होनेके हिसाबमें, इत्यादि सब कार्योंमें दो श्रावण होनेसे भाद्रपद तक ८० दिन कहते हैं। ५० उपवास दूसरे श्रावणमें, व ८० उपवास भाद्रपदमें पूरे होनेकाभी कहते हैं. और उपवासादि उपरके सबकार्योंमें अधिक महिनेके ३० दिनोंको बीचमें सामील गिनकर ८० दिन कहते हैं, ८० दिनोंके लाभालाभ-पुण्यपापके कार्य भी मंजूर करतेहैं. ऐसेही दो आश्विन होनेसे पर्युषणाके पिछाडी कार्तिक तक १०० दिन होते हैं, उसके १०० उपवास, व १०० दिनोंके कर्मबंधन तथा धर्मकार्य वगैरह सब कार्योंमें १०० दिन कहते हैं. और १०० दिनोंको आपभी व्यवहारमें मंजूर करते हैं। उसमें अधिक श्रावणके ३० दिनोंकी तरह अधिक आसोजकेभी ३० दिनोंको गिनतीमें मान्य करना कहतेहैं, मगर दो श्रावण होवे तब भाद्रपद तक ८० दिन होते हैं, व दो आश्विन होवे तब कार्तिक १०० दिन होते हैं उनोंको अंगीकार करते नहीं. और ८० दिनके ५० दिन व १०० दिनके ७० दिन कहते हैं यह जगत विरुद्ध कैसा जबरदस्त आग्रह कहा जावे इसको विवेकी जन स्वयं विचार सकते हैं।

४– कालचूलारूप अधिकमहीना पहिला या दूसरा ?

यद्यपि जैनटिप्पणा विच्छेद है, इसलिये लौकिक टिप्पणा मु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जब मास पक्षादि मानते हैं, मगर जैनशास्त्रतो मौजूदही हैं. इसलिये पर्युषणादि धार्मिक कार्य जैनसिद्धांत मुजब करनेमें आते हैं। और जैनशास्त्र मुजबही सब गच्छवाले अधिक महीनेको कालचूला कहते हैं। किंतु कितनेक प्रथम महीनेको कालचूला कहतेहैं, मगर प्रवचनसारोद्धार, सूर्यप्रज्ञातिवृत्ति, चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्ति, लोकप्रकाश, ज्योतिष्करंडपयन्नवृत्ति वगैरह शास्त्रप्रमाणोंसे दूसरा अधिक महीना कालचूला ठहरता है-- देखिये - "सट्ठीए अईयाए, हवई हु अहिमासो जुगद्धंमि। बावीसे पव्वसए, हवइ हु बीओ जुगंतंमि ॥ १ ॥ इत्यादि सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तिके अनुसार ६० पर्व (पक्ष) के ३० महीने व्यतीत होनेपर ३१ वा महीना दूसरा पौष अधिक होता है, और १२२ पक्षके ६१ महीनें जानेपर कालचूलारूप दूसरा आषाढ अधिक होताहै. उसी कालचूलारूप दूसरे अधिक आषाढमेंही चौमासी प्रतिक्रमणादि धार्मिककार्य सब गच्छवालोंके करनेमें आते हैं। और अधिक पौष व अधिक आषाढके दिनोंकी गिनती सहित, ६२ महीने, १२४ पक्ष, १८३० दिन और ५४९०० मुहूर्तोंके पांच वर्षोंका एक युग कहा है। इसलिये कालचूलारूप अधिक महीनेके ३० दिन गिनतीमें नहीं आते १, तथा कालचूलारूप अधिक महीनेमें चौमासी प्रतिक्रमणादि धार्मिक कार्य नहीं हो सकते २, और प्रथम महीनेको कालचूलाकहना ३, यह सब बातें शास्त्रविरुद्धहैं। इसको विशेष पाठकगण स्वयंविचार लेवेंगे।

५– पूर्वापर विसंवादी (विरोधी) कथन ॥

जिस अधिक महीनेको कालचूला कहकर गिनतीमे लेनेका व पर्युषणादि धर्मकार्य करनेका निषेध करतेहै, उसी कालचूलारूप दूसरे अधिक आषाढको गिनतीमें लेकर चौमासीप्रतिक्रमणादि कार्य आप करते हैं. जिसपरभी मुहसे कालचूलारूप अधिक महीनेको गिनतीमें नहीं लेना व उसमें धर्म कार्य नहीं करने कहतेहैं और कालचूलारूप अधिक महीनेको गिनकर धर्मकार्य करने वालोंको दोष बतलाते हैं। एक जगह कालचूलारूप अधिक महीना गिनतीमें छोडते हैं। दूसरी जगह उसीकोही आप गिनतीमें लेकर अंगीकार करते हैं और दूसरे गिनने वालोंको दोष बतलाते हैं यह तो "मम वदने जिव्हा नास्ति" की तरह कैसा पूर्वापर विसंवादी (विरोधी) कथन है, सो भी विचारने योग्य हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६– कालचूला शिखररूप है या चोटीरूप है ?

अधिक महीनेको शास्त्रोंमें कालचूला कहा है और दिनोंकी गिनतीमेंभी लिया है जिसपरभी कितनेक महाशय दिनोंकी गिनतीमें निषेध करनेके लिये चोटीरूप कहते हैं. और जैसे पुरुषके शरीरके मापमें उसकी चोटीकी लंबाईका माप नहीं गिना जाता, तैसेही अधिकमहीना कालपुरुषकी चोटीसमान होनेसे उसीके ३० दिनोंको प्रमाण गिनतीमें नहीं लिये जाते. ऐसा दृष्टांत देते हैं. सो भी शास्त्र विरुद्ध है, क्योंकि पुरुषकी उँचाईकी गिनतीमें उसकी चोटी १–२ हाथ लंबी हो तो भी कुछभी गिनतीमें नहीं आती, उससे उसका प्रमाणभी नहीं बढ सकता, मगर जैसे देवमंदिरोंके शिखर व पर्वतोंके शिखर प्रत्यक्षपणे उनकी उंचाईकी गिनतीमें आते हैं, उसीसे उन्होंको उंचाईका प्रमाणभी बढजाता है. तैसेही अधिकमहीनेको कालचूला कहा है सो शिखररूप होनेसे गिनतीमें आता है, उससे वर्षका प्रमाणभी १२ महीनोंके ३५४ दिनोंकी जगह १३ महीनोंके ३८३ दिनोंका होता है, और वृद्धिके कारण चंद्र वर्षकी जगह अभिवर्द्धित वर्ष कहा जाता है. इसलिये शिखरकी जगह घासरूप चोटी कह करके गिनतीमें लेनेका निषेध करना सो "करे माणे अकरे" जमालिकी तरह सर्वथा शास्त्र विरुद्ध है।

७- अधिकमहीना गिनतीमें न्यूनाधिकहै या बरोबरहै ?

जैन सिद्धांतोंके हिसाबसे तो जैसे १२ महीनोंके सबी दिन धर्मकार्योंमें बरोबरहैं तैसेही अधिक महीना होनेसे १३ महिनोंकेभी सबी दिन बरोबर हैं। इसमें न्यूनाधिक कोईभी नहीं है. और पापी प्राणियोंके कर्मोंकाबंधन होनेमें व धर्मीजनोंके कर्मोंकी निर्जरा होनेमें, समयमात्रभी खाली नहीं जाता और समय, आवलिका मुहूर्त, दिन, पक्ष, मास, वर्ष, युग, पल्योपम, सागरोपमादि कालमानमेंसे, समयमात्रभी गिनतीमें नहीं छूट सकता. जिसपरभी धर्म कार्योंमें ३० दिनोंको गिनतीमें छोड देनेका कहते हैं या अधिक महीनेके दिनोंको तुच्छ समझते हैं सो जिनाज्ञा विरुद्ध है इसको विशेष पाठक वर्ग स्वयं विचार लेवेंगे।

८– अधिकमहीना नपुंशकहै या पुरुषोत्तमहै ?

जैसे ब्रह्मचारी उत्तम पुरुष समर्थ होनेपरभी परस्त्री प्रति नपुं-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शक समान होताहै, तैसेही लौकिक रूढीसे अधिक महिनेमें विवाह सादी वगैरह आरंभ वाले या मुहूर्तवाले कार्य करनेमें तो नपुंशक समान कहतेहैं. तोभी दिनोंकी गिनतीमें लेते हैं। और निरारंभी व बिना मुहूर्तवाले दान, पुण्य, परोपकार, जप तपादि कार्य करनेमें तो अधिक महीनेको 'पुरुषोत्तम मास' कहा है सो प्रकटही है इस लिये जैन सिद्धांतोंके हिसाबसे या लौकिक शास्त्रोंके हिसाबसे दिनोंकी गिनतीमें निषेध करतेहैं सो शास्त्रीय दृष्टिसे व युक्ति प्रमाणसे या दुनियाके व्यवहारसेभी विरुद्ध हैं। इसलिये गिनतीमें निषेध कभी नहीं हो सकता, इसको विशेष पाठकगण स्वयं विचार सकते हैं।

९- दूसरे आषाढमें चौमासी करनेका क्या प्रयोजनहै ?

भो देवानुप्रिय! चौमासीप्रतिक्रमणादि कार्य ग्रीष्मऋतुपूरी होनेपर वर्षाऋतुकीआदिमें किये जाते हैं, और ज्येष्ट व आषाढ ग्रीष्मऋतु कही जाती है. इसलिये जब दो आषाढ होवे तब उन दोनों आषाढोंको ग्रीष्मऋतुमें गिनें जाते हैं, यह बात प्रत्यक्ष प्रमाणसे जगजाहीरहीहै. और जैनसिद्धांतानुसार दूसरे आषाढ शुदी पूर्णिमाका हमेशा क्षय होता है, इसलिये दूसरे आषाढ शुदी १४ को पांच वर्षोंका एक युग पुरा होता है, उसी रोज ग्रीष्मऋतुभी पूरी होती है, तथा पांचवा अभिवद्धितवर्षभी उसी रोज पूरा होता है. और १ युगमें सुर्यके दश अयनभी १८३० दिनोंसे उसी दिन पूरे होते हैं. इसलिये उसीदिन दूसरे आषाढ शुदी १४ को चौमासी प्रतिक्रमणादि करनेकी अनादि मर्यादा है। और प्रथम आषाढ ग्रीष्मऋतुमें होनेसे वहां ग्रीष्मऋतु, युग, वर्ष अयन वगैरह पूरे नहीं होते, व प्रथम आषाढमें वर्षाऋतुभी शुरू नहीं होती, इसलिये प्रथम आषाढमें चौमासी प्रतिक्रमणादि नहीं हो सकते. और शास्त्रीय हिसाबसे श्रावण वदी १ को (गुजरातकी अपेक्षा आषाढ वदी १ को) युगकी, वर्षकी और वर्षाऋतुकी शुरूआत होती है. इसलिये उसकी आदिमें और ग्रीष्मऋतुकी, वर्षकी, युगकी समाप्ति समय दूसरे आषाढमें चौमासीप्रतिक्रमणादि कार्य करने शास्त्रप्रमाण युक्तियुक्त हैं॥

१०- चौमासा ४ महीनोंका या ५ महीनोंका ?

देखिये-१२ महीनोंका वर्ष कहा जाता है, मगर अधिक मही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ना होवे तब १३ महीनोंका वर्ष कहा जाताहै, इसीतरह यद्यपि चौमासा शब्द व्यवहारसे ४ महीनोंका कहा जाता है, मगर अधिक महीना होनेसे १३ महीनोंके वर्षकी तरह चौमासाभी पांच महीनोंका होता है. इसलिये अधिक महीना न होवे तब तो ४ महीनोंके ८ पक्ष, १२० दिनोंका चौमासी, मगर अधिक महीना होवे तब पांच महीनोंके दश (१०) पक्ष, १५० दिनोंका चौमासी प्रतिक्रमणादि होते हैं। यहबात प्रत्यक्ष प्रमाणसे व लौकिक टिप्पणाके प्रमाणसे जग जाहिर है और आगमपंचांगी सिद्धांत प्रमाणसेतो अनादि सिद्ध है. इसलिये इसको कोईभी निषेध नहीं कर सकता. इसका विशेष विचार तत्वज्ञ पाठक गण स्वंय कर सकते हैं।

११– एक कुतर्क ॥

कितनेक कहतेहैं, कि- ' चौमासी आषाढमें करना कहाहै, इसलिये प्रथम आषाढमें करोगे तो दूसरा छूट जावेगा. और दूसरेमें करोगे तो, प्रथम छूट जावेगा. या दोनोंमें करोगे तो पुनरुक्ति दोष आवेगा ' ऐसी २ कुतर्क करते हैं सोभी सर्वथा शास्त्र विरुद्ध है। क्योंकि प्रथम आषाढमें ग्रीष्मऋतु वगैरह उपर मुजब कारण होनेसे चौमासी नहीं होसकता, इसलिये 'प्रथममें करोगे तो दूसरा छुट जावेगा' ऐसा कहना व्यर्थहीहै। और दो आषाढ होनेसे दोनोंकी गिनतीपूर्वक ५ महीने दूसरे आषाढमें चौमासी करते हैं, इसलिये ' दूसरेमें करोगे तो प्रथम छूट जावेगा ' ऐसा कहनाभी व्यर्थ है। और दोनों आषाढमें दो वार चौमासी नहीं किंतु ग्रीष्मऋतुकी समाप्ति वगैरह उपर मुजब कारणोंसे दूसरेमें एकही वार चौमासी करते हैं इसलिये 'दोनोमें करोगे तो पुनरुक्ति दोष आवेगा ' ऐसा कहनाभी व्यर्थहीहै। और चौमासी प्रतिक्रमण तो ४ महीने या मासवृद्धि होवे तब पांच महीने सब गच्छवाले एकबार प्रत्यक्षपने करते हैं इसलिये चौमासी ४ महीनें होवे मगर पांच महीने नहीं होवे, ऐसा प्रत्यक्ष असत्य भाषण करना योग्य नहीं है. इसकोभी पाठकगण स्वयं विचार लेंगे।

१२– दूसरे आषाढमें चौमासपर्वकी तरह पर्युषणाभी दूसरे भाद्रपदमें हो सके या नहीं ?

आषाढ-कार्तिकादि चौमासा ४-४ महीनोंसे होता है, मगर अधिक महिना होनेसे पांच महीनोंकाभी होता है, यह बात उपर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिख चुके है. इसलिये मासवृद्धि होनेसे १२० दिनकी जगह १५० दिनभी चौमासेमें होते है, उसमें किसी प्रकारका दोष नहीं बतलाया. मगर पर्युषणातो वर्षारुतुमें दिन प्रतिबद्ध होनेसे ५० दिने अवश्य करना कहाहै, उसपर १ दिनभी बढ जावे तो दोष कहा है. और दूसरे भाद्रपदमें पर्युषणा करें तो, ८० दिन होनेसे शास्त्रविरुद्ध होताहै, इसलिये दूसरे आषाढमें चौमासी पर्वकी तरह पर्युषणापर्व ८० दिन होनेसे दूसरे भाद्रपदमें नहीं हो सकता. किंतु सर्व शास्त्रोंकी आज्ञा मुजब ५० दिने प्रथम भाद्रपदमें करना युक्तियुक्त न्यायसंपन्न है. इसको तो पाठक गण स्वयं विचार सकते हैं.

१३–जिसको मानना उसीकोही उत्थापना।

हमेशां भाद्रपदमें पर्युषणा ठहरानेके लिये निशीथचूर्णिके पाठको आगे करते हैं, मगर चूर्णिमेंतो ५० दिने या ४९ दिने पर्युषणा करना लिखा है, परंतु ऊपरांत करना नहीं लिखा और अधिक महीनेके ३० दिनोंकोंभी गिनतीमें लिये हैं। जिसपरभी दो भाद्रपद होवें तब ५० दिने प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करना छोडकर, ८० दिने दूसरे भाद्रपदमें करते हैं। उसीसे जिस चूर्णिका पाठ मान्य करते हैं उसी चूर्णिका पाठ (दूसरे भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करनेसे) उत्थापन करते हैं। इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार सकते हैं.

१४-वितंडा वाद॥

८० दिने पर्युषणा करना शास्त्रविरुद्ध ठहराते हो मगर दो आषाढ होवे तब प्रथम आषाढमें चौमासी करो तो तुमारेभी ८० दिने पर्युषणा होवेंगे तब कैसे करोगे? समाधान भो-देवानुप्रिय! पर्युषणाके ५० दिनोंकी गिनती ग्रीष्मऋतुकी समाप्ति होनेपर वर्षाऋतुकी शुरूआतसे गिनी जाती है. और प्रथम आषाढ ग्रीष्मरुतुमें होनेसे उसमे चौमासी नहीं हो सकता और ग्रीष्मरुतुकी समाप्ति हुए बिना व वर्षारुतुकी शुरूआत हुए बिना प्रथम आषाढसे पर्युषणासंबंधी दिनोंकी गिनती नहीं हो सकती इसलिये प्रथम आषाढमें चौमासी करने का व उससे पर्युषणाके दिन गिननेका कहना अज्ञानताका कारण है,क्योंकि वर्षारुतुकी आदिमें दूसरे आषाके अंतमें चौमासी होनेसे पर्युषणाके दिन गिननेका निशीथचूर्णि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वगैरहमें कहा है. इसलिये प्रथम आषाढसे ८० दिन बतलाकर दो श्रावण होनेपरभी भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करना या दो भाद्रपद होवें तब दूसरे भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा ठहराना सर्वथा शास्त्र विरुद्ध है, इसकोभी विवेकी पाठक गण स्वयं विचार लेवेंगे।

१५- देखिये यह—कैसी कुयुक्ति है।

कितनेक महाशय अपना असत्य आग्रहको छोड सकते नहीं व सत्यबातको ग्रहणभी कर सकते नहीं और अपनी सचाई जमानेकेलिये कहते हैं, कि- " दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करना किसी आगममें नहीं लिखा " ऐसी २ कुयुक्तियें करते हैं और भद्रजीवोंको संशयमें गेरते हैं, मगर. इतना विचार करते नहीं है, कि- ५० दिने पर्युषणापर्व करना सबी आगमोंमें लिखा है., यही जिनाज्ञा है. देखिये— " सवीसई राए मासे " वा " सविंशतिरात्रे मासे " वा " दश पंचके " वा " पचाशतैव दिनैः पर्युपणा युक्तेति वृद्धाः " इन सबी वाक्योंके अर्थसे वर्तमानमें ५० दिने दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्व करना कल्पसूत्रादि आगमानुसार ठहरता है, इससे ५० दिने कहो, या दूसरा श्रावण प्रथम भाद्रपद कहो, दोनों एकार्थही हैं इसलिये दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करना किसी आगममें नहीं लिखा. ऐसी २ जानबुझकर कुयुक्तियें लगाकर अपना झूठा पक्ष जमानेकेलिये मायामृषा भाषण करना आत्मार्थियोंको योग्य नहींहै।

१६- उत्सूत्र प्ररूपणा ॥

चंद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति--जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति--भगवती--समवायांगादि-आगम-निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि-वृत्ति-प्रकरणादि शास्त्रोंमें, अधिक महीनेके ३० दिन गिनतीमें लिये हैं. वे सब पाठ छुपानेसे छुप सकते नहीं, और अर्थ बदलनेसे अर्थभी बदल सकते नहीं. इसलिये कितनेक आग्रही जन कहतेहैं, कि – ' उन शास्त्रोंमें तो अधिक महीना होनेसे १३ महीनोंके ३८३ दिनोंका अभिवर्द्धितवर्षका स्वरूप बतलाया है, मगर १३ महीनें गिनतीमें लेनेका कहां लिखा है ' ऐसा कहनेवाले उत्सूत्र प्ररूपणा करते हैं, क्योंकि उन शास्त्रोंमें जैसे १ वर्षके १२ महीनोंके ३५४ दिनोंका स्वरूप [गणित] प्रमाण बतलाया है, तैसेही अधिक महीना होनेसे उस वर्षके १३ महीनोंके ३८३ दिनोंका स्वरूप (गणित) प्रमाण बतलाया है, इसलिये

३

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चंद्र और अभिवर्द्धित दोनों वर्षोंका स्वरूप गणित प्रमाण सभी शास्त्रोंमें खुलासापूर्वक होनेपरभी १२ महीनोंके वर्षको प्रमाणभूत मानना और १३ महीनोंके वर्षको स्वरूपका बहाना बतलाकर प्रमाणभूत नहीं मानना यह तो प्रत्यक्षही अन्याय है । यदि १३ महीनोंका स्वरूप बतलानेका कहकर गिनतीमें प्रमाणभूत नहीं मानोंगे, तो, १२ महीनोंकाभी स्वरूप बतलाया है उसकोभी गिनतीमें प्रमाणभूत नहीं मान सकोगे और शास्त्रोंमें तो १२ या १३ महीनोंके दोनों वर्षोंके स्वरूप बतलाकर गिनतीमें प्रमाणभूत माने हैं. इसलिये दोनों प्रकारके वर्ष मानने योग्य हैं, इसमें शास्त्रप्रमाणसे तो एकभी निषेध नहीं हो सकता. देखिये– ११ अंग,व १४ पूर्वादिमें जैसे दर्शन-ज्ञान-चारित्र-चौदहराजलोक--षट्द्रव्य--नवतत्त्व--चौदहगुणस्थान--जीवाजीवादि पदार्थोंका स्वरूप व चरणकरणानुयोगमें संयमके आराधनकी क्रियाका स्वरूप बतलाया है. वोही सब मान्य करने योग्य है. इसलिये स्वरूप बतलाना सोही श्रद्धापूर्वक मान्य करने योग्य सत्यप्ररूपणा कही जाती है । जिसपरभी चरणकरणानुयोगमें संयमकी क्रियाका व षट्द्रव्य–नवतत्त्वादिकका स्वरूप बतलाया है, मगर उस मूजब मान्य करना कहा लिखा है. ऐसा कोई कहे और उसको प्रमाणभूत नहीं माने, तो, ११ अगं, व १४ पूर्वोंके उत्थापनका प्रसंग आनेसे अनेक भवोंकी वृद्धि करनेवाली उत्सूत्र प्ररूपणा होवे.इसी तरहसे १३ महीनोंका स्वरूप कहकर प्रमाणभूत नहीं माने, तो, सूर्यप्रज्ञप्ति वगैरह पूर्वोक्त शास्त्रोंके उत्थापनका प्रसंग आनेसे उत्सूत्र प्ररूपणा होगी । और जैसे षट्द्रव्य–नवतत्त्वादिकके स्वरूप शास्त्रोंमें कहे हैं उस मुजबही मानना पडताहै । तैसेही१२ महीनोंके स्वरूपकी तरह १३ महीनोंका स्वरूप शास्त्रोंमें बतलायाहै उस मुजबही १३ महीने प्रमाणभूत गिनतीमें मानने पडतेहैं. इसलिये '१३ महीनोंके अभिवर्द्धितवर्षका स्वरूप बतलायाहै, मगर मानना कहां लिखा है ' ऐसी उत्सूत्र प्ररूपणा करना और भोले जीवोंको संशयमें गेरना आत्मार्थी भवभिरूओंकों योग्य नहीं है।

१७-- लौकिक अधिक महीना मानना या नहीं ?

कितनेक महाशय कहते हैं, कि-- जैन टिप्पणामें तो पौष और आषाढ बढताथा अब लौकिक टिप्पणामें श्रावण भाद्रपदादिभी बढने लगे हैं सो कैसे माने जावें ? इसपर इतनाही विचार कर-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नेका है, कि- जैनटिप्पणामें तीसरे वर्षमें महीना बढताथा उसको गिनतीमें लेतेथे और जैन टिप्पणामें ज्यादेमें ज्यादे३६घटिका प्रमाणे दिनमान होताथा, तथा कमतीमें कमती २४ घटिकाप्रमाणे दिनमान होताथा. और माघमहीने दक्षिणायनसे सूर्य उत्तरायनमें होताथा और श्रावणमहीने उत्तरायनसे दक्षिणायनमें होताथा और श्रावण वदि एकमसे ६२ वीं तिथि क्षय होतीथी.इसीप्रकार १ वर्षमें ६ तिथि क्षय होतीथी बीचमेंकोईभीतिथि क्षयनहींहोतीथी. और तिथि बढने कातो सर्वथाअभावहोनेसे कोईभीतिथि बढतीनहींथी और ६० घडीसेकम तिथिकाप्रमाणहोनेसे, ६० घडीके ऊपर कोईभी तिथि नहीं होतीथी. और नक्षत्रसंवत्सर, ऋतुसंवत्सर, सूर्यसंवत्सर, चंद्रसंवत्सर और अभिवर्द्धितसंवत्सर सहित पांचवर्षोका १ युग, व ८८ ग्रह मानतेथे इत्यादि अनेक बातें जैन टिप्पणामें होतीथी वो जैन टिप्पणा परंपरागत जैनी राजा देशभरमें चलातेथे और पूर्वगत आम्नायसे गुरुगम्यतासे जैन कुलगुरु बनातेथे. इसलिये उसमे ग्रहणादि किसी तरहका फरक नहीं पडताथा. मगर परंपरागत जैनी राजाओंका व पूर्वगत आम्नायका अभाव हुआ जबसे ८८ ग्रहवाला जैन पंचांग बंध हुआ. तबसे जैन समाजमें ९ ग्रहवाला लौकिक टिप्पणा माननेकी प्रवृति शुरूहुई. उसमें श्रावण व माघमे दक्षिणायनमें व उत्तरायनमें सूर्य होनेका नियम न रहा और हरेक महीने बढनेसे ज्येष्ट-- आषाढ व मार्गशीर्ष-पौषादिमे दक्षिणायन व उत्तरायन होनेलगा. तथा क्षेत्रफल व गणित विभागमें फेर पडनेसे ज्यादेमे ज्यादे ३४ घटिका, व कमतीमें कमती २६ घटीकाप्रमाणे दिनमानभी मानने लगे और एक तिथिका ६० घटिकासे ज्यादे प्रमाण माननेसे हरेकपक्षमें तिथियोंका क्षयभी होनेलगा. और हरेक तिथियोंकी बृद्धि होनेसे दो दो तिथियेंभी होने लगी. और१२वर्षका युग इत्यादि अनेक बातें जैन पंचांगके अभावसे लौकिक टिप्पणाकी माननी पडती हैं, इसीतरह अधिक महीनाभी लौकिक रीतिसे वर्तमानमें मानना पडता है, इसलिये ८४ गच्छोंके सबी पूर्वाचार्योंने श्रावण भाद्रपदादिमहीनें लौकिक टिप्पणामुजब माने हैं. वोही प्रवृत्ति सबजैन समाजमें शुरू है। और दक्षिणायन,उत्तरायन, तिथिकी हानी वृद्धि वगैरह तिथि, वार, नक्षत्र, पक्ष, मास, वर्ष सब लौकिक टिप्पणामुजब मानना मगर अधिक महीना बाबत जैनपंचांगकी आड लेकर नहीं मानना यह न्याय युक्ति बाधक होनेसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सत्य नहीं ठहर सकता. इसलिये ऊपर मुजब बातोंकी तरह अधिक महीनाभी लौकिक मुजब वर्तमानमें मान्य करना युक्तियुक्त न्याय संपन्न होनेसे निषेद्ध नहीं हो सकता। और यद्यपि जैन टिप्पणामें पौष आषाढ बढताथा उस बातको जिनकल्पी व्यवहारकी तरह सत्य मानना, श्रद्धा रखना, प्ररूपणा करना. मगर जिनकल्पी व्यवहार अभी विच्छेद होनेसे उसको अंगीकार नहीं कर सकते, उसी तरह अभी जैन टिप्पणाभी विच्छेद होनेसे वर्तमानमें जैन टिप्पणा मुजब तिथि, वार, या पौष आषाढ महीने माननेका आग्रह करना सर्वथा अनुचित है।

१८– जैन ज्योतिष्परसे अभी जैन टिप्पणा शुरू हो सके या नहीं ?

यद्यपि जैन ज्योतिष्के चंद्रप्रज्ञप्ति–ज्योतिष्करंडपयन्नादि अनेक शास्त्र मौजूद हैं, उसपरसे तिथि–वार–मास–पक्ष–वर्षादिकका गणित हो सकता है। मगर ग्रहचार ग्रहणादि सब बातें बरोबर मिलान करना मुश्किल पडता है, इसलिये कितनीक बातोंमें अन्य आधार लेना पडता है. और लौकिक व जैन दोनोंके गणितमें फेर होनेसे, तिथि–वार–मास व ग्रहणादि दोनोंके समान नहीं आसकते. और पूर्वगत गुरुगम्य आम्नायके अभावसे व अल्पज्ञताके कारणसे यदि ग्रहणादि बतलानेमें न्यूनाधिक कुछ फरक पड जावे तो सर्वज्ञशासनकी लघुता होनेका कारण बनजावे। और परंपरागत जैनीराजाओंके अभाव होनेसे व ब्रह्मचारी, व्रतधारी, गुरुगम्यतावाले कुलगुरुओंका अभाव होनेसे तथा खरतरगच्छ नायक श्रीनवांगी वृत्तिकारक श्रीअभयदेवसूरिजी, श्रीशांतिसूरिजी, श्रीहेमचंद्राचार्यजी वगैरह समर्थ व प्रभावकाचार्योंके समयसेभी बहोत कालसे जैन टिप्पण विच्छेद होनेसे, अभी अपने अल्प बुद्धिवालोंसे फिरसे शुरू नहीं हो सकता। और कोई शुरू करें तोभी सर्वमान्य युगप्रधान समर्थ आचार्यके अभावसे सबदेशोंके सबगच्छोंके सब जैन समाजमें परंपरागत चल सकताभी नहीं। देखिये–जैन शासनमें विशेष ज्ञानी समर्थ प्रभावक पूर्वाचार्योंके समय जो बात पहिलेसे विच्छेद हो जावे उसको विशिष्टतर अवधिज्ञानादि रहित अल्पज्ञोंसे इसकालमें फिरसे शुरू नहीं होसके। इतनेपरभी शुरू करें तो पूर्वाचार्योंकी आशातनासे दोषके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भागी होवें। इसी तरह जैन पंचांगभी पूर्वाचार्योंके समयसे विच्छेद् होनेसे अभी शुरू नहीं होसकता. जिसपरभी शुरू करें, तो, २० वें दिन पर्युषणपर्व करनेकी व पांच पांच दिने अज्ञात पर्युषणा स्थापन करनेकी बातें जो विच्छेद् हुई हैं, वे बातेंभी जैन टिप्पणा शुरू होनेसे पीछी शुरू करनी पडेंगी और वें बातें अभी पडताकाल होनेसे शुरू होसकती नहीं हैं, इसलिये अभी जैन पंचांग शुरू हो सकता नहीं है।

१९– अभी दो श्रावणादिकके दो आषाढ बनासके या नहीं ?

कितनेक कहते हैं, कि–लौकिक टिप्पणमें श्रावण, भाद्रपद् बढे तब जैन हिसाबसे दो आषाढ बना लेवे तो पर्युषणका भेद् मिट जावे. मगर ऐसा भी नहीं हो सकता, क्योंकि जब जैन पंचांगही अभी विच्छेद् है, और तिथि, वार, पक्षादि पंचांग संबंधी व्यवहार लौकिक मुजब करते हैं, जिसपरभी १ महीनेका फेरफार करदेना योग्य नहीं है। देखो– दो श्रावण होनेसे भरपूर वर्षाऋतुवाला प्रथम श्रावण शुदी १५ को प्रत्यक्ष प्रमाणसेभी विरुद्ध होकर उसको आषाढ पूर्णिमा बनाना जगत विरुद्ध होनेसे व्यवहारमें मिथ्याभाषणका दोष लगे। और पूर्वाचार्योंनेभी ऐसा नहीं किया, इसलिये अभी दो श्रावण या दो भाद्रपदके दो आषाढ बनाना नहीं बन सकता. किंतु लौकिक मुजब दो श्रावण भाद्रपदादि सबगछोंके पूर्वाचार्य पहिलेसे मानते आये हैं, वैसेही वर्तमानमें अपने सबकोही मान्य करना योग्य है. बस ! धार्मिक व्यवहार पर्युषणपर्वादि जैन सिद्धांतानुसार ५० वें दिन करना. और तिथि, वार, मास, पक्षादि व्यवहार लौकिक टिप्पणानुसार करना. यही न्याय युक्तियुक्त सर्व सम्मत होनेसे सर्व जैनीमात्रको मान्य करना योग्य है, इसलिये इसमें अन्य २ कल्पना करना व्यर्थ है।

२०– पर्युषणा कितने प्रकारकी होती हैं ?

निशीथचूर्णि और कल्पसूत्रकी निर्युक्तिवृत्ति वगैरह शास्त्रोंमें पर्युषणाके ८ प्रकारसे अनेक भेद बतलाये हैं, मगर यहां तो मुख्यतासे वर्षास्थितिरूप और वार्षिक कार्यरूप ऐसे दो अर्थ वर्तमानमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सब गच्छवाले ग्रहण करते हैं। इसलिये आषाढ चौमासीसे ठहरना सो वर्षास्थितिरूप अज्ञात पर्युषणा और मासवृद्धिके सद्भावमें २० दिने या उसके अभावमें ५० दिने ज्ञात (प्रकट) पर्युषणा करना सो वार्षिक कार्यरूप पर्युषणा समझना चाहिये। जब जैन पंचांगके अभावसे २० दिनकी पर्युषणा बंधहुई, तबसे लौकिक हरेक मास बढे तो भी ५० दिने वार्षिक कार्यरूप पर्युषणा करनेकी मर्यादा है.

२१– वीश दिनकी पर्युषणा वर्षास्थितिरूप हैं या वार्षिकपर्वरूप हैं?

भो देवानुप्रिय! जैसे चंद्रवर्षमें ५० दिनकी ज्ञात पर्युषणा वार्षिक कार्यरूप हैं, तैसेही अभिवर्द्धित वर्षमें २० दिनकी ज्ञात पर्युषणाभी वार्षिक कार्यरूप हैं। जिसपरभी श्रावणमें वीश दिनकी ज्ञात पर्युषणा वर्षास्थितिरूप मानोंगे तो भाद्रपदमेंभी ५० दिनकी ज्ञात पर्युषणाभी वर्षास्थितिरूप ठहर जावेगें और वार्षिककार्य करने सर्वथा उडजावेगे. और २०दिने वार्षिककार्य नहीं करने मगर ५०दिने करने ऐसाभी कोई प्रमाण नहीं है, और २० दिने ज्ञात पर्युषणा किये बाद पीछे एक महीनेसे वार्षिककार्य करने ऐसाभी कोई प्रमाण नहीं है। इसलिये-- जैसे ५० दिने भाद्रपदमें वार्षिक कार्य होते हैं, वैसेही २० दिने श्रावणमेभी वार्षिक कार्य होते हैं। और वर्तमानमें श्रावण भाद्रपद बढे तो भी दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें ५० दिने वार्षिक कार्यरूप पर्युषणा करना जिनाज्ञानुसार है।

२२– वार्षिक कार्य १२ महीने होवें या १३ महीने होवें?

पहिलेभी जैसे २० दिने श्रावणमें वार्षिक कार्य करतेथे तब आवते वर्ष भाद्रपद तक १३ महीने होतेथे, तैसेही वर्तमानमेंभी ५० दिने दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें वार्षिक कार्य होनेसे आवते वर्ष १३ महीने होते हैं. इसमें कोई दोष नहीं है, देखिये-दो पौष, दो आषाढ, या दो आसोज होनेसेभी १३ महीने प्रत्यक्षमें होते हैं; इसलिये महीना बढे तबतो पहिले या पीछे १३ महीनोंके २६ पाक्षिक प्रतिक्रमण सबकोही होते हैं। और जैनमें या लौकिकमें १२ महीनोंके या १३ महीनोंके दोनों वर्ष माने हैं, इसलिये १२ महीनेभी वार्षिक कार्य होवें. और १३ महीनेभी वार्षिक कार्य होवें, यह कोई नवीन बात नहीं है। किंतु अनादि प्रवाह ऐसाही है। जिसपरभी १३

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महीने होनेका दोष बतलाकर, १२ महीने ठहरानेकेलिये महीनेको छोड देना सो सर्वथा अनुचित है, इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार सकते हैं।

२३- पर्युषणासंबंधी कल्पसूत्रका पाठ वार्षिक कार्योंके- लिये है, या वर्षास्थितिके लिये है?

कल्पसूत्रका पर्युषणासंबंधी पाठ वर्षास्थितिके साथही वार्षिक कार्योंकेलिये है, जिसपरभी उसको सिर्फ वर्षास्थितिरूप ठहराकर वार्षिक कार्य निषेध करते हैं सो अनेकार्थ युक्त आगमपाठके अर्थ को उत्थापनेवाले बनते है. जैसे "णमो अरिहंताणं" पदके अर्थमें कर्मशत्रुको जितनेवाले अरिहंत भगवान्को नमस्कार करनेका अर्थ अनादिसिद्ध है, जिसपरभी कर्मशत्रुके अर्थ नहीं माननेवालेको अज्ञानी समझाजाता है। तैसेही कल्पसूत्रके ५० दिने पर्युषणाकरनेसंबंधी पाठमें वार्षिक कार्य तो अनादि सिद्ध है जिसपरभी वार्षिक कार्योंको नहीं मानने वालोंको अज्ञानी या हठवादी समझने चाहिये।

२४- भगवान् किसीप्रकारकेभी पर्युषणा करतेथे या नहीं?

जिनकल्पी मुनियोंके व स्थिविरकल्पी मुनियोंके आचारमें बहुत भेद है, और भगवान्तो अनंत शक्तियुक्त कल्पातित हैं, इसलिये भगवान्के आचारमेंतो विशेष भेद है. तो भी वर्षारुतुमें वर्षास्थितिरूप पर्युषणा तो सबकोई करते हैं। और स्थिविर कल्पी मुनियोंके तो वर्षास्थितिके साथ चौमासी व वार्षिक पर्व करनें वगैरहका अधिकार प्रसिद्धही है। जिसपरभी कल्पसूत्रमें पर्युषणा शब्दमात्रको देखकर अतीव गहनाशयवाले सूत्रार्थके भावार्थको गुरुगम्यतासे समझे बिना भगवान्कोभी वार्षिक प्रतिक्रमणादिकरनेवाले ठहराना, या ५० दिनकी पर्युषणाको वार्षिक कार्यरहित ठहराना सो अज्ञानता है. इसकोभी विवेकीजन स्वयं विचार सकते हैं।

२५- पर्युषणासंबंधी सामान्य व विशेषशास्त्र कौनहै?

जिस शास्त्रमें मुख्यतासे एक विषयको विशेष रूपसे खुलासाके साथ कथन किया होवे, उसको विशेष शास्त्र कहते हैं। और जिस शास्त्रमें बहुत बातोंका कथन होवे, उसको सामान्य शास्त्र कहते हैं। यद्यपि यथा अवसर दोनों मान्य हैं, मगर सामान्यशास्त्रसे विशेषशास्त्र ज्यादे बलवान होता है. इसलिये मुख्यतासे वि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शेष शास्त्रकी बात अंगीकार करनेके समय सामान्य शास्त्रकी बात गौण्यताभावमें रहती है. यह न्याय विद्वानोंमें प्रसिद्धही है। और भी देखिये- जैसे भगवतीसूत्र बडा कहा जाता है, तो भी उसमें बहुत बातोंका कथन होनेसे संयमकी क्रियासंबंधी सामान्यशास्त्र कहा जावे, और आचारांग, दशवैकालिक छोटे सूत्र हैं, तो भी उस में मुख्यतासे संयमविधान होनेसे संयमक्रियासंबंधी विशेष शास्त्र कहे जाते हैं। इसीतरह समवायांगसूत्रमें अनेक बातोंका कथन होनेसे पर्युषणासंबंधी समवायांगसूत्र सामान्य शास्त्रहै, और कल्पसूत्रमें तो खास पर्युषणासंबंधी सामान्य व विशेष दोनो प्रकारसे विस्तारपूर्वक खुलासाके साथ वर्षास्थितिरूप व वार्षिकपर्व रूप दोनों पर्युषणाका अधिकार है. इसलिये पर्युषणासंबंधी कल्पसूत्र विशेष शास्त्र है। यही कल्पसूत्ररूप विशेष शास्त्रको पर्युषणामें चतुर्विधसंघके मांगलिकके लिये वर्षोंवर्ष प्रत्येक गांव-नगरादिमें वांचनेमें आता है। उस विशेषशास्त्रके पर्युषणासंबंधी मूलमंत्ररूप पाठको छोडना और समवायांगके सामान्यपाठपर दृढ आग्रह करना विवेकीविद्वानोंको योग्यनहीं है। मगर अल्पज्ञ बिना समझवाले अपना आग्रह न छोडें तो उनकी खुशीकी बात है, इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार लेंगे.

२६-पर्युषणासंबंधी हमेशां नियत नियम ५० दिनका है या ७० दिनका है?

सर्व शास्त्रोंमें ५० दिनको उल्लंघन करना निवारण किया है, इसलिये ५० दिनका नियत नियम है। और ७० दिनसे ज्यादे होवें उसका कोईभी दोष किसी शास्त्रमें नहीं कहा, इसलिये ७० दिनका हमेशां नियत नियम नहीं है।

१. देखो-पहिले २० दिने पर्युषणा करतेथे, तबभी पिछाडी १०० दिन रहतेथे, इसलिये ७० दिनका नियत नियम नहीं है।

२. अबीभी श्रावण भाद्रपद या आसोज बढे तब तपगच्छके पूर्वाचार्योंके वाक्यसेभी ५० दिने पर्युषणा होवें तब पिछाडी १०० दिन रहते हैं। इसलियेभी ७० दिन रहनेका नियत नियम नहीं है।

३. पचास दिन उलंघेतो प्रायश्चित्त कहा है, मगर ७० दिन उल्लंघे तो प्रायश्चित्त नहीं कहा, इसलियेभी ७० दिनकी नियत नि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यम की हमेशा मर्यादा नहीं ठहर सकती।

४–पचास दिने तो ग्रामादि न होवे तो जंगलमें वृक्षनीचेभी अवश्यही पर्युषणा करनेकी आवश्कता बतलाई है और ७० दिनकी स्वाभाविक गिनती बतलायी परंतु वैसीही७० दिनकी आवश्यकता नहीं बतलायी, इसलियेभी ७० दिनका नियत नियम नहीं है।

५– ७० दिवसका पाठ मास वृद्धिके अभाव संबंधी है,इसलिये उसको मासवृद्धि होनेपरभी आगे करना शास्त्रकार महाराजके अभिप्राय विरुद्ध होनेसे योग्य नहीं है।

६– इन्हीं समवायांग सूत्रके टीकाकार महाराजने स्थानांग सूत्र. वृत्तिमें,मासवृद्धि होवें तब पर्युषणाके पिछाडी कार्तिकतक१००दिन ठहरनेका कहा है। उसको उत्थापना और शास्त्रकर महाराजके अभिप्राय विरुद्ध होकर १०० दिनकी जगहभी ७० दिन ठहरनेका बतलाना आत्मार्थियोंको योग्य नहीं है।

७– निशीथचूर्णि – बृहत्कल्पचूर्णि – कल्पानिर्युक्तिचूर्णि-वृत्ति— गच्छाचारपयन्नवृत्ति-जीवानुशासन वृत्ति वगैरह प्राचीन शास्त्रोंमें, वर्षास्थितिकेलिये कालावग्रहमें, जघन्यसे ७० दिन, मध्यमसे ७५-८०-८५-९०-९५ यावत् १२० दिन, और उत्कृष्टसे १८० दिनका प्रमाण बतलाया है। उसके अंदरमेंसे १ दिनमात्रभी गिनतीमें नहीं छुट सकता. जिसपरभी शास्त्रविरुद्ध होकर वर्षास्थितिके अनियत व जघन्य ७० दिनोंकों हमेशां नियत ठहरानेका आग्रह करना विवेकीयोंको योग्य नहीं है।

८– निशीथचूर्ण्यादिमें द्रव्य-क्षेत्र-काल और भावसे पर्युषणाकी स्थापना करनी बतलायी है, उसमें कालस्थापना संबंधी समय-आवलिका-मुहूर्त-दिन-पक्ष-माससे अधिकमहिनेके ३० दिनोंकी गिनति सहित प्रत्येक दिवसको पर्युषणासंबंधी कालस्थापनाके अधिकारमें गिनतीमें लिये हैं। इसलिये पर्युषणाके व्यवहारमें १ दिन भी गिनतीमें निषेध नहीं होसकता. जिसपरभी जघन्य ७० दिनके अनियत नियमको मास बढनेपरभी आगे करते हैं और फिर १०० दिनके ७० दिन अपनी कल्पनासे बनातेहैं सो सर्वथा चूर्णिके विरुद्ध है, इसका विशेष विचार तत्वज्ञ जन स्वयं कर लेवेंगे।

९– सीत्तर दिनका नियत नियम न होनेसे ७० दिनके ऊपर ज्यादेदिनभी होतेहैं, और "वासावासाए अणावुट्ठिए, आसोए क.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्तिए वा निग्गताणं, अठ्ठ आतिरित्ता भवंति” इत्यादि निशीथचूर्ण्यादिकमें लिखे मुजब वर्षाके अभावसे आसोजमें विहार करेतो ७० दिनसे कमतीभी ४० दिन, या ४५-५० दिनभी होतेहैं। देखो-पहिले ५० दिनै वार्षिक कार्य जबलग नहीं करें तबतक विहार करनेमें आताथा. मगर अभी वर्तमानमें तो आषाढचौमासीबाद विहार करनेकी रूढी नहीं हैं। तैसेही पहिले वर्षाके अभावसे आसोजमेंभी विहार करतेथे मगर अभीतो वर्षा नहीं होवे रस्तोंके कीचड सुककर साफ होगये होंवे तो भी कार्तिक पूर्णिमा पहिले आसोजमें विहार करनेकी रूढी नहीं हैं। इसलिये अभी वर्षाके अभावसे आसोजमें विहार नहीं कर सकते और दो आसोज हो तो भी कार्तिक तक १०० दिन ठहरते हैं. इसलियेभी ७० दिनका हमेशां नियत नियम नहीं हैं। इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार लेवेगें।

२७- महीना बढे तब होली, दिवाली वगैरह लौकिक पर्व पहिले महीनेमें होवें या दूसरे महीनेमे होवें ?

कितनेक पर्व पहिले महीनेमें होते हैं, और कितनेक पर्व दूसरे महीनेमेंभी होते हैं. देखो-दो भाद्रपद होवें तब जन्माष्टमीका पर्व पहिले भाद्रपदमें करते हैं. और गणेश चौथका पर्व दूसरे भाद्रपदमें करते हैं. व दो आसोज होवें तब श्राद्धपक्ष पहिले आसोजमें करतेहैं, और दशहरा दूसरे आसोजमें करतेहैं. तथा दो कार्तिकहोवे तब दीवालीपर्व पहिले कार्तिकमें करतेहैं. इसतरहसे बारहीमासोंके सबी पर्व कृष्णपक्षसंबंधीपर्व पहिले महीनेमें और शुक्लपक्षसंबंधीपर्व दूसरे महीनेमें समझलेना और “ मलमासो द्वेधा अधिकमासः—क्षयमासश्चेति। तदुक्तं काठकगृह्ये, यस्मिन् मासे न संक्रांतिः, संक्रांति द्वयमेव वा मलमासो स विज्ञेयो मासः स्यात् तु त्रयोदशः । तथा च उक्तं हेमाद्रि नागर खंडे-नभो वा नभस्यो वा मलमासो यदा भवेत् सप्तमःपितृपक्षःस्यादन्यत्रैव तु पंचमः। इत्यादि ” निर्णयसिंधु, धर्मसिंधु, निर्णयदीपकादि लौकिक धर्मशास्त्रोंके प्रमाणानुसार आषाढ चौमासीसे पांचवा पितृपक्ष (श्राद्धपक्ष) होता है, मगर श्रावण, भाद्रपद बढे तब उसकी गिनतीसे सातवा [७] श्राद्धपक्ष होता है इसलिये लौकिकवालेभी अधिकमहिनेके ३० दिन गिनतीमें लेते हैं । जिसपरभी लौकिकवाले अधिक महीनेके ३० दिन गिनतीमें नहीं लेते, या प्रथम महीनेमें दीवाली,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व जन्माष्टमी वगैरह पर्व नहीं करते. ऐसा जान बुझकर माया मृषा कथन करना आत्मार्थियोंको योग्य नहीं है।

२८-गणेशचौथकी तरह पर्युषणाभी दूसरे भाद्रपदमें हो सके या नहीं ?

भो देवानुप्रिय ! गणेशचौथ मासप्रतिबद्ध होनेसे मासवृद्धिके अभावमें आषाढचौमासीसे, दूसरे महीनेके चौथेपक्षमें ५० दिने भाद्रपदमें होती है, मगर श्रावण या भाद्रपद बढे तब तो तीसरे महीनेके छठे पक्षमें ८० दिने दूसरे भाद्रपद होतीहै। इसीतरह मास बढनेके अभावमें २॥ महीनोंसे पांचवा श्राद्धपक्ष होता है। मगर मास बढे तब तो ३॥ महीनोंसे सातवा श्राद्धपक्ष होता है तथा दीवालीपर्वभी मासवृद्धिके अभावमें ३॥ महीनोसे ७ वें पक्षमें कार्तिकमें होता है, मगर श्रावणादि बढे तबतो ४॥ महीनोंसे ९ में पक्षमें होता है. यह बात प्रत्यक्ष प्रमाणसे जगत् प्रसिद्ध सर्व सम्मत ही है। और पर्युषणापर्व तो दिन प्रतिबद्ध होनेसे दूसरे महीनेके चौथेपक्षमें ५० दिने अवश्यही करने कहे हैं। इसलिये गणेश चौथकी तरह दूसरे भाद्रपदमें करें तो तीसरे महीनेके छट्ठेपक्षमें ८० दिन होनेसे शास्त्रविरुद्ध होता है, इसलिये दूसरे भाद्रपदमें नहीं होसकते। किंतु दूसरे महीनेके चौथेपक्षमें ५० दिने प्रथम भाद्रपदमें करना शास्त्रानुसार होनेसे आत्मार्थीयोंको योग्य है। इसलिये मासप्रतिबद्ध लौकिक गणेशचौथकी तरह दिन प्रतिबद्ध लोकोत्तर पर्युषणापर्वतो दूसरे भाद्रपदमें नहीं हो सकते। इसको विशेष तत्त्वज्ञ पाठक गण स्वयं विचार लेवेंगे।

२९-पौषादि मास बढतेथे तब कल्याणकादि तप कैसे करते थे ?

पौषादि मास बढनेसे दोनों महीनोंके च्यारों पक्षोमें,-पहिले पक्षमें, या दूसरेपक्षमें, वा तीसरेपक्षमें अथवा चौथेपक्षमें, जिसपक्षमें, जिसरोज, जिन जिन तीर्थंकर भगवान्के जो जो च्यवन-जन्मादि कल्याणक हुए होवें, उस उस पक्षमें दोनों महीनोंमें ज्ञानी-महाराजको पूछकर आराधन करतेथे. यह अनादि कालसे ऐसीही मर्यादा चली आती है। इसलिये अधिक महीनेमें कल्याणकादि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तप नहीं हो सकते, ऐसा कहना प्रत्यक्ष मृषा है। देखो — अंनतकालसे अनंततीर्थंकर महाराज हो गयेहैं, उन महाराजोंके च्यवन-जन्म— केवलज्ञानादि कल्याणक होनेमें, कोईभी पक्ष, कोईभी मास, कोईभी दिवस या कोईभी वर्ष बाधक नहीं होसकते। किंतु हरेक मास, हरेक पक्ष, हरेकऋतु, व हरेक दिवसमें होसकते हैं इसलिये पहिले महीनेके या दूसरे महीनेके प्रथम पक्षमें, या दूसरे पक्षमें जिसरोज च्यवनादि जो जो कल्याणकहुए होंवें उसी महीनेके उसी पक्षमे उन्हीं कल्याणकोंका आराधन करना शास्त्रानुसार ही है। इसलिये इसको कोईभी निषेध नहीं कर सकता। मगर अभी जैन पंचांगके अभावसे व ज्ञानी महाराजके अभावसे अधिक पौषमें या अधिक आषाढमें कौन २ भगवान्‌के कौन २ कल्याणक हुए हैं, उस की मालूम नहीं होनेसे तथा लौकिक टिप्पणामें हरेक मासोंकी वृद्धि होनेसे, चैत्र - वैशाखादि महीने बढे, तब भी परंपरागत ८४ गच्छोंके सभी पूर्वाचार्योंने लौकिक रूढीके अनुसार कितनेक पर्व प्रथम महीनेमें और कितनेक पर्व दूसरे महीनेमें करनेकी प्रवृत्ति रक्खी है। उसी मुजब वर्तमानमेंभी करनेमेंआतेहैं। देखो— जैसे— कार्तिक महीने संबंधी श्री संभवनाथजीके केवलज्ञानकल्याणक, श्रीपद्मप्रभुजीके जन्म व दीक्षा कल्याणक, श्रीनेमिनाथजीके च्यवन कल्याणक और श्रीमहावीरस्वामिके निर्वाणकल्याणक व दीवाली पर्वादि कार्य दो कार्तिकहोवे तब प्रथमकार्तिकमेंकरनेमें आतेहैं. तथा दो पौषहोंव तबश्रीपार्श्वनाथजीका जन्मकल्याणक पौषदशमीकापर्व प्रथम पौषमें करनेमें आता है। और दो चैत्र होंवे तब पार्श्वनाथजीके केवलज्ञान कल्याणकादि तपकार्य उष्णकालके प्रथम महीनेके प्रथम पक्षमें अर्थात् पहिले चैत्रमें करनेमे आते हैं मगर श्रीमहावीर स्वामीके जन्मकल्याणक व ओलीपर्वतो उष्णकालके दूसरे महीनेके चोथेपक्षमें अर्थात् दूसरेचैत्रमें करनेमेंआतेहैं, ऐसेही दो आषाढ होंवें तब आदीश्वरभगवान्‌के च्यवनादि उष्णकालके चौथेमहीने सातवे पक्षमे प्रथमआषाढमें करनेमेंआतेहैं और श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनादि पांचवेमहीनेके दशवेंपक्षमें दूसरेआषाढमें करनेमेंआतेहैं, इसीतरह अधिकमहिनेके दोनोंपक्षोंकी गिनतीसहित सबी महीनोंके कार्य यथायोग्य कल्याणकादि तप वगैरह करनेमेंआतेहैं। इसलिये कल्याणकादि, तपकार्यमें अधिकमहिना गिनतीमें नही लेते ऐसा कहना सर्वथा अनुचित है, इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार लेवेंगे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३०- अधिक महीना होवे तब तेरह महीनोंके संवच्छरी क्षामणा संबंधी खुलासा.

जैसे इन्हीं भूमिकाके पृष्ठ २२ वेंके मध्यमें २२ वें नंबरके लेख मुजब वार्षिक कार्य १२ महीनेभी होवें, और महीना बढे तब तेरह महीनेभी होवें। तैसेही संवच्छरी क्षामणेभी १२ महीनेभी होवें और महीना बढे तब १३ महीनेभी होवें। देखो — चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्रवृत्ति, सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रवृत्ति, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति, प्रवचनसारोद्धार, ज्योतिष्करंडपयन्न-निशीथचूर्णिवगैरह अनेक प्राचीन शास्त्रोंमेंभी, महीना बढे तब उस वर्षके १३ महीनोंके २६ पक्ष खुलासा पूर्वक लिखे हैं. इस लिये १३ महीने २६ पक्षके संवच्छरी क्षामणे करने, ऊपर मुजब अनेक प्राचीन शास्त्रानुसार हैं। जिसपरभी कोई कहेगा, कि-उन शास्त्रोंमें तो १३ महीने २६ पक्षके संवच्छरीमें क्षामणे करनेका नहीं लिखा मगर ऐसा कहनेवालोंको अतीव गहनाशयवाले शास्त्रोंके भावार्थको समझमें नहीं आया मालूम होता है, क्योंकि— उन शास्त्रोंमें पक्षका, चौमासेका व वर्षका गणितसे जो जो प्रमाण बतलाया है उन्हीं शास्त्रोंके उसी प्रमाण मुजब, पाक्षिक, चौमासी व वार्षिक पर्वादिकार्य करनेमें आतेहैं, इसलिये जिस वर्षमें १२ महीनोंके २४ पक्ष होवें, उसी वर्षमें १२ महीनोंके २४ पक्षोंके संवच्छरी प्रतिक्रमणमें क्षामणे करनेमें आते हैं। उसी मुजब जिस वर्षमें अधिक महीना होनेसे १३ महीनोंके २६ पक्ष होवें तब उस वर्षमें १३ महीनोंके २६ पक्षोंके संवच्छरी प्रतिक्रमणमें क्षामणे करनेमें आते हैं। इसलिये उन शास्त्रमें १३ महीनोके क्षामणे नहीं लिखे ऐसा कहना प्रत्यक्ष मिथ्या होनेसे अज्ञानताका कारण है।

और आवश्यक बृहद्वृत्ति वगैरह प्राचीन शास्त्रमें जहां जहां वार्षिक प्रतिक्रमणका अधिकार आया है, वहां वहांभी 'संवच्छर' शब्द लिखा है. सो संवच्छर शब्दके १२ महीनोंके २४ पक्ष, व १३ महीनोंके २६ पक्ष, ऐसे दोनों अर्थ आगमोंमें प्रसिद्धही हैं, इसलिये १२ महीनोंके २४ पक्षका अर्थ मान्य करके क्षामणोमें बोलना और १३ महीनोंके २६ पक्षका अर्थ मान्य नहीं करना व क्षामणेमेंभी नहीं बोलना, यह तो प्रत्यक्षमेंही आगमार्थ के उत्थापनका आग्रह करना सर्वथा अनुचित है, इसलिये दोनों प्रकारके अर्थ मान्य करके उस मुजब प्रमाण करना आत्मार्थी सम्यक्त्व धारियोंको योग्यहै. इसको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार सकते हैं। और इसका विशेष खुलासा इसी ग्रंथके पृष्ठ ३६२ से ३८२ तक छप गया है, उसके देखनेसे सब निर्णय हो जावेगा ।

३१– पांच महीनोंके चौमासी क्षामणो संबंधी खुलासा.

पहिले पौष महीना बढताथा तबभी फाल्गुन चौमासा पांच महीनोंका होताथा, व आषाढ महीना बढताथा तबभी आषाढ चौमासा पांच महीनोंका होताथा, तैसेही अभी वर्तमानमें लौकिक श्रावणादि बढतेहैं तबभी कार्तिक चौमासा पांच महीनोंका होता है। यद्यपि सामान्य व्यवहारसे चौमासा ४ महीनोंका कहा जाता है मगर अधिक महीना होंवे तब विशेष व्यवहारसे निश्चयमें पांच महीनोंके १० पाक्षिक प्रतिक्रमण सबी गच्छवालोंको प्रत्यक्षमें करनेमें आते हैं । और जितने मासपक्षोंका प्रायश्चित (दोष)लगा होंवे, उतनेही मासपक्षोंकी आलोचना(क्षामणा)करना स्वयंसिद्धही है । और मास बढनेसे पांच महीनोंके दशपक्ष होनेपरभी उसमें ४ महीनोंके ८ पक्षोंके क्षामणा करना और दो पक्ष छोड देना सर्वथा अनुचित है। इसलिये ऊपर मुजब ३० वें नंबरके १३ मासी संवच्छरी क्षामणा संबंधी लेख मुजबही यथा अवसर पांच महीनोंके दशपक्षोंके क्षामणे करने शास्त्रानुसार युक्तियुक्त होनेसे कोईभी निषेध नहीं करसकता, इसका भी विशेष खुलासा इस ग्रंथके पृष्ठ ३६२ से ३८२ तकके क्षामणों संबंधी लेखमें छप गया है वहांसे जान लेना।

३२– १५ दिनोंके पाक्षिक क्षामणो संबंधी खुलासा।

जैन ज्योतिष्के शास्त्रानुसार तो जिस पक्षमें तिथिका क्षय होवे, वो पक्ष १४ दिनोंका होता है । और जिस पक्षमें तिथिका क्षय न होवे,वो पक्ष १५ दिनोंका होता है। मगर लौकिक-टिप्पणामें तो अभी हरेक तिथियोंकी हानी और वृद्धि होती है, इसलिये कभी १३ दिनोंकाभी पक्षहोताहै, कभी १४ दिनोंकाभी पक्ष होताहै, कभी १५ दिनोंकाभी पक्ष होताहै और कभी १६ दिनोंकाभी पक्ष होता है। मगर व्यवहारसे १५ दिनोका पक्ष कहा जाता है इसलिये व्यवहारसे पाक्षिक प्रतिक्रमणमें १५ दिनोंके क्षामणें करनेमें आतेहैं. मगर निश्चयमें तो जितने रोजके कर्मबंधन हुए

होगे, उतनेही रोजके कर्मोंकी निर्जरा होगी किंतु ज्यादे कम नहीं होगी, इसलिये निश्चय और व्यवहारके भावार्थको समझे बिना शाब्दमात्रको आगे करके विवाद करना विवेकी आत्मार्थियोंको तो योग्य नहींहै। इसकाभी विशेष खुलासा इसी ग्रंथके क्षामणासंबंधी लेखसे जान लेना।

३३- अपेक्षा विरुद्ध होकर आग्रह करना योग्य नहीं है।

मासवृद्धिकेअभावमें ४महीनोंकेचौमासीक्षामणे, व १२महीनोंके संवच्छरी क्षामणे करनेका कहा है, उसकी अपेक्षा समझेबिनाही मासबढनेपरभी उसीपाठको आगे करना और ५ मास १० पक्ष, व १३मास २६पक्ष शास्त्रोंमें लिखेहैं, उन पाठोंको छुपादेना. तत्वज्ञ आत्मार्थियोंको योग्य नहीं है। इसीतरह पौष व चैत्रादि महीने बढे तब प्रत्येक महीनेके हिसाबसे विहार करनेवाले मुनिमहाराजोंको एक कल्प चौमासेका और नवमहीनोंके नवकल्प मिलकर दशकल्पीविहार प्रत्यक्षमें होता है। जिसपरभी महीना बढनेके अभावसंबंधी एककल्प चौमासेका और ८महीनोंके ८कल्पमिलकर ९ कल्पीविहार करनेका पाठ बतलाना और मास बढे तबभी दशकल्पी विहारको निषेध करनेके लिये भोलेजीवोंको संशयमें गेरना विवेकी सज्जनोंको योग्य नहीं है। इसीतरह मासबढनेके अभावकी अपेक्षासंबंधी हरेक बातोंको मास बढनेपर भी आगेलाकर उसका आग्रह करना सर्वथा अनुचित है इसको विशेष विवेकी तत्वज्ञ पाठक गण स्वयं विचार लेवेंगे।

३४- विषयांतर करना योग्य नहीं है।

५० दिनोंकी गिनतीसे दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषण पर्व करनेकी सत्यबात ग्रहण करसकतेनहीं और पचास दिनोंकी गिनती उडानेकेलिये ऐसा कोई दृढ बाधक प्रमाणभी दिखा सकते नहीं, इसलिये दिन प्रतिबद्ध पर्युषणाका विषय छोडकर होली, दिवाली, ओली आदिक मास प्रतिबद्ध कार्योंका विषय बीचमें लाते हैं, सो असत्य आग्रहका सूचनरूप विषयांतर करना योग्य नहीं है। क्योंकि ऐसे तो मासप्रतिबद्ध कार्योंमें या मुहूर्त प्रतिबद्ध कार्योंमें कितनेही महीने, कितनेही वर्षभी छूट जातेहैं. देखो—मास प्रतिबद्ध कार्य तो एक महीनेसे करनेके होवें सो अधिक महीना होवें तब एक महीनेकी जगह कितनेक पर्व दूसरे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महीनेमेभी किये जातेहैं । और दूज-पंचमी-अष्टमी-चतुर्दशी वगैरहमें उपवास करनेका, ब्रह्मचर्य पालनेका, रात्रिभोजन त्याग करनेका इत्यादि, व्रत, नियम, पच्चखाण तो दोनों महीनोंमें दो दो वार करनेमें आते हैं । और पर्युषणपर्व तो मास बढे तो भी ५० दिनकी जगह ५१ वें दिनभी कभी नहीं होसकते. इसलिये दिन प्रतिबद्ध पर्युषणापर्वके साथ, मास प्रतिबद्ध होली, दीवाली वगैरहका विषय लाना सो सर्वथा अनुचित है ।

और महीना बढनेके अभावमें ओलियोंका पर्व छठ्ठे महीने करनेका शास्त्रोंमें कहाहै, मगर महीना बढे तबतो प्रत्यक्ष प्रमाणसे और शास्त्रीय हिसाबसे भी सातवें (७) महीने ओलियेंकापर्व होताहै, तो भी व्यवहारसे छठ्ठे महीने आंबीलकी ओलियें करनेका कहाजाताहैं । जैसे—श्रीआदीश्वरभगवानने, चैत्र वदी ८ [गुजरातकी अपेक्षा फागण वदी ८] को दीक्षा अंगीकार की थी, और दीक्षाके दिनसे तपस्याका पारणा दूसरे वर्ष वैशाख शुदी ३ को हुआथा, तो भी व्यवहारसे सबी शास्त्रोंमें वर्षी तपका पारणा लिखा है. और ऐसेही वर्षीतपका पारणा सब कोई जैनीमात्र कहते हैं, मगर दिनोंकी गिनतीसे तो १३ महीनोंके ऊपर १० दिन होनेसे ४०० दिन पारणाके होते हैं, जिसमेभी कदाचित उस वर्षमें बीचमें अधिक महीना आजावे तो १४ महीनोंके ऊपर १० दिन होनेसे ४३० दिने पारणा होता है, तो भी व्ययहारसे वर्षी तपही कहा जाता है, और यह बात अभी वर्तमानमेंभी वर्षी तप करने वालोंके अनुभवमें प्रत्यक्षही आतीहै, इसलिये ४३० दिने पारणा करते हैं, तोभी व्यवहारसे वर्षीतप कहते हैं । और व्यवहारसे वर्षके ३६० दिन होते हैं मगर निश्चयमें तो ४३० दिने पारणा करने का बनताहै तो भी किसी तरहका विसंवाद या दोष नहीं आसकता. इसी तरहसे व्यवहारसें ओली ६ महीने, चौमासा ४ महीने व वार्षिक पर्व १२ महीने करनेका कहतेहैं, मगर अधिक महीना आवे, तब निश्चयमें तो, ओली ७ महीने, चौमासा ५ महीने, व वार्षिक पर्व १३ महीने होता है तोभी तत्त्व दृष्टिसे कोई तरका विसंवाद या दोष नहीं है, मगर पर्युषण पर्वतो अधिक महीना होवे तब भी आषाढ चौमासीसे वर्षाऋतुके ५० वें दिनकी जगह ५१ वें दिनभी कभी नहीं होसकते. इसलिये मास प्रतिबद्ध होली, दीवाली, ओली वगैरहका दृष्टांत दिन प्रतिबद्ध पर्युषणामें बतलाना वि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षयांतर होनेसे सर्वथा अनुचित है, इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वयं विचार लेवेंगे ।

३५-- अधिक महीनाकी तरह क्षय महीनाभी मानना योग्य है या नही ?

पर्युषणादि धार्मिककार्योंका भेद समझे बिना अधिक महीनेके ३० दिनोंमें चौमासी व पर्युषणादि धर्मकार्य नहीं करनेका कितनेक लोग आग्रह करते हैं, मगर कभी कभी श्रावणादि अधिक महीनेवाला वर्षमें कार्त्तिकादि क्षयमासभी आते हैं, तबतो कार्त्तिक महीने संबंधी श्रीवीरप्रभुके निर्वाण कल्याणका तप, दीवाली पर्व, गौतम स्वामीके केवलज्ञान उत्पन्न होनेका महोत्सव, ज्ञानपंचमीका आराधन, चौमासी प्रतिक्रमण व कार्तिक पूर्णिमाका उच्छव वगैरह सभी कार्य तो उसी क्षयमासमें करते हैं। और लौकिकमें अधिकमहीना, या क्षयमहीना दोनों बरोबर माने हैं। जिसपरभी क्षय मासमें दीवालीपर्वादि धर्मकार्य करते हैं। और अधिक महीनेमें पर्युषणापर्वादि धर्मकार्य नहींकरनेका कहतेहैं। यहतो प्रत्यक्षमेंही पक्षपातका झूठा आग्रहहै. सो आत्मार्थियोंको तो करना योग्य नहींहै। इसलिये अधिक महीनेमें और क्षय महीनेमेंभी धर्मकार्य करने उचित हैं। इस बातकोभी तत्त्वज्ञ विवेकी पाठकगण स्वयं विचार लेवेंगे।

३६– वार्षिक क्षामणे या प्राणिकोंके कर्मबंधन व आयु प्रमाणकी स्थिति किस २ संवत्सरकी अपेक्षासे मानते हैं ?

जैनशास्त्रोंमें पांच प्रकारके संवत्सर माने हैं, जिसमें नक्षत्रोंकी चालके प्रमाणसे ३२७ दिनोंका नक्षत्र संवत्सर मानते हैं। चंद्रकी चालके प्रमाणसे ३५४ दिनोंका चंद्रसंवत्सर मानते हैं। फलफूलादिक होनेमें कारणभूत ऋतु प्रतिबद्ध ३६० दिनोंका ऋतुसंवत्सर मानतेहैं। तथा अधिकमहीनाहोवे तब १३महनोंके ३८३दिनोंका अभिवर्द्धित संवत्सर मानतेहैं, और सूर्यके दक्षिणायन उत्तरायनके प्रमाणसे ३६६ दिनोंका सूर्य संवत्सर मानते हैं। और पांच सूर्य संवत्सरोंके प्रमाणसेही १८३० दिनोंका एक युग मानते हैं। इसी युगके १८३० दिनोंका प्रमाण पांचोंही प्रकारके संवत्सरोंके हिसाबसे मिलनेकेलिये, एक युगमें दो चंद्रमास बढते हैं, सात नक्षत्रमास बढतें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हैं और एकऋतुमास बढताहै, तब सब मिलकर १८३०दिनोंका एक युग पूराहोताहै, और एक युगके सभी दिनोंको अभिवर्द्धित महीनेके हिसाबसे गिने तब तो कुल ५७ अभिवर्द्धित महिनोंसेही १ युग पूरा होता है। इसलिये शास्त्रोंके नियमसे तो अधिकचंद्रमासके या अधिक नक्षत्रमासके किसीभी महीनेके १ दिनकोभी गिनतीमें निषेध करनेवाले, तीर्थंकर गणधरादि महाराजोंके कथनके प्रमाणका भंग करनेवाले होनेसे आशातनाके भागी बनते हैं। क्योंकी चंद्रादि अधिक महीनोंके दिनोंकी गिनती सहितही पांच वर्षोंके १ युगके १८३० दिनोंकाप्रमाण पूरा होसकताहै, अन्यथा पूरा नहीं होसकता.

और तिथि, वार, मास, पक्षादि व्यवहार चंद्रमासके हिसाबसे चंद्रसंवत्सरकी अपेक्षासे मानतेहैं। और प्राणियोंके कर्म बंधनकी स्थिति, व आयुप्रमाणकी स्थिति सूर्यमासके हिसाबसे सूर्य संवत्सरकी अपेक्षासे मानते हैं, इसलिये सूर्यसंवत्सरके हिसाबसेही मास, अयन, वर्ष, युग, पूर्व, पूर्वांग, पल्योपम, सागरोपमादिकके काल प्रमाणसे ४ गतियोंके सबीजीवोंके आयुकाप्रमाण, व आठोंही प्रकारके कर्मोंकी जघन्य, मध्यम, उत्कृष्टस्थितिके बंधका प्रमाण, और उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीसे कालचक्रका प्रमाण, यहसबबातें सूर्यसंवत्सरकी अपेक्षासे मानतें हैं. इसका अधिकार लोकप्रकाशादि शास्त्रोंमें प्रकटहीहै। और वार्षिकक्षामणे करनेका तो चंद्रमासके हिसाबसे चंद्रसंवत्सरकी अपेक्षासेमानतेहैं, मगर चंद्रसंवत्सरके ३५४ दिन होतेहैं, तो भी व्यवहारिक रूढीसे ३६० दिन कहनेमें आते हैं। तैसेही महीना बढे तब १३ महीनोंके ३९० दिन कहनेमें आते हैं, मगर कितनेक ऋतु संवत्सरकी अपेक्षासे ३६० दिनोंके वार्षिक क्षामणे करनेका कहते हैं, परंतु ऋतुसंवत्सर पूरे ३६० दिनोंका होता है, उसमें कोईभी तिथि क्षय होनेका अभाव हैं, व तीसरे वर्ष महीना बढनेकाभी अभाव है, और चंद्र संवत्सर ३५४ दिनोंका होनेसे संवत्सरीके रोज चंद्र संवत्सर पूरा होसकता है, मगर ऋतुसंवत्सर पूरा नहीं होसकता। और तिथि, वार, मास, पक्ष, वर्षका व्यवहारभी ऋतुसंवत्सरकी अपेक्षासे नहीं चलता, किंतु चंद्र संवत्सर की अपेक्षासे चलता है, और ऋतु संवत्सरके ३६० दिनतो संवत्सरी पर्व हुए बाद ६ रोजसे दशमीको पूरे होते हैं, और संवत्सरीपर्वतो ४ या ५ को करनेमें आता है, इसलिये वार्षिक क्षामणे ऋतुसंवत्सरकी अपेक्षासे नहीं, किंतु चंद्रसंवत्सरकी अपेक्षासे कर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नेका समझना चाहिये. और ३५४ दिने, या ३८३ दिने संवत्सरी-पर्वहोताहै, तोभी ३६०दिन या ३९०दिन कहनेमें आतेहै. सो रुतुसंवत्सरसंबंधी नहीं. किंतु चद्रं या अभिवर्द्धित संवत्सरसंबंधी व्यवहा-से कहनेमें आते हैं. देखो – चंद्रमासकी अपेक्षासे एक पक्ष १४ दिन ऊपर कुछ भाग प्रमाणे होताहै, मगर पूरे १५ दिनोंका नहीं होता, तो भी व्यवहारमें लोकसुखसे उच्चारण कर सकें इसलिये १५दिनोंका एकपक्ष कहनेमें आताहै। यह अधिकार ज्योतिष्करंडपयन्नवृत्ति वगैरह शास्त्रामें खुलासालिखाहै। इसीतरहसे महीनेके३०दिन व वर्षके३६०दिनभी व्यवहारकी अपेक्षासे समझने चाहिये, मगर निश्चयमें तो जितने दिनोंसे संवत्सरीपर्वमें वार्षिक क्षामणे होवेंगे उतनेही दिनोंके कर्मोंकी निर्जरा होगी, किंतु ज्यादे कम नहीं हो सकेंगी।

और संजलनीय, प्रत्याख्यानीय, अप्रत्याख्यानीय कषायकी अनुक्रमसे, एक पक्षके १५दिन, ४ महीनोंके १२०दिन, व १२महीनोंके ३६० दिनोंके १ वर्षकी स्थितिकाप्रमाण बतलाया है, सो, व्यवहारसे बतलायाहै। मगर निश्चयमें तो रागद्वेषादि तीव्र परिणामोंके अनुसार न्यूनादिकभी बंध पडताहै। इसलिये उसकी स्थितीके प्रमाणकी गिनती सूर्य संवत्सरकी अपेक्षासे होती है। और क्षामणे तो चंद्रसंवत्सरकी अपेक्षासे व्यवहारसे करनेमें आते हैं, सो उपरमें इसका खुलासा लिख चुके हैं। इसलिये ३५४ दिन वर्षके होने परभी व्यवहारिक दृष्टिसे ३६० दिनोंके क्षामणे करनेका, और कषायादि कर्मोंकीस्थिति परिपूर्ण ३६०दिनतक निश्चय भोगनेका, दोनों विषय भिन्न २ अपेक्षासे, अलग २ संवत्सरोंसंबंधी हैं, इसलिये इन्होंके आपसमें कोई तरहका विरोध भाव नहीं आसकता। जिसपरभी चंद्रसंवत्सरसंबंधी व्यवहारिक क्षामणे करनेका,और सूर्यसंवत्सरसंबंधी निश्चयमें कर्मोंकीस्थिति पूरेपूराभोगनेका, रहस्यको समझेबिनाही अधिकमहीनेके ३०दिनोंकोगिनतीमेंलेनेका छोडदेनेके लिये, अधिक महीनेकोंगिनतीमें लेवें-तो कषायस्थितिका प्रमाण बढजानेसे मर्यादाउलंघन होनेकाकहतेहैं,सो शास्त्रोंके मर्मको नहीं जाननेके कारणसे अज्ञानताजनकहोनेसे सर्वथामिथ्याहै. देखो-- एक युगके दोनों अधिक महीनोंके दिनोंको गिनतीमें नहींलेवेंतो सूर्यसंवत्सरका प्रमाणभी पूरा नहीं हो सकता, इसलिये दोनों अधिक महीनोंके दिनोंको अवश्यमेव गिनतीमें लेनेसेही पांच सूर्यसंवत्सरोंके एक युगमें १८३० दिन पुरे होते हैं। इसलिये अधिक महीना गिनतीमें नहीं छुट सकता।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और भी देखो— ३५४ दिने संवत्सरी प्रतिक्रमण करें तो भी व्यवहारमें ३६० दिनोंके क्षामणे करनेमें आते हैं, मगर अप्रत्याख्यानीय कषायके ३६० दिनोंके वर्षकी स्थितिका निश्चयमें बंध पडा होगा वह बंध, ३५४दिनोंमें (३६०दिनोंका) कभी क्षय न हो सकेगा, किंतु वो तो समय २ के हिसाबसे पूरे पूरे ३६० दिनही भोगने पड़ेंगे। इसीतरहसे चौमासी, व पाक्षिककाभी समझलेना. इसलिये व्यवहारिक क्षामणोंके साथ निश्चय कर्मस्थितिका दृष्टांतसे भोले जीवोंको मर्यादाउल्लंघनहोनेका भयबतलातेहुए अपनीविद्वत्ताके अभिमानसे अधिक महीना निषेध करना चाहते हैं सो शास्त्रविरुद्ध होनेसे सर्वथा अनुचितहै। इसकोभी विशेष तत्त्वज्ञजन स्वंय विचारलेवेंगे।

३७— चूलिका संबंधी एक अज्ञानता ॥

कितनेक लोग शास्त्रोंके रहस्यको समझे बिनाही कहतेहैं, कि जैसे-लाख योजनके मेरुपर्वतमें उसकी चूलिका नहीं गिनी जाती, तैसेही १२ महीनोंके वर्षमें अधिक महीनाभी नहीं गिना जाता। ऐसा कहकर अधिक महीनेकी गिनती उडाना चाहते हैं, सो उन्होंकी आज्ञानताहै, क्योंकि एक लाख योजनके मेरुपर्वत उपर ४० योजनकी उंची चूलिका है, उसपर एक शाश्वत जिन चैत्य है, उसमें १२० शाश्वत जिन प्रतिमायें हैं, इसलिये ४० योजनकी चूलिकाके प्रमाणकी गिनतीसहित एक लाख उपर ४०योजनके मेरुपर्वतका प्रमाण क्षेत्रसमासादि शास्त्रोंमें खुलासालिखाहै, तैसेही १२ महीनोंके ३५४ दिनोंके एकवर्षकेप्रमाणउपर अधिकमहीनेकेदिनोंकी गिनतीसहित ३८३ दिनोंका वर्षकी गिनतीमेंलियेहैं, इसलिये चूलिकाके दृष्टांतसे अधिकमहिना गिनतीमें निषेध नहींहोसकता,मगर गिनतीमें विशेष पुष्ट होताहै। औरभी देखो-पंचपरमेष्ठि मंत्र कहनेसे सामान्यतासे पांचपदोंके ३५ अक्षरोंका नवकार कहाजाताहै, मगर उसपरकी ४ चूलिकाओंके ४ पदोंके ३३ अक्षर साथमें मिलानेसे विशेषतासे नवपदोंके ६८अक्षरोंका 'नवकार' चूलिकाके प्रमाणकी गिनतीसहित कहनेमें आता है। इसतरह दशवैकालिक व आचारांगकी दो दो चूलिकाओंका प्रमाणभी गिनतीमें आता है। तैसेही सामान्यतासे एक लाख योजनका मेरूपर्वत, व १२ महीनोंका एक वर्ष कहनेमें आता है। मगर विशेषतासे तो चूलिकाके प्रमाणकी गिनतीसहित एकलाख चालीस योजनका मेरूपर्वत, व अधिक महीनेकी गिनती

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहित १३ महीनोंका अभिवर्द्धित वर्ष कहनेमें आता है। इसलिये अधिक महीना व मेरुचूलिका वगैरह सब विशेषतासे गिनतीमें आते हैं, जिसपर चूलिकाके नामसे अधिक महीना गिनतीमें निषेध करते हैं सो अज्ञानता है, इसको विशेष विवेकी तत्त्वज्ञ पाठक गण स्वंय विचार लेवेंगे।

३८- पर्युषणा पर्व शाश्वत है, या अशाश्वत है ?

यद्यपि भरतक्षेत्रमें व ऐरवर्तक्षेत्रमें चौवीश तीर्थंकर महाराजोंमें प्रथम और चौवीशवें तीर्थंकर महाराजके साधुओंको चौमासा ठहरने व पर्युषणा पर्व करने संबंधी निज निज तीर्थकी अपेक्षासे तो पर्युषणापर्व अशाश्वत है, मगर अनादि कालकी अपेक्षासे तो शाश्वतहीहै. इसलिये तीनों चौमासीपर्व या पर्युषणापर्व वा आसो चैत्रकी ओलियोंकीअट्ठाई आनेसे, भुवनपति-व्यंतर-ज्योतिषी और वैमानिक इंद्रादि असंख्य देव देवी, अपने समुदाय सहित देवलोकसंबंधी अनंत सुखको छोडकर, आठवा नंदीश्वरद्वीपमें जाकर, वहां शाश्ववत चैत्योंमें जिनेश्वर भगवान्के शाश्वत जिन बिंबोंकी जल-चंदन पुष्पादिसे द्रव्यपूजा व स्तवन-नाटक-वाजित्रादिसे भावपूजा करते हुए महोत्सव करके अपनी आत्माको निर्मल करते हैं। यह अधिकार श्री जीवाभिगमसूत्र व उसकी टीकामें खुलासा लिखा है. इसी प्रकार पर्युषणादि पर्व आराधन करनेके लिये श्रावकोंकोभी विशेष रूपसे धर्मकार्य करने योग्य हैं इसका विशेष खुलासा 'पर्युषणा अट्ठाई व्याख्यान' में और कल्पसूत्रकी सबी टीकाओंमें प्रकट ही है, इसलिये यहां विशेष लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

३९- पर्युषणाके विवाद संबंधी सत्यकी परीक्षा करो.

जिनाज्ञानुसार सत्यग्रहण करनेवाले आत्महितैषी सज्जनोंको निवेदन किया जाता है, कि— आगम- निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि- वृत्ति प्रकरणादि प्राचीन व आजकालके पर्युषणा संबंधी सबी शास्त्रोंके पाठोंका व सभी गच्छोंके पूर्वाचार्योंके वचनोंका इसग्रंथमें मैने संग्रह किया है। और इस भूमिकामेंभी वर्तमानिक सभी शंकाओंका नंबर वार क्रमसे समाधानभी खुलासापूर्वक करके बतलायाहै। और इसग्रंथमें अधिक महीनेके ३० दिनोंको गिनतीमें निषेध करनेवाले प्रत्येक लेखकोंके सबी लेखोंको पूरेपूरे लिखकर, पीछे सब लेखोंकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पांक्ति पंक्तिकी समिक्षा करके (इसग्रंथमें) खूलासापूर्वक बतलाया है, मगर पर्युषणासंबंधी किसीभी लेखककी शंकावाली एकभी बातको छोडी नहीं है। इसलिये इसग्रंथमें वादी प्रतिवादी दोनोंके सब पूरे लेखोंको, और आगम पंचांगीके शास्त्र पाठोंको; पक्षपात रहित होकर न्याय बुद्धिसे संपूर्ण वांचने वाले सत्यके अभिलाषीयोंको अवश्यही जिनाज्ञानुसार सत्यकी परीक्षा स्वयंहीहो जावेगी।

४०- जिनाज्ञाकी दुर्लभता।

जैसे पुर्व दिशा तरफ कोई नगर होंवे उसमें जानेके लिये थोडा २ भी पुर्व दिशा तरफ चलनेसे अवश्यही उस नगरकी प्राप्ति होतीहै,। मगर पुर्वदिशा छोडकर पश्चिम दिशामें बहुत २ चलें तोभी वो नगर दूर दूरही जायगा, मगर नजदीककभी नहीं आसकेगा इसीतरह जिनाज्ञानुसार थोडा २ धर्मकार्य किया हूआभी मुक्ति रूपी नगरमें आत्माको पहूचाने वाला होताहै, परंतु जिनाज्ञा विरुद्ध बहुत २ तपश्चर्यादि धर्मध्यान व्यवहारमें करें, तो भी तत्त्वदृष्टिसे शून्य होनेसे मुक्तिनगरमें पहुचानेवाला नहीं होता. किंतु संसार बढानेवाला होता है। और वर्तमानिक आग्रही जनोंकी भिन्न २ प्ररूपणा होनेसे भोले भव्य भद्रजीवोंको जिनाज्ञानुसार सत्यबातकी प्राप्ति होना बहुत मुश्किल है. यही दशा पर्युषणा संबंधी विवादमेंभी हो गई है। इसलिये भव्यजीवोंको जिनाज्ञानुसार पर्युषणा जैसे उत्तमपर्वके आराधन होनेकी प्राप्ति होनेके लिये आगम पंचांगी सम्मत, व सब लेखकोंकी शंकाओंका समाधान पूर्वक मैने इसग्रंथमें इतना लिखा है। उसको अपने गच्छका आग्रह छोडकर तत्त्वदृष्टिसे पढनेवालोंको अवश्यही जिनाज्ञानुसार सत्यकी प्राप्ति होवेगी.

और मनुष्यभवमें शुद्ध श्रद्धा पूर्वक जिनाज्ञानुसार धर्म कार्य करनेकी सामग्री मिलना अनंतकालसे अनंत भवोंमेंभी महान् दुर्लभ है, वारंवार ऐसा सुअवसर नहीं मिल सकता.। इसलिये गच्छका पक्षपात, दृष्टिराग, लोकलज्जाकी शर्म, विद्वत्ताका झूठा अभिमान, जिनाज्ञा विरुद्ध अपने गच्छ परंपराकी रूढी, व बहुत समुदायकी देखादेखीकी प्रवृत्ति वगैरह बातोंको छोडकर जिनाज्ञानुसार सत्यग्रहण करनेमेंही आत्मसाधन होनेसे, नरकादि ४ गतियोंके जन्म--मरण--गर्भावास वगैरह अनंत दुखोंसे छुटना होता है, इसलिये जिनाज्ञानुसार सत्यको समझे बादभी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वसे भोलेजीवोंको उन्मार्गमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गेरनेकेलिये विद्वत्ताके अभिमानसे शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय विरुद्ध होकर झूठी २ कुयुक्तियें लगाना संसार वृद्धि व दुर्लभबोधि का कारण होनेसे आत्मार्थीयोंको सर्वथा योग्य नहीं है ।

४१– पर्युषणापर्व ईधरके उधर कभी नहीं होसकते.

कितनेक लोग जिनाज्ञाका मर्म समझे बिनाही कहते हैं, कि-- पर्युषणापर्व अधिक महीना होवे तब ५० दिने करो, या ८० दिने करो, मगर आगे या पिछे कभी करने चाहिये. ऐसा कहनेवाले सोने और पितल दोनोंको समान बनानेकी तरह जिनाज्ञानुसार सत्य बातको, और जिनाज्ञा विरुद्ध झुठी बातको, एक समान ठहराते हैं। इसलिये उन्होंका कथन प्रमाणभूत नहीं होसकता. किंतु मोक्षका हेतुभूत जिनाज्ञानुसार ५० दिनेही पर्युषणा पर्वका आराधना करना योग्य है, मगर ८० दिने करना जिनाज्ञा विरुद्ध होनेसे कदापि योग्य नहीं ठहर सकता. देखो—जमालि वगैरहोंने जप, तप, ध्यान, आगमोंका अध्ययन, परोपदेश, क्रिया अनुष्ठानादि बहुत २ किये थे तो भी जिनाज्ञा विरुद्ध होनेसे संसार बढाने वाले हुए, मगर यही कार्य अनुष्ठान जिनाज्ञानुसार करते तो निश्चय उसी भवमें मोक्षप्राप्त करने वाले होते. इसलिये आत्मार्थी भव्यजीवोंको जिनाज्ञानुसारही ५० दिने दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्वका आराधन करना योग्य है, मगर जिनाज्ञा विरुद्ध ८० दिने करना योग्य नहीं है । इसको विशेष तत्त्वज्ञ जन स्वंय विचार लेवेंगे ।

४२– पयुषणा पर्वकी आराधना करनेके बदले विराधना करना योग्य नहीं है ।

पर्युषणा जैसे आनंद मंगलमय शांतिके दिनोंमें जिनाज्ञानुसार. धर्मकार्य करके पर्वकी आराधना करते हुए, सब जीवोंसे मैत्रिभावपुर्वक शांततासे वर्ताव करनाचाहिये. और वर्ष भरके लगेहुए अतिचारोंकी आलोचना करके सब जीवोंके साथ भावपूर्वक क्षमत क्षामणे करके अपनी आत्माको निर्मल करना चाहिये । जिसके बदले कितनेही आग्रही जन पर्युषणाकेही व्याख्यानमें सुबोधिका-दीपिका-कीरणावलि आदि वांचनेके समय श्रीमहावीर स्वामीके छ कल्याणक आगमोंमेंकहेहैं उन्होंको व अधिक महीनेके ३० दिन गिनतीमें लियेहैं उन्होंको निषेध करनेकेलिये, कितनीही जगहतो शास्त्रविरुद्ध, व कित-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नीही जगह प्रत्यक्ष मिथ्या कथन करके, आपसमेंही खंडनमंडनके झगडे चलातेहैं, और सब जीवोंकी जगह केवल जैनीमात्रसेभी मित्रता नहीं रख सकते, उससे मैत्री भावनाका भंग, विरोधभावकी वृद्धि व खंडन मंडनसें रागद्वेष करके कर्म बंधनका कारण करते हैं। और शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करनेसे जिनाज्ञाकीभी विराधना करते हैं- उससे परिणामोंकी मलिनता होनेसे पर्व दिनोंमें वर्षभरके अतिचारोंकी आलोचना करके आत्माको निर्मल करनेकेबदले विशेष मलीन करते हैं। और खंडन मंडनके झगडेके लिये सब जीवोंसे क्षमत क्षामणे करनेकेबदले अपने सब जैनीभाईयोंसेभी क्षमत क्षामणे नहीं करसकते. उससे अनंतानुबंधी कषायके उदय होनेका प्रसंग आनेसे सम्यक्त्वकी व संयमकी विरोधना होकर संसार भ्रमणका कारण करते हैं, इसलिये कर्मक्षय कारक महा मंगलमय शांतिके दिनोंमें व्याख्यानमें श्री महावीरस्वामीके छ कल्याणक आगमोंमें कहेहैं उन्होंको व अधिक महिनेके ३० दिनोंको गिनतीमें लिये हैं उन्होंको निषेध करनेकेलिये खंडनमंडनके विवादके झगडे कितनेक तपगच्छ के मुनि महाराज जो चलातेहैं सो पर्वकी विराधना करनेवाले, शांतिके भंग करनेवाले, अमंगलरूप अशांतिको बढानेवाले, व उत्सूत्रप्ररूपणासे संसार बढानेवाले होनेसे, तत्त्वदर्शी, विवेकी, आत्मार्थी- भव भिरू, सज्जनोंको अवश्यही छोडना योग्य है। इसको विशेष निष्पक्षपाति पाठकगण स्वंय विचार सकते हैं।

४३- पर्युषणाके मंगलिक दिनोमें क्लेशकारक अमंगलिक करना योग्य नहीं है।

यहबात व्यवहारसे प्रत्यक्ष अनुभवपूर्वक देखनेमें आती है, कि मांगलिकरूप वार्षिक पर्व दिन सुखशांतिसे हर्षपूर्वक व्यतीत होवे, तो, वो वर्ष संपूर्ण सुखशांतिसे व्यतीत होता है, मगर मांगलिकरूप पर्व दिनोंमें किसीके साथ विरोध भाव कलेश होकर अमंगलरूप अपशुकन होवे, तो, वर्षभर चिंतासे कलेशमेंही जाता है। इसलिये पर्वके दिनोंमें तो अवश्यही शांति रखना योग्य है। इसप्रकार व्यवहारिक बातकेभी विरुद्ध होकर तपगच्छके कितनेही मुनिमहाराज पर्युषणा जैसे परम मांगलिकके दिनोंमेंभी शांतिसे नहीं बैठते, और सुबोधिका-दीपिका-कारणावलि वगैरहके विवादवाले विषय हाथमें लेकर श्रीमहावीरस्वामिके छ कल्याणक आगमपंचांगी अने-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क शास्त्रोंमें कहेहैं उन्होंको, व अधिकमहीनेके ३०दिन गिनतीमेंलिये हैं, उन्होंकोनिषेधकरनेकेलिये. अपनेधर्मबंधुओंके सामने व्याख्यानमें अशांतिके हेतुभूत व अमंगलरूप आपसके खंडनमंडनसे विरोध भावके झगडे खडेकरतेहैं,उससे 'जैसे राजा वैसी प्रजा' की तरह यही गुण श्रावकोंमेंभी प्रवेशकरताहै, इसलिये वर्षभरके झगडे पर्युषणामें लाकर कलेशकरके विशेष कर्मबंधनकरतेहै। इसलिये साधुओंके और श्रावकोंके दोनोंके एक एककी निंदाकरनेमें, झूठीबडाई करनेमें,दूसरे का बिगाडनेमें, या कोई शासन उन्नतिके कार्य करें तो उसकी साहाता करनेके बदले उसमें कोईभी अवगुण बतलाकर उसका खंडन करनेमें इत्यादि अमंगलरूप कलेशके कार्योंमें वर्ष चला जाता है। इसलिये दिनोंदिन शाशनकी यह दशा होती हुई चली जाती है। और इससे अपने आत्मके कल्याणमें व परोपकारके कार्योंमेंभी विघ्न आतेहैं। इसलिये मंगलिकरूप पर्वके दिनोंमें अमंगलिकरूप खंडनमंडनसंबंधी विरोधभाव करना सर्वथा अनुचितहै। और अपनी सचाई जमानेकेलिये खंडनमंडन वैरविरोधके झगडेही करनेकी इच्छा हो तो पर्व दिन छोडकर अन्यभी बहुत दिन मौजूद हैं, मगर पर्युषणा पर्व अराधन करनेके लिये सबगच्छवाले श्रावक मुनिराजोंके पास उपाश्रय·धर्मशालामें आवें, उस वख्त अपने आपसके खंडनमंडनके विरोधभाववाली बात चलाना,यह कितनी बडी अनुचित बात है।और मंगालिकरूपपर्वदिन किसीप्रकारसेभी कलेशकारक खंडनमंडनके विरोधभावसे अमंगालिकरूप नबनकर शास्त्रानुसार शांतिसे पर्वकाआराधन होवे तो आत्माभी निर्मल होवे,वर्षभी हर्षपूर्वक सुखशांतिसे जावे, बुद्धिभी अच्छी होवे, और आत्मसाधन व परोपकारभी विशेषरूपसे होवे, संपसे शासन उन्नतिके कार्योंमेंभी वृद्धि होनेसे वर्तमानिक दशाकाभी सुधारा होवे। इसलिये वार्षिक पर्वरूप पर्युषणा शांतिमय सब जीवोंके साथ मैत्रिभावपूर्वक आराधन करके उसमें मांगलिकके कार्य करने चाहिये। और विरोधभावके कारण रूप खंडनमंडनके अनुचित वर्तावको छोडनाही अपनेको व दूसरे भव्यजीवोंकोभी कल्याणकारक है। और शासनकी उन्नतिकाभी हेतुभूत है. इसको जो आत्मार्थी होगा सो दीर्घ दृष्टिसे खूब विचारेगा और उपर मुजब शास्त्रविरुद्ध अनुचित व्यवहरको छोडकर; शास्त्रानुसार उचित व्यवहारको अवश्यमेव ही ग्रहण करेगा, व दूसरोंकोभी ग्रहण करावेगा.

६

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४४-अभीके आग्रही जनोंकी मलीन बुद्धि व सम्यक्त्वी मिथ्यात्वीकी परीक्षा.

कोईभी वाद विवादके विषयकी चर्चा करनेमें, पहिलेवाले सम्यक्त्वी आत्मार्थी होतेथे वो तो तत्त्वदृष्टि तरफ विचार करके सत्य बात ग्रहण करतेथे और अपनापक्ष छोडनेमें किसीप्रकारकीभी हानी नहीं समझतेथे. श्री गौमतस्वामि आदिगणधर महाराजोंकी तरह तथा सिद्धसेनदिवाकर, हरिभद्रसूरिजीवगैरह उत्तमपुरुषोंकी तरह, और अभीके झूठे अभिमानी अंतर मिथ्यात्वी हठाग्रही होते हैं वो तो शास्त्रोंकी बातको मनमे समझने परभी अभिमानसे सत्यबात ग्रहणकरके अपना पक्ष छोडनेमें बडीभारी हानी समझतेहैं, आनंदसागरजी शांतिविजयजीवगैरहोंकीतरह (इसका खुलासा आगे लिखुंगा) औरशास्त्रोंके अभिप्रायविरुद्ध होकर व्यर्थही झूठी २कुयुक्तियें लगाते हैं, या विषयांतर करके सामनेवालेपर वा उसके समुदायपर विरोध भावको बढानेवाले आक्षेपकरने लगजाते हैं।और मुख्यमुद्देके विवादको छोडकर निंदा ईर्षासें राग द्वेष करके विरोधभावसे अपने को और दूसरोंकोभी कर्मबंधन करानेमें हेतुभूत बनतेहैं. मगर झूठे आग्रहसे उत्सूत्र प्ररूपणा करके कुयुक्तियोंसे भोले जीवोंको उन्मार्ग में गेरनेसे वा राग द्वेषसे विरोधभाव करनेसे संसार बढनेकाभय नहीं रखते हैं, इसलिये अभीके आग्रहीजनोंकी मलीन बुद्धि कही जाती है। इसीप्रकार पर्युषणासंबंधीभी यहग्रंथ वांचेबाद अब देखनेमें आवेगा, कि- ५० दिन प्रतिबद्ध पर्युषणाका विषयको छोडकर मास प्रतिबद्ध होली दिवाली आदिके विषयांतरमें या अंगत आक्षेप करनेमें कौन २ महाशय अपने अंतर आत्माके कैसे २ गुण प्रकाशित करेंगे, सो तत्त्वज्ञ जन स्वयं देख लेवेंगे, इसलिये यहांपर विशेष लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

४५- इस ग्रंथ संबंधी लेखकोंको सूचना.

इसग्रंथपर किसी तरहकाभी लेख लिखनेवाले महाशयोंको सूचना करनेमें आती है, कि-जैसे मैंने इसग्रंथमें सुबोधिका-दीपिका-कीरणावली वगैरहके विवादवाले प्रत्येक लेखोंको पूरेपूरे लिखकर पीछे शास्त्रानुसार व युक्तिपूर्वक उसकी समीक्षामें खुलासा करके बतलाया है, मगर विवादवाली एकभी बातको छोडी नहीं है. वैसेही इसग्रंथपर लेख लिखनेवाले आप लोगभी इसग्रंथके प्रत्येक वि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षयको पूरेपूरा लिखकर पीछे उसपर अपना विचार सुखसे लिखें मगर शास्त्रोंके पाठोंवाली सत्य२बातोंके पृष्ठकेपृष्ठ छोडकर कहींकहीं की अधूरी २ बात लिखकर शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय विरुद्ध होकर संबंधबिनाके अधूरे २पाठ लिखकर या कुयुक्तियोंसे सत्यबातको झूठी ठहरनेका व भोलेजीवोंको उन्मार्गमें गेरनेका उद्यम न करें अन्यथा लेखकोंमें कितना न्याय व आत्मार्थीपना है और सम्यक्त्वका अंशभी कितना है, उसकी परीक्षा विवेकी विद्वानोंमें अच्छी तरहसे हो जावेगा और उसको सभामें सिद्ध करनेको तैयार होना पडेगा फिर शास्त्रार्थ करनेमें मुह नहीं छिपाना विशेष क्या लिखें।

४६– उत्सूत्र प्ररूपणाके विपाक.

शास्त्रार्थ करनेको सभामें सामने आना मंजूर करना नहीं, व अपना झुठा आग्रह छोडकर सत्य बात ग्रहणभी करना नहीं और विषयांतर करके कुयुक्तियोंसे शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करते हुए भोले जीवोंको उन्मार्गमें गेरनें का उद्यम करते रहना. उससे दृष्टिरागी, अज्ञानी लोग चाहे जैसे पूजेंगे मानेंगे मगर "उत्सूत्त भासगाणं बाहिणासो अणंत संसारो" इत्यादि तथा "सम्मतं उच्छि दिय, मिच्छत्तारोवणं कुणई निय कुलस्स ॥ तेण सयलो वि वंसो, कुगई मुह समुहो नीओ ॥ १ ॥" इत्यादि देखो— उत्सूत्र प्ररूपणाकरनेवालेके बोधिबीज (सम्यक्त्व) का नाश होकर अनंत संसार बढताहै, और जिसने अपने कुलमें गणमें (गच्छमें) समुदायमें सम्यक्त्वका नाशकरनेवाली मिथ्यात्वकी प्ररूपणाकी हो वे, वो अपने सब वंशको, गच्छको, समुदायको, दुर्गतिमें गेरनेवाला होताहै। शिवभूति-लुंका-लवजी-भीखम वगैरह मतप्रवर्तकोंकी तरह इत्यादि भावको विचारो और संसारसे उदासीन भावधारण करनेवाले आत्मार्थी भव्यजीवोंको मुक्तिमार्गका रस्ता बतलानेके भरोसे उन्मार्गका रस्ता बतलानेवाला 'शरणे आनेवालोंका विश्वास घातसे शिरच्छेदन करनेवालेसेभी' अधिक दोषी ठहरताहै। और याद रखना दृष्टिराग, लोकपूजा मानता, व झूठा आग्रहका अभिमान परभवमें साथ न चलेगा. मगर उत्सूत्रप्ररूपक ८४ लाख जीवायोनीका घात करनेवाला होनेसे उसके विपाक अवश्यही भवांतरमें भोगेबिना कभी नहीं छुटेंगे, इसबातपर खूब विचारकरना चाहिये। और जिनाज्ञानुसार सत्यप्ररूपणा करके भव्य जीवोंको मुक्तिमार्गका रस्ता बतलानेवाले ८४लाख जीवायोनीके सर्वजीवोंकोअभयदान देनेसे महान्पु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ण्यके भागी होते हैं, और अपने कुलको गच्छको समुदायकोभी स-द्गतिके भागी बनाते हैं व आपभी अपनी आत्माको निर्मल करके अल्पकालमें निर्वाण प्राप्त करनेवाले होते हैं, गणधरादि उपकारी महाराजोंकी तरह। इसलिये संसारसे डरनेवाले आत्मार्थियोंको झूठा आग्रह छोडकर वगर विलंबसे सत्यग्रहण करना चाहिये, और अन्यभव्य जीवोंकोभी सत्य ग्रहण करवाना चाहिये । इसको विशेष विवेकी निष्पक्षपाती पाठक गण स्वयं विचार लेवेंगे।

४७- सुबोधिका-दीपिका--किरणावली वगैरहके पर्युषणा व छ कल्याणक संबंधी शास्त्रविरुद्ध भूलोंको सुधारनेकी खास आवश्यकताहै.

१- जैनपंचांगके अभावसे अभी महीना बढे तो भी " जैन टिप्पणाकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगं ते चाषाढ एव वर्धते, नान्येमासा स्तट्टिप्पणकं तु अधुना सम्यग् न ज्ञायते,ततः पंचाश तैव दिनैः पर्युषणा संगतेति वृद्धाः " इस वाक्यसे सुबोधिका--दीपिका-कीरणवली इन तीनों टीकाकारोंने अपने तपगच्छकेही पूर्वाचार्योंकी आज्ञासे ५० दिने दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्वकी आराधना करनेका लिखा, फीर उसीकोही उत्थापन करनेके लिये शास्त्रविरुद्ध होकर कुयुक्तियोंका संग्रह किया है, यह सबसे बडी प्रथम भूलकीहै, उसको वगर विलंबसे खास सुधारनेकी आवश्यकता है।

२- निशीथ चूर्णिमें अधिक महीनेको कालचूला कहकर उसके ३०दिन पर्युषणासंबंधी गिनतीमें लियेहैं, उसकोभी कालचूलाके नामसे निषेध किये सो दूसरी भूलकी है।

३— निशीथ चूर्णिके अधिकमासके अभाव संबंधी अधूरे २ पाठ भोलेजीवोंको बतलाकर अभी दो श्रावण होवे तबभी जिनाज्ञाविरुद्ध ८० दिने पर्युषणाहोनेका भय न करके भाद्रपदमें पर्युषणा करनेका ठहराया सो तीसरी भूलकी है।

४— अधिक महीनेके अभावसे सामान्यतासे पर्युषणाके पिछाडी कार्तिकतक ७० दिन रहनेका कहा है, उसको समझे बिना अधिक महीना होवे तब विशेषतासे १०० दिन होते हैं उसकी जगहभी ७० दिन रहनेका आग्रह कियासो चौथी भूलकी है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

५- पौष-आषाढ-श्रावणादि बढे तब पांच महीनोंसे फाल्गुन-आषाढ-कार्तिकमें चौमासी प्रतिक्रमण करनेमें आता है, जिसपरभी श्रावणादि बढे तब आसोजमेंकी महीनोंसे चौमासी प्रतिक्रमण करने का बतलाया सो भी पांचवी भूलकी है।

६- पहिले मास बढताथा तबभी २०दिने वार्षिक कार्यकरतेथे, उसको सर्वथा उडादिये सो यह छट्ठी भूलकी है।

७- मास बढे तब १३ महीनोंके क्षामणे वार्षिक प्रतिक्रमणमें वा पांचमहीनोंके क्षामणे चौमासी प्रतिक्रमणमें हम लोग करते हैं, जिसपरभी१२महीनोंके वार्षिक क्षामणे वा ४ महीनोंके चौमासी क्षामणे करनेका प्रत्यक्ष झूठ लिखा सोभी यह सातवी भूलकी है।

८- पौष-चैत्रादि महीने बढे तब प्रत्यक्षमें १० कल्पी विहार होता है, जिसपरभी मास वृद्धिके अभावसंबंधी ९कल्पी विहारकी बात बतलाकर १० कल्पीविहारका निषेध किया सोभी यह आठवी भूलकी है।

९- अधिक महीनेमें सूर्याचार होता है, जिसपरभी नहीं होनेका बतलाया सोभी यह नवमी भूलकी है।

१०- श्रावणादि महीने बढे, तब उसकी गिनतीसहित पांचवें महीनेके नवमें पक्षमें ४॥ महीनोंसे दिवाली पर्व करनेमें आता है, और कभी दो कार्तिक महीने होवे तब प्रथम कार्तिक महीनेमें दीवाली पर्व करनेमें आताहै. जिसपरभी दिवाली वगैरह पर्वोंमें अधिक महीना नहींगिननेका प्रत्यक्षही झूठ लिखा सोभी यह दशवी भूलकीहै

११-यज्ञोपवित, दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाह, सादी वगैरह मुहूर्तवाले कार्य तो अधिक महीनेमें, क्षय महीनेमें, चौमासेमें, और सिंहस्थादिमें भी नहीं करते. मगर चौमासी पर्व व पर्युषणापर्व तो अधिक महीनेमें, क्षयमहीनेमें, चौमासेमें, और सिंहस्थादिमेंभी करते हैं। जिसपरभी मुहुर्तवाले कार्योंकी तरह अधिक महीनेमें पर्युषणा करनेकाभी निषध किया सो यहभी जिनाज्ञा विरुद्ध उत्सूत्रप्ररूपणारूप इग्यारहवी भूलकी है.

१२- ५०दिने प्रथमभाद्रपदमें पर्युषणाकरनाचाहिये जिसकेबदले दूसरे भाद्रपदमें करनेका लिखा सो ८० दिन होनेसे यहभी शास्त्रविरुद्ध बारहवी भूल की है।

१३- जैसे देवपुजा, मुनिदान आवश्यकादि कार्य दिन प्रतिबद्ध हैं, वैसेही पर्युषणापर्व भी ५० दिन प्रतिबद्धहैं, इसलिये जैसे अधिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महीनेके ३० दिन देवपूजा मुनिदानादि कार्योंमें गिनतीमें आते हैं, तैसेही पर्युषणामेंभी अधिक महीनेके ३० दिन गिनतीमें आते हैं, जिसपरभी पर्युषणामें अधिक महीनेके ३० दिन नहीं गिननेका लिखा सोभी यह तेरहवी भूलकीहै।

१४- अधिक महीनेके ३० दिनोंमें वनस्पति बढती है। व फूल-फलादि भी होते हैं, जिसपरभी आवश्यक निर्युक्तिकी गाथाका भावार्थ समझे बिनाही अधिक महीनेमें वनस्पति पुष्पवाली नहीं होनेका लिखा सोभी यह चौदहवी भूलकी है।

इत्यादि अनेक तरहसे शास्त्रविरुद्ध होकर अधिक महीनेके ३० दिनोंको गिनतीमें लेनेका निषेद्ध करनेकेलिये उत्सूत्रप्ररूपणारूप बहुत भूलेंकी हैं उन्होंको खास सुधारनेकी आवश्यकता है।

अब श्रीमहावीरस्वामिके आगमोक्त छ कल्याणकोंका निषेध करने संबंधी भूलोंका थोडासा खुलासा लिखते हैं।

१५- तीर्थंकर महराजोंके च्यवन--जन्मादिकोंको कल्याणकपना आगमानुसार अनादि सिद्ध है, इसलिये उन्होंको च्यवनादि वस्तु कहो, चाहे च्यवनादि स्थान कहो, या च्यवनादि कल्याणक कहो, यद्यपि वस्तु व स्थान शब्द अनेकार्थवालेहैं तोभी तीर्थंकरमहाराजके चरित्रमें प्रसंगसे च्यवन जन्मादिकमें सब एकार्थवाले पर्यायसूचक शब्द अलग २ हैं, मगर सबका भावार्थ एकहीहै, किंतु भिन्न २ नहीं है। इसलिये श्रीपार्श्वनाथस्वामिके तथा श्री नेमिनाथ स्वामिके च्यवनादि पांच पांच कल्याणकोंकी तरहही श्री महावीर स्वामिकेभी च्यवनादि पांच कल्याणक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें और छठा निर्वाण कल्याणक स्वातिनक्षत्रमें होनेका कल्पसूत्रादि आगमोंमें खुलासा पूर्वककहाहै। जिसका मर्म समझे बिना कल्पसूत्रकेमूल पाठके अर्थमें च्यवनादि छकल्याणकोंका निषेध करनेकेलिये छ वस्तु या स्थान कहकर अनादिसिद्धकल्याणक अर्थको उडादिया यह सूत्रार्थके उत्थापन करनेवाली उत्सूत्रप्ररूपणारूप सबसे बडी पंदरहवी भूलकी है।

१६- श्रीमहावीर स्वामिके प्रथम च्यवन कल्याणकके दिनमें तो आषाढ सुदी ६ को इन्द्र महाराजका आसन चलायमानभी नहीं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुवा, तथा इन्द्र महाराजने अवधिज्ञानसे भगवानको देखे भी नहीं और नमुत्थुणं वगैरह कुछभी नहीं किया, तोभी उन्हीको कल्याणकपना मानते हैं और कल्पसूत्रमूल तथा उन्हीकी सबी टीकाओंके अनुसार तो यही सिद्ध होता है, कि- ८२ दिन गये बाद गर्भापहाररूप दूसरे च्यवन कल्याणकके दिनमें आसोज वदी १३ को इन्द्रमहाराजनें अवधिज्ञानसे भगवान्‌को देखे, तब हर्षसहित सिंहासनसे नीचे उत्तर कर विधिपूर्वक 'नमुत्थु णं' किया और हरिणेगमेषिदेवको आज्ञा करके त्रिशलामाताकी कुक्षिमें स्थापित करवाये, तब त्रिशलामातानें आसोज वदी १३ की रात्रिको तीर्थंकर भगवानके अवतार लेनेकी सूचना करानेवाले १४ महास्वप्न देखे हैं। और कलिकाल सर्वज्ञ विरुद धारक श्रीहेमचन्द्रसूरिजी महाराजनें तो 'श्रीत्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र' के दशवेपर्वमें श्रीमहावीरस्वामिके चरित्रमें लिखाहै, कि-गर्भापहारकेदिन आसोजवदी १३को इन्द्रमहाराजकाआसनचलायमान होनेसे अवधिज्ञानसे भगवानको देखकर नमस्काररूप 'नमुत्थु णं' किया और हरिणेगमेषिदेव द्वारा त्रिशलाके गर्भमें स्थापित करवाये, तब त्रिशलामातानें तीर्थंकर भगवान्‌के अवतार लेनेकी सूचना करानेवाले १४महा स्वप्न देखेहैं, उसके बाद खास इन्द्रमहाराजने त्रिशलामाताकेपासमें आकर १४ स्वप्न देखनेसे उसका फल तीर्थंकर पुत्र होनेका कहाहै, तथा धनद्‌भंडारीको आज्ञा करके देवताओं द्वारा धन धान्यादिकसे सिद्धार्थ राजाके राज्य ऋद्धिकी भंडारादिमें वृद्धि कराई है, इत्यादि अनेक बातें च्यवन कल्याणकपनेकी सिद्धिकरनेवाली प्रत्यक्षमें हुयी हैं। इसलिये इन्हको गर्भापहाररूप दूसरा च्यवन कल्याणक मानते हैं। उसका भावार्थ समझे बिनाही कल्याणकपनेका निषेध करनेकोलिये राज्याभिषेककी बात बीचमें लाते हैं, मगर श्रीऋषभदेव भगवान्‌के राज्याभिषेकमें तो किसीभी कल्याणकपनेके कोईभी लक्षण नहीं हैं इसलिये राज्याभिषेकको कोईभी कल्याणक नहीं मानसकते. परंतु इस अवसर्पिणीमें प्रथम राज्याभिषेक उत्तराषाढा नक्षत्रमें इन्द्रमहाराजनें किया, और प्रथम राज्यप्रवृत्ति चलाया, उसकी यादगिरीके लिये केवल राज्याभिषेकका नक्षत्र मात्रही च्यवनादि कल्याणकोंके साथ बतलाया है, उसका भावार्थ समझे बिना उसकोभी कल्याणकपना ठहरानेका आग्रहकरना या राज्याभिषेकके समान गर्भापहारकोभी कल्याणकपने रहित ठहराना सोभी गर्भापहारके और राज्याभिषेकके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भावार्थको समझे बिना व्यर्थ ही यह सोलहवी बडी भूलकीहै।

१७– जैसे श्री मल्लीनाथस्वामि स्त्रीत्वपनमें तीर्थंकर उत्पन्न हुएहैं. सो विशेषतासे प्रसिद्धही है, तो भी चौवीश तीर्थंकरमहाराजोंकी अपेक्षासे सामान्यतासे श्री मल्लीनाथ स्वामीकोभी पुरुषत्वपनेमें कहनेमें आते हैं. मगर उसमे सामान्य विशेष संबंधी अपेक्षाकी भिन्नता होनेसे कोई तरहका विरोध भाव नहीं आ सकता। तैसेही श्रीमहावीर स्वामीकेभी विशेषतासे छ कल्याणक आचारांग-स्थानांग- कल्पसूत्रादि आगमोंमें कहेहैं. तो भी अतित, अनागत, और वर्तमान कालसंबंधी भरतक्षेत्रके तथा ऐरवर्त क्षेत्रके सबी तीर्थंकरमहाराजों की अपेक्षासे सामान्यतासे श्रीमहावीर स्वामिके भी पांच कल्याणक 'पंचाशक सूत्रवृत्ति' में कहे हैं, मगर उसमें सामान्यविशेष अपेक्षाकी भिन्नता होनेसे इनके आपसमें कोई तरहका विरोधभाव नहीं आ सकता, जिसपरभी आचारांग, स्थानांगादि आगमोंके छ कल्याणक संबंधी विशेषताके और 'पंचाशक' के पांच कल्याणक संबंधी सामान्यताके अभिप्रायको समझे बिनाही सामान्य पांच कल्याणक संबंधी पूर्वापार संबंध बिनाका अधूरापाठ भोले जीवोंको बतलाकर आगमोंमें विशेषतापूर्वक छ कल्याणक कहे हैं उन्होंका निषेध करनेके लिये आग्रह किया है,सो भी अज्ञानता जनक सर्वथा अनुचित यह सत्तरहवी बडी भूलकी है।

१८– आचारांग, स्थानांगादि मूल आगमोंमें च्यवनादि अलग २ छ कल्याणक खुलासा पूर्वक बतलाये हैं, और उन्होंकी टीकाओंमेंभी कल्याणक अर्थकी सूचना करनेवाले पर्यायवाचक च्यवनादि छ स्थान बतलाये हैं उसका भावार्थ समझे बिनाही च्यवनादिकोंको वस्तु या स्थान कहकर कल्याणकपनेका सर्वथा निषेध किया सोभी अतीवगहनाशयवाले आगमोंके भावार्थका अजानपना होनेसे यहभी अठाहरवी बडी भूलकी है।

१९– आषाढ शुदी ६ को भगवान देवानन्दामाताकी कुक्षिमें आये, सो नीचगौत्रके कर्म विपाकका उदयरूप है,उसीकोही शास्त्रकारोंने आश्चर्यरूप अच्छेरा कहा है तोभी उसको प्रथम च्यवनकल्याणक मानते हैं। और नीच गौत्रका कर्मविपाक क्षय हुए बाद उंचगौत्रके कर्मविपाकका उदय होनेसे आसोज वदी १३ को त्रिशलामाताकी कुक्षिमें उत्तम कुलमें भगवान् पधारे तब अनादि मर्या-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हामुजब तीर्थंकरमहाराजोंकी माताओंकेगर्भमें तीर्थंकर उत्पन्न होनेकी सूचना करने वाले १४ महास्वप्न देखनेकी तरहही त्रिशलामातानेंभी१४महास्वप्न आकाशसे उतरते हुएदेखेहैं,इसलिये यहतो दूसरा च्यवनरूप कल्याणकपना प्रत्यक्षमेंही सिद्धहै। उन्हींको नीचगौत्रका विपाकरूप और आश्चर्यरूप कहकर कल्याणकपनेका निषेध किया सो यहभी एकोणवीशवीभी बडी भूलकी है।

२०- जैसे देवलोकसे देवभवसंबंधी आयु पूर्ण होने पर वहांसे च्यवनरूप कारण होनेसे माताकेगर्भमें उत्पन्न होनेरूप (अवतार लेनेरूप) कल्याणकपनेका कार्य होता है, तो भी कारण कार्य भावसे च्यवनकोही कल्याणकपना कहनेमें आता है। तैसेही गर्भापहाररूप कारणहोनेसे तीर्थंकर पनेमें प्रकट होनेकेलिये गर्भसंक्रमणरूप(अवतारलेनेरूप) दूसराच्यवनरूप कल्याणकपनेका कार्य हुआ है, तोभी कारण कार्यभावसे गर्भापहारको कल्याणकपना कहनेमें आताहै। इसलिये उनको गर्भापहार कहो; गर्भसंक्रमण कहो, त्रिशलाकुक्षिमें अवतार लेनेका कहो,या दूसराच्यवनरूप कल्याणक कहो. सबका तात्पर्यार्थसे भावार्थ एकही है, इनमे किसी तरहका विरोध नहीं है. इसप्रकार तीर्थंकरपनेमें प्रकट होनेके लिये त्रिशलाके गर्भमें अवतार लेनेरूप गर्भापहारके उत्तम कार्यके भावार्थको समझे बिनाही गर्भापहारको अतिनिंदनीक कहतेहैं सो तीर्थंकर भगवान्के अवर्णवाद बोलनेरूप (आशातनाकरनेरूप) दुर्लभ बोधिपनेकी हेतुभूत यहभी वीशवी बडी भूल की है।

२१- जैसे श्रीआदीश्वर भगवान् १०८ मुनियोंके साथ एक समयमें अष्टापदपर्वत ऊपर मोक्ष पधारे, उनको आश्चर्यरूप कहते हैं, तो भी मोक्ष कल्याणकभी मानतेहैं. तथा श्रीमल्लीनाथ स्वामिके जन्म, दीक्षा, व केवलज्ञानकी उत्पत्ति वगैरह सर्व कार्य स्त्रीत्वपनेमें हुए हैं, उन्होंको आश्चर्य कारक अच्छेरे कहते हैं. तोभी उन्होंकोही जन्म, दीक्षादिक कल्याणकभी मानतेहैं। तैसे ही श्रीमहावीरस्वामिके गर्भापहारको आश्चर्य कारक अच्छेरा कहते हैं, तो भी उनको दूसरा च्यवनरूप कल्याणक माननेमें आता है. उसका आशय समझे बिनाही गर्भापहारको आश्चर्य कहके कल्याणकपनेका निषेध किया सोभी अज्ञानताजनक यह एकवीशवीभी बडी भूल की है।

२२- जैसे श्रीसिद्धसेनदीवाकरसूरिजी महाराजने उज्जेनीनगरीमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दबीहुई श्रीपर्वतिपार्श्वनाथजीकी प्राचीनप्रतिमाकोफिरसेप्रकटकरी, तथा गुजरातमें अणहिलपुर पाटणमें शिथिलाचारी चैत्यवासियोंने संयमधर्मको दबादियाथा, उसको श्रीजिनेश्वरसूरीजीमहाराजने वहां जाकर फिरसे प्रकटकिया और श्रीनवांगीवृत्तिकारक खरतरगच्छनायक श्रीअभयदेवसूरिजी महाराजने श्री स्थंभनपार्श्वनाथजीकी प्रतिमाको प्रकट करी. तैसेही कल्प-स्थानांग-दशा श्रुतस्कंध आचारांगादि आगमोंमें कहेहुए श्रीमहावीरस्वामिके च्यवनादि छ कल्याणकोंकों, मेवाडदेशमें चितोडनगरमें शिथिलाचारी, लिंगधारी, चैत्यवासियोंनें दबा दिये थे, उन्होंकोंही श्री जिनवल्लभसूरिजी महाराजनें वहां जाकर फिरसे प्रकट किये हैं, सो शास्त्रविरुद्ध नवीन नहीं किंतु आगमोक्त प्राचीनही हैं. जिसका भावार्थ समझे बिनाही नवीन प्रकट करनेका कहतेहैं, सोभी अज्ञानता जनक प्रत्यक्षही मिथ्या भाषणरूप यह बावीशवींभी बडी भूल की है।

२३- जैसे अभी वर्तमानिक गच्छोंके पक्षपाती जन अहमदाबाद वगैरह शहरोंमें अपने गच्छके उपाश्रय वा धर्मशाला वगैरह मकान खाली पडे होवें तोभी अन्य गच्छवाले शुद्ध संयमी मुनियोंको उसमें ठहरनें नहीं देते. और यति लोकभी अपनें गच्छके आश्रित भगवान्के मंदिरमें अन्य गच्छके यतिको स्नात्र महोत्सवादि पूजा पढानें नहींदेते, जिसपरभी अन्यगच्छवाला यति अपनेगच्छके आश्रितमंदिरमेंस्नात्रमहोत्सवादि पूजापढानेकोआवेतो, वोलोग मरणे-मारणे-शिरफोडनेको तैयार होतेथे, और कहतेथे, कि-ऐसाकभी पहिले हुआ नहीं और अभी होनेदेगेभी नहीं. यहबात गच्छोंके विरोधभावसे मारवाड, गुजरात वगैरहदेशोंमें पहिले प्रसिद्धहीथी और कोई शहरोंमें अबीभी देखनेंमेंआतीहै। इसीतरहसेही पहिले चैत्यवासीलोगभी आपसके द्वेषसे या लोभदशासे अपने गच्छके आश्रित मंदिरमें अन्यगच्छवालेको स्नात्रपूजा महोत्सव, प्रतिष्ठादि कार्य नहींकरेने देतेथ. उस अवसरमें श्री जिनवल्लभसूरिजी महाराज गुजरात देशसे विहार करके मेवाडदेशमें विशेष लाभ जानकर जिनाज्ञाविरुद्ध शिथिलाचारी चैत्यवासियोंका अविधिमार्गका खंडन करतेहुए, जिनाज्ञानुसार शुद्ध विधिमार्गका उपदेशद्वारा स्थापन करते हुए, भव्यजीवोंके उपकार केलिये चितोडनगरमेंपधारे। तब वहां वाले चैत्यवासियोंनें और उन्होंके पक्षपाती भक्तलोगोंने अपनी भूल प्रकटहोनेके भयसे महाराज को शहरमें ठहरनेके लिये कोईभी जगह नहीं दिया और द्वेषबुद्धिसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चामुंडिका देवीके मंदीरमें ठहरनेका बतलाया, तब महाराज तो दे-वीकी आज्ञालेकर वहांही ठहरे. उनके संयमानुष्ठान, जप, तप, ध्यान, धैर्य, ज्ञानादिगुण देखकर देवीभी प्रश्न होकर जीवहिंसा छोडकर, जी-वदया पालनेवाली व महाराजकी भक्ति करनेवाली होगई. और शहर वालेभी पुण्यवान भव्यजीव जिनाज्ञानुसार सत्यधर्मकी परीक्षा कर-नेको वहां महाराजकेपास थोडे २ आनेलगे. और अन्य दर्शनियोंमेंभी महाराजके विद्वत्ताकी बडी भारी प्रसिद्धि होनेसे बहुत लोग अपना संशय निवारण करनेकेलिये महाराजकेपास आनेलगे, शहरभरमें ब-हुत प्रसंशा होनेलगी, तब कितनेक गुणग्राहीश्रावकलोगभी महाराज-को गीतार्थ, शुद्धसंयमी और शास्त्रानुसार विधिमार्गकी सत्यबातेंब-तलानेवाले जानकर, चैत्यवासियोंकी शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणाकी तथा चैत्यकी पैदाससे अपनी आजीविका चलानेकी स्वार्थीकल्पितबातों-कों छोडकर महाराजकेपास शास्त्रानुसार सत्यबातोंकों ग्रहण करने वाले होगये, पीछे महाराजका चौमासाभी वहां करवाया. तब तो महाराज चैत्यवासियोंकी शिथिलता और अविधिको खूब जोरशो-रसे निषेध करने लगे और जिनाज्ञानुसार विधिमार्गकी सत्यबातें विशेषरूपसे प्रकाशित करनेलगे, उसको देखकर बहुत भव्यजीव चैत्यवासियोंकी मायाजालसे छुटकर शास्त्रानुसार क्रिया अनुष्ठान करने लगे। तबतो चैत्यवासी लोग महाराजपर बहुत नाराज होग-ये और अपनी शास्त्रविरुद्ध भूलोंकों सुधारनेके बदले पांचसौ चैत्य वासी इकट्ठे होकर लकडीयें वगैरह हाथमें लेकर महाराजको मार-नेकेलिये आये, इसबातकी अच्छे २ आगेवान श्रावकोंद्वारा चितोड नगरके राजाको मालूम पडनेसे महाराज ऊपरका यह उपसर्ग रा-जाने दूर किया, चैत्यवासीलोग बहुत द्वेष करतेथे और नगरभरके सबमंदिर चैत्यवासियोंके ताबेमेंथे. इसअवसर में महाराजश्रावकोंके साथ श्रीमहावीर स्वामीके दूसरेच्यवन कल्याणक संबंधी आसोज वदी १३ को चैत्यवासियोंके मंदिरमें देववंदनादि करनेको जाने लगे, तब पहिलेके विरोधभावके कारणसे राज्यमान आगेवान् श्रा-वकलोग साथमेंथे इसलिये चैत्यवासीलोग तो कुछबोल सके नहीं, मगर एक चैत्यवासीनी बुढिया अपने तुच्छ स्वभावसे अपनेगच्छके आश्रित मंदिरके दरवाजेपर आडी सोगई और क्रोधसे बोलने लगी कि-' पहिले ऐसा कभी हुआ नहीं और यह अभी करते हैं सो मेरे जीवते तो मंदिरमेंनहींजानेदूंगी; मेरेको मारकर पीछेभले अंदर जावो'

ऐसा उस चैत्यवासीनी बुढियाका क्रोधसहित अनुचितवर्तावको देखकर यद्यपि श्रावक लोग उसको दरवाजेसे हटाकर मंदिरमें दर्शन करनेको जा सकतेथे, तोभी स्त्रीकेसाथ वैसा करना योग्य न समझ कर महाराजकेसाथ पीछे अपने स्थानपर चले आये. इत्यादि 'गणधरसार्धशतक' बृहद्वृत्ति वगैरहमें श्रीजिनवल्लभसूरिजीमहाराजका चरित्रसंबंधी पूर्वापरके आगे पीछेके प्रसंगको, व चितोड निवासी चैत्यवासियोंके विरोधभावको, विवेकीबुद्धिसे समझेबिनाही अथवा तो जानबुझकर आगे पीछेका संबंधको छुपाकरके कितनेकलोग कहतेहैं, कि- ' श्रीजिनवल्लभसूरिजीने चितोडनगरमें छठे कल्याणककी नवीन प्ररूपणाकरी उसको बुढियाने मना किया तो भी माना नहीं. ' ऐसा कहनेवाले अपनी अज्ञानता प्रकट करते हैं, क्योंकि देखो- वो चैत्यवासीनी बुढिया अज्ञानी आगमोंके भावार्थको नहीं जाननेवालीथी, व शिथिलाचारी होकर अपनी आजीविकाके लिये चैत्यमें रहकरके चैत्यकी पैदाससे अपना गुजरानकरतीथी. और श्रीजिनवल्लभसूरिजी महाराज चैत्यमें [मंदिरमें] रहनेका, व उसकी पैदाससे अपनी आजीविका चलानेका निषेध करनेवाले, तथा शास्त्रानुसार व्यवहार करनेवाले शुद्ध संयमी थे. इसलिये चितोडके सब चैत्यवासियोंकी तरह वह बुढियाभी महाराजसे द्वेष धारण करनेवालीथी और बुढियाके जन्मभरमें भी उसके सामने कोई भी शुद्ध संयमी चैत्यवासका निषेद्ध करनेवाला चितोड नगरमें पहिले कभी नहीं आयाथा. उससेही शास्त्रानुसार विधि मार्गकी बातोंकी उसको मालूम नहींथी. इसलिये इनमहाराजका आगमानुसार छठे कल्याणकका कथनभी उसबुढीयाको नवीन मालूम पडा. और अपने चैत्यवासकी तथा उससे अपनी आजीविका चलानेकी बातकाखंडन करनेवाला तथा अपनी शिथिलाचारकी भूलोंको प्रकटकरनेवाला,ऐसा अपना विरोधी अपने ताबेके मंदिरमें अपने सामने चला आवे सो उस बुढियासे सहन नहीं होसका. इसलिये क्रोधसे मंदिरके दरवाजे आडी पड गई, सो उस निर्विवेकी अज्ञानी क्रोधसे विरोध भाव धारण करने वाली बुढियाके कहनेसे प्रत्यक्ष आगम प्रमाण मौजूद होनेसे छठा कल्याणक नवीन नहीं ठहर सकता. जिसपरभी उस बुढियाके अज्ञानताजनक वचनोंका भावार्थ समझेबिनाही उस चैत्यवासीनी बुढियाकी परंपरावाले अभी वर्तमानमेंभी कितनेक आग्रही जन अज्ञानतासे बुढियाकी तरह द्वेष बुद्धिसे, छठे कल्या-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

णककी नवीन प्ररूपणा करनेका श्रीजिनवल्लभसूरिजीमहाराजपर झूठा दोष आरोपण करतेहैं. मगर प्रत्यक्षपने आगमप्रमाणोंको उत्थापन करके मिथ्याभाषणसे त्रेवीशवी यहभी बडीभूल करके विवेकीतत्त्वज्ञ विद्वानोंके सामने अपनी लघुताका कारण करातेहुए कुछभी विचार नहीं किया। यह कितनी बडी लज्जा [शर्म] की बात है, इसको विशेष तत्त्वज्ञ पाठकगण स्वयं विचार सकते हैं।

और भी प्रत्यक्ष प्रमाण देखिये-श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथजीकी यात्रा करनेलिये मुंबईसे संघ गयाथा, सो रस्तामें संघके दर्शनकरनेके लिये साथमें भगवान्के प्रतिमाजीथे, उनको वहां संघ ठहरे तबतक मंदिरमें विराजमान करनेलगे, सो दिगंबरलोगोंने मना किया, उनके सामने जबराई करनेकोगये. तब आपसमें मारपीट हुई,शिर-फुटे कोर्टकचेरीमें गये, दंडहोनेका या कैदमें जानेकामोका आया, हजारो रुपयें संघके खर्च हुए, तब छूटे. और आपसमें विरोधभाव तथा शासन हिलना बहुत हुई। इसपर अब विचार करना चाहिये, कि-उस समय संघवाले तथा संघकेसाथ आनंदसागरजी वगैरह साधु लोगभी विवेकवालेहोते, तो व्यर्थ हठकरके तकरार खडी न करते, तो इतना नुकसान उठाना नहींपडता. इसीतरहसे श्रीजिनवल्लभसूरिजीमहाराजभी व्यर्थ तकरार न होनेके लिये बुढियाका हठ देखकर वहांसे पीछे चले आये, सो तो दीर्घ दृष्टिसे विवेकतापूर्वक बहुत अच्छा काम किया। जिसके बदले उनको झूठे ठहरानेका दोष लगाना यह कीतनी बडी अज्ञानता है।

और न्यातन्यातमें, गांवगांवमें, देशदेशमें, अपने २ पाडोसीपाडोसीमें, पंच पंचायतमें, राजदरबारमें या गच्छ गच्छमें वा अंधपरंपरारूढीकी खोटी प्रवृत्तिमें, आपसके विरोध भाव संबंधी " ऐसे पहिले कभी हुआ नहीं, और अभी यह ऐसा करते हैं। सो कभी होने देगेंभी नहीं " इस तरहसे कहनेकी एक प्रकारकी रूढी है, उसमें सत्यासत्य की परीक्षाकियेबिना किसीको झूठा ठहराना सर्वथा निर्विवेकता है. इसी तरहसेही उन चैत्यवासीनी बुढियानेभी अपने आग्रहसे वैसा कहाथा, उसका भावार्थ समझेबिना छठे कल्याणकको नवीन ठहराना, सोभी आगमोंकेउत्थापनकरनेरूप तथा श्रीजिनवल्लभसूरिजीमहाराजपर झूठा दोष आरोपणकरनेरूप व अज्ञानताजनक बडी भारी भूलकीहै इसबातको विशेष विवेकीतत्त्वज्ञजनस्वंयविचार सकतेहैं।

२४-देवानंदामाताकेगर्भसे ८२दिनबाद त्रिशलामाताकेगर्भमें आते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को च्यवन कल्याणकपना प्रकट तया सिद्धकरनेकेलियेही खासकल्प सूत्रमेंही च्यवनकल्याणकके सर्व कार्य देवानंदा मातासंबंधी वर्णन नहीं किये,किंतु त्रिशलामाता संबंधी वर्णन किये हैं,तथा समवायांग सूत्रवृत्तिमेंभी देवानंदामाताके गर्भसे८२दिन गयेबाद त्रिशलामाताके गर्भमें आनेको अलग२भव गिनतीमें लियेहैं और कल्पसूत्र तथाउन्हीं की सबी टीकाओंमें तथा श्रीवीरचरित्रादि अनेकशास्त्रोंमेंभीदेवानंदा माताकेगर्भसे८२दिन गयेबाद,आसोजवदी१३को त्रिशलामाताके गर्भमें भगवान् आयेहैं, यह अधिकार बहुत विस्तारपूर्वक खुलासाके साथ कथन किया है। इसलिये देवानंदामाताकी कुक्षिसे जन्म होनेके बदले त्रिशलामाताकी कुक्षिसे जन्म होने संबंधी किसी तरहकीभी असंगतिरूप शंका नहीं हो सकती.जिसपरभी असंगतिरूप शंका निवारण करनेकेलिये गर्भापहारका नक्षत्रबतलानेका कहकर, उनमें अलग २ भव गिनने व १४ महास्वप्न देखने वगैरह बातोंको सर्वथा उडाकर दूसराच्यवनरूप गर्भापहारको कल्याणकपने रहित ठहरातेहैं और बहुततुच्छ समझकर बडीनिंदाकरीहै सोयहभी माया वृत्तिसे तीर्थंकरभगवान्की आशातनारूप चौवीशवी बडीभूलकीहै.

२५- श्रीऋषभदेवआदि तीर्थंकर महाराज पहिले होगये,तथा श्री सीमंधरस्वामिआदि वर्तमानमें हैं.उन्हीं सबीनें श्रीमहावीरस्वामिके च्यवनादि छ कल्याणक कथन कियेहैं, उन्होंकेही अनुसार गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंनेभी आचारांग, स्थानांगादि आगमोंमेंभी च्यवनादि छ कल्याणक कथन किये हैं, उसीकेही अनुसार तपगच्छके पूर्वज वडगच्छके श्रीविनयचंद्रसूरिजीने कल्पसूत्रके निरूक्तमें, तथा चंद्रगच्छके श्रीपृथ्वीचंद्रसूरिजीने कल्पसूत्रके टिप्पणमें और श्री पार्श्वनाथस्वामिकी पट्टपरंपरामें उपकेशगच्छीय श्रीदेवगुप्तसूरिजीने कल्पसूत्रकी टीकामें इत्यादि अनेक प्राचीन शास्त्रोंमेंभी खुलासा पूर्वक च्यवनादि छ कल्याणक लिखे हैं। उसीकेही अनुसार तपगच्छकेभी पूर्वाचार्य श्रीकुलमंडनसूरिजी वगैरहोंनेभी श्रीकल्पावचूरि आदिमें च्यवनादि छ कल्याणक लिखे हैं। इसलिये श्रीतीर्थंकर-गणधर - पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंके प्राचीन समयसेही आगमानुसार आत्मार्थी सर्व गच्छवाले च्यवनादि छ कल्याणक मानने वाले थे, जिसपरभी आगमादि सबी प्राचीनशास्त्रोंके प्रमाणोंको जानबुझकर छुपा करके, या अज्ञानतासे ' श्रीजिनवल्लभसूरिजीनें चितोडमें छठे कल्याणककी नवीन प्ररूपणा करी, ऐसा कहकर जो लोग छठे क-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ल्याणकका निषेध करते हैं. वो लोग तीर्थंकर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंकी और खास अपने तपगच्छकेभी पूर्वाचार्योंकी आशातना करनेवाले ठहरते हैं। इसलिये आत्मार्थी भवभिरू विवेकी जनोंको तो छठे कल्याणकका निषेध करना सर्वथा योग्य नहीं है. मगर करनेवालोंने यह पचीशवींभी बडी भूलकी है। इसकोभी विशेष तत्त्वज्ञजन स्वंय विचार सकते हैं।

२६- सभा मंडलमें जाहीर व्याख्यान करतेहुए परोपकारकेलिये, सत्य बात प्रकट करनेमें अपनी स्वभाविक प्रकृतिसे, सत्यके जोशमें आकरकितनेक वक्तालोग चौकी,टेवल,या पाटापर जोरसे अपनाहाथ पिछाडतेहुए अपना मंतव्य प्रकटकरते हैं, तथा कितनेक छातीठोकते हुए,या भुजा आस्फालन करते हुए, अपनी सत्यबात प्रकट करते हैं, और कोई विशेष प्रबल विद्वान् वादी तो हाथमें खूब उंचा झंडा लेकर नगारा पीटवाते हुए विवाद करनेलिये नगरमें उद्घोषणा ककरवातेहैं। मगर यहबात कोई प्रकारसे अनुचित नहींहै,किंतु सत्य बात प्रकाशित करनेमें अपनीहिम्मत बहादुरीकी स्वाभाविक प्रकृति है। इसीतरहसे श्रीजिनवल्लभसूरिजी महाराजनेभी सबशिथिलाचारी चैत्यवासियोंके सामनेचैत्यवासका निषेध व आगमनानुसार श्रीमहावीरस्वामिके छ कल्याणक मानने वगैरह विषयों संबंधी सत्य बातें प्रकाशित करनेमें अपनी हिम्मत बहादुरीसे भुजास्फालन पूर्वक कहाथा, कि- 'ऊपरकी बातें जो न मानने वाले होवें वो उन्होंकी शास्त्रार्थकरनेकीताकत हो तो मेरेसामने आकर उनबातोंका शास्त्रार्थसे निर्णय करो' मगर उस समय किसीभी चैत्यवासीकी महाराजकेसाथ शास्त्रार्थकरनेकी हिम्मतनहींहुई। तब महाराजने सबलोगोंके सामने ऊपरमुजब सत्यबातें प्रकाशितकी. इसतरहसे 'गणधरसार्धशतक' बृहद्वृत्ति, लघुवृत्ति वगैरहका भावार्थ समझेबिनाही श्रीजिनवल्लभसूरिजीने 'स्कंधास्फालनपूर्वक' छठा कल्याणक नवीन प्रकट किया' ऐसा कहकर चैत्यवास वगैरह सब बातोंका संबंध छुपाकर छठे कल्याणकका निषेध करते हैं. सो मायावृत्तिसे या अज्ञानतासे व्यर्थही भोलेजीवोंको उन्मार्गमें गेरनेके लिये मिथ्या भाषण करके यह भी छवीशवी बडी भूल की है।

२७- श्रीजिनवल्लभसूरिजीमहाराज चैत्यवासका खंडन करनेवाले थे,इसलिये चैत्यवासियोंने महाराजको शहरमें ठहरनेको जगह नहीं दिया और द्वेषबुद्धिसे चामुंडिका देवीके मंदिरमें ठहरनेका बतला-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

था. तब महाराज तो वहांही ठहरकर अनेक प्रकारके कष्ट सहन करतेहुएभी भव्यजीवोंके उपकारकेलिये जिनाज्ञानुसार सत्यबातें लोगोंको बतलाते रहे, और चैत्यमें ठहरने वगैरह चैत्यवासियोंकी कल्पित बातोंका खंडन करते रहे। यहबात 'गणधर सार्धशतक' ग्रंथकी लघुवृत्ति तथा बृहद्वृत्ति वगैरह शास्त्रोंमें खुलासा लिखी है। जिसपरभी ऊपरमुजब चैत्यवासियोंकी भूलोंके तथा जिनाज्ञानुसार सत्य बातोंके प्रसंगको मायावृत्तिसे छुपाकरके 'अपना नवीन मत स्थापन करनेकेलिये चामुंडिकादेवीके मंदिरमें ठहरेथे' ऐसा प्रत्यक्ष मिथ्या लिखकर महाराजकी झूठी निंदाकी और दृष्टिरागी बाल जीवोंकोभी परम उपकारी युग प्रधान आचार्य महाराजके झूठे अवर्णवाद बोलनेवाले बनाये यहभी सतावीशवी बडी भूल की है।

२८- "यो न शेष सूरीणामज्ञातसिद्धांतरहस्यानाम्" इत्यादि 'गणधर सार्धशतक' ग्रंथकी १२२वी गाथाकी लघुवृत्ति तथा बृहद्वृत्तिके यह वाक्य-सिद्धांतके रहस्यको नहीं जाननेवाले द्रव्यलिंगी चैत्यवासियों संबंधी है, मगर पहिले होगये हैं उन सबपूर्वाचार्यौसंबंधी नहींहै, जिसपरभी 'पहिले जितने आचार्य होगये हैं उन सबोंको सिद्धांतके रहस्यको नहीं जाननेवाले ठहराकर जिनवल्लभसूरिजीने छठा कल्याणकनवीन प्रकाशितकिया' ऐसा अर्थ कहतेहैं। सो अपनी विद्वत्ताकी लघुताकारक अपनी अज्ञानता प्रकट करतेहैं। क्योंकि 'शेष' कहनेसे सिद्धांतके रहस्यको जाननेवाले सब पूर्वाचार्योंको छोडकर बाकीके सिद्धांतके रहस्यको नहीं जाननेवाले अज्ञानियोंका ग्रहण होता है और 'अशेष' कहनेसे सबका ग्रहण हो सकता है, मगर यहां तो 'अशेष' शब्द नहीं है, किंतु 'शेष' शब्द है। इसलिये सर्व पूर्वाचार्योंका ग्रहण नहीं हो सकता, जिसपरभी सबका ग्रहण करते हैं सो 'शेष' शब्दके अर्थको भी नहीं जाननेवाले, अपनी अज्ञानतासे, शास्त्रोंके खोटे २ अर्थकरके, यहभी अठावीशवी बडी भूलकी हैं। इसबातको विशेष विवेकी तत्त्वज्ञ विद्वान् लोग स्वयं विचार सकते हैं।

देखिये-खरतर गच्छवालोंने अपने पूर्वाचार्योंके चरित्रोंमें, जैसे-श्री अभयदेवसूरिजी महाराज संबंधी 'स्थंभन पार्श्वनाथ प्रकट कर्ता' तथा 'नवांगी वृत्ति कर्ता' वगैरह बातें उन महाराजने जैनसमाजपर किये हुए उपकारोंकी यादगिरीकेलिये प्रसंशारूप लिखीहैं। तैसे ही श्रीजिनवल्लभसूरिजी महाराज संबंधीभी 'दश सह-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्त्र नवीनश्रावक तथा चामुंडिका देवी प्रतिबोधक ' 'चैत्यवास शिथिलाचार निषेधक ' ' षष्ट कल्याणक प्रकट कर्ता ' वगैरह बातेंभी इन महाराजने जैनसमाजपर किये हुए उपकारोंकी याद् गिरिकेलिये प्रसंशारूप लिखी हैं, सो नवीन कल्पित नहीं, किंतु शास्त्रानुसार प्राचीनहीहैं. इसलिये प्रसंशारूप लिखी हैं । जिसका मर्मभेद समझेबिना, ' गणधर सार्द्ध शतक ' ग्रंथकी लघुवृत्ति तथा बृहद्वृत्तिके ' यो न शेषसूरीणां ' इत्यादि पाठोंके ऊपर मुजब सत्यअर्थोंको छुपाकरके अपनी मतिकल्पना मुजब खोटे खोटे अर्थकरके भोले जीवोंको मिथ्यात्वके उन्मार्गमें गेरनेकेलिये धर्मसागरजीकी अंध परंपरावाले उनकी देखा देखी वर्तमानिक न्यायांभोनिधिजी, शास्त्र विशारदजी, न्यायविशारदजी, विद्यासागर न्यायरत्नजी, जैनरत्न, व्याख्यानवाचस्पति, आगमोद्धारक,गीतार्थ,वगैरह विशेषणोंको धारणकेरनवोल आचार्य,उपाध्याय, प्रवर्त्तक,गणि,पन्यास,प्रसिद्धवक्ता, विद्वान् मुनिजनआदि सर्व ऐसेही अनर्थ करते हुए चले जातेहैं.और सामान्यविशेष बातका भेदसमझे बिनाही सर्वतीर्थंकर महाराजों संबंधी'पंचाशक सूत्रवृत्ति'का पांच कल्याणकों संबंधी सामान्यपाठको आगे करके कल्प,स्थानांग,आचारांगादिमें विशेषता पूर्वक च्यवनादि छ कल्याणककहेहैं,उन्होंका निषेधकरनेकेलिये आगमोंके अनादिसिद्ध च्यवनादि कल्याणक अर्थको उडा देतेहैं. तथा जैसे यति-मुनि-साधु-अणगार शब्द एकार्थके भावार्थवालेहैं,तैसेही च्यवनादि वस्तु-स्थान-कल्याणक शब्दभी एकार्थके भावार्थवालेहैं, उसकाभेद समझे बिना ही च्यवनादिकोंको वस्तु-स्थान कहकर कल्याणकपने रहित ठहराते हैं। मगर दीर्घदृष्टिसे विवेकबुद्धिपूर्वक शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय तरफ उपयोग लगाकर सत्य तत्त्व बातका कोईभी विचार नहीं करतेहैं,यह अंधपरंपराकी कितनी बडीभारी लज्जनीय अनुचित प्रवृत्तिहै. इसकोविशेष विवेकीतत्त्वज्ञ पाठकगण स्वयंविचार सकतेहैं।

औरभी देखिये-विवेक बुद्धिसे खूब विचारकरीये, यदि-नीचगौत्र कर्मविपाकरूप तथा आश्चर्यरूप कहनेसे कल्याणकपनेका निषेध हो सकता होवे, तबतो आषाढशुदी ६ को देवानंदामाताके गर्भमें भगवान्आये,सोही नीचगौत्र कर्मविपाकरूप होनेसे कल्पसूत्रादि शास्त्रोंमें उनको आश्चर्यकहाहै,इसलिये तुम्हारे मंतव्य मुजबतो उनकोभी कल्याणकपनेका निषेध हो जावेगा. और विशेष अधिक आश्चर्यकारक दूसरे च्यवनकी तरह प्रथमच्यवनभी कल्याणकपनें रहित होनेसे शो-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षबाकीके ४कल्याणकही रहजावेंगे.और नीचगौत्रके विपाकरूप तथा आश्चर्यरूप कहते हुएभी प्रथम च्यवनको कल्याणकपना मानोंगे,तो-नीचगौत्र विपाकरूप और आश्चर्यरूप कहकर दूसरे च्यवनरूप गर्भापहारको कल्याणकपने रहित ठहराया सो प्रत्यक्षमिथ्या व्यर्थही झूठा आग्रह सिद्ध होवेगा. इसलिये ऐसे झूठे आग्रहसे भोले जीवोंको संशयरूप मिथ्यात्वके भ्रममें गेरकर भगवानकी आशातनाका हेतुभूत अनर्थ करना सर्वथा योग्य नहीं है. किंतु प्रथम च्यवनमें कल्याणकपना माननेकी तरहही दूसरे च्यवनमेंभी कल्याणकपना आगमादि शास्त्रप्रमाण तथा युक्तिसम्मत होनेसे आत्मार्थियोंको अवश्यही मान्यकरना उचितहै, इसको विशेष तत्त्वज्ञजन स्वयंविचारसकतेहैं।

औरभी प्रत्यक्ष शास्त्रप्रमाण देखिये-कल्पसूत्रकी सर्व टीकायें वगैरह बहुतशास्त्रोंमें श्रीजंबूस्वामिके निर्वाणगयेबाद दश(१०) वस्तु विच्छेद होनेका लिखाहै. उसमें-केवलज्ञान,केवलदर्शन, यथाख्यात-चारित्र,मुक्तिगमन वगैरह बातोंकोभी वस्तु कहाहै. और 'गुणस्थान-क्रमारोह'वगैरह शास्त्रोंमेंभी केवलज्ञान उत्पन्नहोनेको,तथा मुक्तिगमनको १३-१४ वा गुणस्थान कहाहै. इसी तरहसे इन शास्त्रप्रमाण मुजबभी तीर्थंकर भगवानके केवलज्ञान उत्पन्न होनेको तथा मुक्तिगमन निर्वाणको वस्तु कहो या स्थान कहो और उन्होंकोंही केवलज्ञान तथा निर्वाण कल्याणकभी मानो,तो भी इस बातमें कोई तरहका विरोधभाव नहींहै, इसलिये च्यवनादिकोंको वस्तु कहो, या स्थान कहो, वा कल्याणककहो, सबका तात्पर्यार्थसे भावार्थ एकहीहै. जिसपरभी वस्तु-स्थान कहकर कल्याणकपनेका निषेध करनेवाले अपनी अज्ञानतासे शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करके भोलेजीवोंको उन्मार्गमें गेरते हैं, और अपनी आत्माकोभी उत्सूत्र प्ररूपणाके दोषसे मलीन करते हैं. इसबातकोभी विवेकी तत्त्वज्ञजन स्वयं विचार सकते हैं।

और तीर्थंकरभगवानके च्यवनादिकोंको कल्याणकपना आगमानुसार अनादिसिद्धहै, उन्हीं च्यवनादिकोंको शास्त्रोंमें एक जगह स्थान कहे,दूसरी जगह वस्तु कहे,तीसरी जगह कल्याणक कहे, इससेभी वस्तु-स्थान-कल्याणक यह तीनों शब्द पर्यायवाचक एकार्थवाले सिद्ध होतेहैं जिसपरभी वस्तु-स्थान शब्द देखकर अनादिसिद्ध च्यवनादिमें कल्याणक अर्थको उडादेना सो अपने झूठे पक्षपातके आग्रहसे शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणा करनेरूप यह कितनी बडी भूल है इसको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आत्मार्थी विवेकी तत्त्वज्ञ पाठक जन स्वयं विचार सकते हैं।

छ कल्याणक संबंधी ऊपरके संक्षिप्त लेखसेभी जो आत्मार्थी सत्य ग्रहण करने वाले निकट भव्य होंगे, वह तो थोडेसेमेंही सार समझ लेवेंगे, कि-गर्भापहारको अलग भव गिननेसे तथा त्रिशलामाताने सर्व तीर्थंकर माताओंकी तरह आकाशसे उतरते हुए १४ महास्वप्रदेखने वगैरह कार्योंसे दूसराच्यवनरूप कल्याणकपनेकी उत्तमताको छुपाकरके व्यर्थही छठे कल्याणककी निंदाकरना सर्वथा योग्यनहींहै और शास्त्रोंकेअर्थ बदलकरके उत्सूत्रप्ररूपणासे व कुयुक्तियोंसे भोले जीवोंकोभी उत्तम कार्यके हेतुभूत गर्भापहारकी निंदा करवाने वाले बनवाकर तीर्थंकर भगवानकी आशातनासे भवहार जानेका कारण कराना कदापि योग्य नहींहै। ऊपरकी इन सब बातोंका विशेष निर्णय शास्त्रोंके संपूर्ण पाठोंके प्रमाणोंसहित इस ग्रंथके पृष्ठ ४५३ से ८२६ तक छप चुका है, सो तीसरे भागमें प्रकट होगा. उसके बांचनेसे सर्व शंकाओंका खुलासा समाधान अच्छी तरहसे होजावेगा।

और शासन नायक श्रीमहावीरस्वामि आदि सर्व तीर्थंकर महाराजोंके चरित्र भव्यजीवोंको कर्मोंकी निर्जरा करानेवाले कल्याणकारक मंगलरूपही हैं, इसलिये पर्युषणाके मंगलिक पर्व दिनोंमें आत्मकल्याणके लिये वांचनेमेंआतेहैं. और श्रीमहावीरस्वामिके गर्भापहाररूप दूसरा च्यवनका कार्य तो त्रिशलामाता, सिद्धार्थपिता, व इंद्रमहाराज वगैरह सर्व जीवोंको कल्याण मंगलरूप हर्षका देनेवालाहुआहै। तथा उनका आराधन करनेवाले अल्पसंसारी आत्मार्थी भव्यजीवोंकोभी अभिमानरहित कर्मोंकी विचित्रताकी भावनासे कर्मोंकी निर्जरा करानेवाला कल्याणकारक मंगलरूपहोता है। मगर गर्भापहारके नाम सुननेमात्रसेही चमकउठनेवाले और उनको नीच गोत्रविपाकरूप, आश्चर्यरूप अतीवनिंदनीककहकरनिंदाकरनेवालोंको तीर्थंकरभगवानके अवर्णवाद बोलनेसेसंसारपरिभ्रमणके बहुतविशेष दुःख भोगनेबाकी होंगे, इसलिये उन्होंको वो कार्य अमंगलरूप अकल्याणरूप मालुमपडता होगा। इससे उनकार्यसे द्वेषरखकर वर्षोवर्ष पर्युषणाके मांगलिकरूप कल्याणकारक पर्वदिनोंके व्याख्यानमें उनकी निंदा करते हुए अकल्याणरूप अतिनिंदनीक ठहराकार तीर्थंकर भगवानकी आशातना करनेसे अपनेको और दूसरे भव्य जीवोंकेभी अकल्याणरूप दुर्लभबोधिका हेतुकरतेहैं, ऐसी २ अनर्थभूत अनुचित बातोंसेही 'सुबोधिका' नाम रक्खाहै। मगर वास्तविक में

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तो 'दुर्लभबोधिका' नाम सिद्ध होताहै । इसबातको विशेष आत्मार्थी तत्त्वज्ञ पाठकगण स्वंय विचार लेवेंगे।

एक बात उत्थापन करनेसे अनेक बातें उत्थापन करनी पडती हैं ॥

देखो-एक अधिकमहीना व छ कल्याणक उत्थापनकरनेसे उसकी पुष्टिकेलिये, अनेक शास्त्रोंके अर्थबदलनेपडे। अनेक जगह शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय विरुद्ध आग्रह करना पडा। कितनीही जगह मिथ्या बातें भी लिखनी पडी। कितनीक जगह शास्त्रोंके आगे पीछे के संबंधवाले पाठोंको छोडकर बिनासंबंधेक अधूरे २ पाठभी भोले जीवोंको बतलाकर अपनापक्षकी सत्यता बतलानेका परिश्रम करना पडा और कितनीही जगहतो शास्त्रोंकी, पूर्वाचार्योंकी व भगवानकी भी आशातनाके हेतुभूत अनुचित शब्दभी लिखने पडे. उसकाअनुभवतो सुबोधिक-किरणावलीआदिककी२८भूलोंवाले ऊपरकेलेखसे तथा इसभूमिकाके सबलेखपरसे और इस ग्रंथके अवलोकन करनेसे पाठकगणको अच्छी तरहसे होसकेगा, इसलिये 'एक बात उत्थापन करनेसे अनेक बातें उत्थापन करनी पडतीहैं' यह लोकरूढीकी कहावतकी बात ऊपरके विषयमें प्रत्यक्ष देखनेमें आती है।

इसप्रकार पर्युषणासंबंधी, व छ कल्याणक संबंधी अपना झूठा पक्ष स्थापन करनेकेलिये और भोले जीवोंको उन्मार्गमें गेरनेकेलिये, शास्त्र विरुद्ध होकर विनयविजयजीनें सुबोधिकामें, तथा जयविजयजीने दीपिकामें, और धर्मसागरजीने किरणावलीमें, ऊपर मुजब अनेक भूलें की हैं, उन्हीं भूलोंको तपगच्छके कितनेक आग्रही जन पर्युषणाके व्याख्यानमें वर्षोवर्ष वांचते हैं. उससे जिनाज्ञाकी विराधनाहोकर भवबढनेका व दुर्लभबोधिका हेतुभूत अनर्थ होताहै. इसलिये अल्पसंसारी भव्यजीवोंको जिनाज्ञानुसारसत्यबातोंकी प्राप्ति होनेरूप उपकारकेलिये उपरकी सब बातोंका खुलासा निर्णय इसग्रंथमें अच्छीतरहसे लिखनेमें आया है। उसको देखकर यदि शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणासे संसार परिभ्रमणका भय लगता हो तो उन भूलोंको सुधारो, व्याख्यानमें वांचेनका बंध करो, और सत्यबातोंको ग्रहण करो या बडोदा वगैरह किसीभी राज्य दरबारमें इन भूलोंसंबंधी श्रीगौतमस्वामिआदि गणधरमहाराज व सिद्धसेनदीवाकर, हरिभद्रसूरिजी वगैरह महाराजोंकी तरह सत्य ग्रहण करनेकी प्रति-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ज्ञापूर्वक शास्त्रार्थ करनेको तैयारहो, हमने तो इनका सत्य निर्णय अच्छी तरहसे करलियाहै,तोभी इन शास्त्रार्थमें सत्यनिर्णय ठहरेगा सो मंजूर है, इसलिये जो महाशय ऊपरकी भूलोंसंबंधी शास्त्रार्थ करना चाहते होवें, वो अपनी सहीसे अपना प्रतिज्ञा पत्र जाहिर रूपसे हमको भेजें.समय, स्थान, नियम, साक्षि वगैरह की व्यवस्था तो सबके अनुकूल उसी राज्यके नियममुजब होसकेगी, विशेष क्या लिखें।

पर्युषणा संबंधी मंतव्यके कथनका संक्षिप्त सार.

१– जैनटिप्पणाके अभावसे लौकिक टिप्पणामुजब मास-पक्ष-तिथि–वर्ष वगैरह माननेका व्यवहार करना और पर्युषणादि धार्मिक कार्योंका व्यवहार जैन सिद्धांतोके अनुसार करना. तथा जैनसिद्धांतोंके अनुसार या लौकिक टिप्पणाके अनुसारभी अधिक महीनेके ३० दिनोंको दान, पुण्य, परोपकार, जप, तप, धर्म ध्यानादि करनेमें व ब्रह्मचर्य पालनेमें या देशविरती–सर्वविरती संयम पालनेमें, तथा कर्मबंधनकी स्थितिके प्रमाणमें और कर्मोंकी निर्जरा करने वगैरह कार्योंमें गिनतीमें लियेजातेहैं, तैसेही ५० दिन प्रतिबद्ध पर्युषणापर्व का आराधन करनेमेंभी उसके३० दिन गिनतीमें लेकर खरतरगच्छ, तपगच्छादिककी कल्पसूत्रकी टीकाओंके "पंचाशतैव दिनैः पर्युषणा संगतेति वृद्धाः" इसवाक्यमुजब अभी दूसरेश्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें५०दिने पर्युषणापर्वकरना, यही शास्त्रानुसार जिनाज्ञा है।

२– मास प्रतिबद्ध कार्य तो एक महीनेकी जगह दूसरे महीनेमेंभी करनेमें आवे, तो भी कोई शास्त्रमें उनका दोष नहीं बतलाया. मगर पर्युषणापर्व करनेमें तो ५०दिनकी जगह ५१दिनभी कभी नहींहोसकते, इसलिये बिनामुहूर्त्तवाले ५० दिन प्रतिबद्ध पर्युषणापर्वके साथ मास प्रतिबद्ध या मुहूर्त्त प्रतिबद्ध होली, ओली, दीवाली, दशहरा, अक्षयतृतीया,पौष–श्रावणादिक महिनोंके कल्याणकादितप,या यज्ञोपवित, दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाह सादी वगैरह कोईभी कार्योंका संबंध नहीं है। जिसपरभी दिन प्रतिबद्ध पर्युषणापर्व आराधन करनेकी चर्चामें मासप्रतिबद्ध या मुहूर्त प्रतिबद्ध कार्योंकी बात बीचमें लाते हैं. वो लोग पर्युषणापर्वकरने संबंधी शास्त्रकार महाराजोंका आशय नहीं जानने वाले होनेसे, शास्त्रोंकी आज्ञा विरुद्ध होकर व्यर्थही कुयुक्तियोंसे विषयांतर करके भोले जीवोंको उन्मार्गमें गेरते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३– अधिक महीनेके अभावसंबंधी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेके व उसकेपीछे ७० दिन रहनेके और १२ मासी क्षामणे वगैरहके सामान्यपाठोंको अधिकमहीना होवे तबभी आगेलातेहैं। और अधिकमहीनेसंबंधी " पचाशतैव दिनैः पर्युषणा संगतेति वृद्धाः " कल्पसूत्रकी सर्व टीकाओंके इस विशेषपाठको, तथा स्थानांगसूत्रवृत्ति, निशीथचूर्णि,बृहत्कल्पचूर्णि,वृत्ति, पर्युषणाकल्पचूर्णि वगैरह शास्त्रोंके १०० दिन रहने संबंधीआदि विशेषताके पाठोंकी सत्यबातोंको छुपाकरके छोड देते हैं, सो यह सर्वथा अनुचित है।

४– धार्मिक कार्य करनेमें १२ महीनोंके सर्व दिन, या अधिक महीना होवे तब १३महीनोंकेभी सर्व दिन, वा क्षय महीनेकेभी सर्वदिन बरोबर समानही हैं, उनमें कर्मबंधनके संसारिक कार्य और कर्म निर्जराके धार्मिक कार्य हमेशा बराबर होते रहते हैं, इसलिये तत्त्वदृष्टिसे तो उनमेंसे एक समय मात्रभी गिनतीमें नहीं छुट सकता. जिसपरभी कार्तिकादि क्षयमहीनेके ३० दिनोंमें दीवाली, ज्ञानपंचमी, चौमासी वगैरह धार्मिक कार्य करते हुएभी अधिक महीनेके ३० दिनोंको तुच्छ समझकर बडी निंदा करते हैं, या कालचूलाके नामसे गिनतीमें छोड देनेका कहते हैं, सो सर्वथा जिनाज्ञाका उत्थापन करते हैं।

५— जैन ज्योतिषविषयसंबंधी प्ररूपणा आगमानुसार करनी और श्रद्धाभी उसीमुजबरखनी,परंतु अभी पडताकालमें जैनटिप्पणा बंध होनेसे उस मुजब व्यवहार नहींकरसकते.और लौकिकटिप्पणा मुजब व्यवहार करनेमें आता है। इसलिये अभी जैन शास्त्रमुजब पौष-आषाढ अधिक होनेसंबंधी पाठ बतलाकर लौकिक टिप्पणासंबंधी चैत्र;श्रावणादि अधिकमहीनें मान्यकरनेका निषेध नहीं करसकते। और जैसे जिनकल्पी व्यवहार अभी विच्छेद है तोभी उन्हकी प्ररूपणाकरनेमें आतीहै, तैसेही पौष--आषाढ बढनेकी प्ररूपणा तो शास्त्रानुसार करसकते हैं, मगर मास-पक्ष-तिथि वगैरहका वर्ताव तो लौकिक टिप्पणा मुजबही करना योग्य है।

इन सर्व बातोंका विशेष निर्णय ऊपरके भूमिकाके लेखमें और इस ग्रंथमें अच्छी तरहसे हो चुका है। यहां तो उसका संक्षिप्तसार मात्रही बतलाया है. मगर विशेष निर्णय करनेकी अभिलाषावाले पाठकगण इसग्रंथको संपूरणतया वांचेंगेतो सबखुलासा हो जावेगा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छ कल्याणकों संबंधी मंतव्यके कथनका संक्षिप्त सार.

१– कल्पसूत्र तथा आचारांग सूत्रादि आगमानुसार विशेषतासे श्रीमहावीरस्वामिके च्यवनादि छ कल्याणकमान्य करने,और अतित-अनागत-वर्तमानकालके सर्वतीर्थंकर महाराजोंकी अपेक्षासंबंधी सामान्यतासे पंचाशकादि शास्त्रानुसार पांचकल्याणकभी मान्य करने, इनमें कोई दोष नहींहै. मगर कितनेक लोग शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्रायको नहीं जाननेसे पंचाशकके पांच कल्याणकों संबंधी सामान्य पाठको भोले जीवोंको बतलाकर; विशेषतासे कल्प-आचारांगादि आगमोक्त छ कल्याणकोंका निषेध करते हैं, सो अज्ञानतासे शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणा करते हैं।

२– श्रीऋषभदेवस्वामिके राज्याभिषेकके कार्यमें तो च्यवन-जन्म-दीक्षादि कोईभी कल्याणकके कुछभी लक्षण नहीं हैं, तथा उनके मास,पक्ष,तिथि वगैरहकाभीकहीं उल्लेखनहींहै.और श्रीमहावीरस्वामिके दूसरे च्यवनरूप गर्भापहारके कार्यमें तो सर्व तीर्थंकर महाराजोंकी माताओंकी तरह त्रिशला मातानेंभी १४ महास्वप्न आकाशसे उतरते हुए देखेहैं, तथा उसी दिन इन्द्रमहाराजका त्रिशलामाताकेपास आगमनहुआहै, तीर्थंकर पुत्र होनेका स्वप्नफल कहाहै,व उनके मास-पक्ष-तिथि वगैरह च्यवन कल्याणकके सर्व कार्य प्रत्यक्षपने शास्त्रोंमें कथन किये हुए हैं. और समवायांगसूत्रवृत्ति, लोकप्रकाशादिशास्त्रोंमें उनको अलग भव गिनतीमेंलियाहै,इसलिये गर्भापहाररूप दूसरे च्यवनके कार्यमें तो च्यवन कल्याणकपनेके सर्व लक्षण मौजूद हैं;जिसपरभी राज्याभिषेकके समान गर्भापहारकोभी ठहरते हैं, और उनको कल्याणकपने रहित कहतेहैं सो सर्वथा अनुचितहै।

३– श्रीमल्लीनाथस्वामिके स्त्रीत्वपनेमें तीर्थंकरपनेके जन्म-दीक्षादि कार्य अच्छेरारूप हुए हैं, तो भी उन्होंकोही कल्याणकपना माननेमें आताहै. तथा श्रीमहावीरस्वामि भगवानभी ब्राह्मण कुलमें देवानंदा माताके गर्भमें उत्पन्न हुए सो अच्छेरा रूपहै, तो भी उनको प्रथम च्यवनरूप कल्याणकपना मानते हैं । तैसेही गर्भापहाररूप आश्चर्यको भी दूसरा च्यवनरूप कल्याणकपना माननेमें आता है, इसलिये आश्चर्य कहनेसे कल्याणकपना निषेध नहीं हो सकता. जिसपरभी आश्चर्य कहकर कल्याणकपनेका जो निषेध करतेहैं, वो लोग अपनी अज्ञानतासे बड़ी भूल करते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४- देवानंदामाताकी कुक्षिमें भगवान आये सो ही नीचगौत्र कर्म विपाकरूपहै, उनका क्षय हुए बाद उच्चगौत्रके कर्मका उदय होनेसेही गर्भापहार करनापडाहै, तो भी शास्त्रकार महाराजोंनें तो देवानंदाकी कुक्षिमे आनेको तथा त्रिशलामाताकी कुक्षिमें आनेको, इन दोनों कार्योंको तीर्थंकर भगवानके चरित्रमें उत्तमतापूर्वक कल्याणकारक माने हैं। जिसपरभी त्रिशलामाताके गर्भमें आनेको नीचगौत्र कर्मविपाकरूप अतिनिंदनीक कहकर जो लोग वर्षोंवर्ष पर्युषणाके मांगलिक पर्व दिनोंके व्याख्यानमें प्रत्यक्ष झूठ बोलकर भगवानकी निंदा करतेहैं, सो तीर्थंकर भगवान्के अवर्णवाद बोलनेवाले होनेसे आशातनाके दोषी ठहरते हैं।

५- जैसे श्रीअभयदेवसूरिजीमहाराजने श्रीस्थंभनपार्श्वनाथजीकी प्रतिमाको प्रकट किया, उनका आशय समझेबिना कितनेक ढूंढिये व तेरहापंथी लोग जिनप्रतिमाकी नवीन प्ररूपणा कहें, तो उन्होंकी अज्ञानता समझी जावे. मगर तत्त्वदृष्टिवाले विवेकीलोग जिनप्रतिमाकी नवीन प्ररूपणा कभी नहीं कहेंगे, किंतु आगमोक्त प्राचीनही कहेंगे। तैसेही श्रीजिनवल्लभसूरिजी महाराजनेभी षष्ट कल्याणकको प्रकट किया, उनका आशय समझेबिना कितनेक लोग उनकी नवीन प्ररूपणा कहते हैं, वो उन्होंकी अज्ञानता समझनी चाहिये. मगर तत्त्व दृष्टिवाले विवेकीलोग उनकी नवीन प्ररूपणाकभी नहीं कहेंगे, किंतु आगमोक्त प्राचीन ही कहेंगे.

६- भगवानके शरीर-इन्द्रीय-पर्याप्तिके अवयव [पुद्गलपरमाणु] देवानंदामाताके शरीरसे बने हुए थे, और उसी शरीरसे त्रिशलामाताके गर्भमें भगवान् आगयेथे, यहबात आश्चर्यकारक होनेसे शरीर-इन्द्रीय-पर्याप्ति बदले बिनाभी शास्त्रकार महाराजोंने उनको अलग भव गिना है। उनमें प्रत्यक्षपने च्यवन कल्याणकपना दिखलानेके लियेही खास कल्पसूत्रके मूलपाठमें त्रिशलामाताने १४ स्वप्न देखेहैं उन संबंधी "ए ए चउदस सुमिणे, सव्वा पासेइ तित्थयर माया। जं रयणिं वक्कमई, कुच्छिंसि महायसो अरिहा ४७॥" यह पाठ लिखा है, और इसपाठकी सुबोधिका टीकामें इस प्रकार व्याख्या किया है "अत्र प्रसंगेन एतेषां स्वप्नानां गर्भकाले सकलजिनराजजननीविलोकनीयत्वं दर्शयन्नाह-एतान् चतुर्दश स्वप्नान्, सर्वाः पश्यंति तीर्थंकर मातरः। यस्यां रजन्यां उत्पद्यंते, कुक्षौ महायशसः अर्हन्तः ॥४७॥ इसी तरहसेही सर्व टीकाओंमेभी ऐसेही भावार्थका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पाठजानलेना. देखो-जिसरात्रिको तीर्थंकरभगवान माताकेगर्भमेंआकर उत्पन्नहोवें,उसरात्रिको उन्होंकीमाता गर्भकाले अर्थात् च्यवन कल्याणक समय सर्व तीर्थंकरोंकी मातायें यह१४महास्वप्न देखती हैं। ऐसेही श्री महावीरस्वामिभी त्रिशलामाताके गर्भमें आये,तब त्रिशलामातानेंभी १४महास्वप्न देखे हैं। इस ऊपरके पाठपर अच्छी तरहसे तत्त्वदृष्टिसे विचारकिया जावे. तो-अनादिकालकी मर्यादा मुजब सर्व तीर्थंकर महाराजोंके च्यवन कल्याणककी तरहही आश्विन वदी १३ की रात्रिको त्रिशलामाताके गर्भमें भगवान् आये; उनको खास सूत्र कारने और सुबोधिका, दीपिका, किरणावली वगैरह सर्व टीकाकारोंनेभी च्यवन कल्याणक मान्य कियाहै। और तीर्थंकर महाराजोंके च्यवन कल्याणकमें इंद्रमहाराजाका आसन चलायमानहोनेसे विधिपूर्वक नमस्काररूप'नमुत्थुणं'करना। तनिजगतमें उद्योत होना, तथा सर्व संसारी प्राणी मात्रको थोडीदेर सुखकी प्राप्ति होना, वगैरह कार्यहोतेहैं। यह अनादि मर्यादा आगमानुसार प्रसिद्धहीहै। यही सर्व कार्य आसोज वदी १३को भगवान त्रिशलामाताके गर्भमें आये तब उसीरोज होनेका ऊपरके कल्पसूत्रके मूलपाठसे तथा उन्हींकी सर्व टीकायें वगैरह बहुत शास्त्रोंके प्रमाणोंसेभी प्रत्यक्ष सिद्धहोताहै,क्योंकि देखो- आषाढ शुद्ध ६ को भगवान देवानंदामाताके गर्भमें आये तब उसी समय तो सिर्फ देवानंदामाताने १४ महा स्वप्न देखे सो अपने पति ऋषभदत्त ब्राह्मणको कहे, उनने स्वप्नोंके अनुसार उत्तम लक्षण वाला गुणवान् पुत्र होनेका कहा, सो बात अंगीकार किया और उसके बाद् दोनो दंपति संसारिक सुखभोगते हुए काल व्यतीत करने लगे. इसप्रकार कल्पसूत्रादि सर्व शास्त्रोंमें लिखाहै, मगर भगवान् देवानंदा माताके गर्भमें आषाढशुदी६को आये,तब उसीरोज १४ महास्वप्न देखनेके सिवाय इन्द्रका आसन चलायमान होनेका व नमुत्थुणं वगैरह कोईभी च्यवन कल्याणकके कार्य होनेका उल्लेख कल्पसूत्र व भगवानके चरित्र संबंधी किसीभी शास्त्रमें देखनेमें नहीं आता. और त्रिशलामाताके गर्भमें आसोज वदी १३ को भगवान आये,उसीरोज तो 'महापुरुष चरित्र' व 'त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र' तथा कल्पसूत्र और उन्हींकी सर्व टीकायें वगैरह बहुत शास्त्रोंके पाठोंसे प्रत्यक्षमेंही 'नमुत्थुणं' वगैरह च्यवन कल्याणकके सर्व कार्य होनेका देखनेमेंआताहै. इसलिये कल्पसूत्रमें जो'नमुत्थुणं' होनेका पाठ है, सो. आषाढ शुदी ६ के दिन संबंधी नहीं है, किंतु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आसोज वदी १३ के दिन संबंधी है, ऐसा समझना चाहिये.क्योंकि देखो— इन्द्रमहाराजने भगवानको नमुत्थुणं करके अपने सिंहासन पर बैठकर, प्राचीन कर्म उदयसे देवानंदाके गर्भमें भगवानको उत्पन्न होना पडा, ऐसा अच्छेरारूप विचारके हरिणेगमेषिदेवको आज्ञाकरके आसोज वदी १३को त्रिशलामाताके गर्भमें भगवानको संक्रमण करवाये, इसलिये यह सबबातें आसोज वदी १३को उसी समय हुईहैं, इसलिये ८२दिन तकतो इन्द्रमहाराजका आसन चलायमान नहीं होनेसे भगवान देवानंदाके गर्भमें उत्पन्नहुएहैं,ऐसा मालूमभी नहीं पडा,मगर संपूर्ण ८२ दिन गये बाद अवधिज्ञानसे मालूम पडा; तब हर्षसे विधिपूर्वक नमस्कार रूप नमुत्थुणं किया और त्रिशलामाताके गर्भमें पधराये। इसलिये त्रिशलामाताके गर्भमें आनेके दिन आसोज वदी १३ को नमुत्थुणं करनेका कल्पसूत्रादि आगमानुसार प्रत्यक्षही सिद्ध होताहै,और तीर्थंकर भगवान माताके गर्भमें आकर उत्पन्न होवें, तब इन्द्रमहाराजको अवधिज्ञानसे मालूम पडे, उसी समय 'नमुत्थु णं' रूप नमस्कार करनेकी आगमानुसार अनादि मर्यादा है, मगर उस समय वहां सामान्य नमस्कार करनेकी मर्यादा नहींहै। इसलिये 'महापुरुष चरित्र' में और 'श्रीत्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र' के १० वें पर्वमें श्रीमहावीरस्वामिके चरित्रमें आसोज वदी१३को इन्द्रमहाराजका आसन चलायमान होनेसे अवधिज्ञानसे भगवानको देवानंदाके गर्भमें देखकर नमस्कार किया ऐसा अधिकारहै, सो नमुत्थुणं रूप नमस्कार करनेका समझना चाहिये मगर सामान्य नमस्कार करनेका नहीं समझना। और तीर्थंकर भगवानके च्यवन समये इन्द्रमहाराज नमुत्थुणंरूप नमस्कार हमेशां करतेहैं,तथा उसीसमय तीनजगतमें उद्योत,और सर्व जीवोंको क्षणमात्र सुखकी प्राप्ति होती है,उन्हींकोही च्यवन कल्याणक मानते हैं, यही सर्व कार्य आसोज वदी १३ के रोज होनेका ऊपरके लेखसे आगमादि प्राचीन शास्त्रानुसार सिद्ध होताहै.और समवायांग सूत्रवृत्ति वगैरह आगमादि शास्त्रोंमें त्रिशलामाताके गर्भमें आसोज वदी १३ को भगवान् आये उन्हींकोही तीर्थंकर पनेके भवमें गिना है, इसलिये त्रिशलामाताके गर्भमें आनेको आसोज वदी १३ के रोज दूसरा च्यवनरूप कल्याणक पना मान्य करना आत्मार्थी निकट भव्य जीवोंको उचितहीहै. जिसपरभी उनको कल्याणकपनेका निषेध करनेके लिये देवानंदाके १४ महास्वप्न त्रिशलासे हरण हुए हैं, इस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिये वो कल्याणक नहीं होसकता. ऐसा कहनेवालोंकी बडी अज्ञानताहै, क्योंकि देखो- जैसे देवानंदानें मेरे १४ महा स्वप्न त्रिशलाने हरण किये ऐसा स्वप्न देखा, वैसेही त्रिशलाभी मैने देवानंदाके १४ महा स्वप्न हरण कियेहैं, वैसा सिर्फ एकहीस्वप्न देखती और च्यवन कल्याणककी सिद्धि बतलानेवाले नमुत्थुणं वगैरह अन्य कोईभी कार्य उसीरोज न होते तथा कल्पसूत्रमेंभी "एए चउद्स सुमिणा, सव्वा पासेइ तित्थयरमाया । जं रयणिं वक्कमई कुच्छिसि,महायसो अरिहा" यहपाठ अनादि मर्यादामुजब त्रिशला संबंधी न कहकर देवानंदा संबंधी कहते और पार्श्वनाथस्वामिके तथा नेमिनाथस्वामिके च्यवन कल्याणक संबंधी उन्होंकी माताओंने १४महास्वप्न देखे,उसी समय इन्द्रकाआसन चलाय मान हुआ, तबविधिपूर्वक हर्षसे नमुत्थुणं किया और प्रभातमें राजाओंने स्वप्न पाठकोंको बुलाकर स्वप्नोंका फल पूछा, तब स्वप्न पाठकोंने १४ महास्वप्न देखनेंसे रागद्वेषको जितनेवाले जिने;त्रैलोक्य पूज्यनीक तीर्थंकर पुत्र होनेका कहा. इत्यादि च्यवन कल्याणकके कार्योंकी भलामणभी त्रिशला संबंधी न देकर देवानंदा संबंधी देते. और आषाढ शुदी६ को ही नमुत्थुणं होने वगैरह उपरके तमाम कार्योंका उल्लेख कल्पसूत्रादिमें शास्त्रकार करते,व समवायांगसूत्रवृत्तिमें अलग भवभी न गिनते और आसोजवदी१३को नमुत्थुणं वगैरह च्यवन कल्याणकके कोईभी कार्य नहीं होते,तबतो त्रिशलाके गर्भमें आनेको च्यवनकल्याणक नहींमानते तो भी चल सकता,मगर ऐसा नहींहै,और आषाढ शुदी ६ को नमुत्थुणं वगैरह च्यवन कल्याणकके कार्य नहीं हुए, किंतु आसोज वदी १३को हुए हैं. इसलिये आसोज वदी १३को ही च्यवन कल्याणकके तमाम कार्य होनेसे उनको अवश्यही कल्याणकपना मान्य करना योग्य है। और स्वप्न हरण वगैरहके बहानेसे कल्याणकपना निषेध करना सो अज्ञानतासे शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करना योग्यनहींहै. और जन्म त्रिशलामाताकेगर्भसे हुआहै,तथा च्यवनकल्याणकके सर्वकार्यभी त्रिशलाके गर्भमेंआये तबहुएहैं,इसलिये त्रिशलाके गर्भमें आनेरूप च्यवन माननाही आगम प्रमाण अनुसार और युक्तियुक्तहै,च्यवनके सिवाय जन्मभी नहींमानसकते.यह जगत विख्यात प्रसिद्ध न्यायकी बातहै. त्रिशलाके गर्भमें आये तब अनादि मर्यादामुजब च्यवन कल्याणकके सर्वकार्य खाससूत्रकारनेलिखेहैं, जिसपरभी उन्होंको उत्थापनकरके अकल्याणकरूप ठहरानेंके लिये उसबातको निंदनीक कहकर बाल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममेंगेरनेका अनर्थ करना सर्वथा अनुचितहै.

और जैसे-देवलोकसे च्यवन हुए बाद तथा माताके गर्भमें अवतार लेनेबाद नमुत्थुणं वगैरह च्यवन कल्याणकके कार्य होते हैं, तो भी 'कारणमें कार्यका उपचार' होता है, इसलिये च्यवनसमय नमुत्थुणं वगैरह कार्य होनेका कहनेमें आता है। तैसेही यद्यपि देवानंदामाताके गर्भमें नमुत्थुणं हुआ तो भी आषाढशुदी६के दिननहीं, किंतु आसोज वदी १३ के दिन हुआहै, तथा उसी समय त्रिशला माताके गर्भमें जानेका होनेसे उन्हीके निमित्त भूतही 'कारणमें कार्यका उपचार' मानकर त्रिशला माताके गर्भमें आने संबंधी नमुत्थुणं वगैरह कार्य होनेका कहनेमें आता है. और इन्द्रमहाराज भगवान्के विनयवान भक्त थे; इसलिये अवधिज्ञानसे भगवान्को देखतेही उसीसमय नमुत्थुणं किया और त्रिशला माताके गर्भमें पधराये. यदि भगवान्को अवधिज्ञानसे देवानंदामाताके गर्भमें देखकर त्रिशलामाताके गर्भमें पधराये बाद पीछेसेनमुत्थुणंकरते तो विनयभक्तिरूप मर्यादाकाभंग होता,इसलिये विनय भक्तिरूप मर्यादा रखनेकेलिये पहिले नमुत्थुणं किया और पीछे त्रिशलामाताकेगर्भमें पधराये.देखो,जैसे कोई राजा महाराजा भगवान्का आगमनसुनने मात्रसेही हर्षयुक्त होकर उसीसमय उसी दिशा तरफ पहिले वहांसेही भगवान्को नमस्कारकरते हैं, और बादमें भगवानके पास वहां जाकर उचित भक्ति करते हैं। तैसेही इन्द्रमहाराजनेभी अवधिज्ञानसे भगवानको देखतेही वहांसे नमुत्थुणंरूप नमस्कारकिया और त्रिशलामाताके गर्भमें पधराये,बाद त्रिशला माताके पासमें आकर तीन जगतके पूजनीक तीर्थंकर पुत्र होनेका कहा और देवताओंको आज्ञा करके धनधान्यादिककी वृद्धि करवाने वगैरह कार्योंसे भगवानकी उचित भक्ती करी। यह सर्व कार्य आसोजवदी१३के दिन हुएहैं,इसलिये कारणमें कार्यका उपचार माननेसे नमुत्थुणं वगैरह तमाम कार्य त्रिशलामाताके गर्भमें आनेसंबंधी समझने चाहिये.जिसपरभी देवानंदाके गर्भमें नमुत्थुणं होनेका कहकर त्रिशलाके गर्भमें आनेसंबंधी आसोज वदी १३के दिनको च्यवन कल्याणकपने रहित कहतेहैं उन्होंकी अज्ञानता है।

और जोबातनहीं बननेवालीहोवे;असंगतीरूप या असंभावित होवे, वोही बात कभी कालांतरमें बनजावे, उन्हीं बातको शास्त्रोंमें आश्चर्य कारक अच्छेरारूप कहते हैं। इसलिये जिसबातको अच्छेरा कह दिया, उस बातमें अन्य शास्त्र प्रमाणकी मर्यादा बाधक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नहीं हो सकती. इसी तरहसे भगवानकेभी देवानंदा माता तथा त्रिशलामाता दोनोंका गर्भकाल मिलकर ९ महीने और ऊपर ७॥ दिन मानतेहैं, मगर देवानंदाके गर्भमें आनेको शास्त्रकारोंने अच्छेरा कहा है. और ८२ दिन गये बाद त्रिशलाके गर्भमें आनेको तीर्थंकर पनेके भवमें गिनाहै, इसलिये देवानंदाके गर्भमें आये तब च्यवन कल्याणक के सर्वकार्य नहीं हुए, परंतु त्रिशलाके गर्भमें आये तबही च्यवनकल्याणकके सर्व कार्य हुए हैं. तो भी देवानंदाके गर्भमें भगवान आये तब मातानें १४ महास्वप्न देखे, तथा ८२ दिनतक वहां विश्रामलिया और शरीर-इन्द्रीय-पर्याप्ति देवानंदामाताके शरीरसे बने हैं. इसलिये देवानंदाके गर्भमें आनेकोभी भगवानके प्रथम च्यवनरूप कल्याणक पना मानते हैं। और जैसे-मारवाड, गुजरात, दक्षिण, पूर्व वगैरह देशोंमें पुत्रको दत्तक [गोद] लेनेमें आताहै, उनके पहिलेके मातापिता अलगहोतेहैं और पीछेपालने पोषनेवाले दूसरे मातापिता अलगहोते हैं, इसलिये उनके दो माता और दो पिता कहनेमें कोई दोष नहीं आता, मगर नाम पीछेवालोका चलता है। तैसेही भगवानकेभी देवानंदाके गर्भसे ८२दिन गये बाद आश्चर्यरूप त्रिशलाके गर्भमें आना पडा, उससे दो माता तथा दो पिता और दो च्यवन कल्याणक माननेमें आते हैं. इसलिये दोनों माताओंका गर्भकाल मिलकर ९महीने और ७॥ दिन हुए हैं, तो भी दो च्यवन कल्याणक माननेमें कोईभी शास्त्र बाधा नहीं आ सकती और कोई कुयुक्ति व वितर्कभी बाधकनहीं होसकती, इस बातको विशेष तत्त्वज्ञजन स्वयंविचार सकते हैं।

इन सर्वबातोंका विशेषनिर्णय ऊपरके भूमिकाके लेखमें और इस ग्रंथमें अच्छीतरहसे सर्व शंकाओंका निवारणपूर्वक खुलासा हो चुकाहै, यहां तो उसका संक्षिप्तसार बतलायाहै, और विशेष निर्णय करनेकी अभिलाषावाले तत्त्वसारग्रहण करनेवाले पाठकगण इस ग्रंथको संपूर्ण वांचेगे तो सर्वबातोंका खुलासा अच्छी तरहसे होजावेगा

विवादवाले विषयों संबंधी अभिप्राय.

तपगच्छके श्रीमान् विजयधर्मसूरिजीके शिष्य श्रीमान् रत्नविजयजीनें विवादवाले विषयों संबंधी पौषशुदी २ बुधवार, श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४४३ के जैन शासन पत्रके पृष्ठ ५८८ में श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी परंपरासंबंधी उपकेशगच्छ (कवलागच्छ) की हकीकत छपवाया है, उसका थोडासा उतारा यहांपर बतलाते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

"श्रीरत्नप्रभसूरिजीकृत सामाचारीमां लख्युंछे के.पुष्पवती थया-बाद स्त्रीने पूजा नहीं करवी. आंबिलमां २-३ द्रव्य कल्पे. तथा देवगुप्तसूरिजीकृत कल्पसूत्रनी टीकामां ६ कल्याणिक लख्यां छे,पजोसणा ५० दिवसे करवा इत्यादि" तथा "वीर प्रभुना २८ भव लख्या छे, सुधर्मा, जंबु, प्रभव, सिजंभव ए चारना ८४ शाखा, ४५ गण, ८ कुल थया. आ सामाचारी तथा कल्प टीका हालनां गच्छोंथी घणी प्राचीन बनेली छे, प्राचीन समयथी ६ कल्याणिक, स्त्री पूजा निषेध विगेरे प्रवृत्तिओ चाली आवीछे, जिनदत्तसूरिजी, जिनवल्लभसूरिजी विगेराने लोको खाली निंदे छे, नवुं कोईए कर्युं नथी. पजोषण जेवा वितराग पर्वमां कल्पसूत्रना मांगलिक व्याख्यानमां चतुर्विध श्रीसंघमां अकारण कलह करी जैनभाईयोंनां अंतकरण दुभावी धर्मनी निंदा करावी वर्षोवर्ष अनी अे वातने 'अभूतद्भावचिच' करीनें कितुना कलासमां दाखल करवी, ए कोई रीते इच्छवा योग्य नथी, शासन प्रेमी महाशयो आ बाबत बराबर समजी गया हशे, [अयं निजपरोवेत्ति, गणनालघु चेतसा । उदार चरितानां तु,वसुधैव कुटुंबकम्' ॥१॥] आमा 'वसुधैव कुटुंबकं' ए वाकय अत्यंत श्रेष्ठ छे पण अने बदले 'सर्व गच्छ कुटुंबकं' एवुं बनो,एज प्रार्थना, याचना अने सलाह"यहीलेख उसीअरसेमे जैनपत्रमेंभी प्रकाशित होगयाहै औरभीजेठवदि१बुधवार वीर सं०२४४४ के जैनशासनपत्रकेपृष्ठ१६८ में श्रीरत्नविजयजीनें पर्युषणामें समभावरखनेसंबंधी लेख छपवाया-था,उसमेसे थोडासाबतलातेहै."दरेकगच्छनीपट्टावलीजुओ,तेमांपरस्पर पठनपाठन साथे रहेता,वंदनादि व्यवहार करता,विनयमूल धर्मनी पुष्टि करनाराहता,आजे विरोधभाव करनारा बीकनथीराखता. खरतरगच्छना आचार्योंने सत्कारआपनारा तपगच्छना साधुओहता अने तपगच्छनाआचार्योंनें बहुमान आपनारा खरतरगच्छनासाधुओ हता, तपगच्छनां जेवा परम प्रभाविक पुरुषो थयाछे.तेवाज खरतर गच्छमां परम प्रभाविक पुरुषो थया छे.जिनदतसूरिजी, जिनकुशल सूरिजी जेणे सवालाखनवा जैनो बनाव्या,हजारोराजा महाराजाओनें जैन धर्म अंगीकार कराव्यो, हजारो क्षत्रीयोनें ओसवाल बनाव्या, जिनचंद्रसूरि,जिनहर्षसूरि जिनप्रभसूरि आदि अनेक प्रभाविक पुरुषो थया. तेवा महा पुरुषोना अवर्णवाद बोलवा,आवते भवे जीभ पामवी मुश्किल छे. उपकारी नो उपकार रदी करवो महा भयंकर पाप छे, एक खास मुद्दो तपाशोके आजे साधुओ वखाणमां टीकाओ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वांचेछे तथा चरित्रोनां चरित्रो वांचेछे, ग्रंथो वांचेछे ते घणेभागे खरतर गच्छना बनावेला ग्रंथो छे, परस्पर गच्छवालाओ वांचे छे सर्व गच्छवालाओ श्रद्धाथी सांभले छे ' पुरुष विश्वासे वचन विश्वास' जेना बनावेला पुस्तको हाथमां लई सन्मुख धरी वांचो छो, अने मोढेथी तेज आचार्योनी बद बोई कराय. आजे दादा साहेबने मानवा वाला चरण पादुकाना दर्शन करनारा तपगच्छवाला हजारो भाविक भक्तो छे तथा श्री हीरविजयसूरि प्रमुखने माननारा खरतरगच्छना हजारो भाविक भक्तोछे. आवा शंभु मेलामां खाली विक्षेप पेदा करवाथी कोईनुं कल्याण थवानुं नथी " इत्यादि.

देखो-ऊपर मुजब खास तपगच्छके श्रीरत्नविजयजीके लेखपर खूब दीर्घ दृष्टिसे विवेकपूर्वक विचार किया जावे, तो श्रीपार्श्वनाथस्वामिकी परंपराके श्रीदेवगुप्तसूरिजीकृत कल्पसूत्रकी प्राचीन टीका वगैरह शास्त्रानुसार पहिले पूर्वाचार्योंके समयसेही श्रीवीर प्रभुके २८ भव, तथा छ कल्याणक मानने वगैरह बातें प्रचलीतही थी. उन्हींके अनुसार श्रीजिनवल्लभसूरिजी वगैरह महाराजोंने चैत्यवासियोंको हटाते हुए, भव्य जीवोंके सामने विशेषरूपसे प्रकटपने कथन की हैं। परंतु शास्त्रविरुद्ध होकर नवीन प्ररूपणा नहीं की, जिसपरभी आगमप्रमाणोंको उत्थापन करके शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्रायको समझेबिना अपनी मतिकल्पनासे शास्त्रपाठोंके खोटे खोटे अर्थ करके नवीन छठे कल्याणककी प्ररूपणा करनेका झूठा दोष लगाते हैं. सो प्रत्यक्षपणे मिथ्याभाषणकरके अपने दूसरे महाव्रतका भंग करना और भोलेजीवोंको उन्मार्गमें गेरना सर्वथा अनुचितहै।

और श्रीजिनवल्लभसूरिजी, श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज जैसे शासन प्रभावक परम उपकारी पुरुषोंने, चैत्यवासियोंकी उत्सूत्रप्ररूपणाके तथा शिथिलाचारके मिथ्यात्वको हटाया, और क्षत्री-ब्राह्मणादि लाखों अन्य दर्शनियोंको प्रतिबोधकर जैनी श्रावक बनाये, उन्होंकीही वंश परंपरा वाले अभी वर्तमानमेंभी गुजरात, कच्छ, मारवाड, पूर्व, पंजाब,दक्षिणादि देशोंमें लाखों जैनी विद्यमान मौजूद हैं। इसलिये उन महाराजोंने परंपराके हिसाबसे करोंडो जीवोंको सम्यक्त्व प्राप्त कराने संबंधी बडाभारी महान् उपकार किया है। तथा विद्या,मंत्र, देवसाह्य,व संयमानुष्ठान-आत्मशक्ति प्रकाशित करके बहुत बडीभारी जैनशासनकी प्रभावना करी. उन महाराजोंके प्रतिबोधे हुए श्रावकोंकी वंश परंपरावाले श्रावकोंसेही, वर्तमानिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सबगच्छवाले बहुतसाधुओंको आहार,पानी,तथा संयम उपकरणोंसे निर्वाह होता है। ऐसे महान् शासन प्रभावक परम उपकारी महाराजोंनें पूर्वाचार्योंकी प्रवृत्ति मुजब तथा आगमादि प्राचीन शास्त्रानुसारही सत्य प्ररूपणाकरीहै, मगर शास्त्राविरुद्ध होकर नवीन प्ररूपणानहींकरी. जिसपरभी कितनेक पक्षपातीजन उपकारी महाराजोंके उपकारोंको छुपादेतेहैं, और छठे कल्याणक प्रकटकरनेकी तथा स्त्रीपूजा निषेधकरनेकी नवीनप्ररूपणाकरनेकाझूठा दोषलगाकर अनेक तरहसे निंदा करते हुए आक्षेप करते हैं। उन्होंको परभवमें जीभ मिलना मुश्किलहै यहबात तपगच्छवालेही गुणानुरागी मध्यस्थ भावसे लिखतेहैं। अर्थात् ऐसे उपकारोंको भूलकर झूठा दोष लगाकर निंदा करनेवाले एकेन्द्रिय होवेंगें, फिर उन्होंको जैनधर्म प्राप्त होना बहुत मुश्किल होवेगा, संसारमें बहुत काल परिभ्रमण करेंगे. इसलिये भवभिरु आत्मार्थी भव्य जीवोंको संसार परिभ्रमण के हेतुभूत उपकारी पुरुषोंकी झूठी निंदा करके भोले जीवोंको मिथ्यत्वमें गेरनेरूप अनर्थ करना सर्वथा अनुचित है।

और ऊपरके लेखसे श्रीरत्नविजयजीके लेखमुजब तपगच्छके तथा खरतरगच्छके आपसमें विशेषरूपसे संपकी वृद्धि होना चाहिये और कुसंपके कारण भूत पर्युषणामें खंडनमंडनके विवाद वाले विषयोंको सर्वथा त्याग करके संपसे शासन उन्नतिके कार्योंमें कटिबद्ध होना, यही अपने और दूसरे भव्यजीवोंकेभी आत्म कल्याणका हेतु है। ऐसी ही श्रद्धा तथा प्ररूपणा और प्रवृत्तिका शुद्ध हृदयसे व्यवहारकरके उपकारी पुरुषोंकी झूठीनिंदा छोडकर; प्राचीन पूर्वाचार्योंकी परंपरामुजब शास्त्रानुसार आषाढ चौमासीसे ५० दिने दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा पर्वका अराधन करके तथा श्री महावीर स्वामिके च्यवनादि छ कल्याणकोंको आगमानुसार भावपूर्वक मान्य करके भगवान्की आज्ञानुसार धर्मकार्योंसे निज और परका कल्याणकरो,संसार परिभ्रमणके दुःखसे छुटो,और अक्षय सुख प्राप्त करो. यही आत्मिक हृदयकी विशुद्ध प्रेम भावसे आत्महितैषी पाठक गण भव्य जीवोंके प्रति प्रार्थनाहै. इति शुभम्.

विक्रम संवत् १९७७, प्रथम श्रावण शुदी १३ बुधवार.

हस्ताक्षर - श्रीमान् उपाध्यायजी श्रीसुमतिसागरजी महाराजके लघुशिष्य—मुनि- मणिसागर. जैन धर्मशाल, धुलिया—खानदेश.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीवीतरागाय नमः।

दूसरे भागकी पीठिका

इनकोंभी पहिले अवश्यही बांचिये.

अब हम यहांपर दूसरे भागकी पीठिकामें न्यायरत्नजी शांति-विजयजी संबंधी थोडासा लिखतेहैं, जिसमें ३ वर्ष पहिले दो भाद्रपदहोनेसे पर्युषणापर्व प्रथम भाद्रपदमें करने या दूसरेभाद्रपदमें, इस विषयकी मुंबईशहरमें चर्चा खूब जोरशोरसे दोनोंतरफसे चलीथी. उससमय मैनेभी 'लघुपर्युषणा निर्णयका प्रथमअंक' नामा छोटासी पुस्तकमें मुख्य २ सर्व बातोंकी शंकाओंका समाधान अच्छीतरहसे-लिखदियाथा. वह पुस्तक एकश्रावकनेछपवाकर प्रसिद्धकरीथी. उस पर न्यायरत्नजीने उनपुस्तककी शास्त्रानुसार सत्य२ बातोंको ग्रहण तो नहींकरी और मेरे सबलेखोंको अनुक्रमसे पूरेपूरे लिखकर पीछेउनसबका जबाब देनेकीभी ताकत न होनेसे जानबूझकर कुयुक्तियोंसे अनेकबातें शास्त्रविरुद्ध लिखकर'पर्युषणपर्वनिर्णय' तथा'अधिकमास निर्णय'में प्रकटकरीथी. उसपर मैने उन दोनों पुस्तकोंकी शास्त्रविरुद्ध बातोंसंबंधी शास्त्रार्थसे सभामें निर्णय करनेकेलिये न्यायरत्नजीको जाहिररूपसे छपवाकर सूचना दीथी. उसका लेख नीचे मुजबहै.

विज्ञापन, नं० ७

न्यायरत्नजी शांतिविजयजी सावधान! शास्त्रार्थके लिये जलदी तैयार हो.

मैंने- आपको शहर पुणामें शास्त्रार्थ संबंधी विज्ञापन नंबर १-२-३-४ भेजेथे और वर्तमानिक पर्युषणाकी चर्चासंबंधी आपकीबनाई 'पर्युषणापर्वनिर्णय' किताब "शास्त्रकारोंके अभिप्रायविरुद्ध, जिनआज्ञा बाहिर और कुयुक्तियोंसे भोले जीवोंको उन्मार्गमें गेरनेवालीहै," यह सूचना विज्ञापन नंबर पहिलेमें लिखकर, इसका विशेष खुलासा मुंबईकी सभामें शास्त्रार्थ द्वारा करनेके लिये आपको आमंत्रण कियाथा और श्रीकच्छी जैनअेसोसीयन सभानेभी सब मुनिमहाराजोंकी तरह आपकोंभी पर्युषणाका निर्णय करनेसंबंधी विनतीपत्र भेजाथा, जिसपरभी आपने मुंबईमें शास्त्रार्थकरना मंजूर न

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

किया और दूसरोंपर गेरकर मौनही करबैठे, तथा दूरसेही फिर " अधिकमासनिर्णय " की छोटीसी किताब छपवाकर प्रगटकी उसके बाद थोडे रोज पीछे आप मुंबई दादर आये, तब मैंने आपको दोनों किताबों संबंधी शास्त्रार्थकरनेकी सूचना पत्रद्वारा दीथी उसकी नकल नीचे मुजब है :—

"श्रीदादर मध्ये श्रीमान् न्यायरत्नजी शांतिविजयजी योग्य श्री-मुंबईवालकेश्वरसे मुनि मणिसागरकी तरफसे सूचना. मैंने कलरात्रिको आपके दादर आनेकासुनाहै उससेआपको सूचनादेताहूं,कि-आपने " पर्युषणापर्व निर्णय " और " अधिकमासनिर्णय " दोनोंपुस्तकोंमें बहुत जगह शास्त्रविरुद्ध होकर उत्सूत्र प्ररूपणारूप लिखाहै, आपने दोनोंपुस्तकोंमें सर्वथा शास्त्रविरुद्ध और कल्पित बातोंकाही संग्रहकियाहै, इसलिये हम सभामें शास्त्रार्थसे आपकी दोनों पुस्तकें जिनाज्ञाविरुद्ध सिद्ध करनेको तैयारहैं, शास्त्रार्थ किये बिना आप चले जावोंगे तो झूठे समझे जावोंगे, विशेष क्यालिखुं, शास्त्रार्थका विज्ञापन नं. १ आपको पहिलेभी भेज चुका हूं, कल दादर आवुंगा. आप जाना नहीं. इसका उत्तर अभीही लालबागमें आदमीके साथ पीछा भेजना मैं लालबाग जाताहुं, हस्ताक्षर मुनि-मणिसागर, पौष शुदी १ रविवार, सं० १९७४."इस मुजबपत्र पौषशुदी१ को आदमी-भेजकर आपकोपहुंचाया,और दूजके दिन खास मैं और मुनि श्रीलब्धिमुनिजी, तथा अंचलगच्छीय मुनि दानसागरजी और केवलचंदजी चारोंही ठाणे दादर आये, और शास्त्रार्थ करनेका आपसे कहा, तब आपनेभी अन्य मुनियोंकी तरह आनंदसागरजीकी आड-लेकर दो महीनोंबाद शास्त्रार्थकरनेका कहाथा,सो २महीनेकी जगह ४ महीने होगये, अब जलदी करो. आनंदसागरजी तो आडी आडी बातोंसे दूसरेका नाम आगे करतेहैं, अपना नामसे लिखतेभी डरते हैं, तो सभामें नियमानुसार क्या शास्त्रार्थ करेंगे, और आपने किताबें बनवानेमें किसी आगेवानोंकी व आनंदसागरजी वगैरह मुनियोंकी आड न ली, तो फिर उसका खुलासा करनेमें दूसरोंकी आड लेते हो— यही आपका अन्याय समझा जाताहै. वालकेश्वरमें जब हमारे गुरुजी महाराजकेसाथ आपकी मुलाकात हुईथी, तबभी झगडीया वगैरह तीर्थयात्राको जाकर आये बाद शास्त्रार्थ करनेका मंजूर कियाथा, सो आप यात्राकरके आगये, अब आमनेसामने या लेखद्वारा वा सभामें आपकी इच्छाहो वैसे शास्त्रार्थ करना मंजूरकारिये,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और विशेष सूचनायें विज्ञापन, नंबर ६ से समझ लीजिये. और नियमभी जो आपकीइच्छा हो सो प्रतिज्ञापत्रके साथ १५ दिनके भीतरप्रगट करीये, आनंदसागरजी, विजयधर्मसूरिजी, विद्याविजयजी व न्यायविजयजीकी तरह आडीआडी बातें निकालकर शास्त्रार्थ करना मंजूर न करोगे,तो–आपकीभी हार समझीजावेगी. अथवा श्री कच्छी जैनएसोसीयनकी विनतीके अनुसार व मेरे विज्ञापनोंके अनुसार यदि आपको मुंबईमें ठहरकरसभामें शास्त्रार्थ करनेमें अनुकूलतानहोवे तो लीजिये चलिये-लेख द्वाराही सही, मगर विज्ञापन नंबर६ मुजब प्रतिज्ञा वगैरह नियमोंके साथ उत्तर दीजिये. देखो—

न्यायरत्नजी मेरे बनाये ' लघुपर्युषणानिर्णय के प्रथम अंक ' के सब लेखोंका न्यायसे पूरेपूरा उत्तर देनेकी आपमें ताकत नहीहै, यदि होती तो उसके पृष्ठ३-४-५-६-७ और १०में अधिकमासमें सूर्यचार न होवे, वनस्पति न फूले, वगैरह सुबोधिकाकी ११बातोंका खुलासा मैंने लिखाथा. उनसबको लिखकर अनुक्रमसे पूरा उत्तर क्यों न दिया,यदि भूल गयेहो, तो अभीही देवो। और पृष्ठ १७ के अंतके पाठका खुलासाभी साथही करो ॥ और मैंने ' लघुपर्युषणा निर्णय ' में निशीथचूर्णि और दशवैकालिक बृहद्वृत्तिके पाठसे अधिकमासको कालचूला कहकरकेभी दिनोंकी गिनतीमेंलेनेका सिद्धकर दिखायाहै, इसलिये दिनोंकीगिनतीमें निषेधनहींहो सकता, देखो-लघुपर्युषणानिर्णयके पृष्ठ २४–२५ ॥ और लौकिक शास्त्रानुसारभी अधिकमासको दिनोंमें गिनाहै, देखो–लघु पर्युषणानिर्णय के पृष्ट २८--२९ ॥ और अधिकमासमें मुहूर्तवाले शुभकार्य न होवें, उसीतरह चौमासेमें, सिंहस्थमें,गुरुशुक्रके अस्तमें, पौष चैत्र मलमासमें, क्षयमासमें, वदीपक्षकी १३-१४ और अमावास्या इन तीनक्षीणतिथीयोंमें,और वैधृति-गंडांत--व्यतिपात--भद्रा वगैरह कुयोगोंमें, तिथी, वार, नक्षत्र चंद्रादि बहुत मास-पक्ष-वर्ष-दिन वगैरह योगोंमेंभी मुहुर्त्तवाले शुभकार्य न होवे, देखो—ज्योतिःशास्त्रे "जंभारिति पुरोहिते हरिगते,सुप्ते मुकुंदेविभौ। जातेधर्मघने धनशफटयोः क्षीणे कुवारस्तिथिः॥ अस्ते भार्गव जीवयोः कुदिने, मासाधिके वैधृतौ। गंडांते व्यतिपात विष्टिक शुभं, कार्यं न कार्यं बुधैः ॥ १ ॥" मगर दान, शील, तप, भाव, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध वगैरह धर्मकार्य अधिक मासमे भी होसकतेहैं। उसी तरह पर्युषणापर्वभी दिन प्रतिबद्ध होनेसे अधिकमासमें करनेमें कोई बाधा नहीहै। देखो लघुपर्युषणा निर्णयके पृष्ठ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२७-२८ ॥ और मासवृद्धि होनेपरभी पर्युषणाके पिछाडी ७०दिन र-
हनेका किसीभी शास्त्रमें नहींलिखा, समवायांगका पाठ तो मास वृ-
द्धिके अभावकाहै, इसलिये अधिकमास होनेपरभी ७० दिन रहनेका
कहना शास्त्रकारोंके अभिप्रायविरुद्ध होनेसे मिथ्याहै, देखो लघुपर्यु-
षणा निर्णयके पृष्ठ १८-१९-२०-२१ ॥ इसीतरहसे दोनोंआषाढ वगैर-
हका खुलासाभी लघुपर्युषणाके पृष्ठ २५-२६में अच्छी तरहसे दिख-
ला दिया था ॥ जिसपरभी न्यायरत्नजी आपने मेरे लेखोंका आगे
पीछेका संबंध तोडकर मेरे अभिप्रायके विरुद्ध होकर अधूरे अधूरे
लेख, भोलेजीवोंको दिखलाकर अपनी दोनों किताबोंमें आप वारंवा-
र अधिकमहीनेके दिनोंको गिनतीमेंसे उडा देनेकेलिये कोईभीशास्त्र-
कापाठ बतलाये बिनाही, और लघुपर्युषणाके पृष्ठ २७-२८ का लेख-
को पूरा विचारे बिनाही, 'अधिकमासनिर्णय'के दूसरे पृष्ठकी आदिमें
आप लिखते होकि'अधिकमहिनेमें विवाह सादी वगेरा कामनहीकि-
येजाते, दीक्षा प्रतिष्ठा वगेरा धार्मिक कामभी अधिकमहीनेमें नहीं-
कियेजाते, फिर पर्युषणापर्व जैसा उमदापर्व अधिकमहिनेमें कैसे-
कियाजाय.' तथा 'पर्युषणापर्व निर्णय' के मुख्यपृष्ठ परभी 'दीक्षा
प्रतिष्ठा और दुनियादारीके विवाह सादी वगेराकाम अधिकमहीनेमें
नहींकियेजाते,तो फिर पर्युषणापर्व जैसा उमदापर्व कैसेकिया जाय'
यह दोनों लेख आपके जिनाज्ञाविरुद्ध उत्सूत्र प्ररूपणारूपहीहैं. यदि
मुहुर्त्तवाले दीक्षा प्रतिष्ठा व संसारी विवाह सादीकी तरह पर्युषणा
भी आप मानोगे, तबतो चौमासेमें, तथा १३ महीनों तक सिंहस्थ-
वाले वर्षमेंभी पर्युषणा करनाही नहीं बनेगा, मगर शास्त्रोंमें तो चौ
मासेमेंही और सिंहस्थवाले वर्षमेंभी वर्षा ऋतुमेंही दिनोंकी गिनती
से५०वेंदिन अवश्यही पर्युषणा करनाकहाहै, मुहूर्त्तवाले विवाहसादी
वगैरह लौकिक कार्योंके साथ, बिना मुहूर्तवाले लोकोत्तर पर्युषणाप-
र्वका कोईभीसंबधनहीहै.सिंहस्थ,अधिकमास, क्षयमास,गुरु शुक्रका
अस्त,चौमासा,व्यतिपात,भद्रा,और चंद्र व सूर्य ग्रहण वगैरहकोईभी
योग पर्युषणा करनेमें बाधक नही होसकते, इसलिये आपका उत्सू
त्र प्ररूपणाका और प्रत्यक्ष अयुक्त व मिथ्यालेखको पीछा खींच ली-
जिये और मिच्छामिदुक्कडं प्रकट करिये, नहीं तो सभामें सिद्ध क
रनेको तैयार हो जाइये ॥ १ ॥ औरभी आपने 'मानव धर्म संहिता'
के पृष्ठ ८०० में लिखाहै कि " अगर अधिकमास गिनतीमें लियाजा-
ता हो तो पर्युषणापर्व दूसरे वर्ष श्रावणमें और इसतरह अधिकम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हीनोके हिसाबसे हमेशां उक्त पर्व फिरते हुए चले जायेगे जैसे मुसल्मानोके ताजिये--हर अधिकमासमें बदलतेहै" यह लेखभी उत्सूत्र प्ररूपणारूपहीहै, क्योंकि जिनेंद्रभगवान्ने अधिकमहीना आनेपरभी वर्षाऋतुमेंही पर्युषणा करना फरमायाहै, मगर वर्षाऋतुबिना माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाखमें शरदी व धूपकालमें पर्युषणा करना नहीं फरमाया, जिसपरभी आप अधिकमहीनाके ३० दिन उडा देनेकेलिये मुसल्मानोके ताजियोंके दृष्टांतसे हर अधिक महीनेके हिसाबसे बारोंही महीनोंमें [छही ऋतुओंमें] पर्युषणा फिरते हुए चले जानेका बतलाते हो, सो किस शास्त्र प्रमाणसे उसकाभी पाठ बतलाइये, या अपनी भूलका मिच्छामि दुक्कडं दीजिये, अथवा सभामें सत्य ठहरनेको तैयार हो जाईये ॥ २ ॥ और भी 'पर्युषणापर्व निर्णय' के मुख्यपृष्ठपर 'अधिकमहीना जिसवर्षमें आवे उसवर्षका नाम अभिवर्द्धित संवत्सर कहते हैं और वो अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह महीनोंका होता है, मगर अधिक महीना कालपुरुषकी चूला यानी चोटी समान कहा इसलिये उसको चातुर्मासिक- वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमें नही लियाजाता' तथा 'अधिकमास निर्णय' के प्रथम पृष्ठके अंतमें 'अधिक महीना कालपुरुषकी चूला यानी चोटीसमानहै, आदमीके शरीरके मापमें चोटीका माप नहीं गिनाजाता, इसतरह अधिक महीना अच्छे काममें नहीं लियाजाता' इस लेखसे अधिक मासको केशोंकी चोटी समानकहतेहो और गिनतीमें लेना निषेध करते हो सोभी सर्वथा जिनाज्ञा विरुद्ध है, देखो-चोटी तो १०-२० अंगुल, अथवा १-२ हाथ लंबीभी होसकतीहै,व नहींभी होतीहै. और शरीरके मापमें चोटीका कुछभी भाग नहीलियाजाता, इसीतरह यदि अधिकमासभी चोटी समान गिनतीमें नही लियाजाता तो फिर उसको गिनतीमें लेकर १३ महीनोंके, २६ पक्षोंके,३८३दिनोंका अभिवर्द्धित संवत्सर क्यों कहा? देखिये-जैसे पर्वतोंकेशिखर और घास एकसमाननहीं है तथा मंदिरोंकेशिखर और ध्वज एक समाननहींहै. तैसेही चूला याने शिखरऔर चोटीएकसमाननहींहै इसलियेचोटीकहोंगे तो गिनतीमेंनहीं और गिनतीमे लेवोंगे तो चोटी समाननहीं. चोटीकहोंगे तो अभिवर्द्धित संवत्सर कैसे बना सकोंगे? इसको विचारो, अधिकमासको चोटी समान कहकर गिनतीमे छोडना किसीभी जैनशास्त्रमें नहीं कहा, निशीथचूर्णि व दशवैकालिक वृत्तिमें कालचूला याने शिखरकहाहै,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और गिनतीमेंभी लियाहै, देखो लघुपर्युषणाके पृष्ठ २५ में. इसलिये शिखरको चोटी कहना और गिनतीमें छोड देना बडी भूल है ॥३॥ इसीतरहसे अधिकमहीनेमें धर्म, ध्यान, व्रत, पच्चख्खान, तप, जप, चौमासी, पर्युषणा, कल्याणकादि धर्म कार्य निषेध करना ॥ ४ ॥ वर्तमानिक श्रावण, भाद्रपद, आश्विन बढनेपरभी समवायांग सूत्रवृत्तिकारका अभिप्राय को समझे बिनाही पीछे ७० दिन ठहरनेका आग्रह करना ॥ ५ ॥ श्रावण--पौष बढनेपर एक महीनेमें कल्याणिक माननेसे दूसरे महीनेको छुटनेका कहकर अधिकमासके ३० दिन उडादेना ॥ ६ ॥ दो आषाढ होनेपर प्रथम आषाढको कालचूला ठहराना ॥ ७ ॥ दूसरे आषाढमें चौमासी करनेसे प्रथम छुट जानेका कहना ॥ ८ ॥ और नवतत्त्व—षट्द्रव्यके स्वरूपकी तरह चंद्र और अभिवर्धित दोनो वर्षोंका समानही स्वरूपकहा है, तथा दोनोंसेही मास-पक्ष-तिथि वर्ष वगैरहका व्यवहार चलता है, तिसपरभी दिनोंकी गिनतीके विषयमें दिन प्रतिबद्ध पर्युषणाकी चर्चामें विषयांतर करके मास व ऋतु प्रतिबद्ध कार्योंको दिखलाकर अधिकमासके दिन गिनतीमें छोड देना ॥ ९ ॥ अधिकमास आनेसें ५० वें दिन पर्युषणा पर्व करनेको जैनशास्त्र खिलाफ ठहराना॥१०॥और पंचाशकके पूर्वापर संबंधवाले संपूर्ण सामान्य पाठको छोडकर शास्त्रकार महाराजके अभिप्रायको समझेबिना थोडासा अधूरा पाठ भोलेजीवोंको दिखलाकर, वीरप्रभुके विशेषतासे आगमोक्त छ कल्याणकोंका निषेध करना ॥ ११ ॥ और सुबोधिकाकी तरह समयसुंदरोपाध्यायजी कृत कल्पलतामें खंडन मंडनका विषय संबंधी कुछभी अधिकार नहीहै. तो भी झूंठा दोष आरोप रखना ॥ १२ ॥ इत्यादि अनेक बातें आपकी दोनों कीताबोंमें शास्त्रविरुद्ध व प्रत्यक्ष मिथ्या और बालजीवोंको उन्मार्गमें गेरनेवाली भरीहुईहैं, उसका लेख द्वारा या सभामें निर्णय करनेको तैयार हो जाईये, मगर झुंठेको क्या प्रायश्चित देना वगैरह नियम होने चाहिये. वीरनिर्वाण २४४४, विक्रमसंवत्१९७५, वैशाखवदी १२, हस्ताक्षर-मुनि-मणिसागर, लालबाग, मुंबई.

उपर मुजब छपाहुआ विज्ञापन न्यायरत्नजीको पहुंचाया मगर उसमें लिखेप्रमाणें सभामें आकर शास्त्रार्थ करनेका मंजूर नहीं किया तथा इन विज्ञापनमें बतलाई हुई उत्सूत्र प्ररुपणारूप अपनी भूलोंको सुधारनेकाभी प्रकट नहीं किया, और शास्त्रप्रमाणसे साबित करके भी बतला सकेनहीं.सर्वथा मौनकरबैठे तब हमने उनकीहारका विज्ञापन छपवाकर प्रकाशित कियाथा सो नीचे मुजब है :-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विज्ञापन नं० ९

न्यायरत्नजी शांतिविजयजी हार गये !

सत्याग्राही पाठकगणसे निवेदन कियाजाताहै, कि–न्यायरत्नजी शांतिविजयजी को पर्युषणा बाबत सभामें शास्त्रार्थ करनेके लिये मैंने विज्ञापन नं.७ वेंमें सूचना दीथी, उसमें १५ दिनके भीतर शास्त्रार्थ करना मंजूर न करोंगे, तो आपकी हार समझी जावेगी, यह बात खुलासा लिखीथी. और वैशाख शुदी १०को विज्ञापन नं. ७-८ के साथ १ पत्रभी उनको डाक मारफत रजिष्टरी द्वारा 'ठाणे' भेजाथा, उसमें १५ दिनकी जगह २० दिनका करार लिखाथा, उसको आज २२दिन होगये, तोभी न्यायरत्नजीने शास्त्रार्थ करना मंजूर नहींकिया और वैशाख शुदी १३ को फिरभी दूसरा पत्र भेजाथा उसमें हमने ठाणेमेंही शास्त्रार्थ करना मंजूर कियाथा. उसकाभी कुछभी उत्तर न मिला और लेखद्वारा शास्त्रार्थ शुरू करनेके लिये प्रतिज्ञापत्र व साक्षी वगैरह नियमभीप्रगटनहींकिये.इससे मालूमहोताहैकि,-न्यायरत्नजीमें न्यायानुसार धर्मवादका शास्त्रार्थकरनेकी सत्यता नहींहै, इसलिये चुप लगाकर बैठेहैं,उससे वो हारगये समझे जातेहैं.पाठकगणको मालूम होनेके लिये दोनों पत्रोंकी नकल यहां बतलाते हैं.

प्रथम पत्रकी नकल " श्रीमान् न्यायरत्नजी शांतिविजयजी विज्ञापन नं० ७-८ भेजता हूं. लघुपर्युषणा निर्णयके सत्य सत्य लेख छोडदिये और मेरेअभिप्रायविरुद्ध उलटा उलटाही लिखमारा,वैसा अब न करना. सबका पूरा उत्तर देना, आजसे १५-२० दिन तकमें वैशाख शुदी १० सोमवार. हस्ताक्षर मुनि—मणिसागर. "

दूसरे पत्रकी नकल "श्रीठाणा मध्ये न्यायरत्नजी शांतिविजयजी योग्य श्रीमुंबईसे मुनि-मणिसागरकी तरफसे सूचना.

१—आप ठाणेमें शास्त्रार्थ करनाचाहते हो तो, हम ठाणे आनेकोभी तैयार हैं. मगर विज्ञापन नं० ६ की ३-४-५ सूचना मुजब नियम मंजूरकरो और कल्पसूत्रकी कौन२ प्राचीनटीका आप मानते हो उत्तर दो, ठाणेकी कोटवालीमें शास्त्रार्थ होगा.

२—शास्त्रार्थ आपका और मेराहै, इसमें मुंबई के सब संघको व आगेवानोंको बीचमें लानेकी कोई जरुरत नहीं है, आप संघको बीचमें लानेका लिखो या कहो यही आपकी कमजोरी है, न सब संघ बीचमें पडे और न हमारी पोल खुले, ऐसी कपटता छोडो.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ताकत हो तो मुंबईकी पोलीश चौकी कोटवालीमें शास्त्रार्थ करनेको आवो, दूरसे कागज काले करके मनमानी आडी२ लंबी चौडी झूठीझूठी बातें लिखकर भोलेजीवोंको भरमानेका काम नहीं करना.

३—दोनोंको सब लेख सिद्ध करके बतलाने पडेंगे. उसमें झूठेको क्या आलोयणा लेनी, सो लिखो. वैशाखशुदी १३."

न्यायरत्नजी आपकी धर्मवाद करनेकी ताकातहोती तो इतने दिन मौनकरके क्यों बैठे, खैर! ! ! जैसी आपकी इच्छा. मगर याद रखना सभामें योग्य नियमानुसार शास्त्रार्थ न करना, और अपने झूठे पक्षकी बात रखनेके लिये वितंडावाद करना या सामने न आकर साक्षि व प्रतिज्ञा बिनाही दूरसे कागज काले करते रहना और विषयांतर व कुयुक्तियोंसे उत्सूत्रप्ररूपणाकी आपकी दोनों कीताबें सच्ची बनाना चाहो सो कभी नहीं हो सकेगा, किंतु इसके विपाक भवांतरमें अवश्यही भोगनेपडेंगे. मरीचि और जमालिसेभी आपका उत्सूत्र बहुत ज्यादे है, आत्महित चाहते हो तो हृदयगम करके प्रायश्चित्त लेवो, उससे श्रेय हो. तथास्तु. सं० १९७५ ज्येष्ठ शुदी २ सोमवार. हस्ताक्षर- मुनि मणिसागर.

इसप्रकार उपरमुजब लेख प्रकटहोनेसे न्यायरत्नजी 'झूठेहैं इसलिये चुप लगाकर बैठे हैं' इत्यादि बहुत चर्चा होने लगी तब अपनी झूठी इज्जत रखनेकेलिये १ हेंडबील छपवाया उसमें लिखाथा कि, ' सभा हुईनहीं शास्त्रार्थ हुआनहीं फिर हारजीत कैसे होसके ' इसके जवाबमें हमनेभी विज्ञापन १०वा छपवाकर उनके लेखका अच्छीतरहसे खुलासा कियाथा वो लेखभी नीचे मुजबहै :-

विज्ञापन, नंबर १०.

श्रीतपगच्छके न्यायरत्नजी शांतिविजयजीके हारका कारण, और उनकी अधिकमाससे शास्त्रार्थकी जाहिर सूचनाका उत्तर.

१-न्यायरत्नजी लिखतेहैंकि,-'सभाहुईनहीं शास्त्रार्थहुवानहीं फिर हारजीत कैसे होसके' जवाब-आपकी हारका कारण विज्ञापन ७वें में और ९ वें में लिख चुका हुं. उसको पूरेपूरा लिखकर सबका उत्तर क्यों न दिया ? फिरभी देखिये-मेरे विज्ञापन नं. ७ के सब लेखोंका पूरेपूरा उत्तर नियत समयपर आप देसकेनहीं १, विज्ञापन ६ मुजब सभाके नियमभी मंजूर किये नहीं २, आजकल वारंवार मुंबईमें आ-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पे आना जाना करतेहैं, मगर सभा करनेको खडे होते नहीं ३, सभामें सत्यग्रहण करनेकी प्रतिज्ञाभी करते नहीं ४, झूठे पक्षवालेको क्या प्रायश्चित्त देना सो भी स्वीकार करते नहीं ५, और श्रीकच्छीजैन एसोसीयन सभाकी विनतीसेभी सभा करनेको आप आते नहीं ६, और लेखीत व्यहारसेभी शास्त्रार्थ शुरु किया नहीं, ७, इसलिये आपकी हार समजी गई, महाशयजी ! ९ महीनोंसे शास्त्रार्थ करनेके लिये आपसे लिखता हुं, मगर आपतो आडी २ बातें बीचमें लाकर शास्त्रार्थ करनेसे दूरहीभटकतेहैं, फिर हारमें क्या कसररही. जबतक दूसरी आड छोडकर शास्त्रार्थकरनेको सामने न आवोगे तबतकही आपकी कम जोरी समझी जावेगी. अभीभी अपनी हार आपको स्वीकार न करना हो, तो, थाणा छोडकर आगे पधारना नहीं. शास्त्रार्थ करनेको जलदी पधारो. कंठशोष-सुष्क विवाद व वितंडवादसे कागजकाले करनेकी व कालक्षेप करनेकी और व्यर्थ श्रावकोंके पैसे बरबाद करवानेकी कोई जरूरत नहीं है ।

२-- " शास्त्रार्थ आपका और मेरा है, इसमें मुंबईके सब संघको व आगेवानोंको बीचमें लानेकी कोई जरूरत नहीं है, आप संघको बीचमें लानेका लिखो या कहो यही आपकी कमजोरीहै, न सब संघ बीचमें पडे और न हमारी [न्यायरत्नजीकी] पोल खुले, ऐसी कपटता छोडो " इसतरहसे विज्ञापन नं० ९ वें के मैंरे पूरे सब लेखको आपने छोडदिया और मैरे अभिप्राय विरुद्ध होकर आप लिखतेहैं, कि " शास्त्रार्थ करना और फिर जैन संघकी जरूरत नहीं यह कैसे बन सकेगा " महाशयजी ! यह आपका लिखना सर्वथा अर्थका अनर्थ करनाहै, कौन कहताहै जैन संघकी जरूरत नहींहै, मैरे लेखका अभिप्राय तो सिर्फ इतनाहीहै, कि--मुंबईमें सबगच्छोंका, सब देशोंका, व सब न्यातोंका अलग २ संघ समुदाय होनेसे सब संघ आपके और हमारे शास्त्रार्थके बीचमें पंचरूपसे आगेवान नहीं होसकता, मगर सत्यासत्यकी परीक्षाके इच्छावालोंको सभामें आनेकी मनाई नहीं, सभामें आना व सत्य ग्रहण करना मुंबईके संघको तो क्या मगर अन्यत्रकेभी सब संघको अधिकारहै, और इतनी बडी सभामें हजारों आदमियोंके बीचमें पक्षपाती व अल्प विचार वाले कोईभी किसी तरहका बखेडा खडाकरदेवे, या अपना निजका द्वेषसे आपसमें गडबड करदेवे, तो मुंबईके संघको व आगेवानोंको सुरतके झगडेकी तरह कर्मकथा, धनहानी, शासनहिलना व कुसंप वगैरह-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रपंचमें फँसना पडे,इस अभिप्रायसे मैने मुंबईके सब संघको बीच-मे न पडनेका लिखाथा, जिसपर आप "संघकी जरूरत नहीं" ऐसा उलटा लिखते हो सो अनुचित है, मुंबईके, व अन्यत्रकेभी सब संघको सभामें आना व शांतिपूर्वक सत्यग्रहण करना, यह खास जरूरत है, इसलिये-सभामें अवश्य पधारना और पक्षपात रहित होकर सत्यग्राही होना चाहिये.

३-और आपभी अपनी बनाई 'पर्युषणापर्वनिर्णय'के पृष्ठ २२ वें की पंक्ति ४-५-६ में लिखतेहैं, कि-" सभामें वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष-दंडनायक और साक्षी ये पांचबातें होना चाहिये.दोनों पक्षवालोंकी रायसे सभा करनेका स्थान और दिन मुकरर करना चाहिये" देखिये-न्यायरतनजी यह आपकेलेख मुजबही हममंजूर करतेहैं, अब आपकोभी अपना यह लेख मंजूर हो तो सभा करना मंजूर करो,आपका और हमारा शास्त्रार्थ कबहोवे, यह देखनेको सारी दुनिया उत्सुक हो रही है. जब सभाका दिन मुकरर होगा तब मुंबईके व अन्यजगहकेभी बहुतसे आदमी स्वयं देखनेको आजावेगें " सभाका २ महीनेका समय होनेसे देशांतरकेभी श्रावक सभाका लाभ ले सकेंगे " यहकथन दादर और वालकेश्वरमें आपहीकाथा, अब आपकेलेख मुजबही साक्षीवगैरहके नाम व अन्य नियमभी मिलकर करनेचाहिये, पहिले विज्ञापनमें मैंभी लिख चुकाहूं.

४ आप लिखतेहैं कि "संघका मेरेपर आमंत्रण आवे तो मैं सभामें शास्त्रार्थकेलिये आनेकोतयार हूं" यह आपका लिखना शास्त्रार्थसे भगनेकाहै, क्योंकि पहिले आपही लिखचुके हो कि स्थान और दिन दोनोंमिलकर मुकररकरें,अब संघपर गेरतेहो यहन्यायविरुद्धहै, और पहिले कभी राजा महाराजोंकी सभामें शास्त्रार्थ होताथा,तबभी वादी प्रतिवादीको संघ तरफसे आमंत्रण हो या न हो, मगर अपना पक्षकी सत्यता दिखलानेको स्वयं राजसभामें जातेथे.या अपनेपक्षके संघ अपनेविश्वासी गुरुको विनती करताथा, मगर सब संघ दोंनोंपक्षवाले विनती कभीनहीं करसकते,इसलिये आपको संघकीविनतीकी आवश्यकतानहींहै, स्वयं आनाचाहिये, या आपके तपगच्छके संघको आपपर पूराभरोसा [विश्वास]होगा तो वो विनतीकरेगें अन्य सब नहीं करसकते.देखो- 'आनंदसागरजी वडोदेकी राजसभामें शास्त्रार्थ करनेको तैयारहुएथे, और मुंबईमेंभी शास्त्रार्थकरनेका मंजूर-कियाथा तबभीसंघकी विनतीनहीं मांगीथी,स्वयं आनेको तैयारहुए-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थे.मगर अब शास्त्रार्थ क्यों नहींकरते,सो उनकी आत्मा जाने' इतने-परभी आप संघके आमंत्रणका लिखते हो सो भी 'श्रीकच्छीजैन एसोसीयन सभा' ने सर्व जैनश्वेतांबर मुनिमहाराजोंको सभाकरनेकी विनती की थी, सो आमंत्रण हो ही चुका फिर वारंवार क्या? यदि आप मुनिमंडळमें हैं तबतो आपकोभी आमंत्रण होचुका, यदि आप अपनेको भिन्न समझतेहैं तो संघ आमंत्रणभी कैसे कर सकताहै, मैं पहिलेही लिखचुकाहूं कि 'न सब संघ बीचमें पडे और न न्यायरत्नजीको शास्त्रार्थ करनापडे'ऐसी कपटता क्यों रखतेहो,आपके गच्छवालोंको आपका भरोसा न होवे, तो वे आपको विनती न करें, अथवा आपकी बात सच्ची मालूम न होवे तो मौनकर जावें,इसमें हम क्याकरें. आप अपनापक्ष सच्चा समझतेहोतो शास्त्रार्थको पधारो. आप दूरदूरसे खंडनमंडनका विवाद चलाते हैं, किताबें छपवाते हैं, तबतो संघसे पूछनेकी दरकार रखतेनहींहै, फिर उसबातका निर्णय करनेकी अपनेमें ताकत न होनेसे संघकी बात बीचमेंलाते हैं, यहभी एक तरहकी कमजोरी व अन्यायकीही बातहै और यह विवाद तो खास करके मुख्यतासे साधुओंकाही है, श्रावकोंका नहीं.श्रावक तो साधुओंके कहने मुजब पर्युषणापर्वका आराधन करनेवाले हैं,इसलिये साधुओंकोही मिलकर इसका निर्णय करना चाहिये.

५-पहिले राजा महाराजाओंकी सभामें शास्त्रार्थ होताथा और अभीके भारतक्रेमहाराज लंडनमें हजारों कोशबहुतदुरहैं,उनकी आज्ञाकारिणी और प्रजापालीनी कोर्ट व कोतवाली है, इसलिये वहां सभामें किसी तरहका बखेडा न होनेके लिये और शांतिसे पक्षपात रहित पूरा न्याय होनेके लिये विद्वानोंकी साक्षीपूर्वक शास्त्रार्थ होने में कोई तरहकाभी हरजा नहींहै.यह तो जगतप्रसिद्धही बातहै,कि अदालतमें जो न्यायालय है,उसमें सुलह शांतिसे पूरा न्याय मिलताहै इसलिये न्यायाधीशके समक्ष इन्साफ मिलनेके लिये शास्त्रार्थ करनेका हमने लिखा सो न्याय युक्तही है. देखो-पंजाबमें जैनियोंके और-आर्यसमाजियोंके अदालतमेंही शास्त्रार्थ हुआथा उससेही जैनियोंको पूरा न्याय मिला, विजय हुईथी.उसीतरह न्यायसे धर्मवाद करनेको वहां हम बहुत खुशीसे तैयार हैं, अब आपभी जलदी पधारो, हम तो सिर्फ न्यायसे इन्साफ चाहते हैं. वहांभी बहुत आदमी देखनेको आसकते हैं, सचेको भय नहीं रहता झूठेको भय रहता है.इस लिये वो बीचमें आडी२ बातोंसे झूठे२ बहाने बतलाकर किसी तरह-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सेभी अपनी इज्जतका बचावकरके शास्त्रार्थकरनेसे भगने चाहताहै।

६- आपकी इच्छा धर्म स्थानमेंही सभा करनेकी हो तो भी हम तैयार हैं, देखो- आपकेही गच्छके आपके बडील आचार्य आनंदसागरजीजोअभी मुंबईमें श्रीगौडीजीकेउपाश्रयमेंहैं,उनके व्याख्यानमें हजारों आदमियोंकीसभाभरातीहै,वहां आपका और हमारा शास्त्रार्थहोतोभी हमेंमंजूरहै,मगर ऊपर लिखेमुजबनियमानुसार होनाचाहिये. अथवा मुंबईमें अन्य स्थानभी बहुतहैं, जहां आप लिखे वहांही सही. वालकेश्वरमें हमारे गुरुजी महाराजके पास २-३ श्रावकोंके समक्ष आपने कहाथा, कि- आनंदसागरजी शास्त्रार्थ करेंगे, तो मैं साक्षीरहूंगा औरयदि मैं शास्त्रार्थ करूंगातो आनंदसागरजीको साक्षी बनाऊंगा सो यह योगभी आपके बन गया है, अब अपनी प्रतिज्ञासे आपको बदलना उचित नहींहै ,और सभादक्ष-दंडनायक वगैरह नियमभी मिलकर जलदी करीयेगा.

७- और आप लिखतेहैं, कि " पर्युषणापर्व निर्णय,छपनेको नव महीने होगये दरेक बयानका पूरेपूरा उत्तर दीजिये" जबाब-महाशयजी श्रावकोंके विशेष पैसे खर्च न होनेके लिये व किताबें छपवानेसे बहुत वर्षोंतक खंडन मंडनका प्रपंच नहीं चलानेके लियेही आपकी किताबोंका उत्तर सभामें देनेका विचार रक्खा है,सो प्रथम विज्ञापनमें लिखभी चुका हूं. इसलिये ९ महीनेका लिखना आपका अनुचितहै, और श्रीमान् पन्यासजी केशरमुनिजीके बनाये ' प्रश्नोत्तर विचार " और ' हर्षहृदयदर्पण'का दूसरा भागके पर्युषणासंबंधी लेख, व 'प्रश्नोत्तर मंजूरी'के तीन (३) भागके ४००-५०० पृष्ट छपेको आज ४ वर्ष ऊपर हो चुका है,उनकी प्रत्येक बातका उत्तर आजतक आप कुछभी नहींदेसकते, तो फिर ९ महीने किस हिसाबमें हैं,और मैरे लघुपर्युषणा निर्णयके सब लेखोंकाभी पूरा उत्तर ११ महीनेहो गये तो भी आजतक आप न दे सके, बल्कि सत्य सत्य लेखोंके पृष्ठकेपृष्ठ और पंक्तियेंकी पंक्तियें छोडकर अधूरा२लेख लिखकर उलटा२ ही जवाब देतेहैं, यह जवाब नहीं कहा जा सकता,सत्यता तभी मानी जा सकेगा कि पूरे पूरा लेख लिखकर अभिप्राय मुजब बरोबर उत्तर दिया जावे, सो तो आपने अपनी दोनों किताबोंमें कहींभी नहीं किया,और उलट पुलट झूठाझूठाही लिख दिखलायाहै, सो यह युक्तही है सत्यको कौन असत्य बना सकताहै।मगर कुक्तियोंसे बात को अपनी तरफ खींचना अलग बात है। देखिये हमनें तो आपकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दोनों किताबोंकी उत्सूत्र प्ररूपणासंबंधी १२ भूलेंतो विज्ञापन नं ७में दिखलादी हैं, और भी बहुत हैं सो सभामें विशेष खुलासा होगा. और७वें विज्ञापन का तो पहिले कुछभी उत्तर आपने नहीं दिया.और नवमेंका देनेलगे, यह भी आपका अन्याय है, और सभामें निर्णय होनेवाला है, जिसपरभी आप अभी किताब द्वारा जवाब मांगते हैं, इससे साबित होताहै, कि शास्त्रार्थ करनेकी आपकी इच्छा नहीं है, अन्यथा ऐसा क्यों लिखते, यदि हो तो कब विचार है, सो लिखो आपकी तीसरी पुस्तककाभी उत्तर उस समय सभामें मिलजावेगा मगर दोनों किताबोंमें जैसी उत्सूत्रता भरी है, वैसी तीसरीमेंभी होगा,तो सभामें सिद्धकरके बतलाना मुश्किलहोगा.और उसकीआलोयणा लेनीपडेगी.अधिकमहीनेके दिनोंकी गिनती,व आषाढचौमासीसे ५० वें दिन दूसरे श्रावणमें या प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्व करना,तथा श्रीवीरप्रभुके ६ कल्याणक मान्यकरने और श्रावकके सामायिकमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावहीकरना शास्त्रानुसार होनसे इनबातोंको कोईभी निषेद्धनहीं करसकता.

विशेष सूचना-गये चौमासेमें हमनें सब मुनिमहाराजोंको पर्युषणापर्वका निर्णयकरनेकी सभा करनेकेलिये विनतीपत्रसे आमंत्रण भेजाथा.तथा 'श्रीकच्छीजैन एसोसियन सभा'नेभी सब मुनिमहाराजोंको सभा भरकर वर्षोवर्षके अधिकमाससंबंधी इस विवादके निर्णय करनेकी विनती कीथी, जिसपरभी कोई सभा करनेको न आये, सबने चुप लगादी. अब आप लोगभी चौमासा वगैरहके बहाने बतलाकर सभा न करोगा, तो फिर आपकीभी हार समझी जावेगी. तथा आपके पक्षके सब मुनियोंकीभी सत्यताकी परीक्षा दुनिया स्वयंकर लेवेगी. और सभा करनेका मंजूर कियेबिना व्यर्थ निष्प्रयोजनके विषयांतरके वितंडावादवाले लंबे चौडे किसीकेभी लेखका उत्तर आजसे नहीं दिया जावेगा. संवत् १९७५ आषाढ वदी ३ गुरुवार, हस्ताक्षर-मुनि-मणिसागर, मुंबई.

देखिये-ऊपर मुजब विज्ञापन छपवाकर जाहिर कियाथा,तोभी न्यायरत्नजीने शास्त्रार्थ करनेको सभामें आनेका मंजूर किया नहीं. विज्ञापन,७वेंमें लिखेप्रमाणे,अपनी १२भूलोंको सुधारकर उसका प्रायश्चित्तभीलियानहीं,तथा अनुक्रमसे उनभूलोंकोशास्त्रप्रमाणोंसेसाबितकरके सत्यठहरासकेभीनहीं और हमनेशास्त्रानुसारसत्य२बातें बतलायाथा उन्होंको अंगीकारभी किया नहीं और अपने पकडेहुए झूठे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हठको छोडांभी नहीं. यह कितना बडा भारी अभिनिवेशिक मिथ्या· त्वका आग्रह कहाजावे सो दीर्घदर्शीतत्त्वज्ञ जनस्वयंविचार सकतेहैं·

औरभी न्यायरत्नजीने एक हँडबील तथा ' अधिकमासदर्पण ' नामा छोटीसी एक किताब छपवाया, उनमेंभी विज्ञापन ७ वेंमें जो हमने उनकी १२ भूलें बतलायीथी, उन सब भूलोंका अनुक्रमसे पूरे पूराखुलासाकरनेके बदले १भूलकाभी पूरेपुरा खुलासा करसके नहीं और मास वृद्धिके अभावसे पर्युषणाके बाद ७० दिन रहनेका व दू-सरेआषाढमें चौमासी कार्य करनेका तथा श्रावण- पौषसंबंधी कल्या-णक तप वगैरह सब बातोंका स्पष्ट खुलासापूर्वक निर्णय ' लघुपर्यु-षणा'में और सातवे विज्ञापनमें अच्छीतरहसे हमबतला चुकेहैं, तो· भी उन्ही बातोंको बालहठकी तरह वारंवार लिखे करना और स्था-नांगसूत्रवृत्ति, निशीथचूर्णि, कल्पसूत्रकी टीकायें आदि बहुत शास्त्रों-मे मास बढे तब पर्युषणाके बाद १०० दिन ठहरनेका कहा है, तथा अधिक महीनेके ३० दिन गिनतीमें लिये हैं, इसलिये अधिक महीना होवे तब ७० दिनकी जगह १०० दिन होवें उसमे कोई दोष नहीं है. मगर पर्युषणापर्व किये बिना ५०वें दिनकों उल्लंघन करें तो जिनाज्ञा भंगका दोष कहाहै,इसीलिये ५०दिनकी जगह ८०दिनतो क्या परंतु ५१ दिनभी कभी नहीं होसकते इत्यादि बहुत सत्य २ बातोंको उडा-देनेका उद्यम किया सो सर्वथाअनुचितहै,इनसब बातोंका विशेषनि-र्णय ऊपरके भूमिकाके लेखमें और इन ग्रंथमें विस्तार पूर्वक शास्त्रों-कें प्रमाणोंसहित अच्छी तरहसे खुलासासे छपचुका है, इसलिये यहांपर फिरसे लिखनेकी कोई आवश्यकता नहींहै, पाठक गण ऊप-रके लेखसे सब समझ लेंगे ।

अब हम यहां पर 'खरतरगच्छ समीक्षा ' के विषयमें थोडासा लिखतेहैं, न्यायरत्नजीः'खरतरगच्छ समीक्षा ' नामा किताब छपवा-ने संबंधी वारंवार जाहेर खबर लिखतेहैं, यह किताब आज लगभ-ग १२—१३ वर्षहुए उनोंने बनायाहै, जब हम संवत् १९६५ को श्री-अंतरिक्ष पार्श्वनाथजी महाराजकीयात्रा करनेकेलिये बराड देशमें गये थे, तब बालापुरमें न्यायरत्नजी हमकोमिलेथे, उससमय उस किता-बकी कॉपी उन्होंनेहीखास मेरेको वंचायाथा,तब मैने उस किताबपर महानिशीथ वगैरह कितनेही शास्त्रोंका प्रमाण मांगा, तब न्यायरत्न-जी बोले अभीमेरे पास महानिशीथसूत्र वगैरह शास्त्र यहांपर मौजूद नहींहै, फिर कभी आगेदेखाजावेगा,ऐसा कहकर उस समय बातको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

टाल दिया. अब वोही किताब छपवानाचाहतेहैं, उस किताबमें सामायिक—कल्याणक-पर्युषणा-अभयदेवसूरिजी-तिथि वगैरह बातोंसंबंधी शास्त्रानुसार सत्य २ बातोंको झूठी ठहरानेके लिये शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय विरुद्ध होकर अधूरे २ पाठ लिखकर उन पाठोंके अपनी कल्पना मुजब जान बुझकर खोटे खोटे अर्थ करके कुयुक्तियोंसे उत्सूत्र प्ररूपणारूप और प्रत्यक्ष मिथ्या बहुतजगह लिखाहै, उसका थोडासा नमूना पाठकगणको यहांपर बतलाते हैं, जिसमें प्रथम सामायिक संबंधी लिखतेहैं :—

१ – श्रावकके सामायिक करनेकी विधि संबंधी सर्व शास्त्रोंमें पहिले करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनेका लिखाहै, देखो-श्रीजिनदासगणिमहत्तराचार्यजी कृत आवश्यक सूत्रकी चूर्णिमें १, श्रीहरिभद्रसूरिजीकृत बृहद्वृत्तिमें २, तिलकाचार्यजी कृत लघुवृत्तिमें ३, देवगुप्तसूरिजी कृत नवपदप्रकरण वृत्तिमें ४, लक्ष्मीतिलकसूरिजी कृत श्रावकधर्म प्रकरण वृत्तिमें ५, श्रीनवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिजी कृत पंचाशक सूत्रकी वृत्तिमें ६, विजयसिंहाचार्यजीकृत वंदीतासूत्रकीचूर्णिमें ७, हेमचंद्राचार्यजी कृत योगशास्त्र वृत्तिमें, ८, तपगच्छीय देवेंद्रसूरिजी कृत श्राद्धदिनकृत्यसूत्रकीवृत्तिमें ९, कुलमंडनसूरिजी कृत विचारामृत संग्रहमें १०, मानविजयजी कृत धर्मसंग्रह वृत्तिमें ११, इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें खास तपगच्छादि सर्व गच्छोंके पूर्वाचार्योंने प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनेका बतलायाहै.

२ – श्रीमान् देवेंद्रसूरिजी कृत श्राद्धदिनकृत्य सूत्रवृत्तिका पाठ यहां पर बतलाताहूं. सो देखिये :—

“ श्रावकेण गृहे सामायिकं कृतं, ततोऽसौ साधुसमीपे गत्वा किं करोति इत्याह–साधुसाक्षिकं पुनः सामायिकंकृत्वा इर्याप्रतिक्रम्यागमनमालोचयेत् । तत आचार्यादीन् वंदित्वा स्वाध्यायं कालेचावश्यकं करोति ” इत्यादि

इस पाठमें गुरुपास जाकर करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावहीकरके आचार्यादिकोंको वंदनाकरके स्वाध्यायकरना बतलायाहै और पीछे अवसर आवे तब छ आवश्यक रूप प्रतिक्रमण करनेकाभी बतलाया है ।

३— श्रीहीरविजयसूरिजीके संतानीय श्रीमानविजयोपाध्यायजीकृत धर्मसंग्रह वृत्तिका पाठभी देखो:—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

" साध्वाश्रयंगत्वा साधून्नमस्कृत्य सामायिकं करोति, तत्सूत्रं यथा – ' करेमिभंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव-साहू पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं,मणेणं वायाए काएणं,न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि,गरिहामि,अप्पाणं वो-सिरामि ' त्ति, एवं कृतसामायिकं इर्यापथिक्याप्रतिक्रामति, पश्चा-दागमनमालोच्य यथा ज्येष्ठमाचार्यादीन्वंदते, पुनरपि गुरुं वंदित्वा प्रत्युपेक्षितासने निविष्टः शृणोति पठति पृच्छति वा " इत्यादि

इनपाठमेंभी उपाश्रयमें जाकर साधुमहाराजको वंदना करके पहिले करेमिभंतेका पाठउच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावहीकर के अनुक्रमसे वडील आचार्यादिकोंको वंदनाकर फिर शास्त्र सुने, वांचे या धर्म चर्चाकी बातें गुरुसे पूछता रहे. ऐसा खुलासा लिखाहै.

४– श्री लक्ष्मीतिलकसूरिजीकृत श्रावक धर्म प्रकरण वृत्तिका पाठभी यहांपर बतलाताहूं, सो देखो :—

" चैत्यालये विधि चैत्ये, स्वनिशांते स्वगृहे, साधुसमिपे, पौषो-ज्ञानादीनां धियते-अस्मिन्निति पौषधं पर्वानुष्ठानं, उपलक्षणत्वा त्सर्वं धर्मानुष्ठानार्थं शालागृहं; पौषधशाला तत्र वा, तत् समायिकं कार्यं श्राध्धैः सदा नोभयसंध्यमेवेत्यर्थः । कथं तद्विधिना इत्याह– ' खमासमणं दाउं, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामाइय मुहप-त्ति पडिलेहेमित्ति भणियं, बीयखमासणपुव्वं सामाइयं ठावित्ति,वुत्तुं-खमासमण दाणपुव्वं अध्धावणगत्तो पंच मंगलं कढ्ढिता ' करेमिभं ते सामाइयं'इच्चाइ सामाइय सुत्तंभणइ,पच्छा इरियंपडिक्कमइ,इत्यादि

देखिये—इस प्राचीन पाठमेंभी मंदिरमें, अपने गृहमें, साधुपा-स उपाश्रयमें, अथवा पौषधशालामें, जब संसारिक कार्योंसे निवृति होवे तब किसीभी समयमें सामायिक करनेका बतलाया है, सो प-हिले खमामणसे आज्ञा लेकर सामायिक मुहपतिकापडिलेहण करके फिरभी दो खमासमणसे सामायिक संदिसाहणेका तथा सामायिक ठाणेका आदेशलेकर विनयसहित करेमिभंतेका पाठ उच्चारण करके पीछेसे इरियावही करनेका खूलासापूर्वक स्पष्ट बतलाया है ।

५– इसीही तरहसे श्री हरिभद्रसूरिजीने आवश्यकबृहद्वृत्तिमें, श्रीनवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिजीने पंचाशकवृत्तिमें, श्रीहेमचंद्रा-चार्यजीनें योगशास्त्रवृत्तिमें इत्यादि अनेक प्रभावक प्राचीन आचार्यों- नें अनेक शास्त्रोंमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछे इरि-यावही करनेका खुलासा पूर्वक स्पष्ट बतलाया है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६- " पयमक्खरंपि इक्कं, जो न रोएइ सुत्तनिद्दिट्ठं । सेसं रोअंतो वि हु, मिच्छाद्दिट्ठी जमालिव्व ॥१॥" इत्यादि शास्त्रीय प्रमाणके इस वाक्यसे सर्वशास्त्रोंकी बातोंपर श्रद्धा रखनेवालाभी यदि शास्त्रोंके एक पद या अक्षरमात्रपरभी अश्रद्धाकरे, तो उसको जमालिकीतरह मिथ्या दृष्टि समझना चाहिये । अब इस जगह श्रीजिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी सज्जनोंको विचार करना चाहिये, कि—श्रीहरिभद्रसूरिजी, नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिजी, हेमचंद्राचार्यजी, लक्ष्मीतिलकसूरिजी,देवेंद्रसूरिजी,वगैरह महापुरुषोंके कथन मुजब आवश्यक बृहद्वृत्ति वगैरह प्रामाणिक व प्राचीन शास्त्रोंके पाठोंसे श्रावकके सामायिकमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करने संबंधी जिनाज्ञानुसार सत्य बातपर श्रद्धा नहीं रखने वाले, तथा इस सत्य बातकी प्ररूपणाभी नहीं करनेवाले,और उसमुजब श्रावकोंकोभीनहीं करवानेवाले,व इससे सर्वथाविपरीत प्रथमइरियावही पीछे करेमिभंते करवानेका आग्रह करनेवालोंको ऊपरके शास्त्रवाक्य मुजब जिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी सम्यग्दृष्टि कैसे कहसकतेहैं, सो आपने गच्छके पक्षपातका दृष्टिरागको और परंपराके आग्रहको छोडकर तत्त्व दृष्टिसे सत्यशोधक पाठकगणको खूब विचार करना चाहिये ।

७- ऊपर मुजब सत्यबातको न्यायरत्नजीनें 'खरतर गच्छ समीक्षा'में सर्वथा उडादियाहै,और इनसत्य बातकेसर्वथा विरुद्ध होकर सामायिक करनेमें प्रथम इरियावही किये बाद पीछेसे करेमिभंतेका उच्चारणकरनेका ठहरानेके लिये शास्त्रोंके आगे पीछेके संबंधवाले पाठोंको छोडकर बिना संबंधवाले अधूरे २ (थोडे २) पाठ लिखकर अपनी मति कल्पना मुजब खोटे २ अर्थ करके व्यर्थही उत्सूत्रप्ररूपणासे उन्मार्गको पुष्ट किया है, उसकाभी यहां पर पाठकगणको निसंदेह होनेकेलिये प्रत्यक्ष प्रमाणसे थोडासा नमूना बतलाता हूं :-

८- श्रीमहानिशीथसूत्रके तीसरे अध्ययनमें उपधान करने संबंधी चैत्यवंदन करनेकेलिये जो पाठहै, सो पहिले दिखलाताहूं, यथा-

" असुहकम्मक्खयट्ठा, किंचि आयहियं चिइवंदणाई अणूट्ठिइज्जा, तयात्तयट्ठे चेव उवउत्ते से भवेज्जा, जयाणं से तयट्ठे उवउत्ते भवेज्जा, तया तस्सणं परमेमेगग्गचित्त समाही हवेइज्जा, तयाचेव सव्वजगजीवपाणभूयसत्ताणं जहिट्ठफलसंपत्ती भवेज्भा, ता गोयमा णं अपडिक्कंताए इरियावहियाए नकप्पइ चेवकाऊं किंचिइवंदणं सज्जायइज्झाणाइयंकाउं, इट्ठफलासायमभिकंखुगाणं, एएणं अट्ठेणं गोय-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मा एवं वुच्चई, जहाणं ससुत्तत्थोभयं पंचमंगलं थिरपरिचिअं काउणं तओ इरियावहियं अझीए त्ति. से भयवं कयराए विहिए तं इरियावहीयाए अझीए गोयमा जहाणं पंचमंगलं महासुयखंधं. से भयवं-इरियावहीयमहिज्झित्ताणं, तओ किंमहिझे गोयमा सक्कत्थयाइयं चेइयवंदणं विहाणं, णवरं. सक्कत्थयं एगट्ठम बत्तीसाए आयंबिलेहिं इत्यादि ”

इसपाठमें अशुभकर्मोंके क्षयके लिये तथा अपनी आत्माको हितकारी होवे वैसे चैत्यवंदनादि करने चाहिये, इसमें उपयोगयुक्त होनेसे उत्कृष्टचित्तकी समाधी होती है, इसलिये गमनागमनकी आलोचनारूप इरियावही किये बिना चैत्यवंदन, स्वाध्याय, ध्यानादिकरना नहीं कल्पता है, अतएव चैत्यवंदनकरनेके लिये पहिले पंचपरमेष्ठि नवकारमंत्रके उपधान वहनकरने चाहिये उसके बाद इरियावही, नमुत्थुणं, अरिहंत चेइयाणं वगैरहके आयंबिल उपवासादि पूर्वक उपधान वहन करने चाहिये.

९ — देखिये ऊपरके पाठमें उपधान वहन करनेके अधिकारमें विधिसहित उपयोगयुक्त चैत्यवंदन-स्वाध्याय-ध्यानादिकार्यकरने संबंधी पहिले इरियावही करके पीछेसे चैत्यवंदनादिकरें, ऐसा खुलासासे बतलाया है. इसलिये ऊपरका पाठ पौषधग्राही उपधान वहन करनेवालों संबंधीहै, और पौषध (पौषह) करनेवालोंको तो इरियावही कियेबिना चैत्यवंदन, स्वाध्याय-पढना गुणना, तथा ध्यानादि नोकरवालीफेरना वगैरह धर्मकार्यकरना नहींकल्पताहै, इसलिये यहबात तो अभीवर्तमानमेंभी सर्वगच्छवाले उसी मुजब करतेहैं. मगर इस पाठमें सामायिकके अधिकारमें, प्रथम इरियावही किये बाद पीछेसे करेमिभंतेका उच्चारणकरने संबंधी कुछभी अधिकारका गंधभी नहींहैं. जिसपरभीसूत्रकारमहाराजोंके अभिप्रायविरुद्ध होकर आगे पीछेके उपधानके संबंधवाले संपूर्णपाठको छोडकर बीचमेंसे थोडासा अधूरापाठ लिखकर उसकाभी अपना मनमाना अर्थकरके सामायिककरने संबंधी प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते ठहराना. सो ऊपर मुजब आवश्यक चूर्णि वगैरह अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध होनेसे सर्वथा उत्सूत्रप्ररूपणारूपही है ।

१० - श्रीदशवैकालिकसूत्रकी दूसरीचूलिकाकी ७ वी गाथाकी टीकामें साधुके गमनागमनादि कारणसे इरियावही करनेका कहा है, सो पाठभी यहांपर बतलाता हूं. देखो :—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

" अभीक्षणं, पुनः पुनः पुष्टकारणाभावे, निर्विकृतिकश्च, निर्गत विकृतिपरिभोगश्च भवेत् । अनेनपरिभोगोचित्तविकृत्तितामप्यकारणे प्रतिषेधमाह. तथा अभीक्ष्णं, गमनागमनादिषु, विकृति परिभोगेऽपि चान्ये किमित्याह- कायोत्सर्गकारीभवेत्, ईर्यापथिकीप्रतिक्रमणमकृत्वा न किंचिदन्यत् कुर्यादशुद्धतापत्तेरितिभावः। तथा स्वाध्याययोगे,वाचनाद्युपचार व्यापार आचामाम्लादौ पयतोऽतिशय यत्नपरो भवेत्तथैव तस्य फलवत्त्वाद्विपर्यय उन्मादादि दोष प्रसंगादिति"

ऊपरके पाठमें साधुओंके उपदेशके अधिकारमें-दुध-दही-घी-शक्कर-पक्कान् वगैरह विगयोंका त्याग करनेका बतलायाहै,तथा आहार पानी-देव दर्शन या ठले- मात्रे वगैरह गमनागमनादि कार्योंसे इरियावही किये बिना कायोत्सर्गकरना,स्वाध्याय-सूत्रपाठपढना गुणना, ध्यानादि करना नहीं कल्पे, इस लिये पहिले इरियावही करके पीछे सूत्र वाचनादि कार्योंमें प्रवृत्ति करें, इत्यादि.

११ — इस ऊपरके पाठमेंभी साधुओंके गमनागमनादिकारणसे व स्वाध्यायादि करनेकेलिये इरियावहीकरनेका बतलाया है, मगर श्रावकके सामायिक करनेसंबंधी प्रथम इरियावहीकरके पीछे करेमि. भंते उच्चारण करनेका नहीं बतलायाहै,जिसपरभी पंचमहाव्रतधारी सर्व विरति साधुओंके इरियावहीके पाठका आगे पीछेका संबंध छोड कर अधूरे पाठसे सामायिकका अर्थ करना बडी भूल है.

१२- इसी तरहसे किसी जगह पौषधसंबंधी इरियावहीके, किसी जगह उपधानसंबंधी इरियावहीके, किसीजगह साधुओंके गमनागमन संबंधी इरियावहीके,किसी जगह प्रतिक्रमण संबंधी इरियावहीके, किसीजगह चैत्यवंदन- स्वाध्याय-ध्यानसंबंधी इरियावहीके अक्षरोंको देखकर, उन जगहके प्रसंगसंबंधी शास्त्रकारोंके अभिप्रायकोसमझेबिनाही अथवा तो अपना झूठा आग्रह स्थापन करनेके लिये आवश्यक चूर्णि-बृहद्वृत्ति-लघुवृत्ति-श्रावकधर्मप्रकरणवृत्ति वगैरह अनेकशास्त्रपाठोंकेविरुद्धहोकर पौषधादिसंबंधी इरियावहीको सामायिकमें जोडकर प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंतेके पाठका उच्चारण करनेका ठहराना सो सर्वथा प्रकारसे अज्ञानतासे या जानबुझकरके उत्सूत्रप्ररूपणारूपही मालूम होता है.

देखिये— सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनेवालोंको अनेक दोषोंकी प्राप्ति होतीहै, सोही दिखाताहूं:—

१३ – जैनाचार्योंकी शास्त्ररचना अविसंवादी पूर्वापर विरोध

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रहित होती है, तथा पूर्वापर विरोधी विसंवादीको शास्त्रोंमें मिथ्यात्वी कहा है, और श्री हरिभद्रसूरिजी महाराजने आवश्यक बृहद्वृत्तिमें तथा श्रावकप्रज्ञप्तिवृत्तिमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनेका साफ खुलासा लिखाहै, और महानिशीथ सूत्रका उद्धारभी इन्ही महाराजने किया है, इसलिये महानिशीथ सूत्रके पाठसे प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनेमें आवे, तो श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजको विसंवादी कथनरूप मिथ्यात्वके दोष आनेकी आपत्ति आतीहै, इसलिये आवश्यक वृत्ति आदिके विरुद्ध होकर इन्ही महाराजके नामसे महानिशीथसूत्रके पाठसे प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनासो पूर्वापर विसंवादरूप मिथ्यात्वका कारण होनेसे सर्वथा अनुचित है।

१४- महानिशीथसूत्रके पाठसे 'इरियावही किये बिना कुछभी धर्म कार्य नहीं कल्पे,' इसलिये सर्व धर्मकार्य इरियावही करके ही करने चाहिये, ऐसा एकांत आग्रह करोगे तो भी नहीं बन सकेगा, क्योंकि देखो-देव दर्शनको या गुरु वंदनको जाती वख्त १, जिनप्रतिमाको या गुरुको देखतेही नमस्काररूप वंदना करती वख्त २, तीर्थयात्राको जाती वख्त ३, नवकारसी,पोरशी, उपवासादि पच्चखखाण करती वख्त ४, मंदिरमें जघन्य चैत्यवंदन करती वख्त ५, गुरुमहाराजको आहारवस्त्रादि वहोराती वख्त ६,इत्यादि अनेक धर्मकार्य इरियावही कियेबिनाभी प्रत्यक्षपने करनेमें आते हैं,इसलिये इरियावही किये बिना कुछभी धर्मकार्य नहीं करना, ऐसा एकांत आग्रह करना सो सर्वथा विवेक बिनाकाही मालूम होताहै,इसलिये कोन२ कार्योंमें पहिले इरियावही करना, कौन २ कार्योंमें पीछेसे इरियावही करना, व कौन २ कार्य इरियावही किये बिनाभी हो सकतेहैं, इन बातोंका गुरुगम्यतासे भेद समझे बिना सामायिकमें प्रथम इरियावही करनेका एकांत आग्रह करना सो अज्ञानतासे सर्वथा शास्त्र विरुद्धहै.

१५-औरभीदेखिये-स्वाध्याय,ध्यानादिमें प्रथम इरियावही करनाकहाहै,उसमें आदि पदसे सामायिकमेंभी प्रथम इरियावही करनेका आग्रहकियाजावे, तो भी सर्वथाअनुचितहै,क्योंकि,देखो-श्रीखरतरगच्छनायक श्रीनवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिजी, तथा कलिकाल सर्वज्ञ विरुद धारक श्रीहेमचंद्राचार्यजी और खास तपगच्छनायक श्रीदेवेंद्रसूरिजीआदि पूर्वाचार्योंने महानिशीथसूत्र अवश्यही देखाथा तथा स्वाध्यायध्यान आदिपदका अर्थभी अच्छीतरहसे जाननेवालेथे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तोभी सामायिकमें प्रथम इरियावही करनेका नहीं कहते हुए अपने २ बनाये ग्रंथोंमें सामायिकमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेकाखुलासा लिखगयेहैं, उसका भावार्थ समझेबिनाही उन महाराजोंके विरुद्ध होकर सामायिकमें प्रथम इरियावही स्थापन करतेहैं, सो उन महाराजोंके वचन उत्थापनरूप और उन महाराजोंके विरुद्ध प्ररूपणा करनेरूप दोषके भागी होते हैं।

१६– दशवैकालिकसूत्रकी टीकाके पाठसेभी 'इरियावही किये बिना कोईभी कार्यकरें तो अशुद्ध होताहै', इस बात परसे सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करतेहैं सो भी बडीही भूलहै, क्योंकि यह तो जैनसमाजमें प्रसिद्धही बात है, कि–दशवैकालिकमूलसूत्रमें और उसकी टीकामें सर्वजगह साधुओंके आचार-विचार-कर्तव्य संबंधीही अधिकार है, उसमें किसी जगहभी श्रावकके सामायिक वगैरह कार्योंसंबंधी कुछभी अधिकारनहींहै, इसलिये साधुओंके गमनागमनसे जाने आनेसे इरियावही करके पीछे स्वाध्याय, ध्यानादिधर्म कार्य करने बतलाये हैं, उसके आगे पीछेके संबंधवाले पाठको छोडकर अधूरे पाठसे सामायिकमें प्रथम इरियावही स्थापन करना सर्वथा अनुचित है.

१७– श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजने 'आवश्यकसूत्र' की बडी टीकामें तथा श्री उमास्वातिवाचक विरचित 'श्रावकप्रज्ञप्ति' की टीकामेंभी सामायिकमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही कहना खुलासा लिखा है, और इन्हीं महाराजनें श्रीदशवैकालिकसूत्रकी टीकाभी बनाया है, इसलिये इन्हीं महाराजके नामसे दशवैकालिकसूत्रकीटीकाके पाठसे प्रथम इरियावही स्थापन करनेसे इन महाराजके कथनमें पूर्वापर विरोधभाव विसंवादरूप दोषकी प्राप्ति होतीहै,इसलिये इनमहाराजके अभिप्राय विरुद्ध होकर अधूरे पाठसे सामायिक संबंधी खोटा अर्थ करके विसंवादका झूठा दोष लगाना बडी भूल है. यह महाराजतो विसंवादी नहीं थे. मगर संबंध विरुद्ध आग्रह करनेवालेही प्रत्यक्ष मिथ्या भाषणसे बालजीवोंको उन्मार्गमें गेरनेके दोषी ठहरतेहैं.

१८ – श्रीदेवेंद्रसूरिजी महाराजने 'श्राद्धदिनकृत्य' सूत्रकीवृत्तिमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही खुलासा लिखाहै, तथा धर्मरत्न प्रकरणकी वृत्तिमें तो-वाचना,पृच्छना,परावर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथारूप पांचप्रकारकीस्वाध्यायकरने संबंधी अधिकारमें सिर्फ परावर्तनारूप (शास्त्रपाठ पढे हुए फिरसे याद करने रूप)स्वाध्याय करनेके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिये इरियावही करनेका बतलायाहै,उसका आशय समझे बिनाही अपने गच्छके पूर्वज आचार्य महाराजकोभी विसंवादरूप मिथ्यात्वका दोष लगानेका भय नहीं करते हुए सामायिकमें प्रथम इरियावही स्थापन करते हैं, सो भी बडी भूल करते हैं.

१९ - औरभी देखो धर्मरत्नप्रकरण वृत्तिमें "इरियं सु पडिक्कंतो कड समइयं " इरियावही पूर्वक स्वाध्याय करें; एसा पाठ है,उसमें ' समइय ' शब्दकीजगह ' सामाइय ' शब्द बनाकर दो मात्राज्यादे अधिक पाठमें प्रक्षेपन करके स्वाध्यायकी जगह सामायिकका अर्थ बदलातेहैं सो यहभी सर्वथा शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणारूप बडीभूलहै.

२०- श्रीधर्मघोषसूरिजीनें 'संघाचारभाष्यवृत्ति' में चैत्यवंदन संबंधी दशत्रिकके अधिकारमें सातवी त्रिकमें तीनवार भूमिप्रमार्जन करके इरियावहीपूर्वक-चैत्यवंदन करनेका बतलाया है, उसकेभी पूर्वापरका संबंध छोडकर उसपाठका भावार्थ समझे बिना उसपाठसे भी सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते ठहरते हैं, और इन महाराजकेही गुरु महाराज श्रीदेवेंद्रसूरिजीने प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही लिखा है, उस बातके विरुद्ध प्ररूपणाकरनेवाले बनाते हैं, सो भी बडी भूल है.

२१-वंदीत्तासूत्रकीटीकाके पाठसेभीसामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते ठहरातेहैं,सोभी सर्वथाअनुचितहै,क्योंकि देखो-वंदीत्तासूत्रकी प्राचीन चूर्णि और श्रावकप्रज्ञप्तिवृत्ति वगैरह अनेकप्राचीन शास्त्रोंमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेका खुलासा लिखा है और खास वंदीत्तासूत्रकी टीकामेंभी नवमा सामायिक व्रतकी विधिसंबंधी आवश्यकचूर्णि,पंचाशकचूर्णि,योग शास्त्रवृत्ति वगैरह अनेक शास्त्रानुसार सामायिककरनेकी विधि लिखाहै, उन्ही सर्व शास्त्रोंमें भी प्रथम करेमिभंते और पीछे इरियावही लिखाहै, इसलिये प्राचीन चूर्णि आदिअनेक शास्त्रोंके विरुद्ध होकर पूर्वापर विसंवादीरूप वि विरोधी कथन — एकही विषयमें ; एकही ग्रंथमें ; कभी नहीं होसकताहै, जिसपरभी एकही विषयमें, एकही ग्रथमें विसंवादी कथन माननेवाले या कहनेवाले शास्त्रविरुद्ध श्रद्धा रखनेवाले सर्वथा अज्ञानी समझने चाहिये.

२२- पंचाशकसूत्रकी चूर्णिके पाठसेभी नवमें सामायिक व्रतमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंतेका स्थापन करते हैं,सो भी सर्वथा अनुचितहै,क्योंकि इन्हीं चूर्णिमें नवमें सामायिकव्रत संबंधी प्रथम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करेमिभंतेपीछे इरियावहीकरनेकाखुलासालिखाहै,जिसपरभीचूर्णिके लिखे सत्य पाठको छुपा देना, और चूर्णिकारने रात्रिपौषध वालोंके लिये ११ वा पौषधव्रत संबंधी इरियावही लिखी है, उसको चूर्णिकारके अभिप्राय विरुद्ध होकर ९ वें सामायिक व्रतमें भोले जीवोंको दिखलाना,सो मायावृत्तिरूपप्रपंचसे प्रत्यक्षझूठबोलकर शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणा करना संसारवृद्धिका कारण होनेसे आत्मार्थियोंको कदापि योग्यनहींहै.यहांपर लडकोंके खेल जैसी प्रपंचताकी बातें नहीं हैं, किंतु सर्वज्ञ शासनकी बातें हैं,इसलिये एकही ग्रंथमें,एकही विषयमें, एकही पूर्वाचार्यको पूर्वापर विरोधी विसंवादी कथन करनेवाले ठहराना, सो बडी अज्ञानताहै.अथवा जान बुझकर पूर्वाचार्योंकी आशातनाका और शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणाका भय न रखकर इस लोककी पूजा मानताकेलिये अपना झूठा आग्रह स्थापनकरनेकेलिये व्यर्थही एसी शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणा करते होंगे, सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने. हम इस बातमें विशेष कुछभी नहीं कहसकते हैं।

२३-इसीतरहसे सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते कहनेका स्थापनकरनेवाले न्यायरत्नजीआदिको पूर्वाचार्योंको विसंवादीके झूठे दोषलगानेके हेतूभूत तथा अनेक शास्त्रोंके विरुद्धप्ररूपणा करनेरूप अनेक दोषोंके भागी होनापडता है,और पूर्वाचार्योंको झूठा दोष लगानेकी आशातनासे तथा शास्त्रकारोंके अभिप्रायविरुद्धप्ररूपणा करनेसे आपने व अपने पक्षके आग्रहकरनेवाले बालजीवोंकेभी संसारवृद्धिका कारणरूप महान् अनर्थ होता है, यही सर्व बातें न्यायरत्नजीने 'खरतरगच्छ समीक्षा' में सामायिकमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावहीकरनेकी आवश्यक चूर्णि, बृहद्वृत्ति वगैरह शास्त्रानुसार सत्य बातको निषेध करनेके लिये और प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनेके लिये महानिशीथ-दशवैकालिक सूत्रकी टीकाकारवगैरह बहुतशास्त्रकारमहाराजोंके अभिप्राय विरुद्ध होकर अधूरे२पाठोंसे उलटा२संबंध लगाकर उत्सूत्रप्ररूपणासे बडा अनर्थ किया है, उसका नमूनारूप थोडासा सामायिक संबंधी पाठकगण को निसंदेह होनेकेलिये हमनें ऊपरमें इतना लिखाहै. मगर इस प्रकरणका विशेष खुलासा पूर्वक इसीही "बृहत्पर्युषणा निर्णय" ग्रंथके पृष्ठ२०९से२२९तक अच्छी तरहसे छप चुका है, वहांसे विशेष जान लेना और "आत्मभ्रमोच्छेदनभानुः" नामा ग्रंथमेंभी विस्तारपूर्वक शास्त्रोंके पाठोंसहित निर्णय हमारी तरफसे छप चुका है, इस लिये

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यहांपर फिरसे ज्यादे विशेष लिखनेकी कोई जरूरत नहीं है।

२४-अब सत्यप्रिय पाठकगणसे हमारा इतनाही कहनाहै,कि-महानिशीथसूत्रके उपधान चैत्यवंदनसंबंधी इरियावहीके अधूरे पाठसे,तथा दशवैकालिककी टीकाके साधुओंके स्वाध्याय करनेसंबंधी इरियावहीके अधूरे पाठसे,श्री हरिभद्रसूरिजीमहाराजके अभिप्राय विरुद्ध होकर सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करतेहैं,और इन्हीं महाराजने जिनाज्ञानुसारही प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही खुलासा पूर्वक आवश्यकसूत्रकी बडी टीकामें लिखा है, उसको निषेध करतेहैं,या उसपर अविश्वास लाकर कुयुक्तियोंसे भोलेजीवोंकोभी उस बातपर शंकाशील बनातेहैं, वो लोग जिनाज्ञा विरूद्धहोकर उत्सूत्रप्ररूपणाकरतेहुए अपने सम्यक्त्वकोमलिन करतेहैं.

२५-और किसीभी प्राचीन पूर्वाचार्यमहाराजनेंअपने बनाये किसीभी ग्रंथमें, किसी जगहभी ९ वें सामायिकव्रतसंबंधी प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते नहींलिखा.मगर खास तपगच्छादि सर्व गच्छोंके सर्वपूर्वाचार्योंने प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही स्पष्ट खुलासा पूर्वक लिखा है, इसलिये इस बातमें पाठांतरसे पहिले इरियावहीभी नहीं कह सकते, जिसपरभी पाठांतरके नामसे पहिले इरियावही स्थापन करें सो भी शास्त्रविरुद्ध होनेसे प्रत्यक्ष मिथ्या है.

२६- और कितनेक अज्ञानी लोग अपनी मति कल्पनासे कहते हैं, कि- पहिले इरियावही करें तो क्या, और पीछे करें तो भी क्या, किसी तरहसे सामायिक तो करनाहै,ऐसा मिश्र भाषण करनेवालेभी सर्वथा शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणा करते हैं, उन लोगोंको सामायिकमें प्रथम करेमिभंते कहनेसंबंधी शास्त्रकारोंके गंभीर अभिप्रायको समझमें नहीं आया मालूम होताहै, नहीं तो ऐसा शास्त्रविरुद्ध मिश्र भाषण कभी नहीं करते. क्योंकि देखो-सर्व शास्त्रोंमें स्वाध्याय, ध्यान,प्रतिक्रमण,पौषधादिधर्मकार्योंमें पहिले इरियावही कहाहै,और सामायिकमें करेमिभंते पहिले कह बाद पीछेसे इरियावही करनेका कहा है, सो इसमें गुरुगम्यताका अतीव गंभीरार्थवाला कुछभी रहस्य होना चाहिये, नहीं तो सर्व शास्त्रोंमें महान् शासन प्रभावक श्री हरिभद्रसूरिजी, नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिजी, कलिकाल सर्वज्ञविरुदधारक हेमचंद्राचार्यजीआदिगीतार्थमहाराज प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही कभी नहीं लिखते. इसलिये इनमहाराजोंके गंभीरआशयको समझेबिना इनसे विरुद्ध प्ररूपणा करना बडी भूलहै.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२७– कितनेकलोग अपना असत्य आग्रह छोडसकतेनहीं, व सत्य बात ग्रहणभी कर सकते नहीं, इसलिये भोले जीवोंको अपने पक्षमें लानेके लिये जान बुझकर कुतर्क करते हैं, कि, श्रीआवश्यक सूत्रकी चूर्णि–बृहद्वृत्ति– लघुवृत्ति-पंचाशकचूर्णि-वृत्ति-श्राद्धदिनकृत्यसूत्रवृत्ति-श्रावकधर्म प्रकरणवृत्ति–नवपद प्रकरणवृत्ति–योगशास्त्र वृत्ति वगैरह शास्त्रोंमें सामायिकमें पहिले करेमिभंतेका उच्चारण करके पीछेसे इरियावही करनेका कहाहै, सो वह शास्त्र पाठ स्वाध्याय संबंधीहैं ? या चैत्यवंदन–गुरुवंदन संबंधीहैं ? या आलोयणा संबंधी हैं? अथवा सामायिक संबंधीहैं? इसकी हमको अच्छी तरहसे मालूम नहीं पडती, उससे वह शास्त्र पाठ सामायिक संबंधीहैं, ऐसा निश्चयनहींहोसकता.इसलिये उनशास्त्रपाठोंके अनुसार सामायिकमें पहिले करेमिभंते पीछे इरियावही कैसे किया जावे ? ऐसी२ कुतर्क करतेहैं, सो सर्वथा झूठीहीहैं, क्योंकि ऊपरके सर्व शास्त्रपाठोंमें श्रावकके १२ व्रतोंमें ९में सामायिकव्रतसंबंधी सामायिक करनेके लियेही सामायिककी विधिसंबंधी खुलासापूर्वक प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनेका लिखाहै, उसके विषयमें सत्य ग्रहण करनेवाले आत्मार्थी भव्यजीवोंको निस्संदेह होनेकेलिये थोडेसे शास्त्रोंके पाठभी यहां पर बतलाते हैं.

२८— श्री यशोदेव सूरिजी महाराज कृत श्री पंचाशक सूत्रकी चूर्णिका पाठ देखो—

" तिविहेण साहुणो णमिऊण सामाइयं करेइ ' करेमिभंते ! सामाइअं ' एवमाइ उच्चरिऊण, तउ पच्छा इरियावहीयाए पडिक्कमइ, आलोएत्ता, वंदित्ता आयरियादि, जहा– रायणिए, पुणरवि गुरुं वंदित्ता, पडिलेहित्ता णिविट्ठो पुच्छति पढति वा " इत्यादि.

२९– श्रीचंद्रगच्छीय श्रीविजयसिंहाचार्यजी कृत श्रावकप्रतिक्रमण [वंदित्तासूत्र] की चूर्णिका पाठ भी देखो –

" वंदिऊण थोभ वंदणेण गुरुं संदिसाविऊण सामाइय दंडकमणु कड्ढिय, जहा– ' करेमिभंते ! सामाइयं, जाव-अप्पाणं वोसिरामि ' तओ इरिअं पडिक्कमिय आगमणं आलोएइ, पच्छा, जहा-जेट्ठं साहुणो वंदिऊण, पढइ सुणइ वा " इत्यादि.

३०– श्रीलक्ष्मीतिलकसूरिजीकृत श्रावकधर्मप्रकरणवृत्तिका पाठ यहांपर दिखलाताहूं यथा– "अत्र क्रियमाणं श्राद्धानां सामायिकं निर्व्यूहं निर्वहति तस्स्थानमुपदिशति—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चैत्यालये स्वनिशांते, साधूनामंतिकेऽपि वा ॥
कार्यं पौषधशालायां, श्राद्धैस्तद्विधिना सदा ॥ १ ॥

व्याख्या- चैत्यालये विधिचैत्ये, स्वनिशांते स्वगृहेऽपि विजन. स्थान इत्यर्थः। साधुसमीपे, पौषो ज्ञानादीनां धीयतेऽनेनेति पौषधं पर्वानुष्ठानं उपलक्षणात् सर्वधर्माऽनुष्ठानार्थं शालागृहं पौषधशाला, तत्र वा तत् सामायिकं कार्यं श्राद्धैः सदा नोभयसंध्यमेवेत्यर्थः। कथंतद्विधिना इत्याह-खमासमणं दाउं इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामाइयमुहपत्ति पडिलेहेमि त्ति भणिय, बीय खमासमण पुव्वं मुहपत्ति पडिलेहिय, पुणरवि पढम खमासमणेण सामाइयं संदिसाविय, बीय खमासमणपुव्वं सामाइयं ठामि त्ति वुत्तं, खमासमणदाणपुव्वं अद्धावणय गत्तो पंचमंगलं कड्ढित्ता 'करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि' त्ति सामाइय सुत्तं भणति, तओ पच्छा इरियंपडिक्कमति, इत्यादिपूर्वसूरिनिर्दिष्टविधानेन। अत्र च ईर्यां प्रतिक्रम्यैव सामायिकोच्चारण यत्केचिदाचक्षते तत्सिद्धांतादनुत्तीर्णम्, यत उक्तमावश्यक चूर्णि-बृहद्वृत्त्यादौ- यथा " करेमिभंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव साहू पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणमिति, काउण पच्छा इरिअं पडिक्कमइ त्ति " इत्यादि

३१-श्रीपार्श्वनाथस्वामीके संतानीय परंपरामें श्रीउपकेशगच्छीय श्रीदेवगुप्तसूरिजी महाराजने श्री नवपदप्रकरणवृत्तिमेंभी प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही सामायिक संबंधी कहा है, सो पाठभी यहां पर बतलाते हैं, यथा :--

" आवश्यक चूर्ण्याद्युक्त समाचारी त्वियं-सामायिकं श्रावकेण कथं कार्यं ? तत्रोच्यते- श्रावको द्विविधोऽनृद्धिप्राप्तः ऋद्धिप्राप्तश्च, तत्राद्यश्चैत्यगृहे, साधुसमीपे, पौषधशालायां, स्वगृहे वा. यत्र वा विश्राम्यति तिष्ठति च निर्व्यापारस्तत्र करोति, चतुर्षु स्थानेषु नियमेन करोति, चैत्यगृहे, साधुमूले पौषधशालायां स्वगृहे वा अवश्यं कुर्वाण इति. एतेषु च यदि चैत्यगृहे साधुमूले वा करोति, तत्र यदि केनाऽपि सह विवादो नास्ति, यदि भयं कुतोऽपि न विद्यते, यस्य कस्यापि किंचिद् न धारयति, मा तत्कृताकर्षापकर्षौ भूतां, यदि वाऽधम वर्ण्यमवर्ण्यमवलोक्य न गृह्णीयात्, मा भंक्षीत् इति बुद्ध्या यदि वा गच्छन् न किमपि व्यापारं व्यापारयेत् तदा गृहे एव सामायिकं गृही-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्वा चैत्यगृहं साधुमूलं वा यथा साधुः पंचसमितिसमितस्त्रिगुप्ति-गुप्तस्तथा याति, आगतश्च त्रिविधेन साधुन् नमस्कृत्य तत्साक्षिकं पुनः सामायिकं करोति " करेमिभंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि जाव साहू पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं " इत्यादि सूत्रमु-च्चार्य, ततः, ईर्यापथिकीं प्रतिक्राम्यति, आगमनं चालोचयति. ततः, आचार्यादीन् यथारत्नाधिकतयाभिवंद्य सर्वसाधून्, उपयुक्तोपविष्टः पठति, पुस्तक वाचनादि वा करोति । चैत्यगृहे तु यदि वा साधवो न संति, तदा ईर्यापथिकी प्रतिक्रमण पूर्वमागमनालोचनं च विधाय चैत्यवंदनां करोति,पठनादि विधत्ते,साधुसद्भावे तु पूर्व एष विधिः । एवं पौषधशालायामपि । केवलं यथा गृहे आवश्यकं कुर्वाणोगृह्णा ति—तथैव गमनविरहितं इत्यादि । तथा ऋद्धिप्राप्तस्तु चैत्यमूलं साधुमूलं वा महर्द्ध्यैव एति, येन लोकस्य आस्था जायते चैत्यानि साधवश्च सत्पुरुषपरिग्रहेण विशेष पूज्यानि भवंति. पूजित पूजक त्वात् लोकस्य । अतस्तेन गृह एव सामायिकमादाय नागतव्यमधि-करण भयेन हस्त्यश्वाद्यनानयनप्रसंगात्,आगतश्च चैत्यालये विधिना प्रविश्य चैत्यानि च द्रव्य-भावस्तवेनाभिष्टुत्य, यथासंभवं साधुस-मीपे मुखपोतिका प्रत्युपेक्षणपूर्व "करेमिभंते ! सामाइयं सावज्जं जो-गं पच्चक्खामि जाव साहू पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वा-याए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि " त्ति उच्चार्य ईर्यापथिक्यादि प्रति क्राम्य यथा रत्नाधिकतया सर्वसाधूंश्चाभिवंद्य प्रश्नादि करोति, सा-मायिकं च कुर्वाण एष मुकुटमुपनयति कुंडलयुंगलनाम मुद्रे च पु-ष्प-तांबूल-प्रावरणादिव्युत्सृजति। किंच यदि एष श्रावक एव तदाऽ-स्यागमनवेलायां न कश्चिदुत्तिष्ठति, अथ यथा भद्रकस्तदाऽस्यापि सन्मानो दर्शितो भवति,इति बुद्ध्या आचार्याणां पूर्वरचितमासनंभ्रि-यते अस्य च, आचार्यास्तु उत्थायैवतस्ततश्चंक्रमणं कुर्वाणा आसते तावद् यावदेष आयाति, ततः सममेवोपविशंति । अन्यथा उत्था-नानुत्थानदोषाविभाव्याः, एतच्च प्रासंगिकमुक्तम् । प्रकृतं तु सामा-यिकस्थेन विकथादि न कार्य,स्वाध्यायादिपरेण आसितव्यं" इत्यादि.

३२–श्रीतपगच्छनायक श्रीदेवेंद्रसूरिजी महाराज कृत श्राद्धदिन-कृत्यसूत्रकी वृत्तिका पाठभी देखोः–

"तओ वियाल वेलाए,अत्थमिए दिवायरे।पुव्वुत्तेण विहाणेण,पुणो वंदे जिणोत्तमे ॥२८॥ तओ पोसहसालं तु,गंतुण तु पमज्जए। ठाविता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तत्थसूरिं, तओ सामाइयं करे ॥२९॥ काऊणय सामाइयं, इरियंपडि-क्कमियं,गमणमालोए। वंदित्तु सूरिमाइ, संज्झायावस्सयं कुणइ ॥३०॥

व्याख्या— सांप्रतमष्टदशं सत्कार द्वारमाह- ततो वैकालिका-नंतरं, विकालवेलायां अंतर्मुहूर्त्तरूपायां, तामेवव्यनक्ति अस्तमितेदि-वाकरे अर्द्धबिंबादर्शाक् इत्यर्थः। पूर्वोक्तेन विधानेन पूजाकृत्वेतिशेषः। पुनर्वंदते जिनोत्तमान् प्रसिद्ध चैत्यवंदन विधिना ॥ २८ ॥ अथैकोन विंशति वंदनकोपलक्षितमावश्यक द्वारमाह—ततस्तृतीय पूजा नंत-रं श्रावकः पौषधशालांगत्वा यतनया प्रमार्ष्टि, ततो नमस्कार पूर्वकं व्यवहित तुशब्दस्यैवकारार्थ त्वात् स्थापयित्वैव तत्र सूरिं स्थापना-चार्यं, ततो विधिना सामायिकं करोति ॥ २९ ॥ अथ तत्र साधवोऽ-पिसंति श्रावकेण गृहे सामायिकं कृतं, ततोऽसौसाधुसमीपे गत्वा-किं करोति इत्याह-- साधुसाक्षिकं पुनः सामायिकं कृत्वा ईर्याप्रतिक्र-म्यागमनमालोचयेत् तत आचार्यादीन् वंदित्वा स्वाध्यायं काले चा-वश्यकं करोति ॥ ३० ॥ इत्यादि ”

३२-अब देखिये-ऊपरके सर्वमान्य प्राचीन शास्त्रपाठोंमें-श्रावकको सामायिक कैसे करना चाहिये ? इस सवालके जवाबमें सर्व शास्त्र कार महाराजोंने इस प्रकार खुलासा पूर्वक लिखा है.

१-सामायिक करनेवाले राजादि धनवान् व व्यवहारिक धन रहित ऐसे दो प्रकारके श्रावक बतलाये.

२- धन रहित श्रावकको भगवान्के मंदिरमें १, उपद्रवरहित एकांत जगहमें अपने घरमें २, साधु महाराजके पासमें ३, वा पौषध शालामें ४, ऐसे ४ स्थान सामायिक करनेके लिये बतलाये.

३ - जब श्रावकको संसारिक कार्योंसे निवृत्ति होवे [फुरसत मिले] तब हरेक समय सामायिक करनेका बतलाया.

४-धर्म कार्योंमें अनेक तरहके विघ्न आतेहैं, और उपयोगी वि-वेकवाले श्रावकको धर्मकार्योंके बिना समय मात्रभी खाली व्यर्थ ग-मानायोग्यनहींहै,इसलिये संसारिक कार्योंसे फुरसद मिलतेही रस्ते चलनेमें यदि किसीके साथ लेने देने वगैरहसे कोईतरहका भयनहीं होवे तो अपनेघरमें सामायिकलेकर पीछे गुरुपासजानेकाबतलाया.

५-जैसे उपवासादिकके पच्चक्खाण अपनेघरमें करलिये हों तो भी गुरुमहाराजकेपास जाकर फिर गुरुसाक्षिसे उपवासादि पच्च-क्खाण करनेमेंआतेहैं. तैसेही- श्रावकको अपने घरमें सामायिक ले-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कर सावद्य योगका त्याग करके साधुकी तरह पंचसमिति और तीन गुप्तिसहितउपयोगसे गुरुमहाराजपास आकर फिर सामायिकका उच्चारणकरके पीछे इरियावहीपूर्वक स्वाध्यायादि करनेकाबतलाया.

६-शामको छ आवश्यकरूप प्रतिक्रमणकरनेकेलिये पहिले मंदिरमें देवदर्शन,पूजा आरति वगैरहकरके पीछे उपाश्रय या पौषधशालामें आकर गुरुके अभावमें भूमिका प्रमार्जनपूर्वक सामायिककरनेके लिये नवकार गुणकर स्थापनाचार्यकी स्थापनकरनेका बतलाया.

७- सामायिक करनेके लिये खमासमण पूर्वक गुरुसे आदेश लेकर सामायिकलेनेसंबंधी मुहपत्तिका पडिलेहणकरनेका बतलाया.

८- मुहपत्तिका पडिलेहणकरके प्रथम खमासमण पूर्वक सामायिक संदिसाहणेका, तथा फिर दूसरा खमासमण पूर्वक सामायिक ठाणेका आदेश लेनेका बतलाया.

९- विनय सहित मस्तक नमाकर नवकारपूर्वक ' करेमिभंते! सामाइयं ' इत्यादि सामायिकका पाठ उच्चारण करनेका बतलाया.

१०- करेमिभंतेका पाठ उच्चारण कियेबाद पीछेसे इरियावही करनेकाबतलाया सो 'इरियावही' कहनेसे इरियावही,तस्स उत्तरी, अन्नत्थ उससिए णं, कहकरके ४ नवकार या १ लोगस्सका काउसग्ग करनेका और ऊपर संपूर्ण लोगस्स कहनेका समझलेना चाहिये.

११- जैसे पौषधवाला देवदर्शनादिक कार्योंसे गमनकरके आया होवे वो इरियावही पूर्वक आगमनकी आलोचना करे, अर्थात्– इरियासमिति इत्यादि अष्टप्रवचनमाताके विराधनाकी आलोचनाकरके मिच्छामि दुक्कडं देताहै, तैसेही–यदि श्रावक अपने घरसे सामायिक लेकर इरियासमिति आदि पांच समिति और तीन गुप्ति सहित उपयोगसे गुरुपास आया होवे तो फिर गुरु साक्षिसे 'करेमि भंते!' इत्यादि सामायिक लेकर पीछे इरियावहीपूर्वक इरियासमिति इत्यादि आगमनकी आलोचना करनेका बतलाया.

१२-सामायिक लेकर पीछे इरियावही करके आगमनकी आलोचना करे, बाद यथा योग्य आचार्यादिक वडीलोंको अनुक्रमसे सर्व साधुओंको वंदना करनेका बतलाया.

१३ — 'पूर्वसूरिनिर्दिष्टविधानेन ' तथा ' पडिलेहित्ता ' अर्थात्-जगह आसनादिकका प्रमार्जन पडिलेहण पूर्वक बैठने स्वाध्यायादि करनेका आदेश लेकर अपना धर्मकार्य करनेका बतलाया.

१४- सामायिक लिये बाद गुरुके साथ धर्म वार्ता करें या कोई

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शंका होंवे तो गुरुसे पूछे या पुस्तकादि वांचे, अथवा दूसरा कोई पुस्तकादि वांचता होंवे तो उपयोगयुक्त सुनता रहे.

१५- अपने घरसे सामायिक लेकर भगवान्‌के मंदिरमें आया होंवे,वहां पासमें साधु न होंवे तो भी भगवान्‌के समक्ष फिरसे सामायिक लेकर इरियावही पूर्वक आगमनकी आलोचना करके पीछे चैत्यवंदन, शास्त्रपाठ पढना गुणनादि धर्म कार्य करनेका बतलाया.

१६ — उपाश्रयमें गुरु महाराज होंवे,तो उपर मुजब सामायिक करनेकी विधि बतलायी है, ऐसेही पौषधशालामेंभी सामायिक करनेकी विधि समझ लेना चाहिये.

१७— उपाश्रयमें गुरु महाराज न होंवे, या समयके अभावसे कारणवश गुरु पास जाकर सामायिक करनेका अवसर न होंवे और केवल अपने घरमेंही छ आवश्यकरूप प्रतिक्रमण करनेकेलिये सामायिक ग्रहण करें,तो भी ऊपर मुजब खमासमणपूर्वक सामायिक मुहपत्तिके पडिलेहणका,सामायिक संदिसाहणेका व ठाणेका आदेश लेकर नवकारपूर्वक करेमिभंतेका उच्चारणकरके पीछेसे इरियावही पूर्वक अपना धर्मकार्य करें,मगर वहांसे गुरु पास जाने वगैरह कार्योंसे गमनागमन नहीं होनेसे आगमनकी आलोचना न करें. परंतु शेष बाकीकी उपर मुजब सर्व विधि करनेका बतलाया.

१८- यहांपर कोई पहिले इरियावही करके पीछे करेमिभंतेका उच्चारण करनेका कहतेहैं,वोलोग शास्त्रोंके भावार्थको नहींजाननेवालेहैं,क्योंकि आवश्यकचूर्णि-बृहद्वृत्ति वगैरह प्राचीनशास्त्रोंमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही साफ खुलासा पूर्वक कहा है ।

१९- कभी गुरुके अभावमें अपनेघरमें या पौषधशालामें सामायिक करें,तब वहां “जाव नियम पज्जुवा सामि” ऐसा पाठ उच्चारणकरें और उपाश्रयमें गुरु समक्ष सामायिक करें, तब वहां “जाव-साहू पज्जुवा सामि ” ऐसा पाठ उच्चारण करें और इरियावही पूर्वक अपने धर्मकार्योंमें समय व्यतीत करनेका बतलाया.

२०-राजा-महाराजादि महर्द्धिक होंवे,उन्होंको शहरकेरस्तोंमें नंगे पैर पैदल चलना योग्य न होनेसे वो अपने घरसे सामायिक लेकर गुरु पास उपाश्रयमें नहीं जावें, किंतु-हाथी, अश्व, पदातिक आदिक राज्यऋद्धिकी शोभा युक्त भेरी भंभादि वाजिंत्र सहित बडे आडंबरसे सामायिक करनेकेलिये गुरुपास आवें, उससे शासनकी प्रभाव-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ना होंवे, तथा भगवान् उपर और गुरुमहाराज उपर लोगोंकी श्रद्धा बढे, बहुत जीवोंको धर्म प्राप्तिका महान् लाभ होंवे, इसलिये घरसे सामायिक लेकर नंगे पैरसे पैदल इरियासमितियुक्त आनेके बदले बडे आडंबरसे गुरुपास आकर पीछे सामायिक करें.

२१ — राज्यऋद्धिकी सोभा युक्त गुरुपास आकर जो नजदीक भगवान्का मंदिर होंवे तो पहिले वहां मंदिरमें जाकर विधिसहित उपयोग युक्त भावसे- केशर चंदनादिसे पहिले द्रव्य पूजा करें बाद पीछे चैत्यवंदन स्तवनादिसे भाव पूजा करें उसके बादमें गुरु पास आकर "यथासंभवं साधु समीपे मुखपोतिका प्रत्युपेक्षणपूर्वं" अर्थात्- खमासमणपूर्वक मुहपत्तिकापडिलेहणकरके सामायिक संदिसाहणे वगैरहके आदेश लेकर ऊपर मुजब विधिसे पहिले करेमिभंतेका उच्चारणकरके पीछे इरियावही पूर्वक स्वाध्यायादि करें.

२२- राजादिक सामायिक करें तब तक राज्यचिन्ह मुकुटादिकको अलग रखखें, त्याग करें.

२३-इसप्रकार सामायिक करनेवाले वहां विकथादि कर्मबंधन केहेतुभूत कोईभी कार्य न करें, किंतु स्वाध्याय ध्यानादि कर्मोंकीनिर्जराके हेतुभूत धर्मकार्य करनेमें अपना समय व्यतीत करें, इत्यादि,

२४- अब देखिये-ऊपर मुजब सर्वमान्य प्राचीन शास्त्रपाठोंपर विवेक बुद्धिसे तत्त्व दृष्टिपूर्वक बिचार किया जावे तो सामायिक करनेके लिये प्रत्येकवार खमासमण सहित 'सामाइय मुहपत्ति पडिलेहेमि' 'सामाइयंसंदिसावेमि' 'सामाइयंठावेमि' इत्यादि वाक्योंसे सामायिक करनेका आदेश लेकर नवकारपूर्वक विनयसहित 'करेमिभंते! सामाइयं' इत्यादि संपूर्ण सामायिकका पाठ उच्चारण कियेबाद पीछेसे इरियावही करनेका सुस्पष्टतासे साफ खुलासा पूर्वक सब शास्त्रकार सर्व गच्छोंके पूर्वाचार्योंने लिखा है, सो अल्प बुद्धिवालाभी ऊपरके शास्त्र पाठोंपरसे सामायिकका अधिकारको अच्छी तरहसे समझ सकताहै. जिसपरभी ऊपरकी तमाम सर्व बातोंको छोडकर "ऊपरके शास्त्रपाठ आलोयणा संबंधी हैं, या स्वाध्याय संबंधी हैं, वा वंदनासंबंधी हैं, अथवा सामायिक संबंधी हैं. इसकी हमको अच्छी तरहसे मालूम नहीं पडती, इसलिये ऊपरके शास्त्र प्रमाणोंसे सामायिकमें प्रथम करेमि भंते और पीछे इरियावही कैसे किया जावे?" ऐसी २ कुतर्क जान बुझकरके या उपरके शास्त्रपाठोंको वांचे, विचारे, समझे बिनाही परंपराकी अज्ञानतासे करते हैं, सो तो श्री-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ज्ञानीजीमहाराज जाने. मगर ऐसी २ कुतर्क करके जिनाज्ञानुसार प्रत्यक्ष अनेक शास्त्र प्रमाण मुजब सत्य बात परसे भोले जीवोंकी श्रद्धा उडादेते हैं, और जिनाज्ञाविरुद्ध कोईभी शास्त्रप्रमाण बिनाही अपने झूठे हठवादके आग्रहकी बातको स्थापन करनेकेलिये शास्त्रों-के सत्य२ पाठोंपरभी झूठी२ शंका लाकर उत्सूत्र प्ररूपणासे उन्मार्ग-को पुष्ट करते हैं, सो यह काम संसार बढानेवाला अनर्थ भूत होनेसे आत्मार्थी भवभिरुयोंको तो करना योग्यनहींहै. इसविषयको विशेष तत्त्वज्ञ पाठक गण स्वयं विचार लेवेंगे.

३५–कितनेक कहतेहैं,-'सामायिकमें प्रथम करेमिभंते और पीछे इ-रियावही करनेसंबंधी आवश्यक सूत्रकी चूर्णि–बृहद्वृत्ति वगैरह शा-स्त्रपाठोंमें सामायिकमुहपत्ति पडिलेहणके, सामायिक संदिसाहणके, सामायिक ठाणेके आदेशलेनेवगैरह सबपूरी विधिनहींहै,ऐसा कहने-वालेभी प्रत्यक्षही मिथ्या भाषण करके जिनाज्ञाका उत्थापन करतेहैं, क्योंकि देखो-श्रावकधर्म प्रकरणवृत्ति तथा वंदित्तासूत्रकी चूर्णि व-गैरह शास्त्रपाठोंमें सामायिक मुहपत्ति पडिलेहणके,सामायिक संदि-साहणके, सामायिकठाणवगैरहके आदेशलेकर नवकारपूर्वक विनय-सहित 'करेमि भंते' इत्यादि पाठ उच्चारण करके पीछेसे इरियावही किये बाद स्वाध्यायादि करनेका संक्षेपमेंभी साफ बतलायाहै, उसके भावार्थमें गुरुगम्यतासे सामायिकमें सब पूरीविधि समझना चाहिये.

३६–आवश्यक निर्युक्ति, उत्तराध्ययनादि शास्त्रोंमें सामान्यतासे संक्षेपमें प्रतिक्रमणकी विधि बतलायाहै,परंतु उसका विस्तारपूर्वक विशेष अधिकार भावपरंपरानुसार पूर्वाचार्योंके सामाचारियोंके ग्रं-थोंसे जाननेमें आताहै, और उसी मुजबही अभी प्रतिक्रमणकी सर्व-क्रियायें करनेमें आतीहैं.मगर कोई अज्ञानी आवश्यकनिर्युक्ति-उत्तरा-ध्ययनादिशास्त्रोंकी प्रतिक्रमण विधिको अधूरी कहकर निषेधकरें औ-र उसकेविरुद्ध ढूंढियोंकी तरह अपनी मतिकल्पना मुजब प्रतिक्रमण की विधिको स्थापन करें, तो आवश्यकादि आगमार्थरूप पंचांगीके उत्थापनसे उत्सूत्रप्ररूपणारूप मिथ्यात्वके दोषके भागी होनापडता-है, तैसेही- आवश्यक चूर्णि, बृहद्वृत्ति वगैरह ऊपरमुजब शास्त्रपा-ठोंमें सामायिक संबंधीभी सूचनारूप संक्षेपमें सामान्यतासे शास्त्रका-र महाराजोंने सामायिककी विधि लिखीहै. उसका विस्तारसे विशे-ष अधिकार भावपरंपरानुसार पूर्वाचार्योंके सामाचारियोंके ग्रंथों-से जानना चाहिये और उसी मुजबही आत्मार्थी भव्य जीवोंको सा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मायिककी सबपूरी विधि करलेनाचाहिये. जिसकेबदले उसको अधूरी विधि कहकर निषेध करने वालोंको व उसके सर्वथा विरुद्ध अपनी कल्पनामुजब करवाने वालोंको श्रीआवश्यकसूत्रादि आगमार्थरूप पंचांगीके उत्थापनसे उत्सूत्रप्ररूपणारूप दोषके भागी होनापडता है, इसलिये आत्मार्थी भवभिरुयोंको ऐसा करना योग्य नहीं है।

३७- औरभी देखिये जैसे-जिनमंदिरमें विधियुक्त 'द्रव्य भाव पूजा कर निजघर गया' ऐसा किसी शास्त्रमें संक्षेपमें सूचनारूप अधिकार आया होवे, उसका विशेष भावार्थ तत्त्वदृष्टिसे समझे विनाही उसमें स्नान करने, पवित्र वस्त्र पहिरने, मुख कोश बांधने, केशर चंदनादि सामग्री लेने वगैरहके अक्षर न देखकर उसको जिनपूजाकी अधूरी विधि कहकर सर्वथा जिनपूजाका निषेध करने वालोंको अज्ञानी समझनेमें आतेहैं, क्योंकि उपयोगयुक्त भावसे हमेश जिनपूजा करने वाले तो जिनपूजाकी सब पूरी विधिको अच्छी तरहसे जाननेवाले होते हैं, उन्होंके लिये विशेष लिखनेकी कोई जरूरत नहीं है, किंतु 'द्रव्य भाव पूजा' कहनेसे उपयोग युक्त स्नान करने, पवित्र वस्त्र धारन करने, मुखकोश बांधने, जिन मंदिरमें प्रवेश करने, निसीही कहने, मंदिरकी सार संभाल लेने, ३ प्रदिक्षणा देने, केशर-चंदन-धूप-दीप-अक्षतादि सामग्री लेने, और चैत्यवंदन-शक्रस्तव-जिनगुण स्तुति आदिसे दश त्रिकसहित उपयोगसे पूजा करने वगैरहकी सब बातें तो अपने आपही समझलेतेहैं.इसलिये 'द्रव्य भाव पूजा' कहनेसे संक्षेपमें जिनपूजाकी सब पूरी विधि समझनी चाहिये, तैसेही-सामायिककी विधिको जानने वाले उपयोग युक्त हमेश सामायिक करनेवालोंके लिये तो- 'अपने घरसे सामायिकलेकर साधुकीतरह इरिया समिति पूर्वक उपयोगसे गुरुपास आवे' इस वाक्यसे, तथा 'गुरुको वंदनाकरके फिर सामायिकका उच्चारण करे बाद इरियावहीपूर्वक पढे सुने वा पूछे' इस वाक्यसे सामायिक करनेके लिये पवित्रवस्त्र धारणकरनेका तथा मुहपत्ति आदि सामग्री लेनेका और खमासमणपूर्वक सामायिक संबंधी मुहपत्ति पडिलेहणादिकके आदेशलेने वगैरहसे सामायिककी सब विधिपूरी समझ लेना चाहिये, जानकारोंकेलिये उसजगह इससे विशेष लिखें तो पुनरुक्ति दोष आवे, पिष्टपेषण जैसे होवे, उससे वहां 'जागृतको जगाने' की तरह विशेष लिखनेकी कोई जरूरत नहीं हैं, इसलिये गुरुगम्यतासे तत्त्वदृष्टिपूर्वक विवेकबुद्धिसे शास्त्रकार महाराजोंके गंभीर आशयको स-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मझे बिना अधूरी विधिके नामसे सामायिकमें प्रथम करेमिभंते और पीछे इरियावही करनेकी सत्यबातको सर्वथा उडादेना सो उत्सूत्रप्ररूपणारूप होनेसे आत्मार्थियोंको योग्य नहीं है.

३८-देखो विवेकबुद्धिसे खूब विचारकरो- श्रीजिनदासगणिमहत्तराचार्यजी पूर्वधर,श्रीहरिभद्रसूरिजी,अभयदेवसूरिजी,देवगुप्तसूरिजी,हेमचंद्राचार्यजी,देवेंद्रसूरिजी,आदिगीतार्थ शासन प्रभावक महाराजोंको तो सामायिकमें प्रथमकरेमिभंते पीछे इरियावहीकी बात तत्त्वज्ञानसे जिनाज्ञानुसार सत्यमालूमपडी, इसलिये अपने२ बनाये ग्रंथोंमें निसंदेहपूर्वक लिखगये तथा आत्मार्थी भव्यजीवभी शंकारहित सत्य बात समझकर उस मुजब सामायिककी सब विधिभी करतेथे और अभी करतेभी हैं। जिसपरभी कितनेक लोग अपने तपगच्छ नायक श्री देवेंद्रसूरिजी महाराज वगैरह पूर्वाचार्योंकेभी विरुद्ध होकर इस बातमें सर्वथा विपरीत रीतिसे प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते स्थापन करके जिनाज्ञाके आराधक बनना चाहतेहैं और प्रथम करेमिभंते पीछेइरियावहीको शास्त्रविरुद्ध ठहराकरनिषेधकरतेहैं.अब विचारकरना चाहिये, कि- प्रथमकरेमिभंते पीछेइरियावही स्थापनकरनेवाले जिनाज्ञाके आराधक ठहरतेहैं, या प्रथम इरियावही पीछे करेमि भंते स्थापन करनेवाले जिनाज्ञाके आराधक ठहरतेहैं, यदि-प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनेवाले जिनाज्ञाके आराधक बनेंगे, तो प्रथम करेमि भंते पीछे इरियावही स्थापन करने वाले प्राचीन सर्व पूर्वाचार्य जिनाज्ञाविरुद्ध मिथ्यात्वकी खोटी प्ररूपणा करनेवाले ठहरेंगे. और यदि प्राचीन सर्व पूर्वाचार्य प्रथम करेमि भंते पीछे इरियावही स्थापन करनेवाले जिनाज्ञाके आराधक सत्यप्ररूपणा करने वाले मानोंगे, तो, उन सर्व पूर्वाचार्योंके विरुद्ध होकर प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापनकरनेवाले जिनाज्ञा विरुद्ध मिथ्यात्वकी खोटी प्ररूपणा करनेवाले ठहर जावेंगे. तथा इस बातमें पाठांतरभी न होनेसे पूर्वापर विरोधी दोनों बातेंभी कभी सत्य ठहर सकतीनहीं. और प्राचीन सर्व गीतार्थ पूर्वाचार्योंकोभी खोटी प्ररूपणा करनेवालेभी कभी ठहरासकतेनहीं. मगर उन्हीं गीतार्थ महाराजोंके विरुद्ध आग्रह करनेवालेही खोटी प्ररूपणा करनेवाले ठहरतेहैं, इसलिये सर्व गीतार्थ पूर्वाचार्योंको जिनाज्ञाके आराधक सत्य प्ररूपणा करनेवाले समझ करके उन सर्व महाराजोंकी आज्ञा मुजब सामायिकमें प्रथम करेमि भंते पीछे इरीयावही मान्य करना और इनके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विरुद्ध प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंतेकी शास्त्र विरुद्ध और पूर्वाचार्योंकी आज्ञाबाहिर कल्पितबातकोछोडदेना यही जिनाज्ञाके आराधकभवभिरु निकटभव्य आत्मार्थियोंकोउचितहै. ज्यादे क्या लिखें.

३९- कितनेकलोग शंका करतेहैं, कि-पौषध, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, ध्यानादि कार्योंमें पहिले इरियावही करनेका कहा है, और सामायिकमें प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये बाद पीछेसे इरियावही करनेका कहा है, उसका क्या कारण होना चाहिये? इसका समाधान यह है कि-पौषध-प्रतिक्रमणादिक कार्य तो आत्माको निर्मलकरनेके हेतुभूत क्रियारूपहैं सो मनकी स्थिरतासे होसकते हैं, इसलिये मनकी स्थिरता करनेकेलिये गमनागमनकी आलोचनारूप इरियावहीकरके पीछे इनकार्योंमें प्रवृत्ति करें तो शांततापूर्वक उपयोग शुद्धरहताहै, इसलिये इनकार्योंमें पहिले इरियावही करनेका कहा है. मगर सामायिकको तो श्रीभगवती-आवश्यकादि आगमोंमें "आया खलु सामाइअं" इत्यादि पाठोंसे सामायिकको खास आत्मा कहाहै, इसलिये आत्माकीस्थापनाकरनेकेलिये और आत्माके साथ कर्मबंधनकेहेतुरूप आतेहुए आश्रवको रोकनेकेलिये प्रथम करेमिभंतेका पच्चक्खाण करनेका कहा है. पहिले आत्माकी स्थापनारूप और आश्रवनिरोधरूप सामायिकका उच्चारण होगया, तो, उसके बादमें पीछे आत्माको निर्मल करनेके लिये स्वाध्याय ध्यानादि कार्य करनेके लिये इरियावही करनेकीआवश्यकताहुई. इसलिये पीछेसे इरियावहीपूर्वक स्वाध्याय, ध्यानादिधर्मकार्यकरनेचाहिये, और आत्माकी स्थापनारूप व आश्रव निरोधरूप जबतक सामायिकके पच्चक्खाण न होंगे, तब तक एकवार तो क्या मगर हजारवार इरियावही करतेही रहेंगे तो भी आश्रवनिरोध बिना निजआत्मगुणकी प्राप्ति कभी नहीं होसकेगी, इसलिये सर्वशास्त्रोंकी आज्ञामुजब पहिले आत्माकी स्थापनारूप सामायिकके पच्चक्खाण करके पीछेसे आत्माकी शुद्धिके लिये इरियावही पूर्वक स्वाध्यायादि धर्मकार्य करने चाहिये. इस प्रकार सामायिकमें प्रथम करेमिभंते कहने संबंधी शास्त्रकारोंके गंभीर आशयको समझे बिना पौषधादि कार्योंकी तरह सामायिकमेंभी प्रथम करेमिभंते का उच्चारण किये पहिलेसेही इरियावही स्थापन करनेका आग्रह करना आत्मार्थियोंको योग्य नहीं है।

४०- कितनेकमहाशय कहतेहैं, कि-श्रीनवकारमंत्रके पीछे इरिया-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वहीके उपधानकहेहैं,मगर इरियावहीके पहिले करेमिभंतेकेउपधान नहींकहेहैं,इसलिये सामायिकमेंभी पहिले इरियावही करना योग्यहै। ऐसा कहनेवालोंको सामायिकके स्वरूप संबंधी शास्त्रकारमहाराजों के अभिप्रायको समझमें नहीं आया मालूम होताहै। क्योंकि देखिये-शास्त्रोंमें सामायिकको आत्मा कहा है, और इरियावही वगैरह क्रियारूपसूत्र कहेहैं,और आत्माके उपधान तो कभी होसकतेनहीं, किंतु आत्माकीशुद्धिरूप क्रियाके उपधान होसकतेहैं. आत्मा तो स्वयं उपधान करनेवालाहै, और उपधान क्रियारूपहैं, सामायिकरूप आत्माके उपधान तो इरियावहीके पहिले या पीछेभी किसी शास्त्रमें नहींकहेहैं, इसलिये आत्माके निजगुणरूप सामायिक संबंधी और इरियावही वगैरह आत्माकी शुद्धिरूप क्रियासंबंधी शास्त्रकार महाराजोंके भावार्थकोसमझेबिनाही पहिले इरियावहीके उपधानकरनेका पाठ देखकर सामायिकमेंभी पहिलेइरियावही स्थापनकरतेहैं, उन्होंकी अज्ञानताहै.

४१– कितनेकआग्रहीलोग नवांगीवृत्तिकार श्रीअभयदेवसूरिजी के नामसे अथवा उन्होंके शिष्य श्रीपरमानंदसूरिजीके नामसे सामायिकमें पहिलेइरियावही पीछेकरेमिभंते कहनेसंबंधी श्रीअभयदेवसूरिजीकृत 'सामाचारी' ग्रंथका पाठ भोलेजीवोंको बतलातेहैं, सोभी प्रत्यक्ष मिथ्याहै,क्योंकि-देखो श्रीनवांगीवृत्तिकार महाराजने खास 'पंचाशक' सूत्रकीवृत्तिमें सामायिकमें प्रथम करेमिभंते और पीछे इरियावही खुलासापूर्वक लिखीहै, सर्व प्राचीन पूर्वाचार्यभी ऐसेही लिखे गयेहैं, यही बात जिनाज्ञानुसार है। इसलिये इन्हीं महाराजने खास 'सामाचारी' ग्रंथमेंभी प्रथम करेमिभंते और पीछे इरियावही लिखी थी, उसपाठको निकाल देना और प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते कहनेका पाठ अपनी मति कल्पना मुजब नवीन बनवाकर बडे प्रौढ प्रामाणिकपुरुषोंकेबनाये ग्रंथमें प्रक्षेपकरके भोलेजीवोंकोबतलाकर उन्मार्ग चलाना यह बडाभारीदोषहै, देखिये-कोईभीपूर्वाचार्यमहाराजने सामायिकमें प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते नहीं लिखी, किंतु प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही सर्व प्राचीन पूर्वाचार्योंने सर्वशास्त्रोंमें लिखीहै. तो फिर श्रीनवांगीवृत्तिकारक जैसे प्रौढ प्रामाणिक सर्व सम्मत यह महाराज सर्व पूर्वाचार्योंके विरुद्ध होकर प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते कैसे लिखेंगे, ऐसा कभी नहीं हो सकता.इसलिये इन महाराजके नामसे प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते करनेका ठहराने वाले प्रत्यक्ष मिथ्यावादी हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४२- औरभी देखो खूब विचारकरो- शास्त्रोंमें विसंवादी कथन करनेवालोंको मिथ्यात्वी कहेहैं, और जैनाचार्य तो अविसंवादीहोतेहैं. इसलिये श्रीनवांगीवृत्तिकारक यह महाराजभी विसंवादीनहींथे. किंतु अविसंवादीथे, इसलिये इन्हीं महाराजके बनाये वृत्ति-प्रकरणादि अनेक शास्त्रोंमेंसे एकही विषयमें पूर्वापर विरोधी विसंवादी वाक्य किसीभी ग्रंथमें किसी जगहभी देखनेमें नहीं आते, इसलिये इन महाराजकी बनाई सामाचारीमेंभी विसंवादी वाक्य नहींहैं, किंतु 'पंचाशकसूत्रवृत्तिके अनुसार प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेका पाठथा, उसको उडा करके इन महाराजके सत्य कथनके पूर्वापर विरोधी विसंवादीरूप प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंतेकहनेका पाठबनाकर भोलेजीवोंको बतलाकर खोटी प्ररूपणा करनेवालोंकी बडी भारीभूलहै. यह महाराज तो विसंवादी कथन करनेवाले कभी नहीं ठहरसकते,मगर ऐसे महापुरुषोंके नामसे झूठापाठ बनानेवालेही मिथ्यात्वीठहरतेहैं। अबपाठकगणसे मेराइतनाहीकहनाहै,कि-नवांगीवृत्तिकारकने या उन्होंकेशिष्योंने अथवा अन्यकिसीभी जिनाज्ञाकेआराधक पूर्वाचार्य महाराजने किसीभी ग्रंथमें सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते किसी जगहभी नहीं लिखी, व्यर्थ भोले जीवोंको भरमानेका काम करना आत्मार्थियोंको योग्य नहीं है।

४३- कितनेक श्रीउत्तराध्ययनसूत्रकी बडी टीकाके नामसे सामायिकमें प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते करनेका ठहरातेहैं,सोभी प्रत्यक्ष मिथ्याहै.क्योंकि देखो उत्तराध्ययन सूत्रमें या इनकी बडी टीकामें सामायिक करनेसंबंधी प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते करनेका कुछभी अधिकारनहींहै.किंतु-२९वें अध्ययनमें "सामाइएणं भंते! जीवे किं जणेइ? सावज्जजोग विरइं जणयइ॥ चउवीसत्थएणं भंते! जीवे किं जणेइ? दंसण विसोहिं जणइ॥

व्याख्या-' सामायिकेन ' उक्तरूपेण सहावद्येन वर्त्तत इति सावद्याः-कर्मबंधनहेतवो योगा-व्यापारास्तेभ्यो विरतिः-उपरमः सावद्ययोगविरतिस्तां जनयति, तद्विरति सहितस्यैव सामायिक संभवात्, न चैवं तुल्यकालत्वेनानयोः कार्यकारण भावासंभव इति वाच्यं, केषुचित्तुल्यकालेष्वपि वृक्षच्छायादिवत्कार्यकारण भावदर्शनाद्, एवं सर्वत्रभावनीयं॥ सामायिकं च प्रतिपत्तुकामेन तत्प्रणेतारःस्तोतव्याः ते च तत्त्वतस्तीर्थकृत एवेति,तत्सूत्रमाह 'चतुर्विंशतिस्तवेन' एतदवसर्पिणी प्रभवतीर्थकृदुत्कीर्त्तनात्मकेन दर्शनं सम्यक्त्वं तस्यविशुद्धिः-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तदुपघातिक कर्मापगमतो निर्मलीभवनं दर्शनविशुद्धस्तां जनयति"

ऐसा कहकर सामान्यतासे सामायिक, चउवीसत्थो, वंदन, प्रतिक्रमण, काउसग्ग आदि कर्तव्योंका फलबतलायाहै. मगर वहां सामायिककरनेकी विधिमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते उच्चारण करनेका नहीं बतलाया. इसलिये उत्तराध्ययन सूत्रवृत्तिके नामसे प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापनकरनेवालोंकी बडी भूलहै.

४४-अब आत्मार्थी तत्त्वग्राही पाठकगणसे मेरा यही करनाहै, कि-श्रीमहानिशीथसूत्रका उद्धार श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजनेकियाहै। श्रीदशवैकालिकसूत्रचूलिकाकी बडी टीकाभी इन्हीं महाराजने बनाया है, तथा आवश्यक सूत्रकी बडी टीकाभी इन्हीं महाराजने बनाया है। श्रावक प्रज्ञप्तिकी टीकाभी इन्हीं महाराजने बनायाहै, अब देखो-आवश्यक बडीटीकामें व श्रावकप्रज्ञप्तिटीकामें सामायिक विधिमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेका खुलासापूर्वक पाठ है तथा महानिशीथसूत्रके तीसरेअध्ययनमें उपधान चैत्यवंदनसंबंधी इरियावही करनेका पाठहै, और दशवैकालिक चूलिकाकीटीकामें साधुके गमनागमनसंबंधी इरियावही करके स्वाध्यायादि करनेकापाठहै, इसलिये भिन्न२ अपेक्षावाले इन शास्त्रपाठोंके आपसमें किसीतरहकाभी विसंवाद नहीं है, और विसंवादी शास्त्रोंको व विसंवादी कथन करनेवालोंको शास्त्रोंमें मिथ्यात्वी कहे हैं। इसलिये जैनशास्त्रोंको व पूर्वाचार्योंको अविसंवादी कहनेमें आतेहैं, इसी तरह श्री हरिभद्रसूरिजी महाराजभी अविसंवादी होनेसे इन्हीं महाराजके बनाये ऊपरके सर्व शास्त्रोंको अविसंवादी कहनेमेंआतेहैं, और श्रीआवश्यकसूत्रकी बडी टीका व श्रावकप्रज्ञप्ति टीकामें सामायिक करने संबंधी प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेका पाठ मौजूद होने परभी महानिशीथ, दशवैकालिक चूलिकाकी टीकाके भिन्न २ अपेक्षावाले अधूरे २ पाठोंका उलटा २ अर्थकरके शास्त्रकारोंके अभिप्रायविरुद्ध होकर सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनेसे ऊपरके शास्त्रपाठोंमें और इन्हीं शास्त्रोंके करनेवाले श्रीहरिभद्रसूरिजी महाराजके वचनोंमें एकही विषय संबंधी आपसमें पूर्वापर विसंवादरूप दूषणआताहै, मगर इन्हीं शास्त्रपाठोंमें व इन्हींमहाराजके कथनमें किसी प्रकारसेभी कभी विसंवादका दूषण नहीं आ सकता. यह तो सामायिकमें प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंतेका स्थापन करनेके आग्रह करनेवालोंकीही पूर्ण अज्ञानताहै, कि-ऐसे अविसंवादी आप्त-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शास्त्रोंको व ऐसे शासनप्रभावक गीतार्थ महापुरुषोंको विसंवादीका झूठा कलंक लगानेकाभी भय न करके अपना आग्रहकी प्रत्यक्ष असत्य बातको दृढकरनेके लिये ऐसे २ अनर्थ करते हैं । इसलिये आत्मार्थी भव भिरुयोंको ऐसा असत्य आग्रह छोडकर प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावहीकरनेकी सत्यबातको श्रद्धापूर्वक अंगीकार करनाही जिनाज्ञानुसार होनेसे श्रेयरूपहै. इसीतरहसे आवश्यक चूर्णि-बृहद् वृत्ति-लघुवृत्ति-पंचाशकचूर्णि-वृत्ति-श्रावकधर्म प्रकरणवृत्ति-योगशास्त्रवृत्ति वगैरह अनेकशास्त्रानुसार सामायिकमें प्रथमकरेमिभंते पीछे इरियावहीकी सत्य बातको निषेध करनेवाले और महानिशीथ-दशवैकालिक-पंचाशक चूर्णि-उत्तराध्ययन-संघाचार भाष्य वृत्ति-धर्मरत्न प्रकरण वृत्ति वगैरह शास्त्रकारमहाराजोंके अपेक्षा विरुद्ध और अधूरे २ पाठोंके नामसे या किसीप्रकारकीभी कुयुक्तिसे सामायिकमें प्रथम इरियावही और पीछे करेमिभंते स्थापन करनेवाले आगमपंचागीके अनेक शास्त्रपाठोंके उत्थापनकरनेके दोषी बनतेहैं. और खास अपने तपगच्छादिक सर्व गच्छोंके पूर्वाचार्योंकीभी आज्ञालोपने वाले बनते हैं [इसका विशेष खुलासा निर्णय उपरमें देखो] और तपगच्छमें पहिले तो प्रथमकरेमिभंते पीछेइरियावही करतेथे, इसलिये श्रीदेवेंद्रसूरिजी,श्रीकुलमंडनसूरिजी वगैरहोंने अपने२बनाये ग्रंथोंमें प्रथमकरेमिभंते और पीछे इरियावही करनेका खुलासापूर्वक लिखाहै, मगर थोडे समयसे अपने प्राचीन पूर्वाचार्योंके कथन विरुद्ध प्रथम इरियावहीकरनेका आग्रह चल पडा है, मगर जिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थीयोंको ऐसा आग्रहकरना योग्यनहींहै। देखो-'सेनप्रश्न' में श्रीविजयसेनसूरिजीने सर्व पूर्वाचार्योंके और अपने गच्छकेभी पूर्वाचार्योंके विरुद्धहोकर सामायिकमें प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते करनेका कहा है,मगर तोभी उन्हींकेही संतानीय अंतेवासी श्रीमानविजयजी और सुप्रसिद्धन्यायविशारदश्रीयशोविजयजीने 'धर्मसंग्रह'वृत्तिमें आवश्यक चूर्णि-पंचाशकचूर्णि-योगशास्त्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रानुसार प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेका खुलासा लिखा हैं, इसी तरहसे आत्मार्थियोंको अपने गच्छका या गुरुकाभी झूठ पक्षपातको त्याग करके प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावहीकी जिनाज्ञानुसार सत्य बातको आवश्यमेवही ग्रहण करना उचित है

न्यायरत्नजी शांतिविजयजीने महानिशीथ, दशवैकालिकादिक शास्त्रोंके भिन्न २ अपेक्षावाले अधूरे २ पाठोंसे शास्त्रकारमहाराजोंके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अभिप्रायविरुद्धहोकर सामायिकमें प्रथमइरियावही पीछेकरेमिभंते-का स्थापन करनेके लिये 'खरतरगच्छ समीक्षा' में अनेक तरहसे शास्त्रविरुद्ध व कुयुक्तियोंसे अनर्थ किये हैं, उसका खुलासा ऊपरके लेखसे पाठकगण स्वयं विचार लेंगे. इसी तरहसे आनंदसागरजीने 'धर्म संग्रह' की प्रस्तावनामें, चतुरविजयजीनें 'संबोधसत्तरिप्रकरण वृत्ति' की टिप्पणिकामें, श्रीकांतिविजयजी अमरविजयजीनें 'जैनसिद्धांतसामाचारी' में, धर्मसागरजीने इरियावही षट्त्रिंशिका-प्रवचन परीक्षादिकमें औरभी कोईभी महाशय कोईभी ग्रंथमें सामायिकमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करनेका निषेधकरके, प्रथम इरियावही पीछे करेमिभंते स्थापन करनेवाले सब शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करनेवाले उपरके लेखसे समझ लेने चाहिये.

और पर्युषणासंबंधी, तथा छ कल्याणक संबंधीभी न्यायरत्नजीने अनेक शास्त्रविरुद्ध और कुयुक्तियोंके संग्रहसे ऐसे२ही अनर्थ कियेहैं, उन सबका खुलासा समाधान पूर्वक निर्णय इसी ग्रंथमें और इस ग्रंथके प्रथम भागकी भूमिकाके ४७ प्रकरणोंमें और सुबोधिकादिककी २८ भूलोंवाले लेखमें अच्छी तरहसे खुलासा सहित छप चुका है। इसलिये यहां पर फिरसे विशेष लिखनेकी कोई जरूरत नहींहै, सत्य तत्त्वाभिलाषी पाठक गण वहांसे समझ लेंगे। औरभी न्यायरत्नजीने श्रीअभयदेवसूरिजी संबंधी व तिथि संबंधी जो जो शास्त्रविरुद्ध बातें लिखी हैं, उन सबका खुलासा श्रीमान् पन्यासजी श्री केशर मुनिजीनें 'प्रश्नोत्तरमंजरी' के तीनों भागोंमें अच्छी तरहसे छपवाकर प्रसिद्ध कियाहै, उनके वांचनेसे सब खुलासा हो जावेगा. और मैं भी तीसरे भागकी उद्घोषणामें थोडासा नमूनारूप लिखूंगा तब वहां जैनमुनियोंको रेल विहार निषेध, व व्याख्यानके समय मुहपत्तिका बांधना और देशकालानुसार विशेष लाभ जानकर स्त्री-पुरुषोंकी सभामें साध्वियोंको धर्म शास्त्रका व्याख्यान करना [धर्मका उपदेश देना] वगैरह बातों संबंधीभी खुलासा लिखनेमें आवेगा. पाठक गण वहांसे सर्व निर्णय समझ लेना. इति शुभम्.

विक्रम संवत् १९७८ वैशाख वदी पंचमी बुधवार.

हस्ताक्षर श्रीमान्-उपाध्यायजी श्रीसुमतिसागरजीमहाराजके लघु शिष्य मुनि--मणिसागर. जैन धर्मशाला, खानदेश--धूलिया.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ ओम् ॥

॥ श्रीपञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

श्रीपर्युषणा निर्णय नामाग्रंथः प्रारभ्यते

नत्वा श्रीशासनाधीशं, विघ्न व्यूह विदारणं,
पर्युषणादि कार्याणां. निर्णयः क्रियते खलु ॥१॥
आत्मार्थिनाञ्च लाभाय, पाखण्ड पथ शान्तये
वाणी गुरु प्रसादेन, शास्त्रयुक्त्यनुसारतः॥२॥ युग्मम्

विघ्नोंके समूहकोनाश करने वाले शासन नायक श्रीवर्द्धमानस्वामीको नमस्कार करके श्रीसरस्वती देवी तथा श्रीगुरु महाराजके प्रसादसे, शास्त्रोंके प्रमाण पूर्वक तथा युक्तियोंके अनुसार, आत्मार्थि भव्यजीवोंको श्रीजिनाज्ञाकीप्राप्ति रूप लाभके वास्ते और उत्सूत्रपरूपणा रूप पाखण्डमार्गकी शान्तिके लिये श्रीपर्युषणपर्वादि सम्बन्धी कार्योंका निश्चयके साथ निर्णय करता हूं। सो इस ग्रन्थमें सम्बन्ध तो मुख्य करके अधिक मासके ३० दिनोंकी गिनतीके प्रमाण करनेका है। और दो श्रावण अथवा दो भाद्र पद होनेसे आषाढ़ चौमासीसे ५० दिने दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपदमें श्रीपर्युषणपर्वका आराधन करने सम्बन्धी निर्णयरूप कथन करनेका इस ग्रन्थमें मुख्य विषय है और वर्त्तमानकालमें गच्छोंके पक्षपातसे आपसमें जूदी जूदी प्ररूपणाके होनेसे भोलेजीवोंको श्रीजिनाज्ञाकी शुद्ध श्रद्धामें मिथ्यात्वरूप भ्रम पड़ता है, उसीको निवारण करनेके लिये पञ्चाङ्गी प्रमाण पूर्वक युक्ति अनुसार इस ग्रन्थकी रचना करता हूं, सो इसको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अवलोकन करनेसे असत्यको छोड़कर सत्यको ग्रहण करके मोक्षाभिलाषी जन अपने आत्म कल्याणमें उद्यम करें, एही इस ग्रन्थकारका तथा इस ग्रन्थका मुख्य प्रयोजन है। और इस ग्रन्थका अधिकारी तो वही होगा जो कि अपने गच्छ संबंधी परंपराके पक्षपातका कदाग्रह रहित तथा जिनाज्ञा इच्छक और शास्त्रोक्त शुद्ध व्यवहारको अङ्गीकार करनेवाला सम्य-क्त्वधारी मोक्षाभिलाषी, नतु अभिनिवेशिक मिथ्यात्वी बहुलसंसारी गड्डरीह प्रवाही।

मङ्गलाचरण और सम्बन्ध चतुष्टय कहे बाद सर्वसज्जन पुरुषोंको निवेदन करनेमें आता है कि-वर्त्तमानकालमें संवत् १९६६ के लौकिक पञ्चाङ्गमें दो श्रावण होनेसे श्री-खरतर गच्छादिवाले पञ्चाङ्गी प्रमाण पूर्वक तथा श्रीपूर्वा-चार्योंकी आज्ञामुजब आषाढ़ चौमासीसे ५० दिने दूसरे श्राव-णमें श्रीपर्युषणपर्वका आराधन करते हैं जिन्होंको प्रथम श्रीवल्लभविजयजीने अपनी मति कल्पनासे कोई भी शास्त्रके प्रमाण विना जैनपत्रद्वारा आज्ञा भङ्गका दूषण लगाकरके कुसंपके वृक्षका बीज लगाया तथा प्रत्यक्ष श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें यावत् ८० दिने श्रीपर्युषणपर्वका आराधन करके भी मायावृत्तिसे आप आज्ञाके आराधक बनना चाहा, तथा उन्हींकाही अनुकरण करके दूसरे काशीसे श्रीधर्मविजयजीने अपने शिष्य विद्याविजयजीके नामसे 'पर्युषणा विचार' का लेख प्रगट कराया जिसमें भी उत्सूत्र भाषणोंका तथा कुयुक्तियोंका संग्रह करके अभिनिवेशिक मिथ्यात्वसे शास्त्रोंके आगे पीछेके पाठोंको छोड़करके विना सम्बन्धके अधूरे अधूरे पाठ लिखकर शास्त्रकार महाराजोंके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अभिप्रायसे विरुद्ध होकरके दूसरे श्रावणमें ५० दिने श्रीपर्युषण पर्वका आराधन करने वालोंपर खूबही आक्षेपोंकी बड़े जोरसे वर्षा करी और पञ्चाङ्गीके प्रत्यक्ष प्रमाणोंको उत्थापन किये और जो संपसे धर्मकार्य होते थे जिन्होंमें विघ्नकारक छोटीसी १० पृष्ठकी पुस्तक प्रगट कराके कुसंपके वृक्षको उत्पन्न कराया और तीसरे जैन पत्रवालेने भी इन्होंकेही अनुसार चल करके दूराग्रहके हठसे पर्युषणा विचारके लेखका गुजरातीमें भाषान्तर जैनपत्रके २३ वें अङ्ककी आदिमें प्रगट करके उत्सूत्र भाषणोंके फल विपाक प्राप्त करनेके लिये और गच्छकदाग्रहके झगड़ेको बढ़ानेके लिये श्रीजिनाज्ञाके आराधक पुरुषोंको अनेक तरहसे आक्षेपरूप कटुक वचन लिखके कुसंपके वृक्षको बढ़ानेका कारण किया।

इनतीनोंमहाशयोंके इसतरहकेलेखोंको मैंने अवलोकन किये तो जिनाज्ञा विरुद्ध एकान्त अपने गच्छ संबन्धी आग्रहके पक्षपातसे दूसरोंको मिथ्या दूषण लगानेवाले और आत्मार्थि भव्यजीवोंको श्रीजिनाज्ञाकाआराधन करनेमें विघ्न रूप मालूम हुए तब इस विघ्नको दूर करनेकी इच्छाहुई इसलिये मोक्षाभिलाषी जिनाज्ञा इच्छक भव्य जीवोंको श्रीजिनाज्ञाकी शुद्ध श्रद्धामें दृढ़ करनेके वास्ते और उत्सूत्रभाषक गच्छकदाग्रहियोंको हितशिक्षाके लिये शास्त्रानुसार तथा शास्त्र युक्ति पूर्वक श्रीपर्युषणपर्वका आराधन सम्बन्धी वर्त्तमानिक विषंवादका निर्णय करना उचित समझा सो करके तत्वान्वेषि पुरुषोंको दिखाता हूं :—

श्रीगणधर महाराज कृत श्रीनिशीथ सूत्रमें १, श्रीपूर्वाचार्यजी कृत श्रीनिशीथसूत्रके लघु भाष्यमें २, तथा बृहद्भा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

र्णमें ३, और श्रीजिनदासगणि महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर कृत श्रीनिशीथसूत्रकी चूर्णिमें ४, श्रीभद्रबाहु स्वामीजी कृत श्री-दशाश्रुत स्कन्ध सूत्रमें ५, श्रीपूर्वाचार्यजी कृत तत्सूत्रकीचूर्णिमें६, श्रीपार्श्वचंद्रगच्छके श्रीब्रह्मर्षिजीकृत तत्सूत्रकीवृत्तिमें७,श्रीपूर्वाचार्यजी कृत श्रीवृहत्कल्पसूत्रके लघुभाष्यमें८,वृहद्भाष्यमें९, तथा चूर्णिमें १०, और श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरिजी कृत श्रीवृहत्कल्पसूत्रकी वृत्तिमें ११, श्रीसुधर्म्मस्वामीजी कृत श्रीसमवायांगजी सूत्रमें १२,तथा श्रीखरतरगच्छ नायक सुप्रसिद्ध श्रीनवांगीवृत्तिकार श्रीअभयदेव सूरिजी कृत तत्सूत्रकी वृत्तिमें १३, और उक्त महाराज कृत श्रीस्थानांगजीसूत्रकी वृत्तिमें १४, श्रीभद्रबाहुस्वामीजी कृत श्रीकल्पसूत्रमें १५, तथा निर्युक्तिमें १६, और श्रीखरतरगच्छके श्रीजिनप्रभसूरिजी कृत श्रीकल्पसूत्रकी श्रीसंदेहविषौषधि वृत्तिमें १७, तथा निर्युक्तिकीवृत्तिमें १८, और विधिप्रपा नाम श्री समाचारी ग्रन्थमें १९, और श्रीखरतरगच्छके श्रीलक्ष्मीवल्लभगणिजी कृत श्रीकल्पसूत्रकी कल्पद्रुमकलिकावृत्तिमें २० तथा श्रीखरतरगच्छके श्रीसमयसुन्दरजी कृत श्रीकल्पकल्पलतावृत्तिमें २१ और उक्त महाराज कृत श्रीसमाचारीशतकनाम ग्रन्थमें २२, श्रीतपगच्छके श्रीकुलमण्डनसूरिजी कृत श्रीकल्पावचूरिमें २३, तथा श्रीतपगच्छके श्रीधर्मसागरजी कृत श्रीकल्पकिरणावली वृत्तिमें २४, और श्रीजयविजयजी कृत श्रीकल्पदीपिकावृत्तिमें २५, और श्रीविनयविजयजी कृत श्रीसुबोधिकावृत्तिमें २६, श्रीसंघविजयजी कृत श्रीकल्पप्रदीपिकावृत्तिमें २७, श्रीविजयविमल गणिजी कृत श्रीगच्छाचारपयन्नाकीवृत्तिमें २८ श्रीअञ्चलगच्छके श्रीउदयसागरजी कृत श्रीकल्पावचूरिरूपवृत्तिमें २९,श्रीखरतर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गच्छके श्रीजिनपतिसूरिजी कृत श्रीसमाचारीग्रन्थमें ३० तथा श्रीसंघपट्टकबृहद्वृत्तिमें ३१ और श्रीहर्षराजजी कृत श्रीसंघ-पट्टककी लघुवृत्तिमें ३२, और श्रीपूर्वाचार्य्योंके बनाये तीन श्रीकल्पान्तरवाच्योंमें ३५, इत्यादि पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंमें आषाढ़ चौमासीसे ५० दिन जानेसे अवश्यमेव पर्युषणा करना कहा है उसीकेही अनुसार तथा श्रीपूर्वाचार्य्योंकी आज्ञा-मुजब वर्त्तमानकालमें दो श्रावण होनेसे दूसरे श्रावणमें अथवा दो भाद्रपद होनेसे प्रथम भाद्रपदमें ५० दिने पर्यु-षणा करनेमें आती है इसी विषयकी पुष्टिके लिये पाठक-वर्गको निःसन्देह होनेके वास्ते शास्त्रोंके थोड़ेसे पाठ भी लिख दिखाता हूं।

१ श्रीकल्पसूत्रके पृष्ठ ५३ से ५४ तकका पर्युषणा संबंधी पाठ नीचे लिखे मुजब जानो, यथा—

तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणेभगवंमहावीरे वासाणं सवी सइराएमासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ ॥१॥ सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ समणेभगवं महावीरे वासाणं सवीसइ राए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ। जउणं पाएणं, अगा-रीणं अगाराइं,कडियाइं, उक्कंपियाइं, छन्नाइं, लित्ताइं, घट्ठाइं, मट्ठाइं, संधूपियाइं, खाउ दगाइं, खायनिद्धमणाइं, अप्पणो अट्ठाए कडाइं, परिभुत्ताइं, परिणामियाइं भवंति॥ सेतेणट्ठेणं एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ ॥२॥ जहाणं समणेभगवं महावीरे वासाणं सवीसइ राए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ। तहाणं गणहराबि वासाणं सवीसइ राए मासे-वइक्कंते वासावासं पज्जोसविंति ॥ ३ ॥ जहाणं गणहराबि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वासाणं सवीसइराएमासे जाव पज्जोसविंति। तहाणं गणहर सीसावि वासाणं जाव पज्जोसविंति॥४॥ जहाणंगणहरसीसा वासाणं जाव पज्जोसविंति। तहाणं थेरावि वासावासंजाव पज्जोसविंति ॥५॥ जहाणं थेरा वासाणं जाव पज्जोसविंति। तहाणं जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएवि-अणं वासाणं जाव पज्जोसविंति ॥६॥ जहाणं जे इमे अज्ज-त्ताए समणा निग्गंथावि वासाणं सवीसइराए मासे विइ-क्कन्ते वासवासं पज्जोसविंति। तहाणं अम्हंपि आयरिया उवज्झाया वासाणं जाव पज्जोसविंति ॥७॥ जहाणं अम्हंपि आयरिया उवज्झाया वासाणं जाव पज्जोसविंति। तहाणं अम्हेवि वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कन्ते वसावासं पज्जोसवेमो। अंतरावियसे कप्पइ नोसे कप्पइ तं रयणिं उवायणावित्तए ॥८॥ इत्यादि

भावार्थः—तिसकाल तिससमयके विषे श्रमणभगवान् श्रीमहावीरस्वामी वर्षा संबंधी आषाढ़ चौमासीसे वीश दिन सहित एक मास याने ५० दिन जानेसे वर्षावासमें पर्युषणा करते भये, ॥१॥ यहां पर शिष्य पूछता है कि हेभगवान् किस कारणसे ऐसा कहते हो तब गुरु महाराज उत्तर देते हैं कि-प्राय करके गृहस्थ लोग भगवान्का महा-त्मय जान करके इस समय वर्षा बहुत होगी ऐसा विचार करके अपने घरोंको चटाइयोंसे आच्छादित करेंगे, चूनादि से सपेदी करेंगे, घास तृणादिसे उपरमें बंदोवस्त करेंगे, गोबरसे लिंपन करेंगे, आसपासमें वाड वगैरहसे जाबता करेंगे, ऊंची नीची भूमीको तोड़कर बराबर करेंगे, पाषाणादिसे घस करके चीकणी करेंगे, मकानोंको धूपादिसे सुगंधयुक्त करेंगे और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अपने घरोंके ऊपरका वर्षा संबंधी पाणी निकलनेके लिये प्रणालिका करेंगे, और सब घरका पानी निकलनेके वास्ते नवीन खाल बनावेंगे, अथवा पहिलेका खाल होवे उसीका सुधारा करेंगे, और उपयोगी सचित वस्तुओंको अचितकरके रखेंगे, इत्यादि अनेक तरहके आरम्भादि कार्य पहिलेसेही अपने लिये करलेवेंगे इसलिये उपरोक्त दोषोंका निमित्त कारण न होने के वास्ते आषाढ़ चौमासीसे १ मास और २० दिन गये बाद भगवान् पर्युषणा करते थे, ॥२॥ जैसे १ मास और २० दिन गयेबाद भगवान् पर्युषणा करते थे तैसेही गणधरमहाराजभी १ मास और २० दिन गयेबाद पर्युषणा करते थे॥३॥ जैसे गणधर महाराज पर्युषणा करतेथे, तैसेही गणधरमहाराजके शिष्य प्रशिष्यादि भी पर्युषणा करते थे ॥४॥ जैसे गणधर महाराजके शिष्यादि पर्युषणा करते थे तैसेही स्थविर भी करते थे ॥५॥ जैसे स्थविर करते थे तैसेही वर्तमानमें श्रमण निर्ग्रन्थ विचरने वाले हैं सो भी उपरोक्त विधिके अनुसार पर्युषणाकरते हैं॥६॥ जैसे वर्तमानमें श्रमण निर्ग्रन्थ पर्युषणा करते हैं तैसेही हमारे आचार्य उपाध्याय ५० दिने पर्युषणा करते हैं ॥७॥ जैसे हमारे आचार्यउपाध्याय ५० दिने पर्युषणा करते हैं तैसेही हमभी आषाढ़ चौमासीसे ५० दिने पर्युषणा करते हैं जिसमें भी कारण योगे ५० दिन के भीतर पर्युषणा करना कल्पता है परन्तु कारण योगसे ५० वे दिनकी रात्रिकोभी उल्लंघन करना नहीं कल्पता है, याने ५० वें दिनकी रात्रिको उल्लंघन करनेवाले को जिनाज्ञा विरुद्ध दूषणकी प्राप्ति होवे ।

अब देखिये उपरोक्त सुप्रसिद्ध श्रीकल्पसूत्रानुसार दूसरे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रावणमें पर्युषणा करनेवालोंको वृथा द्वेषबुद्धिसे आज्ञा-भङ्गका दूषण लगाना और दो श्रावण होते भी आषाढ़ चौमासीसे दो मास उपर बीस दिन याने ८० दिने (प्रत्यक्ष पंचाङ्गी विरुद्ध अपनी मति कल्पनासे) पर्युषणा करके भी आज्ञाके आराधक बनना सो गच्छकदाग्रहि उत्सूत्र भाषण करनेवालोंके सिवाय और कौन होगा सो विवेकी सज्ज-नोंको विचार करना चाहिये । और दो श्रावण होतेभी भाद्रपदमें तथा दो भाद्रपद होनेसे भी दूसरे भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करनेवाले महाशयोंको हर वर्ष पर्युषणा में प्राय करके सब जगह पर बंचाता हुआ मूलमन्त्ररूप उपरोक्त सूत्रपाठको विवेक बुद्धिसे विचारके असत्यको छोड़ कर सत्यको ग्रहण करना चाहिये ।

और अब ऊपरके सब पाठकी सब व्याख्याओंके सबपाठ बहोत विस्तार हो जानेके कारणसे नहीं लिखता हूं परंतु (अन्तरा वियसे कप्पइ नोसे कप्पइ तं रयणिं उवायणा वितए) इस अन्तके पाठकी थोड़ीसी व्याख्याओंके पाठ लिखके पाठक वर्गको विशेष निःसन्देह होनेके लिये लिख दिखलाता हूं ।

२ श्रीखरतरगच्छके श्रीसमयसुन्दरजी कृत श्रीकल्पकल्प-लता वृत्तिके पृष्ठ १११ से ११२ तकका तत्पाठः——

अन्तरावियसेकप्पइ पज्जोसवित्तए । अन्तरापि च अर्वा-गपि कल्पते पर्युषितुं, "नोसेकप्पइ तं रयणिं" परं न कल्पते तां रजनींभाद्रपद शुक्लपञ्चमीं, "उवाइणावित्तएत्ति," अति-क्रमितुं । उषनिवासे इत्यागमिकोधातुः, इह पर्युषणाद्विधा-गृहिज्ञाता गृह्यज्ञाताच, तत्र गृहिणामज्ञातायां वर्षा योग्य

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पीठफलकादौ प्राप्ते कल्पोक्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्थापना क्रियते, सा स्थापना आषाढपूर्णिमायां, योग्यक्षेत्राभावेतु पञ्च पञ्च दिनवृद्धया यावद्भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी एकादशसुपर्वं तिथिषु क्रियते, गृहि ज्ञातायां तु यस्यां साम्वत्सरिकातिचारालोचनं १, लुञ्चनं २, पर्युषणायां कल्पसूत्राकर्णनं वा कथनं ३, चैत्यपरिपाटी ४, अष्टमंतपः ५, साम्वत्सरिकंचप्रतिक्रमणं क्रियते, यथाचव्रत पर्यायवर्षाणि गण्यंते सा भाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां, युगप्रधान कालकसूर्यादेशाच्चतुर्थ्यामपि जनप्रकटा कार्या यत्तु अभिवर्द्धितवर्षे दिनविंशत्या पर्युषितव्यं, तत्सिद्धान्तटिप्पनानुसारेण तत्रहि युगमध्येपौषो युगान्तेच आषाढ एव वर्द्धते, तान्येतानि च अधुना न सम्यग् ज्ञायंते अतो दिनपञ्चाशतैव पर्युषितव्यम् ॥

३ और श्रीखरतरगच्छके श्रीलक्ष्मीवल्लभगणिजी कृत श्रीकल्पद्रुमकलिकावृत्तिके पृष्ठ २४२से२४३ तकका तत्पाठः—

(सूत्रम्) अन्तरावियसे कप्पइ-इत्यादि, अर्थ-अन्तरापिच अर्वागपि महाकार्यविशेषात् भाद्रपद शुक्लपञ्चमीतःइतःकल्पते पर्युषणापर्वकर्तुं, परं न कल्पते तां रजनीं भाद्रपद शुक्लपञ्चमीं अतिक्रमितुं। पूर्वं उत्सर्गनयः प्रोक्तः अन्तराविवसे इत्यादिना अपवादनयः प्रोक्तः। एकादशसु पञ्चकेषु कुर्वत्सु आषाढ पूर्णिमादिवसे प्रथमं पर्व, एवमग्रे पञ्चभिः पञ्चभिर्दिवसैः एकैकंपर्व, एवं कुर्वतां साधूनां पञ्चाशद्दिनैः एकादश पर्वाणि भवन्ति, एतेषु एकादशपर्वदिवसेषु पर्युषणापर्व कर्त्तव्यं। पर्वसु एकस्मिन्‌दिने न्यूनेपि कारण विशेषेण पर्युषणा कर्त्तव्या, परं एकादशभ्यः पर्वभ्यः उपरि अधिके एकस्मिन्नपि दिने गते पर्युषणा पर्व न कर्तव्यमुपरिदिनं नोल्लङ्घनीय मित्यर्थः।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिकमासोऽपि गणनीय अधिकमासाभावे तु सरलत्वाद्ग गण-
नया आषाढ़चतुर्मासात् पञ्चाशद्दिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमी दिने
पर्युषणा पर्व भवति, श्रीकालिकाचार्याणामादेशात् भाद्र-
पदशुक्लपंचमीतः इतः चतुर्थ्यांक्रियते, भाद्रपदशुक्लपञ्चम्या
रात्रिमुल्लङ्घ्य अग्रेपर्युषणा न कल्पते अनादि सिद्धानां तीर्थं-
कराणां आज्ञया। इदानीमपि चतुर्थ्यां पर्युषणां कुर्वंतः
साधवो गीतार्थास्तीर्थंकराज्ञाराधका ज्ञेया ॥

४ और श्रीतपगच्छके श्रीकुलमंडन सूरिजीकृत श्रीकल्पा-
वचूरिके पृष्ठ ११२ में तत्पाठः—

अन्तरा वियसे कप्पइ, अंतरापि च अर्वागपि कल्पते, "पज्जोसवेयत्र" पर्युषितुं परं "नोसेकप्पइ" न कल्पते "तं रयणि उवायणा वित्तए" तांरजनीं भाद्रपद शुक्लपञ्चमीं अतिक्रमितुं ॥ उवमिवासे इत्यागमिकोधातुः ॥ इहहि पर्युषणा द्विधा गृहिज्ञाताज्ञातभेदात् तत्र गृहिणामज्ञाता यस्यां वर्षायोग्य पीठ फलकादी प्राप्ते यत्नेन कल्पोक्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्थापना क्रियते सा आषाढ़पूर्णिमायां, योग्य-क्षेत्राभावेतु पंच पंच दिन वृद्ध्या यावद्भाद्रपदसित पंचमीं, सार्धैकादशसु पर्वतिथिषु, क्रियते, गृहिज्ञाता यस्यां तु सांवत्सरिकातिचारालोचनं, लुञ्चनं, पर्युषणायां कल्पसूत्रकथनं, चैत्यपरिपाटी, अष्टमं, सांवत्सरिकंप्रतिक्रमणंचक्रियते, ययाच व्रतपर्याय वर्षाणि गण्यन्ते, सा नभस्य शुक्लपञ्चम्यां कालक-सूर्यादेशाच्चतुर्थ्यामपि जनप्रकटाकार्या, यत्पुनरभिवर्द्धित वर्षे दिनविंशत्या पर्युषितव्यमित्युच्यते, तत्सिद्धांत टिप्पनानुसारेण तत्रहि युगमध्ये पौषो युगान्ते आषाढ़ एव वर्द्धते नान्येमासास्तानिचअधुना न सम्यग् ज्ञायन्तेऽतो दिन पञ्चाशतैव पर्युषणा सङ्गतेतिवृद्धाः ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

५ और श्रीतपगच्छके श्रीधर्म्मसागरजी कृत श्रीकल्पकिरणावलीवृत्तिके पृष्ठ २५७ से २५८ तकका तत्पाठः—

तत्र अन्तरापिच अर्वागपि कल्पते पर्युषितु परं न कल्पते तां रजनीं भाद्रपद शुक्ल पंचमीं, "उवायणा वित्तएत्ति" अतिक्रमितुं, उषनिवासे इत्यागमिकोधातुः। वस निवास इति गणसंबन्धीवाधातुः। इहहि पर्युषणा द्विविधा गृहि ज्ञाताज्ञातभेदात् तत्र गृहिज्ञातमज्ञाता यस्यां, वर्षायोग्य पीठफलकादी प्राप्ते यत्नेन कल्पोक्तद्रव्य,क्षेत्र काल,भाव,स्थापनाक्रियते सा चाषाढ़पूर्णिमायां,योग्यक्षेत्राभावेतु, पंच पंच दिन वृद्धया दशपर्वतिथि क्रमेण यावत् भाद्रपदसितपंचमीमेवेति गृहिज्ञाता तु द्विधा सांवत्सरिक कृत्यविशिष्टा गृहिज्ञातमात्राच तत्र सांवत्सरिक कृत्यानि, "सांवत्सरप्रतिक्रान्ति १ र्लुंचनं २ चाष्टमन्तपः ३ सर्वार्हद्भक्तिपूजाच ४ सङ्घस्य क्षामणं मिथः ५" एतत्कृत्य विशिष्टा भाद्रपदसितपंचम्यां कालकाचार्यादेशाच्चतुर्थ्यामपि जनप्रकटाकार्या, द्वितीयातु अभिवर्द्धितवर्षे चातुर्मासिक दिनादारभ्य विंशत्यादिनैः वयमत्रस्थितास्म इति पृच्छतां गृहस्थानां पुरो वदन्ति सातु गृहिज्ञात मात्रैव, तदपि जैनटिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगान्तेचाषाढ़ एव वर्द्धते नाऽन्येमासाः तच्चाधुना सम्यग्न ज्ञायतेऽतः पंचाशतैवदिनैः पर्युषणासङ्गतेति वृद्धाः॥

६ और श्रीतपगच्छके श्रीजयविजयजी कृत श्रीकल्पदीपिका वृत्तिके पृष्ठ १३० में तत्पाठः—

अन्तरावियसेकप्पइत्ति, अन्तरापि च अर्वागपि कल्पते पर्युषितुं, परं न कल्पते तां रजनीं भाद्रपदशुक्लपंचमीं "उवायणा वित्तएत्ति" अतिक्रमितुं, उषनिवासे इत्यागमि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को धातुः, वस निवास इति गणसंबंधीवाधातुः।इहहि पर्युषणा द्विविधा गृहिज्ञाताज्ञातभेदात् तत्रगृहिणामज्ञाता यस्यां वर्षायोग्य पीठ फलकादौ प्राप्ते कल्पोक्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्थापना क्रियते, साच आषाढ़पूर्णिमायां. योग्यक्षेत्राभावे तु पंच पंच दिन वृद्धया दशपर्वतिथि क्रमेण यावत् भाद्र पदसित पंचमोमेवेति। गृहिज्ञाता तु द्विधा सांवत्सरिककृत्य-विशिष्टा गृहिज्ञातमात्रा च तत्र सांवत्सरिक कृत्यानि, "सांव-त्सरिकप्रतिक्रमणं १, लुंचनं २, अष्टमं तपः ३, चैत्यपरिपाटी, संघक्षामणं" एतत्कृत्यविशिष्टा भाद्रपदसित पंचम्यां कालका-चार्यादेशाच्चतुर्थ्यां जनप्रकटा कार्या, द्वितीयातु अभिवर्द्धितवर्षे चातुर्मासिकदिनादारभ्य विंशत्यादिनैः वयमत्रस्थितास्म इति पृच्छतां गृहस्थानां पुरो वदन्ति सातु गृहिज्ञातमात्रव तदपि जैनटिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगांते च आषाढ़ एव वर्द्धते नान्येमासाः तच्चाधुना सम्यग् न ज्ञायते अतः पंचाशतैवदिनैः पर्युषणासङ्गतेति वृद्धाः ॥

७ और श्रीतपगच्छके श्रीविनयविजयजी कृत श्रीसुख-बोधिकावृत्तिके पृष्ठ १४६ में तथाच तत्पाठः—

अंतरावियसेकप्पइ, अंतरापिचअर्वागपि कल्पते पर्युषितुं परं न कल्पते तां रात्रिं भाद्रपदशुक्लपंचमीं, "उवायणा वित्तएत्ति" अतिक्रमितुं, तत्र परिसामस्त्येन उषणं वसनं पर्युषणा, साद्विधा गृहस्थैर्ज्ञाता गृहस्थैरज्ञाताच, तत्र गृहस्थैरज्ञाता यस्यां वर्षायोग्य पीठफलकादौ प्राप्ते कल्पोक्त-द्रव्य क्षेत्र काल भाव स्थापना क्रियते साचाषाढ़पूर्णिमायां, योग्य क्षेत्राभावेतु पंच पंच दिन वृद्धया दशपर्वतिथि क्रमेण यावत् भाद्र पद सितपंचम्याम्, एवं गृहिज्ञाता तु द्विधा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

साम्वत्सरिककृत्याविशिष्टा गृहिज्ञातमात्राच, तत्र साम्वत्सरिककृत्यानि "सांवत्सर प्रतिक्रांति १ लुंञ्चनं २ चाष्टमंतपः ३ सर्वार्हद्भक्तिपूजाच ४ संघस्यक्षामणंमिथः ५ ॥ १ ॥" एतत्कृत्यविशिष्टा भाद्रपदसित पंचम्यामेव कालिकाचार्यादेशाच्चतुर्थ्यामपिकार्या, केवलं गृहिज्ञातातु सा यद् अभिवर्द्धितवर्षे चातुर्मासिकदिनादारभ्य विंशत्यादिनैर्वयमत्रस्थिताःस्मइति पृच्छतां गृहस्थानां पुरोवदंति तदपि जैनटिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगांतेचाषाढएव वर्द्धते नान्येमासास्तट्टिप्पनकन्तु अधुनासम्यग् न ज्ञायते अतः पंचाशतैवदिनैः पर्युषणायुक्तेतिवृद्धाः ॥

उपरोक्त श्रीखरतरगच्छ तथा श्रीतपगच्छ उन दोनों गच्छवालोंके छ पाठोंका संक्षिप्त भावार्थः—अंतरा वियसे कप्पइ । अन्तरापिच अर्वागपि कल्पते पर्युषितुं, इत्यादि कहनेसे-जो आषाढ़ चौमासीसे ५० दिने पर्युषणा करनेमें आती है जिसमें कारण योगे ५० दिनके अंदर ४९ वे दिन पर्युषणा करना कल्पता है परन्तु ५० वे दिनकी जो भाद्रपद शुक्लपंचमीकी रात्रिहै उसीको उल्लंघन करना नहीं कल्पता है और उषधातुसे उषणा बनता है तथा परिउपसर्ग लगनेसे पर्युषणा बन जाता है सो उषधातु निवास अर्थमें वर्तती है अथवा गण संबंधी वस धातु भी निवासार्थमें वर्तती है और ग्रामानुग्राम विहार करनेका निवारण करके सर्वथा प्रकारसे वर्षाकाले एकस्थानमें निवास करना सो पर्युषणा कही जाती है सो पर्युषणा यहां दो प्रकारकी है गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई तथा गृहस्थी लोगोंकी नहीं जानीहुई तिसमें गृहस्थीलोगों की नहीं जानी हुई पर्युषणा जिसमें वर्षाकालके उचित

पाट पाटलादि द्रव्योंका योग बननेसे यत्न करके शास्त्रोक्त विधिसे द्रव्य क्षेत्र काल और भावकी स्थापना करनी जिसमें उपयोगी वस्तुओंका संग्रहसो द्रव्य स्थापना, और विहारका निषेध परन्तु आहारादि कारणसे मर्यादा पूर्वक जानेका नियम सो क्षेत्रस्थापना, और वर्षाकालमें जघन्यसे ७० दिन तक तथा मध्यमसे १२० दिन तक और उत्कृष्टसे १८० दिन तक एक स्थानमें निवास करना सो कालस्थापना, और रागादि कर्मबन्धके हेतुओंका निवारण करके इरियासमिति आदिका उपयोग पूर्वक वर्ताव करना सो भावस्थापना, इस तरहसे वो द्रव्यादि चतुर्विध स्थापना आषाढ़ पूर्णिमामें करनी परन्तु योग्य क्षेत्रके अभावमें तो आषाढ़ पूर्णिमासे पांच पांच दिनकी वृद्धि करके दशपंचक तिथियोंमें क्रममें यावत् भाद्रपद सुदी पंचमी तक, आषाढ़ पूर्णिमासे दशपंचकमें परन्तु आषाढ़ सुदी १० मी के निवासकी गिनतीसे एकादशपंचकोंमें जहां द्रव्यादिका योग मिले वहां पूर्वोक्त कहे वैसे दोषोंका निमित्त कारण न होनेके लिये अज्ञात पर्युषणा स्थापन करनी और आषाढ़ चौमासीसे ५०दिने गृहस्थी लोगोंकीजानी हुई पर्युषणा जिसमें वार्षिकातिचारोंकी आलोचना करनी, केशोंकालुंचन करना,श्रीकल्पसूत्रकासुनना वा पठनकरना, अष्टमतप करना, चैत्यपरिपाटी (जिन मन्दिरोंमें दर्शनकरने) और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करना, और सर्व संघकोक्षामणे करना और दीक्षापर्यायके वर्षोंकी गिनती करना सो ज्ञातपर्युषणा भाद्रपदशुक्ल पंचमीमें होती थी, परन्तु युग प्रधान श्रीकालकाचार्य्यजीमहाराजके आदेशसे भाद्रशुक्लचतुर्थीके दिन करनेमें आती है। सो गीतार्थों की आचरणा होनेसे श्रीजिनाज्ञा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुजबही जानमी सो भाद्र पदकी पर्युषणा मासवृद्धिके अभावसे चन्द्रसंवत्सर संबंधिनी जाननी। और मासवृद्धि होनेसे अभिवर्द्धित संवत्सरमें तो आषाढ़चौमासीसे बीस दिन करके याने श्रावणशुक्लपंचमी को गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई पर्युषणा करनेमें आती थी सो ते जैन सिद्धान्त का टिप्पणानुसार युगके मध्यमें पौषमास और युगके अन्तमें आषाढ़मासकी वृद्धि होती थी परन्तु और किसी भी मासकी वृद्धिका अभाव था। वोटिप्पणा तो अभी इस कालमें अच्छी तरहसे देखनेमें नहीं आता है इसलिये मासवृद्धि हो तो भी ५० दिनोंसे पर्युषणा करनी योग्य है इस तरहसे वृद्धाचार्य कहते हैं अर्थात् मासवृद्धि होनेसे जैनपंचांगानुसार बीस दिने श्रावणमें पर्युषणा करनेमें आती थी परन्तु जैनपंचांगके अभावसे लौकिक पंचांगानुसार मासवृद्धि दो श्रावण अथवा दो भाद्रपद होतो भी उसीकी गिनती पूर्वक ५० दिने दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करनेकी प्राचीनाचार्योंकी आज्ञा है इसी ही कारणसे श्रीलक्ष्मीवल्लभ गणिजीने अधिमासकी गिनती पूर्वक ५० दिन पर्यूषणा करनेका खुलासा लिखा है। उसी मुजब आत्मार्थियोंको पक्षपात छोड़कर वर्तना चाहिये।

और श्रीधर्मसागरजी श्रीजयविजयजी श्रीविनयविजयजी इन तीनों महाशयोंके बनाये (श्रीकल्पकिरणावली श्रीकल्प दीपिका श्रीसुखबोधिका इन तीनों वृत्तियोंके) पर्युषणा सम्बन्धी पाठ ऊपरमें लिखे हैं उमीमें इन तीनों महाशयोंने, ज्ञात याने गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई पर्युषणा दो प्रकारकी लिखी है और अभिवर्द्धित संवत्सरमें आषाढ चौमा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मीसे बीस दिने पर्युषणा करनेमें आती थी उसीको वार्षिक कृत्योंरहित केवल गृहस्थीलोगोंके कहने मात्रही ठहराते हैं सो कदापि नहीं बन सकता है क्योंकि अधिक मास होनेसे बीस दिनकी पर्युषणाकोही जैन पंचाङ्गके अभावसे अधिक मास होतेभी ५० दिने पर्युषणा पूर्वाचार्योंने ठहराई है इस लिये बीस दिनकी पर्युषणा कहनेमात्रही ठहरानेसे ५० दिनकी पर्युषणा भी कहनेमात्रही ठहर जावेगी और वार्षिक कृत्य उसी दिन करनेका नहीं बनेगा इसलिये जैसे मासवृद्धिके अभावसे ५० दिने ज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्य होते हैं तैसेही मासवृद्धि होनेसे बीस दिनकी ज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्य मानने चाहिये क्योंकि ज्ञात पर्युषणा एकही प्रकारकी शास्त्रोंमें लिखी है परन्तु बीस दिने ज्ञात पर्युषणा करके फिर आगे वार्षिक कृत्य करे ऐसा तो किसी भी शास्त्रमें नहीं लिखा है इसलिये जहां ज्ञात पर्युषणा वहांही वार्षिक कृत्य शास्त्रोक्त युक्ति पूर्वक सिद्ध होते हैं इसका विशेष विस्तार इनही तीनों महाशयोंके लिखे (अधिक मासकी गिनती निषेध सम्बन्धी पूर्वापरविरोधि) लेखोंकी आगे समीक्षा होगी वहां लिखनेमें आवेगा ।

अब देखिये बड़ेही आश्चर्यकीबातहै कि श्रीतपगच्छके इतने विद्वान् मुनीमंडली वगैरह महाशय उपरोक्त व्याख्याओंको हर वर्ष पर्युषणाके व्याख्यानमें बांचते हैं इसलिये उपरोक्त पाठार्थोंको भी जानते हैं तथापि मिथ्या हठवादसे भोले जीवोंको कदाग्रहमें गेरनेके लिये पौष अथवा आषाढ़के अधिक होनेसे उसीकी गिनती पूर्वक जैनपंचांगानुसार प्राचीनकालमें आषाढ चौमासीसे बीस दिने श्रावण सुदीमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्युषणा होती थी परन्तु जैन पंचांगके अभावसे वर्त्तमान-कालमेंभी लौकिक पंचाङ्गानुसार अधिक मास होनेसे उसीकी गिनती पूर्वक ५० दिने दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रमें पर्युषणा करनेकी पूर्वाचार्योंकी मर्यादा है ऐसा उपरोक्त पाठार्थोंसे खुलासा दिखता है तथापि उपरोक्त पाठार्थोंका भावार्थ बदला करके मासवृद्धिके अभावसे ५० दिने भाद्रपदमें पर्युषणा कही है उसीकोही वर्त्तमानमें मासवृद्धि दो श्रावण होते भी ८० दिने जिनाज्ञा विरुद्धका भय न करते हुए भाद्रपदमें ठहरानेका वृथा आग्रह करते हैं सो क्या लाभ प्राप्त करेंगे। तथा उपरोक्त व्याख्याओंमें "अभिवर्द्धित वर्षे" इस शब्दसे श्रीखरतरगच्छके श्रीसमयसुंदरजी तथा श्रीतपगच्छके श्रीकुलमंडनसूरिजी श्रीधर्मसागरजी श्रीजयविजयजी श्रीविनयविजयजी इन सबी महाशयोंके लिखे वाक्यसे अधिक मासकी गिनती प्रत्यक्षपने सिद्ध है इसलिये अधिकमासकी गिनती निषेध भी नहीं हो सकती है तथापि कोई निषेध करेगा तो उत्सूत्र भाषणरूप होनेसे श्रीअनंत तीर्थंकर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंकी और अपनेही गच्छके पूर्वजोंकी आज्ञा उल्लंघनका दूषण लगेगा क्योंकि श्रीअनंत तीर्थंकर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंने तथा श्रीखरतरगच्छके और श्रीतपगच्छादिके पूर्वजोंने अधिकमासके दिनोंकी गिनती पूर्वक तेरह मासोंका अभिवर्द्धितसंवत्सर कहा है इसका विस्तार आगे शास्त्रोंके पाठार्थों सहित तथा युक्ति पूर्वक लिखनेमें आवेगा—

और भी श्रीपार्श्वचंद्रगच्छके श्रीब्रह्मर्षिजी कृत श्रीदशाश्रुतस्कन्ध सूत्रकी वृत्तिके पृष्ठ ११२ से ११५ तकका पर्युषणा सम्बन्धी पाठ यहां दिखाता हूं तथाच तत्पाठ :—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तेणं कालेणं तेणं समएणमित्यादि। व्याख्यातार्थः वासावर्त्ति आषाढ़चातुर्मासिक दिनादारभ्य सविंशति रात्रेमासे व्यतिक्रान्ते भगवान् "पज्जोसवेइति" पर्युषणामकार्षीत्। परिसामस्त्येन उषणं निवासः। इत्युक्तेशिष्यःप्रश्नयितुमाह सेकेणट्ठेणमित्यादि प्रश्नवाक्यंसुबोधं गुरुराह। जउणमित्यादि निर्वद्धवाक्यं यतः णंप्राग्वत् पएणमित्यादि अगारिणां गृहस्थानां, अगाराणि गृहाणिः, कडियाइंत्ति कठयुक्तानि,उक्कं-पियाइं-धवलितानि, छन्नाइं-तृणादिभिः, लित्ताइं-लिप्तानि छगणाद्यैःक्वचित् गुत्ताइंत्ति पाठ स्तत्र गुप्तानि वृत्तिकरणं द्वारपिधानादिभिः,घट्ठाइं विषमभूमिभंजनात्,मट्ठाइंश्लक्ष्णीकृतानि क्वचित्सम ट्ठाइंतिपाठ स्तत्र समन्तात् मृष्टानि मसृणीकृतानि, संधूपियाइंति सौगन्ध्यापादनार्थं धूपनैर्वासितानि, खातोदगाइं कृतप्रणालीरूपजलमार्गाणि, खायनिद्धमणाइं-निद्धमणं खाळं गृहात्सलिलं येन निर्गच्छति, अप्पणोअट्ठाए आत्मार्थं स्वार्थं गृहस्थैः कृतानि परिकर्मितानि करोति, कायइं करोतीत्यादि विविधपरिकर्म्मार्थत्वात्, परिभुतानि तैः स्वय परिभुज्यमानत्वात्, अतएव परिणामितानि अचित्तीकृतानि भवन्ति, ततः सविंशतिरात्रे मासे गते अमी अधिकरणदोषा न भवन्ति। यदि पुनः प्रथममेव साधवः स्थितास्म इति ब्रयुस्तदा ते प्रव्रजितानामवस्थानेन सुभिक्षं सम्भाव्यं गृहिणास्तप्तायो गोलकल्पा दंताल क्षेत्रकर्षण, गृहच्छादनादीनि कुर्युः, तथा चाधिकरणदोषा अतः पञ्चाशद्दिनैः स्थिता स्म इति वाच्यं, गणहराविति गणधरापि एवमेवाकार्षु, अज्जत्ताए इति अद्यकालीना आर्य्यतया व्रतस्थविरा इत्येके,अम्हंपित्ति अस्माकमपि आचार्य्योपाध्याया, अम्हेविति वयमपीत्यर्थः॥ अन्तरा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वियसे कप्पइ इत्यादि अन्तरापि च अर्वागपि कल्पते युज्यते पर्यु षितुं परं न कल्पते तां रजनीं भाद्रपदशुक्लपञ्चमीं उवायणा वित्तएति अतिक्रमितुं।उष निवासे इत्यागमिको धातुः पर्युषितुं वस्तुमिति सूत्रार्थः॥ अत्र अन्तरा वियसे कप्पइ इति कथनात् पर्युषणा द्विधा सूचिता, गृहिज्ञाताज्ञातभेदात्। तत्र गृहिणामज्ञाता यस्यां, वर्षायोग्य पीठफलकादौ प्राप्ते यत्नेन कल्पोक्त-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव स्थापना क्रियते, सा आषाढ़ शुक्लपौर्णमास्यां, योग्यक्षेत्राभावेतु पञ्च पञ्च दिन वृद्धया यावद्भाद्रपदसितपञ्चम्यां सा चैकादशसु पर्वतिथिषु क्रियते। गृहिज्ञाता तु यस्यां सांवत्सरिकातिचारालोचनं, लुंचनं, पर्युषणा कल्पसूत्राकर्णनं, चैत्यपरिपाटी, अष्टमं, सांवत्सरिकंप्रतिक्रमणं च क्रियते, यया च व्रतपर्य्याय वर्षाणि गणयन्ते सा नभस्य शुक्लपञ्चम्यां, एतावता यदा भाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां सांवत्सरिकप्रतिक्रमणं कृतं ततः ऊर्द्धन्तु न कल्पते विहर्तुं, ततस्तदवधि विहर्त्तव्यं। अन्तरापिचैकादशसु पर्वतिथिषु क्रियते निवासो नतु प्रतिक्रमणं। कैश्चिदुच्यते यत्र वासस्तत्रैव प्रतिक्रमणमपि द्यं, यदियत्रैव वासस्तत्रैव प्रतिक्रमणंचेत्तर्ह्याषाढ़शुक्ल पञ्चदश्यामपि तत्कर्त्तव्यं न चैवं दृष्टमिष्टं वा, ततो नियत निवासएव वासोयुक्त इति परमार्थः। अमुमेवार्थं श्रीसुधर्मस्वामिव्यासः प्रतिपादयति। श्रीसमवायांगे यथा समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइ राए मासे विइक्कन्ते सत्तरिएहिंराइंदिएहिंसेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइत्ति। व्याख्यातु समणे इत्यादि वर्षाणां चातुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवसाधिके मासे व्यतिक्रान्ते पञ्चाशतिदिनेष्वतीतेष्वित्यर्थः। सप्तत्यां च रात्रि दिवसेषु शेषेषु संवत्सरप्रतिक्रम-

कल्प यस्मिन्दिवसे भाद्रपदशुक्लपञ्चम्यामित्यर्थः । वर्षास्वावासो वर्षावासः वर्षावस्थानं 'पज्जोसवेइत्ति' परिवसति सर्वथा करोति पञ्चाशद्दिनेषु व्यतिक्रान्तेषु तथाविध वसत्यभावादि कारणे स्थानान्तरमप्याश्रयति, परं भाद्रपदशुक्लपञ्चमयां तु वृक्षमूलादावपि निवसतीति हृद्यं । चन्द्रसंवत्सरस्यैवायं नियमः नाभिवर्द्धितस्येत्यादि । तथाहि निर्युक्तिकारः—एत्थउ पणगं पणगंकारणीयं जाव सवीसइमासो ॥ सुद्धदसमी ठियाणआसाढीपुण्णिमो सरणं ॥१॥ इयसत्तरी जहण्णा असीइ णउइं दसुत्तर सयंच ॥ जइ वास मग्गसिरे दसरायातिणि उक्कोसा ॥२॥ काउण मासकप्पं तत्थेव ठियाण जइवास मग्गसिरे सालंबणाणं छम्मासितो जेठोग्गहोहोइ ॥३॥ सुगमाश्चेमा नवरमाद्यगाथा द्वयस्य चूर्णिः ॥ आसाढपुण्णिमाए ठियाण जति तण डगलादीणि गहियाणि पज्जोसवणाकप्पो य कहितो तो सावणबहुल पञ्चमीए पज्जोसवेंति । असति खेत्ते सावणबहुलदसमीए । असति खेते सावणबहुलपन्नरसीए एवं पञ्च पञ्च उस्सारं तेणं जाव असतिखेते भद्दवयसुद्धपञ्चमीए । अतोपरेण ण वहति अतिकमितुं आसाढपुण्णिमा तो आढत्तं मग्गंताणं जाव भद्दवय जोण्हस्स पञ्चमीए एत्थन्तरे जतिवासखेतं ण लद्धं ताहे रुक्खसहेट्ठे ठितो तोवि पज्जोसवेयव्वं एतेसु पव्वेसु जहालंभे पज्जोसवेयव्वमिति अपव्वे ण वहति अत्र पूर्वोक्तानि एकादशपर्वाणि अन्यानि तु वसतिमाश्रित्य अपर्वाणि ज्ञेयानि संवत्सरप्रतिक्रमणं तु भाद्रपदशुक्लपञ्चम्यामेवेति द्रव्य क्षेत्र काल भाव स्थापना तु सम्प्रत्यध्ययने दर्शितैवेति न पुनरुच्यते ततएवावसेया । नवरं कल्पमाश्रित्य जघन्यतो नभस्य सितपञ्चम्यारारभ्य कार्तिकचातुर्मासंयावत् सप्ततिदिनमानं एतावता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यद्वा कृत्वा अहोरात्रेण चातुर्मासिकंप्रतिक्रमणं विहितं तद्नन्तरं प्रत्यूषे विहर्त्तव्यं कारणान्तराभावे। तत्सद्भावे तु मार्गशीर्षेणापि सह आषाढ़ मासेनापि च सह षण्मासा इति : यत् पुनरभिवर्द्धितवर्षे दिन विंशत्या पर्युषितव्यमिति, उच्यते तत्सिद्धान्त टिप्पनानुसारेण तत्र हि प्रायो युगमध्ये पौषो युगान्ते चाषाढ़एववर्द्धते तानि च नाधुना सम्यग् ज्ञायन्ते अतो लौकिकटिप्पनानुसारेण यो मासो यत्र वर्द्धते स तत्रैव गणयितव्यः नान्याकल्पनाकार्य्या दूष्टं परित्यज्याऽदृष्टकल्पनानसङ्गता आम्नाया ऽपरिज्ञानात्तु कल्पनापि न निश्चयितव्येति सांप्रतं तु कालकाचार्य्याचरणाच्चतुर्थ्यामपि पर्युषणां विदधति इत्यादि ।

देखिये, ऊपरके पाठमें श्रीसमवायाङ्गजी यथा तद्वृत्ति और श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रकी निर्युक्ति तथा उसीकी चूर्णिके पाठोंके प्रमाण पूर्वक दिनोंकी गिनतीसे आषाढ़ चौमासीसे ५० वें दिन मासवृद्धिके अभावसे चन्द्रसंवत्सरमें निश्चय निवास पूवक ज्ञात पर्युषणामें सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करनेका प्रगटपने खुलासे दिखाया है और योग्य क्षेत्रके अभावसे ५० वें दिनकी रात्रिको भी उल्लंघन न करते हुए जंगलमें वृक्ष नीचे पर्युषणा करलेनेका भी खुलासा लिखाहै और चन्द्रसंवत्सरमें ५० दिने पर्युषणा करनेसे कार्त्तिक तक स्वभावसेही ७० दिन रहते हैं सो जघन्यकालावग्रह कहा जाता है और प्राचीनकालमें जैन पंचाङ्गानुसार पौष वा आषाढ़की वृद्धि होनेसे अभिवर्द्धितसंवत्सरमें आषाढ़ चौमासीसे वीस दिने श्रावण सुदीमें ज्ञात पर्युषणा करनेमें आती थी तब भी पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक स्वभावसेही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१०० दिन रहते थे इसलिये वर्त्तमानमें मास वृद्धि दो श्रावणादि होते भी पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन रखनेका आग्रह करना सो अज्ञानतासे प्रत्यक्ष अनुचित है और जैन पंचाङ्ग इस कालमें अच्छी तरहसे नहीं जाना जाता है इसलिये उसीके अभावसे लौकिक पंचाङ्गानुसार जिस महीनेकी जिस जगह वृद्धि होवे उसीकोही उसी जगह गिनना चाहिये परन्तु अन्य कल्पना नहीं करनी, अर्थात् जैन पञ्चाङ्गके अभावसे लौकिक पञ्चाङ्गानुसार पौष, आषाढ़के सिवाय चैत्र, श्रावणादि मासोंके वृद्धिकी गिनती निषेध करनेके लिये गच्छाग्रहसे अपनी मति कल्पना करके अन्यान्य कल्पनायें भी नहीं करनी चाहिये क्योंकि लौकिक पंचाङ्गानुसार चैत्र, श्रावणादि मासोंकी वृद्धि होनेका प्रत्यक्ष प्रमाणको छोड़ करके पौष आषाढ़की वृद्धि होनेवाला जैन पंचाङ्ग वर्त्तमानमें प्रचलित नहीं होते भी उसी सम्बन्धी मास वृद्धिका अप्रत्यक्ष प्रमाणको ग्रहण करनेका आग्रह करना सो भी योग्य नहीं है क्योंकि जैन पचाङ्गके अभावसे लौकिक पंचाङ्गानुसार वर्ताव करते भी उसी मुजब मास वृद्धिकी गिनती नहीं करना एसा कोई भी शास्त्रका प्रमाण नहीं होनेसे गच्छाग्रहकी युक्ति रहित कल्पना भी मान्य नहीं हो सकती है और आषाढ़ चौमासीसे ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करना सो तो शास्त्रोक्त प्रमाण पूर्वक तथा युक्ति सहित प्रसिद्ध न्यायकी बात है।

और अब प्राचीनकालमें जैन पंचाङ्गानुसार पर्युषणा की मर्यादावाला एक पाठ वांचक वर्गको ज्ञात होनेके लिये दिखाता हूं श्रीचैत्रवालगच्छके श्रीजगचंद्र सूरिजीकी परंपरामें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्त्ति सूरिजी कृत श्रीबृहत्कल्पसूत्रकी वृत्तिका तीसरा खण्डका तीसरा उद्देशाके पृष्ठ ५८ से ५९ तकका पाठ नीचे मुजब जानो, यथा—

अथ यस्मिन् काले वर्षावासे स्थातव्यं यावन्तं वा कालं येन विधिना तदेतदुपदर्शयति । आसाढ़पुण्णिमाए वासावाससु होति अतिगमणं मग्गसिरबहुल दसमीउ जावएक्कंमि खेत्तंमि ॥ आषाढ़पूर्णिमायां वर्षावास प्रयोग्य क्षेत्रे गमनं प्रवेशः कर्त्तव्यं भवति तत्र चापवादतो मार्गशीर्ष बहुलदशमी यावदेकत्र क्षेत्रे वस्तव्यं एतच्च चिक्खिल्ल वर्षादिकं वक्ष्यमाणं कारणमङ्गीकृत्योक्तं, उत्सर्गतस्तु कार्त्तिकपूर्णिमायां निर्गन्तव्यं इदमेव भावयति ॥ बाहिट्ठिया वसभेहिं खेत्तंगाहितु वास पाउग्गं कप्पंकथेतुठ्ठवणा सावणबहुलस्स पञ्चाहे ॥ यत्राषाढ़मासकल्पं कृतस्तत्रान्यत्र वा प्रत्यासन्नग्रामेस्थिता वर्षावासयोग्यक्षेत्रेवृषभासाधुसामाचारीं ग्राहयन्ति, तेच वृषभा वर्षा प्रयोग्यं संस्तारकं तृण डगल क्षार मल्लकादिकमुपधिं गृह्णन्ति, तत आषाढ़पूर्णिमायां प्रविष्टाः प्रतिपदमारभ्य पञ्चभिरहोभिः पर्युषणा कल्पं कथयित्वा श्रावण बहुल पञ्चम्यां वर्षाकाले सामाचार्याःस्थापनां कुर्वन्ति पर्युषयन्तीत्यर्थ :॥ इत्थय अणभिग्गहिय वीसतिरायं सवीसइ मासं तेण परमभिग्गहियं गाहिणायं कत्तिओजाव ॥ अत्रेत्ति श्रावण बहुल पञ्चम्यादौ आत्मना पर्युषितेऽपि अनभिग्रहीतमनवधारितं गृहस्थानां पुरतः कर्त्तव्यं किमुक्तं भवति यदि गृहस्थाः पृच्छेयुरार्यायूयमत्र वर्षाकाले स्थितावा न वेति एवं पृष्टे सति स्थितावयमत्रेति सावधारणं न कर्त्तव्यं, किन्तु तत्संदिग्धं, यथा नाद्यापि निश्चितः स्थिता अस्थिता वेति, इत्यमनभिगृहीतं कियन्तं कालं वक्तव्यं उच्यते

यद्यभिवर्द्धितो सौ संवत्सरस्ततो विंशतिरात्रि दिनानि,अथ चान्द्रोसौ ततः स विंशतिरात्रं मासं यावदनभिगृहीतं कर्त्तव्यं, तेण विभक्ति व्यत्यया ततः परं विंशति रात्र मासा चोर्द्ध्वमभिगृहीतं निश्चितं कर्त्तव्यं गृहिज्ञातञ्च गृहस्थानां पञ्चतां स्थापना कर्त्तव्या, यथा वयमत्र वर्षाकालेस्थिता एतच्च गृहिज्ञातं कार्त्तिकमासं यावत् कर्तव्यं किं पुनः कारणम् कियति काले व्यतीत एव गृहिज्ञातं क्रियते नार्वागित्यत्रोच्यते ॥ असिवाइ कारणेहिं अहवा वासं ण सुट्ठु आरद्धं अभिवट्ठियंमि वीसा इयरेसु सवीसइ मासो ॥ कदाचित्तत्क्षेत्रे अशिवं भवेत् आदिशब्दात् राजदुष्टादिकं वा भयमुपजायेत एवमादिभिः कारणै, अथवा तत्र क्षेत्रे न सुष्टु वर्षं वर्षितुमारब्धं येन धान्यनिष्पत्तिरुपजायते ततश्च प्रथममेव स्थिता वयमित्युक्ते पश्चादशिवादि कारणे समुपस्थिते यदि गच्छन्ति ततो लोको ब्रूयात् अहो एते आत्मानं सर्वज्ञ पुत्र तयाख्यापयन्ति परं न किमपि जानन्ति मृषावादं वा भाषन्ते स्थिता स्म इति भणित्वा सम्प्रति गच्छन्तीति । अथाशिवादि कारणेषु सञ्जातेषु अपि न गच्छंति तत आज्ञाऽतिक्रमणादि दोषा अपिच स्थिता स्म इत्युक्ते गृहस्थाश्चिन्तयेयुरवश्यं वर्षं भविष्यति येनेति वर्षा रात्रमत्र स्थिताः ततो धान्यंविक्रीणीयुः गृहं वाच्छादयेयुः हलादीनि वा स्थापयेयुः यतएव मतो अभिवर्द्धितवर्षे विंशतिरात्रे गते इतरेषु च त्रिषु चन्द्रसम्वत्सरेषु सविंशतिरात्रे मासे गते गृहिज्ञानं कुर्वन्ति ॥ एत्थय पणगं पणगं कारणीयं, जाव सवीसइ मासो, सुद्ध दसमी ठियाण,आसाढीपुण्णिमोसरणं ॥ अत्रेति आषाढ़पूर्णिमायां स्थिताः पञ्चाहं यावदेव संस्तारकं डगलादि गृह्णन्ति

रात्री च पर्युषणाकल्पं कथयन्ति ततः श्रावण बहुलपञ्चम्यां पर्युषणां कुर्वन्ति, अथाषाढपूर्णिमायां क्षेत्रं न प्राप्तास्तत एवमेव पञ्चरात्रं वर्षावास प्रयोग्यमुपधिं गृहीत्वा पर्युषणा कल्पं च कथयित्वा श्रावणबहुलदशम्यां पर्युषणयन्ति एवं कारणेन रात्रि दिवानां पंचकं पंचकं वर्द्धयता तावत्स्थेयं यावत् सविंशति रात्रो मासः पूर्णः। अथवा ते आषाढशुद्ध दशम्यामेव वर्षाक्षेत्रे स्थितास्ततस्तेषां पंचरात्रेण डगलादौ गृहीते पर्युषणा कल्पे च कथिते आषाढ पूर्णिमायां समवसरणं पर्युषणं भवति एषउत्सर्गः॥ अत ऊर्द्ध्वं कालं पर्युषणमनुतिष्ठतां सर्वोऽप्यपवादः। अपवादेऽपि सविंशतिरात्रात् मासात् परतो नातिक्रमयितुं कल्पते यद्येतावत्कालेऽपि गते वर्षायोग्यक्षेत्रं न लभ्यते ततो वृक्षमूलेऽपि पर्युषितव्यं॥ अथ पंचक परिहाणिमधिकृत्य ज्येष्ठकल्पावग्रहप्रमाणमाह। इयसत्तरी जहन्ना असीइ णउई दसुत्तरसयं च जइवास मग्गसिरे दसराया तिन्नि उक्कोसा॥ इयइति उपदर्शने ये किलाषाढपूर्णिमायाः सविंशतिरात्रे मासे गते पर्युषयन्ति तेषां सप्ततिदिवसानि जघन्यो वर्षा वासावग्रहो भवति, भाद्रपदशुद्धपंचम्यानन्तरं कार्तिकपूर्णिमायां सप्ततिदिनसद्भावात्। एवं भाद्रपदबहुलदशम्यां पर्युषयन्ति तेषामशीतिर्दिवसा मध्यमो वर्षाकालावग्रहः। श्रावणपूर्णिमायां नवतिर्दिवसाः। श्रावण बहुलदशम्यां दशोत्तरशतं दिवसा मध्यमएवकालावग्रहो भवति॥ समवायांगेनुक्तमपि इत्थं वक्तव्यं। भाद्रपदामावास्यायां पर्युषणे क्रियमाणे पंचसप्ततिदिवसाः। भाद्रपदबहुलपंचम्यां पंचाशीति। श्रावणशुद्धदशम्यां पंचनवतिः। श्रावणामावस्यां पंचोत्तरशतं। श्रावण बहुलपंचम्यां पंचदशोत्तरशतं। आषाढ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूर्णिमायां तु पर्युषिते विंशत्युत्तरं दिवसशतं भवति ॥ एव मेतेषां प्रकाराणां वर्षावासानामेकक्षेत्रे स्थित्वा कार्त्तिक चातुर्मासिक प्रतिपदि निर्गन्तव्यं। अथ मार्गशीर्षे वर्षा भवति कर्द्दमजलाकुलाः पन्थानः ततोऽपवादेनैक दशरात्रं भवतीति। अथ तथापि वर्षा नोपरते ततो द्वितीय दशरात्रं तथा सति अथैव मपि वर्षा न तिष्ठति ततस्तृतीयमपि दशरात्रमासेवेत एव त्रीणि दशरात्राणि उत्कर्षतस्तत्र क्षेत्रे आसितव्यं मार्गशिर पौर्णमासीं यावदित्यर्थः ॥ तत ऊर्द्धं यद्यपि कर्द्दमाकुला पंथानो वर्षं वा गाढमनुपरतं वर्षति यद्यपि च पानीयैः पूर्य्यमाणैस्तदानीं गम्यते तथापि अवश्यं निर्गन्तव्यं एवं पञ्चमासिको ज्येष्ठकल्पावग्रहः सम्पन्नः ॥ अथ तमेव षाण्मासिकमाह। काउण मासकप्पं तत्थेव ठियाण जइवास मग्गसिरे सालंबणाणं छम्मासिओ जेट्ठो ग्गहोहोइत्ति। यस्मिन् क्षेत्रे आषाढमास कल्पकृतः तदन्यद्वर्षावासयोग्य तथाविधं क्षेत्रं न प्राप्तं ततो मासकल्पं कृत्वा तत्रैव वर्षावासं स्थितानां ततश्चातुर्मासानन्तरं कर्द्दमवर्षादिभिः कारणैरतीते मार्गशीर्षमासे निर्गतानां षाण्मासिको ज्येष्ठकल्पावग्रहो भवति एकक्षेत्रे अवस्थानमित्यर्थः ॥

देखिये ऊपरके पाठमें अधिकरण दोषोंका निमित्तकारण। और कारण योगे गमन करना पड़े तो साधुधर्मकी अवहेलना न होनेके लिये वर्षायोग्य उपधिकी प्राप्ति होनेसे योग्यक्षेत्रमें अज्ञात याने गृहस्थी लोगोंकी नहीं जानी हुई अनिश्चित पर्युषणा स्थापन करे वहां उसी रात्रिको पर्युषणा कल्प कहे (श्रीकल्पसूत्रका पठन करे) और योग्यक्षेत्रके अभावसे पांच पांच दिनकी वृद्धि करते चन्द्रसंवत्सरमें ५० दिन तक तथा अभिवर्द्धित संवत्सरमें २० दिनतक अज्ञात पर्युषणा करे परन्तु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२० ईदिने तथा ५० दिने ज्ञात यानें गृहस्थी लोगोंको जाणी हुई प्रसिद्ध पर्युषणा करे सो यावत् कार्त्तिकतक उसी क्षेत्रमें ठहरे और जघन्यसे ७० दिन, तथा मध्यमसे १२० दिन और उत्कृष्टसे १८० दिनका कालावग्रह होता है ।

और भी पर्युषणा सम्बन्धी-भाष्य, चूर्णि, वृत्ति, समाचारी, तथा प्रकरणादि ग्रन्थोंके अनेक पाठ मौजूद हैं परन्तु विस्तारके कारणसे यहां नहीं लिखता हूं। तथापि श्रीदशाश्रुत स्कन्ध सत्रकी चूर्णि, श्रीनिशीथचूर्णि, श्रीबृहत्कल्पचूर्णि वगैरह कितनेही शास्त्रोंके पाठ आगेप्रशांगोंपात लिखनेमें भी आवेंगे ।

अब मेरा सत्यग्रहणाभिलाषी श्रीजिनाज्ञा इच्छुक सज्जन पुरुषोंको इतनाही कहना है कि वर्त्तमानकालमें जैन पञ्चाङ्गके अभावसे लौकिक पञ्चाङ्गानुसार जिस मासकी वृद्धि होवे उसीके ३० दिनोंमें प्रत्यक्ष पने सांसारिक तथा धार्म्मिक व्यवहार सब दुनियांमें करनेमें आता है तथा समय, आवलिका, मुहुर्त्तादि शास्त्रोक्त कालके व्यतीतकी व्याख्यानुसार और सूर्योदयसे तिथि वारोंके परावर्तन करके दिनोंकी गिनती निश्चयके साथ प्रत्यक्ष सिद्ध है तथापि उसीकी गिनती निषेध करते हैं सो निष्केवल हठवादसे संसारवृद्धिकारक उत्सूत्र भाषणरूप बाल जीवोंको मिथ्यात्वमें गेरनेके लिये वृथा प्रयास करते हैं इसलिये अधिक मासके दिनोंकी गिनती पूर्वक उपरोक्त व्याख्याओंके अनुसार आषाढ़ चौमासीसे ५० दिने दूसरे श्रावणमें वा प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करना सो श्रीजिनाज्ञाका आराधनपना है। इसलिये-मैं-प्रतिज्ञा पूर्वक आत्मार्थियोंको कहता हूं कि-वर्त्तमानिक श्रीतपगच्छके मुनिमण्डली वगैरह विद्वान् महाशय पक्षपात रहित हो करके विवेक बुद्धिसे उपरोक्त श्रीकल्पसूत्रकी व्याख्याओंका तात्पर्यार्थको विचारेंगे तो मासवृद्धि होनेसे अपने पूर्वजोंकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मर्यादाके प्रतिकूल तथा पञ्चाङ्गीके प्रमाणोंके भी विरुद्ध होकरके गच्छाग्रहके पक्षपातसे दो श्रावण होते भी प्रत्यक्षपने ८० दिने भाद्रपदमें पर्युषणा करनेका वृथा आग्रह कदापि नहीं करेंगे। और उपरोक्त शास्त्रानुसार तथा युक्ति पूर्वक ५० दिने दूसरे श्रावणमें वा प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करनेवाले श्रीजिनाज्ञाके आराधक पुरुषों पर द्वेष बुद्धिसे वृथा उत्सूत्र रूप मिथ्याभाषणसे आज्ञा भङ्गका दूषण लगाकर बाल-जीवोंको भ्रममें गेरनेका साहस भी कदापि नहीं करेंगे।

और फिर अपनी चातुराईसे आप निर्दूषण बननेके लिये जैन शास्त्रोंमें अधिक मासको गिनतीमें नहीं गिना है ऐसा उत्सूत्र भाषणरूप कहके अज्ञजीवोंके आगे मिथ्यात्व फैलाते हैं उसीका निवारण करनेके लिये और भव्य जीवोंको निःसन्देह होनेके लिये इसजगह अधिक मासकी गिनतीके प्रमाण करने सम्बन्धी पञ्चाङ्गीके अनेक प्रमाण यहां दिखाता हूं।

श्रीसुधर्मस्वामीजी कृत श्रीचन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्रमें १, तथा श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रमें २, औरसंवत् १३०० के अनुमान श्रीमलयगिरिजी कृत उपरोक्त दोनों सूत्रोंकी दोनों वृत्ति-योंमें ४, श्रीभद्रबाहुस्वामिजीकृत श्रीदशवैकालिकसूत्रके चूलिकाकी निर्युक्तिमें ५, तथा श्रीहरिभद्रसूरिजी कृत तत् निर्युक्तिकी बृहद्वृत्तिमें ६, श्रीनिशीथसूत्रके लघुभाष्यमें, बृह-द्भाष्यमें ७, चूर्णिमें ८ श्रीबृहत्कल्पके लघुभाष्यमें, बृहद्भाष्यमें ९, चूर्णिमें १० और वृत्तिमें ११ श्रीसमवायांगजीमें १२, तथा तद्वृत्तिमें १३ औरश्रीस्थानांगजीसूत्रकी वृत्तिमें १४, श्रीनेमीचन्द्रसूरिजी कृत श्रीप्रवचनसारोद्धारमें १५, श्रीसिद्ध-सेनसूरिजी कृत तत्सूत्रकी बृहद्वृत्तिमें १६, श्रीउदयसागरजी कृत तत्सूत्रकी लघुवृत्तिमें १७, श्रीजिनपतिसूरिजीकृत श्रीसमा-चारी ग्रन्थमें १८,श्रीसंघपट्टक लघुवृत्तिमें, बृहद्वृत्तिमें १९ श्रीजि नप्रभसूरिजी कृत श्रीविधिप्रपासमाचारीमें २० और श्रीसमय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुन्दरजी कृत श्रीसमाचारी शतकमें २१ और श्रीपाश्वचन्द्र गच्छके श्रीब्रह्मर्षिजी कृत श्रीदशाश्रुतस्कन्ध सूत्रकी वृत्तिमें २२ इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें अधिकमासको गिनतीमें प्रमाण किया हैं इसलिये जिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी पुरुष अधिकमासकी गिनती कदापि निषेध नहीं कर सकते हैं इस जगह भव्य जीवोंको निःसन्देह होनेके वास्ते थोड़ेसे अधिकमासकी गिनतीके विषयवाले पाठ लिख दिखाता हुं—

श्रीतपगच्छके पूर्वज कहलाते श्रीनेमिचन्द्र सूरिजी महाराज कृत श्रीप्रवचनसारोद्धार मूलसूत्र गुजराती भाषा सहित मुंबईवाले श्रावक भीमसिंह माणककी तरफसें श्रीप्रकरण रत्नाकरके तीसरे भागमें छपके प्रसिद्ध हुवा हैं जिसके पृष्ठ ३६४ सें ३६५ तक नीचे मुजब भाषा सहित पाठ जानो—

अवतरणः—मासाण पञ्चभेयत्ति एटले मासना पांच भेदोनुं एकसोने एकतालीसमुंद्वार कहे छे। मूलः—मासाय पंचसुत्ते, नरकत्त चंदीओय रिउमासो ॥ आइच्चोविये अवरो, भिवड्ढिओ तहय पंचमओ ॥९०४॥

अर्थः-सूत्र जे श्रीअरिहंत परमात्मानुं प्रवचन तेमे विषे मास पांच कह्या छे। तेमा प्रथमजे नक्षत्रनी गणनाये थाय तेनी रीतकहे छेः-चंद्रमा चारके० संचरतो जेटले काले अभिजितादिकथी विचरतो उतराषाढ़ा नक्षत्र सुधी जाय तेने प्रथम नक्षत्र मास कहिये। बीजो चंदिओयके० चंद्रथकीथाय ते अंधारा पड़वाथकी आरंभीने अजवाली पूर्णिमा सुधी चंद्रमास केहेवाये। त्रीजोरिओके० ऋतु ते लोक रूढ़िये साठ अहोरात्रीये ऋतु कहिये। तेनो अर्द्धमास एटले त्रीस अहो-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रात्री प्रमाणनो ते ऋतुमास जाणवो। चोथो, आदित्य जे सूर्य तेहनुं अयन एकसोने त्र्यासी दिवसनुं होय। तेनो छट्ठोभाग ते आदित्य मास कहिये। पांचमो अभिवर्द्धित ते तेर चंद्रमासे थाय। बार चंद्रमासे संवत्सर जांणवो परन्तु जेवारे एक वधे तेवारे तेने अभिवर्द्धित मास कहिये एनुंज प्रमाण विशेष देखाड़े छे। मूल.-अहरत्तसित्तवीसं तिसत्त सत्तट्ठि भाग नस्कतो॥ चंदोअ उगत्तीसं बसट्ठिभागाय बत्तीसं॥ ९०५॥

अर्थः-सतावीस अहोरात्री अने एक अहोरात्रीना अड़सठ भाग करिये तेवा एकवीस भागे अधिक एक नक्षत्र मासथाय। अने मासना उगणत्रीस अहोरात्री तेना उपर एक अहोरात्रिना बासठभाग करिये एवा बत्रीस भागे अधिक एक चंद्रमास थाय।

मूलः-उउमासो तीसदिणो, आइच्चोवि तीस होइ अद्धंच। अभिवड्ढिओअ मासो चउवीस सएण छेएण॥९०६॥ अर्थः-ऋतुमास ते संपूर्ण त्रीसदिवस प्रमाणनो जाणवो तथा आदित्यमास ते त्रीसदिवस अने उपर एक दिवसना साठिया त्रीसभाग करिये तेटला प्रमाणनो जांणवो। अने अभिवर्द्धितमास ते चउवीसे अधिक एकशतछेद एटले भाग तेज देखाड़े छे॥ ९०६॥ मूलः-भागाणिगवीससयं, तीसाएगाहिया दिणाणंव। एएजह निप्पत्तिं, लहंति समयाऊतहनेयं॥ ९०७॥ अर्थः-ते पूर्वोक्त एकसोने चोवीसभाग एक अहोरात्रना करिये तेवा एकसो एकवीसभाग अने एकदिवसे अधिक त्रीस एटले एकत्रीस दिवस अर्थात् एकत्रीस दिवसने एक अहोरात्रीना एकसो चोवीसभाग मांहेला

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एकशोने एकवीसभाग उपर एटेलुं अभिवर्द्धित मासनुं प्रमाण जाणवुं एरीतिए पांचमासनी जेम निःष्पत्ति एटले प्राप्तिथाय छे तेसमयके० सिद्धान्त थकी जांणवी इति गाथाचतुष्टयार्थ ॥ ९०७ ॥ अवतरणः—वरिसाणपंचभेयत्ति एटले वर्षना पांचभेदनुं एकशोनें बेतालीसमु द्वार कहे छे ।

मूलः—संवछराउ पंचउ "चंदे चंदे भिवड्ढिए चेव । चंदे भिवड्ढएतह बासट्ठिमासे हि जुगमाणं ॥९०८॥ अर्थः—चंद्रादिक संवत्सर पांचकह्याछे तेमा पूर्वोक्त चंद्रमासे जे नीपन्योते चंद्रसंवत्सर जांणवो । तेनु प्रमाण त्रणसे चोपनदिवस अने एक दिवसना बासठभाग करिये तेवा बारभाग उपर जाणवा तेमज बीजा चंद्रसंवत्सरनुं पण मानजाणवुं । हवे चंद्रसंवत्सर थी एक अधिकमास थाय ऐटले तेने अभिवर्द्धित संवत्सरजांणवो तेनु प्रमाण त्रणसे त्र्यासीदिवस अने एक दिवसना बासठभाग करी तेमांना चुमालीसभाग एवो एक अभिवर्द्धित संवत्सर जाणवो एकत्रीश अहोरात्र अने एकदिवसना एकशो चोवीसभाग करिये तेमांहिला एकशो एकवीसभाग उपर ए अभिवर्द्धित मासनुं मान जाणवुं । हवे पूर्वोक्त माने अभिवर्द्धित संवत्सर बे अने चंद्रसंवत्सर त्रण एवा पांच संवत्सरे एक युगमान थाय छे ते बासठचंद्रमास प्रमाणक छे । सारांश एकयुगमां त्रण चांद्रसंवत्सर ते चांद्रसंवत्सरना प्रत्येक बारमास मली छत्रीस चांद्रमास अने बे अभिवर्द्धित संवत्सर तेमां एक अभिवर्द्धित संवत्सरना तेरे चांद्रमास ए प्रमाणे बीजा वर्षना पण तेरे मली एकंदर छत्रीसमास अने पूर्वोक्त चांद्रमास छत्रीस मलीने बासठ चांद्रमासे एक युगनुं मानथाय ॥ ९०८ ॥ इति—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखिये उपरमें श्रीतपगच्छके पूर्वज श्रीनेमिचंद्रसूरिजीनें अधिक मासकी गिनती मंजूर करके तेरह चंद्रमाससे अभिवर्द्धित संवत्सर कहा और एकयुगके बासठ (६२) मासकी गिनती दिखाइ अधिक मासके दिनोंकी भी गिनती खुलासें लिखी हैं इस लिये वर्तमानमें श्रीतपगच्छवाले महाशयोंको अपने पूर्वजके प्रतिकुल होकर अधिकमासकी गिनती निषेध करनी नही चाहिये किन्तु अधिकमासकी गिनती अवश्यमेव मंजूर करनी योग्य हैं ।

औरसुनिये—श्रीमलयगिरिजी कृत श्रीचंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र वृत्तिके पृष्ठ ९९ से १०० तक तत्पाठ—

युगसंवत्सरो युगपूरकः संवत्सरः पंचविधः प्रज्ञप्तस्तद्यथा। चंद्रश्चांद्रोऽभिवर्द्धितश्चैव उक्तंच चंदो चंदो अभिवड्ढितोय, चंदो अभिवड्ढितो चेव। पंचसहियं जुगमिणं, दिट्ठंते लोक्कदंसीहिं ॥ १ ॥ पढम विइयाउ चंदातइयं अभिवड्ढियं वियाणाहिं। चंदे चेव चउत्थं पंचममभिवड्ढियं जाण ॥ २ ॥ तत्र द्वादशपूर्णमासी परावर्त्ता यावता कालेन परिसमाप्ति मुपयाति तावत्काल विशेषश्चंद्रसंवत्सरः। उक्तंच। पुन्निम परियट्टा पुण बारस मासे हवइ चंदो। एकश्च पूर्णमासी परावर्त्त एकश्चंद्रोमासस्तस्मिंश्च चंदे मासेऽहोरात्र परिमाण चिंतायामेकोनत्रिंशदहोरात्रा द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टि भाग अहोरात्रस्य एतत् द्वादशभिर्गुण्यते जातानि त्रीणि शतानि चतुःपञ्चाशदधिकानि रात्रिंदिवानां द्वादशच द्वाषष्टिभागा रात्रिंदिवसस्य एवं परिमाणश्चांद्रः संवत्सरः तथा यस्मिन् संवत्सरे अधिकमास सम्भवेन त्रयोदश चंद्रस्य मासा भवंति सोऽभिवर्द्धित संवत्सरः ॥ उक्तंच ॥ तेरसय चंद्रमासा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वासो अभिवड्ढिओय नायव्वो । एकस्मिन् चंद्रमासे अहो-रात्रा एकोनत्रिंशद् भवन्ति द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागस्य अहो-रात्रस्य एतच्चानन्तरं चोक्तं तत एष राशिस्त्रयोदशभिर्गुणितो जातानि त्रीणि अहोरात्रशतानि त्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वा-रिंशच्च द्वाषष्टिभागा अहोरात्रस्य एतावदहोरात्रप्रमाणोऽभि-वर्द्धितसंवत्सर उपजायते कथमधिकमाससम्भवो येनाभिवर्द्धित संवत्सर उपजायते कियता वा कालेन सम्भवतीति उच्यते इह युगं चंद्राऽभिवर्द्धितरूप पञ्चसंवत्सरात्मकं सूर्य्यसंवत्सरा-पेक्षया परिभाव्यमान मन्यूनातिरिक्तानि पञ्चवर्षाणि भवन्ति सूर्य्यमासश्च सार्द्धत्रिंशदहोरात्रि प्रमाण चंद्रमास एकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा दिनस्य ततो गणितपरिभावनया सूर्य्यसंवत्सर सत्क त्रिंशन्मासातिक्रमे एकश्चांद्रमासोऽधिको लभ्यते तथाच पूर्वाचार्य्यप्रदर्शितेयं क-रण गाथा ॥ चंदस्स जो विसेसो आइच्चस्स य हविज्ज मासस्स तीसइ गुणिओ संतो हवइ हु अहिमासओ एक्को ॥१॥ अस्याऽक्षर-गमनिका आदित्यस्य आदित्य संवत्सरः सम्बन्धिनो मासस्य मध्यात् चंद्रस्य चंद्रमासस्य यो भवति विश्लेष इह विश्लेष कृते सति यदवशिष्यते तदुपचारात् विश्लेषः स त्रिंशता गुण्यते गणितः सन् भवत्येकोऽधिकमासः तत्र सूर्य्यमासपरि-माणात् सार्द्धत्रिंशदहोरात्ररूपात् । चन्द्रमासपरिमाणमेकोन-त्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा दिनस्येवं रूप शो-ध्यते तत स्थितं पश्चाद्दिनमेकमेकेन द्वाषष्टिभागेन न्यूनं तच्च दिनं त्रिंशता गुण्यते जातानि त्रिंशद्दिनानि एकश्च द्वाषष्टिभाग त्रिंशता गुणितो जातास्त्रिंशत् द्वाषष्टिभागाः ते त्रिंशद्दिनेभ्यः शोध्यन्ते ततस्थितानि शेषाणि एकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिं-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्च द्वाषष्टिभागादिनस्य एतावत्परिमाणश्चन्द्रमास इति भवति सूर्य्यसंवत्सर सत्क त्रिंशन्मासातिक्रमे एकोऽधिकमासो युगे च सूर्य्यमासाः षष्टिस्तो भूयोऽपि सूर्य्यसम्वत्सरः सत्क त्रिंशन्मासातिक्रमे द्वितीयोऽधिकमासो भवति। उक्तंच सट्ठीये अइयाए हवइ हु अहिमासगो जुगइंमि बावीसे पव्वसए हवइ हु बीओ जुगंतंमि ॥१॥ अस्याऽपि अक्षरगमनिका एकस्मिन् युगे अनन्तरोदित स्वरूपे पर्वणां पक्षाणां षष्टौ अतीताया षष्टिसंख्येषु पक्षेषु अतिक्रान्तेषु इत्यर्थः। एतस्मिन्नवसरे युगार्द्धे युगार्द्धप्रमाणे एकोऽधिकोमासो भवति द्वितीयस्त्वधिकमासो द्वात्रिंशत्यधिके पर्वशते अतिक्रान्ते युगस्यान्ते युगपर्य्यवसाने भवति तेन युगमध्ये तृतीयसंवत्सरे अधिकमासः पञ्चमे चेति द्वौ युगे अभिवर्द्धितसंवत्सरौ संप्रति युगे सर्वसंख्यया यावन्ति पर्वाणि भवन्ति तावन्ति निर्दिदिक्षुः प्रतिवर्षं पर्वसंख्यामाह। ता पढमस्सण मित्यादि ता इति तत्र युगे प्रथमस्य णमिति वाक्यालंकृतौ चन्द्रस्य संवत्सरस्य चतुर्विंशतिपर्वाणि प्रज्ञप्तानि द्वादशमासात्मको हि चान्द्रः संवत्सरः एकैकस्मिंश्च मासे द्वे द्वे पर्वणि ततः सर्वसंख्यया चन्द्रसंवत्सरे चतुर्विंशतिः पर्वाणि द्वितीयस्य चान्द्रसंवत्सरस्य चतुर्विंशतिः पर्वाणि भवन्ति अभिवर्द्धितसंवत्सरस्य षड्विंशतिः पर्वाणि तस्य त्रयोदशमासात्मकत्वात् चतुर्थस्य चान्द्रसंवत्सरस्य चतुर्बिंशतिः पर्वाणि पञ्चमस्याऽभिवर्द्धित संवत्सरस्य षड्विंशतिः पर्वाणि। कारणमनन्तरमेवोक्तं तत एवमेवोक्तेनैव प्रकारेण सपुव्वा वरेणंति पूर्वापर गणितमिलनेन पञ्चसांवत्सरिके युगे चतुर्विंशत्यधिकं पर्वशतं भवतीत्याख्यातं सर्वैरपि तीर्थकृद्भिर्मया चेति।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और भी इन महाराज कृत श्रीसूर्य्यप्रज्ञप्ति सूत्र वृत्तिके पृष्ठ १११ से ११२ तक तत्पाठ—

युगसंवत्सरेणमित्यादि। ता युगसंवत्सरो युगपूरकः संवत्सरपंचविधः प्रज्ञप्तस्तद्यथा। चंद्रश्चांद्रोऽभिवर्द्धितश्चांद्रोऽभिवर्द्धितश्चैव॥ उक्तंच॥ चंदो चंदो अभिवड्ढिओय चंदोऽभिवड्ढिओ चेव पंचसहियं युगमिणं दिट्ठंते लोक्क दंसीहि॥ १॥ पढम बिइयाउ चंदा तइयं अभिवड्ढिअं वियाणा हि चंदेचेव चउत्थं पंचममभिवड्ढियं जाण॥ २॥ तत्र द्वादशपौर्णमासी परावर्त्तोया यावता कालेन परिसमाप्तिमुपयांति तावत् कालविशेषश्चन्द्र संवत्सरः॥ उक्तंच॥ पुन्निम परियट्टा पुण बारसमासे हवइ चंदो॥ एकश्च पौर्णमासी परावर्त्त एकश्चंद्रमास स्तस्मिं चांद्रमासे रात्रि दिवसपरिमाणचिन्तायां एकोनत्रिंशदहोरात्रा द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा रात्रि दिवसस्य एतद्द्वादशभिर्गुण्यते जातानि त्रीणि शतानि चतुःपञ्चाशदधिकानि रात्रि दिवानां द्वादश च द्वाषष्टिभागा रात्रि दिवसस्य एवं परिमाणश्चान्द्रः संवत्सरः। तथा यस्मिन् संवत्सरे अधिकमास सम्भवेत् त्रयोदशचन्द्रमासा भवन्ति सोऽभिवर्द्धितसंवत्सरः॥ उक्तंच॥ तेरसय चंदमासा वासो अभिवड्ढिओय नायब्बो॥ एकस्मिं चंद्रमासे अहोरात्रा एकोनत्रिंशद्भवन्ति द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा अहोरात्रस्य एतच्चानन्तरमेवोक्तं। तत एष राशिस्त्रयोदशभिर्गुण्यते जातानि त्रीणि अहोरात्राशतानि त्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्च द्वाषष्टिभागा अहोरात्रस्य एतावदहोरात्र प्रमाणोऽभिवर्द्धितसंवत्सर उपजायते कथमधिकमाससम्भवो येनाभिवर्द्धितसंवत्सर उपजायते कियता वा कालेन सम्भवतीति उच्यते। इह युगं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चन्द्राभिवर्द्धितरूप पञ्चसंवत्सरात्मकं सूर्य्यसंवत्सरापेक्षया परि भाव्यमानमन्यूनातिरिक्तानि पंचवर्षाणि भवन्ति सूर्य्यमासश्च साद्धत्रिंशदहोरात्रिप्रमाण चन्द्रमास एकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा दिनस्य ततो गणितसंभावनया सूर्य्यसंवत्सर सत्क त्रिंशन्मासातिक्रमे एकश्चन्द्रमासोऽधिको लभ्यते। स च यथा लभ्यते तथा पूर्वाचार्य्यप्रदर्शितेयं करणं गाथा ॥ चंदस्स जो विसेसो आइच्चस्सइ हविज्ज मासस्स तीसइ गुणिओ संतो हवइ हु अहिमासगो एक्को॥१॥अस्याक्षरगमनिका आदित्यस्य आदित्यसंवत्सरसम्बन्धिनो मासस्य मध्यात् चंद्रस्य चंद्रमासस्य यो भवति विश्लेष इह विश्लेष कृते सति यदवशिष्यते तदप्युपचाराद्विश्लेषः स त्रिंशता गुणयते गुणितः सन् भवत्येकोऽधिकमासः तत्र सूर्यमासपरिमाणात् साद्धत्रिंशदहोरात्ररूपं चंद्रमासपरिमाणमेकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा दिनस्येत्येवं रूप शोध्यते ततः स्थितं पश्चाद्दिनमेकमेकेन द्वाषष्टिभागेन न्यूनं तच्च दिनं त्रिंशता गुणयते जातानि त्रिंशद्दिनानि एकश्च द्वाषष्टिभाग त्रिंशता गुणितो जातास्त्रिंशद्द्वाषष्टिभागास्ते त्रिंशद्दिनेभ्यः शोध्यन्ते तत स्थितानि शेषाणि एकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा दिनस्य एतावत्परिमाणश्चान्द्रोमास इति भवति सूर्य संवत्सर सत्क त्रिंशन्मासातिक्रमे एकोऽधिकमासो युगे च सूर्यमासाः षष्टिस्तो भूयोऽपि सूर्यसम्वत्सर सत्क त्रिंशन्मासातिक्रमे द्वितीयोऽधिकमासो भवति। उक्तंच सट्ठीए अइयाए हवइ हु अहिमासगो जुगद्धंमि बावीसे पव्वसए हवइहु बीओ जुगतंमि ॥१॥ अस्यापि अक्षरगमनिका एकस्मिन् युगे अनंतरोदित स्वरूपे पर्वणां पक्षाणां षष्टौ अतीतायां षष्टिसंख्येषु पक्षेष्वति-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्रान्तेषु इत्यर्थः एतस्मिन्नवसरे युगार्द्धे युगार्द्ध प्रमाणे एको ऽधिको मासो भवति द्वितीयस्त्वधिकमासो द्वात्रिंशत्यधिके पर्वशते (पक्षशते) अतिक्रान्ते युगस्यान्ते युगस्य पर्य्यवसाने भवति तेन युगमध्ये तृतीयसम्वत्सरे अधिकमासः पञ्चमे चेति द्वौ युग अभिवर्द्धितसम्वत्सरौ सम्प्रति युगे सर्वसंख्यया यावन्ति पर्व्वाणि भवन्ति तावन्ति निर्दिक्षुः प्रतिवर्षं पर्वसंख्या माह ॥ तापढमस्सण मित्यादि ता इति तत्र युगे प्रथमस्य णभिति वाकयालंकृतौ चान्द्रस्य सम्वत्सरस्य चतुर्विंशतिः पर्वाणि प्रज्ञप्तानि द्वादशमासात्मको हि चांद्रः सम्वत्सरः एकैकस्मिंश्च मासे द्वे द्वे पर्वणि ततः सर्वसंख्यया चान्द्रसंवत्सरे चतुर्विंशतिः पर्वाणि भवन्ति द्वितीयस्यापि चांद्रसम्वत्सरस्य चतुर्विंशतिः पर्वाणि भवन्ति अभिवर्द्धित सम्वत्सरस्य षड्-विंशतिः पर्वाणि तस्य त्रयोदशमासात्मकत्वात् चतुर्थस्य चांद्र सम्वत्सरस्य चतुर्विंशतिः पर्वाणि पञ्चमस्याभिवर्द्धितसम्व-त्सरस्य षड्विंशतिः पर्वाणि कारणमनन्तरमेवोक्तं तत एवमेव उक्तेनैव प्रकारेण सपुव्वावरेणंति पूर्वापरिगणितमिलनेन पञ्च-सांवत्सरिके युगे चतुर्विंशत्यधिकं पर्वशतं भवतीत्याख्यातं सर्वैरपि तीर्थकृद्भिर्मया चेति ।

देखिये उपरके दोनु पाठमें खुलासा पूर्वक प्रथम चन्द्र संवत्सर दूसरा चन्द्र संवत्सर तीसरा अभिवर्द्धित संवत्सर चौथा फिर चन्द्रसंवत्सर और पांचमा फिर अभिवर्द्धित संवत्सर इन पांच संवत्सरों से एक युगकी संपूर्णता लोक-दर्शी केवली भगवान् नें देखी हैं कही हैं जिसमें एक चन्द्र मासका प्रमाण एकोनतीस संपूर्ण अहोरात्रि और एक अहो रात्रिके बासठ भाग करके बतीस भाग ग्रहण करनेसे २९ ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३२।६२ अर्थात् २९ दिन ३० घटीका और ५८ पल प्रमाणे एक चन्द्रमास होता हैं इसको बारह चांद्रमासों सें बारह गुणा करने से एक चन्द्र संवत्सरमें तीनसे चौपन संपूर्ण अहोरात्रि और एक अहोरात्रिके बासठ भाग करके बारह भाग ग्रहण करनेसे ३५४।१२।६२ अर्थात् ३५४ दिन ११ घटीका और ३६ पल प्रमाणें एक चन्द्र संवत्सर होता हैं और जिस संवत्सरमें अधिकमास होता हैं उसीमें तेरह चन्द्रमास होने सें अभिवर्द्धित नाम संवत्सर कहते हैं जिसका प्रमाण तीनसे तेंयाशी अहोरात्रि और एक अहोरात्रिके बासठ भाग करके चौमालीस भाग ग्रहण करनेसे ३८३।४४।६२ अर्थात् ३८३ दिन ४२ घटीका और ३४ पल प्रमाणे एक अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह चन्द्रमासोंकी गिनतीका प्रमाण सें होता हैं इस तरहके तीन चंद्रसंवत्सर और दोय अभिवर्द्धित संवत्सर एसे पांच संवत्सरों सें एक युग होता हैं अब एक युगके सर्वपर्वोंकी गिनती कहते हैं प्रथम चन्द्र संवत्सरके बारहमास जिसमें एक एक मासकी दोय दोय पर्वणि होनेसें बारहमासों की चौवीश (२४) पर्वणि प्रथम चन्द्र संवत्सरमें होती हैं तैसे ही दूसरा चन्द्र संवत्सरमें भी २४ पर्वणि होती हैं और तीसरा अभिवर्द्धित संवत्सरमें छवीश (२६) पर्वणि मासवृद्धि होने सें तेरह-मासोंकी होती हैं तथा चौथा चन्द्र संवत्सरमें २४ पर्वणि होती हैं और पांचमा अभिवर्द्धितसंवत्सरमें २६ पर्वणि होती हैं सो कारण उपरके दोनुं पाठमें कहा हैं इन सर्व पर्वोंकी गिनती मिलनेसें पांच संवत्सरोंकें एक युगकी एकसो चौवीश (१२४) पर्वणि अर्थात् पाक्षिक होती हैं यह १२४

पर्वकी व्याख्या सर्वतीर्थङ्कर महाराजों नें अर्थात् अनन्त तीर्थङ्करों नें कही हैं तैसे ही वृत्तिकार मलयगिरिजीने चन्द्र प्रज्ञप्तिकी तथा सूर्य्यप्रज्ञप्ति की वृत्तिमें खुलासें लिखी हैं और श्रीचंद्रप्रज्ञप्ति वृत्तिमें पृष्ठ १११ से ११३ में तथा १३४ में और श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तिमें पृष्ठ १२४ से १२८ तक नक्षत्र संवत्सर १ चन्द्र संवत्सर २ ऋतु संवत्सर ३ आदित्य (सूर्य्य) सम्वत्सर ४ और अभिवर्द्धित संवत्सर ५ इन पांच संवत्सरों का प्रमाण विस्तार पूर्वक वर्णन किया हैं जिसकी इच्छा होवें सो देखके निःसन्देह होना इस जगह विस्तार के कारण सें सब पाठ नहीं लिखते हैं।

और भी श्रीसुधर्मस्वामिजी कृत श्रीसमवायांगजी मूलसूत्र तथा श्रीखरतरगच्छनायक श्रीअभयदेव सूरिजी कृत वृत्ति और श्रीपार्श्वचन्द्रजी कृत भाषा सहित (श्रीमकसूदाबाद निवासी राय बहादुर धनपतसिंहजीका जैनागम संग्रह के भाग चौथेमें) छपके प्रसिद्ध हुवा हैं जिसके ६१ मा और ६२ मा समवायाङ्गमें मासोंकी गिनतीके सम्बन्ध वाला पृष्ठ ११९ और १२० का पाठ नीचे मुजब जानो यथा—

पंचसंवच्छरियस्सणं जुगस्सरिउ मासेणं मिज्जमाणस्स इगसठिं उउ मासापन्नता।

अथैकषष्टिस्थानकं तत्र पञ्चेत्यादि पञ्चभिः संवत्सरैर्निर्वृतमिति पञ्चसांवत्सरिकं तस्यणमित्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चन्द्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्टिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इह चायं भावार्थः युगं हि पञ्चसंवत्सरा निष्पादयन्ति तद्यथा—चन्द्रश्चन्द्रोऽभिवर्द्धितश्चन्द्रोऽभिवर्द्धितश्चेति तत्र एकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्च द्विषष्टिभागा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदा-रभ्य पौर्णमासी निष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमास परिमाणश्चन्द्रसंवत्सरस्तस्य च प्रमाणमिदम् त्रीणि शतान्यह्नां चतुःपञ्चाशदुत्तराणि द्वादश च द्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ । तथा एकत्रिंशदह्नां एकविंशत्युत्तरं च शतं चतुर्विंशतीत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ । १२१ । १२४ । च मासेन द्वादशमास प्रमोणोऽभिवर्द्धित संवत्सरो भवति स च प्रमाणेन त्रीणि शतान्यह्नां त्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्च द्विषष्टिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४ । ६२ । तदेवं त्रयाणां चन्द्रसंवत्सराणां द्वयोरभिवर्द्धित संवत्सरयोरेकी करणे जातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासश्च त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारे लब्धा एकषष्ठिः ऋतुमासा इति ।

हिवे ६१ मो लिखे छे । चन्द्र १ चन्द्र २ अभिवर्द्धित ३ चन्द्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांचवर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चन्द्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने१ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवाथी पौर्णमासीये पूरोथाय एहमासमान १२ गुणोकीजे तिवारे वर्षनो मान ३५४ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठियाथाय तेहने त्रिगुणो कीजे तिवार १०६२ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ६२ ठिया ३६ भागथाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना १२४ भाग हाइय १२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने १२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धित वर्षनो मान ३८३ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४४ भाग ६२ ठिया तेहनें बेगुणा कीजे ९६७ सातसो सडसठ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थाय तेहने पहिले ३ चन्द्रवर्षना मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रिथाय ऋतु मासनो मान ३० अहोरात्रिनु तेमाटे १८३० नें भागें हरिये तो १ युगने विषें ६१ ऋतुमास थाय।

पंचसंवच्छरिएणं जुगे बावठिं पुन्निमाउ बावठिं अमावसाउ पन्नता

अथ द्विषष्ठिस्थानकं पंचेत्यादि तत्र युगे त्रयश्चन्द्रसंवत्सरा भवन्ति तेषु षट्त्रिंशत् पौर्णमास्यो भवन्ति द्वौचाभिवर्द्धितसंवत्सरौ भवतस्तत्र चाभिवर्द्धितसंवत्सरस्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयो षड्विंशतिः पौर्णमास्य इत्येवं द्विषष्ठिस्ता भवन्ति इत्येवममावास्यापीति।

हिवे ६२ मो लिखे छे। पांचसंवत्सरानो युगहोय तेह मांहि ६२ पुनिम अनें ६२ अमावस्या कही १ युगमाही ३ चन्द्रवर्ष होय तेहमांहि मास ३६ बारेत्रिक ३६ पूर्णिमा अनें ३६ अमावस्या होय अनें युगमाहि २ अभिवर्द्धित वर्ष होय तेहना मास २६ होय तेमाटे पूनिम २६ अमावस्या २६ सर्व पांच वर्षनामिलि ६२ पूर्णिमा अनें ६२ अमावस्या होय॥

देखिये पञ्चमगणधर श्रीसुधर्मस्वामिजीनें भी उपरके श्रीसमवायाङ्गजीके मूलसूत्र पाठमें और श्रीअभयदेवसूरिजी वृत्तिकारनें भी अधिक मासकी गिनती बरोबर किवी और चंद्रमासोंसें चंद्रसंवत्सरका प्रमाण तथा अभिवर्द्धितमासोंसें अभिवर्द्धितसंवत्सरका प्रमाण दिनोंकी गिनतीसें खुलासा करके एक युगके बासठ चंद्रमासके हिसाबसें ६२ पूर्णिमासी तथा ६२ अमावस्या और चंद्रमासकी गिनतीके प्रमाणसें

६

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६२ चन्द्र मासके १८३० दिन एक युगकी पूर्ति करनेवाले दिखाये हैं तथापि वर्तमानिक श्रीतपगच्छादि वाले मेरे धर्म्मबन्धु अधिक मासकी गिनती निषेध करते हैं जिनोंको विचार करना चाहिये ॥

और भी श्रीतपगच्छके पूर्वाचार्य्यजी श्रीक्षेमकीर्तिसूरिजी कृत श्रीवृहत्कल्पवृत्ति खंभायतके भंडारवालीके दूसरे उद्देशे दूसरे खण्डमें—नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सें ६ प्रकारके मासोंकी व्याख्या किवी हैं जिसमें सें इस जगह एक काल मासकी व्याख्या वर्तमानिक श्रीतपगच्छवालोंको अपनें पूर्वजका वचन याद करानेके वास्ते और भव्य जीवोंको निःसन्देह होनेके लिये पृष्ठ १९८ वें का पाठ दिखाते हैं तथाच तत्पाठ—

कालमासः श्रावणादिः यद्वा कालमासो नक्षत्रादिकः पञ्चविधस्तद्यथा नक्षत्रमासः चंद्रमासः ऋतुमास आदित्यमास अभिवर्द्धितमास अमीषामेव परिमाणमाह गाथाः नरकत्तो खलु मासो, सत्तावीसं हवंति अहोरत्ता ॥ भागाय एक्कवीसं, सत्तट्ठि कएण बेएणं ॥१॥ अउण तीसं चंदो, विसट्ठि भागाय हुंति बत्तीसा ॥ कम्मो तोसइ दिवसो, वीसा अध्धंच आइच्चो ॥२॥ अभिवढ्ढि इक्कतीसा चउवीसं भाग सयंवड़तिगहीणं भावे मूलाइभ्रु उपगयं पुण कम्म मासेणं ॥३॥ नक्षत्रेषु भवो नक्षत्रः स खलु मासः सप्तविंशत्यहोरात्राणि सप्तषष्ठी कृतेन छेदेन छिन्नस्याऽहोरात्रस्यैकविंशति सप्तषष्टीभागाः तथाहि चंद्रस्य भरण्याद्रोश्लेषा स्वाति ज्येष्टा शतभिषग् नामानि षट्नक्षत्राणि पञ्चदशमुहूर्त्तभोग्यानि तिस्र उत्तराः पुनर्वसु रोहिणी विशाखा चेति षट् पञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्तभोग्यानि शेषाणि तु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पञ्चदशनक्षत्राणि त्रिंशन्मुहूर्त्तानीति जातानि सर्वसंख्यया मुहूर्त्तानामष्टाशतानि दशोत्तराणि एतेषां च त्रिंशन्मुहूर्त्तैरहोरात्रमिति कृत्वा त्रिंशता भागो ह्रियते लब्धानि सप्तविंशति रहोरात्राणि अभिजिद्योगश्चैकविंशति सप्तषष्टीभागा इति तैरप्यधिकानि सप्तविंशतिरहोरात्राणि सकल नक्षत्रमण्डलोपभोगकालो नक्षत्रमासो उच्यते १ चंद्रे भवश्चांद्रः कृष्णपक्षप्रतिपदारभ्य यावत् पौर्णमासी परिसमाप्तिस्तावत् कालमानः स च एकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशत् द्वाषष्टिभागा अहोरात्रस्य २ कर्म्ममास ऋतुमास इत्येकोऽर्थः स त्रिंशद्दिवसप्रमाणः ३ आदित्यमासस्त्रिंशदहोरात्राणि रात्रि दिवसस्य चार्द्धं दक्षिणायनस्यो उत्तरायणस्य वा षड्भागमान इत्यर्थः ४ अभिवर्द्धितो नाम मुख्यतस्त्रयोदशचंद्रमास प्रमाणः संवत्सरः परं तत् द्वादशभागप्रमाणो मासोऽपि अवयवे समुदायोपचारादभिवर्द्धितः स चैकत्रिंशदहोरात्राणि चतुर्विंशत्युत्तरशतभागी कृतस्य चाहोरात्रस्स त्रिकहीनं चतुर्विंशतिभागानां भवति एकविंशमिति भावः एतेषां चानयनाय इयं करण गाथा॥ जुगमासेहिं उभइए, जगंमिलद्धं हविज्ज नायव्वं॥ मासाणं पंचन्ह, विषयं राइदियपमाणं॥१॥ इह सूर्य्यस्य दक्षिणमुत्तरं वा अयनं त्र्यशीत्यधिकदिनशतात्मकं द्वि अयने वर्षमिति कृत्वा वर्षे षट्षष्ट्यधिकानि त्रिणि शतानि भवन्ति पञ्चसंवत्सराद्युगमिति कृत्वा तानि पञ्चभिर्गुण्यन्ते जातानि अष्टादशशतानि त्रिंशद्दिवसानां एतेषां नक्षत्रमासदिवसानेनाय सप्तषष्टिर्युगे नक्षत्रमासा इति सप्तषष्टया भागा ह्रियते लब्धाः सप्तविंशतिरहोरात्रा एकविंशतिरहोरात्रस्य सप्तषष्टीभागाः १ तथा चंद्रमास दिवसानयनाय द्वाषष्टिर्युगे चंद्रमासा इति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

द्वाषष्ट्या तस्यैव युगदिन रात्रेर्भागो ह्रियते लब्धाहि एकोन-त्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशत् द्वाषष्टिभागाः एवं युगदिवसाना-मेवैकषष्टियुगे कर्म्मनासा इत्येकषष्ट्या भाग ह्रियते लब्धानि कर्म्मभासस्य त्रिंशत् दिनानि ३ तथा युगे षष्टि सूर्य्यमासा इति षष्ट्या युगदिनानां भाग ह्रियते लब्धाः सूर्य्यमासदि-वसास्त्रिंशदहोरात्रस्याद्धं च ४ तथा युगदिवसा एव अभि-वर्द्धितमासा दिवसानयनाय त्रयोदशगुणाः क्रियन्ते जा-तानि त्रयोविंशतिसहस्राणि सप्तशतानि नवत्यधिकानि तेषां चतुश्चत्वारिंशते सप्तभि शतैर्भागो ह्रियते लब्धा एक-त्रिंशद्दिवसा शेषाण्यवतिष्ठन्ते षट्विंशत्यधिकानि सप्तशतानि चतुश्चत्वारिंशत्सप्तशतभागानां ततः उभयेषामप्यङ्कानां षड्-भिरपवर्तना क्रियते जातामेकविंशशतं चतुर्विंशत्युत्तरशत-भागानामिति उक्ताः पञ्चापि कालमासाः ॥ १ ॥

देखिये उपरके पाठमें श्रीतपगच्छके मुख्याचार्य्यजी श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरिजी अपने (स्वयं) नक्षत्रमास १ चंद्रमास २ ऋतुमास ३ आदित्यमास ४ और अभिवर्द्धितमास ५ इन पांचमासोंकी व्याख्या करते पांचमा अभिवर्द्धित मासकी और अभिवर्द्धित संवत्सरकी विशेष व्याख्या खुलासें कर दिखाइ हैं कि—

अभिवर्द्धितनाम संवत्सर मुख्य तेरह चंद्रमासोंसें होता हैं एक चंद्रमासका प्रमाण गुनतीस दिन बत्रीस बासटीया भाग अर्थात् २९ दिन ३० घटीका और ५८ पल प्रमाणे होता हैं जिसकों तेरह चंद्रमासोंसें तेरह गुना करने सें दिन ३८३। ४४। ६२ भाग अर्थात् ३८३ दिन ४२ घटीका और ३४ पल प्रमाणे एक अभिवर्द्धित संवत्सर होता हैं चंद्रमासकी व्याख्या

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

में लिखीहै सोही तेरह चंद्रमास के अभि वर्द्धितसंवत्सर का प्रमाणको बारह भाग में करनेसे एक भाग में ३१।१२४।१२१ होता है सोही प्रमाण एक अभिवर्द्धित मासका जानना, याने ३१ अहोरात्रि और एक अहोरात्रि के १२४ भाग करके उपरके तीन भाग छोड़कर बाकीके १२१ भाग ग्रहण करना अर्थात ३१ दिन तथा ५८ घटीका और ३३ पलसे दृश अक्षर उच्चारणमें न्यून इतने प्रमाणका एक अभिवर्द्धित मास होताहै सो अवयवोंके उच्चारणसे अभिवर्द्धित मास कहतेहैं अर्थात् जिस संवत्सरमें जब अधिक मास होताहै तब तेरह चंद्रमास प्रमाणे अभिवर्द्धित संवत्सर कहतेहै उसी के तेरहवा चंद्रमासके प्रमाणको बारह भागोंमें करके बारह चंद्रमासोंके साथ मिलानेसे बारह चंद्रमासोंमें तेरहवा अधिकमासके प्रमाणों (अवयवों) की वृद्धिहुई इसलिये अवयवोंके उच्चारणसे मासका नाम अभिवर्द्धित कहाजाता है एसे बारह अभिवर्द्धित मासोंसे जो हुवा संवत्सरका प्रमाण उसीको अभिवर्द्धित संवत्सर कहतेहैं परंतु अधिक मासके कारणसे तेरह चंद्रमासोंसे अभिवर्द्धित संवत्सर होताहै सो गिनतीके प्रमाणमेंतो तेरहाही मास गिनेजावेंगे सोतो श्रीप्रवचनसारोद्धार, श्रीचंद्रप्रज्ञप्तिवृत्ति, श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति वृत्ति श्रीसमवायांगजीसूत्रवृत्ति के जो पाठ उपरमें छपगये हैं उनपाठोंसे खुलासा दिखता है ।

और पांचांही प्रकारके मासोंके निज निज मास प्रमाण से निज निज संवत्सरका प्रमाण तथा निज निज मासके और निज निज संवत्सरके प्रमाणसे पांच वर्षोंसे एक युगके १८३० दिनोंकी गिनती का हिसाब संबंधी आगे यंत्र (कोष्टक) लिखनेमें आवेगें जिससे पाठक वर्गको सरलता पूर्वक जल्दी अच्छी तरहसे समझमें आसकेगा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और भी अधिक मासकी गिनती प्रमाण करने सम्बन्धी सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि वृत्ति और प्रकरणादि शास्त्रोंके पाठ मौजूद हैं परंतु विस्तारके कारण से यहां नहीं लिखता हूं तथापि विवेकी जनतो उपरोक्त पाठार्थोंसे भी स्वयं समझ जावेंगे ।

अब इस जगह जिनाज्ञा विरुद्ध प्ररूपणा से तथा वर्तने वर्तानेसे संसार वृद्धिका भय रखनेवाले और जिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी निष्पक्षपाती सज्जनपुरुषोंको मैं निवेदन करता हूं कि देखो उपरमें श्रीचन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तिमें तथा श्रीसूर्य्य प्रज्ञप्तिवृत्तिमें सर्व (अनन्त) श्रीतीर्थंङ्कर महाराजोंके कथनानुसार श्रीमलयगिरिजीने । तथा श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें श्रीगणधर महाराज श्रीसुधर्मस्वामीजीने और श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रकी वृत्तिमें श्रीखरतरगच्छके श्रीअभयदेवसूरिजीने और श्रीप्रवचनसारोद्धारमें श्रीतपगच्छके पूर्वज श्रीनेमिचन्द्रसूरिजीने । तथा श्रीवृहत्कल्पवृत्तिमें श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्ति सूरिजीने इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें अधिकमासको प्रमाण करके गिनतीमें मंजूर किया हैं जैसे बारे मासोकी गिनतीमें कोई न्यून्याधिक नहीं हैं तैसे ही अधिकमास होनेसे तेरहमासोंकी गिनतीमें भी कोई न्यून्याधिक नहीं हैं किन्तु सबी ही बरोबर हैं सो उपरोक्त पाठार्थोंसे प्रत्यक्ष दिखता है सो विशेष करके अधिक मासकोभी मुहूर्त्तोंमें, दिनोंमें, पक्षों में, मासोंमें वर्षोंमें, गिनकर पांचसंवत्सरोंके एकयुगकी गिनती के दिनोंका, पक्षोंका, मासोंका, वर्षोंका प्रमाण श्रीअनन्ततीर्थंङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंने और श्री खरतरगच्छके तथा श्रीतपगच्छादिके पूर्वजोंने कहा है सो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आत्मार्थी जिनाज्ञाके आराधक पुरषोंको प्रमाण करने योग्य हैं।

इस संसारको अनन्ते काल हो गये हैं जिसमें अनन्त चौवीशी ब्यतित हो गइ चन्द्र सूर्य्यादिके विमान भी अनन्त कालसें सरू हैं इस लिये जैनज्योतिष भी अनन्ते कालसें प्रचलित हैं जिसमें अधिक मास भी अनन्ते कालसें चला आता हैं—मास वृद्धिके अभावसें बारह मासके संवत्सरका नाम चन्द्र संवत्सर हैं और मासवृद्धि होनेसें तेरहमासकी गिनतीके कारणसें संवत्सरका नाम अभिवर्द्धित संवत्सर हैं तीन चन्द्रसंवत्सर और दोय अभिवर्द्धित संवत्सर इन पांच संवत्सरोंसें एकयुग होता हैं एकयुगमें पांच संवत्सरोंके बासठ (६२) मासोंकी बासठ (६२) पूर्णिमासी और बासठ (६२) अमावस्याके एकसो चौवीश (१२४) पर्वणि अर्थात् पाक्षिक अनन्त तीर्थङ्करादिकोंनें कही हैं जिससें अनन्तकाल हुए अधिकमासकी गिनती दिन, पक्ष, मास, वर्षादिमें चली आती हैं किसीने भी अधिकमासकी गिनती का एकदिन मात्र भी निषेध नही किया हैं तथपि वड़े आफसोस की वात हैं कि, वर्तमानिक श्रीतपगच्छादिवाले अधिकमास की गिनती वड़े जोरके साथ वारंवार निषेध करके एकमासके ३० दिनोंकी गिनती एकदम छोड़ देते हैं और श्रीअनन्त तीर्थङ्कर महाराजोंकी श्रीगणधर महाराजोंकी श्रीपूर्वधर पूर्वाचार्य्योंजी की तथा इनलोगोंके खास पूज्य श्रीतपगच्छके ही प्रभाविकाचार्य्योंजी की आज्ञा भङ्गका भय नही करते हैं और श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंजी की आज्ञा मुजब वर्तमानमें श्रीखरतरगच्छादिवाले अधिक-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासकों प्रमाण करके गिनतीमें मंजूर करते हैं जिन्होंकों आज्ञा भङ्गका मिथ्या दूषण लगाके उलटा निषेध करते हैं फिर आप आज्ञाके आराधक बनते हैं यह कितनी बड़ी आश्चर्य्यकी बात हैं ।

श्रीअनन्त तीर्थङ्करादिकोंने अधिकमासको गिनतीमें प्रमाण किया हैं इसलिये जिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी पुरुष कदापि निषेध नही कर सकते हैं तथापि वर्तमानमें जो अधिक मासको गिनतीमें निषेध करते हैं जिन्होंकों श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंकी और अपने पूर्वजोंकी आज्ञाभङ्गके सिवाय और क्या लाभ होगा सो निर्पक्षाती आत्मार्थी पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगें ।

प्रश्नः—अजी तुम तो श्रीअनन्ततीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंजी की शाक्षिसें अधिकमासको दिनोंमें पक्षोंमें, मासोंमें, वर्षोंमें, गिनती करनेका प्रत्यक्षप्रमाण उपरोक्त शास्त्रोंके प्रमाणसें दिखाया हैं परन्तु वर्तमानिक श्रीतपगच्छादिवाले अधिकमास तो एककाल चूलारूप हैं इसलिये गिनतीमें नही लेना एसा कहते हैं सो कैसें ।

उत्तरः—भो देवानुंप्रिये वर्तमानिक श्रीतपगच्छादिवाले अधिकमासको कालचूला कहके गिनतीमें निषेध करते हैं सो कदापि नही हो सकता है क्योंकि अधिकमासको कालचूला किस कारणसें कही हैं जिसका अभिप्राय और कालचूला कहनेसें भी विशेष करके गिनती करने योग्य हैं तथा कालचूलाकी ओपमा बहुत उत्तम श्रेष्ठ शास्त्रकारोंने दिवी हैं सो हमतो क्या कुल जैन श्वेतांबर जिनाज्ञाके आराधन करनेवाले आत्मार्थी सबी पुरुषोकों मान्य करने योग्य हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और गिनती भी करने योग्य है जिसका कारण शास्त्रोंके प्रमाण सहित दिखाते हैं श्रीजिनदास महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर महाराज कृत श्रीनिशीथ सूत्रकी चूर्णि श्रीमोहन-लालजी महाराजके सुरतका ज्ञानभंडारसें आई थी जिसके प्रथम उद्देशेके पृष्ठ २१ में तत्पाठ—

इयाणिं चूलेति दारं ॥ णाम ठवणा गाहा णिस्केव गाहा ॥ कंठा ॥ णाम ठवणाउमयाउ दव्वचूला दुविहा आगमतो णो आगमतोय आगमउ जाणए अणुवउते णो आगमतो जाणय भव्वसरीरं जाणयभव्वसरीरवइरित्ता तिधा य दव्वचूला गाहा पुव्वद्धं ॥ कंठं ॥ पढमो वसद्दो वधारणे वितितरु मुव्वये पुव्वद्धे जहा संखंमि ॥उदाहरणा ॥ सचित्तचूड़ा कुक्कुटचूला सा मंसपेसी चेव केवला लोकप्रतिता मीसाचूडा मोरसिहा तस्स मंसपेसीए रोमाणि भवंति अचित्ता चूला मणीकुंतगा वा आदिसद्दाउ सीहकस्स पासाद थूभअग्गाणि ॥ दव्वचूलागता ॥ इदाणिं खेत्तचूला सा तिविहा ॥ अह तिरिय उड्ढ । गाहा॥अह इति अधोलोकः तिरिय इति तिरियलोकः उड्ढ॥ इति ऊर्द्ध्वलोकः लोगस्स सद्दो पत्तेगं चूला इति सिहा-होति । भवति । इमाइति प्रत्यक्षो तु शब्दो क्षेत्रावधारणे अहोलोगा दीण पच्छद्धेण जहा संखं उदाहरणा सीमंतग इति सीमंतगो णरगो रयणप्पभाय पुढवीउ पढमो सो अह लोगस्स चूला । मंदरोमेरु सो तिरियलोगस्सचूलातिक्रान्तत्वात् अहवा तिरिय लोगपति ठियस्स मेरोवरि चत्तालीसं जोयणा चूला सो तिरिय लोगचूला वसद्दो समुच्चये पाय पूरणे वा इसित्ति अप्पभावे पइति प्रायो वृत्याभार इति भारक्कंतस्स पुरिसस्स गायं पाय सो इसिणयं भवति जाव एवं ठितासा पुढवी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसिपभाराणाम इति एतमभिहाणं तस्स साथ सव्वट्ठ सिद्धि विमाणाउ उवरिं वारसेहि जोयणेहिं भवति तेण सा उड्ढलोए भवति । गता खेत्तचूला । इयाणिं काल भावचूलाउ दोविएग गाहाए भणति । अहिमासउउकाले । गाहा । बारसमास वरिसाउ अहिउमासो अहिमासउ अहिवड्ढिय वरिसे भवति सोय अधिकत्वात् कालचूला भवति तु सद्दोर्थप्प दरिसणेण केवलं अधिको कालो कालचूला भवति अंतो विवड्ढमाणो कालो कालचूलाए भवति एवं जह्लाउसप्पिणीए अंते अंति दूस समाए सा उस्सप्पिणीए अंते कालस्सचूला भवति। कालचूला गता । इयाणिं भावचूला । भवणं भावः पर्याय इत्यर्थः॥ तस्स चूला भावचूला सोय दुविहा आगमउय णो आगमउय आगमउजाणए उवउत्तेण णो आगमउय इमाचेव तुसद्दो । खउवसम भावविसेसेण दट्ठव्वो इमाइति । पकप्प झयण चूला एग सद्दोवधारणे चूलेगठिता चूलात्तिवा विभूसणंति वा सीहरंति वा एते एगठो॥ चूलेति दारंगयं॥ इति श्रीनिशीथसूत्रके पहिले उद्देशे की चूर्णिके पृष्ठ २२ तक

और भी १४४४ ग्रन्थकार सुप्रसिद्ध महान् विद्वान् श्रीहरिभद्रसूरिजी कृत श्रीदशवैकालिकसूत्रके प्रथम चूलिकाकी वृहत्‌वृत्तिका पाठ सुनिये श्रीदशवैकालिकमूलसूत्र, अवचूरि, भाषार्थ,दीपिका और वृहत्‌वृत्ति सहित मुम्बईसें छपके प्रसिद्ध हुवा हैं जिसके पृष्ठ ६४० और ६४१का चूला विषयका नीचे मुजब पाठ जानो—यथा—

अधुनौघतश्चूडे आरभ्यते अनयोश्चायमभिसम्बन्धः । इहानन्तराध्ययने भिक्षुगुणयुक्त एव भिक्षुरुक्तः सचैवं भूतोऽपि कदाचित् कर्म्मपरतन्त्रत्वात् कर्म्मणश्च बलवत्त्वात्सीदेदत

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एतत् स्थिरीकरणं कर्तव्यमिति तदर्थाधिकारवच्चूडाद्वयमभिधीयते तत्र चूडाशब्दार्थमेवाभिधातुकाम आह॥ दव्वे खेत्ते काले, भावम्मिअ चूलिआय निक्खेवो॥ तं पुण उत्तरतंतं, सुअ गहिअत्थं तु संगहणी ॥ २६ ॥ व्याख्या ॥ नाम स्थापनेक्षुण्णत्वादनादृत्याह द्रव्ये क्षेत्रे काले भावे च द्रव्यादिविषयश्चूडाया निक्षेपो न्यास इति। तत्पुनश्चूडाद्वयमुत्तरतन्त्रमुत्तरसूत्रम् दशवैकालिकस्याचारपञ्चचूडावत् एतच्चोत्तरतन्त्रं श्रुतगृहीतार्थमेव दशवैकालिकाख्यश्रुतेन गृहीतोऽर्थोऽस्येति विग्रहः यद्येवमपार्थकमिदम्। नेत्याह संग्रहणी तदुक्तानुक्तार्थसंक्षेप इति गाथार्थः द्रव्यचूडादिव्याचिख्यासयाह ॥ दव्वे सच्चित्ताई, कुक्कुट चूडामणी मऊराई ॥ खेत्तमि लोगनिक्कुड मंदरचूडा अ कूडाइ ॥ २७ ॥ व्याख्या ॥ द्रव्य इति द्रव्यचूडा आगम नोआगम ज्ञशरीरेतरादिव्यतिरिक्ता त्रिविधा सचित्ताद्या। सचित्ता अचित्ता मिश्राच। यथा संख्यमाह—कुक्कुट चूडा सचित्ता मणिचूडा अचित्ता मयूरशिखामिश्रा। क्षेत्र इति क्षेत्रचूडा लोकनिष्कुटा उपरिवर्तिनः मन्दरचूडा च पाण्डुकम्बला। चूडादयश्च तदन्यपर्वतानां क्षेत्रप्राधान्यात् आदिशब्दादधोलोकस्य सीमंतकः तिर्य्यग् लोकस्य मन्दर ऊर्द्ध्वलोकस्येषत्प्राग्भार इति गाथार्थः ॥ अइरित्त अहिगमासा, अहिगा संवत्सराअकालंमि ॥ भावे खउवसमिए, इमाउ चूडामुणे अव्वा ॥ २८ ॥ व्याख्या॥ अतिरिक्ता उचितकालात् समधिका अधिकमासका प्रतीताः अधिकाः संवत्सराश्च षष्टाब्द्याद्यपेक्षया काल इति कालचूडा भाव इति भावचूडा क्षायोपशमिके भावे इयमेव द्विप्रकारा चूडा मन्तव्या विज्ञेया क्षायोपशमिकत्वाच्छ्रुतस्येति गाथार्थः तत्रापि प्रथमा रतिवाक्यचूडा इत्यादि।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और भी श्रीजिनभद्र गणिक्षमाश्रमणजी महाराज युग-प्रधान महाप्रभाविक प्रसिद्ध है जिन्होंके शिष्य श्रीशीलाङ्गा-चार्य्यजी भी महाविद्वान् श्रीआचाराङ्गादि ११ अङ्गरूप सूत्रोंकी टीका करनेवाले प्रसिद्ध है जिसमें श्रीआचाराङ्गजी तथा श्रीसूयगडाङ्गजी सूत्रकी टीका तो सुप्रसिद्धिसे वर्त रही हैं और बाकी श्रीस्थानाङ्गजी आदि नवसूत्रोंकी टीका विच्छेद होगई थी जिससें श्रीअभयदेवसूरिजीनें दूसरी वार बनाई है सो प्रसिद्ध है श्रीशीलाङ्गाचार्य्यजी विक्रम संवत् ६५० के लगभग हुवे हैं सो श्रीआचाराङ्गजी सूत्रकी व्याख्या रूप टीका करते दूसरे श्रुतस्कन्धकी व्याख्याके आदिमें ही चूलाका विस्तार किया है परन्तु यहाँ थोड़ासा लिखता हुं श्रीमकसुदावाद निवासी धनपतिसिंह बहादुरकी तरफ सें श्रीआचाराङ्गजी मूलसूत्र, भाषार्थ, दीपिका और वृहत् वृत्ति सहित छपके प्रसिद्ध हुवा है जिसके दूसरा श्रुतस्कन्धके पृष्ठ ४में सें चूलाविषयका थोड़ासा पाठ नीचे मुजब जानो यथा—

चूडाया निक्षेपः नामादिः षड्विधः नामस्थापने क्षुण्णे द्रव्यचूडा व्यतिरिक्ता सचित्ता कुक्कुटस्य अचित्ता मुकुटस्य चूडामिश्रामयूरस्य, क्षेत्रचूडा लोकनिःकुटरूपा कालचूडा अधिकमासक स्वभावा भावचूडात्वियमेव क्षयोपशमिक-भाववर्तित्वात् तथा (इसके पहले तीसरे पृष्ठमें) कालाग्र-मधिकमासकः यदिवाग्र शब्दः परिमाणवाचक इत्यादि—

देखो उपरोक्तशास्त्रोंके कर्तामें श्रीजिनदासमहत्तराचार्य्यजी पूर्वधरगीतार्थ पुरुष प्रसिद्ध है तथा श्रीहरिभद्र सूरिजी भी पूर्वधर गत गीतार्थ पुरुष प्रसिद्ध हैं और श्रीजिनभद्रगणि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्षमाश्रमणजी महाराजके पट्टधरशिष्य श्रीशीलांगाचार्य्येजी महाराज भी महाप्रभाविक गीतार्थ पुरुष प्रसिद्ध है। इस लिये उपरके पाठ सर्व जैनश्वेतांवर आत्मार्थी पुरुषोंको प्रमाण करने योग्य हैं ऊपरके पाठमें नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सें, छ (६) प्रकारकी चूला कही हैं जिसमें नाम, स्थापना, तो प्रसिद्ध हैं और द्रव्य चूलादि की व्याख्या खुलासा किवी हैं कि,—द्रव्यचूला दो प्रकारकी प्रथम आगमरूप शास्त्रोंमें कही हुइ और दूसरी नो आगम सो मति, अवधि, मनपर्यव, तथा केवल ज्ञानसें जानी हुइ द्रव्य चूला सो भव्य शरीर अर्थात् ज्ञानीजी महाराज अपने ज्ञानसें पहलेसें ही देखके जानलेवें कि यह मनुष्य आगामी काले साधु आदि धर्मी पुरुष होने वाला हैं ऐसा जो मनुष्य का शरीर जिसको द्रव्य चूला कहते हैं, कारण कि, इस संसारमें अनन्तीवार शरीर पाया परन्तु उत्तम पदवी पाने योग्य शरीर पाना बहुत मुश्किल हैं तथापि अब पाया जिससें धर्मप्राप्तिका योग्य होवे एसें शरीर को ज्ञानी महाराजने भव्यशरीर कहा हैं सो उस शरीरको अनन्ते सब शरीरोंसें उत्तम कहो तथा श्रेष्ट कहो अथवा चूलारूप कहो सबीका तात्पर्य्य एकार्थका हैं—और भी प्रसिद्ध द्रव्य चूला तीनप्रकारकी कही है जिसमें प्रथम कुक्कुट (मुरगा) के मस्तक उपर शिखररूप मांसपेसी सहित होनेसें उसीकों सचित्तचूला कही जाती हैं तथा दूसरी मोर (मयूर) के मस्तक उपर शिखररूप मांसपेसी ओर रोम सहित होनेसें उसीको मिश्र चूला कही जाती हैं और तीसरी मणि तथा कुन्त और मुकुटादिकके उपर शिखररूप होवे उसीकों अचित्त

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चूला कही जाती हैं इन्होंकों चूलाकी ओपमा देनेका यही कारण है कि सब अवअवयोंसें विशेष सोभाकारी सुन्दर उत्तम होनेसें शिखरकी अर्थात् चूलाकी ओपमा शास्त्रकारोंने दिवी हैं, द्रव्यचूलारूप भव्यशरीरकों गिनतीमें करके प्रमाण करनें योग्य हैं, द्रव्यनिक्षेपावत् अर्थात् रावण कृष्ण श्रेणिकादि अबी द्रव्य निक्षेपेमें गिने जाते हैं परन्तु जब केवल ज्ञान पावेंगें तब भाव निक्षेपेमें गिने जावेंगें तैसेही भव्यशरीर जो द्रव्यचूलामें हैं सो जब साधु आदि धर्मकी प्राप्ति होगा तब भावचूलामें गिना जावेगा। द्रव्यचूला की गिनती नही करोगे तो आगे भावचूलामें कैसे गिना जावेगा इस लिये द्रव्यचूलाकी गिनती प्रमाण करने योग्य हैं।

और क्षेत्रचूला भी तीनप्रकार की कही हैं जिसमें प्रथम अधोलोकमें रत्नप्रभा पृथ्वीके सीमन्तनामा नरकावासा अधोलोकके उपर जो शिखररूप है उसीकों अधोलोक चूला कही जाती हैं तथा दूसरी तिर्यग् (तीरछा) लोकमें सुप्रसिद्ध जो मेरुपर्वत हैं उसीको तिर्यग् लोकचूला कहते हैं कारण कि तिर्यग् लोकका प्रमाण उंचा १८०० सो योजनका हैं परन्तु मेरुपर्वत तो एक लक्ष योजनका होनेसें तिर्यग्लोककों भी अतिक्रान्त (उल्लङ्घन) करके उंचा चला गया इस लिये तिर्यग्लोकके उपर शिखररूप होनेसें मेरुपर्वतकों चूलामें गिना जाता हैं तथा मेरुके उपर जो ४० योजनकी चूलीका हैं सो भी मेरुके शिखररूप होनेसें चूलामें गिनी जाती हैं और मेरुके चार वनोंमें १६ तथा १ चूलीकाका मिलके १७ मन्दिरोंमें २०४० श्रीजिनेश्वर भगवान् की शाश्वती प्रतिमाजी हैं इसलिये क्षेत्रचूलाका प्रमाण एक अंशमात्र भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गिनतीमें नही छुटसकता हैं और तीसरी ऊर्द्ध (उंचा) लोकमें सर्वार्थ सिद्धि विमानसें बारह योजन पर ईषत्प्राग्भारा नाम पृथ्वी जो सिद्धसिला ४५००००० लक्ष योजन प्रमाणे लंबी और चौड़ी हैं तथा बीचमें आठ योजन की जाड़ी हैं जिसके उपर श्रीअनन्त सि भगवान् विराजमान हैं एसी जो सिद्ध सिला सो ऊर्द्ध लोकके शिखररूप होनेसें चूलामें गिनी जाती हैं यह क्षेत्रचूला भी प्रमाण करके गिनतीमें करनें योग्य हैं।

और कालचूला उसीको कहते हैं कि जो बारह चन्द्र मासोंसें चन्द्रसंवत्सर एकवर्ष होता हैं जिसका उचितकाल हैं उसमें भी एक अधिक मासकी वृद्धि हो कर बारह मासोंके उपर पड़ता हैं सो लोकोंमें प्रसिद्ध भी हैं और अनादि कालसें अधिकमासका एसाही स्वभाव है सो प्रमाण करनें योग्य हैं और अधिकमास ज्यादा पड़नेसें संवत्सरका नाम भी अभिवर्द्धित होजाता हैं बारहमासोंका कालके शिखररूप अधिकमास ज्यादा होनेसें उसको कालचूला कही जाती है तथा जैन ज्योतिषके शास्त्रोंसें साठ (६०) वर्षोंकी अपेक्षासें एक वर्षकी भी वृद्धि होती थी जिसकों भी काल-चूला कहते हैं और उत्सर्पिणिके अन्तमें भी जो काल वर्त्ते सोभी कालचूलामें गिना जाता हैं तथा कालचूलारूप जो अधिकमास है उसीको प्रमाण करके गिनतीमें मंजूर करना चाहिये क्योंकि अधिकमासको कालचूलाकी जो ओपमा है सो निषेधकवाची नहीं है किन्तु विशेष शोभाकारी उत्तम होनेसें अवश्य ही गिनती करनेके योग्य है। तथापि वर्तमानिक श्रीतपगच्छादिवाले जो महाशय अधिकमास को

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कालचूला कहके गिनती में नही लेते हैं और निषेध भी करते है। जिन्होंको मेरा इतना ही पूछना है कि आप लोग अधिक मासको कालचूला जानके गिनती नही करते हो तो अभिवर्द्धित नाम संवत्सर कैसे कहते हो और अभिवर्द्धित नाम सवत्सर तो कालचूलारूप अधिकमास ज्यादा होनेसे तेरह चन्द्रमासोंकी गिनती करनेसें ही होता है तथाहि---

अभिवर्द्धीत्यभिवर्द्धितः अभिवर्द्धितश्चासौ संवत्सरोऽभिवर्द्धितसंवत्सरः अभिवर्द्धतश्चात्राभिवृद्धिरूपः अभिवृद्धिस्तु अधिकमासे नैव बोधव्य अनयारीत्या अयं संवत्सर अन्वर्थसंज्ञां लब्धवान् अन्वर्थसंज्ञायाः कारणतातु अधिकमासनिष्ठैव कारणत्वावच्छिन्नस्तु शिरोमौलिमुकुटहीरायमाणोऽधिकमास एव अधिकमासनिरुक्तिश्चेत्थं यतोऽत्र संवत्सरे द्वादशमासेभ्योऽधिकः पतति अतोऽधिकमासः एतद्गणनामन्तरेण तु अन्वर्थसंज्ञायारसङ्गत्यापत्तिरेवेति ध्येयम्।

अर्थः जो और संवत्सरोंकी अपेक्षासें ज्यादा हो यानें अधिक महिनावाला होय सो अभिवर्द्धित संवत्सर इस संवत्सरमें वृद्धि जो है सो अधिकमास ही करके है इस कारणसे इस संवत्सरका अर्थानुसार अभिवर्द्धित नाम हुवा अर्थानुसार अभिवर्द्धित नाम रखनेमें अधिकमास कारण हुवा और अभिवर्द्धितनाम कार्य्य हुवा इनोंका कार्य्य कारण भाव सिद्ध हुवा कारणताधर्मयुक्त होनेसें यह अधिकमास सब मासोंके मस्तकके शोभा करने वाला जो मुकुट जिसकी शोभा करने वाला जो हीरारत्न उसकी तुल्य हुवा और जिस कारणसें इस महिनें का नाम अधिकमास हुवा सो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारण यह है कि यह मास इस संवत्सरमें बारहमासोंसे अधिक पड़ा इसलिये इसका नाम भी अर्थानुसार है इसकी गणनाके बिना अर्थानुसार नाम अभिवर्द्धित संवत्सरका न होगा न होनेसें असङ्गति दोष रहता है यह चिन्तन करना चाहिये। अब अधिक मासकी गिनती नही करने वाले महाशय तेरह चन्द्रमासोंके बिना अभिवर्द्धित संवत्सर कैसे बनावेंगे क्योंकि तेरह चन्द्रमासोंके बिना अभिवर्द्धित-संवत्सर नही हो सकता हैं तथा अभिवर्द्धित संवत्सरके बिना एकयुगके ६२ चन्द्रमासोंकी ६२ अमावस्या और ६२ पूर्णिमासीके १२४ पाक्षिकोंकी गिनती नही बन सकेगा इस लिये कालचूलारूप अधिक मासकी गिनती करनेसें अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह चन्द्रमासोंकी गिनतीसें होता है सोही श्रीअनन्ततीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्य तथा खरतरगच्छके और तपगच्छादिके पूर्वाचार्य्योंने अधिक-मासकों दिनोंमें पक्षोंमें मासोंमें वर्षोंमें गिनतीमें प्रमाण करके एकयुगके ६२ चन्द्रमासोंके १८३० दिनोंकी गिनती कही है सो उपरोक्त शास्त्रोंके पाठोंसे लिख आये हैं जिससे जिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी पुरुषोंको अधिक मासकी गिनती मंजूर करनी चाहिये इसके लिये आगे युक्ति भी दिखावेंगे इति कालचूला सम्बन्धी किञ्चित् अधिकार—

और चौथी भावचूला भी आगमसें तथा नो आगमसें क्षयोपशमादिकी व्याख्या प्रसिद्ध हैं और श्रीदशवैकालिकजी सूत्रकी दो चूला तथा श्रीआचाराङ्गजी सूत्रकी दो चूला और मन्त्राधिराज महामङ्गलकारी श्रीपरमेष्ठि-मन्त्रकी चार चूला इत्यादि सब भावचूला कही जाती हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सो विभूषणा कहो, शोभारूप कहो, शिखररूप कहो, विशेष सुन्दरता मुगटरूप कहो अथवा चूलारूप कहो, सब मतलबका तात्पर्य्य एकार्थका हैं इसलिये गिनती करने योग्य है और जैसें द्रव्य, भाव, नाम, स्थापनासें चार निक्षेपे कहे हैं सो मान्य करने योग्य है तथापि द्रव्य, स्थापनादि का निषेध करने वालोंकों (श्रीखरतरगच्छवाले तथा श्रीतप-गच्छादि वाले सर्व धर्म्मबन्धु) मिथ्यात्वी कहते हैं तैसे ही द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे जो चूला कही है सो अनादि-कालसें प्रवर्त्तना सरू हैं श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंने प्रमाण किवीं है सो आत्मार्थियोंकों प्रमाण करके मान्य करने योग्य है तथापि क्षेत्रकालादि चूलायोंकों गिनतीमें मान्य नही करते उलटा निषेध करते हैं और जो मान्य करते हैं जिन्होंको दूषण लगाते हैं ऐसे श्रीतीर्थङ्करादि महाराजों के विरुद्ध वर्तने वाले विद्वान् नामधारक वर्तमानिक महा-शयोंको आत्मार्थी पुरुष क्या कहेंगे जिसका निष्पक्षपाती श्रीखरतरगच्छके तथा श्रीतपगच्छादिके पाठक वर्ग स्वयं विचार लेवेंगे—

और अधिक मासको कालचूला कहनेसें भी गिनतीमें निषेध कदापि नही हो सकता है किन्तु अनेक शास्त्रोंके प्रमाणोंसें श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार अवश्यमेव गिनतीमें प्रमाण करणा योग्य है तथापि जैन सिद्धान्त समाचारीकारनें कालचूलाके नामसें अधिकमासकी गिनती उत्सूत्रभाषणरूप निषेध किवी है जिसका उतारा प्रथम इसजगह लिख दिखाते हैं और पीछे इसकी समालोचनारूप समीक्षा कर दिखावेंगे, जैनसिद्धान्त समाचारीके पृष्ठ ९०की

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पंक्ति १६॥ से पृष्ठ ९१ की पंक्ति १३ वीं तक चूला सम्बन्धी लेखका उतारा नीचे मुजब जानो—

[हम अधिक मासकों कालचूला मानते हैं सो अब दिखाते हैं, चूला चार प्रकारकी शास्त्रोंमें कथन करी है, यथा—निशीथे दशवैकालिक वृत्तौ च॥' तथाहि—'चूला चातुर्विध्यं। द्रव्यादिभेदात् तत्र द्रव्यचूला ताम्र चूलादि १ क्षेत्रचूला मेरोश्चत्वारिंशद्योजन प्रमाण चूलिका २ कालचूला युगे तृतीयपञ्चमयोर्वर्षयोरधिकमासकः ३ भावचूला तु दशवैकालिकस्य चूलिकाद्वयं ४ इति॥

(भावार्थः) जैसें निशीथसूत्र विषे और दशवैकालिक वृत्ति विषे है तैसें दिखाते हैं, चूला चार प्रकारकी है, द्रव्यादि भेद करके. तिसमें द्रव्यचूला उसकों कहते है कि-जो मुरगादिके शिरपर होती है. १ क्षेत्रचूला यह है कि-मेरूपर्वतकी चालीश योजन प्रमाण जो चूला है. २ काल चूला उसकों कहते है कि-जो तीसरे वर्ष और पाँचमें वर्षमें अधिक मास होता है. ३ भावचूला उसकों कहते है कि-जो दशवैकालिक की चूलिका है॥ ४॥

(पूर्वपक्ष) कालचूला कहनेसें आपकी क्या सिद्धि हुइ ?

(उत्तर) हे परीक्षक! कालचूला कहनेसें यह सिद्ध होता है कि-चूलावाले पदार्थके साथ प्रमाणका विचार करना होवे तो उस पदार्थसें चूला न्यारी नही गिनी जाती है. जैसें मेरुका लक्ष योजन प्रमाण कहेंगे तब चूलिकाका प्रमाण भिन्न नही गिणेंगे।

तैसें चतुर्मासके विचारमें और वर्षके विचार करनेके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अवसरमें अधिक मासका विचार न्यारा नही करेंगे, इस वास्ते अधिक मासकों कालचूला कहते है]।

उपरके लेखकी समीक्षा करते हैं कि—प्रथमतो जैन सिद्धान्त समाचारीकारनें निशीथ सूत्रके नामसें चूलाका पाठ लिखा है सो सूत्रमें बिलकुल नही है किन्तु निशीथ सूत्रकी चूर्णिमें जिनदास महत्तराचार्य्यजीने चूलासम्बन्धी व्याख्या किवी है और दशवैकालिक सूत्रकी वृत्तिके पाठका नाम लिखा सोभी नही है किन्तु दशवैकालिक सूत्रकी प्रथम चूलिका की वृहत् वृत्तिमें पाठ हैं और उपरमें जो चूला चातुर्विध्यं इत्यादि पाठ लिखा है सो न तो चूर्णिकारका है और न वृत्तिकारका है क्योंकि चूर्णिकारनें और वृत्तिकारनें द्रव्यचूला, आगम नो आगमसे भव्यशरीर और सचित्त, अचित्त, मिश्र, तथा क्षेत्रचूला भी सिद्धशिला और मेरुपर्वत अथवा मेरुचूलिका इत्यादि कालचूला भाव चूलाकी विस्तारसे व्याख्या किवी हैं सो हम उपरमें सम्पूर्ण पाठ लिख आये हैं। जिसको और जैनसिद्धान्त समाचारी कारका लिखा पाठको वांचकवर्ग आपसमें मिलावेंगे तो स्वयं मालुम हो सकेगा कि जैनसिद्धान्त समाचारीकारने जो पाठ लिखा है सोनिकेवल बनावटी है क्योंकि हमने उपरमें सम्पूर्ण पाठ लिखा है जिसके साथ इस पाठका अक्षर अक्षर और पंक्ति पंक्ति नही मिलती है तथा चूर्णिकार की प्राकृत संस्कृत मिली हुवी भाषा है और वृत्तिकारकी निर्युक्ति सहित व्याख्या किवी हुई है। जिनसें उपरका पाठ बिलकुल भाषा वर्णादिमें बरोबर नही है इस लिये उपरका पाठ बनावटी हैं—सो प्रत्यक्ष दिखता है तथापि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन सिद्धान्त सनाचारी कारनें (यथा निशीथे दशवैकालिक वृत्तौच—इस वाक्यसें जैसे निशीथ सूत्र विषे और दशवैकालिक वृत्तिविषे है तैसे दिखाते हैं) एसा लिखके भोले जीवोंको शास्त्रके नाम लिख दिखाये परन्तु शास्त्रकारका बनाया पाठ नही लिखा एसा करना आत्मार्थी उत्तम पुरुषको योग्य नही है और पाठका भावार्थ लिखे बाद पूर्वपक्ष उठायके उत्तर लिखा है जिसमें भी शास्त्रोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणरूप बिलकुल सर्वथा अनुचित लिख दिया है क्योंकि (चूलावाले पदार्थके साथ प्रमाण का विचार करना होवे तो उस पदार्थसें चूला न्यारी नही गिनी जाती है) इन अक्षरो करके चूलाकी गिनती भिन्न नही करनी करते है सो भी मिथ्या है, क्योंकि शास्त्रकारों नें चूला की गिनती भिन्न करके मूलके साथ मिलाइ है सोही दिखाते है कि—देखो जैसे श्रीमन्त्राधिराज महामङ्गलकारी श्रीपरमेष्टि मन्त्रमें मूल पांचपदके ३५ अक्षर है तथा चार चूलिका के ३३ अक्षर हैं सो मूलके साथ मिलने सें नवपदोसें चूलिकायों सहित ६८ अक्षरका श्रीनवकार परमेष्टि मन्त्र कहा जाता है और श्रीदशवैकालिकजी मूलसूत्रके दश अध्ययन है तथा दो चूलिका है जिसको भी शास्त्रकारोनें अध्ययन रूप ही मान्य किवी है और निर्युक्ति, चूर्णि, अवचूरि, वृहद्वृत्ति, लघुवृत्ति, शब्दार्थवृत्ति वगैरह सबी व्याख्याकारोंनें जैसें दश अध्ययनोंका अनुक्रमे सम्बन्ध मिलायके व्याख्या किवी है तैसें ही दो चूलिकारूप अध्ययनकी भी अनुक्रमणिका सम्बन्ध मिलायके व्याख्या किवी है और व्याख्यायोंके श्लोकोंकी संख्या भी चूलिकाके साथ सामिल करनेमें आती

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है एसे ही श्रीआचारांगजीकी चूलिका, श्रीव्यवहार सूत्रजी की चूलिका, श्रीमहानिशीथसूत्रकी चूलिका वगैरह सबी चूलिकायोंकी गिनती शास्त्रोंके साथ श्लोकोंकी संख्यामें आती है तथा व्याख्यानावसरमें भी चूलिका साथ सूत्र वांचनेमें आता है। परन्तु चूलिकाकी गिनती नही करनी एसे तो किसी भी जैन शास्त्रमें नही लिखा हैं इस लिये जो जो चूलावाले पदार्थ है उसीके प्रमाणका विचार और गिनतीका व्यवहारमें चूलाका प्रमाण सहित गिना जाता हैं और क्षेत्र चूलाके विषयमें जैनसिद्धान्त समाचारीकारनें लिखा है कि (जैसे मेरुका लक्षयोजनका प्रमाण कहेंगें तब चूलिकाका प्रमाण भिन्न नही गिनेंगे) इन अक्षरोंको लिखके मेरुपर्वतके उपर जो चालीस योजनके प्रमाणवाली चूलिका है। जिसके प्रमाणकी गिणती मेरुसे भिन्न नही कहते हैं सोभी अनुचित है क्योंकि शास्त्रोंमें मेरुके लक्ष-योजनका प्रमाण तथा चूलिकाका चालीस योजनका प्रमाण खुलासा पूर्वक भिन्न कहा हैं सोही दिखाते हैं कि—खास जैन सिद्धान्त समाचारीकारके ही परम पूज्य श्रीरत्नशेखर सूरिजीनें लघुक्षेत्र समास नामा ग्रन्थ बनाया हैं सो गुजराती भाषा सहित श्रीमुंबईवाला श्रावक भीमसिंहमाणक की तरफसें श्रीप्रकरण रत्नाकरका चौथाभागमें छपके प्रसिद्ध हुवा हैं जिसके पृष्ठ २३४ में मेरुकी चूलिकाके सम्बन्धवाली ११३ भी गाथा भाषा सहित नीचें मुजब जानो यथा—

तदुवरि चालीसुच्चा, वट्टामूलुवरि बारचउपिहुला
वेरुलिया वरचूला, सिरिभवण प्रमाण चेइहरा ॥ ११३ ॥

अर्थः—तदुपरि के, ते लाखयोजन प्रमाणना उंचा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मेरुपर्वत उपरे, चालीसुच्चा के०, चालीस योजननी उंची, अने, वट्ट के०, वर्तुल तथा, मूलुवरि बारचउपिहुला के०, मूलने विषे बार योजन पहोली अने उपर चारयोजन पहोली, तथा, वेरुलिया के०, वैडूर्यनामे जे नीलारत्न तेनी, वर के०, प्रधान, चूला के०, चूलिका छे तेवली चूलिका केहवी छे, सिरिभवण पमाण चेइहरा के०, श्रीदेवीना भवन सरखा चैत्यग्रह एटले जिन भवण तेणे करि महा-शोभित छे इति गाथार्थ ॥ ११३ ॥ उपरकी श्रीरत्नशेखर सूरिजी कृत गाथासे पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे कि, प्रगट पनेसे लक्षयोजनका मेरुके उपरकी चूलिकाके चालीस योजन का प्रमाण भिन्न गिना हैं तथापि जैनसिद्धान्त समाचारीकार भिन्न नही गिनना कहते हैं सो कैसे बनेगा तथा और भी सुनिये जो चूलिकाके प्रमाणको भिन्न नही गिनोंगे तो फिर चूलिकाके उपर एक चैत्य है जिसमें १२० शाश्वती श्रीजिने-श्वर भगवान्‌की प्रतिमाजी है उन्होंकी गिनती कैसे करोगे क्योंकि मेरुमें तो १६ चैत्य कहे है जिसमें १९२० प्रतिमाजी है। तथा एक चूलिकाके चैत्यकी १२० प्रतिमाजीकी गिनती शास्त्रकारोंने भिन्न किवी है सो, जैनमें प्रसिद्ध है। इस लिये चूलिकाकी गिनती अवश्यमेव करनी योग्य है तथापि जो मेरुके चूलिकाकी गिनती भिन्न नही करते हैं जिन्होंको एक चैत्यकी १२० शाश्वती जिन प्रतिमाजीकी गिनतीका निषेधके दूषणकी प्राप्ति होनेका प्रत्यक्ष दिखता है।

और भी आगे कालचूलाके विषयमें जैन सिद्धान्तसमा-चारीके कर्त्ताने ऐसे लिखा है कि (तैसे चतुर्मासके विचारमें और वर्षके विचार करनेके अवसरमें अधिक मासका विचार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

न्यारा नही करेंगे इस वास्ते अधिकमासको कालचूला कहते हैं) इन अक्षरोंको लिखके अधिक मासको कालचूला कहनेसें चतुर्मासकी और वर्षकी गिनतीमें नही लेना ऐसा कहते हैं सो भी अयुक्त है क्योंकि अधिक मासको कालचूला कहनेसें भी अवश्यमेव गिनतीमें लेना योग्य है सो उपरमें विस्तारसे लिख आये है, इसलिये अधिक मासकी गिनती कदापि निषेध नही हो सकती है श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंने प्रमाण किवी है और अधिकमासको कालचूलाकी ओपमा देनेवाले श्रीजिनदास महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर महाराज भी अधिक मासकी गिनती निश्चयके साथ करते हैं सोही दिखाते हैं श्रीनिशीथसूत्रकी चूर्णिके दशवें उद्देशेमें पर्युषणाकी व्याख्याके अधिकारमें पृष्ठ ३२२का तथाच तत्पाठः—

अभिवड्ढिय वरिसे वीसती राते गते गिहिणा तं करंति तिसुचन्दवरिसे सवीसति राते गते गिहिणा तं करंति जत्थ अधिमासगो पडति वरिसे तं अभिवड्ढिय वरिसं भण्णति जत्थ ण पडति तं चन्द वरिसं—सोय अधिमासगो जुगस्सगंते मज्झे वा भवंति जतितो णियमा दो आसाढ़ा भवंति अहमज्झे दो पोसा—सीसो पुछति जम्हा अभिवड्ढिय वरिसे वीसति रातं, चन्द वरिसे सवीसति मासो उच्यते, जम्हा अभिवड्ढिय वरिसे गिम्हे चेव सो मासो अतिक्कंतो तम्हा वीस दिना अणभिग्गहियं करंति, इयरेसु तिसु चन्द वरिसेसु सवीसति मासो इत्यर्थः ॥

देखिये उपरके पाठमें अधिक मास जिस वर्षमें पड़ता है उसीको अभिवर्द्धित संवत्सर कहते हैं जहाँ अधिक मास जिस वर्षमें नही पड़ता है उसीको चन्द्र संवत्सर कहते हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सो अधिक मास नियम करके होनेंसे युगके मध्यमें दो पौष तथा युगके अन्तमें दो आषाढ़ होते हैं जब दो आषाढ़ होते हैं तब ग्रीष्म ऋतुमें चेव निश्चय वो अधिकमास अतिक्रान्त (व्यतित) होगया इस लिये अभिवर्द्धित संवत्सरमें आषाढ़ चौमासीसे वीश दिन तक अनियत वास, परन्तु वीशमें दिन जो श्रावण शुक्लपञ्चमी उसी दिनसें नियत वास निश्चय पर्युषणा होवे और चन्द्र संवत्सरमें पचास दिन तक अनियत वास, परन्तु पचासमें दिन जो भाद्रपदशुक्लपञ्चमी उसी दिनसे नियत वास निश्चय पर्युषणा होवे—

अब उपरके पाठसे पाठकवर्ग पक्षपात रहित होकर स्वयं विचार करेंगें तो प्रत्यक्ष निर्णय हो सकेगा कि खास चूर्णिकार महाराजनें मास वृद्धिको गिनतीमें चेव (निश्चय) अवश्यमेव कहा है और प्रथम उद्देशेका जो पहिले पाठ लिखचुके हैं जिसमें कालचूलाकी भी उत्तम ओपमा दिवी है सो अधिक मासकी गिनती करनेसेही अभिवर्द्धित नाम संवत्सर बनता है सो विशेष उपर लिख आये है तथापि जैन सिद्धान्त समाचारीके कर्त्ताने चूर्णिकार महाराजके विरुद्धार्थमें कालचूला कहनेसें अधिक मासकी गिनती नही करना ऐसा लिखनेमें क्या लाभ उठाया होगा सो पाठकवर्ग विचार लेना-इति ॥

तथा और इसके अगाड़ी श्रीतपगच्छके अर्वाचीन (थोड़े कालके) तथा वर्त्तमानिक त्यागी, वैरागी, संयमी, उत्कृष्टि क्रिया करनेवाले जिनाज्ञा मुजब शास्त्रानुसार चलने वाले शुद्धपरूपक सत्यवादी और सुप्रसिद्ध विद्वान् नाम धराते भी प्रथम श्रीधर्म्मसागरजीनें श्रीकल्पकिरणावलीमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दूसरे श्रीजयविजयजीनें श्रीकल्पदीपिकामें तीसरे श्रीविनय विजयजीनें श्रीसुखबोधिकामें चौथे न्यायांभोनिधिजी श्री-आत्मारामजीनें जैन सिद्धान्तसमाचारी नामा पुस्तकमें पांचवें। न्यायरत्नजी श्रीशान्तिविजयजीनें मानवधर्म्म संहिता पुस्तकमें छठे श्रीवल्लभविजयजीनें वर्तमानिक जैन पत्र द्वारा सातवें श्रीधर्म्मविजयजीनें पर्युषणा विचारनामकी छोटीसी १० पृष्ठकी पुस्तकमें और आठवा श्रावक भगुभाई फतेचंदने भी पर्युषणा विचार नामका लेख खास जैन पत्रके २३ में अङ्कके आदिमें। इन सबीमहाशयोंने जैन शास्त्रोंके अति गम्भिरार्थका तात्पर्य्य गुरुगमसें समझे विना श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंके तथा खास श्रीतपगच्छकेही पूर्वाचार्योंके भी विरुद्ध होकर शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणरूप अधूरे अधूरे पाठ लिखके (परभवका भय न रखते मिथ्या) अपनी अपनी इच्छानुसार अधिक मास की गिनती निषेध सम्बन्धी अनेक तरहके विकल्प श्रीखर-तरगच्छादिवालोंके ऊपर आक्षेपरूप किये है।

जिसको पढ़नेसें भोले जीवोंकी श्रद्धा भङ्ग होनेका कारण जानके निर्पक्षपाती आत्मार्थी जिनाज्ञाके आराधक सत्य-ग्राही भव्य जीवोंको सत्यासत्यका निर्णय दिखानेके लिये उपरोक्त महाशयोंके लिखे हुए लेखोंकी समालोचनारूप समीक्षा शास्त्रानुसार तथा ग्रन्थकार महाराजके अभिप्राय सहित और युक्तिपूर्वक लिख दिखाता हुं—

प्रश्नः—तुम उपरोक्त महाशयोंके लिखे हुए लेखोंकी समीक्षा करोगें जिसमें जैन सिद्धान्त समाचारी की पुस्तक श्रीआत्मारामजी की बनाई हुई नहीं है किन्तु उनके शिष्य

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीकान्तिविजयजी तथानें श्रीअमरविजयजीनें बनाई है ऐसा उस पुस्तकमें छपा है फिर श्रीआत्मारामजीका नाम उपरमें क्यों लिखा है और पर्युषणा विचार नामकी छोटी पुस्तकके लेखक भी श्रीधर्म्मविजयजी नही है किन्तु उनके शिष्य विद्याविजयजी हैं फिर श्रीधर्म्मविजयजीका नाम उपरमें क्यों लिखा है।

उत्तरः—भो देवानुप्रिय! मैंने उपरमें श्रीआत्माराम जीका और श्रीधर्म्मविजयजीका नाम लिखा है जिसका कारण यह हैं कि जैन शास्त्रानुसार गुरु महाराजकी आज्ञा विना शिष्य कोई कार्य्य नही कर सकता हैं इस लिये शिष्यके जो जो कार्य्य करनेकी जरूरत होवे सो सो गुरु महाराजसें निवेदन करे जब गुरु महराज योग्यता पूर्वक कार्य्य करनें की आज्ञा देवें तब शिष्य गुरु महाराजकी आज्ञानुसार जो कार्य्य करना होवे सो कर सकता हैं उन कार्य्यके लाभालाभके अधिकारी गुरु महाराज होते हैं परन्तु शिष्य गुरु महाराजकी आज्ञानुसार कार्य्यकारक होता है इस लिये उस कार्य्यकों करानेंके मुख्य अधिकारी गुरु महाराज हैं इस न्यायके अनुसार प्रथम श्रीकान्तिविजयजीनें तथा श्रीअमरविजयजीनें, जैन सिद्धान्तसमाचारीकी पुस्तक बनानेके लिये श्रीआत्मारामजीसे आज्ञा मांगी होगी और बनाये पीछे भी अवश्यमेव दिखाई होगी जिसको श्रीआत्माराम जीने पढ़के छपानेकी आज्ञा दिवी होगी तब छपके प्रसिद्ध हुई है जो श्रीआत्मारामजी बनानेकी तथा छपाके प्रसिद्ध करनेकी आज्ञा न देते तो कदापि प्रसिद्ध नही हो सकती इस लिये जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकके प्रगटकारक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीआत्मारामजी ठहरे, आप कोई कार्य्य करना अथवा आप आज्ञा देकर कोई कार्य्य कराना सो भी बरोबर है जिससे मैंने श्रीआत्मारामजीका नाम लिखा है इसी न्यायसे श्रीधर्म्मविजयजीका भी नाम जानो—कदाचित् कोई ऐसा कहेगा कि गुरु महाराजकी आज्ञाविनाही प्रसिद्ध कर दिवी होगी तो इसपर मेरा इतनाही कहना है कि गुरु महाराजकी आज्ञा विना जो कोई भी कार्य्य शिष्य करे तो उसको गुरु आज्ञा विराधक अविनित तथा अनन्त संसारी शास्त्रकारोंने कहा हैं ऐसेको हितशिक्षारूप प्रायश्चित्त दिया जाता हैं तथापि अविनित पनेसें नही माने तो अपने गच्छसे अलग करनेमें आता है सो बात प्रसिद्ध है इसलिये जो श्रीआत्मारामजीकी आज्ञासे जैन सिद्धान्तसमाचारीकी पुस्तक तथा श्रीधर्म्मविजयजीकी आज्ञासे पर्युषणा विचारकी पुस्तक प्रसिद्ध हुई होवे तब तो उस दोनो पुस्तकमें शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें अधूरे अधूरे पाठ लिखके उत्सूत्रभाषणरूप अनुचित बाते लिखी है जिसके मुख्य लाभार्थी दोनो गुरुजन है इसी अभिप्रायसे मैंने भी दोनो गुरुजनके नाम लिखे हैं—

और अब उपरोक्त महाशयोंके लिखे लिखोंकी समीक्षा करते हैं जिसमें प्रथम इस जगह श्रीविनयविजयजी कृत श्रीकल्पसूत्रकी सुबोधिका (सुखबोधिका) वृत्तिविशेष करके श्रीतपगच्छमें प्रसिद्ध हैं तथा वर्तमानिक श्रीतपगच्छके साधु आदि प्रायः सब कोई शुद्ध श्रद्धापूर्वक सरल जानके उसीको हर वर्ष गांव गांवके विषे श्रीपर्युषणापर्व्वमें वांचते हैं जिसमें अधिक मासकी गिनती निषेध करनेके लिये लिखा हैं जिसको यहाँ लिखकर पीछे उसीमें जो अनुचित है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जिसकी समीक्षा करके दिखावुंगा जिससे आत्मार्थी प्राणियोंको सत्यासत्यकी स्वयंमालुम हो सकेगा श्रीसुखबोधिका वृत्ति मेरे पास हैं जिसके पृष्ठ १४६ की दूसरी पुठीकी आदिसे लेकर पृष्ठ १४७ की दूसरी पुठीकी आदि तकका नीचे मुजब पाठ जानो यथा—

अन्तराविय कप्पइ अर्वागपि कल्पते परं न कल्पते तां रात्रिं भाद्रशुक्लपञ्चमी उवायणा वित्तए त्ति अतिक्रमयितुं तत्र परिसामस्त्येन उषणं वसनं पर्युषणा सा द्वेधा गृहस्थज्ञाता गृहस्थै अज्ञाताव तत्र गृहस्थै अज्ञाता यस्यां वर्षायोग्य पीठफलकादौ प्राप्ते कल्पोक्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्थापना क्रियते साचाषाढ़पूर्णिमायां योग्यक्षेत्राभावे तु पञ्च पञ्चदिन वृद्धया दशपर्वतिथि क्रमेण यावत् भाद्रपद सितपञ्चम्यां एवं गृहिज्ञाता तु द्वेधा सांवत्सरिक कृत्यविशिष्टा गृहिज्ञातमात्राच तत्र सांवत्सरिक कृत्यानि॥संवत्सरप्रतिक्रान्ति१ लुञ्चनं२ चाष्टमं तपः ३ सर्वार्हद्भक्तिपूजा च ४ संघस्य क्षामणं मिथः ५ ॥ १ ॥ एतत्कृत्यविशिष्टा भाद्रसितपञ्चम्यामेव कालिकाचार्यादेशाच्चतुर्थ्यामपि केवलगृहिज्ञाता तु सा यत् अभिवर्द्धिते वर्षे चतुर्मासकदिनादारभ्य विंशत्यादिनैः वयमत्र स्थितास्म इति पृच्छतां गृहस्थानां पुरो वदन्ति। तदपि जैनटिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगान्ते चाषाढो वर्द्धते नान्येमासास्तट्टिप्पनकंतु अधुना सम्यग् न ज्ञायते ततः पञ्चाशतैश्च दिनैः पर्युषणायुक्तेति वृद्धाः अत्र कश्चिदाह ननु श्रावणवृद्धौ श्रावणसित चतुर्थ्यामेव पर्युषणायुक्ता नतु भाद्रसितचतुर्थ्यां दिनानामशीत्यापत्तेः। वासाणं सवीसइराए मासेवइक्कंते इति वचनबाधा स्यादिति चेन्मैवं अहो देवानां प्रिय एवमाश्विन-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृद्धौ चतुर्मासककृत्य माश्विनसितचतुर्दश्यां कर्तव्यं स्यात् कार्तिकसितचतुर्दश्यां करणे तु दिनानां शतापत्या॥ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वइक्कंते सत्तरिराइंदिएहिं॥ इति समवायांगवचनबाधा स्यात्। नच वाच्यं चतुर्मासकानां ही आषाढादिमासप्रतिबद्धानि तस्मात्कार्तिकचतुर्मासिकं कार्तिकसितचतुर्दश्यामेव युक्तं दिनगणनायां त्वाधिकमासः कालचूलेत्यविवक्षणाद्दिनानां सप्ततिरेवेति कुतः समवायांगवचनबाधा इति यतो यथा चतुर्मासकानि आषाढादिमास प्रतिबद्धानि तथा पर्युषणापि भाद्रपदमास प्रतिबद्धा तत्रैव कर्त्तव्या दिनगणनायां त्वधिकमासः कालचूलेत्यविवक्षणाद्दिनानां पञ्चाशदेव कुतोऽशीतिवार्तापि नच भाद्रपदप्रतिबद्धं तु पर्युषणा अयुक्तं बहुष्वागमेषु तथा प्रतिपादनात्॥ तथाहि॥ "अन्नया पज्जोसवणादिवसे आगए अज्जकालगेण सालवाहणो भणिओ, भद्दवयजुण्ह पंचमीए पज्जोसवणा" ॥ इत्यादि॥ पर्युषणाकल्पचूर्णौ तथा "तत्थ य सालवाहणो राया, सो अ सावगो, सो अ कालगज्जं इंतं सोऊण निग्गओ, अभिमूहो समणसंघो अ, महाविभूईए पविट्ठो कालगज्जो, पविट्ठेहिं अ भणिअं, भद्दवयसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्जइ, समणसंघेण पडिवन्नं, ताहे रन्ना भणिअं, तद्दिवसं मम लोगाणुवत्तीए इंदो अणुजाणेयव्वो होहित्ति साहू चेइए अणुपज्जुवासिस्सं, तो छट्ठीए पज्जोसवणा किज्जइ, आयरिएहिं भणिअं, न वट्टति अतिक्कमितुं, ताहे रन्ना भणिअं, ता अणागए चउत्थीए पज्जोसविज्जति, आयरिएहिं भणिअं, एवं भवउ, ताहे चउत्थीए पज्जोसवितं एवं जुगप्पहाणेहिं कारणे चउत्थी पवत्तिआ, सा चेवाणुमतासव्वसाहू-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

णमित्यादि ॥ श्रीनिशीथचूर्णौ दशमोद्देशके एवं यत्र कुत्रापि पर्यूषणानिरूपणम् तत्र भाद्रपदविशेषितमेव नतु क्वाप्यागमे भद्दवयसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्ज इति पाठवत् अभिवढ्ढिअ वरिसे सावणसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्जइति पाठ उपलभ्यते ततः कार्तिकमासप्रतिबद्ध चतुर्मासिकः कृत्य करणे यथा नाधिकमासः प्रमाणं तथा भाद्रमासप्रतिबद्ध पर्युषणाकरणेऽपि नाधिकमासः प्रमाणमिति त्यजकदाग्रहम् ।

श्रीविनयविजयजी कृत उपरके पाठका संक्षिप्त भावार्थः— अन्तरा वियसेत्ति इत्यादि कहनेसे आषाढ़पूर्णिमासे पचासमें दिन भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी जिसके अन्तरमे कारण योगे पर्यु-षणा करना कल्पे परन्तु पञ्चमीको उल्लङ्घन करना नही कल्पे वर्षाकालमें सर्वथा एकस्थानमें निवास करना सो पर्युषणा-जिसमें योग्यक्षेत्रके अभावसे पांच पांच दिनकी वृद्धि करते दशपर्वतिथिमें यावत् पचासमें दिन भाद्रपदशुक्लपञ्चमीको परन्तु श्रीकालकाचार्य्यजीसे चतुर्थी को गृहस्थी लोगोंको साधुके वर्षाकालका निबास अर्थात् पर्युषणाकी मालुम होती थी सो चन्द्रसंवत्सरकी अपेक्षासे परन्तु मास वृद्धि होनेसें अभिवर्द्धितनाम संवत्सरमें वीशदिने गृहस्थीलोगोंको साधुके निवास (पर्युषणा) की मालुम होती थी सो जैन टिप्पनाके अनुसारे एकयुगके मध्यमें पोषकी तथा अन्तमें आषाढ़की वृद्धि होती थी इसके सिवाय और मासोंके वृद्धिका अभावथा तब चन्द्रमें पचास दिनका तथा अभिवर्द्धितमें वीशदिनका नियम था, परन्तु अब वर्त्तमानकाले जैन टिप्पना नही वर्तता है तथा लौकिक टिप्पनामें हरेकमासोंकी वृद्धि होती है इस लिये—पंचाशतैश्चदिनैः पर्युषणायुक्तेति वृद्धाः—अर्थात् इस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कालमें मास वृद्धि हो अथवा न हो परन्तु पचासदिने पर्यु-षणा करना योग्य है ऐसे वृद्धाचार्य्य कहते हैं यहाँ कोई कहते हैं कि इस न्यायानुसार वर्तमान कालमें जब दो श्रावण होते हैं तब तो पचास दिनकी गिनतीसे दूजा श्रावण सुदी चौथके दिन पर्युषणा करना योग्य है परन्तु दो श्रावण होते भी भाद्रव सुदी चौथके दिन पर्युषणा करना योग्य नही है क्योंकि ८० दिन होजावेंगे, और श्रीकल्पसूत्रमें–वासाणं सवीसइराए मासे वीइक्कंते–अर्थात् आषाढ़ चौमासीसें एक मास और वीशदिन उपर, कुल पचाशदिन जानेसे पर्युषणा कहा है तथापि ८० दिने करनेसें सूत्रका इस वाक्यको बाधा आती हैं इस लिये ८० दिने पर्युषणा करना योग्य नही है,– ऐसा प्रश्नरूप वाक्य सुनके इसका उत्तर रूप वाक्य श्रीविनय विजयजी अपनी विद्धत्ताके जोरसे कहते हैं कि अहो देवानां प्रिय-अहो इति आश्चर्य्ये हेमूर्ख-अधिकमासकी गिनती करके दो श्रावण होनेसें दूजा श्रावणमें ५० दिने पर्युषणा करना कहता है तो दो आश्विन (आसोज) मास होनेसे ७० दिन की गिनती से दूजा आश्विन मासमें तेरेको चतुर्मासिक कृत्य करना पड़ेगा तथापि कार्तिक मासमें चतुर्मासिक कृत्य करेगा तो १०० दिन हो जावेगें, क्योंकि समणे भगवं महा-वीरे वासाणं सवीसइराए मासेवइक्कंते सत्तरिएराइं दिएहिं इति । श्रीसमवायांगजीमें पीछाड़ीके ७० दिन रहना कहा है इसवास्ते दूजा आसोजमें चौमासिक कृत्य करना पड़ेगा तथापि कार्तिकमें करेगा तो १०० दिन होजावेंगें तो श्रीस-मवायाङ्गजी सूत्रके वचनको बाधा आवेगी इस लिये अधिक मासकी गिनती करनेसें दूजा श्रावणमें पर्युषणा करना योग्य

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है। ऐसा नहीं कहना क्योंकि चतुर्मासिक कृत्य आषाढ़ादि-मासोंमें करनेका नियम हैं तिस कारणसें दो आश्विनमास होवे तोभी कार्त्तिक चौमासी कार्त्तिक शुदी चतुर्द्दशीके दिन करना योग्य है जिसमें अधिकमास कालचूला होनेसें दिनों की गिनतीमें नही आता है इसलिये दो आश्विन होवे तो भी कार्तिकमें १०० दिने चौमासी किया ऐसा नही समझना किन्तु ७० दिने ही किया गया ऐसा कहनेसें श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके वचनमें बाधा नहीं आती हैं इस कारणसें जैसें चतुर्मासिक आषाढ़ादि मासोंमें करनेका नियम हैं तैसे ही पर्युषणा भी भाद्रपद मासमें करनेका नियम हैं जिससे उसी (भाद्रवे) में करना चाहिये जिसमें भी अधिकमास आवे तो दिनोंकी गिनतीमें नही लेनेसे दो श्रावण होते भी भाद्रवेमें पर्युषणा करनेसे ५० दिने ही किया ऐसा गिना जाता है इस लिये ८० दिनोंकी वार्त्ता भी नही समझना तथा पर्युषणा भाद्रवेमें करनेका नियम है सो ही बहुत आगमोंमें कहा है तैसा ही श्रीविनयविजयजीने यहाँ श्रीपर्युषणा कल्पचूर्णिका तथा श्रीनिशीथ चूर्णिका पाठ लिख दिखाया जिसमें भी श्रीकालकाचार्य्यजी महाराज आषाढ़ चतुर्मासीके पीछे कारणयोगे विहार करके सालिवाहनराजा की प्रतिष्ठानपुर नगरीमें आने लगे तब राजा और श्रमण सङ्घ आचार्य्यजी महाराजके सामने आये, और महा महोत्सवपूर्वक नगरीमें प्रवेश कराया और पर्युषणा पर्व नजिक आये थे जब आचार्य्यजी महाराजके कहनेसे भाद्रव शुदी पञ्चमीके दिन पर्युषणा करनेके लिये सर्व सङ्घने मंजूर किया तब राजाने कहा कि महाराज उसी (पञ्चमी) के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन मेरे नगरीके लोगोंकी सम्मतीसे इन्द्रध्वजका महोत्सव होता है जिससे एक दिनमें दो कार्य्यके महोत्सव बननेमें तकलीफ होगा इस लिये पर्युषणा छठकी करो तब आचार्य्येजी महाराजने कहा कि छठकी पर्युषणा करना नही कल्पे जब फिर राजाने कहा कि चौथकी करो तब आचार्य्येजीने कहा यह बन सकता है, युगप्रधान महाराजकी इस बातको सर्व सङ्घने भी प्रमाण किवी है इत्यादि श्रीनिशीथ चूर्णिके दशवे उद्देशेमें इसी प्रकारसे पर्युषणाकी व्याख्या है सो भाद्रव मासमें करने की हैं जैसे ही मासवृद्धि होनेसे अभिवर्द्धित संवत्सर (वर्ष)में श्रावण शुदी पञ्चमीकी पर्युषणा करनी ऐसा पाठ कोई भी आगममें नही मिलता है तिस कारणसे कार्तिकमास बद्ध (आश्री) चतुर्मासिक कृत्य करनेमें जैसे अधिक मास प्रमाण नही है तैसे ही भाद्रव मास प्रतिबद्ध पर्युषणा करने में भी अधिकमास प्रमाण नही है इति अधिकमासकी गिनती करनेका कदाग्रहको छोड़ो——

उपरका लेख अधिकमासको गिनतीमें निषेध करनेके लिये श्रीविनयविजयजीकृत श्रीसुखबोधिकावृत्तिके उपरोक्तपाठसे हुवा है इसी ही तरहके मतलबका लेख श्रीधर्म्मसागरजीने श्रीकल्पकिरणावली वृत्तिमें तथा श्रीजयविजयजीने श्रीकल्प दीपिका वृत्तिमें अपने स्वहस्थे लिखा है सो यहाँ गौरवता ग्रन्थ बढ़ जानेके भयसे नही लिखते है जिसकी इच्छा होवे सो किरणावलीके तथा दीपिकाके नवमा व्याख्यानाधिकारे देख लेना इस तीनों महाशयोंके लेख प्रायः एक सदृश (तुल्य) है जिसमें भी विशेष प्रसिद्ध सुखबोधिका होनेसे मैंने उपर लिखा है सोही भावार्थः तथा पाठ तीनो महा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शयोंके जान लेना—अब तीनो महाशयोंके लेखकी शास्त्रानु सार और युक्तिपूर्वक समीक्षा करता हुं—इन तीनो महाशयों का मुख्य तात्पर्य्य सिर्फ इतना ही है कि अधिकमासको गिनतीमें नही लेना इस बातको पुष्ट करनेके लिये अनेक तरहके विकल्प लिखे हैं जिसको और अबमें समीक्षा करता हुं उसीको मोक्षाभिलाषी सत्यग्राही पुरुष निष्पक्षपातसे पढ़के सत्यासत्यका स्वयं विचारके गच्छका पक्षपातके दृष्टि रागका फंदको न रखते असत्यको छोड़ना और सत्यको ग्रहण करना येही सज्जन पुरुषोंकी मुख्य प्रतिज्ञाका काम है अब मेरी समीक्षा को सुनिये—श्रीधर्म्मसागरजी तथा श्रीजय विजयजी और श्रीविनयविजयजी इन तीनों श्रीतपगच्छके विद्वान् महाशयोंको प्रथमतो अधिक मासको कालचूला जानके गिनतीमें निषेध करना ही सर्वथा अनुचित है क्यों कि श्रीअनन्ततीर्थङ्करगणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंने तथा श्रीतपगच्छके पूर्वज और प्रभाविकाचार्योंने अधिक मासकी दिनोंमें, पक्षोंमें, मासोंमें, वर्षोंमें, गिनती खुलासा पूर्वक किवी है तथा कालचूलाकी उत्तम ओपमा भी शास्त्रकारोंने गिनती करने योग्य दिवी है और कालचूलाकी ओपमा देनेवाले श्रीजिनदास महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर भी अधिक मासको निश्चयके साथ गिनते हैं जिसका और श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंने अधिक मासको गिनतीमें लिया है जिसके अनेक शास्त्रोंके प्रमाणों सहित विस्तार पूर्वक उपरमें लिख आया हुं जिन शास्त्रोंके पाठोंसें जैनश्वेताम्बर सामान्य पुरुष आत्मार्थी होगा और शास्त्रोंके विरुद्ध परूपनासे संसारवृद्धिका भय रखनेवाला सम्यक्त्वी नामधारी होगा सो भी कदापि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिक मासकी गिनती निषेध नही करेगा तथापि श्रीतपगच्छके तीनो महाशय विद्वान् नाम धराते भी अपने बनाये ग्रन्थोंमें अपने स्वहस्ते श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंके विरुद्ध होकर अधिक मासकी गिनती निषेध करते हैं सो कैसे बनेगा अपितु कदापि नहीं इस लिये इन तीनो महाशयोंका कालचूलाके नामसे अधिक मासको गिनतीमें निषेध करना सर्वथा जैन शास्त्रोंके विरुद्ध है तथा और भी सुनिये जैन शास्त्रोंमें पांच प्रकारके मासोंसें और पांच प्रकारके संवत्सरोंसे एक युगके दिनोंका प्रमाण श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंने कहा है सो सर्वही निश्चयके साथ प्रमाण करके गिनती करने योग्य है जिसके कोष्टक नीचे मुजब जानो यथा—

मासोंके नाम	दिनोंका प्रमाण	और उपर एक अहोरात्रिके भाग करके	ग्रहण करना
नक्षत्र मास	२७	६७	२१
चन्द्र मास	२९	६२	३२
ऋतु मास	३०	०	०
सूर्य्य मास	३०	६०	३०
अभिवर्द्धित मास	३१	१२४	१२१

संवत्सरोंके नाम	दिनोंका प्रमाण	और उपर एक अहोरात्रिके भाग करके	ग्रहण करना
नक्षत्र संवत्सर	३२७	६७	५१
चन्द्र संवत्सर	३५४	६२	१२
ऋतु संवत्सर	३६०	०	०
सूर्य्य संवत्सर	३६६	०	०
अभिवर्द्धित सं०	३८३	६२	४२

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासोंकी गिनती तथा मासोंके नाम	संवत्सरोंके तथा मासोंके प्रमाणसें	एक युगकेदिनों का प्रमाण
६७ नक्षत्र मासके	पाँच नक्षत्र संवत्सर और उपर सात नक्षत्र मास जानेसे	एक युगके १८३० दिन
६२ चन्द्र मासके	पाँच संवत्सर जिसमें बारह बारह मासोंके तीन चन्द्र संवत्सर और तेरह तेरह मासोंके दो अभिवर्द्धित संवत्सर एसे पाँच संवत्सर जानेसे	एक युगके १८३० दिन
६१ ऋतु मासके	पाँच ऋतु संवत्सर और उपर एक ऋतुमास जानेसे	एक युगके १८३० दिन
६० सूर्य्य मासके	पाँच सूर्य्य संवत्सर जानेसे	एक युगके १८३० दिन
५७ अभिवर्द्धित मास तथा उपर ७ दिन और एक अहोरात्रिके १२४ भाग करके ४७ भाग ग्रहण करनेसे	चार अभिवर्द्धित संवत्सरके उपर नव (९) अभिवर्द्धित मास और ७ दिनके उपर एक अहोरात्रिके १२४ भाग करके ४७ भाग ग्रहण करे जितना काल जानेसे	एक युगके १८३० दिन

उपरोक्त कोष्टकों में पाँच प्रकारके मासोंका प्रमाणसे पाँच प्रकारके संवत्सरोंका प्रमाण, और एक युगके १८३० दिन का प्रमाण श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने कहा है जिसके अनुसार श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्त्ति सूरिजीने भी श्रीबृहत-कल्पवृत्तिमें लिखा है सो पाठ भी उपर लिख आया हुं जैन शास्त्रोंमें सूर्य्य मासकी गिनतीकी अपेक्षासे एकयुगके ६०सूर्य्य मासोंके पाँच सूर्य्य संवत्सरोंमें एक युगके १८३० दिन होते हैं जिसमें सूर्य्यमासकी अपेक्षा लेकर गिनती करनेसे मासवृद्धिका ही अभाव है परन्तु एकयुगके १८३० दिनकी गिनती बरोबर सामिल होनेके लिये खास ऋतुमासोंकी अपेक्षासे पाँच ऋतु संवत्सरोंमें सिर्फ एकही ऋतुमास वढ़ता है और चन्द्रमासों की अपेक्षासे पाँच चन्द्रसंवत्सरोंमें दो चन्द्रमास वढ़ते हैं तथा नक्षत्रमासोंकी गिनतीकी अपेक्षासे पाँच नक्षत्रसंव-त्सरोंमें सात नक्षत्रमास वढ़ते है और अभिवर्द्धित मासोंकी गिनतीकी अपेक्षासे तो चार अभिवर्द्धित संवत्सर उपर ९ अभिवर्द्धित मास और सात (७) दिन तथा एक अहो रात्रिके १२४ भाग करके ४७ भाग ग्रहण करे जितना काल जानसे (नक्षत्रमास, चन्द्रमास, ऋतुमास, सूर्य्यमास, और अभिवर्द्धित, मास इन सबोंके हिसाबके प्रमाण से) एक युगके १८३० दिन होजाते है सो उपरके कोष्टोंमें खुलासा है उपरका प्रमाण श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि पूर्वाचार्यों का तथा श्रीखरतरच्छके और श्रीतपगच्छके पूर्वज पुरुषोंका कहा हुवा होनेसे इन महाराजोंकी आशातनासे डरनेवाला प्राणी १८३०दिनोंकी गिनतीमेंका एक दिन तथा घड़ी अथवा पल मात्र भी गिनतीमें निषेध नही कर सकता है तथापि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीतपगच्छके अर्वाचीन तथा वर्तमानिक त्यागी, वैरागी संयमी, उत्कृष्टिक्रिया करनेवाले जिनाज्ञाके आराधक शुद्ध परूपक श्रद्धाधारी सम्यकत्वी विद्वान् नाम धराते भी महान् उत्तम श्रीतीर्थङ्कर गणधर और पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्य तथा खास श्रीतपगच्छकेही पूर्वजपूज्य पुरुषोंकी आशातनाका भय न रखते चन्द्रमासोंकी अपेक्षासे जो अधिक मास होता है जिसकी गिनती निषेध करके उत्तम पुरुषोंके कहे हुवे पाँच प्रकारके मासोंका तथा संवत्सरोंका प्रमाणकों भङ्ग करके एकयुगके दिनोंकी गिनतीमें भी भङ्ग डालते है जिन्होंकी विद्वत्ताको में कैसी ओपमा लिखुं इसका विचार करता था जिसमें श्रीआत्मारामजीकाही बनाया अज्ञानतिमिर भास्कर ग्रन्थका लेख मुजे उसी वख्तयाद आया सो लिख दिखाता हुं अज्ञानतिमिर भास्कर ग्रन्थके पृष्ठ २९४ के अन्तसे पृष्ठ २९६ के आदि तक का लेख नीचे मुजब जानो—

संविज्ञ गीतार्थ मोक्षाभिलाषी तिस तिसकाल सम्बन्धी बहुत आगमोंके जानकार और विधिमार्गके रसीये बहुमान देनेवाले संविज्ञ होनेसें पूर्वसूरि चिरन्तन मुनियोंके नायक जो होगये हैं तिनोनें निषेध नही करा है ; जो आचरित आचरण सर्वधर्मी लोक जिस व्यवहारको मानते हैं तिसकों विशिष्ट श्रुत अवधि ज्ञानादि रहित कौन निषेध करे ? पूर्व पूर्वतर उत्तमाचार्य्योंकी आशातनासे डरनेवाला अपितु कोई नही करे बहुल कर्मीकों वर्जके ते पूर्वोक्तगीतार्थो ऐसे विचारते हैं जाज्वल्यमान अग्निमें प्रवेश करनेवालेसें भी अधिक साहस यह है उत्सूत्र प्ररूपणा, सूत्र निरपेक्ष देशना, कटुक विपाक, दारुण, खोटे फलकी देनेवाली, ऐसे जानते हुए भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देते हैं, मरीचिवत्, मरीचि एक दुर्भाषित वचनसें दुःखरूप समुद्रकों प्राप्त हुआ ; एक कोटा कोटी सागर प्रमाण संसार में भ्रमण करता हुआ जो उत्सूत्र आचरण करे सो जीव चीकणे कर्मका बन्ध करते हैं। संसारकी वृद्धि और माया मृषा करते हैं तथा जो जीव उन्मार्गका उपदेश करें, और सन्मार्गका नाश करे सो गूढ़ हृदयवाला कपटी होवे, धूर्ताचारी होवे शल्य संयुक्त होवे सो जीव तिर्यंच गतिका आयुबन्ध करता है। उन्मार्गका उपदेश देनेसें भगवन्तके कथन करे चारित्रका नाश करता है, ऐसे सम्यग् दर्शनसें भ्रष्टकों देखना भी योग्य नही है, इत्यादि आगम वचन सुनके भी स्व अपने आग्रहरूप ग्रहकरी ग्रस्त चित्तवाला जो उत्सूत्र कहता है क्योंकि जिसका उरला परला कांठा नही है ऐसें संसार समुद्रमें महादुःख अंगीकार करनें सें।

प्रश्न—क्या शास्त्रकों जानके भी कोई अन्यथा प्ररूपणा करता है।

उत्तर—करता है सोई दिखाते हैं देखनेमें आते हैं—दुषमकालमें वक्रजड़ बहुत साहसिक जीव भवरूप भयानक संसार पिशाचसे न डरने वाले निजमतिकल्पित कुयुक्तियों करके विधिमार्गकों निषेध करने में प्रवर्त्तते है कितनीक क्रियांकों जे आगममें नही कथन करी है तिनको करते हैं और जे आगमने निषेध नही करी है चिरंतन जनोंने आचरण करी है तिनको अविधि कह करके निषेध करते हैं और कहते हैं—यह क्रियाओ धर्मीजनोंकों करने योग्य नही है।

उपरमें श्री आत्मारामजीके लेखमें जो पूर्वाचार्योंनें आचरीत (प्रमाण) करी हुई बातको निषेध करनेवालाकों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यावत् सम्यग् दर्शनसे भ्रष्टकों देखना भी योग्य नहीं है इत्यादि कहा तो इस जगह पाठकवर्ग बुद्धिजन पुरुष विचार रों कि श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंनें चंद्रमासकी अपेक्षासे जो अधिकमासकी वृद्धि होती है जिसको गिनतीमें प्रमाण किया है, तथापि श्रीतपगच्छके तीनो महाशय तथा वर्तमानिक विद्वान् नाम धराते भी निषेध करते हैं जिन्होंका त्याग, वैराग्य, संयम और जिनाज्ञाके शुद्ध श्रद्धाका आराधकपना कैसे बनेगा और शुद्ध परूपनाके बदले प्रत्यक्ष अनेक शास्त्रोंके प्रमाण विरुद्ध, उत्सूत्र भाषणका क्या फल प्राप्त करेंगें सो पाठकवर्ग स्वयं विचार लेना—

और श्रीधर्म्मसागरजी श्रीजयविजयजी और श्रीविनयविजयजी ये तीनो महाशय इतने विद्वान् हो करके भी गच्छ कदाग्रहका पक्षपातसे श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्ध परूपनाके फल विपाकका बिलकुल भय न करते सर्वथा प्रकारसे अधिक मासकी गिनती निषेध कर दिवी तथा औरभी अपने लिखे वाक्यका भी क्या अर्थ भूल गये सो अधिक मासकी गिनती निषेध करते अटके नही क्योंकि इन तीनो महाशयोंके लिखे वाक्यसे भी अधिक मास गिनतीमें सिद्ध होता है सोही दिखाते हैं (अभिवर्द्धित वर्षे चतुर्मासिकदिनादारभ्य विंशत्यादिनैर्वयमत्र स्थिताःस्म) यह वाक्य तीनो महाशयोंने लिखा है इस वाक्यमें अभिवर्द्धित वर्ष (संवत्सर) लिखा है सो अभिवर्द्धित वर्ष मास वृद्धि होनेसे तेरह चन्द्रमासोंकी गिनतीसे होता है इसमें अधिक मासकी गिनती खुलासा पूर्वक प्रमाण होती है और अधिकमासकी गिनतीके बिना अभिवर्द्धित नाम संवत्सर नही बनता है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्योंकि अधिक मासकी गिनती नही करनेसे बारह चन्द्र-मासोंसे चन्द्र संवत्सर होता है परन्तु अभिवर्द्धित नाम नही बनेगा जब अधिक मासकी गिनती होगा तब ही तेरह चन्द्रमासोंसे अभिवर्द्धित नाम संवत्सर बनेगा जिसका विस्तार उपर लिख आये हैं इस लिये अधिक मासकी गिनती तीनो महाशयोंके वाक्यसे सिद्ध प्रत्यक्ष पने होती है और फिरभी इन तीनो महाशयोंने (जैन टिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगान्ते च आषाढ़ो एव वर्द्धते नान्येमासाः तच्चाधुना सम्यग् न ज्ञायते ततः पञ्चाशतैव दिनैः पर्युषणा सङ्गतेति वृद्धाः) यह भी अक्षर लिखे हैं सो इन अक्षरोंसे भी सूर्य्यवत् प्रकाशकी तरह प्रगट दिखाव होता है कि जैन टिप्पनामें पौष और आषाढ़की वृद्धि होती थी सो टिप्पना इस कालमें नही हैं इस लिये पचास दिने पर्युषणा करना योग्य है यह श्रीतपगच्छके पूर्वज वृद्धाचार्योंका कहना है सो बातभी सत्य है क्योंकि इन तीनो महाशयोंके परमपूज्य श्रीतपगच्छके प्रभाविक श्रीकुलमण्डन सूरिजीने भी लिखी है जिसका पाठ इसी पुस्तकके नवमें (९) पृष्ठमें छप गया हैं—

अधिक मासकी गिनती अनेक जैन शास्त्रोंसे तथा उपरके वाक्यसे भी सिद्ध होती है और पचास दिने पर्युषणा करना अपने पूर्वजोंकी आज्ञासे तीनो महाशय लिखते हैं जिससे पाठकवर्ग विचार करे तो शीघ्रही प्रत्यक्ष मालुम हो सकता है कि वर्त्तमानमें दो श्रावण होतो दूजा श्रावणमें अथवा दो भाद्रव होतो भी प्रथम भाद्रवमें पचास दिनोंकी गिनतीसे ही पर्युषणा करना चाहिये यह न्याय स्वयं सिद्ध है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इन तीनो महाशयोंने प्रथम अभिवर्द्धित वर्षे इत्यादि वाक्य लिखे जिससे अधिक मासकी गिनती सिद्ध हुई और (पञ्चाशतैव दिनैः पर्युषणा युक्तेति वृद्धाः) यह वाक्य लिखके इस कालमें पचास दिने पर्युषणा करना ऐसे सिद्ध किया जिसमें जैन टिप्पनाके अभावसे भी पचास दिनका तो निश्चय रक्खा इस लिये वर्तमान कालमें पर्युषणा सर्वथा भाद्रव पदमें ही करनेका नियम नही रहा क्योंकि श्रावण मासकी वृद्धि होने से दूजा श्रावणमें और दो भाद्रव होनेसे प्रथम भाद्रवमें पचास दिनकी गिनती पूरी होती है यह मतलब तीनो महाशयोंके लिखे हुवे वाक्यसेभी सिद्ध होता है तथापि उपर का मतलबको ये तीनो महाशय जानते भी गच्छके पक्षपात के जोरसे अपनी विद्वत्ताकी लघुता कारक और अप्रमाण रूप विसंवादी (पूर्वापर विरोधि) वाक्य अपने स्वहस्ते लिखते बिलकुल विचार न किया और आषाढ़ चौमासीसे दो श्रावण होनेके कारणसे भाद्रव शुदी तक ८० दिन प्रत्यक्ष होते हैं जिसको भी निषेध करनेके लिये (पर्युषणापि भाद्रपदमास प्रति बद्धा तत्रेव कर्तव्या दिनगणनायांत्वधिक मासः कालचूलेत्य विवक्षणाद्दिनानां पञ्चाशतैव कुतोऽशीति वार्त्तापि) इन अक्षरोंको तीनो महाशयोंने लिखे है जिस में मास वृद्धि होनेसे भी भाद्रपदमें पर्युषणा करना और दो श्रावण होवे तोभी भाद्रवेमें पर्युषणा करनेसे ८० दिन होते हैं ऐसी वार्त्तापि नही करना क्योंकि अधिक मास कालचूला होनेसे दिनोंकी गिनतीमें नही आता है इस लिये ५० दिने पर्युषणा किया समझना ऐसे मतलबके वाक्य लिखना तीनो महाशयोंके पूर्वापर विरोधी तथा पूर्वाचार्य्योंकी आज्ञा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

खण्डनरूप सर्वथा जैन शास्त्रोंसे और युक्तिसे भी प्रतिकुल हैं क्योंकि प्रथमतो अधिक मासको गिनतीमें लेनेसेही अभिवर्द्धित नाम संवत्सर बनता हैं सो अभिवर्द्धित संवत्सर तीनो महाशयोंने ऊपरमें लिखा हैं जो अभिवर्द्धित संवत्सर का नाम श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंकी आज्ञानुसार कायम तीनो महाशय रक्खेंगें तो अधिकमास कालचूला है सो दिनोंकी गिनतीमें नही आता है ऐसे मतलबका लिखना तीनो महाशयोंका सर्वथा मिथ्या हो जायगा—

और अधिकमास कालचूला है सो दिनोंकी गिनतीमें नही आता है ऐसे मतलबको कायम रक्खेंगे तो जो अधिकमास की गिनतीसे अभिवर्द्धित नाम संवत्सर होता है सो नही बनेगा यह दोनो बात पूर्वापर विरोधी होनेसे नही बनेगे इस लिये अबजो ये तीनो महाशय अधिकमासको दिनोकी गिनतीमें नही लेवेंगें तब तो श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि तथा श्रीतपगच्छके नायक पूर्वाचार्योंने अधिक मासको दिनो की गिनतीमें लिया है जिन महाराजोंके विरुद्ध उत्सूत्र भाषणरूप तीनो महाशयोंका वचन होगया सो आत्मार्थियोंको सर्वथा त्यागने योग्य हैं इस लिये तीनो महाशयोंको जिनाज्ञा विरुद्ध परूपणाका भय होता तो अधिकमासकी गिनती निषेध किवो जिसका मिथ्या दुष्कृत्यादिसे अपनी आत्मा को उत्सूत्र भाषणके कृत्योंसे बचानी थी सो तो वर्तमान कालमें रहे नही है परलोक गयेको अनेक वर्ष होगये हैं परन्तु वर्तमान कालमें श्रीतपगच्छके अनेक साधुजी विद्वान् नाम धराते हैं और उन्ही तीनो महाशयोंके लिखे वाक्यको सत्य मानते है तथा हर वर्ष उसीको पर्युषणामें बाँचते है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जिसमें प्रायः करके गांव गांवमें श्रीतपगच्छके सब साधुजी अधिकमासकी गिनती निषेध जैन शास्त्रोंके विरुद्ध करते है जिससे श्रीतीर्थङ्करगणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्य तथा श्रीतपगच्छके पूर्वज पुरुषोंकी आज्ञाभङ्गका कारण होता है सो आत्मार्थी पुरुषोंको करना उचित नही हैं इसलिये जो श्रीतपगच्छके वर्तमानिक मुनिमहाशयोंको जिनाज्ञा विरुद्ध परूपणाका भय होवे तो अधिकमासकी गिनती निषेध करनेका छोड़ देना ही उचित है और आजतक निषेध किया जिसका मिथ्या दुष्कृत्य देकर अपनी आत्माको उत्सूत्र भाषणके पापकृत्योंसे बचानी चाहिये, तथापि विद्वत्ताके अभिमानसे और गच्छके कदाग्रहका पक्षपातके जोरसे उपर की बातको अङ्गीकार नही करते हुए अधिकमासकी गिनती निषेध करते रहेगे तो आत्मार्थीपना नही रहेगा तथा अधिकमासकी गिनती निषेध जैन शास्त्रोंके विरुद्ध होनेसे कोई आत्मार्थी प्रमाण नही कर सकता है इस लिये जैन शास्त्रानुसार श्रीतीर्थङ्करगणधरादि महाराजोंकी तथा अपने पूर्वाचार्य्योंकी आज्ञा मुजब अधिकमासकी गिनती सर्वथा प्रकारसे अवश्यमेव प्रमाण करनी सोही सम्यक्त्व धारी पुरुषोंका काम है जैनटिप्पनानुसार पौष तथा आषाढ़मासकी वृद्धि होती थी जब भी गिनतीमें लेते थे इस कारणसे तेरह चन्द्रमासोंसे संवत्सरका नाम अभिवर्द्धित होता था, सो वर्तमान कालमें भी अनेक जैन शास्त्रोंमें प्रसिद्ध है तथा श्रीधर्म्मसागरजी श्रीजयविजयजी श्रीविनयविजयजी, ये तीनो महाशय भी अभिवर्द्धित संवत्सर लिखते हैं जिसमें अधिकमासकी गिनती आजाती है इस मतलबका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विचार न करते उलटा विरुद्धार्थ में तीनो महाशयोंने अपने स्वयं विसंवादी (पूर्वापरविरोधि) वाक्यरूप अधिक मास कालचूला है सो दिनोंकी गिनतीमें नही आता है ऐसा लिख दिया, और विसंवादी वाक्यका विचार भी न किया। विसंवादी पुरुषका दुनियांमें भी कोई भरोसा नही करता है तथा राजदरबारमें भी विसंवादी पुरुष झूठा अप्रमाणिक होता है और जैनशास्त्रोंमें तो श्रावककों भी धर्म व्यवहारमें विसंवादी वचन बोलनेका निषेध किया है सोही दिखाते हैं श्रीआत्मारामजीने अज्ञानतिमिरभास्कर ग्रन्थके पृष्ठ २५६में श्रावककों यथार्थ कहना अविसंवादी वचन धर्म्मे व्यवहारमें ॥ तथा श्रीधर्म्मसंग्रह वृत्तिके ग्रन्थमें भी यही बात लिखी है और श्रीधर्म्मरत्नप्रकरण वृत्तिमें भी यही बात लिखी है सोही दिखाते हैं। श्रीधर्म्मरत्नप्रकरण वृत्ति गुजरातीभाषा सहित श्रीपालीताणामें श्रीविद्याप्रसारकवर्ग है जिसकी तरफसे छपके प्रसिद्ध हुवी है जिसके दूसरे भागमें पृष्ठ २१४ विषे यथा—

ऋजुप्रगुणं व्यवहरणमृजुव्यवहारो भावश्रावकलक्षणश्चतुर्द्धा चतुःप्रकारो भवति तद्यथा—यथार्थभणनमविसंवादि वचनं धर्मव्यवहारे।

अर्थ—ऋजु एटले सरल चालवुं ते ऋजुव्यवहार ते चार प्रकारनो छे जेमके एकतो यथार्थ भणन एटले अविसंवादी बोलवुं ते धर्मनीबाबतमां।

देखिये अब उपरमें श्रावककों भी धर्म्म व्यवहारमें विसंवादीरूप मिथ्याभाषण बोलनेका जैन शास्त्रोंमें नही कहा है। तो फिर विद्वान् साधुजी होकर विसंवादी वाक्य

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अपने बनाये ग्रन्थमें लिखना क्या उचित है। कदापि नही और इसी ही श्रीधर्म्मरत्नप्रकरणके दूसरे भागमें पृष्ठ २४६ की आदिसे पृष्ठ २४७ की आदि तकका लेखमें विसंवादी आदि वाक्य बोलने वालेको जो फलकी प्राप्ति होती है सो दिखाते है यथा—

अन्यथा भणनमयथार्थजल्पनमादिशब्दाद्वंचक क्रिया दोषोपेक्षाऽसद्भावमैत्री परिग्रहस्तेषु सत्सु श्रावकस्येति भावः—अबोधेर्धर्माप्राप्तेर्बीजं मूलकारणं परस्य मिथ्या दृष्टे-र्नियमेन निश्चयेन भवतीति शेषः।

तथाहि—श्रावकमेतेषु वर्त्तमानमालोक्य वक्तारः सम्भ-वन्ति॥ धिगस्तु जैनं शासनं? यत्र श्रावकस्य शिष्टजन-निन्दितेऽलीकभाषणादौ कुकर्मणि निवृत्तिर्नोपदिश्यते॥ इति निन्दाकरणादमी प्राणिनो जन्मकोटिष्वपि बोधिं न प्राप्नुवन्तीत्यबोधि बीजमिदमुच्यते ततश्चाबोधिबीजाद् भव-परिवृद्धिर्भवति तन्निन्दाकारिणस्तन्निमित्तभूतस्य श्रावकस्यापि यद्वाचि—शासनस्योपघातेयो—नाभोगेनापि वर्त्तते सत-न्मिथ्यात्वहेतुत्वादन्येषां प्राणिनामिति॥१॥ बध्नात्यपि तदेवालं परं संसारकारणं विपाकदारुणं घोरं सर्वानर्थ विवर्द्धन (मिति)॥२॥

टीकानो अर्थः—अन्यथा भणन एटले अयथार्थ भाषण आदि शब्द थी वंचक क्रिया दोषोनी उपेक्षा तथा कपट मैत्री लेवी अेदोषो होय तो श्रावक बीजा मिथ्या दृष्टि जीवने नक्कीपणे अबोधिनुं बीजथइ पडेछे एटले के तेथी बीजा धर्म्मपामी शक्ता नथी। कारणके अे दोषोमां वर्तता श्रावकने जोइ तेओ येवुबोलेके "जिन शासनने धिक्कार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थाओ" के ज्यां श्रावकोने आवा शिष्टजनने निन्दनीय मृषा भाषण वगेरा कुकर्म थी अटकाववानो उपदेश करवामां नथी आवतो अेवो रीते निन्दा करवाथी ते प्राणिओ क्रोड़-जन्मो लगी पण बोधिने पामी शकता नथी तेथी ते अबोधिबीज कहवायें छे अने ते अबोधिबीजथी तेवी निन्दा करनारनो संसारवधे छे एटलुंज नहीं पण तेना निमित्त भूत श्रावकनो संसार वधे छे, जे माटे कहेलुं छे के—जे पुरुष अजाणतां पण शासननी लघुता करावे ते बीजा प्राणिओंने तेवी रीते मिथ्यात्वनो हेतु थई तेना जेटलाज, संसारनु कारण कर्म बांधवा समर्थ थई पड़े छे के जे कर्मविपाक दारुण घोर अने सर्व अनर्थनुं वधारनार थइ पड़ेछे ॥ १—२ ॥

उपरमें अन्यथा अयथार्थ भाषण अर्थात् विसंवादी वाक्यरूप मिथ्याभाषणादि करने वाला श्रावक निश्चय करके मिथ्या दृष्टि जीवोंको विशेष मिथ्यात वढ़ानेवाला होता है और उससे दूसरे जीव धर्म प्राप्त नही कर सकते हैं किन्तु ऐसे श्रावकको देखके जैन शासनकी निन्दा करने वालोंको संसारकी वृद्धि होती है। और विसंवादीरूप मिथ्याभाषण करनेवाला श्रावक भी निन्दा करानेका कारणरूप होनेसे अनन्त संसारी होता है तो इस जगह पाठकवर्ग बुद्धिजन पुरुषोंको विचार करना चाहियें कि श्रीधर्मसागरजी श्रीजय-विजयजी श्रीविनयविजयजी ये तीनो महाशय इतने विद्वान् होते भी अनेक जैनशास्त्रोंके विरुद्ध और अपने स्वहस्ते अभिवर्द्धित संवत्सर उपरमें लिखा है जिसका भी भङ्ग कारक अधिकमास की गिनती निषेधरूप विसंवादी मिथ्या वाक्य भी अपने स्वहस्ते लिखते अनन्त संसार वृद्धिका भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भय नही करते हैं तो अब ऐसे विद्वानोंको आत्मार्थी कैसे कहे जावे और अधिक मासकी गिनती निषेधरूप विसंवादी मिथ्या वाक्य इन विद्वानोंका आत्मार्थी पुरुष कैसे ग्रहण करेगें अपितु कदापि नही तथापि जो अधिक मासकी गिनती निषेध श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा विरुद्ध होते भी वर्तमानिक पक्षपाती जन करते हैं जिन्होंको सम्यक्त्वरूप रत्न कैसे प्राप्त होगा इस बातको पाठकवर्ग स्वयं विचार शकते हैं—

और जैनशास्त्रानुसार अधिकमासके दिनोकी गिनती करनाही युक्त है इस लिये अधिकमास कालचूला है सो दिनोंकी गिनतीमें नही आता है ऐसा मतलब तीनो महाशयोंका शास्त्रोंके विरुद्ध है सो उपरोक्त लेखसे प्रत्यक्ष दिखता है इन शास्त्रों के न्यायानुसार वर्तमानकालमें दो श्रावण होनेसे भी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेसे ८०दिन प्रत्यक्ष होते हैं सो बात जगत् भी मान्य करता हैं तथापि ये तीनो महाशय और वर्तमानिक श्रीतपगच्छके महाशय भी मंजूर नही करते हैं तो इस जगह एक युक्ति भी दिखलाने के लिये श्रीतपगच्छके विद्वान् महाशयोंसें मेरा इतना ही पूछना है कि आषाढ़ चतुर्मासीसे किसी पुरुष वा स्त्रीने उपवास करना सरू किया तथा उसी वर्षमें दो श्रावण हुवे तो उस पुरुष वा स्त्रीको पचास (५०) उपवास कब पूरे होवेंगे और अशी (८०) उपवास कब पूरे होवेंगें इसका उत्तरमें श्रीतपगच्छके सर्व विद्वान् महाशयोंको अवश्यमेव निश्चय कहना ही पड़ेगा कि— दो श्रावण होनेसे पचास उपवास दूजा श्रावण शुदी में और ८० उपवास दो श्रावण होनेके कारणसे भाद्रपदमें पूरे होवेंगे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस युक्तिसे अधिक मासकी गिनती निश्चय के साथ श्रीतप-गच्छके विद्वान् महाशयोंके कहने से भी सिद्ध होगई तथा अनेक शास्त्रानुसार ५० दिने दूजा श्रावण शुदीमें श्रीपर्युषणा पर्वका आराधन करनेवाले जिनाज्ञा के आराधक सिद्ध हो गये और दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करने वाले, शास्त्रोंकी मर्य्यादाके विरुद्ध होनेमें कोई संसय भी करेगा अपितु नही, तथापि इन तीनो महाशयोंने(दो श्रावण होते भी भाद्रपद तक ८० दिनकी वार्त्ता भी नही समझना) ऐसे मतलबको लिखा है सो कैसे सत्य बनेगा तथापि वर्तमानिक श्रीतपगच्छके मुनिमहाशय विद्वान् होते भी ऊपरकी इस मिथ्या बातको सत्य मानके वारंवार कहते हैं जिन्होंको मृषावादका त्यागरूप दूजामहाव्रत कैसे रहेगा सो भी विचारने की बात है, इस उपरोक्त न्यायानु-सार भी अधिक मासकी गिनती निषेध कदापि नही हो सकती हैं तथापि तीनो महाशय करते हैं सो सर्वथा महा मिथ्या है इसलिये दो श्रावण होनेसें भाद्रव शुदी तक ८०दिन अवश्यमेव निश्चय होते हैं जिससे गिनती निषेध करना ही नही बनता है और मासवृद्धि होनेसे भी पर्युषणा भाद्रपद मास प्रति बद्ध है ऐसा लिखना भी तीनो महाशयोंका सर्वथा जैनशास्त्रोंसे प्रतिकुल है क्योंकि प्राचीनकालमें भी मासवृद्धि होती थी जब भी वीश दिने श्रावण शुक्लपञ्चमी के दिन पर्यु-षणा करनेमें आते थे जैसे चन्द्र संवत्सरमें पचास दिनके उपरान्त सर्वथा विहार करना नही कल्पे तैसे ही अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिनके उपरान्त सर्वथा विहार करना नही कल्पे और वीश दिन तक अज्ञात पर्युषणा परन्तु वीशमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिनसे ज्ञात पर्युषणा करे सो १००दिन यावत् कार्तिकपूर्णिमा तक उसी क्षेत्रमें ठहरे ऐसा श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्त्ति सूरिजी कृत श्रीवृहत्कल्पवृत्तिका पाठमें विस्तारपूर्वक कहा है ऐसे ही अनेक शास्त्रोंमें कहा है जिसके पाठ भी श्रीवृहत्कल्प वृत्यादिकके कितने ही पहिले लिख आया हुं और आगे भी लिख दिखावुंगा और खास तीनो महाशयोंके लिखे पाठसे भी अभिवर्द्धितमें वीश दिने श्रावणशुक्लपञ्चमीको पर्युषणा करनेमें आतेथे इसका विशेष खुलासाके साथ आगे विस्तार पूर्वक लिखुंगा जिससे वहाँ प्राचीनकालका तथा वर्तमानिक कालका अच्छी तरहसे निर्णय हो जावेगा—

और आगे इन तीनो महाशयोंने श्रीपर्युषणा कल्प-चूर्णिका तथा श्रीनिशीथचूर्णिका पाठ लिखके मासवृद्धि वर्त-मानिक दो श्रावण होते भी भाद्रव मासमें ही पर्युषणा करने का दिखाया है इस पर मेरा इतना ही कहना है कि इन तीनो महाशयोंने (श्रीपर्युषणा कल्पचूर्णिमें और श्रीनिशीथ-चूर्णिमें ग्रन्थकार महाराजने पर्युषणा सम्बन्धी विस्तारपूर्वक पाठ लिखाया जिसके) आगे और पीछे का संपूर्ण सम्बन्धका पाठको छोड़के ग्रन्थकार महाराजके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र-भाषणरूप माया वृत्तिसे अधूरा थोड़ासा पाठ लिखके भोले जीवोंको शास्त्रके पाठ लिख दिखाये और अपनी विद्वत्ताकी बात दृष्टिरागियोंमें जमाई हैं इस लिये इस जगह भव्य जीवोंको निःसन्देह होनेसे सत्य बातपर शुद्धश्रद्धा हो करके सत्यबात ग्रहण करे इस लिये दोनो चूर्णिकार पूर्वधर महाराज कृत संपूर्ण पर्युषणा सम्बन्धी पाठ यहाँ लिख दिखाता हुं श्रीपूर्वधर पूर्वाचार्य्यजी कृत श्रीपर्युषणा कल्प

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(दशाश्रुतस्कन्ध सूत्रका अष्टम अध्ययनके) चूर्णिके पृष्ठ ३१ से ३२ तक तत्पाठः—

आसाढ़चाउम्मासियं पडिक्कमंति, पंचहिं दिवसेहिं पज्जोसवणा कप्पं कड्ढेति, सावण बहुल पंचमीए पज्जोसवेति णव वाहिट्ठितेहिं ण गहिता णित्थरादीणि, ताहे कथं कहंता चेव गिरहंति मलयादीणि एवं आसाढ़पुरिणमाए ठिता, जाव मग्गसिरबहुलस्स दसमी, तावएगंमि खेत्ते अच्छेज्जा, तिन्निवा दससराता, एवंतिन्निपुण दस राता, चिस्कलादीहि कारणेहिं॥ एत्यउ गाथा पत्थंति पज्जोसविते, सवीसति राय मासस्स आरात्तो जति गिहत्था पुच्छंति, तुब्भे अज्जो वासा रत्तं ठिता, अहवा ण ठिता एवं, पुच्छितेहिं, जति अहिवड्ढिय संवच्छरे, जत्थ अहिमासतो पडिति तो, आसाढ़पुरिणमाओ वीसति राते गते भसति, ठितामोति आरतो ण कथयति वोत्थं ठिता मोति, अथ इतरे तिन्निचंद संवच्छरा तेसु सवीसति राते मासे गते भसंति, ठितामोति आरतो ण कथयति वोतुं ठिता मोति, किं कारणं असिवादि, गाथा कयाइ, असिवादीणि उप्पज्जेज्जा जेहिं निग्गमणं होज्जा ताहेति, गिहत्था मसेज्ज, ण किंचि एते जाणंति, मुसावात वाउलावेंति, जेणं ठितामोति भणित्ता, निग्गता, अहवा वासं ण सुट्ठ आरद्धं, तेण लोगो भीता धणंज्जंचितुं, ठितो साहूहिं भणितो ठियामोति जाणति, एते वरिसास्सति तो सुयामो धस्सं विक्किणामो, अधि करणं घराणियत्थप्पंति, हलादीणय संवप्पं करेंति, जम्हा एते दोसा, तम्हा वीसती राते आगते, सवीसति राते वा मासे आगते, ण कथंति वोतुं ठितामोति॥ एत्थउ गाथा॥ आसाढ़पुरिणमाए ठिताणं जतितणडगलादीणि गहियाणि, पज्जोसवणा कप्पोय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

य कहितो, तो सावण बहुलपञ्चमीएपज्जोसवेंति असति खेते सावण बहुलदसमीए, असति खेते सावणबहुलस्स पन्न-रसीए, एवं पंचपंच उसारं तेण जाव, असति भद्दव सुद्ध पंचमीए, अतो परेण ण वट्टति अतिकमितुं, आसाढ़पुण्णिमातो अढत्तं मग्गंताणं, जाव भद्दवय जोण्हस पञ्चमीए एत्यन्तरे जति ण लं ताहे रुक्खस्स हेठ्ठेठितो तोविपज्जोसवेयव्वं, एतेसु पव्वेसु जहा लंभे पज्जोसवेयव्वं, अपव्वे ण वट्टति, कारिणिया चउत्थीवि अज्ज कालएहिं पवित्तिता कहं पुण उज्जेणीए णगरीए, बलमित्त भाणुमित्तो रायाणो, तेसिं भाइणेज्जो अज्ज कालए पव्वाविता, तेहिंराईहं पदुट्ठेहिं, अज्ज कालतो निव्विसत्तोकत्तो सोपतिट्ठाणं आगतो, तत्थय सालवाहणो राया सावगो तेण समणपुयणत्थणो पवित्तितो ॥ अंते पुरंच भणितं अमावसाए उववासं काउइअट्ठमिमाईसु उववासं काउ ॥ इति पाठां-तरं ॥ पारणए साहूण भिरकं दातुं पारिज्जव ॥ अन्नय पज्जो सवणादिवसे आसन्ने आगते अज्ज कालएण सालवाहणो भणितो, भद्दवय जोण्हस्स पंचमीए पज्जोसवणा, रन्ना भणितो तद्दिवसं मम इंदो अणुजातव्वो होहित्ति तो निप्पज्ज वासि-ताणि चेतियाणि साहूणोय भविस्संतित्ति कोऊं तो छट्ठीए पज्जोसवणा भवतु, आयरिएण भणितं न वट्टति अतिक्कामेसु, रन्ना भणिय् तो चउत्थीए भवतु आयरिएण भणितं एवं होउत्ति ॥ चउत्थीए कतो पज्जोसवणा एवं चउत्थीविजाता कारणिता, सुद्ध दसमी ठिताण आसाढी पुण्णिमो सरणति जत्थ आसाढ़मासकप्पो कतो तत्थ खेतं वासावासं पाउग्गं अन्नच णत्थि खेतं वासावासं पाउग्गं अथवा अज्जासे चेव अन्नी खेत्तं वासावास पाउग्गं सव्वंच पडिपुन्नं संथारग इग-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लगाइ कययभूमीय वट्ठ वासंच गाढ़ं अणोरयं आढ़तं, ताहे आसाढ़पुस्मिमाए चेव पज्जोसविज्जति, एवं पंचाहं परिहाणि मविकृत्योच्यते, इय सत्तरी गाथा, इय प्रदर्शने आसाढ़चाउ मासिया तो सवीसति राते मासे गते पज्जोसवेंति, तेसिं सत्तरी दिवसा जहस्रतो जेट्ठोग्गहो भवति, कहं पुण सत्तरी, चउण्हं मासाणं सवीसं दिवस सतं भवति, ततो सवीसत्ति रातो मासो, पस्रासं दिवसा सो वितो सेसा सत्तरी, दिवसा जे भद्दवय बहुलस्स दसमीए पज्जोसवेंति, तेसिं असीति दिवसा जेट्ठोग्गहो, जे सावण पुस्मिमाए पज्जोसवेंति तेसिं णउतिदिवसा जेट्ठोग्गहो, जे सावण बहुल दसमी ठिता तेसिं दसुत्तरं दिवससतं जेट्ठोग्गहो, एवमादीहिं पग्गारेहिं वरिसारत्तं एग खेत्ते अत्थिता कत्तिय चाउमासिए णिग्गंतव्वं, अह वासं ण उवरमति, तो मग्गसिरे मासे जं दिवसं पक्क मट्टियं जात तद्दिवसं चेव निग्गंतव्वं, उक्कोसेण तिस्रि दसराया न निग्गच्छेज्जा मग्गसिर पुस्मिमाएत्ति भणियं होइर मग्गसिर पुस्मिमाए परेण, जइविप्लवंतेहिं तहवि णिग्गंतव्वं, अथ न निग्गच्छंति तो चउलहुग्ग, एवं पंचमासिअं जेट्ठोग्गहो जाओ, काउण गाहा ॥ आसाढ़मासकप्पं काउं जत्थ अन्नं वासा वासे पाउग्गं जत्थ आसाढमासकप्पो कओ तत्थेव पज्जोसविते आसाढ पुस्मिमाए वा सालंबणाणं मग्गसिरं पिसव्वं, वासा णतो विरमति तेण ण निग्गता असीवादीणिवा वाहिपवं सालंबणाणं छमासि तो जेट्ठोग्गहो ॥ इत्यादि ॥

और श्रीजिनदास महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर महाराज कृत श्रीनिशीथ सूत्रकी चूर्णिके दशमे उद्देशेके पृष्ठ ३२१ से पृष्ठ ३२४ तक का पर्युषणा सम्बन्धीका पाठ नीचे मुजब जानो, यथा—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वासावासैकंमि खेत्तकंमि काले पवेसियव्वं,अतो भण्णति, आसाढपुण्णिमा ॥ गाहा ॥ वायवंति उस्सग्गेण पज्जोसवेयव्वं, अहवा प्रवेष्टव्यं, तंमि पविठा उस्सग्गेण कत्तिय पुण्णिमं जाव अच्छंति, अववादेण मग्गसिर बहुल दसमी जाव तंमि एग खेत्ते अच्छंति, दसरायगाहणातो अववातो दंसितो अणे वि दो दसराता अछेज्जा,अववातेण मार्गसिरमासं तत्रैवास्त्ये-त्यर्थः ॥ कहं पुण वासा पाउग्गं खेत्तं पविसंति,इमेण विहिणा वाहिठिता॥ गाहा॥ वाहिठियत्ति जत्थ,आसाढमासकप्पो कतो अणत्थवा आसन्ने ठिता वा समायारी खेत्तं, वसभेहिं गाहेंति चावव्रंतीत्यर्थः ॥ आसाढपुण्णिमाए पविठा, पडिवयाउ आरब्भ पंचदिणा,संथारग तण डलगछार मल्लादीयं गिण्हति, तंमिचेवपणगेरातिए पज्जो सवणा कप्पं कहेंति, ताहे सावण बहुल पञ्चमीए वासकाल सामायारिं ठवेति, एत्थउअ ॥गाहा॥ एत्थंतिएत्थ, आसाढपुण्णिमाए, सावण बहुलपञ्चमीए, वासावासं पज्जोसविएवि, अप्पणो अणभिग्गहियं,अहवा जति गिहत्था पुच्छंति अज्जो तुब्भे, अत्थेव वारिसाकालं ठिया, अहवा ण ठिया, एवं पुच्छिएहिं, अणभिग्गहियंत्ति संदिग्धं वक्तव्यं, अह अन्यत्रवाप्यापि निश्चयो भवतीत्यर्थः ॥ एवं सन्दिग्धं कियत्कालं वक्तव्यं ॥ उच्यते ॥ वीसतिरायं, वीसतीमासं, जति अभिवड्डियवरिसं, तो, वीसतिरायं, जाव अणभिग्गहियं, अह चंदवरिसं तो सवीसतिरायं, जाव अणभिग्गहियं भवति तेषां तत्कालात्परतः अप्पणो अभिरामुख्येन गृहीतं, अभिगृहीतं इदं व्यवस्थिता इति, इहट्ठियामो वरिसाकालंति किं पुण कारणंति, वीसति राते, सवीसतिराते वा मासे गते, अप्पणो अभिग्गहियं गिहिणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संवा कहेंति ॥ आरतो न कहेंति उच्यते ॥ असिवादि गाहा कयाइ ॥ असिवं भवे आदिगाहणतो रायदुठाइ वा वासं वा सुट्ठ आरद्धं वासितुं, एवमादिहिं कारणेहिं, जइ अच्छंति तो आणा तीता दोसा, अहगच्छंति ततो गिहत्था भणंति एते, सव्वणुपुत्तगा ण किञ्चिजाणंति, मुसावायं भासंति, ठिता-मोत्ति भणित्ता जेण णिग्गता लोगो वा भणिज्ज साहूएत्थ वरिसारत्तं ठिता, अवस्सं वासं भविस्सति, ततो धण्णं विक्कणति, लोगो घरादीनिच्छादेंति, अह हलादिकं माणि-वामं ठवेति, अणिगाहिते गिहिणा तेय आरतो कतो, जम्हा एवमादिया अधिकरणदोसा, तम्हा अभिवड्ढि-यवरिसे,वीसतीराते गते गिहिणा तं करेंति, तिसु चंदवरिसे सवीसति राते मासे गते गिहिणा तं करेंति, जत्थ अधि-मासगो पडति वरिसे,तं अभिवड्ढियवरिसं भण्णति, जत्थ ण पडति, तं चंदवरिसं सोय अधिमासगो जुगस्सगंते मज्जे वा भवन्ति, जइ तो नियमा दो आसाढा भवंति, अहमज्जे दो पोसा, सीसो, पुच्छति जम्हा अभिवड्ढियवरिसे वीसति-रातं, चन्दवरिसे सवीसतिमासो ॥ उच्यते ॥ जम्हा अभि-वड्ढियवरिसे, गिम्हे चेव सो मासो अतिक्कंतो, तम्हा वीस दिना अणभिगाहियं तंकरेंति, इयरेसु तिसु चंदवरिसेसु सवी-सतिमासा इत्यर्थः ॥ एत्थ पणगं गाहा ॥ एत्थउ आसाढपुण्णि-माए,ठिया डगलादीयं गिण्हंति,पज्जोसवणाकप्पंच कहेंति, पंचदिणा ततो सावण बहुल पञ्चमीए, पज्जोसवेंति, खेत्ता भावे कारणेन पणगेसु वुड्ढे दसमीए, पज्जोसवेंति, एवं पण्ण रसीए, एवं पणग्गवड्ढी,तावकज्जति, जाव सवीसति मासो, पुणो सोय सवीसति मासो भद्दवयसुद्ध पञ्चमी पयुज्जति,

अहवा आसाढ़सुद्ध दसमीए वासा खेत्तं पविठा, अहवा, जत्थ आसाढमासकप्पोकओ तं वासप्पाउग्गं खेत्तं, अन्नं च णत्थि वास पाउग्गं ताहे तत्थेव पज्जोसवेंति, वासंच गाढं अणु वरयं आषाढ़पुण्णिमाहिं तत्थेव पज्जोसवेंति, एक्कारसीओ आढवेउ डगलादी तं गेण्हंति पज्जोसवणा कप्पं कहेंति, ताहे आसाढ पुण्णिमाए पज्जोसवेंति, एस उस्सग्गो, सेस कालं पज्जोसवेताणं सव्वो अववातो, अववातेवि सवीसति रातमासा तो परेण अतिक्कामेउ ण वट्टति, सवीसति राते मासे पुणे जतिवासखेत्तं ण लभ्भति तो रुक्ख हेट्ठेवि पज्जोसवेयव्वं तं पुण्णिमाए पञ्चमीए दसमीए एवमादि पव्वेसु पज्जोसवेयव्वं, णोअपव्वे ॥ सीसो पुच्छति इयाणिं कहं चउत्थिए अपव्वे पज्जोसविज्जति, आयरिओ भणति, कारणिया चउत्थी, अज्जकालगायरियाहिं पवत्तिया, कहं भण्णते कारणं, कालगायरिओ विहरंतो, उज्जेणिं गतो तत्थ वासावासो वासातरंठितो तत्थ ॥ णगरीए बलमित्तो राया, तस्स कणिट्ठो भाया भाणुमित्तो जुवराया, तेसिं भगणी भाणुसिरी णामं तस्स पुत्तो बलभाणू णाम, सोयपगितिभद्दविणीययाए साहू तो पज्ज वासति आयरिहिं से धम्मो कहितो पडिवुद्धोपव्वावितोय, तेहि य बलमित्त भाणुमित्तेहिं कालग्गज्जापज्जोसवितेणिविसतो कत्तो, आयरिया भणंति जहा, वलमित्त भाणुमित्ता कालगायरियाणं भागिणेज्जा भवंति, माउलोत्ति, काउ महंतं आयरं करेंति, अभ्भुठाणादियंतं च पुरोहियस्स अप्पत्तियं भणातिय, एसमुद्दपासंडोवेतादितादिरोहणोअ अतो पुणो पुणो उल्लावेंतो, आयरिएण णिप्पठप्पसिणा वागरणो कतो, ताहे सो पुरोहितो आयरियस्स पदुठ्ठो, रायाणं आणुलोमेहिं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विप्परिणामेति एते रिसितो महाणुभावा एते जेणं गच्छन्ति तेण पहेणं जति रणो णागच्छति पताणि वा असमितो असिवं भवति, तम्हा विसज्जाहं ताहे विसज्जिता अणे भणंति, रण्णा उवाएण विसज्जिता कहं सव्वं भिणागारकिल रण्णा असंसण्णा कराविता, ताहे णिग्गता एवमादियाण कारणाण अणुक्कमेण णिग्गता विहरंता पतिठ्ठाणं णयरं, तेण पविठा पतिठ्ठाण समणसंघस्सय अज्जकालगेहिंसदिठं, जावाहं आगच्छामि ताव तुभ्भेहिं णो पज्जोसवियव्वं, तस्य सालवाहणोराया सो सावगो सोयकालगज्जंएतं सोउंणणिग्गतो अभिमुहो समणसंघोय महसा विभूतीए पविठो, कालगज्जो पविठेहिं भणियं भद्दवय सुद्ध पञ्चमीए पज्जोसविज्जति, समणसंघेण पडिवस्सं,ताहे रण्णा भणियं तद्दिवसं मम लोगाणुवत्तीए इन्दो अणुजायव्वो होहेत्ति, साहूचेतितेणपज्जवासे हसती तो छट्ठीए पज्जोसवणा किज्जउ, आयरिएहिं भणियं, ण वट्टति, अतिकामेउ ताहे रण्णा भणियं,तो अणागए, चउत्थीए पज्जोसविज्जति, आयरिएहिं भणियं एवं भवउ, ताहे चउत्थीए पज्जोसवियं, एवं जुगप्पहाणेंहिं चउत्थी कारणे पवत्तिता, साचेवाणुमत्ता सव्व साधूणं, रण्णा अंते पुरियाउ भणिता तुभ्भे अमावसाए उवावासंकाउं पडिवयाए सव्व खज्ज भोज्ज विहीहिं साधू उत्तरपारणए पडिलाभेत्ता पारे ज्जाहा, पज्जोसवणाए अठ्ठमतिकाउ पडीवयाए उत्तरपारणयं भवति तंच सव्वभोगेण विकयंततोपभिति मरहठविसपसवण पूव्वउत्तिवणोपवक्ले ॥ इयाणिं पंचगपरिहाणिमधिकत्य कालावग्राहोच्यते ॥ इय सत्तरी गाहा ॥ इय इति उपप्रदर्शने जे आसाढचाउम्मासिया तो सवीसति राते

मासे गते पज्जोसवेंति, तेसिं सत्तरी दिवसा जहणो वासा कालोगाहो, भवति, कहं सत्तरी उच्यते, चउण्हं मासाणं विसुत्तरं दिवससतं भवति, सवीसति मासो पत्रासं दिवसा, ते वीसुत्तरमज्जतो साधितो, सेसा सत्तरी, जे भद्दवय बहुलदस मीए पज्जोसवेंति, तेसिं असति दिवसा मज्झिमो वासा कालो गाहो भवति, सावणपुस्मिमाए पज्जोसवेंति तेसिं णिउति दिवसा मज्झिमो चेव वासकालो गाहो भवति, जे सावण बहुलदसमी पज्जोसवेंति तेसिं दसुत्तरं सतंमज्झिमो चेव वासा कालोगाहो भवति, जे आसाढ़पुस्मिमाए पज्जोसवेंति, तेसिं वीसुत्तरं दिवससयं जेठो वासोग्गहोभवइ सेसन्तरेसु दिवस पमाणं वत्तव्वं, पमातिप्पगारेहिं वरिसारत्तं एग्गखेत्ते, कत्तिय चउम्मासिय, पडिवयाए अवस्स णिग्गंतव्वं, अह मग्गसिर मासे वासति चिरक्कलाजलाउलापंथा तो अववातेण एक्कं उक्कोसेणं तिस्मि वा दसराया जावतम्मिखेत्ते अच्छंति, मार्गसिरपौर्णमासीयावेत्यर्थः॥ मग्गसिर पुस्मिमाए जं परतो जतिचिरक्कला पंथा वासं वा गाढं अणावरयं वासति, जति विप्लवंतेहिं तहावि अवस्सं णिग्गंतव्वं, अह ण णिग्गच्छति, तो चउगुरूगा, एवं पञ्चमासि तो जेठो गाहो जातो,काउण मास गाहा, जंमि खेत्ते कतो आसाढ़मासकप्पो तंच वासावासं पाउग्गं खेत्ते अणंमिअलद्धे वास पाउग्गे खेत्ते जत्थ आसाढ़मासकप्पो कतो तत्थेव वासावासं ठिता तीसे वासा वासे चिरक्कलादिएहिं कारणेहिं तत्थेव मग्गसिरं ठिता एवं सालंवणाण कारणे अववातेण छ मासितो जेठो गहो भवतीत्यर्थः॥

उपरोक्त दोनुं पाठ मेरे देखनेमें आयेथे वैसेही छपा दिये हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसलिये कुछ विशेष अशुद्धता होवे तो दूसरी शुद्ध पुस्तकसे उपरोक्त दोनों पाठका मिलान करके बाँचना अब उपरोक्तदोनुं पाठका संक्षिप्त भावार्थः सुनो—वर्षाकालके लिये एक क्षेत्रमें प्रवेश करना ठहरना सो कितना काल तक सोही कहते हैं आषाढ़पूर्णिमासे लेकर उत्सर्गसे पर्युषणा करे अथवा प्रवेश करे सो यावत् कार्तिक पूर्णिमा तक रहे और अपवादसे मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी तक यावत् रहे तथा फिर भी कारणयोगे दो दशरात्रि (वीशदिन) याने मार्गशीर्ष पूर्णिमा तक भी रहना कल्पे सो प्रथम किस विधिसे प्रवेश करके पर्युषणा करे वह दिखाते हैं—जहां आषाढ़मासकल्प रहा होवे वहाँ अथवा अन्य क्षेत्रमें आषाढ़पूर्णिमाके दिन चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद प्रतिपदा (एकम) से लेकर पाँच दिनमें उपयोगी वस्तु ग्रहण करके पञ्चमी रात्रि याने श्रावण कृष्णपञ्चमीकी रात्रिको पर्युषणा कल्प कहके वर्षा-कालकी समाचारी को स्थापन करे, याने पर्युषणा करे, सो अधिकरण दोष न होने के कारणसे और उपद्रवादि कारणसे दूसरे स्थानमें जावेतो अवहेलना न होवे इसलिये अनि-श्चय पर्युषणा करे, अधिकरण दोषोंका वर्णन संक्षेपसे पहिलेही लिखा गया है इसलिये पुनः नही लिखता हुं और निश्चय पर्युषणा कब करे सो कहते हैं कि अभिवर्द्धित वर्षमें वीशदिने और चन्द्रवर्षमें पचाशदिने निश्चय पर्यु-षणा करे, क्योंकि जैसे युगान्तमें जब दो आषाढ़ होते हैं तब ग्रीष्म ऋतुमें चेव निश्चय अधिक मास व्यतीत होजाता है इसलिये अभिवर्द्धित वर्षमें आषाढ़ चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद प्रतिपदासे वीशदिन तक अनिश्चय पर्युषणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

परन्तु वीशमें दिन श्रावणशुक्लपञ्चमीसे निश्चय प्रसिद्ध पर्युषणा होवे, और चन्द्रवर्षमें पचाश दिन तक अनिश्चय पर्युषणा परन्तु पचाशमें दिन भाद्रपद शुक्लपञ्चमीसे निश्चय प्रसिद्ध पर्युषणा होवे, सो जब आषाढ़पूर्णिमासेही योग्यक्षेत्र मिले और उपयोगी वस्तुका योग्य होवे तो ग्रहण करके चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद उसी रात्रिको पर्युषणा कल्प कहे याने जो अकेला साधु होवे तब तो उस रात्रिको श्रीकल्पसूत्रका पठन करके अनिश्चय पर्युषणा स्थापन करे और साधुओंका समुदाय होवे तो सर्व साधु कायोत्सर्गमें सुने और वृद्धसाधुजी मधुर स्वरसे श्रीपर्युषणा कल्पका उच्चारण करके अनिश्चय पर्युषणा स्थापन करे तथा योग्यक्षेत्र न मिले तो फिर पाँच दिन तक दूसरे स्थान (गांव) में जाके उपयोगी वस्तु ग्रहण करके श्रावण कृष्ण पञ्चमीको पर्युषणा करे इसी तरहसे योग्यक्षेत्राभावादि कारणे अपवादसे पांच पांच दिनकी वृद्धि करते यावत् भाद्रपदशुक्लपञ्चमीको अवश्यही पर्युषणा निश्चय करे तथापि भाद्रपदशुक्लपञ्चमी तक योग्यक्षेत्र नही मिलेतो जङ्गलमें वृक्ष नीचे भी अवश्यही पर्युषणा करे परन्तु पञ्चमीकी रात्रिको उल्लङ्घन करना नही कल्पे और भाद्रपद शुक्लपञ्चमीके पहले आषाढ़ पूर्णिमासे योग्यता मिलनेसे अनिश्चय पर्युषणा स्थापन करनेमें आते है जिसमें स्थापन करे उसी रात्रिको श्रीपर्युषणा कल्प कहके पर्युषणा स्थापे जिसको गृहस्थी लोगोंके न जानी हुई पर्युषणा कहते हैं और पचासमें दिन भाद्रपद शुक्लपञ्चमी की निश्चय प्रसिद्धसे पर्युषणा उसीमें सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करे जिसको गृहस्थी लोगोंके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जानी हुई पर्युषणा कहते हैं और भाद्रपद शुक्लपञ्चमी के उपरान्त विहार करना सर्वथा नही कल्पे इस लिये योग्य-क्षेत्रके अभावसे वृक्ष नीचे भी अवश्यही निवास (पर्युषणा) करना कहा है जैसे चन्द्रवर्षमें पचास दिनका निश्चय है तैसे ही अभिवर्द्धितवर्षमें वीशदिने श्रावण शुक्लपञ्चमीकी निश्चय पर्युषणा करने का नियम था परन्तु वीशदिनमें श्रावण शुक्लपञ्चमीकी रात्रिको उल्लङ्घन करना सर्वथा प्रकारसे नही कल्पे इस तरह पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमादि पर्वतिथिमें पर्युषणा करे, परन्तु अपर्वमें नही, जब शिष्य पूछता है कि आप अपर्वमें पर्युषणा करना नही कहते हो फिर चतुर्थीका अपर्वमें कैसे पर्युषणा करते हो तब आचार्य्यजी महाराज कहते है कि कारण से चतुर्थी को पर्युषणा करनेमें आते हैं सोही कारण उपरोक्त पाठानुसार जैन इतिहासों में तथा श्रीकल्पसूत्र की व्याख्याओंमें प्रसिद्ध है और इसीपुस्तकमें पहिले संक्षेप से लिखागया है इस लिये यहां भाषार्थमें विस्तारके कारणसे नहीं लिखता हुं, अब जघन्य, मध्यम, और उत्कृष्ट से पर्युषणाके कालावग्रहका प्रमाण कहते है कि चार मासके १२० दिनका वर्षाकाल होता है तब आषाढ चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद पचासदिने पर्युषणा करे तो सत्तर (७०) दिवस जघन्यसे कार्त्तिक चौमासी तक रहते हैं परन्तु योग्यक्षेत्र मिलनेसे भाद्रव कृष्णदशमी को ही पर्युषणा कर लेवे उसीको ८० दिन मध्यमसे रहते हैं तथा श्रावण पूर्णिमा को पर्युषणा करे तो ९० दिन मध्यमसे रहते हैं। इसी तरह यावत् श्रावण कृष्णपञ्चमी को पर्युषणा किवी हो तो ११५ दिन मध्यम से रहते हैं और आषाढ पूर्णिमासे ही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्युषणा किवी होवे तो उत्कृष्ट से १२० दिन रहते हैं पीछे उत्सर्गसे कार्तिक पूर्णिमाको अवश्य विहार करे, परन्तु वर्षादि कारणसे चिक्खल कर्दमादि कारण योगे अपवाद से मार्गशीर्ष पूर्णिमा तक भी रहना कल्पे पीछे तो अपवाद से भी अवश्य निकले विहार करे, नही करे तो प्रायश्चित आवे जहां आषाढमास कल्प किया होवे वहां ही चौमासी ठहरे तथा मार्गशीर्ष पूर्णिमाको विहार करे तो उत्कृष्ट छ मासका कालावग्रह होता है इत्यादि—

अब पाठकवर्ग देखिये उपरका दोनु पाठ प्राचीनकाल में पूर्वधरोंके समयका उग्रविहारी महानुभाव पुरुषोंको जैन ज्योतिषानुसार बर्तने का है जिसमें उत्सर्गसे आषाढ़ पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमातक पर्युषणा करे और अपवादसे श्रावण कृष्ण । ५ । १० । ३० । श्रावण शुक्ल ५ । १० । १५ । भाद्र कृष्ण । ५ । १० । ३० । और भाद्र शुक्ल ५ । इन दिनोंमें जहां योग्यक्षेत्र मिले वहां ही पर्युषणा करे । परन्तु पञ्चमीको उल्लङ्घन नही करे, जिससे जघन्यमें ७० दिनकी पर्युषणा होती है तथा मध्यमसे । ७५ । ८० । ८५ । ९० । ९५ । १०० । १०५ । ११० । ११५ । ऐसे नव प्रकारकी पर्युषणा होती है और उत्कृष्टसे १२० दिन की पर्युषणा होती है ।

जिसमें चन्द्र संवत्सरमें अपवादसे भी पचास दिन की भाद्रवशुक्ल पञ्चमीको उल्लङ्घन नही करे जिससे पीछाड़ीके ७० दिन रहते हैं तैसेही अभिवर्द्धित संवत्सर में अपवादसे भी बीशमें दिनकी श्रावणशुक्लपञ्चमी को उल्लङ्घन नही करे जिससें पीछाड़ीके कार्तिकपूर्णिमा तक १०० दिन रहते हैं और श्रावण शुक्लपञ्चमीको सांवत्सरिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रतिक्रमणादि भी पूर्वधरोंके समयमें जैन ज्योतिषानुसार करनेंमें आतेथे सो उपरमें लिख आया हुं और आगे भी खुलासापूर्वक लिखुंगा वहां विशेष निर्णय होजावेगा—

और आषाढ़ चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद योग्यतापूर्वक पांच पांच दिने पर्युषणा करे सो सिर्फ एक श्रीकल्पसूत्रका रात्रिको पठण करके पर्युषणा स्थापन करे परन्तु अधिकरण दोष उत्पन्न होने के कारणसे गृहस्थी लोगों को कहे नही और अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने तथा चन्द्रसंवत्सरमें पचासदिने वार्षिक कृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करने से गृहस्थी लोगों को पर्युषणाकी मालुम होती है सो यावत् कार्तिकपूर्णिमा तक उसी क्षेत्रमें साधु ठहरे सर्वथा प्रकारसे एक स्थानमें निवास करना सो पर्युषणा कही जाती है इस लिये आषाढ़ चौमासी पीछे योग्यतापूर्वक जहां निवास करे उसीको पर्युषणा कहते हैं सो अज्ञात पर्युषणा कही जाती है और चन्द्रसंवत्सरमें पचास दिने तथा अभिवर्द्धितमें वीशदिन सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करने से ज्ञात पर्युषणा कही जाती है इसका विशेष विस्तार आगे भी करने में आवेगा—

और श्रीदशाश्रुतस्कन्धचूर्णिके तीस (३०) के पृष्ठमें (पढमंकाल ठवणा भणामि किंकारणं जेण एवं सुत्तं काल ठवणाएसुत्ता देसेणं परूवेयव्वं कालो समयादिओ, गाथा—असंखेज्जसमया आवलिया एवं सुत्तालावएणजावसंवच्छरं एत्थपुणउदूवद्धं वासारत्तेणपयगंतं अधिकारेत्यर्थः) इत्यादि व्याख्या प्रथम किवी हैं सो इस पाठमें कालकी व्याख्यासूत्रानुसार करनी कही है। समयादि काल करके असंख्याते समय जानेसे एक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आवलिका होती हैं १,६७,७७,२१६ आवलिका जाने सें एक मुहूर्त होता है त्रीश मुहूर्त्तसे एक अहोरात्रिरूप दिवस होता है ऐसे पन्दरह दिवसोंसे एकपक्ष होता हैं दो पक्षसे एकमास होता है इसी तरह सें अनुक्रमे वर्ष, युग, पूर्वाङ्ग, पूर्व, पल्योपम, सागरादि कालकी व्याख्या अनेक जैन शास्त्रोंमें विस्तारपूर्वक प्रसिद्ध है ।

अब इस जगह पाठकवर्ग सज्जन पुरुषोंसे मेरेको इतना ही कहना है कि श्रीदशाश्रुतस्कन्धचूर्णिमें और श्रीनिशीथ चूर्णिमें खुलासा पूर्वक अधिकमासको निश्चयके साथ प्रमाण करके गिनतीमें भी लिया है और अभिवर्द्धित संवत्सरमें बीशदिने तथा चन्द्रसंवत्सरमें पचास दिने निश्चय पर्युषणा कही हैं और मासवृद्धिके अभावसेही भाद्रपद शुक्लचतुर्थीको पचास दिनके अन्तरमें कारणयोगे श्रीकालकाचार्य्यजीनें पर्युषणा किवी सो दिखाया है और पचासदिने योग्यक्षेत्रके अभावसे जंगलमें वृक्ष नीचे भी पर्युषणा करनी कही है परन्तु पचासमें दिनकी रात्रिको उल्लङ्घन करना भी नही कल्पे इत्यादि विस्तारपूर्वक संपूर्ण सम्बन्धके दोनो पूर्वधर महाराज कृत पाठ उपरोक्त छपगये है जिसको विचारो और श्रीधर्मसागरजी तथा श्रीजयविजयजी और श्रीविनयविजयजी इन तीनों महाशयोंने दोनों चूर्णिकार पूर्वधर महाराजके विरुद्धार्थमें वर्तमानमें मासवृद्धि दो श्रावण होनेसे भी आषाढ़ चौमासीसे यावत् ८० दिने भाद्रपदमें पर्युषणा सिद्ध करनेके लियें आगे और पीछेके सम्बन्धके पाठको और अधिकमासके प्रमाण करनेके पाठको छोड़कर अधूरा बिना सम्बन्धका थोड़ासा पाठ लिखके भोले जीवोंको शास्त्रोंके नामसे पाठ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिख दिखाया जिसमें भाद्रपदका ही नाममात्र लिखा परन्तु मासवृद्धिके अभावसे भाद्रपद है किंवा मासवृद्धि होते भी भाद्र पद है जिसका कुछ भी लिखा नही और चूर्णिकार महा-राजने समयादिसे कालका प्रमाण दिखाया है जिसमें अधिक मास भी गिनतीमें सर्वथा आता है तथापि तीनो महा शयोंने निषेध करदिया और मासवृद्धिके अभावसे भाद्रपदकी व्याख्या चूर्णिकारने किवी थी जिसको भी मासवृद्धि होते लिख दिया इस तरहका तीनो महाशयोंको विरुद्धार्थका अधूरा थोड़ासा पाठको विचारो और निष्पक्षपातसे सत्या-सत्यका निर्णय करो जिसमें असत्यको छोड़ो और सत्यको ग्रहण करो जिससे आत्म कल्याणका रस्ता पावो यही सज्जन पुरुषोंको मेरा कहना है।

और बुद्धिजन सर्व सज्जन पुरुष प्रायः जानते भी होवेगे कि—जैन शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें एक मात्रा, बिंदु तथा अक्षर वा पद की उलटी जो परूपना करे तथा उत्थापन करे और उलटा वर्ते वह प्राणी मिथ्या दृष्टि संसार-गामी कहा जाता है, जमालीवत् अनेक दृष्टान्त जैनमें प्रसिद्ध है तथापि इन तीनों महाशयोंने तो संसार वृद्धिका किञ्चित् भी भय न किया और चूर्णिकार महाराजने अधिक मासकी गिनती विस्तार पूर्वक प्रमाण किवी थी जिसको निषेध कर दिवी और अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने प्रसिद्ध पर्युषणा कही थी जिसके सब पाठको उत्थापन करके यावत् ८० दिने पर्युषणा चूर्णिकार महाराजके विरु-द्धार्थमें स्थापन करके भोले जीवोंको कदाग्रहमें गेरे हैं, हा, हा, अति खेदः ॥—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और इसके अगाड़ी फिर भी तीनो महाशयोंने प्रत्यक्ष मायावृत्तिसे उत्सूत्र भाषणरूप अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध लिखके अपनी बात जमाई है कि (एवं यत्र कुत्रापि पर्युषणा निरूपणम् तत्र भाद्रपदविशेषितमेव नतु क्वाप्यागमे भद्दवयसुद्ध पञ्चमीए पज्जोसविज्जइति पाठवत् अभिवढ्ढियवरिसे सावण सुद्धपञ्चमीए पज्जोसविज्जइति पाठ उपलभ्यते) इन वाक्योंको तीनो महाशयोंने लिखके इसका मतलब ऐसे लाये है कि श्रीपर्युषणा कल्प चूर्णिमें तथा श्रीनिशीथचूर्णिमें भाद्रपदमें पर्युषणा करनी कहीहै इसी प्रकारसे जिस किसी शास्त्रमें पर्युषणाकी व्याख्या है तहां भाद्रपदके नामसे है परन्तु कोई भी शास्त्रमें भाद्रपदशुक्लपञ्चमीको पर्युषणा करनी ऐसा पाठकी तरह मासवृद्धि होनेसे अभिवर्द्धित सम्बत्सरमें श्रावण शुक्लपञ्चमीको पर्युषणा करनी ऐसा पाठ नही दिखता है, इस तरहके तीनो महाशयों के लेख पर मेरा इतनाही कहना है कि इन तीनो महाशयोंने (अभिवर्द्धित सम्बत्सरमें श्रावणशुक्लपञ्चमीको पर्युषणा करनेका कोई भी शास्त्रोंमें पाठ नहीं दिखता है) इस मतलबको लिखा है सो सर्वथा मिथ्या है क्योंकि जिन जिन शास्त्रोंमें चन्द्र-संवत्सरमें पचास दिने, ज्ञात, याने-गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई पर्युषणा करनेका नियम दिखाया है उसी शास्त्रोंमें अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिने ज्ञात पर्युषणा करनेका नियम दिखाया है सो यह बात अनेक शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक प्रगटपने लिखी है तथापि इन तीनो महाशयोंने भोले जीवोंको मिथ्या भ्रममें गेरनेके लिये अभिवर्द्धित संवत्सरमें श्रावण शुक्लपञ्चमीको पर्युषणा करनेका कोई भी शास्त्रमें पाठ नहीं दिखाता है ऐसा लिख दिया है तो अब ऐसे मिथ्या भ्रमको दूर करनेके लिये इस जगह शास्त्रोंके प्रमाण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भी दिखाते हैं कि-श्रीनिशीथसूत्रके लघुभाष्यमें १ तथा बृहद्भाष्यमें ३, और चूर्णिमें ३, श्रीदशाश्रुतस्कन्ध चूर्णिमें ४, और वृत्तिमें ५, श्रीबृहत्कल्पसूत्रके लघुभाष्यमें ६, बृहद्भाष्यमें ७, तथा चूर्णिमें ८, और वृत्तिमें ९, श्रीस्थानाङ्गजी सूत्रकी वृत्तिमें १०, श्रीकल्पसूत्रकी निर्युक्तिमें ११ तथा निर्युक्तिकी वृत्तिमें १२ और श्रीकल्पसूत्रकी चार वृत्तिओंमें १६, श्रीगच्छाचारपयन्नाकी वृत्तिमें १७, श्रीविधिप्रपासमाचारीमें १८, श्रीसमाचारीशतकमें १९, इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक लिखा है कि-अभिवर्द्धित संवत्सरमें आषाढ़ चौमासीसे लेकरके २० दिने, याने-श्रावण सुदी पञ्चमीको पर्युषणा करनेमें आती थी। सो इसीही विषय सम्बन्धी इसी ग्रन्थकी आदिमेंही श्रीकल्पसूत्रकी व्याख्याओंके पाठ भावार्थ सहित तथा श्रीबृहत्कल्पवृत्तिका पाठ पृष्ठ २३।२४ में, श्रीपर्युषणाकल्पचूर्णिका पाठ पृष्ठ ९२ में तथा श्रीनिशीथचूर्णिका पाठ पृष्ठ ९५।९६ में छप गया है और आगे भी कितनेही शास्त्रोंके पाँठ छपेगे जिसको और अब इसीही बातका विशेष खुलासा करता हूं जिसको विवेक बुद्धिसे पक्षपात रहित होकर पढ़ोगे तो प्रत्यक्ष निर्णय हो जावेगा कि अभिवर्द्धितमें वीशदिने पर्युषणा होती थी इसके विषयमें उपरोक्त अनेक शास्त्रोंके पाठोंके साथ श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरिजी कृत श्रीबृहत्कल्पवृत्तिका पाठ भी पृष्ठ २३ तथा २४ में विस्तार पूर्वक छपगया है तथापि इस जगह थोड़ासा फिर भी लिख दिखाता हूं तथाच तत्पाठ यथा—

इत्थमनभिगृहीतं कियन्तं कालंवक्तव्यं,उच्यते। यद्यभिवर्द्धितो सौ संवत्सरस्ततो विंशतिरात्रिदिवानि अथ चंद्रोसौ ततः सविंशतिरात्रं मासं यावदनभिगृहीतं कर्त्तव्यं। तेषामि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विभक्तिव्यत्यया ततःपरं विंशतिरात्रमासा चोर्द्धमनभिगृहीतं निश्चितं कर्त्तव्यं गृहीज्ञातंच गृहिस्थानां पृच्छतां ज्ञापना कर्त्तव्या यथा वयमत्र वर्षाकालस्थिताः एतच्च गृहिज्ञातं कार्तिकमासं यावत् कर्तव्यं इत्यादि—

इसका भावार्थः ऐसा है कि—वर्षाकालमें साधु एक स्थानमें ठहरने रूप निवासकी पर्युषणा करे सो प्रथम गृहस्थी लोगोंके न जानी हुई अनिश्चय पर्युषणा होती है और दूसरी जानी हुई निश्चय पर्युषणा होती है इस प्रकारकी न जानी हुई पर्युषणा कितने काल तक और जानी हुई पर्युषणा कितने काल तक होती है सो कहते है कि—एक युगमें पाँच संवत्सर होते हैं जिसमें दो अभिवर्द्धित और तीन चन्द्रसंवत्सर होते हैं जब अभिवर्द्धित संवत्सर होता है तब आषाढचौमासी प्रतिक्रमण किये बाद वीश अहोरात्रि अर्थात् श्रावण शुक्लपञ्चमी तक और चन्द्र संवत्सर होता है तब पचास अहोरात्रि अर्थात् भाद्रपद शुक्लपञ्चमी तक गृहस्थी लोगोंके न जानी हुई अनिश्चय पर्युषणा होती है परन्तु पीछे जानी हुई निश्चय पर्युषणा होती है और कोई गृहस्थी लोग साधुजीको आषाढ चौमासी बाद पूछे कि आप यहाँ वर्षाकालमें ठहरे अथवा नही तब उसीको साधुजी अभिवर्द्धितमें वीशदिन और चंद्रमें पचास दिनतक, हम यहाँ ठहरे हैं ऐसा अधिकरण दोषोंकी उत्पत्तिके कारणसे न कहे और पीछे याने अभिवर्द्धितमें वीशदिने श्रावण शुक्लपञ्चमी के बाद और चंद्रमें पचास दिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीके बाद गृहस्थी लोगोंको कह देवें कि—हम यहाँ वर्षाकालमें ठहरे हैं ऐसा कहनेसे गृहस्थी लोगोंको जानी हुई पर्युषणा कही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाती हैं ऐसी गृहस्थी लोगोंके जानी हुई पर्युषणा यावत् कार्तिक पूर्णिमा तक याने जो अभिवर्द्धितमें वीशदिने श्रावण शुक्लपञ्चमीको जानी हुई पर्युषणा करे सो कार्तिक पूर्णिमा तक १०० दिन उसी क्षेत्रमें ठहरे और चन्द्रमें पचास दिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको जानी हुई पर्युषणा करे सो कार्तिक पूर्णिमा तक ७० दिन उसी क्षेत्रमें ठहरे।

उपरोक्त श्रीतपगच्छके श्रीक्षेमकीर्तिसूरिजी कृत पाठके भावार्थः मुजबही अनेक जैन शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक व्याख्या हैं सो उपरमें श्रीनिशीथचूर्णि श्रीदशाश्रुतस्कन्धचूर्णि श्रीकल्पसूत्रकी व्याख्यों वगैरहके पाठ भी छपगये हैं और कितनेही शास्त्रोंके पाठ इस ग्रन्थमें विस्तारके भयसे नही छपाये हैं सो अबी मेरे पास मोजूद है जिसमें भी उपर मुजबही चतुर्मासीमें पर्युषणा संबन्धी अज्ञात और ज्ञातकी खुलासा पूर्वक व्याख्या हैं।

उपरके पाठमें श्रावण तथा भाद्रव मासका नाम नही हैं परन्तु वीश तथा पचास दिनका नाम लिखा है जिससे वीश दिनकी गिनती आषाढ़पूर्णिमासे श्रावण शुक्लपञ्चमीको और पचास दिनकी गिनती भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको पूरी होती हैं इस लिये भावार्थमें श्रावण तथा भाद्रपदका नाम तिथि सहित लिखा जाता है—

उपरोक्त पाठमें आषाढ़ चौमासीसे कार्तिक चौमासी तककी व्याख्या दिनोंकी गिनती सहित खुलासा पूर्वक पर्युषणा सम्बन्धी करी है परन्तु आषाढ़ चौमासीसे इतने दिन गये बाद पर्युषणामें वार्षिक कृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि अमुक दिने करे ऐसा नही लिखा हैं परन्तु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आषाढ़ चौमासीसे अभिवर्द्धितमें वीशदिन तथा चन्द्रमें पचास दिन तक गृहस्थी लोगोंके न जानी हुई अनिश्चय और वीश तथा पचासके उपर जानी हुई निश्चय यावत् कार्तिक तकका लिखा है और श्रीकल्पसूत्रकी अनेक टीकाओंमें पाँच पाँच दिनकी वृद्धिसे पंचासदिन तक न जानी हुई पर्युषणा परन्तु पचाश दिने वार्षिक कृत्यों करके प्रसिद्ध जानी हुई पर्युषणा चंद्र संवत्सरमें खुलासा लिखी है तैसेही अभिवर्द्धितमें वीशदिने पर्युषणा जानी हुई लिखी है इस लिये अभिवर्द्धितमें वीशदिने श्रावण शुक्लपञ्चमीको वार्षिक कृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करने से गृहस्थी लोगों को पर्युषणाकी मालुम होती थी और चंद्रमें पचासदिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको वार्षिक कृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करनेसे गृहस्थी लोगोंको पर्युषणाकी मालुम होती थी क्योंकि जैसे न जानी हुई पर्युषणा वीश तथा पचास दिन तक शास्त्रकारोंने खुलासा कही है तैसेही जानी हुई पर्युषणा अभिवर्द्धितमें १०० दिन और चंद्रमें ७० दिन तक ऐसा खुलासा पूर्वक लिखा हैं सो पाठ भी सब उपरमें छप गया है।

और पर्युषणा अज्ञात तथा ज्ञात दो प्रकारकी कही है परन्तु अमुकदिने ज्ञात पर्युषणा करे तथा अमुक दिने वार्षिक कृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करे ऐसा कोई भी प्राचीन शास्त्रोंमें नही दिखता है इसलिये ज्ञात पर्युषणा होवे उसी दिन वार्षिककृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमण केशलुंचनादि समझने क्योंकि सबी शास्त्रकारोंने गृहस्थी लोगोंको ज्ञात पर्युषणा यावत् कार्तिकमास तक खुलासा लिख

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिया है जिससे ज्ञात पर्युषणा आषाढ़ चौमासीसे वीशे तथा पचाशे करे और सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि अन्य अमुकदिने करे ऐसा कदापि नही बनता है किन्तु जहाँ ज्ञात पर्युषणा वहाँ ही वार्षिक कृत्य बनते हैं इसलिये अभिवर्द्धित संवत्सरमें आषाढ़ चौमासीसे लेकर वीशदिने श्रावण शुक्लपञ्चमीको और चंद्र संवत्सरमें पचासदिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि वार्षिक कृत्य अवश्यमेव निश्चय करनेमें आते थे यह निःसन्देहकी बात हैं तथा और भी जो पहिले तीनो महाशयोंने लिखा है (अभिवर्द्धिते वर्षे चतुर्मासिकदिनादारभ्यः विंशत्यादिनैः वयमत्र स्थिताः स्म इति पृच्छतां गृहस्थानां पुरो वदन्ति) और इसका मतलब ऐसे लाये है कि—अभिवर्द्धित संवत्सरमें आषाढ़चतुर्मासीसे लेकर वीशदिने याने श्रावण शुक्लपञ्चमी सेही कोई गृहस्थी लोग पूछे तो कह देवे कि वर्षाकालमें हम यहाँ ठहरे हैं॥ वर्षाकालमें एक स्थानमें सर्वथा निवास करना सो पर्युषणा हैं इस मतलबसे भी आषाढ़ चौमासीसे वीशदिने गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई पर्युषणा करे सो यावत् १०० दिन कार्तिक पूर्णिमा तक उसी क्षेत्रमें ठहरे॥

उपरोक्त तीनो महाशयोंके लिखे वाक्यार्थको भी विवेकी बुद्धिजन पुरुष निष्पक्षपातसे विचारेंगे तो प्रत्यक्ष मालुम हो जावेंगा कि प्राचीन कालमें अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिने श्रावण शुक्लपञ्चमीसे गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई पर्युषणा करनेमें आती थी क्योंकि जिस जिस शास्त्रानुसार चंद्र संवत्सरमें पचासदिने जो जो कार्य्य करनेमें आते हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सोही कार्य्य प्राचीन कालमें अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिने करनेमें आतेथे यह बात उपरोक्त अनेक शास्त्रोंके न्यायानुसार सिद्ध होगई तथा और आगे भी लिखनेमें आवेगा इसलिये इन तीनो महाशयोंका (अभिवर्द्धित संवत्सरमें श्रावण शुक्लपञ्चमीका पर्युषणा करनेका कोई भी शास्त्रमें नहीं दिखता है) ऐसा लिखना सर्वथा अप्रमाण हो गया सो आत्मार्थी निष्पक्षपाती पाठकवर्ग विचार लेना—

और अभिवर्द्धित संवत्सरमें आषाढ़ चौमासीसे वीश दिने निश्चय पर्युषणा वार्षिक कृत्योंसे भी करनेमें आती थी तथापि इन तीनो महाशयोंने पक्षपातके जोरसे उसको निषेध करनेके लिये गृहस्थी लोगोंके जानी हुई पर्युषणा दो प्रकारकी ठहराकर अभिवर्द्धितमें वीशदिनकी पर्युषणाको केवल गृहस्थी लोगोंके जानी हुई कहने मात्रही ठहराते है सो भी मिथ्या है क्योंकि अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने गृहस्थी लोगोंको कह देवे कि हम यहाँ वर्षाकालमें ठहरे हैं ऐसा कहकर फिर एक मासके बाद भाद्रपदमें वार्षिक कृत्य करे इस तरहका कोई भी शास्त्रमें नही लिखा है इसलिये इन तीनों महाशयोंका कहना शास्त्रोंके प्रमाण बिनाका होनेसे प्रत्यक्ष उत्सूत्रभाषणरूप है और आषाढ़पूर्णिमासे योग्यक्षेत्राभावादि कारणे पाँच पाँच दिनकी वृद्धि करते दशवे पंचकमें याने पचासदिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको पर्युषणा करे इस वाक्यको देखके— जो तीनो महाशय अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिनकी पर्युषणाको गृहस्थी लोगोंके जानी हुई सिर्फ कहने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मात्रही ठहरा कर फिर वार्षिक कृत्य अभिवर्द्धित संवत्सरमें भी दशपञ्चके पचासदिने ठहराते होवेंगे तो भी तीनों महाशयोंको जैन शास्त्रोंका अति गम्भिरार्थका तात्पर्य्य समझमें नही आया मालुम होता है क्योंकि जिस जिस शास्त्रमें दशपञ्चके पचासदिने अवश्य पर्युषणा करनी कही है सो निकेवल चंद्रसंवत्सरमें ही करनी कही है नतु अभिवर्द्धित संवत्सरमें क्योंकि दशपञ्चक तकका विहार चंद्रसंवत्सरमेंही होता है और अभिवर्द्धित संवत्सरमें तो निकेवल चारपञ्चकमें वीशदिने निश्चय प्रसिद्ध पर्युषणा किवी जाती थी सो उपरमें भी विस्तार पूर्वक लिख आया हुं—जिससे चारपञ्चकके उपर सर्वथा प्रकारसे विहार करनाही नही कल्पे तथापि अभिवर्द्धितमें वीश-दिनके उपरान्त विहार करे तो छकायके जीवोंकी विराधना करने वाला और आत्मघाति आज्ञा विराधक कहा जाता है सो श्रीस्थानाङ्गजी सूत्रकी वृत्ति वगैरह शास्त्रोमें प्रसिद्ध है इसलिये अभिवर्द्धित संवत्सरमें दशपञ्चक कदापि नही बनते हैं जहाँ जहाँ दशपञ्चके पचासदिने पर्युषणा करनेकी व्याख्या लिखी है सो सब चंद्रसंवत्सरमें करनेकी समझनी—

और अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने गृहस्थी लोगोंको साधु कह देवें कि हम यहां वर्षाकालमें ठहरे हैं इस वाक्यको देखके तीनों महाशय वीशदिनकी पर्युषणाको कहने मात्रही ठहराते होवेंगे तब तो इन तीनों महाशयोंकी गुरुगम रहित तथा विवेक बिनाकी अपूर्व विद्वत्ताको देखकर मेरे को बड़ा आश्चर्य्य आता है क्योंकि जैसे अभिवर्द्धित संवत्सर में वीश दिने गृहस्थी लोगोंको साधु कह देवें कि हम यहाँ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वर्षाकालमें ठहरे हैं तैसेही चंद्रसंवत्सरमें भी पचासदिने कह देवें कि हम वर्षाकालमें यहाँ ठहरे हैं ऐसे अक्षर खुलासा पूर्वक चन्द्रके तथा अभिवर्द्धितके लिये अनेक शास्त्रकारोंने लिखे है सो इन शास्त्रकारोंके लिखे वाक्यपरसे तो इन तीनों विद्वान् महाशयोंकी विद्वत्ताके अनुसार चन्द्रसंवत्सरमें पचास दिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीकी पर्युषणा भी गृहस्थी लोगोंके कहने मात्रही ठहर जावेंगे और सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि वार्षिक कृत्य करनाही नही बनेगा क्योंकि ज्ञात पर्युषणा चन्द्रमें पचासदिने तथा अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने करे सो यावत् कार्त्तिकपूर्णिमा तक खुलासा पूर्वक शास्त्र-कारोंने लिख दिया है और अमुक दिने ज्ञात पर्युषणा करे और अमुक दिने वार्षिक कृत्य करे ऐसा कोई भी जगह नही लिखा है इसलिये तीनों महाशय जो ज्ञात पर्युषणा के दिन वार्षिक कृत्य मानेंगे तब तो अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने वार्षिक कृत्य भी माननें पड़ेंगे और वीश दिनकी पर्युषणा कहने मात्रही है ऐसा लिखना भी मिथ्या होनेमें कुछ बाकी नही रहा और चन्द्रसंवत्सरमें पचासदिने ज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्य मानोगें और अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीशदिने ज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्य नही मानोगें ऐसा मन कल्पनाका अन्याय तीनों महाशयोंका आत्मार्थी बुद्धिजन पुरुष कदापि नही मान सकते हैं किन्तु वीशे तथा पचासे ज्ञात पर्युषणा वहाँ ही वार्षिक कृत्य यह न्यायशास्त्रानुसार होनेसे सर्व आत्मार्थियोंको अवश्यही प्रमाण करने योग्य है इसलिये अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिने श्रावण शुक्लपञ्चमीको ज्ञात पर्युषणा वार्षिक कृत्यों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहित होती थी सो निश्चय निःसन्देहकी बात है और पर्युषणा अज्ञात तथा ज्ञात दो प्रकारकी सबी शास्त्रकारोंने कही है इसलिये इन तीनों महाशयोंने ज्ञात पर्युषणाका भी दो भेद लिखके वीशदिनकी कहने मात्र ठहराई तथा पचासदिनकी वार्षिक कृत्योंसे ठहराई सो सर्वथा शास्त्र विरुद्ध हैं क्योंकि जैसी ज्ञात पर्युषणा चंद्रसंवत्सरमें पचास दिने होती थी तैसीही अभिवर्द्धित संवत्सरमे वीशदिने होती थी सो ज्ञात पर्युषणाका एकही भेद सर्व शास्त्रकारोंने लिखा है परन्तु ज्ञात पर्युषणाका दो भेद कोई भी प्राचीन शास्त्रोंमें नही है इसलिये तीनों महाशयोंका ज्ञात पर्युषणा दो प्रकारकी लिखना प्रत्यक्ष शास्त्र विरुद्ध हैं—

और आषाढ़पूर्णिमाको योग्यक्षेत्राभावादि कारणे श्रावण कृष्णपञ्चमी, दशमी वगैरह पाँच पाँचदिने जो पर्युषणा कही है सो गृहस्थी लोगोंकी न जानी हुई और अनिश्चय होती हैं इसलिये अज्ञात और अनिश्चय पर्युषणामें वार्षिक कृत्य नही बनते हैं किन्तु वीशे तथा पचासे ज्ञात और निश्चय पर्युषणामें वार्षिक कृत्य बनते हैं।

और श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रके अष्टमाध्ययन (पर्युषणाकल्प) की चूर्णिका और श्रीनिशीथसूत्रके दशवें उद्देशेकी चूर्णिका पाठमें श्रीकालकाचार्य्यजीने कारणयोगे चतुर्थीकी पर्युषणा किवी है सो भी चंद्रसंवत्सरमें किवी थी नतु अभिवर्द्धितमें क्योंकि खास चूर्णिकार महाराजने अभिवर्द्धितमें वीशे तथा चंद्रमें पचासे ज्ञात निश्चय पर्युषणा करनी कही है जिसका सब पाठ उपरोक्त छपगया हैं इसलिये मासवृद्धि होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा स्थापते हैं सो मिथ्यावादी है क्योंकि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्राचीनकालमें जैन ज्योतिषके पञ्चाङ्गकी रीतिसे चंद्रमें पचासदिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको और अभिवर्द्धितमें वीश-दिने श्रावणशुक्लपञ्चमीको प्रसिद्ध निश्चय पर्युषणा वार्षिक कृत्योंसे करनेमें आती थी जब जैन पञ्चाङ्गमें सिर्फ पौष तथा आषाढ़ मासको वृद्धि होती थी और मासोंकी वृद्धिका अभाव था जिससे वर्षाकालके चारमासमें श्रावणादि कोई भी मासकी वृद्धि नही होती थी परन्तु अब वर्त्तमानकाल में जैनज्योतिषके पञ्चाङ्गका अभाव होनेसे लौकिक पञ्चाङ्गमें हरेक मासोंकी वृद्धि होती है जिससे वर्षाकालमें श्रावण भाद्रपदादि मास भी बढ़ने लगे [और अभिवर्द्धित संवत्सरमें योग्यक्षेत्राभावादिकारणे पाँच पाँच दिनकी वृद्धि करते यावत् चारपञ्चके वीशदिने पर्युषणा करनेका तथा चंद्र-संवत्सरमें भी योग्यक्षेत्राभावादि कारणे पाँच पाँच दिनकी वृद्धि करते यावत् दशपञ्चके पर्युषणा करनेका कल्प कालानुसार श्रीसङ्घकी आज्ञासे विच्छेद हुआ है इसका विशेष विस्तार आगे करनेमें आवेगा]

इसलिये वर्त्तमानकालमें मासवृद्धि होवे तो भी आषाढ़ चैामासीसे पचास दिनकी गिनतीसे पर्युषणा करनेकी श्रीखर तरगच्छके तथा श्रीतपगच्छादिके पूर्वज पूर्वाचार्योंकी आज्ञा है जिससे दो श्रावण हो तो दूजा श्रावणमें तथा दो भाद्रपद हो तो प्रथम भाद्रपदमें प्रसिद्ध पर्युषणा श्रीजिनेश्वर भग-वान्‌की तथा श्रीपूर्वाचार्योंकी आज्ञाके आराधन करनेवाले मोक्षार्थी प्राणी अवश्य करते हैं इसलिये दो श्रावण तथा दो भाद्रपद अथवा दो आश्विनमास होनेसे पांचमासके १५० दिनका अभिवर्द्धित चैामासा होता है जिसमें पचासदिने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्युषणा करनेसे कार्त्तिक चौमासी तक पीछाड़ीके १००दिन रहते हैं तो भी कोई दूषण नहीं कहा है परन्तु मासवृद्धि की गिनती निषेध करनेसे श्रीअनन्ततीर्थङ्करगणधरादि महाराजोंकी आज्ञा उल्लङ्घनरूप महान् मिथ्यात्वके दूषणकी अवश्यही प्राप्ति होती है तथापि इन तीनों महाशयोंने उपरके दूषणका जरा भी विचार न किया और श्रीगणधर महाराज श्रीसुधर्मस्वामिजी कृत श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठका उत्थापनका भी बिलकुल विचार न करते सूत्रकार महाराजके विरुद्धार्थमें पाठ लिखके भोले जीवोंको सत्य बात परसे श्रद्धा उतारके जिनाज्ञा विरुद्ध मिथ्यात्वरूप झगड़ेकी डोर हाथमें देकर कदाग्रहमें गेरदिये हैं और अधिकमासको गिनतीमें लेने वालेको उलटा मिथ्या दूषण दिखाते हैं और अधिक मासकी गिनती नहीं करते भी आप निर्दूषण बनके श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठसे सत्यवादी तथा आज्ञा के आराधक बनते हैं जिसका पाठ इसी पुस्तकमें पृष्ठ ६९। ७० में और भावार्थः पृष्ठ ७२। ७३ में छपगया है इसलिये इस जगह पुनः पाठ न लिखते थोड़ासा मतलब लिखके पीछे उसमें जो जो शास्त्रविरुद्ध है सो दिखावेंगे—तीनों महाशयोंका खास अभिप्रायः यह है कि अधिक मासको गिनती में करनेवालोंको दो आश्विन मास होनेसे दूजा आश्विनमें चौमासी कृत्य करना पड़ेगा और दूजा आश्विनमें चौमासी कृत्य न करते कार्त्तिकमें करेंगे तो पर्युषणाके पीछाड़ी १०० दिन हो जावेंगे तो श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके वचनको बाधा आवेगा क्योंकि—समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराइ मासे विइक्कंते सत्तरिएहिंराइंदिएहिं .इत्यादि श्रीसम-

वायाङ्गजीमें पीछाड़ीके ७० दिन रखना कहा है ऐसा लिखके तीनों महाशयोंने पर्युषणाके पीछे अवश्यही ७०-दिन रखनेका दिखाकर अधिक मासकी गिनती करके पर्युषणा करनेवालों को कार्त्तिक तक १०० दिन होनेसे श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठके बाधक ठहराये [इस न्यायानुसार तो तीनों महाशय तथा तीनों महाशयोंके पक्षवाले सबी महाशय भी श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके बाधक ठहर जाते हैं क्योंकि दो आश्विन होनेसे भी चौमासी कृत्य कार्त्तिक मासमें करनेसे पर्युषणाके पीछाड़ी १०० दिन होते हैं तथापि अब आप निर्दूषण बननेके लिये फिर लिखते हैं कि कार्त्तिक चौमासी कार्त्तिक शुदीमें करना चाहिये जिसमें दो आश्विनमास होवे तो भी १०० दिन हुआ ऐसा नही समझना किन्तु अधिकमासको गिनतीमें नही लेनेसे ७० दिनही हुआ समझना और दो श्रावण होवे तो भी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेसे ८० दिन हुआ ऐसा नही समझना किन्तु अधिकमासको गिनतीमें नही लेनेसे ५० दिनही हुआ समझना, दो श्रावण हो तथा दो आश्विन हो तो भी गिनतीमें नही लेनेसे श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके वचनको बाधा भी नही आवेगी और शास्त्रोंके कहे पर्युषणाके पहिले ५० दिन तथा पीछाड़ी ७० दिन यह दोनुं बात रह जाती है] इस तरहका तीनों महाशयोंका मुख्य अभिप्राय है ॥—

इस पर मेरेको बड़ा खेद उत्पन्न होता है कि तीनों महाशयोंने कदाग्रहके जोरसे अपनी हठवादकी मिथ्या बातको स्थापनेके लिये सूत्रकार महाराजके विरुद्धार्थमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्सूत्र भाषणरूप वृथा क्यों परिश्रम करके भोले जीवोंको भ्रमजालमें गेरते संसारवृद्धिका भय कुछ भी नही रक्खा है इसलिये अब लाचार होकर भव्यजीवोंकी शुद्धश्रद्धा होनेके कारणरूप उपकारके लिये और तीनों महाशयोंका सूत्र-कारके विरुद्ध उत्सूत्रभाषणके कदाग्रहको दूर करनेके वास्ते सूत्रकार और वृत्तिकार महाराजके अभिप्राय को ईस जगह लिख दिखता हुं—

श्रीसुधर्मस्वामिजी कृत श्रीसमवायाङ्गजीमूलसूत्र तथा श्रीखरतरगच्छनायक श्रीअभयदेवसूरिजी कृत वृत्ति और गुजराती भाषासहित छपके प्रसिद्ध हुआ है जिसके पृष्ठ १२७ में तथाच तत्पाठः—

समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराइ मासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासंपज्जोसवेइ ॥

अथ सप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते समणेत्यादि— वर्षाणां चातुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवाधिके मासे व्यतिक्रान्ते पञ्चाशतिदिनेष्वतीतेष्वित्यर्थः सप्तत्याञ्च रात्रिदिनेषु शेषेषु भाद्रपदशुक्लपञ्चम्यामित्यर्थः, वर्षास्वावासो वर्षावासः वर्षावस्थानं पज्जोसवेइत्ति परिवसति सर्वथा करोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषु दिवसेषु तथाविध वसत्यभावादिकारणे स्थानान्तरमप्याश्रयति अतिभाद्रपद शुक्लपञ्चम्यां तु वृक्षमूला-दावपि निवसतीति हृदयमिति ॥

भावार्थः—श्रमण भगवन् श्रीमहावीरस्वामिजीने वर्षा-काल के चारमास कहे है जिसके १२० दिन होते हैं जिसमें एकमास अधिक वीशदिन याने ५० दिन जानेसे और ७० दिन पीछाड़ी बाकी रहनेसे भाद्रपद शुक्लपञ्चमीके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन वर्षाकालमें रहनेका सर्वथा प्रकारसे अवश्यही निश्चय करना सो 'पज्जोसवणा' अर्थात् पर्युषणा है जिसमें भाद्रपद शुक्ल पञ्चमीके पहिले ५० दिनके अन्दरमें योग्य क्षेत्राभावादि कारणे दूसरे स्थानमें भी विहार करके जाना बन सकता है परन्तु पचासमें दिन योग्य क्षेत्रके अभावसे जङ्गलमें वृक्ष नीचे भी अवश्यही पर्युषणा करे यह मुख्य तात्पर्य है ।

और चन्द्र संवत्सरमें पचास दिने पर्युषणा करनेसे पीछाडी ७० दिन रहते हैं तैसे ही मास वृद्धि होनेसे अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीस दिने पर्युषणा करनेसे पीछाडी १०० दिन रहते हैं सो उपरमें अनेक जगह खुलासा पूर्वक छप गया है तैसेही इन्हीं वृत्तिकार महाराजनें श्रीस्थानांगजी सूत्रकी वृत्तिमें कहा है जिसका यहाँ पाठ दिखाता हुं । छपी हुई श्रीस्थानांगजी सूत्र वृत्तिके पृष्ठ ३६५ का तथाच तत्पाठः—

पढमपाउसंसित्ति ॥ इहाषाढ श्रावणौ प्रावृट् आषाढस्तु प्रथम प्रावृट् ऋतुनां वा प्रथम इति प्रथमप्रावृट् अथवा चतुर्मासप्रमाणो वर्षाकालः प्रावृडिति विवक्षित स्तत्र सप्तति-दिनप्रमाणे प्रावृषे द्वितीये भागे तावन्नकल्पत एव गन्तु न्प्रथम भागेऽपि पञ्चाशद्दिनप्रमाणे विंशति दिनप्रमाणे वा न कल्पते जीवव्याकुलभूतत्वा दुक्तंच एत्थय अणभिग्गहियं, वीसइराइंसवीसइंमासं ॥ तेणपरमभिग्गहियं, गिहिनायं-कत्तियंजावत्ति ॥ १ ॥ अनभिगृहीत, मनिश्चित मशिवा-दिभि निंर्गमभावात् आहच असिवादिकारणेहिं, अहवाबा-संनसुठ्ठु- आरद्धु ॥ अभिवड्ढियंमिवीसा, इइरेसु सवीस-इमासो ॥१॥ यत्र संवत्सरेऽधिकमासको भवति तत्राषाढ्याः विंशतिदिनानि याव दनभिग्रहिक आवासो ऽन्यत्र

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सविंशतिरात्रं मासं पंचाशतं दिनाम्नोति अत्र चैते दोषाः छक्कायविराहणया, आवडणं विसमखाणुकंटेसु॥ वुज्झणअभिहणरुक्खो, ल्लसावणतेण उवचरए ॥ १ ॥ अक्खुन्नेसु पहेसु, पुढवी उदगंचहोइदुविहंतु ॥ उल्लपयावणअगणि, इहरापण ओहरियकुंथुत्ति ॥ २ ॥ तत स्तत्र प्रावृषि किमत आह एकस्माद् ग्रामा दवधिभूता दुत्तरग्रामाणा मनतिक्रमो ग्रामानुग्रामं तेन ग्रामपरम्परयेत्यर्थः अथवा एक ग्रामाल्लघुपश्चाद्ग्रामाभ्यां ग्रामोऽनुग्रामो गामोय अणुगामोय गामाणुगामं तत्र दूइज्जित्त एत्ति द्रोतुं विहर्त्तुमित्युत्सर्गों पवादमाह पंचेत्यादि तथैव नवर मिह प्रत्यथेत ग्रामाश्चालये म्निष्काशयेत् कश्चित् उदकौघेवा आगच्छति ततो नश्येदिति उक्तंच आवाहे दुब्भिक्खे, भएदओघंसिवामहंतंसि ॥ परिभवणं तालणवा, जया परोवाकरेज्जासित्ति ॥१॥ तथा वर्षासु वर्षाकाले वर्षावृष्टिः वर्षावर्षावर्षासु वा आवासोऽवस्थानं वर्षावास स्तं स च जघन्यत आकार्त्तिक्या दिन सप्ततिप्रमाणो मध्यमवृत्या च चतुर्मासप्रमाण उत्कृष्टतः षण्मासमान स्तदुक्तं इयसत्तरीजहन्ना, असिईनउईविसुत्तरसयंच ॥ जइवासेमग्गसिर, दसरायातिन्निउक्कोसा ॥१॥ [मासमित्यर्थः] काऊणमासकप्प, तथेवठियाणतीत मग्गसिरे ॥ सालंबणाणछम्मा, सिओउ जिठ्ठोगहोहोइत्ति ॥ २ ॥ पज्जोसवियाणति परीति सामस्त्येनो षितानां पर्युषणाकल्पेन नियमवद्धस्तु मारब्धानामित्यर्थः पर्युषणा कल्पश्च न्यूनोदरताकरणं विकृतिनवकपरित्यागः पीठफलकादि संस्तारकादान मुच्चारादि मात्रकसंग्रहणं लोचकरणं शैक्षाप्रव्राजनं प्राग्गृहीतानां भस्मडगलकादीना परित्यजन मितरेनां ग्रहणं द्विगुणवर्षोवग्रहो-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पकरणधरण मभिनवोपकरणग्रहणं स क्रोशयोजनात्परतो गमनवर्जन मित्यादि ।

देखिये उपरोक्त पाठमें श्रीवृत्तिकार महाराजनें चार मासके वर्षाकालमें अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीस दिन और चन्द्र संवत्सरमें पचास दिन के उपरान्त विहार करने वालोंको छ कायके जीवोंकी विराधना करने वाला कहा अर्थात् वीसे और पचासे अवश्यही पर्युषणा करनी कही सो यावत् कार्त्तिक तक याने अभिवर्द्धितमें वीस दिने पर्युषणा करनेसे पीछाडी १०० दिन और चन्द्रमें पचास दिने पर्युषणा करनेसे पीछाडी ७० दिन उसी क्षेत्रमें ठहरे ॥ इत्यादि ॥

अब श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञाके आराधन करने वाले मोक्षाभिलाषि निर्पक्षपाती सज्जन पुरुषों को इस जगह विचार करना चाहिये कि श्रीगणधर महाराजनें श्रीसमवायांगजी मूलसूत्रमें और श्रीअभयदेवसूरिजी महाराजनें वृत्तिमें मास वृद्धिके अभावसें चन्द्रसंवत्सरमें जैन ज्योतिषके पंचाङ्गकी रीतिमुजब वर्तनें के अभिप्रायसे चार मासके वर्षाकालमें प्रथम पचास दिन जानेसे और पीछाडी ७० दिन रहने से पर्युषणा करनी कही है तथा विशेष खुलासा करते वृत्तिकार महाराजनें योग्यक्षत्रके अभावसे वृक्ष नीचे भी पचास दिने अवश्यही पर्युषणा करनी कही और अभिवर्द्धित संवत्सरमें वृत्तिकार महाराजनें और पूर्वधरादि महाराजोंनें वीस दिने अवश्यही पर्युषणा करनी कही है जिससे पीछाडी एकसो दिन रहते हैं;—तथापि ये तीनों महाशय अपनी कल्पनासें वृत्तिकार और पूर्वधारादि महाराजों का (अभिवर्द्धितमें वीस दिने पर्युषणा करनेसे पीछाडी एकसो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन रहते हैं) इस अभिप्राय के व्यवहारको जड़मूलसे ही उड़ा करके अभिवर्द्धितमें भी पचास दिने पर्युषणा और पीछाड़ी ७० दिन रखनेका शास्त्रकारों के विरुद्धार्थमें वृथा आग्रहसे हठ करते हैं क्योंकि श्रीगणधर महाराजने श्रीसमवायांगजी मूलसूत्रमें और श्रीअभयदेवसूरिजीनें वृत्तिमें प्रथम पचास दिन जानेसे और पीछाड़ी ७० दिन रहनेसे जो पर्युषणा करनी कही है सो चन्द्रसंवत्सरमें नतु अभिवर्द्धितमें तथापि तीनों महाशय श्रीसमवायांगजीका पाठको अभिवर्द्धितमें स्थापन करते हैं सो निःकेवल श्रीगणधर महाराजके और वृत्तिकार महाराजके अभिप्रायके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषण करते हैं इसलिये मास वृद्धि होते भी पीछाड़ी ७० दिन रखनेका पाठको दिखाकर संशय रूप भ्रमजालमें भोले जीवोंको गेरना सर्वथा शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें है इसलिये मास वृद्धि होते भी वीस दिने पर्युषणा करनेसे पर्युषणा के पीछाड़ी एकसो दिन प्राचीन कालमें भी रहते थे उसमें कोई दूषण नहीं—और अब जैन पंचाङ्गके अभावसे वर्तमानिक लौकिक पंचाङ्गमें श्रावणादि हरेक मासोंकी वृद्धि होनेसे शास्त्रानुसार तथा पूर्वाचार्योंकी आज्ञा मुजब पचास दिने दूजा श्रावण शुदीमें पर्युषणा श्रीखरतरगच्छादि वालोंके करनेमें आती है जिन्होंको पर्युषणाके पीछाड़ी कार्त्तिक तक एकसो दिन स्वाभावसेही रहते हैं सो शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक है क्योंकि दो श्रावणादि होनेंसे पाँच मासके १५० दिनका अभिवर्द्धित चौमासा होता है जिसमें पचास दिने पर्युषणा होवे तब पीछाड़ीके एकसो दिन नियमित्त रीतिसे रहते हैं यह बात जगत्प्रसिद्ध है इसमें कोई भी दूषण नहीं है इसलिये

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिक मासकी गिनती करने वाले श्रीखरतरगच्छादि वालोंको पर्युषणाके पीछाडी एकसो दिन होते हैं परन्तु कोई शास्त्रके वचनको बाधाका कारण नहीं है और श्रीसमवायांगजीमें पीछाडी ७० दिन रहने का कहा है सो मास वृद्धिके अभावसे है इसका खुलासा उपरोक्त देखो इसलिये मास वृद्धि होनेसे १०० दिन होवे तों भी श्रीसमवायांगजी सूत्रके वचनको कोई भी बाधाका कारण नहीं है। तथापि तीनों महाशय श्रीसमवायांगजी सूत्रके नामसे पीछाड़ीके ७० दिन रखनेका हठ करते है। और श्रीखरतरगच्छादि वालोंके उपर आक्षेपरूप पर्युषणाके पीछाड़ी ७० दिन रखने के लिये दो आश्विनमास होनेंसे दूजा आश्विनमें चौमासी कृत्य करनेका दिखाते है। और कार्त्तिक में करनेसें १०० दिन होते है जिससे श्रीसमवायांगजी सूत्रका पाठके बाधक ठहराते हैं सो मिथ्या हैं क्योंकि श्रीखरतरगच्छवाले श्रीसमवायांगजी सूत्रका पाठके बाधक कदापि नही ठहरते हैं किन्तु तीनों महाशय और तीनों महाशयोंके पक्षधारी सब ही श्रीसमवायांगजी सूत्रके पाठके उत्थापक बनते हैं सो ही दिखाताहुं। तीनों महाशय (समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइ राइमासे वीइक्कंते इत्यादि) पाठको तो खास करके मंजूर करते हैं। इस पाठमें पचास दिन कहे हैं, वर्तमानिक कालानुसार पचास दिने पर्युषणा इस पाठसे करनी मानों तो श्रावणमासकी वृद्धि होते दूजा श्रावण शुदीमें पचासदिने पर्युषणा तीनों महाशयोंको और इन्हों के पक्षधारिओंको मंजूर करनी चाहिये। सो नही करते हैं और दो श्रावण होते भी ८० दिने पर्युषणा करते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हैं इसलिये श्रीसमवायांगजी सूत्रका इसी ही पाठको न माननेवाले तथा उत्थापक तीनों महाशय और इन्होंके पक्षधारी प्रत्यक्ष बनते है। तथापि निदूषण बनने के लिये अधिक मासकी गिनती निषेध करके, ८० दिनके बदले ५० दिन मानकर निदूषण बनते है। और पर्युषणाके पीछाड़ी दो आश्विनमास होनेसे कार्त्तिक तक १०० दिन होते हैं। तथापि इसको निषेध करने के लिये अधिकमासकी गिनती निषेध करके १०० दिनके बदले ७० दिन मानकर अपनी मनो-कल्पनासे निदूषण बनते है और श्रीसमवायांगजी सूत्रका पाठके आराधक बनते है। परन्तु शास्त्रार्थको आत्मार्थी पुरुष निर्पक्षपातसे देखके विचार करते हैं तबतो दोनों अधिक मासका गिनतीमें निषेध करनेका तीनों महाशयोंका और इन्होंके पक्षधारिओंका महान् अनर्थ देखके बड़े आश्चर्य्य स-हित खेदको प्राप्त होते हैं क्योंकि तीनो महाशय और इन्होंके पक्षधारी अधिकमासकी गिनती निषेध करके श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठके आराधक बनते है परन्तु खास इसीही श्रीसम-वायांगजी मूलसूत्रमें अनेक जगह खुलसा पूर्वक अधिकमासको प्रमाणकिया हैं जिसमें का ६१ और ६२ वा श्रीसमवायांगका पाठ भी वृत्ति भाषा सहित इसी ही पुस्तकमें ३९। ४०। ४१ पृष्ठ में छप गया है जिसमें पांच संवत्सरोंका एक युगमें दोनु अधिकमास को दिनोमें पक्षोमें मासोमें वर्षोमें खुलासा पूर्वक गिनके प्रमाण दिखायाहै इस लिये अधिकमासकी गिनतीका निषेध कदापि नही हो शकता है तथापि अधिकमासकी गिनती निषेध करके जो श्रीसमवायांगजी सूत्रका पाठके आराधक बनते है सो आराधकके बदले

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उलटे विराधक बनते हैं और मासवृद्धि दो श्रावणादि होते भी भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करणी और वर्तमानिक पाँचमास के १५० दिनका अभिवर्द्धित चौमासा होते भी पर्युषणाके पीछाड़ी ७० दिन रखनेका आग्रहसे हठकरना, और पर्युषणाके पीछाड़ी मास वृद्धि होनेसे १०० दिन मानने वालोंको दूषित ठहराना। और अधिक मासकी गिनती निषेध करके भी आप निर्दूषण बनना। ऐसा जो जो महाशय वर्तमानकालमें मानते है श्रद्धारखते है तथा परूपते भी है—सो निःकेवल अनेक शास्त्रोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषण करते दृष्टिरागी भोलेजीवों को जिनाज्ञा विरुद्ध कदाग्रहकी भ्रमजालमें गेरके अपनी आत्माको संसारगामी करते है इसलिये अधिकमासके निषेध करने वाले कदापि निर्दूषण नही बनशकते है,—और अधिक-मासका निषेध करनेकी ऐसी बाललीला मिथ्यात्व रूप मन कल्पना की गपोल खीचड़ी, क्या, अनन्तगुणी अविसंवादी सर्वज्ञ महाराज अतिउत्तमोत्तम श्रीतीर्थङ्कर केवलज्ञानी भगवान् उपदेशित शास्त्रोंमें कदापि चल शकती है अपितु सर्वथा प्रकारसें नही, नही, नही, क्योंकि अधिकमास को श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महाराज खुलासा पूर्वक गिनती में प्रमाण्य करते हैं। इसलिये तीनों महाशय तथा इन्होंके पक्षधारी वर्तमानिक महाशयोंकी अधिक मासके निषेध करनेकी सर्व कल्पना संसार वृद्धि कारक मिथ्यात्वकी हेतु हैं इसलिये वर्तमानिक श्रीतपगच्छादि वाले आत्मार्थी मोक्षाभिलाषि निर्पक्षपाती सज्जन पुरुषोंसे मेरा यही कहना है कि—हे धर्म बन्धवों तुमको संसार वृद्धिका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भय होवे और श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञाके आराधन करने की इच्छा होवे तो अधिक मासकी गिनतीको प्रमाण करो और दो श्रावण हो तो दूजा श्रावणमें तथा दो भाद्रपद हो तो प्रथम भाद्रपदमें पचास दिने पर्युषणा करनी मंजूर करो करावो श्रद्धो परूपो और मास वृद्धि होनेसे पर्युषणाके पीछाड़ी १०० दिन स्वभाविक होते है जिसको मान्य करो इस तरहका जब प्रमाण करोगे तब ही जिनाज्ञाके आराधक निर्दूषण बनोंगे। नहीं तो कदापि नही, आगे, इच्छा तुम्हारी—इतने परभी श्रीसमवायांगजी सूत्रका पर्युषणा के पहिले ५० और पीछाड़ी ७० दिनका पाठको दिखाकर मास वृद्धि होते भी दोनुं बात रखने के लिये जितनी जितनी कल्पना जोजो महाशय करते रहेंगे सोसो सूत्रकारके विरुद्धार्थमें वृथा परिश्रम करके उत्सूत्र भाषक बनेंगे—क्योंकि ५० और ७० दिन चारमासके १२० दिनका वर्षाकाल संबंधी पाठ है इसलिये दो श्रावणादि होनेसे पाँचमासके १५० दिनका वर्षाकालमें श्रीसमवायांगजीका पाठको लिखना सो प्रत्यक्ष सूत्रकारके वृत्तिकार के और न्याय युक्तिसे भी सर्वथा विरुद्धार्थमें हैं इसका विशेष खुलसा उपरोक्त देखो।

और एक युगके पांच संवत्सरोमें दोनुं अधिकमासकों खास श्रीसमवायाङ्गजी मूलसूत्रमें तथा वृत्ति वगैरह अनेक शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक प्रमाण किये है जिसके विषयमें २२ शास्त्रोंके प्रमाण तो इसी ही पुस्तक के पृष्ठ २७ तथा २८ और २९ मे छपगये है और भी सूत्र, वृत्ति, प्रकरण, वगैरह अनेक शास्त्रोंके प्रमाण अधिक मासको गिनतीमें करने के लिये हमको मिले है सो आगे लिखने में आवेंगे, अधिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासको दिनोमें यावत् मुहूर्त्तोमें भी खुलासासे प्रमाण किया है इसलिये अधिकमासकी गिनती निषेध करने वाले तीनों महाशय और इन्होंके पक्षधारी वर्तमानिक महाशय भी श्रीअनन्ततीर्थङ्कर, गणधर, पूर्वधर पूर्वाचार्य्यों के और अपने ही पूर्वजों के वचनों का खण्डन करते, सूत्र, वृत्ति, भाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, और प्रकरणादि अनेक शास्त्रोंके पाठोंके न माननें वाले तथा उत्थापक प्रत्यक्ष बनते है और भोले जीवोंको भी उसी रस्ते पहोंचाते मिथ्यात्वकी वृद्धिकारक संसार बढ़ाते है। इस लिये गच्छके पक्षपातका कदाग्रहको छोड़के शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक अधिक मासको प्रमाण करनेकी सत्यबातको ग्रहण करना और सब जनसमाजको ग्रहण कराना यही सम्यक्त्व धारीसज्जन पुरुषों का काम हैं;—

और भी तीनों महाशय चौमासी कृत्य आषाढ़ादि-मास प्रतिबद्धा की तरह मास वृद्धि होने से पर्युषणा भी भाद्रपदमास प्रतिबद्धा ठहराते है सो भी शास्त्रों के विरुद्ध है क्योंकि प्राचीन काल में भी मास वृद्धि होनेसे श्रावणमास प्रतिबद्धा पर्युषणाथी और वर्त्तमान कालमें भी दो श्रावण होनेसे कालानुसार दूजा श्रावण में पर्युषणा करने की शास्त्रकारों की आज्ञा हैं सोही श्रीखरतरगच्छादिमे करने में आती हैं इसलिये मास वृद्धि होते भी प्राचीन कालमें भाद्र-पद प्रतिबद्धा और वर्तमानमें दो श्रावण होते भी भाद्रपद-प्रतिबद्धा पर्युषणा ठहराना शास्त्रोंके विरुद्ध है इस बातका उपरमें विशेष खुलासा देखके सत्यासत्यका निर्णय पाठकवर्ग स्वयंकर सकते हैं। और जैसे चौमासी कृत्यमें अधिक मासको गिना जाता है तैसे ही पर्युषणा में भी अधिक मास को

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अवश्यही गिना जाता हैं इस लिये धर्मकार्यों में और गिनती का प्रमाणमें अधिक मासका शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक प्रमाण करना ही उचित होनेसे आत्मार्थियों को अवश्य ही प्रमाण करना चाहिये। अधिक मास को प्रमाण करना इसमें कोई भी तरहका हठवाद नहीं हैं किन्तु अधिक मास की गिनती निषेध करना सो निःकेवल शास्त्रकारों के विरुद्धार्थमें हैं.—तथापि इन तीनों महाशयोंने बड़े जोरसे अधिक मासकी गिनती निषेध किवी तब उपरोक्त समीक्षा मुजेभी अधिक मासकी गिनती करने के सम्बन्ध की करनी पड़ी और आगे फिर भी इन तीनों महाशयोंने अपनी चातुराई अधिक मास को निषेध करने के लिये प्रगट किवी है जिसमें के एक तीसरे महाशय श्री विनयविजयजी कृत श्रीसुखबोधिका वृत्तिका पाठ इसही पुस्तक के पृष्ठ ६९।७०।७१ मे छपा था जिसमेका पीछाड़ीका शेष पाठ रहा था जिसको यहाँ लिखके पीछे इसीकी समीक्षा भी करके दिखाता हुं श्रीसुखबोधिकावृत्ति के पृष्ठ १४७ की दूसरी पुठी की आदि से पृष्ठ १४८ के प्रथम पुठी की मध्य तक का पाठ नीचे मुजब जानो यथाः—

किं काकेन भक्षितः किं वा तस्मिन्मासे पापं न लगति उत बुभुक्षा न लगति इत्याद्युपहसन्मास्वकीयं ग्रहिलत्वं प्रकटयत स्त्वमपि अधिकमासे सति त्रयोदशषु मासेषु जातेष्वपि साम्वत्सरिक क्षामणे, बारसण्हं मासाणमित्यादिकं ब्रुवन्नधिकमासमंगीकरोषि एवं चतुर्मास क्षामणे ऽधिकमास सद्भावेपि, चउण्हंमासाणमित्यादि पक्षिक क्षामणकेऽधिक तिथि संभवेपि, पन्नरसण्हं दिवसाणमिति च ब्रूषे—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा नवकल्पिविहारोहि लोकोत्तरकार्येषु,आसाढेमासे दुप्पया,
इत्यांदि सूर्य्यचारे,लोकेपि दीपालिका अक्षय तृतीयादि पर्वसु
धन कलत्रादिषु च अधिकमासो न गण्यते तदपि त्वं
जानासि अन्यच्च सर्वाणि शुभकार्य्याणि अभिवर्द्धिते मासे
नपुंसक इति कृत्वा ज्योतिः शास्त्रे निषिद्धानि अतएव
आस्ता मन्योऽभिवर्द्धितो भाद्रपदवृद्धौ प्रथमो भाद्रप-
दोपि अप्रमाणमेव यथा चतुर्दशी वृद्धौ प्रथमां चतुर्द्दशी-
मवगण्य द्वितीयायां चतुर्द्दश्यां पाक्षिक कृत्यं क्रियते—
तथात्रापि एवं तर्हि अप्रमाणे मासे देवपूजा मुनि
दानाऽवश्यकादि कार्य्यमपि न कार्य्यमित्यपि वक्तुमाधरोष्टं
चपलय यतो यानि हि दिनप्रतिबद्धानि देवपूजा मुनि
दानादि कृत्यादि तानि तु प्रतिदिन कर्त्तव्यान्येवं यानि च
सन्ध्यादि समय प्रतिबद्धानि आवश्यकादीनि तान्यपि य
कश्चन सन्ध्यादि समयं प्राप्य कर्त्तव्यान्येव यानि तु भाद्र-
पदादि मास प्रतिबद्धानि तानि तु तद्द्वयसम्भवे कस्मिन्क्रियते
इति विचारे प्रथम मवगण्य द्वितीये क्रियते इति सम्यग्
विचारय तथाच पश्य अचेतना. वनस्पतयोपि अधिकमास
नांगी कुर्वते येनाधिकमासे प्रथमं परितज्य द्वितीय एव
मासे पुष्पति—यदुक्तम् आवश्यकनिर्युक्तौ, जइफुल्लाकस्मि
आरद्दा, चूअग अहिमासयंमिघुट्टंमि ॥ तुहनखमं फुल्लेउं,
जइपच्चंताकरिंति डमराइं ॥ १ ॥ तथा च कश्चित् ॥
अभिवड्ढियंमिवीसा, इयरेसु सवीसइ मासो, । इति
वचन बलेन मासाभिवृद्धौ विंशत्यादि तैरेव लोचादि कृत्य
विशिष्टां पर्युषणां करोति तदप्ययुक्तं, यंन अभिवड्ढियं-
मिवीसा इति वचनं गृहिज्ञातमात्रापेक्षया अन्यथा आसाढ-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुरिणमाए पज्जोसवेंति एसउस्सग्गो सेसकाल पज्जो-सविताणं अववाउत्ति, श्रीनिशीथचूर्णिदशमोद्देशक वचना-दाषाढ पूर्णिमायामेव लोचादि कृत्यविशिष्टा पर्युषणा कर्त्तव्या स्यात् इत्यलं प्रसंगेन—

उपरोक्तपाठ जैसा मैंने देखा वैसा ही यहाँ छपा दिया है और जैसे श्रीविनयविजयजीने उपरोक्त पाठ लिखा हैं वैसा ही अभिप्रायः का श्रीधर्मसागरजीने श्रीकल्पकिरणा-वली वृत्तिमें और श्रीजयविजयजीनें श्रीकल्पदीपिका वृत्ति में अपनी अपनी विद्वत्ताकी चातुराई से अनेक तरहके उटपटांग, पूर्वापर विरोधी विसंवादी और उत्सूत्र भाषण रूप शास्त्र कारोंके विरुद्धार्थ में अपनी मनकल्पना सें लिखके गच्छकदाग्रही दृष्टि रागी श्रावकोंके दिलमें जिनाज्ञा विरुद्ध मिथ्यात्वका भ्रमगेरा हैं। जिसका सबपाठ यहाँ लिखने से ग्रन्थ वढ़जावे,और वाचकवर्गको विस्तारके कारणसे विशेष वख्तलगे इसें नही लिखा औरतीनों महाशयोंका अभिप्राय उपरके पाठ मुजब ही खास एक समान है, इसलिये तीनों महाशयोंके पाठको न लिखते एकही श्रीसुखबोधिका वृत्तिका पाठ उपरमें लिखा है उसीकी समीक्षा करता हुं सो तीनों महाशयोंके अभिप्रायका लेखकी समझ लेना—अब समीक्षा-सुनो तीनों महाशय अधिकमासकी गिनती निषेध करके फिर उसीकों ही पुष्टी करने के लिये प्रश्नोत्तर रूपमें लिखते है कि—अधिकमासको गिनती में नही करते होतो (किं काकेनः भक्षित;—इत्यादि) क्या अधिकमासको काकने भक्षण करलिया किं वा तिस अधिक मासमें पाप नही लगता हैं और उस अधिकमासमें क्षुधा भी नही लगती है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सो अधिकमासको गिनतीमें नही लेते हो अर्थात् जो अधिक मास में पाप लगता होवे और क्षुधा भी लगती होवे तो अधिकमासको गिनतीमें भी प्रमाण करके मंजूर करणा चाहिये—इत्यादि मतलबसे उपहास करता प्रश्नकार वादीको ठहराकर फिर श्रीविनयविजयजी अपनी विद्वत्ता के जोरसे प्रतिवादी बनके उपरके प्रश्नका उत्तर देने मे लिखते है कि– मास्वकीयं ग्रहिलत्वं प्रगटयत स्त्वमपि अधिक मासे सति त्रयोदशषु मासेषु जातेष्वपि–इत्यादि अर्थात् अधिकमासको क्या काकने भक्षण करलिया तथा क्या तिस अधिकमासमें पाप नही लगता है और क्षुधा भी नही लगती है सो गिनतीमे नही लेते हो इत्यादि उपहास करता हुवा तेरा पागलपना प्रगट मत कर क्योंकि—त्वमपि अर्थात् हमारी तरह जिस संवत्सरमें अधिकमास होता है उसी संवत्सरमें तेरहमास होते भी साम्वत्सरिक क्षामणे 'बारसण्हंमासाणं' इत्यादि बोलके अधिकमासको गिनती में अङ्गीकार तुं भी नही करता है और तैसे ही चौमासी क्षामणेमें भी अधिकमास होनेसे पांच मासका सद्भाव होते भी 'चउण्हंमासाणंइत्यादि बोलके अधिकमासकी गिनती नही करता हैं ;—

अब हम उपरके मतलब की समीक्षा करते हैं कि हे पाठकवर्ग ! भव्यजीवों तुम इन तीनों विद्वान् महाशयों की विद्वत्ताका नमुना तो देखो–प्रथम किस रीतिसे प्रश्न उठाते हैं और फिर उसीका उत्तरमें क्या लिखते हैं प्रश्नके समाधानका गन्ध भी उत्तरमें नही लाते और और बाते लिख दिखाते हैं क्योंकि उपरोक्त प्रश्नमें अधिक मासको गिनतीमें नहीं लेते हो तो क्या काकने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भक्षण करलिया इत्यादि प्रश्न उठाकर इसका संबंध छोड़के—तुंभी साम्वत्सरिक क्षामणामें तेरहमास होते भी बारहमासके क्षामणे करता है इत्यादि लिख कर क्षामणाका संबंध लिख दिखाया और प्रश्न कारके उपर ही गेरके अपनी विद्वत्ता दिखाई परन्तु सम्पूर्ण प्रश्नके संबंधका समाधान उत्तरमें शास्त्रोंके प्रमाणसे तो दूर रहा परन्तु युक्ति पूर्वक भी कुछ नहीं कर शके क्या अलौकिक अपूर्व विद्वत्ता प्रश्नके उत्तर देनेमें तीनों विद्वानोंने खर्च किवी हैं सो पाठक वर्ग बुद्धि जन पुरुष स्वयं विचार लेना, और तुंभी अधिकमास होनेसे तेरह मासके क्षामणा न करते बारह मासका करके अधिक मासको अङ्गीकार नही करता हैं इत्यादि तीनों महाशयोंने लिखा हैं सो मिथ्या हैं क्योंकि अधिक मासकी गिनती करने वाले मुख्य श्रीखरतर गच्छवाले जब अधिक-मास होता है तब अभिवर्द्धित संवत्सराश्रय सांवत्सरिक क्षामणे में तेरह मास तथा छवीशं पक्षादि और अभिवर्द्धित चौमासेमें भी पांचमास तथा दशपक्षादि खुलासा कहकर सांवत्सरिक और चैामासी क्षामणेमें अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण करते हैं इसलिये अधिक मासको क्षामणामें अङ्गीकार नही करता हैं ऐसा तीनो महाशयों का लिखना प्रत्यक्ष मिथ्या हो गया और इस जगह किसीको यह संशय उत्पन्न होगा कि तेरह मास छवीश पक्षादि किस शास्त्रमें लिखे है तो इस बातका सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजी के नामसे पर्युषणा विचार नामकी छोटीसी पुस्तक की आगे में समीक्षा करुंगा वहाँ विशेष खुलासा शास्त्रोंके प्रमाणसे लिखा जायगा सो पढ़नेसें सर्व निर्णय हो जावेगा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और पाठकवर्ग तथा विशेष करके श्रीतपगच्छके मुनि महाशय और श्रावकादि महाशयों को मेरा इस जगह इतना ही कहना है कि आप लोग निष्पक्षपातसे विवेक बुद्धि हृदय में लाकर तीनों महाशयोंके लेखको टुक नजरसे थोड़ासा भी तो विचार करके देखो इस जगह क्षामणा के सम्बन्धमें दूसरों को कहने के लिये तीनों महाशयोंने 'अधिकमासैसति त्रयोदशषु मासेषु जातेष्वपि, इत्यादि । तथा 'एवं चतुर्मासक-क्षामणेऽधिकमाससद्भावेऽपि,—यह वाक्य लिखके अधिकमास को गिनतीमें लेकर तेरह मास अभिवर्द्धित सम्वत्सरमें और चौमासामें भी अधिक मासका सद्भाव मान्यकर अभिवर्द्धित चौमासा पाँचमास का दिखाया । इस जगह उपरोक्त इस वाक्यसे अधिकमासको तीनों महाशयोंने प्रमाण करके मंजूर कर-लिया—और पहिले पर्युषणाके सम्बन्धमें अधिक श्रावणकी और अधिक आश्विनकी गिनती निषेध कर दिवी, जब क्षामणा के सम्बन्धमें अधिक मासको गिनतीमें खुलासा मंजूर करलिया तो फिर विसम्वादी वाक्यरूप संसार वृद्धिकारक अधिक मासकी गिनतीका निषेध वृथा क्यों किया इसका विशेष विचार पाठकवर्ग स्वयं करलेना,—और अब श्रीतपगच्छके वर्त्तमानिक महाशयोंको मेरा इतनाही कहना है कि आप-लोग तीनों महाशयोंके वचनोंको प्रमाण करते हो तो इन्होंके लिखे शब्दानुसार अधिक मासकी गिनती मंजूर करोगे किम्वा विसंवादी पूर्वापर विरोधी वाक्यरूप निषेधको मंजूर करोगे जो गिनती मंजूरकरोगे तबतो वर्त्तमानिक लौकिक पञ्चागमें दो श्रावण वा दो भाद्रपद अथवा दो आश्विनादि मासोंकी वृद्धि होनेसे अधिक मासका गिनतीमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निषेध करनाही नही बनेगा, और जो निषेधको मंजूर करोगे तब तो अनेक सूत्र, वृत्ति भाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, प्रकरणादि अनेक शास्त्रोंके न माननेवाले उत्थापक बनोंगे इसलिये जैसा तुम्हारी आत्माको हितकारी होवें वैसा पक्षपात छोड़कर ग्रहण करना सोही सम्यक्त्वधारी सज्जन पुरुषोंको उचित है मेरा तो धर्मबन्धुओंकी प्रीति सें हितशिक्षारूप लिखना उचित था सो लिख दिखाया मान्य करना किंवा न करना सो तो आपलोगों की खुसी की बात है;—

और आगे भी सुनो, तीनों महाशयोंने पाक्षिक क्षामणे अधिक तिथि होते भी "पन्नरसण्हंदिवसाणं", ऐसा कहके अधिक तिथि को नहीं गिनता है यह वाक्य लिखा है इससें मालुम होता है कि तिथिओंकी हाणी वृद्धि की और पाक्षिक क्षामणा संबंधी जैन शास्त्रकारोंका रहस्यके तात्पर्य्यको तीनों महाशयोंके समजमें नही आया दिखता है नही तो यह वाक्य कदापि नही लिखते इसका विशेष खुलासा श्रीधर्मविजयजीके नामसें पर्युषणा विचार नामकी छोटीसी पुस्तक की में समीक्षा आगे करुंगा वहाँ अच्छी तरह सें तिथियों की हाणी वृद्धि संबंधी और पाक्षिक क्षामणा सम्बधी निर्णय लिखनेमें आवेगा—और नवकल्पि विहारका लिखा सो मासवृद्धिके अभावसें नतु पौषादिमास वृद्धि होते भी क्योंकि मासवृद्धि पौष तथा आषाढ़की प्राचीन कालमें होती थी जब और वर्त्तमानमें भी वर्षाऋतुके सिवाय मास वृद्धिमें अधिक मासकी गिनती करके अवश्यही दशकल्पि विहार होता है यह बात शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक है इस का भी विशेष निर्णय वहाँ ही करनें में आवेगा—और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(आसाढ़े मासे दुप्पया इत्यादि सूर्य्यचारे) इस वाक्यको लिखके तीनों महाशय अधिक मासमें सूर्यचार नहीं होता है ऐसा ठहराते है सो भी मिथ्या हैं क्योंकि अधिक मासमें अवश्यही निश्चय करके सूर्यचार आनादिकाल से होता आया है और आगे भी होता रहेगा तथा वर्तमान कालमें भी होता है सो देखिये शास्त्रोंके प्रमाण श्रीचन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्रमें १ तथा वृत्तिमें २ श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रमें ३ तथा वृत्ति में ४ श्री-बृहत्कल्प वृत्तिमें ५ श्रीभगवतीजी मूलसूत्रके पञ्चम शतकके प्रथम उद्देशेमें ६ तत्वृत्तिमें ७ श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमें ८ तथा इन्हीं सूत्रकी पांच वृत्तियों मे १३ श्रीज्योतिष-करंडपयन्नेकीवृत्ति में १४ श्रीव्यवहारसूत्र वृत्तिमें १५ और लघु तथा बृहत्दोनुंसंग्रहणीसूत्र में १७ तथा तिस की चार वृत्तियों में २१ और क्षेत्रसमास के तीन मूल ग्रन्थों में २४ तथा तीन क्षेत्रसमासों की सात वृत्तिओं में ३१ इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें अधिक मासमें सूर्यचार होनेका कहा है अर्थात् सूर्यचारके १८४ मांडलेके १८३ अन्तरे खुलासा पूर्वक कहे है जिसमें दिन प्रते सूर्य अपनी मर्यादा पूर्वक हमेसां गति करके १८३ दिने दक्षिणा-यनसे उत्तरायण और फिर १८३ दिने उत्तरायणसे दक्षिणायन इसीही तरहसे एक युगके पांच सूर्य संवत्सरोंके १८३० दिनोंमें सूर्यचारके १० आयन होते हैं जिसमें चन्द्रमासकी अपेक्षासे दो मासकी वृद्धि होने से ६२ चन्द्रमासके १८३० दिन होते हैं इसलिये अधिक मासके दिनोंकी गमती करनेसेही सूर्यचारके गतिका प्रमाण मिल शकेगा, अन्यथा नहीं ?

और लौकिक पञ्चांगमें भी अधिक मासके दिनोंकी गिनती सहित सूर्यचार होता है सोही वर्त्तमानिक संवत्सर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को दिखाता हुं,—सम्वत् १९६६ का जोधपुरी चंडु पञ्चांगमें आषाढ़ शुक्ल ५ के दिन सूर्य उत्तरायनसे दक्षिणायन में हुवा था जिसमें मास वृद्धिसे दो श्रावण मास हुवे तब अधिक मासके दिनोंकी गिनती सहित चन्द्रमासकी अपेक्षासे तिथियोंकी हाणी वृद्धि हो करके भी १८३ वें दिन मार्गशीर्ष शुक्ल ९ के दिन फिर भी सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायन में हुवा है सो पाठकवर्गके सामनेकी ही बात हैं, इसी तरहसे लौकिक पञ्चाग में हरेक अधिक मासोंकी गिनतीसे सूर्यचारकी गिनती समझ लेना और सम्वत् १९६९में खास दो आषढ़ मास होवेगें तबभी सूर्यचारकी गतिको देखके पाठकवर्ग प्रत्यक्ष निर्णय करलेना—और मेरेपास विक्रम सम्वत् १९७१ से लेकर सम्वत् १९९९वें तकके अधिक मासोंका प्रमाण मौजूद है परन्तु ग्रन्थगौरवके कारणसे नहीं लिखता हुं, इसलिये तीनों महाशय अधिक मास में सूर्यचार नहीं होता है ऐसा ठहराते है सो जैनशास्त्रानुसार तथा युक्तिपूर्वक और लौकिक पञ्चाङ्गकी रीतिसे भी प्रत्यक्ष मिथ्या हैं तथापि तीनों महाशयोंने भोले जीवोंकों अपने पक्ष में लानेके लिये (आसाढ़मासे दुप्पया) इस वाक्यको लिखके सूत्रकार गणधर महाराजका अभिप्रायके विरुद्ध हो करके और फिरभी अधूरालिख दिया क्योंकि गणधर महाराज श्रीसुधर्म्मस्वामिजीनें श्रीउत्तराध्ययनजी सूत्रके छवीश (२६) वें अध्ययन में साधुसमाचारी सम्बन्धी पौरस्याधिकारे—असाढ़ मासे दुप्पया, पोसेमासे चउप्पया ॥ चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइपोरसी ११ इत्यादि १२।१३।१४।१५।१६ गाथाओं से खुलासा पूर्वक व्याख्या मास वृद्धिके अभावसे स्वभाविक

रीतिसें किवी थी और इन्हीं गाथाओंकी अनेक पूर्वाचार्योंने विस्तार करके अच्छी तरहसे टीका बनाई हैं उन सब व्याख्यायोंको और सूत्रकारके सम्बधकी सब गाथायोंको छोड़करके सिर्फ एक पद लिखा सोभी मास वृद्धिके अभावका था जिसको भी मास वृद्धि होते भी लिखके दिखाना सो आत्मार्थी भवभीरु पुरुषोंका काम नहीं हैं और में इस जगह श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्र के २६ वा अध्ययनकी गाथा ११ वीं,से १६ वी तक तथा व्याख्यायोंके भावार्थ सहित विस्तार के कारणसे नहीं लिख सक्ता हुं परन्तु जिसके देखनेकी इच्छा होवे सो रायबहादुर धनपतसिंहजी की तरफसे जैनागम संग्रहका ४१ वा भागमें श्रीउत्तराध्ययनजी मूलसूत्र तथा श्रीलक्ष्मीवल्लभगणिजी कृत वृत्ति और गुजराती भाषा सहित छपके प्रसिद्ध हुवा हैं जिसके २६ वा अध्ययन में साधुसमाचारी संम्बधी पौरषीका अधिकार पृष्ठ ७६६ सें ७६९ तक गाथा ११वी से १६वी तथा वृत्ति और भाषा देखके निर्णय करलेना और जिसके पास हस्तलिखित पुस्तक मूल की तथा वृत्तिकीहोवे सोभी उपरोक्त अध्ययनकी गाथा और वृत्ति देखलेना और श्रीउत्तराध्ययनजी सूत्रकार श्रीगणधर महाराज अधिक मासको अच्छी तरहसे खुलासा पूर्वक यावत् मुहूर्तोंमें भी गिनती करके मान्य करने वाले थे तथा अधिक मासके भी दिनोंकी गिनती सहित सूर्यचार को मान्यने वाले थे इसलिये सूत्रकार गणधर महाराजके अभिप्रायः के सम्बन्धका सब पाठको छोड़के एकपद लिखनेसें अधिक मासमें सूर्यचार नहीं होता है ऐसा तीनों महाशयोंका लिखना कदापि सत्य नहीं होशक्ता हैं अर्थात् सर्वथा मिथ्या हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और भी तीनों महाशय दो भाद्रपद होनेसें प्रथम भाद्रपको अप्रमाण ठहरा कर छोड़ देना और दूसरे भाद्रपद में पर्युषणा करना कहते है इसपर मेरेकों वड़ाही आश्चर्य्य सहित खेद उत्पन्न होता है क्योंकि जैसे अन्य मतवाले जिस देवकी अनेक तरहसें अज्ञान दशाके कारणसें विटंबना बहोतसी करते है फिर उन्हीं देवकों अपने परमेश्वर मानकर पूजते भी है तैसेही इन तीनों महाशयोंने भी अज्ञानी मिथ्यात्वियोंका अनुकरण किया अर्थात् जिस अधिक मास को कालचूला मान्यकरके गिनतीमें नही लेना ऐसा सिद्ध-करके फिर अनेक तरहके विकल्पोंसें अधिक मासको दूषण लगाके निंदते हुवे निषेध करते है फिर उन्हीं अधिक मासमें धर्मकार्य्य पर्युषणापर्व करना मंजूर कर लिया, क्योंकि तीनों महाशय अधिक मासको कालचूला कहनेसें गिनतीमें नहीं आता है ऐसा तो पर्युषणाके सम्बधमें प्रथम लिखते हैं इसपर पाठकवर्ग बुद्धिजनपुरुष निष्पक्षपातसे विचार करो कि, कालचूला उसको कहते हैं जो एक वर्षका कालके उपरमे बढ़े एक वर्षके बारह मास स्वाभाविक होतेही हैं परन्तु जब तेरहवा मास बढ़ेगा तब उसीको कालचूलाकी ओपमा होगा नतु बारहवा मासको जब तेरहवा मास को कालचूलाकी ओपमा हुई उसीकों गिनतीमें निषेधभी करदेना, और प्रमाणभी करलेना यह कैसी विद्वत्ताका न्याय हुवा जो कालचूलाको निषेध करेंगे तब तो दूसरा भाद्रपदको कालचूलाकी ओपमा होती है उसीमें पर्युषणापर्व स्थापना नहीं बनेगा, और जो दूसरे भाद्रपदमें कालचूला जानके भी पर्युषणा स्थापेंगे तबतो दो श्रावण होनेसे दूसरे श्रावणको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निषेध करना नहीं बनेगा, और अधिक मासको निषेध करनेके लिये जो जो कल्पना उपरके पाठमें लिखी है सो सबही वृथा होजावेगी सो पाठकवर्ग स्वयं विचार लेना;—

और जैसे श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की प्रतिमाजीके निंदक जैनाभास ढूंढिये और तेरहापन्थी हठग्राही कदाग्रहीलोग अपने पक्षकी भ्रमजालमें भोले जीवोंको फसानेके लिये जिस सूत्रका पाठ लोगोंको दिखाते हैं उन्हीं सूत्रके पाठको जड़ मूलसेंही उत्थापन करते है तैसेही इन तीनों महाशयोंने भी किया अर्थात् श्रीदशाश्रुतस्कंधसूत्रके अष्टमाध्ययनरूप पर्युषणा कल्पचूर्णिका और श्रीनिशीथसूत्रकी चूर्णिके दशवें उद्देशेका पाठ लिखके भोले जीवोंको दिखाया था उन्हीं चूर्णिके पाठको जड़मूलसे उत्थापन भी कर दिया, क्योंकि प्रथम पर्युषणा भाद्रपदमें ठहरानेके लिये दोनु चूर्णिके पाठ लिखे थे जिसमें स्वभाविकरीतिसे आषाढ़ चौमासीसें पचास दिनके अन्तरमें कारण योगसें श्रीकालकाचार्यजीने पर्युषणा किवी थी सोभी प्राचीनकालाश्रय गुनपचास (४९) वें दिन मास वृद्धिके अभावसे परन्तु शास्त्रोंके प्रमाण उपरान्त एकावन दिने पर्युषणा नहीं किवी थी, तथापि इस जगह उन्हीं पाठको तीनों महाशयोंने जड़मूलसेही उत्थापन करके स्वभाविक रीतिसे प्रथम भाद्रपद था उसीको छोड़कर दूसरे भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करनी लिख दिया, फिर निर्दूषण बनने के लिये उन्हीं दोनु चूर्णिमें अधिक मासको प्रमाण किया था उन्हीं चूर्णिके पाठको उत्थापनरूप अधिक मासको निषेध भी कर दिया, हा, आफसोस ;—

अब सज्जन पुरुषोंसे मेरा इतनाही कहना हैं कि दो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भाद्रपद होनेसे प्रथम भाद्रपदमें ही पर्युषणा करनी जिनाज्ञामुजब शास्त्रानुसार है नतु दूसरेमें, इतनेपर भी हठवादीजन शास्त्रोंके विरुद्ध होकरके भी दूसरे भाद्रपदमें पर्युषणा करेंगे तो उन्होंके इच्छाकी बात ही न्यारी है;—

और तीनों महाशय दो चतुर्दशी होनेसे प्रथम चतुर्दशी को छोड़कर दूसरी चतुर्दशीमें पाक्षिक कृत्य करनेका कहते है सोभी शास्त्रविरुद्ध है इसका विशेष खुलासा तिथिनिर्णयका अधिकारमें आगे विस्तार पूर्वक शास्त्रोंके प्रमाण सहित करनेमें आवेगा ,—

और अधिक मासमें देवपूजा, मुनिदान, पापकृत्योंकी आलोचनारूप प्रतिक्रमणादि कार्य दिन दिन प्रति करनेका कहकर अधिक मासके तीस ३० दिनोंमें धर्मकर्मके कार्य करनेका तीनों महाशय कहते है परन्तु अधिक मासको गिनती में लेनेका निषेध करते हैं, इसपर मेरेकों तो क्या परन्तु हरेक बुद्धिजन पुरुषोंकों तीनों महाशयोंकी अपूर्व बालबुद्धिकी चातुराईको देखकर बड़ाही आश्चर्यको उत्पन्न हुये बिना नही रहेगा क्योंकि जैसे कोई पुरुष एक रुपैये को अप्रमाण मानता है परन्तु १६ आने, तथा ३२ आधाने और ६४ पाव आने, आदिको मान्य करता हैं और एक रुपैये को मानने वालोंका निषेध करता है, तैसेही इन तीनों महाशयोंका लेखभी हुवा अर्थात् अधिक मासके ३० दिनोंमें धर्मकर्म तो मान्य किये, परन्तु अधिक मासको मान्य नहीं किया और मान्य करनेवालोंका निषेध किया सो क्या अपूर्व विद्वत्ता प्रगट तीनों महाशयोंने किवी है, जैसे उस पुरुषने जब १६ आने तथा ३२ आध आने चौसठ पाव आने कों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मान्य करलिये तब एक रुपैया तो स्वयं मान्य होगया, तथापि निषेध करना, सो बे समझ पुरुषका काम है तैसेही तीनों महाशयोंनें भी जब देवपूजा, मुनिदानावश्यक (प्रतिक्रमण) वगैरह धर्मकर्म ३० दिनोंमें मान्य लिये तब तो ३० दिनका एक अधिक मास तो स्वयं मान्य होगया, तथापि फिर अधिक मासको गिनती करनेमें निषेध करना सो हठवादसे निःकेवल हास्यका हेतु लज्जाका घर और तीनों महाशयोंकी विद्वत्ताकी लघुताका कारण है ,—

तथा और भी सुनिये जब इस जगह तीनों महाशय ३० दिनोंमें धर्मकर्म मान्य करते है जिससे अधिक मास भी गिनती में सिद्ध होता हैं फिर पर्युषणाके संबंधमें दो श्रावण के कारणसें भाद्रपद तक प्रत्यक्ष ८० दिन होते है जिसको निषेध करके ८० दिनके ५० दिन बनाते है और अधिक मासको निषेध करते है सो कैसे बनेगा अपितु कदापि नही, इस लिये जो ८० दिनके ५० दिन मान्य करेंगे तब तो अधिक मासके ३० दिनोंमें देवपूजा मुनिदानावश्यकादि कुछ भी धर्मकर्म करनाही नहीं बनेगा और अधिक मासके ३० दिनोंमें धर्मकर्म करना तीनों महाशय मंजूर करेंगे तो अधिक मासके ३० दिनका धर्मकर्म गिनतीमें आजावेगा तब तो दो श्रावण हनेसे भाद्रपद तक ८० दिन होते है जिसका निषेध करनाही नही बनेगा और ८० दिने पर्युषणा करनी सो भी शास्त्रोंके प्रमाण बिना होनेसे जिनाज्ञा विरुद्ध तीनों महाशयोंके वचनसे भी सिद्ध होगई—इस बातको पाठकवर्ग बुद्धिजन पुरुष विशेष स्वयं विचार लेना ,—

और आगे फिरभी तीनों महाशयोंनें अभिवर्द्धित

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संवत्सरमें वीश दिने पर्युषणा होतीथी उसीको गृहस्थी लोगोंके करने मात्रही ठहरानेके लिये श्रीनिशीथ चूर्णिका दशवा उद्देशाके पर्युषणा विषयका आगे पीछेका संबंधको छोड़कर चूर्णिकार महाराजके विरुद्धार्थ में सिर्फ दो पद, लिखके वृथा परिश्रम करके वड़ी भूल किवी हैं क्योंकि जो आषाढ़पूर्णिमाको पर्युषणा कही हैं सो गृहस्थी लोगके न जानी हुई, अप्रसिद्ध तथा अनिश्चयसे होती हैं उसमें लोचादिकृत्य करनेका कोई नियम नही हैं परन्तु वीशे, और पचासे, गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई प्रसिद्ध निश्चय पर्युषणा होती है उसीमें लोचादिकृत्योंका नियम है इस लिये वीश दिनकी भी पर्युषणा वार्षिक कृत्योंसे होती थी इसका विशेष विस्तार उपरमें पहिले अनेक जगह छपगया है और श्रीनिशीथचूर्णिके १० वे उद्देशेका पर्युषणा संबंधी संपूर्ण पाठ भी उपरमे पृष्ठ ९५ से ९९ तक और भावार्थ १०० से १०४ तक छपगया है और आगे पृष्ठ १०६ से यावत् ११७ तक उसी बातके लिये अनेक शास्त्रोंके प्रमाणसे और युक्तिपूर्वक विस्तारसे छपगया है सो पढ़नेसें सर्व निर्णय होजावेगा और आगे लौकिकमें दीवाली, अक्षय-तृतीयादि पर्व वगैरह तथा अन्यभी सर्व शुभकार्य्य अधिक मासको नपुंशक कहके ज्योतिषशास्त्रमें वर्जन किये हैं और अधिक मास में वनस्पति प्रफुल्लित नही होती हैं, इत्यादि बाते जो जो तीनों महाशयोंनें लिखी हैं सो निःकेवल शास्त्रकारोंके अभिप्रायःकों जाने बिना विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणरूप भोले जीवोंको अपने फन्दमें फसानेके लिये लिखके मिथ्यात्वके कारणमें वृथा परिश्रम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करके समय खोया है और आपका तथा आपके लेखको सत्य माननेवालोंका संसार वृद्धिका कारणभी खुब किया है सो इन सब बातोंका जबाब शास्त्रोंके प्रमाणसें शास्त्रकार महाराज के अभिप्रायः समेत तथा न्यायपूर्वक युक्ति सहित अच्छी तरहसें खुलासाके साथ आगे चौथे महाशय श्रीन्यायांभोनिधिजी और सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामसें लिखनेमें आवेगा,—

परन्तु इस जगह निष्पक्षपाती सत्यग्राही श्रीजिनेश्वर भगवन्की आज्ञाके आराधक सज्जन पुरुषोंसें थोड़ीसी वार्त्ता दिखाकर पीछे तीनों महाशयोंकी समीक्षाको पूर्ण करुंगा सो वार्त्ता अब सुनो ;—

तीनों महाशयोंने श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठकी [अंतरा वियसे कप्पइ नोसे कप्पइ तं रयणिं उवायणा वित्तएति] इस पदकी व्याख्या [अर्वागपि कल्पे परं न कल्पेतां रात्रिं (रजनीं) भाद्रपदशुक्लपञ्चमी उवायणा वित्तएति अतिक्रमीतु इत्यादि] व्याख्या खुलासा पूर्वक किवी हैं जिसमें। प्रथम। आषाढ़-चैामासीसें पचास दिनके अंदरमें कारणयोगे पर्युषणा करना कल्पे परन्तु पचासवें दिनकी भाद्रपदशुक्लपञ्चमीकी रात्रिको उल्लङ्घन करना नही कल्पे। तथा दूसरी। पाँच पाँच दिनकी वृद्धि करते दशवें पञ्चकमें पचास दिने पर्युषणा जैन पञ्चाङ्गानुसार मासवृद्धिके अभावसें लिखी। और तीसरी। जैन पञ्चाङ्गानुसार एक युगमें पौष और आषाढ़ दो मासकी वृद्धि होनेसें वीशदिने पर्युषणा लिखी। और चैाथी। अबी वर्त्तमानकालमें जैन पञ्चाङ्गके अभावसें लौकिक-पञ्चाङ्गमें हरेक मासोंकी वृद्धि होती है इसलिये आषाढ़

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चैामासीसें पचास दिने पर्युषणा करनेकी पूर्वाचार्य्योंकी आज्ञा है। इस तरहसें तीनों महाशयोंने चार प्रकारसें खुलासा लिखा है इस पर बुद्धिजन पुरुष तत्त्वग्राही होके विचार करो कि प्राचीनकालमें पाँच पाँच दिनकी वृद्धि करते दशवें पञ्चकमें पचास दिने मासवृद्धिके अभावसें जैन पञ्चाङ्गानुसार भाद्रपदशुक्लपञ्चमी परन्तु श्रीकालकाचार्य्यजीसें चतुर्थीको पर्युषणा होती है परन्तु अब लौकिकपञ्चाङ्गमें हरेक मासकी वृद्धि होनेसें श्रावणभाद्रपदादि मास भी बढ़ने लगे इसलिये मासवृद्धि हो अथवा न हो तो भी पचास दिने पर्युषणा करनेकी पूर्वाचार्य्योंकी आज्ञा हुई तब मासवृद्धि होते भी भाद्रपदमेंही पर्युषणा करनेका निश्चय नही रहा किन्तु दो श्रावण होनेसें दूजा श्रावणमें और दो भाद्रपद होनेसें प्रथम भाद्रपदमें पचास दिने पर्युषणा करनेका नियम इस वर्त्तमानिक कालमें रहा जिससें दो श्रावण तथा दो भाद्रपद और दो आश्विन मास होनेसें पर्युषणाके पीछाड़ी ७० दिनका भी नियम नही रहा अर्थात् मासवृद्धि होनेसें पर्युषणाके पीछाड़ी १०० दिन श्रीतपगच्छकेही पूर्वजोंकी आज्ञानुसार रहते हैं यह तात्पर्य तीनों महाशयोंके लिखे वाक्य परसें सूर्य्यकी तरह प्रकाश कारक निकलता हैं सो न्यायकीही बात है इस बातको अपने पूर्वजोंकी आशातनासें डरनेवाला कोई भी प्राणी निषेध नही कर सकता है तथापि इन तीनों महाशयोंने अपनी विद्वत्ताकी बात जमानेके लिये खास अपनेही पूर्वजोंका उपरोक्त वाक्यको जड़ मूलसेही उठाकर अपने पूर्वजोंकी आज्ञा लोपते हुवे दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेका और मासवृद्धि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होते भी पर्युषणाके पीछाड़ी ७० दिन रखनेका झगड़ा उठाया—

और श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि पूर्वधर पूर्वाचार्य्य और प्राचीन सब गच्छोंके पूर्वाचार्य्य जिसमें श्रीतपगच्छकेही पूर्वज पूर्वाचार्य्योंदि महाराजोंने अधिक मासको प्रमाण किया था सो इन तीनों महाशयोंने उपरोक्त महाराजोंकी आशातनाका भय न रखते हुए अधिकमासको निषेध कर दिया और श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने जैसे सुमेरु पर्वतके उपर चालीशयोजनके शिखरको तथा अन्य भी हरेक पर्वतोंके शिखरोंको और देव मन्दिरादिकके शिखरोंको क्षेत्र चूलाकी उत्तम ओपमा कही है तैसेही चंद्र संवत्सरके बारह मासोंके उपर शिखररूप तेरह वा अधिकमासको भी कालचूलाकी उत्तम ओपमा देकर गिनतीमें लिया था जिसको इन तीनों महाशयोंने धर्मकार्योंकी गिनतीमें निषेध करने के लिये अधिकमास को नपुंशकादि हलकी ओपमा देकर श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी विशेष वड़ी भारी आशातना किवी हैं और अपनी बात जमाने के लिये श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्र की चूर्णि तथा श्रीनिशीथचूर्णि और श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठ लिखके दृष्टि रागियोंको दिखाये थे सोभी शास्त्रकार महाराज के विरुद्धार्थ में तथा उन्ही तीनों शास्त्रोंमें अधिकमास को अच्छी तरहसें प्रमाण कियाथा तथापि इन तीनों महाशयोंने उन्ही तीनों शास्त्रोंके पाठोंको जड़ मूलसें ही उत्थापन करके अधिक-मासको निषेध कर दिया और मासवृद्धिके अभावसें पचास दिने भाद्रपदमें पर्युषणा कही थी तब पर्युषणाके पीछाड़ी ७०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन भी स्वभाविक रहते थे तथापि इन तीनों महाशयोंने उत्सूत्र भाषणरूप मासवृद्धि होनेसें वर्तमानिक दो श्रावण होते भी भाद्रपद में पर्युषणा और पीछाड़ी के ७० दिन शास्त्रोंके प्रमाण विरुद्ध हो करके स्थापन किये और तीनों महाशय खास आप भी स्वयं एक जगह अधिकमास को कालचूला की उत्तम ओपमासें लिखते हैं दूसरी जगह नपुंशककी तुच्छ ओपमासें लिखते हैं आगे और भी एक जगह अधिकमाके ३० दिनोंका धर्मकर्मको गिनती में लेते हैं दूसरी जगह ३० दिनोंको ही सर्वथा निषेध करते है इसी तरहसें कितनी ही जगहपूर्वापरविरोधी (विसम्वादी) उटपटांगरूप वाक्य लिखके गच्छपक्षी जनोंको शास्त्रानुसार की सत्य बात परसें श्रद्धा छोड़ा कर शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें मिथ्यात्वरूप कदाग्रहमें गेर दिये तथा आगे अनेक जीवोंको गेरनेका कार्य कर गये हैं इसलिये खास तीनों महाशयोंकी और इन्होंके शास्त्र विरुद्ध लेखको सत्य मान्यकर उसी तरह सें अधिक मासकी निषेधरूप मिथ्यात्वके पीष्ट पेषणको पीसते रहेंगे जिससें भोले जीव भी उसीमें फसते रहेंगे उन्होंकी आत्माका कैसे सुधारा होगा सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने तथा और भी थोड़ासा सुन लिजिये श्रीभगवतीजी सूत्रमें १ और तत् वृत्तिमें २ श्रीउत्तराध्ययनजी सूत्रमें ३ और तीनकी छ व्याख्यायोंमें ९ श्रीदशवैकालिक सूत्रमें १० और तीनकी चार व्याख्यायोंमें १४ श्रीधर्मरत्नप्रकरणवृत्तिमें १५ श्रीसङ्घपट्टक वृहत् वृत्तिमें १६ श्रीश्राद्धविधिवृत्तिमें १९ इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें उत्सूत्रभाषक श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वाचार्य्यादि परम गुरुजन महा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राजोंकी आशातना करने वाला और उन्हीं महाराजोंका वाक्यको न मानता हुवा उत्थापन करने वाला प्राणीको यावत् दुर्लभबोधि मिथ्यात्वी अनन्त संसारी कहा है तैसे ही न्यायांभोनिधिजी श्रीआत्मारामजीने भी अज्ञान तिमिरभास्कर ग्रन्थके पृष्ठ ३२०में लिखा है—छठ दशम द्वादसेहिं, मासद्धमासखमणे हिं। अकरन्तो गुरुवयणं, अनन्त संसारिओ भणिओ ॥ १ ॥ तथा और भी पृष्ठ २९५ का लेख इसी ही पुस्तकके पृष्ठ ७९ और ८०, में छपगया है इससे भी पाठकवर्ग विचार करो कि श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंकी और अपने ही गच्छके पूर्वाचार्य्योंकी इन तीनों महाशयोंने अधिकमासको निषेध करने के लिये कितनी वड़ी आशातना करके कितने शास्त्रोंके पाठोंको उत्थापन किये है तो फिर इन तीनों महाशयोंमें अनन्त संसारका हेतु रूप मिथ्यात्वके सिवाय सम्यक्त्वका लेश मात्र भी कैसे सम्भव होगा क्योंकि श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंकी आशातना करने वाला तथा आज्ञा न मानने वाला और उलटा उन्ही महात्माओंके वचनोंका उत्थापन करने वालाको जैन शास्त्रोंके जानकार बुद्धिजन पुरुष सम्यक्त्वी नही समझ सकते हैं इसलिये अब पाठक वर्ग पक्षपातका दृष्टिरागको छोड़कर और श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञानुसार सत्य बातके ग्रहण करनेकी इच्छा रखकर उपरकी वार्तोको अच्छी तरहसें पढ़के सत्यासत्यका निर्णय करके असत्यको छोड़ो और सत्यको ग्रहण करो यही मोक्षाभिलाषि भवभिरु पुरुषोंसें मेरा कहना है—

और प्रथम श्रीधर्मसागरजीनें श्रीकल्पकिरणावलीवृत्तिमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा दूसरे श्रीजयविजयजीनें श्रीकल्पदीपिका वृत्तिमें और तीसरे श्रीविनयविजयजीनें श्रीसुखबोधिकावृत्ति में इन तीनों महाशयोंनें श्रीकल्पसूत्रका मूलपाठके विरुद्धार्थमें उत्सूत्रभाषणरूप अपने हठवादके कदाग्रहको जमानेके लिये जो जो बाते लिखी है उन बातोंको श्रीतपगच्छके वर्त्तमानिक मुनिजनादि गांम गांममें हर वर्ष पर्युषणामें भोले जीवोंको सुनाते हैं जिससें आत्मसाधनका धर्मके बदले जिनाज्ञा विरुद्ध मिथ्यात्वकी श्रद्धामें गिरके श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा उल्लङ्घन करके बड़ी आशातना करते हुए दुर्लभ बोधिका साधन करनेके कारणमें पड़ते हैं इस विषयके सम्बन्धी प्रथम श्रीधर्मसागरजीने बडी धूर्त्ताई करके श्रीतपगच्छमें पर्युषणा संबन्धी अधिकमासको निषेध करनेके लिये श्रीकल्पकिरणावली वृत्तिमें प्रथमही मिथ्यात्वकी निव लगाई है इस बातका खुलासा [आठो ही महाशयोंके उत्सूत्र भाषणके लेखोंकी समीक्षा हुवे बाद] अन्तमें विस्तारपूर्वक लिखुगा और इन तीनों महाशयोंने इस तरहसें मायावृत्तिका लेख लिखा है कि जिसमें भोले जीव तो फसे उसमें कोई आश्चर्य नही है परन्तु न्यायाम्भोनिधिजी श्रीआत्मारामजी जैसे प्रसिद्ध विद्वान् होते भी फस गये और उन्होंकी तरह श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातनाका कारणरूप और पूर्वापर विरोधि अधिक मासका निषेध आपभी आगेवान होकर कराया है इसलिये अब इन्होंके लेखकी भी समीक्षा आगे करता हुं—

॥ इति तीनों महाशयों के नामकी संक्षिप्त समीक्षा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब आगे चौथे महाशय न्यायांभोनिधिजी श्रीआत्मा-रामजीनें, जैनसिद्धांतसमाचारी, नामा पुस्तक में पर्युषणासम्ब-न्धी लेख लिखाया है जिसकी समीक्षा करके दिखाता हुं ;— जिसमें प्रथम श्रीखरतरगच्छके श्रावक रायबहादुर मायसिंहजी मेघराजजी कोठारी श्रीमुर्शिदाबाद अझीमगञ्ज निवासीकी तरफसें, शुद्धसमाचारी, नामा पुस्तक छपके प्रसिद्ध हुई थी, जिसमें श्रीतीर्थंकर गणधर, चौदहपूर्वधरादि पूर्वाचार्योंके अनेक शास्त्रोंके पाठों करके सहित और युक्ति पूर्वक देश कालानु-सार श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञा मुजब अनेक सत्य बातों को प्रगट किवी थी, जिसको पढने सें श्रीन्यायांभोनिधिजी तथा उन्होंके सम्प्रदायवाले मुनिजन और उन्होंके दृष्टिरागी श्रावकजन समुदाय सत्यबातको ग्रहण तो न कर सके परन्तु अंतर मिथ्यात्व और द्वेषबुद्धिके कारणसें उसका खण्डन करनेके लिये अनेक शास्त्रोंके आगे पीछे के पाठोंको छोड़कर शास्त्र-कार महाराजके विरुद्धार्थ में उलटा संबंध लाकर अधूरे अधूरे पाठ लिखके शुद्धसमाचारी कारकी सत्य बातोंका खण्डन किया और अपनी मिथ्या बातोंको उत्सूत्र भाषण-रूप स्थापन किवी जिसके सब बातोंकी समालोचनारूप समीक्षा करके उसमें शास्त्रोंके सम्पूर्ण सम्बन्धके सब पाठ तथा शास्त्रकार महाराजके अभिप्रायः सहित और युक्ति पूर्वक भव्य जीवोंके उपगारके लिये इस जगह लिखके न्यायांभोनि-धिजीके न्यायान्यायका विचारको प्रगट करना चाहुं तो जरूर करके अनुमान ६०० अथवा ७०० पृष्ठका बड़ा भारी-एक ग्रन्थ बन जावे परन्तु इस जगह विस्तारके कारणसें और हमारे विहारका समय नजिक आनेके सबबसें सब न

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिखते थोड़ासा नमुनारूप पर्युषणाके सम्बन्धी लेखकी समीक्षा करके लिख दिखाता हुं—जिसमें पहिले जो कि—शुद्ध समाचारी पुस्तकके बनानेवालेनें पर्युषणा सम्बन्धी लेख लिखा है उसीको इस जगह लिखके फिर उसीका खण्डन जैनसिद्धान्तसमाचारी में न्यायांभोनिधिजीने कराया है उसीको लिख दिखाकर उसपर मेरी समीक्षा को लिखुङ्गा सो आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंको दृष्टिरागका पक्षको न रखते न्याय दृष्टिसें पढ़कर सत्य बातको ग्रहण करना सोही उचित हैं ;—अब शुद्धसमाचारीकारके पर्युषणा सम्बन्धी लेखका पृष्ठ १५४ पंक्ति १३ वी से पृष्ठ १६० की पंक्ति ७ वी तकका (भाषाका सुधारा सहित) उतारा नीचे मुजब जानो ;—

शिष्य प्रश्नः करता है कि अपनें गच्छमें जो श्रावणमास वढ़े तो दूसरे श्रावण शुदीमें और भाद्रपद वढ़े तो प्रथम भाद्रव शुदीमें, आषाढ़ चौमासीसें, ५० में दिनही पर्युषणा करना, परन्तु ८० अशीमें दिन नहीं करना ऐसा कोई सिद्धान्तोंमें प्रमाण हैं।

उत्तर—श्रीजिनपतिसूरिजी महाराजनें अपनी ११ मी समाचारीके बिषे कहा है (तथाहि) सावणे भद्दवए वा, अहिग मासे चाउम्मासीओ॥ पन्नासइमेदिणे, पज्जोसवणा कायव्वा न असीमे इति॥ भावार्थः श्रावण और भाद्रपद मास, अधिक हो तो आषाढ़ चौमासीकी चतुर्दशीसें पचाश दिने पर्युषणा करना परन्तु अशीमें दिन न करना।

प्रश्नः—जो अधिकमास होनेसें अशीमे दिन पर्युषणा सांवत्सरिक पर्व करते हैं तिसका पक्षको किसीने कोई ग्रन्थमें दूषित भी किया है वा नहीं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्तर—श्रीजिनवल्लभसूरिजी कृत संघपट्टेकी श्रीजिनपतिसूरीजी कृत वृहद्वृत्तिमें ८० दिने पर्युषणा करने वालोंके पक्षको जिन वचन बाधाकारी कहा है सोई काव्य लिखते हैं यथा—वृद्धौ लोक दिशा नभस्य नभसोः, सत्यां श्रुतोक्तं दिनं॥ पञ्चाशं परिहृत्य ही शुचिभयात्, पश्चाच्चतुर्मासकात् ॥ तत्राशीतितमे कथं विदधते, मूढ़ामहं वार्षिकं ॥ कुग्रहाधिगणय्य जैन वचसो, बाधां मुनि व्यंसकाः ॥ १ ॥

भावार्थः—लौकिक रीतिसें श्रावण और भाद्रपद मास अधिक होता है जब शास्त्रोंमें आषाढ़ चतुर्मासीसें पचास दिने पर्युषणापर्व करनेका कहा है जिसको छोड़कर मूढ़ लोग अपना कदाग्रहसें ८० दिने क्यों करते हैं क्योंकि ८० दिने पर्युषणा करनेसें जिन वचनको बाधा आती है याने शास्त्र विरुद्ध होता है जिसको नही गिनते हैं इस लिये ८० दिने पर्युषणा करनेवाले लिङ्गधारी चैत्यवासी हठग्राही मुनिजन मध्ये ठग धूतारे हैं।

प्रश्नः—कैसे तिसका पक्ष जिन वचन बाधाकारी है।

उत्तर—श्रवण करो, प्रथम तो श्रावण और भाद्रव मासकी जैन सिद्धान्तकी अपेक्षायें वृद्धिका ही अभाव है केवल पौष और आषाढ़की वृद्धि होती थी और इस समयमें लौकिक टिप्पणाके अनुसारे हरेक मास वृद्धि होनेसें श्रावण और भाद्रपद मासकी भी वृद्धि होती है तब उनोकी वृद्धि होनेसें भी दशपञ्चके अर्थात् आषाढ़ चौमासीसें पचास दिने ही पर्युषणा करना सिद्ध होता है। सोई श्रीमान् चौदह पूर्वधारी श्रीभद्रबाहुस्वामीजी श्रीकल्पसूत्रके विषे कहते हैं। यथा—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महावीरे वासाणं सवीसइ राइमासे वइक्कन्ते वासावासं पज्जोसवेइ ।

भावार्थः—आषाढ़ चौमासीसें वीश दिन अधिक, एक मास अर्थात् ५० दिन जानेसें, श्रीमहावीर स्वामी पर्युषणा करे। इसी तरहसें वृहत् कल्पचूर्णिके विषे, दशपञ्चके पर्युषणा करना कहा है। यथा—आसाढ चउमासे पडिक्कन्ते, पंचेहिं पंचेहिं दिवसेहिं गएहिं, जत्थ २ वासजोग्गं खेत्तं पडिपुन्नं। तत्थ २ पज्जोसवेयव्वं। जाव सवीसइ राइमासो इत्यादि।

भावार्थः—आषाढ़ चैामासी प्रतिक्रमण किये बाद पांच पांच दिन व्यतीत करते जहां जहां वर्षावास योग्य स्थान प्राप्त होय। वहां वहां पर्युषणा करें, यावत् दशपञ्चक एक मास और वीश दिन तक पर्युषणा करें। और दशमा पंचकमें अर्थात् पचासमें दिन तो योग्यक्षेत्र नही मिले तो वृक्षके नीचे भी रहकर पर्युषणा करें, इसी तरह श्रीसमवायाङ्गजी सूत्र तथा वृत्तिके विषे ७०वे समवायाङ्गमें कहा हे। तथाहि। समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइ राइमासे वइक्कन्ते सत्तरिएहिं राइदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ।

भावार्थः—श्रमण भगवन् श्रीमहावीर स्वामीजी वर्षाकालके एकमास और वीश दिन गए बाद पर्युषणा करें। इसलिये पचास दिने करके ही पर्युषणा करना अवश्य है और पीछाडी ७० दिन कहे सो मास वृद्धिके अभावसें न कि मासवृद्धि होते भी। और ऐसा भी न कहना कि मासवृद्धि होनेसें अधिक मास गिनतीमें न आता है क्योंकि वृहत् कल्पभाष्य तथा चूर्णिके विषे, अधिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासकी गिनती प्रमाण किवी है। और ऐसा भी न कहना कि ज्योतिषादिक ग्रन्थोंमें प्रतिष्ठादिक शुभकार्य्य निषेध किया है तो पर्युषणा पर्व कैसें हुवें सो तो नारचन्द्रादिक ज्योतिष ग्रन्थोंमें, लग्न, दीक्षा, स्थापना, प्रतिष्ठादिकार्य्य कितनेही कारणोंसें निषेध किये हैं नारचन्द्र द्वितीय प्रकरणे यथा ॥ रविक्षेत्र गतेजीवे, जीवक्षेत्र गते रवौ। दिक्षां स्थापनांचापि, प्रतिष्ठां च न कारयेत् ॥१॥ इसवास्ते अधिक मासमें पर्युषणा करनेका निषेध किसी जगह भी देखनेमें नही आता है। इसी कारण सें पूर्वोक्त प्रमाणोंसें श्रावण मासकी वृद्धि होनेसें दूसरे श्रावण शुदी ४ कों और भाद्रव मासकी वृद्धि होनेसें पहिले भाद्रव शुदी ४ चौथकों पर्युषणापर्व ५० पचास दिने करना सिद्ध होता है परन्तु अशीमें दिने नहीं। एस्थल अति गम्भीरार्थका है मैंने तो पूर्वगीतार्थ प्रतिपादित सिद्धान्ताक्षरों करके और युक्ति करके लिखा है इस उपरान्त विशेष तत्त्व केवली महाराज जानें, जो ज्ञानी भाव देखा है, सो सच्चा है और सर्व असत्य है। मेरे इसमें कोई तरहका हठवाद नहीं, इति श्रावण और भाद्रपद वढ़ते पचास दिने पर्युषणा करणाधिकारः ॥——

अब पाठकवर्ग उपरका लेख शुद्धसमाचारी प्रकाशनामा ग्रन्थका पढके विचार करोकी लेखकपुरुषनें कैसी सरलरीतिसें लिखा है और अन्तमें किसी गच्छवालेकों दूषित न ठहराते, (विशेष तत्त्व केवली महाराज जानें जो ज्ञानी भाव देखा है सो सच्चा है और सर्व असत्य है मेरे इसमें कोई तरहका हठवाद नही है) ऐसा लिखनेसें लेखक पुरुष पं० प्र० यतिजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीरामचन्द्रजी न्याययुक्त निष्पक्षपाती भवभिरू थे सो तो पाठकवर्ग भी विशेष विचार शकते हैं और उपरके लेखमें श्रीसङ्घपट्टक वृहत् वृत्तिका जो श्लोक लिखा हैं सो श्रीतपगच्छवालोंके लिये वृत्तिकार महाराजनें नहीं लिखा था, तथापि श्रीतपगच्छवालोंके लिये उपरोक्त श्लोक समझते है उन्होंके समझ में फेर है क्योंकि श्रीसङ्घपट्टक की वृहद्वृत्ति सम्वत् १२५० के लगभग बनी थी उसी वख्त तपगच्छही नहीं हुवा था क्योंकि श्रीचैत्रवालगच्छके श्रीजगच्चन्द्रसूरिजी महाराजसें सम्वत् १२८५ वर्षे तपगच्छ हुवा है और श्रीतपगच्छके पूर्वाचार्य जितने हुवे है सो सबीही अधिक मासको गिनतीमें मान्य करनेवाले तथा ५० दिने पर्युषणा करनेवाले थे इसलिये उपरका श्लोक श्रीतपगच्छवालोंके लिये नहीं हैं किन्तु उस समयमें कदाग्रहीशिथिलाचारी उत्सूत्रभाषक चैत्यवाशी बहुत थे वे लोग शास्त्रोंके प्रमाण बिनाभी ८० दिने पर्युषणा करते थे और भी श्रीचन्द्रपन्नति श्रीसूर्यपन्नति श्री जम्बूद्वीपपन्नति श्रीसमवायाङ्गजी वगैरह अनेक सूत्रवृत्ति चूर्ण्यादि शास्त्रानुसार और अन्यमतके भी ज्योतिष मुजब वे चैत्यवाशीजन प्रायःकरके ज्योतिषशास्त्रोंके विशेष जानकार थे, इसलिये अधिक मासकी उत्पत्तिका कारण कार्यादिकको जानते हुये अधिक मासको अङ्गीकार करनेवाले थे तथापि मिथ्यात्वरूप अज्ञानदशाके हठवादसें लौकिकपञ्चाङ्ग में दो श्रावण होतेभी भाद्रपदमें पर्युषणा चैत्यवाशी लोग करते थे जिससें ८० दिन होते थे उन्होंके लिये उपरका श्लोक लिखा गया है नतु कि श्रीतपगच्छवालोंके लिये ।

अब उपरोक्त शुद्ध समाचारीप्रकाशका लेखपर जो न्यायां-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भोनिधिजीने जैनसिद्धान्त समाचारीमें उसीका खण्डन कराया है उसीको लिखके दिखाकर उसीके साथसाथमें मेंभी समीक्षा न्यायांभोनिधिजीके नामसें करता हुं जिसका कारण पृष्ठ ६६।६७।६८ में इसी ही पुस्तक में छपा हैं इसलिये न्यायांभोनिधिजीके नामसें ही समीक्षा करना मूजे उचित है सो करता हुं—जैनसिद्धांत समाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ ८७ की पंक्ति२१ वीसें पृष्ठ ८८ की पंक्ति१० वी तक का लेख नीचे मुजब जानो—शुद्धसमाचारीके पृष्ठ १५४ पंक्ति१४ में लिखा हैं कि [श्रावण मास वढ़ेतो दूसरे श्रावणशुदी में और भाद्रव मास वढ़े तो प्रथम भाद्रव शुदीमें अषाढ चौमासी सें ५० में दिन ही पर्युषणा करनी परन्तु ८० अशीमें दिन नही करनी, ऐसा लिखके पृष्ठ १५५में अपनेही गच्छके श्रीजिनपति सूरिजी की रचित समाचारीका प्रमाण दिया है आगे इसी पृष्ठके पंक्ति११ में लिखा है कि तिसका पक्षको कोई ने कोई ग्रन्थमें दूषित भी किया है वा नहीं, इसके उत्तरमें श्रीजिनवल्लभ सूरिजीके सङ्घपट्टेकी बडी टीकाकी शाक्षी दिवी हैं—(इस तरहका लेख शुद्ध समाचारी प्रकाशकी पुस्तक सम्बन्धी लिखके न्यायाम्भोनिधिजी अब उपरके लेखका लिखते हैं) उत्तर—हे मित्र ! इस लेखसें आपकी सिद्धि कभी न होगी क्योंकि तुमने अपने गच्छका मन्तव्य दिखाके अपनेही गच्छका प्रमाण पाठ दिखाया हैं यह तो ऐसा हुवा कि किसी लड़केने कहा कि मेरी माता सति है शाक्षी कौन कि मेरा भाई इस वास्ते यह आपका लेख प्रमाणिक नही हो सकता है ।]

अब हम उपरके लेखकी समीक्षा करते हैं कि हे सज्जन पुरुषों जैसे शुद्ध समाचारी कारनें अपना कार्य्यसिद्ध करनेके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिये अपने ही गच्छके पूर्वाचार्य्यजी श्रीजिनपति सूरिजी कृत ग्रन्थका पाठ दिखाया है उसको श्रीन्यायाम्भोनिधिजी अप्रमाण ठहराते हैं इस न्यायानुसार तो श्रीन्यायाम्भो निधिजीनें अपना कार्यसिद्ध करनेके लिये अपनेही गच्छके पूर्वाचार्य्योंके पाठ दिये हैं वह सर्व पाठ अप्रमाण ठहरनेसें श्रीन्यायाम्भोनिधिजीको अपने पूर्वाचार्य्योंका पाठ लिख दिखाना भी सर्व वृथा होगया तो फिर जैनसिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ ३१ वा में श्रीधर्मघोष सूरिजी कृत श्रीसङ्घाचार भाष्यवृत्तिका पाठ, पृष्ठ ३३ में श्रीदेवेन्द्रसूरिजी कृत श्रीधर्मरत्नप्रकरण वृत्तिका पाठ, पृष्ठ ३३। ४६। ५२। ५९। ६३, में श्रीरत्नशेखरसूरिजीकृत श्रीश्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र वृत्तिका पाठ, पृष्ठ ३५ में श्रीजयचन्द्रसूरिजी कृत श्रीप्रतिक्रमण-गर्भहेतु नामा ग्रन्थका पाठ, पृष्ठ ४१ में श्रीविजयसेन सूरिजीका प्रश्नोत्तर ग्रन्थका पाठ, और पृष्ठ ५१। ६१ में श्री कुलमण्डन सूरिजी कृत विचारामृतसंग्रहका पाठ, इत्यादि अनेक जगह ठाम ठाम अपनेही गच्छके पूर्वाचार्य्योंका प्रमाण श्रीन्यायाम्भोनिधिजीनें लिखके वृथा क्यों अन्याय किया होगा सो पाठकवर्ग भी विचार लेना॥

अब दूसरा सुनो—श्रीन्यायाम्भोनिधिजी जैनसिद्धान्त समा-चारीकी पुस्तकके पृष्ठ १२ में श्रीखरतरगच्छके श्रीउपाध्यायजी श्रीक्षमाकल्याणजी गणिजी कृत श्रीगणधरसार्द्धशतक प्रश्नोत्तर ग्रन्थका पाठ, पृष्ठ ३५। ३६ में श्रीखरतरगच्छके श्रीअभयदेव सूरिजीकृत श्रीभगवतीजी वृत्तिका और समाचारी ग्रन्थका पाठ, पृष्ठ ७२। ८१में श्रीखरतरगच्छके श्रीजिनदत्त सूरिजीका पाठ, पृष्ठ ७२ में श्रीखास श्रीजिनपति सूरिजीके शिष्य श्री

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुमतिगणिजीका पाठ, पृष्ठ ८१ में श्रीउपाध्यायजी श्रीजय सागरजीका पाठ, पृष्ठ ८२। ८६। ९१में श्रीजिनप्रभ सूरिजीका पाठ, और पृष्ठ ८४ में श्रीजिनवल्लभ सूरिजीका पाठ इसी तरहसें शुद्ध समाचारी कारके पूर्वाचार्य्य श्रीखरतरगच्छके प्रभाविक पुरुषोंका पाठ श्रीन्यायाम्भोनिधिजी अपना कार्य्य सिद्ध करनेके लिये तो खास मान्य करके दिखाते हैं और शुद्ध समाचारी कारनें अपना कार्य्यसिद्ध करनेके लिये अपनेही पूर्वजोंका (शास्त्रानुसार युक्ति सहित न्यायपूर्वक सत्य) पाठ लिख दिखाये उसीको श्रीन्यायाम्भोनिधिजी अप्रमाणिक ठहराते हैं यह तो प्रत्यक्ष वड़े अन्यायका रस्ता श्रीन्यायाम्भोनिधिजीनें ग्रहण किया है सो विशेष पाठकवर्ग स्वयं विचार लेना।

अब तीसरा और भी सुनो श्रीआत्मारामजीनें खास (चतुर्थ स्तुतिनिर्णयः) नामा ग्रन्थ तीन स्तुति वालोंका खण्डन करनेके लिये बनाया है सो छपा हुवा प्रसिद्ध है उसीके पृष्ठ ८३।८४।८५ में श्रीखरतरगच्छके श्रीजिनप्रभसूरीजी कृत श्रीविधिप्रपाग्रन्थका पाठ और उसीकी भाषा पृष्ठ ८५।८६ ८७।८८ के आदि तक लिखके पुनः पृष्ठ ८८ के मध्यमें लिखते हैं कि—(इस विधिमें पडिक्कमणेकी आदिमें चारथुइसें चैत्यवंदना करनी कही है और श्रुत देवता अरु क्षेत्र देवता का कायोत्सर्ग अरु इन दोनोंकी थुइ करनी कही है—इस लेखको सम्यक्त्वधारी मानते हैं और मानतेथे फेर मानेंगे भी परन्तु मिथ्या दृष्टि तो कभी नही मानेगा इस वास्ते सम्यक् दृष्टि जीवको तीन थुइका कदाग्रह अवश्य छोड़ देना योग्य है) इस तरहसें श्रीआत्मारामजी श्रीखरतरगच्छके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीजिनप्रभ सूरिजीके लेखको न मानने वालेको मिथ्या दृष्टि ठहराते हैं तो इस जगह पाठकवर्ग विचार करो कि श्रीजिनप्रभसूरिजीके ही खास परमपूज्य और पूर्वाचार्य्य श्रीजिनपति सूरिजीके सत्य लेखको न मानने वाले तो स्वयं मिथ्या दृष्टि सिद्ध होगये फिर श्रीआत्मारामजी न्यायांभो-निधिजी न्यायके समुद्र ही करके अपने स्वहस्थे जिन्हींके सन्तानिये श्रीजिनप्रभसूरिजीके लेखको न मानने वालोंको मिथ्या दृष्टि लिखते है और श्रीजिनप्रभसूरिजीके ही पूर्वा-चार्य्यजी श्रीजिनपति सूरिजीके सत्य लेखको अप्रमाण मान्यके खास आपही मिथ्या दृष्टि बनते है। हा अतिखेद ! इस बातको पाठकवर्ग निष्पक्षपातसें सत्य बातके ग्राही होकर अच्छी तरहसें विचार लेना ;—

अब चौथा और भी सुनो श्रीआत्मारामजी इन्ही चतुर्थस्तुतिनिर्णयः पुस्तकके पृष्ठ १०१। १०२। १०३ में श्री वृहत्खरतरगच्छके श्रीजिनपतिसूरिजी कृत समाचारीका पाठ लिखके उसीको श्रीजिनप्रभसूरिजी कृत पाठकी तरह प्रमाणिक मानते हैं और श्रीजिनपतिसूरिजी कृत पाठकी श्रीजिनप्रभसूरिजी कृत पाठके साथ भलामण देते है जिसमें श्रीजिनपतिसूरिजीका पाठको भी न मानने वालोंकी मिथ्या दृष्टि सिद्ध करते है। और फिर आपही श्रीजिनपतिसूरिजीकृत सत्य पाठको जैनसिद्धान्त समाचारीमें अप्रमाण ठहराकर नही मानते है जिससें (उपरोक्त न्यायानु-सार करके) मिथ्या दृष्टि बननेका कुछ भी भय न करते कितने अन्यायके रस्ते चलते है सो भी आत्मार्थी सज्जन पुरुष विचार लेना ;—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब वांचना और भी सुन लिजिये श्रीआत्मारामजीने तत्त्वनिर्णय प्रासादग्रन्थ बनाया है सो छपा हुवा प्रसिद्ध हैं जिसके पृष्ठ १४५ में लिखा है कि—

[अब पक्षपात न होनेंमें हेतु कहते है—

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्य कार्य्यः परिग्रहः ॥ ३८ ॥

व्याख्या—मेरा कुछ श्रीमहावीरजीके विषे पक्षपात नही है कि जो कुछ महावीरजीने कहा है सोइ मैंने मानना है अन्यका कहा नही ; और कपिलादि मताधिपोंसें द्वेष नही है कि कपिलादिकोंका नही मानना किन्तु जिसका वचन शास्त्र युक्तिमत् अर्थात् युक्तिसें विरुद्ध नही है तिसका वचन ग्रहण करनेका मेरा निश्चय है ॥ ३८ ॥]

और इन्ही तत्त्वनिर्णय प्रासादकी उपोद्घात श्रीवल्लभ विजयजीनें बनाई है जिसके पृष्ठ ३१ वे में लिखा है कि (पक्षपात करना यह बुद्धिका फल नही है परन्तु तत्त्वका विचार करना यह बुद्धिका फल है "बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं चेति वचनात्" और तत्त्व विचार करके भी पक्षपातको छोड़ कर जो यथार्थ तत्त्वका भान होवे उसको अङ्गीकार करना चाहिये किन्तु पक्षपात करके अतत्त्वकाही आग्रह नही करना चाहिये यतः—आगमेन च युक्त्या च, योऽर्थः समभिगम्यते । परित्य हेमवद्ग्राह्यः, पक्षपाताग्रहेण किम्—

भावार्थः आगम (शास्त्र) और युक्तिके द्वारा जो अर्थ प्राप्त होवे उसको सोनेके समान परीक्षा करके ग्रहण करना चाहिये पक्षपातके आग्रह (हठ)से क्या है)—

अब पाठकवर्ग श्रीआत्मारामजीके और श्रीवल्लभ-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विजयजीके उपरोक्त लेखसें पक्षपात रहित विचारो कि-जिस पुरुषका वचन शास्त्र और युक्ति सहित होवे उसको सोनेके समान जानके सज्जन पुरुषोंको ग्रहण करना ही उचित है, और शास्त्र तथा युक्ति रहित वचनको हठवादसें ग्रहण करना सो निर्बुद्धि पुरुषोंका लक्षण है ऐसा दोनोंका कहना है तो इस पर मेरेको बड़ेही खेदके साथ लिखना पड़ता है कि श्रीआत्मारामजी न्यायांभोनिधि नाम धारण करते न्याय और बुद्धिके समुद्र होते भी श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञामुजब शास्त्रानुसार युक्ति करके सहित और सत्यवचन शुद्ध समाचारी कारनें श्रीजिनपतिसूरिजी महाराजका लिखा था सो ग्रहण करने योग्य था तथापि उनको गच्छके पक्षपातसें वृथा क्यों निषेध किया होगा क्योंकि श्रीजिनपतिसूरिजीका (श्रावण और भाद्रव मास अधिक होवे तो भी पचासदिने पर्युषणा करना परन्तु ८० में दिन नही करना इतने पर भी ८० दिने पर्युषणा करते है सो शास्त्र-विरुद्ध है) यह वाक्य श्रीशुद्धसमाचारी ग्रन्थका और श्रीसंघ-पट्टक बृहद्वृत्तिका लिखा है सो शास्त्रानुसार सत्य है इसी ही बातका खुलासा इन्ही पुस्तकमें अनेक जगह ठामठाम शास्त्रोंके प्रमाण सहित युक्तिपूर्वक विस्तारसें छप गया है इसलिये उपरकी बातका निषेध करनाही नही बनता है शुद्ध समाचारीकारनें श्रीजिनपतिसूरिजी महाराज कृत ग्रन्थानु-सार ५० दिने पर्युषणा ठहराई और ८० दिन करने वालोंको जिनाज्ञाके बाधक कहे है इसको श्रीआत्मारामजीनें अप्रमाण ठहराया तब इसका तात्पर्य्य यह निकला कि ५० दिने पर्यु-षणा करनेवालोंकों दूषित ठहराये और ८० दिने पर्युषणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करनेवालोंकों निर्दूषण ठहराये (हा अति खेदः) इससें विशेष अन्याय दूसरा श्रीन्यायाम्भोनिधिजीका कौनसा होगा, कि– सूत्र, वृत्ति, भाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, प्रकरणादि अनेक शास्त्रों में श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्य और श्रीखर-तरगच्छके तथा श्रीतपगच्छकेही पूर्वाचार्य्य सबी उत्तम पुरुष ठामठाम कहते हैं कि पर्युषणा पचास दिने करना कल्पे परन्तु पचासमें दिनकी रात्रिको भी उल्लङ्घन करके एकावनमें दिनकी करना न कल्पे इसलिये योग्यक्षेत्र न मिले तो जङ्गलमें वृक्षनीचे भी पर्युषणा करलेना इतने पर भी कोई पचास दिनकी रात्रिको उल्लङ्घन करके एकावनमें दिन पर्युषणा करे तो श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञाका लोपी होवें यह बात तो प्रायः जैनमें प्रसिद्ध भी है सो भी मासवृद्धिके अभावकी जैनपञ्चाङ्ग की रीतिसें वर्त्तनेकी थी परन्तु अब लौकिक पञ्चाङ्ग मुजब मासवृद्धि हो अथवा न हो तो भी पचास दिने पर्युषणा करनी सोभी जिनाज्ञा मुजब है इसीही कारणसें श्रीजिन-पतिसूरिजीनें मासवृद्धि हो तोभी पचास दिने पर्युषणा कर लेनेका लिखा है सो सत्य है। और एकावन दिने भी पर्युषणा करने वाला जिनाज्ञाका लोपी होता है तो फिर ८० दिने पर्युषणा करने वाले क्या जिनाज्ञाके आराधक बन सकते हैं सो तो कदापि नही अर्थात् ८० दिने पर्युषणा करने वाले सर्वथा निश्चय करके श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजों की आज्ञाके लोपी है इसलिये ८०दिने पर्युषणा करने वालों को श्रीजिनपतिसूरिजीनें जिनाज्ञाके विराधक ठहराए सो भी सत्य है इसलिये श्रीजिनपतिसूरीजी महाराजका दोनु वाक्य निषेध नही हो सकते हैं इतने परभी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीन्यायांभोनिधिजी निषेध करते हैं सो निःकेवल शास्त्र विरुद्ध उत्सूत्र भाषण करके भोले जीवोंको कदाग्रहका रस्ता दिखाया हैं ।

आगे छठा और भी सुनिये शुद्धसमाचारी कारके सत्य वाक्यको निषेध करनेके लिये अपना पक्षपातके जोरसें श्रीआत्मारामजीनें (तुमने अपने गच्छका मनन दिखाके अपनेही गच्छका प्रमाण पाठ दिखाया है यह तो ऐसा हुवा कि किसी लड़केनें कहा कि मेरी माता सती है साक्षी कौन कि मेरा भाई इसवास्ते यह आपका लेख प्रमाणिक नही हो सकता है) यह वाक्य लिखे हैं इसकी पांच तरहसें तो समीक्षा उपरमें होगई है और भी छठी तरहसें अब सुनाता हुं, कि–उपरोक्त लेखमें श्रीआत्मारामजीनें शुद्ध समाचारी-कारका उपहास करनेके लिये विद्वत्ताके अभिमानसें एक लड़केका दृष्टान्त दिखाया है परन्तु शुद्ध समाचारी कारके पूर्वाचार्य्य श्रीजिनपतिसूरिजीनें श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार शास्त्रोंकी मर्य्यादा पूर्वक सत्य वाक्य लिखा हैं इसलिये लड़केका दृष्टान्त शुद्ध समाचारी कारके उपर किञ्चिन्मात्र भी नही घट सकता है तथापि श्रीआत्मारामजीनें लिखा है सो निःकेवल वर्त्तमानिक गच्छके पक्षपातसें श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी अवज्ञा कारक है, और जैसे ग्रीष्म ऋतुमें मध्याह्नका समयके सूर्य्यको किसीने पत्थर फेंका तो भी सूर्य्य पर न गिरते पीछा लोट कर फेंकने वालेके शिर परही आनके गिर सकता है तैसेही श्रीआत्मारामजीका न्याय हुवा अर्थात् श्रीआत्मारामजीनें लड़केका दृष्टान्त शुद्ध समाचारीकार पर दिया था परन्तु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शुद्धसमाचारी कारके वचन जिनाज्ञा मुजब सत्य होनेसें न गिर सका परन्तु वह लड़केका दृष्टान्त पीछाही फिरके श्री आत्मारामजी तथा उन्होंके परिवार वालोंके उपरही आकर गिरता है क्योंकि खास श्रीआत्मारामजीनेंही जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकमें अपनाही कार्य्यसिद्ध करनेके लिये अपनाही मनन दिखाकर और अपनेही गच्छके अर्वाचीन (थोड़े कालके) पाठ दिखाये हैं सो भी श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञाके विरुद्ध उत्सूत्र भाषण रूप हैं और खास श्री-तपगच्छकेही पूर्वाचार्य्योंके विरुद्धार्थमें ग्रन्थकार महाराजका अभिप्रायःके विरुद्ध होकरके आगे पीछेका सम्बन्धको छोड़ कर अधूरे अधूरे पाठ लिखके फिर अर्थ भी उलटे उलटे किये है (इसका नमुना मात्र खुलासा संक्षिप्तसें आगे करनेमें आवेगा) इसलिये उपरोक्त लड़केका दृष्टान्त श्री आत्मारामजी तथा उन्होंके परिवार वालोंके उपर अवश्य ही बरोबर घटता है इसवास्ते श्रीआत्मारामजीनें शास्त्र-कारोंके विरुद्धार्थमें जो जो बाते लिखी है सो तो सर्वही आत्मार्थियोंको त्यागने योग्य होनेसें प्रमाणिक नही हो सकती है ;—और सातमी तरहसें आगे (श्रीवल्लभविजय जीके नामसें समीक्षा होगा उसमें विस्तारसें लिखनेमें आवेगा) वहांसे समझ लेना ;—अब आगेकी भी समीक्षा करते हैं जैन सिद्धान्त समाचारीके पृष्ठ ८८ पंक्ति११ वी सें पृष्ठ ८९ की पंक्ति १९ वी तकका लेख नीचे मुजब जानो—

[और पृष्ठ १५६–१५७ में लिखा है, कि–"श्रावण और भाद्रव मासकी जैन सिद्धान्तकी अपेक्षायें वृद्धिकाही अभाव है। केवल पौष आषाढ़की वृद्धि होती थी, और इस समय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

में लौकिक टिप्पणाके अनुसारे हरेक मासोंकी वृद्धि होनेसें श्रावण और भाद्रवकी भी वृद्धि होती है ॥ तिसमें उनोकी वृद्धि होनेसें भी दशपञ्चक व्यवस्थाके विषे, आषाढ़ चौमासी सें पचाश दिनेही पर्युषणा करना सिद्ध होता है" ॥ आगे इसीकी सिद्धिके वास्ते कल्प सूत्रका और विशेष कल्प भाष्य चूर्णिका पाठ दिखाया है, कि–"जाव सवीसइ राइमासो" इत्यादि (इतना लेख शुद्धसमाचारी प्रकाशकी पुस्तक सम्बन्धी अधूरा लिखके इसका न्यायाम्भोनिधिजी लिखते हैं उत्तर) हे मित्र ! मासवृद्धिका जो जैन टिप्पणादिकका विशेष दिखाया है, यह तो अज्ञजनोंको केवल भरमानेके वास्ते है क्योंकि यद्यपि जैन टिप्पणाके अनुसार श्रावण और भाद्रव मासकी वृद्धिका अभाव है तो भी पौष और आषाढ़मास की तो वृद्धि होती थी, अब हम आपको पूछते है कि–जैन टिप्पणाके अनुसारे जब पौष अथवा आषाढ़मासकी वृद्धि हुई तब संवछरीको अप्भुट्ठिओ सूत्रके पाठमें क्या 'तेराणं मासाणं छवीसपखाणं' वैसा पाठ कहोगें ? क्योंकि तिस वर्षमें तेरह मासतो अवश्य होजायगें। और जैनसिद्धान्तो में तो किसी भी स्थानमें वैसा नही लिखा है कि अधिक मास होवे तब तेरहमास और छवीस पक्ख संवछरीकों कहना। तो अब आपका प्रयास क्या काम आया परन्तु यह तो निःशङ्कित मालुम होता है कि–जैनटिप्पणाके अनुसारसें भी अधिक मासकों कालचूलामें ही गिनना पड़ेगा। पूर्वपक्ष–कालचूला क्या होती है ? उत्तर हे परीक्षक ! आगे दिखावेंगे और दशपञ्चक व्यवस्था लिखते हो। सो तो कल्पव्यवच्छेद हुवा है, यह सर्वजन प्रसिद्ध है। और लौकिक टिप्पणाके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अनुसारसें हरेक वर्षमें आषाढ़ शुदि चतुर्दशीसें लेके भाद्रव शुदि ४ और तुमारे कहनेसें दूसरे श्रावण शुदि ४ तक ५० दिन पूर्ण करने चाहोगें तो भी नही हो सकेगें। क्योंकि तिथियां वध घट होती है तो किसी वर्षमें ४९ दिन आजायगें और किसी वर्षमें ४८ दिन भी आजायगे तब क्या आपकों जिन आज्ञा भङ्गका दूषण नही होगा ?]

अब उपरके न्यायांभोनिधिजीके लेखकी समीक्षा करके आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंसें दिखता हुं, कि—हे भव्यजीवों न्यायांभोनिधिजीके उपरका लेखकोमें देखता हुं तो मेरेको बड़ाही खेदके साथ बहुत आश्चर्य्य उत्पन्न होता है क्योंकि श्रीन्यायाम्भोनिधिजीने तो शुद्धसमाचारी कारके वचनको खण्डन करना विचारके उपरका लेख लिखा था परन्तु शुद्ध समाचारी कारके सत्यवचन होनेसें खण्डन न हो सके, परन्तु न्यायाम्भोनिधिजी के लिखे वाक्यसें अवश्यही श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी और अपने ही गच्छके पूर्वाचार्य्योंकी अवज्ञा (आशातना) का कारण होनेसें न्यायाम्भोनिधिजी को लिखना सर्वथा उचित नही था क्योंकि देखो शुद्धसमाचारी की पुस्तक के पृष्ठ १५६ के अन्तमें और पृष्ठ १५७ के आदिमें ऐसा लिखा था कि (श्रावण और भाद्रपदमास की जैन सिद्धान्त की अपेक्षायें वृद्धिका ही अभाव है केवल पैाष और आषाढ़मासकी ही वृद्धि होती थी और इस समयमें तो लौकिक टीप्पणाके अनुसार हरेक मासोंकी वृद्धि होनेसें श्रावण और भाद्रपद की वृद्धि होती है) इस शुद्ध समाचारी का लेखको खण्डन करने के लिये न्यायाम्भोनिधिजी लिखते हैं कि—(हे मित्र मासवृद्धिका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो जैन टिप्पणादिकका विशेष दिखाया है यह तो अज्ञ जनकों केवल भ्रमाने के वास्ते है) अब हे पाठकवर्ग सज्जन पुरुषों उपरके न्यायाम्भोनिधिजी के वाक्यको पढ़के अच्छी तरहसें विचार करो कि श्रीतीर्थङ्कर गणधर केवली भगवान् और पूर्वधरादि महान् धुरन्धर प्रभाविक पूर्वाचार्य्य तथा खास न्यायाम्भोनिधिजीके ही पूज्य पूर्वाचार्य्य सबी महाराज जैनसिद्धान्त (शास्त्रों) की अपेक्षायें जैनपञ्चाङ्गमें युगके मध्यमें पौष और अन्तमें आषाढ़ मासकी मर्य्यादा पूर्व वृद्धि होती है ऐसा कहते हैं सो अनेक शास्त्रोंमें प्रसिद्ध है जिसमें अनुमान पचाश शास्त्रोंके पाठों की तो मुझे भी मालुम है कि जैन शास्त्रोंमें पौष और आषाढ़ की वृद्धि श्रीतीर्थङ्करादिकोने कही है इसी ही अनुसार शुद्धसमाचारी कारनें भी पौष और आषाढ़ की जैन सिद्धान्तों की अपेक्षायें वृद्धि लिखी हैं जिसको न्यायाम्भोनिधिजी अज्ञ जनोंको भ्रमानेका ठहराते है सो यह तो ऐसा न्याय हुवा कि—

जैसे श्रीअनन्ततीर्थङ्करादि महाराज अनादिकाल हुवा उपदेश करते आये है कि । हे भव्यजीवों तुम्हारी आत्माको सुख चाहो तो द्रव्य भावसें जीवदया पालो इस वाक्यानुसार वर्त्तमानमें भी उपगारी पुरुष उपदेश करते है जिस उपदेशकों कोई भी जैनाभास द्वेषबुद्धिवाला अज्ञजनोंको केवल भ्रमानेका ठहरावें तो उस पुरुषनें श्रीअनन्त तीर्थङ्करादि महाराजोंकी आशातना करके अनन्त संसार वृद्धिका कारण किया यह बात सर्वसज्जन पुरुष जैनशास्त्रोंके जानकार मंजूर करते है तैसे ही श्रीअनन्त तीर्थङ्करादि महाराज अनादि काल हुवा जैन सिद्धान्तोंकी अपेक्षाये पौष

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और आषाढ़ की वृद्धि कहते है सोही बात शुद्धसमाचारी कारनें भी जैन सिद्धान्तोंकी अपेक्षायें लिखी है सो सत्य है इसलिये निषेध नही हो सकती है। तथापि न्यायाम्भोनिधिजी उपरकी सत्य बातकों अज्ञ जनोंको केवल भ्रमानेका ठहराते हैं हा! हा! अतिव खेदः। उपरोक्त न्यायानुसार न्यायांभोनिधिजीनें श्रीअनन्त तीर्थङ्करादि-महाराजोंकी और अपने ही पूर्वजोंकी आशातना कारक अनन्त संसार वृद्धिका कारणरूप वृथा क्योंकिया होगा इसको विशेष पाठकवर्ग स्वयं विचार लेना;—

तथा थोड़ासा और भी सुन लिजीये—शुद्ध समाचारी कारनें जैन सिद्धान्तों की अपेक्षायें पौष और आषाढ़ मास की वृद्धि दिखाई और लौकिक टिप्पणा की अपेक्षायें हरेक मासोंकी वृद्धि दिखाई सो सत्य है तथापि न्यायाम्भोनिधिजी (अज्ञजनोंको केवल भ्रमानेका) ठहराते है तो इस लेखसें तो न्यायाम्भोनिधिजीनें खास अपने ही पूज्य गुरुजन पूर्वाचार्य्योंको भी अज्ञजनोंको भ्रमाने वाले ठहरा दिये क्योंकि जैसे उपरोक्त शुद्ध समाचारी कारनें अधिकमास सम्बन्धी लिखा है तैसे ही श्रीतपगच्छके पूर्वाचार्य्योंने भी लिखा है। जब शुद्ध समाचारी कारके लेखको न्यायाम्भोनिधिजी अज्ञजनोंको भ्रमानेका ठहराते है तब तो न्यायाम्भोनिधिजीके पूर्वाचार्य्योंका लेख भी अज्ञजनोंको भ्रमानेवाला ठहर गया जब न्यायाम्भोनिधिजीने अपनें पूर्वाचार्य्योंकी आशातनाका कुछ भी भय न रक्खा तो फिर न्यायाम्भोनिधिजीको न्याययुक्त आत्मार्थी कैसें मान सकते है अपितु नही इस बातको भी पाठकवर्ग विचार लो,—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और आगे लिखा है कि (यद्यपि जैन टिप्पणाके अनुसार श्रावण और भाद्व मासकी वृद्धिका अभाव है तो भी पौष और आषाढ़मास की तो वृद्धि होती थी अब हम आपको पूछते है कि जैन टिप्पणाके अनुसारे जब पौष अथवा आषाढ़मासकी वृद्धि हुई तब संवच्छरीको अब्भुठिओ सूत्रके पाठमें तेराणं मासाणं छवीसं पखाणं वैसा पाठ कहोगें क्योंकि तिस वर्षमें तेरह मास तो अवश्य हो जायगें और जैन सिद्धान्तोंमें तो किसी भी स्थानमें वैसा नही लिखा है कि अधिक मास होवे तब तेरह मास और छवीश पक्ष संवच्छरीको कहना तो अब आपका प्रयास क्या काम आया) इस लेखको देखता हुं तो न्यायाम्भोनिधिजीके बुद्धिकी चातुराईका वर्णन में नही कर सकता हुं क्योंकि जब शुद्ध समाचारी कारनें जैन सिद्धान्तोंकी अपेक्षायें पौष और आषाढ़मासकी वृद्धि लिखी जिसको तो न्यायांभोनिधिजी (अज्ञ जनोंको केवल भ्रमानेका) ठहराते हैं और फिर आप भी शुद्ध समाचारीके मुजब उसी तरहसें पौष और आषाढ़मासकी वृद्धि इस जगह मंजूर करते हैं यह न्यायांभोनिधिजीके अपूर्व विद्वत्ताका नमुना है क्योंकि दूसरेकी बातका खण्डन करना और उसी बातको आप मंजूर भी करलेना ऐसा अन्याय करना आत्मार्थियोंको उचित नही हैं और खामणाके सम्बन्धमें लिखा है सो भी जैनशास्त्रोंके तात्पर्य्यको समझे बिना प्रत्यक्ष मिथ्या लिखके भोले जीवोंको संशयमें गेरे हैं क्योंकि जब जिस संवत्सर में अवश्य करके तेरह मास और छवीश पक्ष होगये तथा धर्मकर्म और संसारिक सावद्य कार्य्य तेरह मासके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

किये जाते हैं जिनसें पुण्य और पाप तेरह मासके लगते हैं तो फिर बारह मासकी आलोचना करके एक मासके पुण्यकार्य्योंकी अनुमोदना और पापकार्य्योंकी आलोचना नही करना यह तो प्रत्यक्ष अन्याय अल्पबुद्धिवाला भी कोई मंजूर नही कर सकता है और जिन्होंके ज्ञानमें एक समय मात्र भी धर्म अथवा कर्म बंधके सिवाय वृथा नही जाता है ऐसे श्रीसर्वज्ञ भगवान्‌के शास्त्रोंमें एक मासके धर्म और कर्मका न गिनना यह तो कभी नही हो सकता है इस लिये अधिक मास होनेसें अवश्य करके तेरह मास और छवीश पक्षादिकी आलोचना साम्वत्सरिमें करनी जैन शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक है इसका विशेष विस्तार सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी आगे समीक्षा होगा उसमें शास्त्रोंके प्रमाण सहित अच्छीतरहसें करनेमें आवेगा सो पढ़के विशेष निर्णय कर लेना और आगे लिखा है कि–अधिकमास होनेसें तेरह मास छवीश पक्षके क्षामणे किसी भी स्थानमें नही लिखा हैं यह वाक्य भी मिथ्या है क्योंकि अनेक जगह अधिकमास होनेसें तेरह मास छवीश पक्षके क्षामणे लिखे हैं जिसका भी वहांही आगे निर्णय होगा ॥—

और (आपका प्रयास क्या काम आया) इस लेखपर तो मेरेकों इतना ही कहना उचित है कि शुद्धसमाचारी कारनें तो सिर्फ अधिकमासको गिनतीमें सिद्ध करके पचास दिने पर्युषणा दिखानेका प्रयास किया था सो शास्त्रानुसार न्याययुक्ति सहित होनेसें उन्हका प्रयास सफल हैं परन्तु न्यायाम्भोनिधिजी हो करके अन्यायसें और शास्त्रोंके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विरुद्ध ही करके अधिकमासकी गिनती निषेध करनेका प्रयास करते है सो बड़ी ही शर्मकी बात है और कालचूलासम्बन्धी न्यायाम्भोनिधिजीनें आगे लिखा हैं उसकी समीक्षा में भी आगे करूंगा—

और (दशपञ्चक व्यवस्था लिखते हो सो तो कल्पव्यवच्छेद हुवा है यह सर्वजन प्रसिद्ध है) इन अक्षरों कोभी में देखता हुं तो न्यायांभोनिधिजीका अन्याय देखकर मूझे बड़ाही आफसोस आता है क्योंकि शुद्ध समाचारी कारनें जिस अभिप्रायसें लिखा था उसीको समझे बिना अन्याय मार्गसें खण्डन करना न्यायांभोनिधिजीको उचित नही हैं क्योंकि शुद्धसमाचारी कारनें तो इस कालमें पचास दिनेही पर्युषणा करनी चाहिये इस बातकी पुष्टिके लिये शुद्ध समाचारीके पृष्ठ १५७ । १५८ में श्रीकल्पसूत्रजीका मूलपाठ, श्रीवृहत्कल्पचूर्णिका पाठ, और श्रीसमवायाङ्गजीका पाठ, लिखके पचास दिनेही पर्युषणा दिखाई थी परन्तु दशपञ्चक लिखके कुछ पाँच पाँच दिने प्राचीन कालकी रीतिसे पर्युषणा नही लिखी थी तथापि न्यायांभोनिधिजी शुद्धसमाचारी कारके अभिप्रायके विरुद्धार्थमें दशपञ्चकका कल्पविच्छेदकी बात लिखके पचास दिनकी पर्युषणाको निषेध करना चाहते हैं सो कदापि नही हो सकेगा और आगे फिर भी लिखा है कि–(लौकिक टिप्पणाके अनुसारसें हरेक वर्षमें आषाढ़ शुदी चतुर्दशीसें लेके भाद्रवा शुदी ४ और तुम्हारे कहनेसें दूसरे श्रावण शुदी ४ तक ५० दिन पूर्ण करने चाहोगें तो भी नही हो सकेगें क्योंकि तिथियां वध घट होती है तो किसी वर्षमें ४९ दिन आजायगें और किसी वर्षमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४८ दिन भी आजायगे तब क्या आपको जिनाज्ञा भङ्गका दूषण नही होगा) इस उपरके लेखसें तो न्यायांभोनिधिजीनें श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंकी और अपनेही गच्छके पूर्वाचार्य्योंकी आशातना करके और सबी उत्तम पुरुषोंको दूषित ठहरानेका कार्य्य करके नय गर्भित व्यवहारको और श्रीकल्पसूत्रके मूल पाठको उत्थापन करके बड़ाही अनर्थ कर दिया है क्योंकि जैसे सूत्र, चूर्णि, भाष्य, वृत्ति, प्रकरण, चरित्रादि अनेक शास्त्रोंमें एक नही किन्तु सैकड़ों बाते व्यवहार नयकी अपेक्षासें श्रीतीर्थङ्करादि महाराज कहते हैं तैसेही शुद्ध समाचारी कारने भी व्यवहार नयसें पचास दिने पर्युषणा कही है और श्रीकल्प सूत्रजीके मूल पाठका (अन्तरा वियसे कप्पई) इस वाक्यसें पचास दिनके अन्दरमें पर्युषणा होवे तो कोई दूषण भी नही कहा है तथापि न्यायांभोनिधिजी न्यायके समुद्र होते भी व्यवहार नयगर्भित श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की व्याख्याका और श्रीकल्पसूत्रके मूल पाठका उत्थापनके भयका जरा भी विचार न करते विद्वत्ताके अभिमानसें और पक्षपातके जोर सें ४८।४९ दिन होनेका दिखाकर मिथ्या दूषण लगाते हैं सो कदापि नही बनता है,—याने सर्वथा उत्सूत्र भाषणरूप है

और भी दूसरा सुनिये—जो तिथियोंके हानी वृद्धिकी गिनतीसें कोई वर्षमें भाद्रपद शुक्ल चौथ तक ४८ दिन होनेका लिखकर न्यायाम्भोनिधिजी शुद्धसमाचारी कारको दूषित ठहराते हैं इससें मालुम होता है कि तिथियोंके हानी वृद्धिकी गिनतीसें भाद्रपद शुक्ल छठ (६) के दिन पूरे पचास दिन मान्य करके न्यायाम्भोनिधिजी पर्युषणा करते होवेंगे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तब तो अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध है और आप चौथकाही पर्युषणा करते होवेंगे तब तो शुद्धसमाचारी कारको दूषण लगाना वृथा है इसको भी पाठकवर्ग विचार लो ;—

और पर्युषणाके पीछाड़ी जो ७० दिन न्यायाम्भोनिधि जी रख्खना कहते हैं सो किस हिसाबसें गिनती करके रख्खते हैं इसका विवेक बुद्धिसें हृदयमें विचार किया होता तो शुद्ध समाचारी कारको दूषण लगानेका लिखनाही भूल जाते क्योंकि तिथियोंकी हानी वृद्धिसें किसी वर्षमें ६९ और किसी वर्षमें ६८ दिन भी होजाते हैं सो पाठकवर्ग बुद्धिजन पुरुष न्याय दृष्टिसें विचार कर लेना ;—

और भी आगे जैन सिद्धान्तसमाचारी पुस्तकके पृष्ठ ८९ की पंक्ति २० वीं सें पृष्ठ ९० की पंक्ति १७ वीं तक ऐसे लिखा है कि [पूर्वपक्ष, आप तो मुखसेंही बाता बनाई जाते हो परन्तु कोई सिद्धान्तके पाठसें भी उत्तर है वा नही—उत्तर— हे समीक्षक दृढ़तर उत्तर देते हैं देखो कि श्रावणमास बढ़ने सें दूसरे श्रावणमें और भाद्रव वढ़नेसें प्रथम भाद्रव मासमें पर्युषणा करना यह तुमने ८० (अशी) दिनकी प्राप्तिके भयसें अङ्गीकार किया परन्तु श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें ऐसा पाठ है, यथा—सवीसइ राइमासे वइक्कंते सत्तरिराइदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइत्ति, भावार्थः—जैसे आषाढ़ चौमासेके प्रतिक्रमण किये बाद एकमास और वीश दिनमें पर्युषणा करें तैसे पर्युषणाके बाद ७० सत्तर दिन क्षेत्रमें ठहरे—हे परीक्षक—अब इस पाठके विचारणेसें तुमको मास की वृद्धि हुये कार्त्तिक सम्बन्धी कृत्य आश्विनमासमें करना पड़ेगा और कार्त्तिक मासमें करोंगे तो १०० रात दिनकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्राप्ति होनेसें सिद्धान्त विरुद्ध होगा, फिर तो ऐसा हुवा कि एक अङ्गको आच्छादन किया और दूसरा अङ्ग खुल्ला होगया तात्पर्य्य कि तुमनें आज्ञाभङ्ग न हुवे इस वास्ते यह पक्ष अङ्गीकार किया तोभी आज्ञाभङ्गरूप दूषण तो आपके शिर परही रहा—पूर्वपक्ष–इस दूषणरूप यन्त्रमें तो आपको भी यन्त्रित होना पड़ेगा—उत्तर–हे समीक्षक यह आज्ञाभङ्ग-रूप दूषणका लेश भी हमको न समझना क्योंकि हम अधिक मासको कालचूला मानते हैं—]

अब उपरके लेखकी समीक्षा करते है कि हे सत्यग्राही सज्जन पुरुषों उपरके लेखमें न्यायाम्भोनिधिजीनें अपनी चतुराई प्रगट कारक और प्रत्यक्षउत्सूत्र भाषणरूप भोले जीवोंको श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध रस्ता दिखानेके लिये अनुचित क्यों लिखा है क्योंकि प्रथमतो पूर्वपक्षमें ही [आप तो मुखसें ही बाता बनाइ जाते हो] यह अक्षर लिखे है इससें मालुम होता है कि पहिले जो जो लेख न्यायांभोनिधिजीने लिखा है सो सो शास्त्रोंके प्रमाण बिना अपनी कल्पनासें लिखा है इसलिये न्यायांभोनिधिजीके जैसी दिलमें थी वैसीही पूर्वपक्षके अक्षरोंमें लिख दिखाई है सो, हास्यके हेतुरूप है सो तो बुद्धिजन विद्वान् पुरुष समझ सक्ते है और इसके उत्तरका लेखमें भी सूत्रकार महाराजके अभिप्राय को जानेबिना उलटा विरुद्धार्थमें तीनों महाशयोंकी तरह चौथे न्यायाम्भोनिधिजीनें भी कर दिया क्योंकि श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठ मासवृद्धिके अभावका है। और पर्युषणा के पीछाड़ी १०० दिन होनेसें कोई भी दूषण नही है याने मास वृद्धि होनेसें पर्युषणाके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पीछाड़ी १०० दिन शास्त्रानुसार रहते हैं इसलिये मासवृद्धि होते भी पर्युषणाके पीछाड़ी ७० दिन रहने का और १०० होनेसें दूषण लगाने का न्यायाम्भोनिधि-जीका लिखना सर्वथा वृथा है इसका विशेष निर्णय तीनों महाशयोंकी समीक्षामें सूत्रकार वृत्तिकार महाराजके अभि-प्राय सहित संपूर्ण पाठसमेत युक्तिपूर्वक विस्तारसें पृष्ठ ११८सें पृष्ठ १२९ तक छपगया है और आगे भी कितनीही जगह छप चुका है सो पढ़नेसें अच्छी तरहसें निर्णय होजावेगा तथापि उपरोक्त लेखमें न्यायाम्भोनिधिजीनें उटपटाङ्ग लिखा है जिसकी समीक्षा करके दिखाता हुं—[श्रावणमास बढ़ने सें दूसरे श्रावणमें और भाद्रव वढ़नेसें प्रथम भाद्रव मासमें पर्यु-षणा करना यह तुमने अशीदिनका प्राप्तिके भयसें अङ्गीकार किया] इस लेखको लिखके आगे श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका (सवीसइ राइमासे वइक्कन्ते) इस पाठसें पचासदिने पर्युषणा दिखाई ॥ इन अक्षरोंसें तो जैसे शुद्ध समाचारी कारनें ५० दिने पर्युषणा ठहराई थी तैसेही न्यायाम्भोनिधिजीनें भी ठहराई इसमें तो शुद्ध समाचारी कारका लेखको विशेष पुष्टिमिली और न्यायांभोनिधिजीको अपना स्वयं लेख भी बाधक होगया तो फिर दो श्रावण होनेसें भी भाद्रपदमें और दो भाद्रपद होनेसें दूसरे भाद्रपदमें न्यायांभोनिधिजी पर्युषणा करते हैं तब तो प्रत्यक्ष ८० दिन होते है और श्रीसमवायाङ्गजी आदि अनेक शास्त्रोंमें ५० दिने पर्युषणा करनी कही है और अधिकमास भी अनेक शास्त्रोंमें प्रमाण किया है तैसे ही खास न्यायांभोनिधिजी भी क्षामणा के सम्बन्धमें अधिकमास होनेसें [तिसवर्षमें तेरांमास तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अवश्य होजायगें] यह अक्षर पृष्ठ ८९ की पंक्ति ३।४ में लिखे हैं अब पाठकवर्ग विचार करो कि अधिकमास होनेसें तेरह मास अवश्य करके न्यायांभोनिधिजीनें मान्य करलिये जब अधिकमास गिनतीमें मंजूर हो चुका तब दो श्रावण होनेसें भाद्रपद तक ८० दिन न्यायांभोनिधिजीके वाक्यसें भी सिद्ध होगये तो फिर पचास दिने पर्युषणा करनेका पाठ दिखाना और ८० दिने अपनी कल्पनासें पर्युषणा करना यह कोई बुद्धिवाले विवेकी श्रीजिनाज्ञाके आराधक पुरुष का काम नही है सो पाठकवर्ग भी विचार लेना ;—

और भी दूसरा सुनो (श्रावणमास बढ़नेसें दूसरे श्रावण में और भाद्रव बढ़नेसें प्रथम भाद्रव मासमें पर्युषणा करना यह तुमने ८० (अशी) दिनकी प्राप्तिके भयसें अङ्गीकार किया) इन अक्षरोंका तात्पर्य्य ऐसे निकलता है कि शुद्ध समाचारीकारकों तो ८० दिने पर्युषणा करनेसें शास्त्रविरुद्धका भय लगा तब पचास दिने पर्युषणा करनेका अङ्गीकार किया परन्तु न्यायाम्भोनिधिजीको ८० दिने पर्युषणा करनेसें शास्त्र विरुद्धका भय नही लगता है इस लिये दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें और दो भाद्रपद होनेसें दूसरे भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा शास्त्रविरुद्धताको न गिनके करते हैं यह बात सिद्ध होगइ इस बातको पाठकवर्ग भी विशेष करके विचार लो ;—

और श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठको दिखाकर दो श्रावणादि होते भी ७० दिन पर्युषणाके पिछाड़ी रखने का जो न्यायांभोनिधिजी कहते है सो भी सूत्रकार तथा वृत्तिकार महाराजके और युक्ति के भी विरुद्ध है क्योंकि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आषाढ़ चौमासीसें प्रथम पचासदिन जानेसें और पिछाड़ी ७० दिन रहनेसें एवं चार मासके १२० दिनका वर्षाकाल सम्बन्धी श्रीसमवायाङ्गजी का पाठ है सो तो अल्पबुद्धि-वाला भी समझ सकता है तो फिर न्यायांभोनिधिजी न्यायके और बुद्धिके समुद्र इतने विद्वान् होते भी दो श्रावणादि होनेसें पांचमास के १५० दिन का वर्षाकाल में पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन रखने का आग्रह करते कुछ भी विचार नही किया बड़ीही शरमकी बातहै और दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें ८० दिने पर्युषणा करके पिछाड़ी के ७० दिन रखनेका न्यायांभोनिधिजी चाहते होवे तोभी अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध है क्योंकि व्यवहारिक गिनतीसें पचास दिने अवश्य ही निश्चय करके पर्युषणा करनी कही है, और दिनोंकी गिनती में अधिकमास छुट नही सकता है इस लिये ८० दिने पर्युषणा करके पिछाड़ी ७० दिन रखखेंगे तो भी शास्त्रविरुद्ध है और अधिक मासको गिनती में छोड़ कर पर्युषणा के पिछाड़ी ७० दिन रखखेंगे तो भी अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध है क्योंकि अधिक मासको अनेक शास्त्रोंमें और खास श्रीसमवायांगजी सूत्र में प्रमाण किया है इस लिये अधिकमास को गिनतीमें निषेध करना भी न्यायांभोनिधिजीका नही बन सकता है और चारमासके सम्बन्धी पाठको पांचमासके सम्बन्धमें न्यायांभोनिधीजी को सूत्रकार महाराजके विरुद्धार्थमें लिखना भी उचित नही है इस लिये श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठ पर अपनी कल्पनासें न्यायांभोनिधिजी अथवा उन्होंके परिवारवाले और उन्होंके पक्षधारी वर्त्तमानिक श्रीतपगच्छके महाशय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो जो कल्पना मासवृद्धि होते भी पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन रखनेके लिये करेंगे सो सो सबीही उत्सूत्र भाषण रूप भोले जीवोंको मिथ्यात्वमें गेरने वाले होवेंगे इसलिये श्रीजिनेश्वर भगवान्की आज्ञाके आराधक सत्यग्राही सर्व-सज्जन पुरुषोंसे मेरा यही कहना है कि श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें मासवृद्धिके अभावसें ७० दिनके अक्षर देखके मास वृद्धि होते भी आग्रह मत करो और मासवृद्धिको मंजूर करके दूजा श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपदमें पचास दिने पर्युषणा करके पिछाड़ी १०० दिन मान्यकरो जिससें उत्सूत्र भाषक न बनके श्रीजिनाज्ञाके आराधक बनोंगे मेरा तो येही कहना है। मान्य करेंगे जिन्होंकी आत्माका सुधारा है इतने पर भी जो हठग्राही नही मानेंगे जिन्होंकी सम्यक्त्व रत्न बिना आत्माका सुधारा कैसे होगा सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने ;—

और श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठपर न्यायाम्भोनिधि जीने अपनी चातुराई प्रगट किवी है कि—(हे परीक्षक अब इस पाठके विचारणेसें तुमको मास वृद्धि हुये कार्त्तिक सम्बन्धी कृत्य आश्विन मासमें करना पड़ेगा और कार्त्तिक मासमें करोंगे तो १०० रात दिनकी प्राप्ति होनेसें सिद्धान्तसें विरुद्ध होगा फिर तो ऐसा हुवा कि एक अङ्गको आच्छादन किया और दूसरा अङ्ग खुल्ला होगया तात्पर्य्य कि—तुमने आज्ञाभङ्ग न हुवे इस वास्ते यह पक्ष अङ्गीकार किया तो भी आज्ञा भङ्गरूप दूषण तो आपके शिरपर ही रहा) इस लेखकी समीक्षा अब सुन लीजियें—हे पाठकवर्ग देखो न्यायांभोनिधिजीनें तो शुद्धसमाचारी कारको दूषित ठह-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राने के लिये उपरका लेख लिखाथा परन्तु खास शुद्धसमाचारीकारने ही श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका इस ही पाठको अपनी शुद्धसमाचारीकी पुस्तकमें लिखा है। और इन्ही श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रकी वृत्तिकारक (शुद्धसमाचारी कारके परमपूज्य श्रीखरतरगच्छ नायक) श्रीनवांगी वृत्तिकार श्रीअभयदेव सूरीजी प्रसिद्ध है जिन्होंने इन्ही पाठकी वृत्ति में चारमासके एकसो बीश (१२०) दिनका वर्षाकाल सम्बन्धी अच्छी तरहका खुलासाके साथ व्याख्या किवी है। सो प्रसिद्ध है और मैंनें भी मूलपाठ तथा वृत्ति और भावार्थ सहित इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १२० । १२१ में छपा दिया है इस लिये चारमास सम्बन्धी पाठको पांच मासके अधिकारमें लिखना भी न्यायाम्भोनिधिजी को अन्याय कारक है और दो श्रावण होनेसें पांचमासके वर्षाकालके १५० दिन होते हैं यह तो जगत प्रसिद्ध है जिसकों अल्पबुद्धि वाले भी समझ सकते है जिसमें जैन शास्त्रोंकी आज्ञानुसार वर्त्तमान काले पचास दिने पर्युषणा करनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन तो स्वाभाविक रहते ही है यह बात भी शास्त्रानुसार तथा प्रसिद्ध है तथापि न्यायाम्भोनिधिजी होकरके अन्याय के रस्तेमें वर्तके पांचमासके वर्षाकालमें पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन स्वभाविक रहते हैं जिसको शास्त्र विरुद्ध कहकर चारमास सम्बन्धी पाठ लिखके दूषित ठहराते है। यह तो प्रत्यक्ष उत्सूत्र भाषणरूप वृथा है और वर्तमानमें दो श्रावणादि होनेसें पचास दिने पर्युषणा और पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन रहनेका श्रीतपगच्छके ही पूर्वाचार्य्योंने कहा है जिसका खुलासा इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १४६ में छप गया है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जिसको भी शास्त्र विरुद्ध ठहराकर न्यायाम्भोनिधिजी अपने ही पूर्वाचार्य्योंकी आशातनाके फलविपाकका भय नही करते है सो बड़ीही अफसोसकी बात है और मास-वृद्धि होनेसें कार्त्तिक सम्बन्धीकृत्य आश्विनमासमें करने का न्यायाम्भोनिधिजी लिखते हैं सो भी उन्हकी समझमें फेर है क्योंकि शुद्धसमाचारीकार तथा श्रीखरतरगच्छ वाले मासवृद्धि होनेसें शास्त्रानुसार पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन मान्य करते हैं इस लिये उन्होंको तो कार्त्तिक सम्बन्धीकृत्य आश्विन मासमें करने की कोई जरूरत नही है, और आगे (एक अङ्गका आच्छादन किया और दूसरा अङ्ग खुल्ला होगया) इन अक्षरोंको लिखके न्यायाम्भोनिधि-जीनें अङ्ग याने शरीरका दूष्टान्त दिखाया परन्तु यह दूष्टान्त शुद्धसमाचारीकार तथा श्रीखरतरगच्छवालोंके उपर किञ्चित् भी नही घट सकता हैं क्योंकि मासवृद्धिके अभावसें श्रीसमवायाङ्गजीमें कहे हुवे पर्युषणाके पिछाड़ीका ७० दिन मान्य करके उसी मुजब वर्त्तते हैं और मासवृद्धि दो श्रावणादि होनेसें अनेक शास्त्रोंके प्रमाणसें पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिनको भी मान्य करके उसी मुजब वर्त्तते हैं इसलिये उन्होंका तो शास्त्रानुसार वर्त्तनेका होनेसें श्रीजिनाज्ञारूपी वस्त्रों करके सर्व अङ्ग परिपूर्णतासें (आच्छादन) याने ढका हुवा है इसलिये एक अङ्ग खुल्ला रहनेका दूषण लगाना न्यायांभोनिधिजीका प्रत्यक्ष मिथ्या है परन्तु इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १६४ और १६५ में जो न्याय छपा है इसी न्यायानुसार उपरोक्त खुल्ला अङ्गका दूष्टान्त खास करके दोनों तरहसें न्यायांभोनिधिजीके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा उन्होंके परिवारवालोंके उपर बरोबर न्याय युक्त अच्छी तरहसें घटता है सोही दिखाता हुं कि—देखो न्यायांभोनिधिजी तथा इन्होंके परिवारवाले और उन्होंके पक्षधारी वर्त्तमानिक श्रीतपगच्छके सबी महाशय—विशेष करके श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठको पर्युषणा सम्बन्धी सब कोई लिखते हैं मुखसें कहते हैं और उन्ही पर पूर्ण श्रद्धा रखके बड़ाही आग्रह करते हैं उस पाठमें वर्षाकालके पचास दिन जानेसें और पिछाड़ी ७० दिन रहनेसें पर्यु-षणा करणा कहा है यह पाठ भावार्थः सहित आगे बहुत जगह छप गया हैं इस पर बुद्धिजन सज्जन पुरुष विचार करों कि—वर्त्तमानमें दो श्रावण होनेसें भाद्रपदमें पर्युषणा करने वालोंको ८० दिन होते हैं जिससे पूर्वभागका एक अङ्ग सर्वथा खुल्ला हो जाता है और दो आश्विन मास होनेसें कार्त्तिक तक १०० दिन होते हैं जिससें उत्तर भागका एक अङ्ग भी सर्वथा खुल्ला हो जाता है इस तरहसें न्यायांभो निधिजी आदि जो श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठसें दो श्रावण होते भी भाद्रपद तक ५० दिने पर्युषणा और दो आश्विन होते भी कार्त्तिक तक पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन रखना चाहनेवाले महाशयोंको श्रावण और आश्विन मास बढ़नेसें दोनों अङ्ग श्रीजिनाज्ञारूपी वस्त्र करके रहित प्रत्यक्ष बनते हैं यह तो ऐसा हुवा कि—दोनों खोईरे जोगटा मुद्रा और आदेश—किं वा—कोई एक संसारिक गृहस्थाश्रम छोड़के साधु हुवा परन्तु साधुकी क्रिया न करसका और पीछा गृहस्थ भी न हो सका उसीको उभय भ्रष्ट याने न साधु और न गृहस्थ ऐसे को 'यतो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भ्रष्टा ततो भ्रष्टा' कहनेमें आता है। अथवा। कोई एकस्त्री थी जिसने डाहीने हाथमें विधवाका चिह्न लम्बी काँचली और वाम हाथमें सधवाका चिह्न चुड़ा धारण किया था उसीनेही थोड़ी देर बाद फिर उससें विपरीत, याने, वाम हाथमें विधवाका चिह्न लम्बी काँचली और डाहीने हाथमें सधवाका चिह्न चुड़ा धारण किर लिया ऐसी पागल स्त्री न तो विधवाकी और न सधवाकी गिनतीमें आसकती है तैसेही दो श्रावण होते भी भाद्रपद तक पचास दिनका और दो आश्विन होते भी कार्त्तिक तक ७० दिन का आग्रह करने वालोंको श्रावण और आश्विन वढ़नेंसें एक तरफ भी श्रीजिनाज्ञाके आराधक नही हो सकते हैं क्योंकि दोनों अङ्ग खुल्ले रहते हैं इसलिये उपरोक्त दृष्टान्तका न्याय उपरके महाशयोंको बरोबर घटता है इसलिये अब उपरकी बातको न्यायांभोनिधिजीके परिवारवालोंको और उन्होंके पक्षधारियोंको अवश्य करके विचारनी चाहिये और पक्षपातको छोड़के सत्य बातको ग्रहण करना सोही उचित है।

और शुद्धसमाचारीकार दो श्रावणादि होनेसें ५० दिने पर्युषणा करके पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन अनेक शास्त्रानुसार न्याययुक्ति सहित मान्य करता है इस लिये एक अंग खुल्लेका दृष्टान्त न्यायाम्भोनिधिजी कों लिखके आज्ञाभङ्ग रूप दूषण शुद्धसमाचारीकार को दिखाना सर्वथा करके उत्सूत्र भाषणरूप वृथा है।

और आगे लिखा है कि—(पूर्वपक्ष इस दूषणरूप यन्त्र में तो आपको भी यन्त्रित होना पड़ेगा उत्तर—हे समीक्षक ? यह आज्ञाभङ्गरूप दूषणका लेशभी हमको न

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समझना क्योंकि हम अधिक मासको कालचूला मानते है)
इन अक्षरोंको लिखके न्यायाम्भोनिधिजी दो श्रावण होनेसें भाद्रपद तक ८० दिन होते हैं जिसमें अधिक मासको गिनती में छोड़कर ८० दिनके ५० दिन और दो आश्विन मास होनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक १०० दिन होते है जिसको भी ७० दिन अपनी कल्पनासें मान्य करके निर्दूषण बनना चाहते है सो कदापि नही हो सकता है क्योंकि अधिक मासको कालचूला की उत्तम ओपमा गिनती करने योग्य शास्त्रकारोने दिवी है जिसका विशेष निर्णय तीनों महाशयोंके नामकी समीक्षामें अच्छी तरहसें छपगया है और आगे फिर भी कालचूला सम्बन्धी श्रीनिशीथ चूर्णिका अधूरा पाठ और श्रीदशवैकालिक सूत्रके प्रथम चूलिकाकी वृहद्वृत्तिका अधूरा पाठ लिखके भावार्थ लिखे बाद फिर भी अपनी कल्पनासें पूर्वपक्ष उठा कर उसीका उत्तरमें भी पृष्ठ ९१ की पंक्ति १३ तक उत्सूत्र भाषणरूप लिखा है जिसका उतारा इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ५९ और ६० की आदि तक छपाके उसीकी समीक्षा पृष्ठ ६० से ६५ तक इन्ही पुस्तकमें अच्छी तरहसें खुलासा पूर्वक छपगई है और श्रीनिशीथचूर्णिके प्रथमोद्देशेका काल-चूलासम्बन्धी सम्पूर्ण पाठ और श्रीदशवैकालिककी प्रथम चूलिकाके वृहद्वृत्तिका सम्पूर्ण पाठ भावार्थके साथ खुलासा पूर्वक इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ४९ सें पृष्ठ ५८ तक विस्तारसें छपगया है और तीनों महाशयोंके नामकी समीक्षा में भी इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ७१ से ७८ तक और आगे भी कितनी ही जगह छप गया है उसीको पढ़नेसें पाठक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वर्गोंकों अवश्यही निर्णय हो जावेगा कि अधिक मासको कालचूला की उत्तम ओपमा अवश्य ही गिनती करने योग्य शास्त्रकारोंने दिवी है इस लिये अधिकमासको निश्चय करके गिनती करना ही सम्यक्त्वधारियोंको उचित है तथापि न्यायाम्भोनिधिजी अधिक मासकी गिनती निषेध करते हैं सो कदापि नही हो सकती है इतने पर भी आगे फिर भी पृष्ट ९१ के पंक्ति १४ वीं से पंक्ति १८ वो तक लिखते है कि (इस अधिकमासकों कालचूलामें तुमको भी अवश्य ही मानना पड़ेगा और नही मानोंगे तो किसी तरहसें भी आज्ञा भङ्ग रूप दूषणकी गठड़ीका भार दूर नही होगा क्योंकि पर्युषणाके बाद ७० (सत्तर) दिन रहने का कहा है काल-चूला न मानोंगे तो १०० दिन हो जायगें) इन अक्षरोंको लिखके शुद्धसमाचारी कारको पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन होनेसें दूषण लगाते हैं सो न्यायाम्भोनिधिजीका सर्वथा मिथ्या है क्योंकि मासवृद्धि होते पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन होनेमें कोई दूषण नही है इसका विस्तार उपरमें तथा तीनों महाशयों के नामकी समीक्षामें और भी कितनी ही जगह छप गया है उसीकों पढ़के पाठकवर्ग सत्यासत्यका निर्णय कर लेना ;—

और शुद्धसमाचारीकार तथा श्रीखरतरगच्छवाले अधिक मासको कालचूलाकी उत्तम ओपमा जानके विशेष करके गिनतीमें बरोबर लेते हैं और न्यायांभोनिधिजी अधिक मासको कालचूला कह करके भी शास्त्रकारोंका तात्पर्य्य समझे बिना श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके तथा श्री-निशीथचूर्णिकार और श्रीदशवैकालिकके चूलिकाकी बृहद्-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृत्तिकार महाराजके विरुद्धार्थमें अधिकमासकी गिनती निषेध करते पर भवका भय कुछ भी नही किया यह बड़ाही अफसोस है ।

और आगे जैन सिद्धान्त समाचारी की पुस्तकके पृष्ठ ९१ की पंक्ति १९ वो से पृष्ठ ९२ वें की प्रथम पंक्ति तक ऐसे लिखा है कि (पर्युषणा पर्व केवल भाद्रव मासके साथ प्रतिबन्धवाला है क्योंकि जिस किसी शास्त्रमें पर्युषणापर्व का निरूपण किया है तिसमें भाद्रवमासका विशेषणके साथ ही कथन किया है परन्तु अधिक मास होवे तो श्रावण मासमें पर्युषणा करना ऐसा तो तुमारे गच्छवाले भी नही कह गये है देखो, सन्देहविषौषधी ग्रन्थमें भी भाद्रव मास ही के विशेषण करके कहा है परन्तु ऐसा नही कहा कि अधिक मास होवे तो श्रावणमासमें करना ऐसा पर्युषणा पर्वके साथ विशेषण नही दिया है) उपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गकों दिखाता हुं कि हे सज्जन पुरुषो न्यायाम्भोनिधिजीके उपर का लेखको में, देखता हुं तो मेरेकों न्यायाम्भोनिधिजी में मिथ्या भाषणका त्यागरूप दूजा महाव्रतही नही दिखता है क्योंकि उपरके लेखमें तीन जगह प्रत्यक्ष मिथ्या भोले जीवोंको भ्रमाने के लिये उत्सूत्र भाषणरूप लिखा है सोही दिखाता हुं कि प्रथमतो (पर्यु-षणापर्व केवल भाद्रव मासके साथ प्रतिबन्धवाला है क्योंकि जिस किसी शास्त्रमें पर्युषणा पर्वका निरूपण किया है तिसमें भाद्रवमासका विशेषणके साथही कथन किया है) यह अक्षर लिखके मासवृद्धि होते भी भाद्रपद मासप्रतिबन्ध पर्युषणा न्यायांभोनिधिजी ठहराते है सो मिथ्या है क्योंकि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भाष्य, चूर्णि, वृत्त्यादि अनेक शास्त्रोंमें मासवृद्धि होनेसें श्रावणमासमें पर्युषणा करना लिखा है इसका विशेष निर्णय तीनों महाशयोंकी समीक्षामें शास्त्रोंके प्रमाण सहित न्याययुक्तिके साथ अच्छी तरहसें इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १०७ सें पृष्ठ ११७ तक छप गया है उसीकों पढ़नेसें सर्व निर्णय हो जावेगा और दूसरा (अधिक मास होवे तो श्रावण मासमें पर्युषणा करना ऐसा तो तुमारे गच्छवाले भी नही कहगये है) यह लिखा है सोभी प्रत्यक्ष मिथ्या है क्योंकि श्रीखरतरगच्छके अनेक पूर्वाचार्य्योंने अनेक ग्रन्थोमें दो श्रावण होनेसें दूसरा श्रावणमें पर्युषणा करनी कही है सोही देखो श्रीजिनपतिसूरिजी कृत श्रीसङ्घपट्टक वृहद्वृत्तिमें १। तथा श्रीसमाचारी ग्रन्थमें। २। श्रीजिनप्रभ सूरिजी कृत श्रीसन्देहविषौषधी वृत्तिमें। ३। तथा श्रीविधिप्रपा ग्रन्थमें। ४। श्रीउपाध्यायजी श्रीसमयसुन्दरजीकृत श्रीकल्पकल्पलता वृत्तिमें।५। तथा श्रीसमाचारी शतकमें। ६। और श्रीलक्ष्मीवल्लभगणिजी कृत श्रीकल्पद्रुमकलिका वृत्तिमें।७। और श्रीतपगच्छ तथा श्रीखरतरगच्छसम्बन्धी (तपा खरतर प्रश्नोत्तर)नाम ग्रन्थ है उसीमें। ८। और श्रीपर्युषणा सम्बन्धी चर्चापत्रमें। ९। इत्यादि अनेक जगह खुलासापूर्वक दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेका श्रीखरतरगच्छके पूर्वाचार्य्योंनें कहा है तैसें ही श्रीतपगच्छके पूर्वाचार्य्योंने भी अनेक ग्रन्थोंमें दूसरे श्रावणमें ही पर्युषणा करना कहा है और खास न्यायाम्भोनिधिजी भी शुद्धसमाचारी पुस्तक सम्बन्धी अपनी जैन सिद्धान्त समाचारी की पुस्तकके पृष्ठ ८७ को पंक्ति २२ वी सें पृष्ठ ८८ प्रथम पंक्तितक लिखते हैं कि (श्रावण मास बढ़े

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तो दूसरे श्रावण शुदीमें और भाद्रव बढ़े तो प्रथम भाद्रव शुदीमें आषाढ़ चैामासेसें ५० में दिनही पर्युषणा करना परन्तु ८० अशीमें दिन नही करना ऐसा लिखके पृष्ठ १५५ में अपनेही गच्छके श्रीजिनपति सूरिजी रचित समाचारीका प्रमाण दिया है) इन अक्षरोंको न्यायाम्भोनिधिजी लिखते हैं और उपरोक्त श्रीखरतरगच्छके पूर्वाचार्योंके ग्रन्थोंका दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने सम्बन्धी पाठोंको भी जानते हैं तथापि (अधिक मास होवे तो श्रावण मासमें पर्युषणा करना ऐसा तो तुमारे गच्छवाले भी नही कह गये हैं) इतना प्रत्यक्ष मिथ्या लिखके अपना महाव्रत भङ्गके सिवाय और क्या लाभ उठाया होगा सो पाठकवर्ग विचार लेना—

और तीसरा (देखो सन्देहविषौषधी ग्रन्थमें भी भाद्रव मासहीके विशेषण करके कहा है परन्तु ऐसा नही कहा है कि अधिक मास होवे तो श्रावण मासमें पर्युषणा करना ऐसा पर्युषणापर्वके साथ विशेषण नही दिया है) यह लिखा है सो भी मायावृत्तिसें प्रत्यक्ष मिथ्या लिखा है क्योंकि श्री जिनप्रभसूरिजीनें श्रीसन्देहविषौषधी वृत्तिमें खुलासा पूर्वक दो श्रावण होनेसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनी कही है जिसका पाठ भव्यजीवोंको निःसन्देह होनेके लिये इस जगह लिख दिखाता हुं श्रीसन्देहविषौषधी वृत्तिके पृष्ठ ३० और ३१ का तथाच तत्पाठः—

साम्प्रतं पर्युषणा समाचारी विवक्षुरादौ पर्युषणा कदा विधेयेति श्रीमहावीरस्तद्गणधरशिष्यादीन् दृष्टान्तेनाह तेणं कालेणमित्यादि। वासाणंति। आषाढचतुर्मासकदिनादारभ्य सविंशतिरात्रेमासे व्यतिक्रान्ते भगवान् पज्जोसवे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इति । पर्युषणामकार्षीत् सैकेणाद्गुणमित्यादि । प्रश्नवाक्यं
जउणं इत्यादि । निर्वचनवाक्यं । प्रायेणागारिणां । गृह-
स्थानामागाराणि गृहाणि । कडियाइं कटयुक्तानि उक्कं-
पियाइं धवलितानि । छन्नाइं तृणादिभिः लित्ताइं छगणा-
दिभिः क्वचित् गुत्ताइंति पाठस्तत्र गुप्तानि वृत्तिकरद्वारपिधा-
नादिभिः घट्ठाइं विषमभूमिभञ्जनात् । मट्ठाइं श्लक्ष्णीकृतानि
क्वचित् संमट्ठाइत्ति पाठस्तत्र समंतात् मृष्टानि मसृणीकृतानि
संपधूमियाइं सौगन्ध्यापादनार्थं धूपनैर्वासितानि । खातोद-
गाइं कृतप्रणालीरूपजलमार्गाणि खायनिद्धमणाइं निद्धमणं
खालं गृहात् सलिलं येन निर्गच्छति अप्पणो अट्ठाए आ-
त्मार्थं स्वार्थं गृहस्थैः कृतानि परिकर्म्मितानि करोति कायइ
करोतीत्यादाविव परिकर्म्मार्थत्वात् परिभुक्तानि तैः स्वयं
परिभुज्यमानत्वात् अतएव परिणामितानि भवन्ति । ततः
सविंशतिरात्रे मासे गते अमी अधिकरणदोषा न भवन्ति ।
यदि पुनः प्रथममेव साधवः स्थिता स्म । इति ब्रूयुः तदा
ते गृहस्था मुनीनां स्थित्या सुभिक्षं संभाव्य तप्तायोगोल-
कल्पाः दन्तालक्षेत्रकं कुर्युः तथा चाधिकरणदोषाः अतस्तत्प-
रिहाराय पञ्चाशतादिनैः स्थिता स्म इति वाच्यं चूर्णिकारस्तु
कडियाइं पासेहिंतो कंवियाणि उवरिं इत्याह । स्थविरा
स्थविरकल्पिकाः अज्जत्ताएत्ति अद्यकालीनाः आर्य्यतया व्रत
स्थविरत्वेन इत्येके अंतरावियसे इत्यादि अंतरापि च अर्वा-
गपि कल्पते, पर्युषितुं न कल्पते तां रजनीं भाद्रपदशुक्ल-
पञ्चमीं उवायणावित्तएत्ति अतिक्रमितुं । उसनिवासे इत्या-
गमिको धातु । इह हि पर्युषणाद्विधा गृहिज्ञाताऽज्ञात-
भेदात् । तत्र गृहिणामज्ञाता यस्यां वर्षायोग्यपीठफलकादौ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

र्षमि कल्पोक्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्थापना क्रियते । साषाढ़पौर्णमास्यां पञ्चपञ्चदिनवृद्ध्या यावद्भाद्रपदशितपञ्चम्यां सा चैकादशसु पर्वतिथिषु क्रियते । गृहिज्ञाता तु यस्यां साम्वत्सरिकातिचारालोचनं लुञ्चनं पर्युषणाकल्पसूत्रकर्षणं चैत्य परिपाटी अष्टमं साम्वत्सरिकप्रतिक्रमणं च क्रियते ययाच व्रतपर्य्याय वर्षाणि गण्यन्ते सा नभस्य शुक्लपञ्चम्यां कालिकसूर्य्यादेशाच्चतुर्थ्यामपि जनप्रकटं कार्य्या । यत्पुनरभिवर्द्धितवर्षे दिनविंशत्या पर्युषितव्यमित्युच्यते । तत्सिद्धान्तटिप्पणानामनुसारेण तत्र हि युगमध्ये पौषो युगान्ते चाषाढ़ एव वर्द्धते नान्येमासा स्तानि चाधुना सम्यक् न ज्ञायन्ते ततो दिनपञ्चाशतैव पर्युषणासङ्गतेति वृद्धाः ततश्च कालावग्रहश्चात्र जघन्यतो नभस्य शितपञ्चम्या आरभ्य कार्त्तिकचतुर्मासांतः सप्ततिदिनमानः उत्कर्षतो वर्षायोग्य क्षेत्रान्तराभावादाषाढ़मासकल्पेन सह वृष्टिसद्भावात् मार्गशीर्षेणापि सह षण्मासा इति ।

देखिये उपरके पाठमें एकमास और वीश दिने पर्युषणा श्रीतीर्थङ्कर गणधर स्थिविराचार्य्यादि करते थे तैसेही वर्त्तमानमें भी एकमास वीश दिने याने पचास दिने पर्युषणा करनेमें आती है और मासवृद्धि होनेसें वीश दिने पर्युषणा जैन टिप्पणानुसार दिखाई और वर्त्तमानमें जैन टिप्पणाके अभावसें पचास दिनेही पर्युषणा करनी कही इससें दो श्रावण हो तो दूसरे श्रावणमें अथवा दो भाद्रपद हो तो प्रथम भाद्रपदमें पचास दिनेही पर्युषणा सम्यक्त्वधारियोंको करनी योग्य है, तैसेही श्रीखरतरगच्छवाले करते हैं परन्तु हठवादियोंकी बातही जूदी है—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और इन्ही महाराज श्रीजिनप्रभसूरिजीने श्रीसन्देह-विषौषधी वृत्तिमें श्रीकल्पसूत्रजीके मूलपाठकी व्याख्या किये बाद इन्ही श्रीकल्पसूत्रकी निर्युक्ति जो कि सुप्रसिद्ध श्रीभद्र-बाहु स्वामीजी कृत है उसकी व्याख्या किवी है उसीमें काल ठवणाधिकारे समयादि कालसें आवलिका, मुहूर्त, दिन, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, सम्वत्सर, युगादिकी व्याख्या करके आगे अधिक मासको अच्छी तरहसें प्रमाण किया है और प्राचीनकालाश्रय जैसे चन्द्रसंवत्सरमें पचास दिने पर्युषणा तैसेंही अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिने पर्युषणा खुलासा पूर्वक कही है और श्रीनिशीथचूर्णिके दशवे उद्देशेमें जैसे पर्युषणा सम्बन्धी व्याख्या है तैसेही उन्ही महाराजनें भी प्रायः उसीके सदृश अच्छी तरहसें व्याख्या किवी हैं

और इन्हीं महाराज श्रीजिनप्रभ सूरिजीनें श्रीविधि-प्रपा नाम ग्रन्थ बनाया है उसीके पृष्ठ ५३ में जैसा पाठ है वैसाही नीचे मुजब जानो ;—

आसाढ चउम्मासियाओ नियमा पण्णासइमे दिणे पज्जो सवणा कायव्वं न इक्कपंचासइमे जयावि लोइय टिप्पणया-णुसारेण दो सावणा दो भद्दवया वा भवंति तयावि पण्णा सइमे दिणे नउण कालचूलाविरकाए असीइमे सवीसइ राइमासे वइक्कंते पज्जोसवणंतित्ति वयणाउं जंच अभि-वड्ढियंमि वीसत्तुवुत्तं तं जुगमज्जे दो पोसा जुगअंते दोवी आसाढत्ति सिद्धंतटिप्पणयाणुरोहेणं चेव घडइ ते संपयं मवहं तित्ति जहुत्तमेव पज्जोसवणादिणति ॥

अब सत्यग्राही सज्जनपुरुषोंसें मेरा इतनाही कहना है कि उपरमें श्रीखरतरगच्छके श्रीजिनप्रभसूरिजीनें श्रीसन्देह-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषौषधी वृत्तिमें और श्रीविधिप्रपामें खुलासाके, अधि मासवृद्धिकी गिनतीसें वर्त्तमानमें पचास दिने पर्युषणा कही है सो दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करनेकी यह प्रसिद्ध बात है और न्यायाम्भोनिधिजी खास करके श्रीसन्देहविषौषधी वृत्तिका और श्रीविधिप्रपा ग्रन्थका उपरोक्त पर्युषणा सम्बन्धी पाठको अच्छी तरहसें जानते थे क्योंकि श्रीविधिप्रपा ग्रन्थका पाठ खास आपने चतुर्थ स्तुति निर्णयः पुस्तकके पृष्ठ ८३। ८४। ८५ में लिखा है।

और मैंने जो उपरमें श्रीविधिप्रपा ग्रन्थका पाठ पर्युषणा सम्बन्धी लिखा हैं उसी पाठके पहली पंक्तिका पाठ दोनु जगहसें काटकरके अधूरा ग्रन्थकार महाराजके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणरूप और श्रीखरतरगच्छके तथा दूसरे भोले श्रावकोंको भ्रममें गेरनेके लिये न्यायाम्भोनिधिजीनें जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ ८२ के अन्तमें लिखा है (जिसका खुलासा आगे करनेमें आवेगा) इससें पर्युषणा सम्बन्धी उपरका पाठ न्यायाम्भोनिधिजी जानते थे तथापि अपनी मिथ्या बात रखनेके लिये (अधिकमास होवे तो श्रावण मासमें पर्युषणा करना ऐसा तो तुमारे गच्छवाले भी नही कह गये है) यह वाक्य और सन्देहविषौषधी ग्रन्थमें भी (ऐसा नही कहा कि अधिक मास होवे तो श्रावणमासमें पर्युषणा करना) यह वाक्य न्यायाम्भोनिधिजी माया वृत्तिसें प्रत्यक्ष मिथ्या कैसे लिख गये होंगे सो मेरेकों बड़ाही अफसोस है ;—इस लिये मेरे कों इस जगह लिखना पड़ता है कि श्रीजिनप्रभ सूरिजीनें श्रीसन्देह विषौषधी वृत्तिमें तो कदाग्रही और सन्देहकारी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुरुषोंका अच्छी तरहसें सन्देहका (पर्युषणा सम्बन्धी और कल्याणक सम्बन्धी भी) निवारण किया है जो स्थिरचित्तसें बाँचके सत्यग्राही होगा उसीका तो अवश्य करके मिथ्यात्व रूप सन्देह निकलके सम्यक्त्वरूप सत्यबातकी प्राप्ति हो जावेगा इसमें कोई शक नही—

और श्रीखरतरगच्छके तो क्या परन्तु श्रीतपगच्छके ही पूर्वाचार्य्योंनें मासवृद्धिके अभावसें भाद्रपदमें पर्युषणा करनी कही है और दो श्रावण होनेसें पचासदिने दूजा श्रावणमें भी पर्युषणा करनी कही है इसका विस्तार उपरमें अनेक जगह छपगया है। इसलिये श्रीखरतरगच्छके पूर्वाचार्य्यजी कृत ग्रन्थका मासवृद्धि सम्बन्धी पाठको छुपाकर मासवृद्धिके अभावका पाठ मासवृद्धि होते भी भोले जीवोंको दिखा कर सत्य बात परसें श्रद्धाभङ्ग करके अपनी कल्पित बातमें गेरनेका कार्य्य करना न्यायांभोनिधिजीकों उचित नही था;—

और आगे फिर भी न्यायाम्भोनिधिजीनें अपनी जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ ९२ की दूसरी पंक्तिसें सोलवी पंक्तितक जो लिखा है सो नीचे मुजब जानो,—

[पृष्ठ १५९ पंक्ति ६ में नारचंद्र ज्योतिष ग्रन्थका प्रमाण दिया है सो तो हीरीके स्थानमें वीरीका विवाह कर दिया है। क्योंकि इसी द्वितीय प्रकरणमें ऐसा श्लोक है।

यथा—हरिशयनेऽधिकमासे, गुरुशुक्रास्तेनलग्नमन्वेष्यं ॥
लग्नेशांशाधिपयो,र्नीचास्तगमे च न शुभं स्यात् ॥ १ ॥

भावार्थः अधिक मासादिक जितने स्थान बताये उसमें शुभ कार्य्य नही होते है। तो अब बारामासिक पर्युषणा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्व कैसे करनेकी सङ्गति होगी ? और रत्नकोषाख्य ज्योतिःशास्त्र विषे भी ऐसा कहा है । यथा—'यात्राविवाह-मण्डन, मन्यान्यपि शोभनानि कर्म्माणि ॥ परिहर्त्तव्यानि बुधैः, सर्वाणि नपुंसके मासि ॥ १ ॥

भावार्थः यात्रामण्डन, विवाहमण्डन, और भी शुभ-कार्य्य है सो भी पण्डित पुरुषोंनें सर्व नपुंसके मासि कहनेसें अधिक मासमें त्यागने चाहीये । अब देखीये ! इस लेखसें भी अधिक मासमें अति उत्तम पर्युषणापर्व करनेकी सङ्गति नही होसकती है ।]

ऊपरके न्यायाम्भोनिधिजीका लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गकों दिखाता हुं कि (पृष्ठ १५९ में नारचन्द्र ज्योतिष ग्रन्थका प्रमाण दिया है सो तो हीरीके स्थानमें वीरीका विवाह कर दिया है) इन अक्षरोंको लिखके जो शुद्धसमा-चारीके पृष्ठ १५९ मे नारचन्द्र ज्योतिषका श्लोक है उसी को न्यायांभोनिधिजी निषेध करना चाहते हैं सो कदापि नही हो सकता है क्योंकि उसी श्लोकका मतलब सत्य है देखो शुद्धसमाचारीके पृष्ठ १५९में नारचन्द्रके दूसरे प्रकरणका ऐसा श्लोक है यथा—रविक्षेत्रगते जीवे, जीव क्षेत्रगते रवौ । दीक्षां स्थापनां चापि, प्रतिष्ठा च न कारयेत् ॥ १ ॥ इस श्लोक लिखनेका तात्पर्य्य ऐसा है कि वादी शङ्का करता है कि अधिकमासमें शुभकार्य्य नही होते हैं तो फिर पर्यु-षणापर्व भी शुभकार्य्य अधिकमासमें कैसे होवे इस शङ्काका समाधान शुद्धसमाचारीकार पं० प्र० यतिजी श्री-रायचन्द्रजी ऐसे करते हैं कि अधिक मासके सिवाय भी 'रविक्षेत्रगते जीवे, याने सूर्य्यका क्षेत्रमें गुरुका जाना होवे'

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्थात् सिंहराशि पर गुरुका आना होवे तब सिंहे गुरु सिंहस्थ तेरह मास तक कहा जाता है उसीमें और 'जीवक्षेत्र गते रवौ, याने गुरुका क्षेत्रमें सूर्य्यका आना होवे अर्थात् गुरुका क्षेत्रमें सूर्य्य धन और मीन राशिपर पौष और चैत्र मासमें आता है तब उसीको मलमास कहे जाते हैं उसीमें अर्थात् सिंहस्थ का और मलमासका ऐसा योग बने तब गृहस्थको दीक्षा देना तथा साधुको सूरि वगैरह पद्में स्थापन करना और प्रतिष्ठा करनी ऐसे कार्य्य नही करना चाहिये क्योंकि एसे योगमें दीक्षादि कार्य्य करनेसें इच्छित फल-प्राप्त नही हो सकता है इसलिये उपरोक्तादि अनेक कारण-योगे मुहूर्त्तके निमित्त कारणसें जो जो कार्य्य करनेमें आते हैं सो निषेध किये हैं परन्तु आत्मसाधनका धर्मरूपी महान् कार्य्य तो बिना मुहूर्त्तका होनेसें किसी जगह कोई भी कारणयोगे निषेध करनेमें नही आया है और अधिक मासमें धर्मकार्य्य पर्युषणादि करनेका कोई शास्त्रमें निषेध भी नही किया है इसलिये अधिक मासादिमे धर्मकार्य्य अवश्यही करना चाहिये यह तात्पर्य्य शुद्धसमा-चारी कारका जैनशास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक न्यायसम्मत होनेसें मान्य करने योग्य सत्य है इसलिये निषेध नही हो सकता है तथापि न्यायांभोनिधिजी अपनी कल्पित बातको स्थापनेके लिये शुद्धसमाचारीकारकी सत्य बातका निषेध करते हैं सोभी इस पंचमें कालके न्यायके समुद्रका नमुना है और शुद्धसमाचारीकार पं० प्र० यतिजी श्रीराय-चन्द्रजी थे, इसलिये (हीरीके स्थानमें बीरीका विवाह कर दिया है) यह अक्षर न्यायांभोनिधिजीको बिना विचार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

किये ऐसे मिथ्या लिखना उचित नही था, इसका विशेष विचार पाठकवर्ग अपनी बुद्धिसें स्वयं कर लेना ;—

और (इसी द्वितीय प्रकरणमें ऐसा श्लोक है यथा— हरिशयनेऽधिकमासे, गुरुशुक्रास्ते न लग्नमन्वेष्यं ॥ लग्नेशांशाधिपयो,र्नीचास्तगमे च न शुभं स्यात् ॥१॥ भावार्थः अधिक मासादिक जितने स्थान बतायें उसमें शुभकार्य्य नही होते हैं तो अब बारा मासिक पर्युषणापर्व कैसे करनेकी सङ्गति होगी) इस उपरके लेखसें न्यायांभोनिधिजीनें अधिक मासमें पर्युषणा करनेका निषेध किया इस पर मेरेकों प्रथमतो इतनाही लिखना पड़ता है कि उपरके श्लोकका अधूरा भावार्थ लिखके न्यायाम्भोनिधिजीनें भोले जीवोंकों भ्रममें गेरे हैं इसलिये इस जगह उपरके श्लोकका पूरा भावार्थ लिखनेकी जरूरत हुई सो लिखके दिखाता हुं— हरिशयने, याने, जो श्रीकृष्णजीका शयन (सोना) लौकिक में आषाढ़शुक्ल एकादशी (११) के दिनसें कार्त्तिकशुक्ल एकादशीके दिन तक चार मासका (परन्तु मासवृद्धि दो श्रावणादि होनेसें पांच मासका) कहा जाता हैं उसीमें १, और वैशाखादि अधिक मासमें २, गुरुका अस्तमें ३, शुक्रका अस्तमें ४, और ज्योतिष शास्त्र मुजब लग्नके नवांशांका अधिपति नीचा हो ५, अथवा अस्त हो ६, इतने योगोंमें पण्डित पुरुषको लग्न नही देखना चाहिये क्योंकि उपरके योगोंमें लग्न देखे तो शुभ फल नही हो सकता है इसलिये ज्योतिषशास्त्रोंमें उपरके योगोंमें लग्न देखनेकी मनाई किवी है इस तरहसें उपरोक्त श्लोकका भावार्थ होता है ॥ १ ॥

अब न्यायाम्भोनिधिजीनें नारचन्द्रके दूसरे प्रकरणका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो ऊपरमें श्लोक लिखके पर्युषणा पर्वका निषेध किया है उस सम्बन्धी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हुं, जिसमें प्रथमतो शुद्धसमाचारीकारने इसीही नारचन्द्रके दूसरे प्रकरणका जो श्लोक लिखाथा उसीको भावार्थ सहित में ऊपरमें लिख आया हुं—जिसमें खुलासे लिखा है कि तेरहमास तक सिंहस्थमें और पौष तथा चैत्र ऐसे मलमासमें मुहूर्त्तके निमित्तिक शुभकार्य्य नही होते हैं परन्तु बिना मुहूर्त्त का धर्म कार्य्य करनेमें हरजा नही क्योंकि तेरहमासका सिंहस्थमें पर्युषणादि धर्मकार्य्य तो अवश्य ही करने में आते है और पौषमासमें श्रीपार्श्वनाथस्वामिजीका जन्म और दीक्षा कल्याणकके धर्मकार्य्य और चैत्रमासमें श्रीआदिजिनेश्वर भगवानूका जन्म और दीक्षा कल्याणकके धर्मकार्य्य करनेमें आते हैं और चैत्रमासमें ओलियांकी भी तपश्चर्या वगैरह करनेमें आती है और खास अधिकमासमें भी पाक्षिकादि धर्मकार्य्य करनेमें आता है इस लिये मुहूर्त्तके निमित्तिक कार्य्य अधिकमासमें नही हो सकते है परन्तु धर्मकार्य्य तो बिना मुहूर्त्तका होनेसें अवश्यही करनेमें आता है यह तात्पर्य्य शुद्ध समाचारी कारका सत्यथा तथापि न्यायाम्भोनिधिजीने (पृष्ठ १५९ पंक्ति ६ में नारचन्द्र ज्योतिष ग्रन्थका प्रमाण दिया है सो तो हीरीके स्थानमें वीरीका विवाह कर दिया है) ऐसा उपहासका वाक्य लिखके उपरोक्त सत्यबातका निषेध करदिया और फिर उसी स्थानका 'हरिशयने, इत्यादि श्लोक लिखके हरिशयने श्रीकृष्णजीका शयन (सोना) जो चौमासामें और अधिक मासमें शुभकार्य्य का न होना दिखाकर पर्यु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षणा पर्वका भी नही होनेका उत्सूत्र भाषणरूप दिखाते कुछ भी विचार न किया क्योंकि चौमासेमें मुहूर्त्त निमित्तिक शुभकार्य्य नही होते है परन्तु बिना मुहूर्त्तका श्रीपर्युषणा पर्वतो खासकरके श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने वर्षा ऋतुमें करनेका कहा है जिसका किञ्चिन्मात्र भी न्यायाम्भोनिधिजी विचार न करते श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्धार्थमें और विद्वान् पुरुषोंके आगे अपने नामकी हासी करानेका कारणरूप हरिशयनका चौमासमें और अधिक मासमें शुभकार्य्यका न होनेका दिखाकर पर्युषणापर्व न होनेका भोले जीवोंको दिखाया। हा अतीव खेदः इस उपरकी बातको पाठकवर्गको तथा न्यायाम्भोनिधिजीके परिवारवालोंकों और उन्होंके पक्षधारियोकों (सत्यग्राही हो कर) दीर्घदृष्टिसें बिचारनी चाहिये;—

दूसरा और भी सुनो—जो न्यायांभोनिधिजीके तथा उन्होंके परिवारवालोंके दिलमें ऐसाही होगा कि मुहूर्त्तके निमित्तका शुभकार्य्य न होवे वहां बिना मुहूर्त्तका धर्मकार्य्य भी नही होना चाहिये तब तो उन्होंके आत्माका सुधारा धर्मकार्य्योंके बिना होनाही मुश्किल होगा क्योंकि ज्योतिषशास्त्रोंके आरम्भसिद्धि ग्रन्थमें १, तथा लघु वृत्तिमें २, और वृहद्वृत्तिमें ३, जन्मपत्री पद्धतिमें ४, नारचन्द्रप्रकरणमें ५, तथा तट्टिप्पणमें ६, लग्नशुद्धिग्रन्थमें ७, तत् वृत्तिमें ८, मुहूर्त्तचिन्तामणिमें ९, वृहत् मुहूर्त्तसिन्धुमें १० दूसरी मुहूर्त्तचिन्तामणिमें ११, तथा पीयूषधारा वृत्तिमें १२, मुहूर्त्तमार्त्तण्डमें १३, विवाह वृन्दावनमें १४, प्रथम और दूसरा विवाहपडल ग्रन्थमें १५-१६, चार प्रकरणका नारचन्द्र

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

में १७, रत्नकोषमें १८, लग्नचन्द्रिकामें १९, ज्योतिषसारमें २०, और ज्योतिर्विदाभरण वृत्तिमें २१, इत्यादि अनेक ज्योतिष शास्त्रोंमें कितनेही मास १, कितनीही संक्रान्ति २, कितनेही वार ३, कितनीही तिथियां ४, कितनेही योग ५, कितनेही नक्षत्र ६, और जन्मका नक्षत्र ७, जन्मका मास ८, अधिक मास ९, क्षयमास १०, अधिक तिथि ११ क्षय तिथि १२, व्यतीपात १३, और कृष्णपक्षकी तेरस चौदश अमावस्या इन क्षीण तिथियोंमें १४, पापग्रहयुक्त चन्द्रमें १५, पापग्रह युक्त लग्नमें १६, गुरुका अस्तमें १७, शुक्रका अस्तमें १८, गुरु शुक्रकी बाल और वृद्धावस्थामें १९, ग्रहणके सात दिनोंमें २०, लग्नका स्वामी नीचामें २१, और अस्तमें २२, सन्मुख योगिनीमें २३, चन्द्रदग्ध तिथिमें २४, सन्मुख राहुमें २५, सिंहस्थ में २६, मलमासमें २७, हरिशयनका चौमासामें २८, भद्रामें २९, और तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, दिशा वगैरह आपसमें अशुभ योगोंमें ३०, इत्यादि अनेक निमित्त कारणोंमें मुहूर्त्त निमित्तिक शुभकार्य्य वर्ज्जन किये हैं इस लिये न्यायांभोनिधिजी तथा उन्होंके परिवारवाले जो ज्योतिषशास्त्रोंके अशुभ योगोंमें शुभकार्य्योंका वर्ज्जन देखके धर्मकार्य्योंका भी वर्ज्जन करेंगे तब तो उन्होंको धर्मकार्य्य कब करनेका वख्त मिलेगा अथवा शुभयोग बिना धर्मकार्य्य न करते किसीका आयुष्यपूर्ण हो जावे तो उन्हकी आत्माका सुधारा कब होगा सो पाठकवर्ग बुद्धिजन पुरुष बिचार लेना—और मेरा इसपर आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंको इतनाही कहना है कि न्यायांभोनिधिजी उपरोक्त ज्योतिष शास्त्रोंके शुभाशुभयोगोंको न देखते सिंहस्थमें तथा हरिशयनका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चौमासामें और अधिक मासादिमें धर्मकार्य्य करते होवेंगें तब तो 'हरिशयनेऽधिके मासे इत्यादि उपरका श्लोक नारचन्द्रके दूसरे प्रकरणका लिखके अधिक मासादि जितने स्थान बताये उसमें शुभकार्य्य नही होता है, ऐसे अक्षर लिखके पर्युषणा पर्व करनेका निषेध भोले जीवोंको वृथा क्यों उत्सूत्र भाषणरूप दिखाया और उत्सूत्र भाषणका भय होता तो उपरकी मिथ्या बातों लिखी जिसका मिथ्या दुष्कृत्य देकरके अपनी आत्माकी शुद्धि करनी उचित थी और न्यायांभोनिधिजीके परिवारवालोंको ऐसा उत्सूत्र भाषणरूप मिथ्या बातोंका अब हठ भी करना उचित नही है— इसलिये श्रीजिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंसें मेरा यही कहना है कि ज्योतिषके शुभाशुभ योगोंका और सिंहस्थका, चौमासाका, अधिक मासादिक का विचार न करते, निःशङ्कित होकर श्रीजिनोक्त मुजब धर्मकार्य्योंमें उद्यम करके अपनी आत्माका कल्याण करो आगे इच्छा तुम्हारी ;—

और आगे फिर भी न्यायांभोनिधिजीनें लिखा है कि [रत्नकोषाख्य ज्योतिःशास्त्र विषे भी ऐसा कहा है यथा यात्रा विवाहमण्डन, मन्यान्यपि शोभनानि कर्म्माणि, परिहर्त्तव्यानि बुद्धैः, सर्वाणि नपुंसके मासि ॥ १ ॥

भावार्थः—यात्रामण्डन, विवाहमण्डन और भी शुभ कार्य्य है सो भी पण्डित पुरुषोंने सर्व नपुंसके मासि कहनेसें अधिक मासमें त्यागने चाहिये अब देखिये इस लेखसे भी अधिक मासमें अत्युत्तम पर्युषणापर्व करनेकी संगति नही हो सकती है]

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्ग को दिखाता हुं-जिससें प्रथमतो न्यायांभोनिधिजीकों ज्योतिषग्रन्थका विवाहादि कार्य्योंका दृष्टान्त दिखा करके पर्युषणा पर्वका निषेध करनाही उचित नही है इसका उपरमें अच्छी तरहसें खुलासा हो गया है और दूसरा यह है कि श्री तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंनें मासवृद्धिको काल-चूलाकी उत्तम ओपमा दिवी है तथापि न्यायांभोनिधिजीनें तीनों महाशयोंका अनुकरण करके श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्धार्थमें तथा इन महाराजोंकी आशातना का भय न करते मासवृद्धिको नपुंसककी तुच्छ ओपमा लिख करके भोले जीवोंको अपने फन्दमें फसाये हैं सो बड़ाही अफसोस है और तीसरा यह है कि रत्नकोषाख्य (रत्नकोष) ज्योतिष शास्त्रमें तो मुहूर्तके निमित्तसें जो जो कार्य्य होते हैं उसीमें अनेक कारण योग वर्ज्जन किये हैं उसीकों सब कों छोड़करके सिर्फ एक अधिक मास सम्बन्धी लिखते हैं सो भी न्यायांभोनिधिजीको अन्याय कारक है इसलिये मुहूर्त्त के कार्य्योंको दिखाकर बिना मुहूर्त्तका पर्युषणापर्व करनेका निषेध करना योग्य नही हैं।

और भी चौथा सुनो—(यात्रामण्डन, विवाहमण्डन और भी शुभकार्य्य है सोभी पण्डित पुरुषोंनें सर्व नपुंसके मासि कहनेसें अधिक मासमें त्यागने चाहिये) इसपर मेरा इतना ही कहना है कि पूर्वोक्त तीनों महाशय और चौथे न्यायाम्भोनिधिजी यह चारों महाशय अधिकमासको नपुंसक कहके जो सर्व शुभकार्य्य त्यागने का ठहराते है। इससे तो यह सिद्ध होता है कि पौषध, प्रतिक्रमण, ब्रह्मचर्य्य,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दान, पुण्य, परोपगार, सात क्षेत्रमें द्रव्यखर्चना, जीव दया, देवपूजा, गुरुवन्दनादि देवगुरुभक्ति, साधर्मिक-वात्सल्य, विनय, वैयावच्च, आत्मसाधनरूप स्वाध्याय, ध्यानादि, श्रावकके और धर्मोपदेशका व्याख्यानादि साधुके उचित जो जो शुभकार्य्य है उन्ही शुभकार्य्योंकों अधिक मासको नपुंसक कहके त्याग देनेका चारों महाशयोंनें उपदेश किया होगा। भक्तजनोंको त्यागनेका नियम भी दिलाया होगा, आपने भी त्यागे होवेंगें और अधिक मासको नपुंसक कहके शुभकार्य्य चारों महाशय त्यागनेका ठहराते है इससें अशुभ कार्य्योंका ग्रहण होता है इसलिये उपरोक्त कार्य्योंसें विरुद्ध याने अधिक मासको नपुंसक जानके सर्व शुभकार्य्य त्यागते हुए—निन्दा, ईर्षा, झगड़ादि अशुभकार्य्य करनेका चारों महाशयोंनें उपदेश किया होगा। दृष्टि रागियोंसें करानेका नियम भी दिलाया होगा और अपने भी ऐसे ही किया होगा। तब तो (अधिक मासमें सर्वशुभकार्य्य त्यागनेका) ज्योतिष-शास्त्रका नामसें चारों महाशयोंका लिखके ठहराना उचित ठीक होसके परन्तु जो अधिक मासमें निन्दा ईर्षादि अशुभकार्य्य त्यागके देवगुरुभक्ति वगैरह शुभकार्य्य चारों महाशयोंने करनेका उपदेश दिया होगा भक्तजनोंसे करानेका नियम भी दिलाया होगा और अपने भी उपरके अशुभ कार्य्योंका त्यागकरके शुभकार्य्योंको किये होवेंगे तबतो अधिक मासमें ज्योतिष शास्त्रका नाम लेकरके सर्व शुभकार्य्य त्यागनेका ठहराना चारों महाशयोंका भोले जीवोंको भ्रममें गेरके मिथ्यात्व बढ़ानेके सिवाय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और क्या होगा सो बुद्धिजन सज्जनपुरुष स्वयं विचार लेना।

अब पांचमा और भी सुनो कि जो न्यायाम्भोनिधिजी अधिक मासको नपुंसक कहके यात्रा मण्डनका शुभकार्य्य त्यागनेका ठहराते है परन्तु जैनके और वैष्णवके अनेक तीर्थ स्थान है उसीमें अमुक अधिकमासमें अमुक तीर्थयात्रा बन्ध हुई कोई देशी परदेशी यात्री यात्रा करने को न आया ऐसा देखनेमें तो दूर रहा किन्तु पाठकवर्गके सुननेमें भी नही आया होगा तो फिर न्यायाम्भोनिधिजीने कैसे लिखा होगा सो पाठक वर्ग विचार लेना।

और छठा यह है कि न्यायाम्भोनिधिजी किसी भी अधिक मासमें कोई भी श्रीशत्रुंजय वगैरह तीर्थस्थानमें ठहरे होवे उस अधिक मासमें तीर्थयात्रा खास आपने किवी होगी तो फिर अधिक मासमें यात्राका निषेध भोले जीवोंको वृथा क्यों दिखाया होगा सो निष्पक्षपाती सज्जन पुरुष स्वयं विचार लो ;—

और सातमी वारकी समीक्षामें कदाग्रहियोंका मिथ्यात्व रूप भ्रमको दूर करनेके लिये मेरेकों लिखना पड़ता है कि न्यायाम्भोनिधिजी इतने विद्वान् न्यायके समुद्र होते भी गच्छका मिथ्या हठवादसें संसार व्यवहारमें विवाहादि वड़े ही आरम्भके कराने वाले और अधो-गतिका रस्तारूप लौकिक कार्य्य न होनेका दृष्टान्त दिखांकर महान् उत्तमोत्तम निरारम्भी ऊर्द्ध गतिका रस्तारूप लोकोत्तर कार्य्यका निषेध करती वरूत न्याया-म्भोनिधिजीके विद्वत्ताकी चातुराई किस जगह चली गईथी सो प्रत्यक्ष असङ्गत और उत्सूत्र भाषणरूप लिखते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जरा भी विचार न आया क्योंकि विवाहादि कार्य्य तो चैामासामें और रिक्तातिथिमें तथा कृष्णचतुर्दशी अमावस्यादि तिथि वगैरह कु वार कु नक्षत्र कु योगादि अनेक कारण योगोंमें निषेध किये हैं और श्रीपर्युषणादि धर्मकार्य्य तो विशेष करके चैामासामें रिक्तातिथिमें तथा कृष्ण चतुर्दशी अमावस्यादि तिथियोंमें कु वार कु नक्षत्र कु योगादि होते भी तिथि नियत पर्व करनेमें आते हैं इस बातका विवेक बुद्धिसें हृदयमें विचार किया होता तो विवाहादि कार्य्योंका दृष्टान्तसें महान् उत्तम पर्युषणा पर्व करनेका निषेधके लिये कदापि लेखनी नही चलाते यह बातपाठकवर्गको अच्छी तरहसें विचारनी चाहिये ;—

और भी आठमी तरहसें सुन लीजिये—कि पूर्वोक्त तीनों महाशयोंनें और चौथे न्यायांभोनिधिजीनें भोले जीवों के आत्मसाधनका धर्मकार्य्योंमें विघ्नकारक, अधिक मासको तुच्छ नपुंसकादिसें लिखा है सो निःकेवल श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्ध उत्सूत्र भाषणरूप प्रत्यक्ष मिथ्या है क्योंकि धर्मकार्य्योंमें अधिक मास उत्तम श्रेष्ठ महान् पुरुषरूप है (इसलिये अधिकमासमें धर्मकार्य्योंका निषेध नही हो सकता है) इस बातका विशेष विस्तार दृष्टान्त सहित युक्तिके साथ अच्छी तरहसें सातमें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी समीक्षामें करनेमें आवेगा सो पढ़नेसें सर्व निःसन्देह हो जावेगा ;—

और आगे फिर भी न्यायांभोनिधिजीनें अधिक मास को निषेध करनेके लिये जैन सिद्धान्तसमाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ ९२ की पंक्ति १७ सें पृष्ठ ९३ की आदिमें अर्द्ध पंक्ति तक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लेख लिखके अपनी चातुराई प्रगट किवी हैं उसीका उतारा नीचे मुजब जानो—

[अधिक मासको अचेतन रूप वनस्पति भी नही अङ्गीकार करती है तो औरोंको अङ्गीकार न करना इसमें तो क्याही कहना देखो आवश्यक निर्युक्ति विषे कहा है यथा—

जइ फुल्ला कणिआरडा, चूअग अहिमासयंमिघुठंमि। तुहनखमं फुल्लेउ, जइ पच्चंता करिंति डमराई ॥ १ ॥ भावार्थः हे अंब अधिक मासमें कणियरको प्रफुल्लित देखके तेरेको फुलना उचित नही है क्योंकि यह जाति बिनाके आडम्बर दिखाते हैं अब देखिये हे मित्र यह अच्छी जातिकी वनस्पति भी अधिक मासको तुच्छही जानके प्रफुल्लित नही होती है]

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गकों दिखाता हुं—कि हे सज्जन पुरुषों न्यायाम्भोनिधिजीनें प्रथमतो (अधिकमासको अचेतनरूप वनस्पति भी नही अङ्गीकार करती है) यह अक्षर लिखे है सो प्रत्यक्ष मिथ्या है क्योंकि दशलक्ष प्रत्येक वनस्पति तथा चौदह लक्ष साधारण वनस्पति यह चौवीश लक्ष योनीकी सब वनस्पति अवश्यमेव अधिक मासमें हवा पाणीके संयोगसें यथोचित नवीन पैदाश होती है औरवृद्धि पामती है प्रफुल्लित होती है और निमित्त कारणसें नष्ट भी होजाती है जैसे बारह मासोंमें हानी वृद्धयादि वनस्पतिका स्वभाव है तैसे ही अधिक मास होनेसें तेरह मासोंमें भी बरोबर है यह बात अनादि कालसें चली आती है और प्रत्यक्ष भी दिखती है क्योंकि इस संवत १९६६ का लौकिक पञ्चाङ्गमें दो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रावण मास हुवे है तब भी दोनु श्रावण मासमें वर्षा भी खूब (महरी) हुई है तथा वनस्पति को भी नवीन पैदा होते वृद्धि होते और हानी होते पाठकवर्गने भी प्रत्यक्ष देखा है और देश परदेशके सब वगीचोंमें भी दोनु मासोंमें फलों करके तथा फूलों करके वृक्ष प्रफुल्लित पाठकवर्गके देखनेमें आये होंगें और हरेक शहरोंमें वनमालि लोग अधिक मासमें शाक, भाजी, फल, फूल, वेचते हुवे सब पाठकवर्गके देखनेमें आते हैं यह बात तो हरेक अधिक मासमें प्रत्यक्ष देखनेमें आती है परन्तु कोई भी अधिक मासमें कोई भी देशमें कोई भी शहरमें शाक, भाजी, फल, फूलादि नवीन पैदा नही होते हैं तथा शहरमें भी वनमालि लोग वेचनेको नही आये हैं वैसा तो कोई भी पाठकवर्गके सुननेमें भी कभी नही आया होगा। यह दुनिया भरकी जगत् प्रसिद्ध बात है इस लिये अधिक मासको वनस्पति अवश्य ही अङ्गीकार करती है तथापि न्यायाम्भोनिधिजीने (अधिकमासको अचेतनरूप वनस्पति भी नही अङ्गीकार करती है) यह प्रत्यक्ष मिथ्या भोले जीवोंको अपना पक्षमें लानेके लिये लिख दिया—यह बड़ा ही अफसोस है।

और फिर भी न्यायाम्भोनिधिजी (अधिक मासको अचेतनरूप वनस्पति भी नही अङ्गीकार करती है तो औरोको अङ्गीकार न करना इसमें तो क्याही कहना) इस लेखको लिखके मनुष्यादिकोंको अधिक मास अङ्गीकार नही करनेका ठहराते है इस पर तो मेरेको इतनाही कहना है कि न्यायाम्भोनिधिजीके कहनेसें तो सब दुनियाके सब लोगोंको अधिक मासमें खाना, पीना, सोना, बैठना,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लेना, देना, स्त्रियोंकों गर्भका होना और वृद्धि पामना, जन्मना, मरणा, और संसारिक व्यवहारमें व्यापारादि कृत्य करना, दुनीयामें रोगी, तथा निरोगी होना, और दान पुण्यादि भी करना, इत्यादि पाप और पुण्यके कार्य्य करना ही नही होता होगा तब तो मनुष्यादिकोंकों अधिक मास अङ्गीकार नही करनेका ठहराना न्यायाम्भोनिधिजीका बन सके परन्तु जो ऊपरके कहे, पाप, पुण्यके, कार्य्य दुनियाके लोग अधिक मासमें करते है इस लिये न्यायाम्भोनिधिजी का उपरका लिखना प्रत्यक्ष मिथ्या होनेसें पक्षपाती हठ-ग्राहीके सिवाय आत्मार्थी बुद्धिजन कोई भी पुरुष मान्य नही कर सकते है इसको विशेष पाठकवर्ग विचारलेना ;—

और आगे फिर भी न्यायाम्भोनिधिजीनें श्रीआवश्यक निर्युक्तिकी गाथा लिखी है सो भी निर्युक्तिकार श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहुस्वामिजीके विरुद्धार्थमें उत्सूत्रभाषणरूप और इस गाथाका सम्बन्ध तथा तात्पर्य्य समझे बिना भोले जीवोंकों संशयमें गेरे हैं इसका विशेष विस्तार सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नाम की समीक्षामें अच्छी तरहसें किया जावेगा सो पढ़के सर्वनिर्णय करलेना—और फिर भी न्यायाम्भोनिधिजीनें श्रीआवश्यक निर्युक्तिकी गाथाका भावार्थ लिखा है कि (हे अंब अधिक मासमें कणियरको प्रफुल्लित देखके तेरेको फूलना उचित नही है क्योंकि यह जाति बिनाके आडम्बर दिखाते हैं) इस लेखसे अधिक मासमें कणियरको फूलना ठहराते अंबको नही फूलना ठहराकर कणियरको तुच्छ जातिकी और अंबको उत्तम जातिका ठहराते हैं सोभी इन्होंकी समझमें फेर है क्योंकि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कणियर तो सबीही मासोंमें फूलती है और आंबे भी सबीही मासोंमें फूलके फलते है सो कलकत्ता, मुंबई वगैरह शहरोंके अनेक पुरुष जानते है। और कणियर तो उत्तम जातिकी और अंब तुच्छ जातिका कारण अपेक्षासे ठहरता है इसका विशेष खुलासा सातवे महाशयकी समीक्षामें करने में आवेंगा और आगे फिर भी श्रीआवश्यक निर्युक्ति की गाथा पर न्यायाम्भोनिधिजीनें अपनी चातुराई को प्रगट किवीहै कि (अब देखाये हे मित्र यह अच्छी जातिकी वनस्पति भी अधिक मासको तुच्छही जानके प्रफुल्लित नही होती है)

इस उपरके लेखकी समीक्षा पाठकवर्गकों सुनाता हुं कि न्यायांभोनिधिजी अच्छी जातीकी वनस्पतिको अधिक मासको तुच्छही जानके प्रफुल्लित नही होनेका ठहराते हैं इस न्यायानुसार तो न्यायांभोनिधिजी तथा इन्होंके परिवारवाले भी जो अच्छी जातिकी वनस्पतिका अनुकरण करते होवेंगे तब तो अधिक मासको तुच्छही जानके खाना, पीना, देव दर्शन, गुरु वन्दन, विनय, भक्ति, वृद्धादिककी वैयावच्च, धर्मोपदेशका व्याख्यान, व्रत, प्रत्याख्यान, देवसी, राई, पाक्षिक प्रतिक्रमणादि कार्य्य करके अपनी आत्माकों पापकृत्योंसें आलोचित देखकरके हर्षसें प्रफुल्लित चित्तवाले नही होते होवेंगे तब तो उपरका लेख वनस्पति सम्बन्धीका लिखना ठीक हैं और उपर कहे सो कृत्योंसे आप हर्षित होते होवेंगे तब तो वनस्पतिकी बातको लिखके भोले जीवोंको श्रीजिनाज्ञारूपी रत्नसें गेरनेका कार्य्य करना सो प्रत्यक्ष मिथ्यात्वका कारण है, और विद्वान् पुरुषोंके आगे हास्यका हेतु है सो बुद्धिजन पुरुष विचार लेना ;—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ौर भी दूसरा सुनो अचेतनरूप वनस्पतिको यह अ. धक मास उत्तम है किंवा तुच्छ है इस रीतिका कोई भी प्रकारका ज्ञान नही है इसलिये (अच्छी जातिकी वनस्पति भी अधिक मासको तुच्छही जानके प्रफुल्लित नही होती है) यह अक्षर न्यायांभोनिधिजीके प्रत्यक्ष मिथ्या है।

और भी मेरेकों बड़े ही अफसोसके साथ लिखना पड़ता है कि न्यायाम्भोनिधिजीनें उपरमें वनस्पति सम्बन्धी उटपटाङ्ग लेख लिखते कुछ भी पूर्वापरका विचार विवेक बुद्धिसें नही किया मालुम होता है क्योंकि-प्रथम। (अधिकमास को अचेतनरूप वनस्पति भी नहीं अङ्गीकार करती है) यह अक्षर लिखे फिर आगे श्रीआवश्यक निर्युक्ति की गाथा (शास्त्रकार महाराजके विरुद्धार्थमें) लिखके भी भावार्थमें—दूसरा। (हे अम्ब अधिक मासमें कणियरको प्रफुल्लित देखके तेरेको फुलना उचित नही है) यह लिख दिया है इससें सिद्ध हुवा कि अधिकमासको वनस्पति जो कणियरकी जाति उसीनें अङ्गीकार किया और प्रफुल्लित हुई और वनस्पतिकी जाति अंबा भी अधिक मासको अङ्गीकार करके प्रफुल्लित होताथा तब उसकों कहा कि तेरेकों फूलना उचित नही है।

अब पाठकवर्ग विचार करो कि प्रथमका लेखमें अधिक मासको वनस्पति अङ्गीकार नही करनेका लिखा और दूसरे लेखमें अधिक मासमें वनस्पतिकों फूलना अङ्गीकार करनेका लिखदिया इसलिये जो न्यायाम्भोनिधिजी प्रथम का अपना लेख सत्य ठहरावेंगे तो दूसरा लेख मिथ्या हो जावेगा और दूसरा लेखको सत्य ठहरावेंगे तो प्रथमका लेख

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिथ्या हो जावेगा इसलिये पूर्वापर विरोधी (विसम्वादी) वाक्य लिखनेका जो विपाक श्रीधर्मरत्नप्रकरणकी वृत्तिमें कहा है (सो पाठ इसी ही पुस्तकके पृष्ठ ८६ । ८७ । ८८ में छप गया है) उसीके अधिकारी न्यायाम्भोनिधिजी ठहर गये सो पाठकवर्ग विचार लेना ;—

और अधिकमासकों तुच्छ न्यायाम्भोनिधिजी ठहराते हैं सो तो निःकेवल श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातनाका कारण करते है क्योंकि श्रीतीर्थङ्करादि महाराजोंने अधिकमासको उत्तम माना है (इसका अधिकार इसी ही पुस्तकमें अनेक जगह वारम्वार छपगया है और आगे भी छपेगा) इस लिये अधिकमासकों तुच्छ न्यायाम्भोनिधिजी को लिखना उचित नही था सो भी पाठकवर्ग विचार लो ;—

और आगे फिर भी जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ ९३ की प्रथम पंक्तिसें १२ वी पंक्ति तक ऐसे लिखा है कि (हे परीक्षक और भी युक्तियां आपको दिखाते है कि यह जगत्‌के लोक भी बारामासमें जिस जिस मासके साथ प्रतिबद्धकार्य्य होते है सो तिस तिस मासमें अधिक मासको छोड़के अवश्य ही करते है जैसे कि आसोज मास प्रतिबद्ध दीवालीपर्व अधिक मासको छोड़के आसोज मासमें ही करते है और आम्बलकी ओली छ मासके अन्तरमें करनेकी भी अधिक मासको छोड़के आसोज मासमें और चैत्रमासमें करते है ऐसे अनेक लौकिक कार्य्य भी अपने अपने मासमें ही करते है परन्तु आगे पीछे कोई भी नही करते है तो हे मित्र भाद्रवमास प्रतिबद्ध ऐसा परम पर्युषणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्व और मासमें करना यह सिद्धान्तसें भी और लौकिक रीतिसें भी विरुद्ध है) यह न्यायाम्भोनिधिजी का उपरोक्त अपनी पुस्तकके पृष्ठ ८३ की पंक्ति १२ वी तकका लेख है ;—

इस उपरके लेखकी विशेष समीक्षा खुलासाके साथ लौकिक और लोकोत्तर दृष्टान्त सहित युक्ति पूर्वक पांचवें महाशय न्यायरत्नजी श्रीशान्तिविजयजीके नामसें और सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामसें करनेमें आवेगा तथापि संक्षिप्तसें इस जगह भी करके दिखाता हुं जिसमें प्रथमतो अधिक मासको निषेध करने के लिये न्यायाम्भोनिधिजी तथा इन्होंके परिवारवाले और इन्होंके पक्षधारी एक दो छोड़के हजारों कुयुक्तियां करके बालदृष्टि रागियों को दिखाकर अपने दिलमें खुसी माने परन्तु जैन शास्त्रोंकी स्याद्वादशैलीके जानकार आत्मार्थी विद्वान् पुरुषोंके आगे एक भी कुयुक्ति नही चल सकती है किन्तु कुयुक्तियांके करने वाले उत्सूत्र भाषणका दूषणके अधिकारी तो अवश्यही होते हैं इस लिये उपरके लेखमें न्यायांभोनिधिजीनें युक्तियां के नामसें वास्तविकमें कुयुक्तियां दिखा करके अधिक मासको गिनतीमें निषेध करना चाहा सो कदापि नही हो सकता है क्योंकि दीवाली (दीपोत्सव) और ओलियां यह दोनु कार्य्य जैन शास्त्रोंमें लोकोत्तर पर्वमे माने हैं सो प्रसिद्ध है तथापि न्यायांभोनिधिजी ओलियांकों लौकिक पर्व लिखते कुछ भी मिथ्या भाषणका भय न किया मालुम होता है, और दीवाली शास्त्रकारोंने कार्त्तिक मास प्रतिबद्ध कही है सो जगत् प्रसिद्ध है और मारवाड़ पूर्व पञ्जाबादि देशोंके जैनी अच्छी तरहसें जानते हैं और खास न्यायांभोनिधिजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पञ्जाब देशके होते भी और अनेक शास्त्रोंमें कार्त्तिकमासका खुलासासें लिखा होते भी भोले जीवोंके आगे अपनी बात जमानेके लिये अपने देशकी और शास्त्रकी बातको छोड़कर अनेक शास्त्रोंका पाठ भी छोड़ते हुए, गुजराती भाषाका प्रमाण लेकरके आसोज मास प्रतिबद्धा दीवाली लिखते हैं सो भी विचारने योग्य बात है और अधिक मास होनेसें अवश्य करके सातमें मासे ओलियां करनेमें आती हैं तथापि न्यायांभोनिधिजीनें अधिक मास होते भी छ मासके अन्तर में लिखा हैं सो मिथ्या है और जैन शास्त्रोंमें तथा लौकिक में जो जो मास तिथि नियत पर्व है सो अधिक मास होने सें प्रथम मासका प्रथम पक्षमें और दूसरे मासका दूसरा पक्षमें करनेमें आते हैं इस बातका विशेष निर्णय शङ्का समाधान सहित उपरोक्त पांचमें और सातमें महाशयके नामकी समीक्षामें आगे देखके सत्यासत्यका पाठक वर्ग स्वयं विचार करलेना ;—

और आगे फिर भी न्यायांभोनिधिजीनें लिखा है कि (हे मित्र भाद्रव मास प्रतिबद्ध ऐसा परम पर्युषणापर्व और मासमें करना यह सिद्धान्तसें भी और लौकिक रीतिसें भी विरुद्ध है) इस लेखसें न्यायांभोनिधिजी दो श्रावण होते भी भाद्रव मास प्रतिबद्ध पर्युषणा ठहरा करके दो श्रावण होनेसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालोंकों सिद्धान्तसें और लौकिक रीतिसें भी विरुद्ध ठहराते हैं सो निःकेवल आपही उत्सूत्र भाषण करते हैं क्योंकि दो श्रावण होनेसें श्रीखरतरगच्छके तथा श्रीतपगच्छादिके अनेक पूर्वाचार्य्योंने दूसरे श्रावणमें पर्युषणापर्व करनेका अनेक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शास्त्रोंमें कहा है और प्राचीन कालमें भी मासवृद्धि होने से श्रावण मास प्रतिबद्ध पर्युषणा थी इसलिये मासवृद्धि दो श्रावण होते भी भाद्रव मास प्रतिबद्ध पर्युषणा ठहराना शास्त्रविरुद्ध है और दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालोंको सिद्धान्तसें और लौकिक रीतिसें विरुद्ध ठहराना सो भी प्रत्यक्ष मिथ्या भाषण कारक हैं इसका उपरमें अनेक जगह विस्तारसें छपगया है और आगे विशेष विस्तार सातमें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी समीक्षामें करनेमें आवेगा ;—

और आगे फिर भी न्यायांभोनिधिजीनें पर्युषणा सम्बन्धी अपना लेख पूर्ण करते अन्तमें पृष्ठ ९३ पंक्ति१३ सें पंक्ति १९ तक ऐसे लिखा है कि [पूर्वपक्ष पृष्ठ १५७ में लिखे हुए पाठका कुछ भी समाधान न किया—

उत्तर–हे परीक्षक अधिक मासको जब कालचूला मान लिया तो शास्त्रके लिखे हुए ५० दिन भी सिद्ध होगये और ७० दिन भी सिद्ध होगये तो फिर काहेको अपने अपने मासमें नियत धर्मकार्य्य छोड़के और और कल्पना करके आग्रह करना चाहिये] यह उपरका लेख न्यायांभोनिधिजीका शास्त्रोंके विरुद्ध और मायावृत्तिका भोले जीवोंको भ्रमानेके वास्ते है क्योंकि प्रथम तो शुद्धसमाचारीके पृष्ठ १५७ में श्रीकल्पसूत्रका मूल (सवीसइ राइमासे इत्यादि) पाठ लिखा है और दूसरा श्रीबृहत्कल्पचूर्णिका पाठसें प्राचीन-कालकी अपेक्षायें पांच पांच दिनकी वृद्धि करते दशवें पञ्चक में पचास दिने पर्युषणा दिखाई है और उसी श्रीबृहत्कल्पकी चूर्णिमें अधिक मासको निश्चयके साथ अवश्य गिनतीमें लेना कहा है जिसका पाठ आगे छठे महाशय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीवल्लभविजयजीके नामकी समीक्षामें लिखनेमें आवेगा, इसलिये शुद्ध समाचारीकी पुस्तकके पृष्ठ १५७ का पाठ सम्बन्धी पूर्वपक्ष उठाकर उसीका उत्तरमें अधिक मासकी गिनती निषेध करना सो तो प्रत्यक्ष न्यायाम्भोनिधिजीका शास्त्र विरुद्ध उत्सूत्र भाषण रूप है ;—

और दूसरा यह भी सुन लीजीये कि—श्रीनिशीथ चूर्णिकार श्रीजिनदास महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर महाराजनें और श्रीदशवैकालिक सूत्रके प्रथम चूलिकाकी बृहद्वृत्तिकार सुप्रसिद्ध श्रीमान् हरिभद्र सूरिजी महाराजनें अधिकमासको कालचूलाकी उत्तम ओपमा गिनती करने योग्य लिखी है तथापि इन महाराजके विरुद्धार्थमें न्यायाम्भोनिधिजी इतने विद्वान् होते भी अधिक मासको कालचूला मानते भी निषेध करते है सो बड़ी ही विचारने योग्य आश्चर्य्य की बात है ;—

और दो श्रावण होनेसें भाद्रपदतक ८० दिन होते है तथा दो आश्विन होनेसें कार्त्तिक तक १०० दिन होते है तथापि ८० दिनके ५० दिन और १०० दिनके ७० दिन न्यायाम्भोनिधिजीनें अपनी कल्पनासें कालचूलाके बहाने बनाये सो कदापि नही बन सकते है इसका विस्तार तीनों महाशयों की और खास न्यायाम्भोनिधिजीकी भी समीक्षा में अच्छी तरहसें उपरमें छप गया है सो पढ़के सर्वनिर्णय कर लेनाः—और दो श्रावण मास होनेसें दूसरे श्रावण मास प्रतिबद्ध पर्युषणा पर्व है इसलिये दो श्रावण होते भी भाद्रव मासकी भ्रान्ति करना शास्त्र विरुद्ध है और अब न्यायाम्भोनिधिजीके नाम की पर्युषणा सम्बन्धी समीक्षाके अन्तमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीजिनाज्ञाके आराधक सत्यग्राही सज्जन पुरुषोंसें मेरा यही कहना है कि जैसे पूर्वोक्त तीनों महाशयोंने अपने विद्वत्ताकी कल्पित बात जमानेके लिये पूर्वापर विरोधी तथा उटपटाङ्ग और श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्ध और अनेक शास्त्रोंके पाठोंको उत्थापन करके अपना अनन्त संसार वृद्धिका भय नही किया तैसें ही चौथे महाशय न्यायाम्भोनिधिजीनें भी तीनों महाशयोंका अनुकरण करके पूर्वापर विरोधी तथा उटपटाङ्ग और श्रीतीर्थङ्कर-गणधरादि महाराजोंके विरुद्ध उत्सूत्र भाषण करनेमें कुछ भी भय नही किया परन्तु मैंने भी भव्यजीवोंके शुद्ध श्रद्धा होनेके उपगारकी बुद्धिसें शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक सत्य बातोंका देखाव करके कल्पित बातोंकी समीक्षाकर दिखाइ है उसीको पढ़के सत्य बातका ग्रहण और असत्य बातका त्याग करके अपनी आत्माका कल्याण करने में उद्यम करेंगे और दृष्टिरागका पक्षपातकों न रखेंगे यही मेरा पाठक वर्गको कहना है ;—

और न्यायाम्भोनिधिजीके लेख पर अनेक पुरुष संपूर्ण रीतिसें पूरा भरोसा रखतेथे कि न्यायाम्भोनिधिजी जो लिखेंगे सो शास्त्रानुसार सत्यही लिखेंगे ऐसा मान्यकरके उन्होंसें पूज्यभाव बहोत पुरुषोंका है। और मेरा भी था परन्तु शास्त्रोंका तात्पर्य्य देखनेसें जो जो न्यायांभोनिधिजीनें महान् उत्सूत्र भाषणरूप अनर्थ किया सो सो सब प्रगट होगया जिसका नमुनारूप पर्युषणा सम्बन्धी न्यायाम्भोनिधिजीनें कितनी जगह प्रत्यक्ष मिथ्या और उत्सूत्र भाषण किया है सो तो उपरकी मेरी लिखी हुई समीक्षा पढ़नेसें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पाठकवर्गकों प्रत्यक्ष दिख जावेगा तथा और भी न्यायाम्भोनिधिजीनें जैनसिद्धान्तसमाचारी नामकी पुस्तकमें अनुमान १५० अथवा १६० शास्त्रोंके विरुद्धार्थमें अनेक जगह प्रत्यक्ष मिथ्या तथा अनेक जगह मायावृत्तिरूप और अनेक जगह शास्त्रोंके आगे पीछेके पाठ छोड़के अधूरे अधूरे तथा शास्त्र कारके अभिप्रायके विरुद्ध अनेक जगह अन्याय कारक और अनेक सत्यबातोंका निषेध करके अपनी कल्पित बातोंका उत्सूत्र भाषणरूप स्थापन इत्यादि महान् अनर्थ करके भोले दृष्टिरागी गच्छ कदाग्रही बालजीवोंकों श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञाका मोक्षरूपी रस्तापरसें गेरके संसाररूपी मिथ्यात्व का रस्तामें फसानेके लिये जैन सिद्धान्त समाचारी, पुस्तक का नाम रखके वास्तविकमें अनन्त संसारकी वृद्धिकारक मिथ्यात्वरूप पाखण्डकी समाचारी न्यायाम्भोनिधिजीनें प्रगट करके अपनी आत्माकों इस संसाररूपी समुद्रमें क्या क्या इनामके योग्य ठहराई होगी तथा अब इन्होंके परिवार वाले और इन्होंके पक्षधारी भी उसी मुजब वर्तते है जिन्होंकों इस संसारमें क्या इनाम प्राप्त होगा सो श्रीज्ञानीजी महाराज जानें ;—इस लिये श्रीसङ्घकों और न्यायाम्भोनिधि जीके पक्षधारी तथा इन्होंके परिवार वालोंको उपर की पुस्तक सम्बन्धी बातोंके लिये मेरा अभिप्राय इस पुस्तकके अन्तमें विनती पूर्वक जाहिर करनेमें आवेगा और पांचवें महाशय न्यायरत्नजी श्रीशान्तिविजयजी तथा छठे महाशय श्रीवल्लभविजयजी और सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी समीक्षा में प्रसङ्गोपात थोड़ी थोड़ी बातोंका उपर की पुस्तक सम्बन्धी दर्शाव भी करनेमें आवेगा ;—

इति चौथें महाशय न्यायाम्भोनिधिजी श्रीआत्मारामजीके नामकी पर्युषणा सम्बन्धी संक्षिप्त समीक्षा समाप्तः ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब आगे पांचवें महाशय न्यायरत्नजी श्रीशान्तिविजयजीने मानवधर्मसंहिता नामा पुस्तकमें जो पर्युषणा सम्बन्धी लेख अधिक मासको निषेध करनेके लिये लिखा है उसकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हुं जिसमें प्रथमतो मानवधर्मसंहिता पुस्तकके पृष्ठ ८०० की पंक्ति १७ वीं सें पृष्ठ ८०१ की पंक्ति २१॥ तक जैसा न्यायरत्नजीका लेख है वैसाही नीचे मुजब जानो ;—

[दो श्रावण होतो भी भाद्रवेमें ही पर्युषणापर्व करना चाहिये, अगर कहा जाय कि—आषाढ़सुदी १४ चतुर्दशीसें ५० रोज लेना कहा यह कैसे सबुत रहेगा ? जबाब—कल्पसूत्रकी टीकामें पाठ है कि—अधिकमास कालपुरुषकी चूलिका यानी चोटी है, जैसे किसी पुरुषका शरीर उचाईमें नापा जाय तो चोटीकी लंबाई नापी नही जाती, इसी तरह कालपुरुषकी चोटी जो अधिकमास कहा सो गिनतीमें नही लिया जाता, कल्पसूत्रकी टीकाका पाठ कालचूलेत्यविवक्षणाद्दिनानां पञ्चाशदेव,—अगर लिया जाता हो तो पर्युषणा पर्व—दूसरे वर्ष श्रावणमें और इस तरह अधिक महिनोंके हिसाबसें हमेशां उक्त पर्व फिरते हुवे चले जायगें, जैसे मुसलमानोंके ताजिये—हर अधिक मासमें बदलते रहते हैं, दूसरा यह भी दूषण आयगा कि—वर्षभरमें जो तीन चातुर्मासिक प्रतिक्रमण किये जाते हैं उनमें पञ्चमासिक प्रतिक्रमणपाठ बोलना पड़ेगा, शीतकालमें और उष्णकालमें तो अधिक महिना गिनतीमें नही लाना और चौमासेमें गिनतीमें लाकर श्रावणमें पर्युषणा करना किस न्यायकी बात हुई ? अगर कहा जाय कि—पचास दिनकी गिनती

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिइ जाती है तो पिछले ७० दिनकी जगह १०० दिन हो जायगें, उधर दोष आयगा, संवत्सरीके पीछें ७० दिन शेष रखना—यह बात समवायाङ्गसूत्रमें लिखी है—उसका पाठ—वासाणं सवीसइराए मासे वइक्कंते सत्तरिराइंदिएहिं सेसेहिं, इसलिये वही प्रमाण वाक्य रहेगा कि—अधिकमास कालपुरुषकी चोटी होनेसें गिनतीमें नही लेना, अधिक महिनेकों गिनतीमें लेनेसें तीसरा यह भी दोष आयगा कि-चौईस तीर्थङ्करोंके कल्याणिक जो जिस जिस महिनेकी तिथिमें आते हैं गिनतीमें वे भी बढ़ जायगें, फिर क्या! तीर्थङ्करोंके कल्याणिक १२० से भी ज्यादे गिनना होगा? कभी नही, इस हेतुसें भी अधिकमास नही गिना जाता अधिक महिनेके कारणसें कभी दो भाद्वे हो तो दूसरे भाद्वेमें पर्युषणा करना चाहिये जैसें दो आषाढ़महिने होते हैं तब भी दूसरे आषाढ़में चातुर्मासिककृत्य किये जाते हैं वैसे पर्युषणा भी दूसरे भाद्वेमें करना न्याययुक्त है।]

अब न्यायरत्नजीके उपरका लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हुं जिसमें प्रथमतो (दो श्रावण हो तो भी भाद्रवेंमेंही पर्युषणापर्व करना चाहिये) यह लिखना न्यायरत्नजीका शास्त्रोंसें विरुद्ध है क्योंकि खास न्यायरत्नजी-केही परमपूज्य श्रीतपगच्छके पूर्वाचार्य्योंनें दो श्रावण होने सें दूसरे श्रावणमें पर्युषणापर्व करनेका कहा है जिसका अधि-कार उपरमें अनेक जगह और खास करके चारों महाशयोंके नामकी समीक्षामें अच्छी तरहसें छपगया है इसलिये दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें अपने पूर्वजोंके विरुद्धार्थमें पर्यु-षणापर्व स्थापन करना न्यायरत्नजीको उचित नही है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और दूसरा यह है कि श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महान् उत्तम पुरुषोंने सूत्र, चूर्णि, भाष्य, वृत्ति, निर्युक्ति प्रकरणादि अनेक शास्त्रोंमें मासवृद्धिके अभावसें भाद्रपदमें पचास दिने पर्युषणा करनी कही है परन्तु एकावन ५१ में दिने श्रीजिनाज्ञाके आराधक पुरुषोंकों पर्युषणा करना नही कल्पे और एकावन दिने पर्युषणा करने वालोंकों श्री जिनाज्ञाके लोपी कहे है सो प्रसिद्ध है तथापि न्यायरत्नजी इतने विद्वान् हो करके भी श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके वचनकों प्रमाण न करते हुए अनेक सूत्र, चूर्ण्यादि शास्त्रोंके पाठोंको उत्थापते हुए मासवृद्धि दो श्रावण होते भी ८० दिने भाद्रपदमें पर्युषणापर्व करनेका लिखते कुछ भी उत्सूत्र भाषणका भय नही करते हैं यह बड़ाही अफसोस है;—

और दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेसें प्रत्यक्ष ८० दिन होते हैं तथा अधिकमास भी शास्त्रानुसार और न्याययुक्ति सहित अवश्य निश्चय करके गिनतीमें सर्वथा सिद्ध है सो उपरमें अनेक जगह छपगया है इसलिये अधिक मासकी गिनती निषेध करना भी उत्सूत्र भाषणरूप अन्याय कारक है तथापि न्यायरत्नजीनें उत्सूत्र भाषणका विचार न करते अधिक मासको गिनतीमें निषेध करनेके लिये जो जो विकल्प करके शास्त्रोंके विरुद्धार्थमें भोले जीवोंकी श्रद्धाभङ्ग होनेके लिये लिखा है उसीकी समीक्षा करता हुं—जिसमें प्रथमतो दो श्रावण होनेसें भाद्रपद तक ८० दिन होते हैं जिसका अपनी कल्पनासें ५० दिन बनानेके लिये न्यायरत्नजी लिखते है कि—[कल्पसूत्रकी टीकामें पाठ है कि अधिकमास काल-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुरुषकी चूलिका यानी चोटी है जैसे किसी पुरुषका शरीर उचाईमें नापा जाय तो चोटीकी लंबाई नापी नही जाती है इसी तरह कालपुरुषकी चोटी जो अधिकमास कहा सो गिनतीमें नही लिया जाता कल्पसूत्रकी टीकाका पाठ—कालचूलेत्यविवक्षणाद्दिनानां पञ्चाशदेव]

इस उपरके लेखमें न्यायरत्नजीने अधिकमासको कालपुरुषकी चोटी लिखकर गिनतीमें नही लेनेका ठहराया है सो निःकेवल श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणरूप है क्योंकि श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने अधिक मासको दिनोंमें पक्षोंमें मासोंमें वर्षोंमें अनादिकाल हुवा निश्चय करके गिनतीमें लिया है आगे लेवेंगे और वर्त्तमान कालमें भी श्रीसीमंधर स्वामीजी आदि तीर्थङ्कर गणधरादि महाराज महाविदेह क्षेत्रमें अधिक मासको गिनतीमें लेते हैं तैसेही इस पञ्चमें कालमें भरत क्षेत्रमें भी अनेक आत्मार्थी पुरुष अनेक शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक देशकालानुसार अधिक मासको अवश्यही गिनतीमें लेते हैं इस बातका अनेक जगह उपरमें अधिकार छपगया है और आगे भी छपेगा इसलिये अधिकमासकों गिनतीमें नही लेनेका ठहराना न्यायरत्नजीका उत्सूत्र भाषणरूप होनेसें प्रमाणिक नही हो सकता है।

और न्यायरत्नजी अधिक मासको कालपुरुषकी चूलिका कहकर चोटी अर्थात् घासकी तरह केशांकी चोटीवत् लिखते हैं सो भी शास्त्रोंके विरुद्ध है क्योंकि श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंनें चूलिका याने शिखरकी ओपमा गिनती करने योग्य दिवी है। जैसे। लक्ष योजनका सुमेरु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्वतके चालीश योजनका शिखरको तथा अन्य भी हरेक पर्वतोंके शिखरों कों और देव मन्दिरोंके शिखरोंको शास्त्रकारोंने क्षेत्रचूलाकी ओपमा दिवी है नतु केशांकी चोटीवत् घासकी, और श्रीपञ्चपरमेष्टि मन्त्रके शिखररूप चार पदोंको तथा श्रीआचाराङ्गजी सूत्रके शिखररूप दो अध्ययनकों और श्रीदशवैकालिकजी सूत्रके शिखर-रूप दो अध्ययनकों शास्त्रकारोंनें भावचूलाकी ओपमा दिवी है जिसकी अवश्यही गिनती करनेमें आती हैं। तैसेही। चन्द्रसंवत्सररूप कालपुरुषके शिखररूप अधिक मासकों कालचूलाकी उत्तम ओपमा गिनती करने योग शास्त्रकारोंनें दिवी है और अधिक मास होनेसें तेरह मासोंका अभिवर्द्धितसंवत्सर श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंनें कहा है सो अनेक शास्त्रोंमें प्रसिद्ध है और खास करके अधिक मासको कालचूलाकी उत्तम ओपमा लिखने वाले श्रीजिनदास महत्तराचार्य्यजी पूर्वधर महाराज भी निश्चय करके गिनतीमें लेनेका लिखते हैं, और भी दूसरा सुनों कि—जैसे। श्रीतीर्थङ्कर महाराजोंके निज निज अंगुलियोंके प्रमाणसें मस्तक तक शरीरकी लंबाई १०८ अंगुलीकी होती है और मस्तक पर बारह अंगुलीकी उष्णिका (शिखा) कों शिखररूप चूलाकी ओपमा है जिसकों सामिल लेकर १२० अंगुलीका श्रीतीर्थङ्कर महाराजोंके शरीरके गिनतीका प्रमाण सबी शास्त्रकारोंने कहा है। तैसेही। संवत्सररूप कालपुरुष का निज स्वभाविक प्रमाण ३५४ दिन, ११ घटीका और ३६ पलका है तथा संवत्सररूप कालपुरुषका शिखररूप अधिक मासको कालचूलाकी ओपमा है जिसका प्रमाण २९ दिन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३० घटीका और ५८ पलका है जिसको सामिल लेकर ३८३ दिन ४२ घटीका और ३४ पल प्रमाणे तेरह मासोंकी गिनती का हिसाबसें अभिवर्द्धित संवत्सर सबी शास्त्रकारोंनें और खास श्रीतपगच्छके पूर्वाचार्य्योंने भी कहा है। और अधिक मासको कालचूला कहनेसें भी गिनतीमें अवश्यही लेना शास्त्रकारोंने कहा है उस सम्बन्धी इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ४८ सें ६५ तक तथा और भी अनेक जगह छपगया है सो पढ़नेसें सर्व निःसन्देह हो जावेगा इसलिये न्यायरत्नजी अधिक मासको कालपुरुषकी चोटी लिखकरके गिनतीमें नही लेनेका ठहराते हैं सो वृथा अपनी कल्पनासें भोले जीवोंकी शास्त्रानुसार सत्य बात परसें श्रद्धाभङ्ग कारक उत्सूत्र भाषण करते हैं सो उपरके लेखसें पाठकवर्ग विशेष अपनी बुद्धिसें भी विचार सकते हैं ;—

और श्रीकल्पसूत्रकी टीकाका प्रमाण न्यायरत्नजीनें दिखाया सो तो (अंधेकुये थोथेधान, जैसेगुरु तैसेयजमान) की तरह करके अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध उत्सूत्र भाषणरूप अन्ध परम्पराका मिथ्यात्वको पुष्ट किया है क्योंकि प्रथम श्रीधर्मसागरजीनें श्रीकल्पकिरणावलीसें श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्धार्थमें अपनी कल्पनासें जैन शास्त्रोंके अतीव गम्भीरार्थके तात्पर्य्यकों समझे बिना उत्सूत्र भाषणरूप जैसे तैसे लिखा है उसीकों देखके दूसरे श्रीजय-विजयजीने श्रीकल्पदीपिकामें तथा तीसरे श्रीविनयविजय जीनें श्रीसुखबोधिकामें भी उसी तरहके उत्सूत्र भाषणके गप्पोंको लिखे हैं और उसीका शरणा लेकरके चौथे न्यायांभो निधिजीनें भी जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकमें अपनी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चातुराईके साथ उत्सूत्र भाषणकी बाते प्रगट किवी है और ऐसेही गाडरीया प्रवाहवत् उसी बातोंकों वर्त्तमानमें न्यायरत्नजी जैसे भी लिखते हैं परन्तु तत्त्वार्थको जरा भी नही विचारते हैं क्योंकि श्रीविनयविजयजी वगैरह चारो महाशयोंनें कालचूलाके नामसें अधिक मासकों गिनतीमें नही लेनेका शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमे ठहराया है जिसकी समीक्षा अच्छी तरहसें इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ५८सें यावत् पृष्ठ २१६ तक उपरमें छप चुकी है सो पढ़नेसें सर्व निर्णय हो जावेगा तथापि श्रीविनयविजयजी कृत श्रीसुख-बोधिकाके अनुसार अपनी अपनी चातुराइसें विशेष कुयुक्तियांके विकल्प उठा करके भोले जीवोंकों भ्रममें गेरनेके लिये न्यायरत्नजी वगैरहनें वृथा परिश्रम किया है उन कुयुक्तियांका समाधान युक्तिपूर्वक लिखना यहां सरू है जिसमें न्यायरत्नजीनें श्रीकल्पसूत्रकी टीकाका पाठ श्री-विनयविजयजी कृत दिखाया सो उत्सूत्र भाषणरूप होनेसें मैंनें उसीकी समीक्षा तो पहिलेही कर दिखाई है इसलिये श्रीविनयविजयजीकृत उत्सूत्र भाषण रूप उपरके पाठकों न्यायरत्नजीको लिखना भी उचित नही है और पक्ष-ग्राहियोंके सिवाय आत्मार्थी पुरुषोंकों मान्य करना भी उचित नही है याने सर्वथा त्यागने योग्य है सो उपरके लेखसें पाठकवर्ग भी अच्छी तरहसें विचार लेना ;—

और आगे फिर भी अधिक मासको गिनतीमें नही लेनेके लिये न्यायरत्नजीनें अपनी चातुराईको प्रगट करके लिख दिखाई है कि (अगर लिया जाता हो तो पर्युषणा पर्व दूसरे वर्ष श्रावणमें और इस तरह अधिक महिनोंके

हिसाबसें हमेशां उक्त पर्व फिरते हुवे चले आयगें जैसे मुसल्मानोंके ताजिये हर अधिकमासमें बदलते रहते हैं) न्यायरत्नजीका इस लेखपर मेरेको बड़ाही आश्चर्य्य सहित खेद उत्पन्न होता है और न्यायरत्नजीकी बड़ीही अज्ञता प्रगट दिखती है सोही दिखाता हुं–जिसमें प्रथम तो आश्चर्य्य उत्पन्न होनेका तो यह कारण है कि स्याद्वाद, अनेकांत, अविसंवादी, अनन्तगुणी, परमोत्तम ऐसे श्रीसर्वज्ञ भगवान् श्रीजिनेन्द्र महाराजोंके कथन करे हुवे अत्युत्तम अहिंसा धर्मके वृद्धिकारक ऊर्द्धगतिका रस्तारूप धर्मध्यान, दानपुण्य परोपकारादि उत्तमोत्तम शुभकार्य्योंका निधि शान्त चित्तको करने वाले और पापपङ्क (कर्मरूप मेल) को नष्टकरने वाले श्रीपर्युषणा पर्वके साथ उपरोक्त गुणोसें प्रतिकुल मिथ्यात्वी और वितविटंबक पाखंडरूप अधर्मकी वृद्धिकारक तथा छ (६) कायके जीवोंका विनाश कारक नरकादि अधोगतिका रस्तारूप आर्त्तरौद्रादि युक्त ताजियांका दृष्टान्त न्यायरत्नजीनें दिखाया इसलिये मेरेकों आश्चर्य्य उत्पन्न हुवा कि जो न्यायरत्नजीके अन्तःकरणमें सम्यक्त्व होता तो चिन्तामणिरत्नरूप श्रीपर्युषणापर्वके साथ काचका टुकड़ारूप ताजियांका दृष्टान्त लिखके अपनी कल्पित बातको जमानेके लिये अधिक मासका निषेध कदापि नही दिखाते इस बातकों पाठकवर्ग भी विचार लेना ;—

और बड़ा खेद उत्पन्न होनेका तो कारण यह है कि श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंने और खास न्यायरत्नजीके पूज्य अपने श्रीतपगच्छके ही पूर्वा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार्य्योंने अनेक शास्त्रोंमें अधिकमासको सर्वथा करके परि-
पूर्ण रीतिसें विस्तारपूर्वक खुलासाके साथ निश्चय करके
अवश्यही गिनतीमें लिया है, जिसमें श्रीचन्द्रप्रज्ञप्ति १ तथा
वृत्ति २ श्रीसूर्य्यप्रज्ञप्ति ३ तथा वृत्ति ४ श्रीज्योतिषकरण्ड
पयन्ना ५ तथा वृत्ति ६ श्रीप्रवचनसारोद्धार ७ तथा वृत्ति ८
श्रीसमवायाङ्गजीसूत्र ९ तथा वृत्ति १० श्रीजम्बुद्वीपप्रज्ञप्ति ११
तथा तीनकी दो (२) वृत्ति १३ इत्यादि अनेक शास्त्रोंके
पाठ न्यायरत्नजीनें देखे है जिसमें अधिक मासको गिनतीमें
लिया है जिसमें भी श्रीज्योतिषकरण्डपयन्नाकी वृत्ति तो
न्यायरत्नजीनें एकवार नही किन्तु अनेकवार देखी है उसी
में तो विशेष करके समयादि कालकी व्याख्या किवी है कि
असंख्याता समय जानेसें एक आवलिका, १, ६७, ७७, २१६,
आवलिका जानेसें एकमुहूर्त्त होता है त्रीश मुहूर्त्तसें एक
अहोरात्रि रूप दिवस होता है ऐसे पन्दरह दिवस जानेसें
एकपक्ष होता है दो पक्षसें एकमास होता है दो माससें
एक ऋतु होता है छ ऋतुयेंासें एक सम्वत्सर होता है इसी
ही तरहसें नक्षत्र सम्वत्सरके, चन्द्रसम्वत्सरके, ऋतु सम्वत्सर
के, सूर्य्यसम्वत्सरके, और अभिवर्द्धितसम्वत्सरके, मुहूर्त्तोंका
जूदा जूदा हिसाब विस्तारपूर्वक दिखाकर पांच सम्वत्सरोंका
एक युगके ५४९०० मुहूर्त्त दिखाये हैं जिसमें एक युगके पांच
संवत्सरोमें दो अधिक मासके भी मुहूर्त्तोंकी गिनती साथमें
लेनेसेंही ५४९०० मुहूर्त्तका हिसाब मिलता है अन्यथा नहीं
इस तरहसें कालकी व्याख्या समय, आवलिका, मुहूर्त्त,
दिन, पक्ष, मास, वर्ष, युग, पूर्वाङ्ग, पूर्व, पल्योपम, सागरो-
पम और उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी कालसें अनन्तकालकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व्याख्याकी गिनतीमें अधिक मासको प्रमाण किया है और अधिक मासकी उत्पत्तिका कारण कार्य्यादि गिणित पूर्वक श्रीमलयगिरिजी महाराजने श्रीज्योतिषकरण्डपयन्नाकी वृत्तिमें विस्तार किया है इस ग्रन्थको न्यायरत्नजीने अनेक वार देखा है और श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि सर्वज्ञ महाराजोंने अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण किया है सो अनेक शास्त्रोंके पाठ प्रसिद्ध है और खास न्यायरत्नजीने मानवधर्म्मसंहिता पुस्तकके पृष्ठ २४ की पंक्ति २० वी सें २२॥ पंक्ति तक ऐसे लिखा है कि (उत्सूत्र भाषण समान कोई बड़ा पाप नही सब क्रियाधरी रहेगी उक्त पाप दुर्गतिको ले जायगा जमालिजीने गौतमगणधर जैसी क्रिया किइ लेकिन देख लो किस गतिको जाना पड़ा) और पृष्ठ ५८८ की पंक्ति १४–१५ में फिर भी लिखते हैं कि (सर्वज्ञ प्रणीत शास्त्रके पाठको उत्थापन करेगा उसका निर्वाण होना मुश्किल है) इस लेखपरसें सज्जन पुरुषोंको विचार करना चाहिये कि–श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि सर्वज्ञ महाराजोंने अधिकमास को गिनतीमें प्रमाण किया हुवा है सो अनेक शास्त्रोंके पाठ प्रसिद्ध है तथापि पक्षपातके जोरसें न्यायरत्नजीने अनन्ततीर्थङ्कर गणधरादि सर्वज्ञ भगवानोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषण करनेके लिये सर्वज्ञ प्रणीत अनेक शास्त्रोंके पाठोंको उत्थापन करके उत्सूत्र भाषणका बड़ा भारी पाप दुर्गतिको देनेवाला तथा संसारमें रुलानेवाला अपना लिखा हुवा उपरका लेखको भी सर्वथा भूल गये इसलिये मेरेकों बड़ा खेद उत्पन्न हुवा कि न्यायरत्नजी जानते हुए भी उत्सूत्र भाषणरूप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संसारकी खाड़में गिरे और अपनी आत्माका बचाव तो करना दूर रहा परन्तु भोले जीवोंको भी उसी रस्ते पहुचाये सो उपरके लेखसें पाठकवर्ग विशेष विचार लेना ;—

और अधिक मासको गिनतीमें निषेध करनेके लिये न्यायरत्नजीनें मुसल्मानोंके ताजिये हरेक अधिक मासके हिसाबसें फिरनेका दृष्टान्त दिखाके सर्वज्ञकथित पर्युषणा पर्व भी अधिक मासके हिसाबसें फिरते रहनेका न्यायरत्न जीनें लिखा सो बड़ी अज्ञता प्रगट किवी है जिसका कारण यह है कि श्रीसर्वज्ञ भगवानोंनें मासवृद्धि हो अथवा न हो तो भी खास करके विशेष जीवदयादिकके ही कारणे वर्षा ऋतुमें आषाढ़ चौमासीसें उपरके लिखे दिनोंके गिनतीकी मर्य्यादा [प्रमाण] सें निश्चय करके श्रावण अथवा भाद्रपद मेंही—कारण, कार्य्य, ऋतु, मास, तिथिका नियमसेंही श्रीपर्युषणापर्वका आराधन करना कहा है तथापि न्यायरत्नजी अधिक मासके हिसाबसें पर्युषणापर्व फिरते हुए चले आनेका लिखकर जैन शास्त्रोंके विरुद्धार्थमें आषाढ़, ज्येष्ठ, वैशाखादिमें पर्युषणा होनेका दिखाते हैं इसलिये न्यायरत्नजीकी अज्ञतामें कुछ कम हो तो पाठकवर्ग तत्त्वार्थकी बुद्धिसें स्वयं विचार लेना ;—

तथा और भी न्यायरत्नजीके विद्वत्ताकी चातुराईका नमुना सुनिये—कि श्रीजैन शास्त्रोंमें पांच प्रकारके संवत्सरों सें एक युगका प्रमाण कहा हैं जिसमें सूर्य्यकी गतिका हिसाबसें सूर्य्यसंवत्सरकी अपेक्षासें जैनमें मासवृद्धिका अभाव हैं परन्तु चन्द्रकी गतिका हिसाबसें चन्द्रसंवत्सरकी अपेक्षासें एक युगकी पूरतीकेही लिये खास दो अधिकमास

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होते हैं जब अधिकमास जिस संवत्सरमें होता है तब उस संवत्सरमें तेरह मास होनेसें संवत्सरका नाम भी अभिवर्द्धित कहा जाता है—अधिक मासको गिनतीमें लिया जिससे संवत्सरका भी प्रमाण वढ़ गया और युगकी पूरतीका भी बरोबर हिसाब मिलगया—अधिक मास अनादिकाल हुए होता रहता है तथा मासवृद्धि हो अथवा न हो तो भी श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने श्रीपर्युषणापर्वका आराधन वर्षा ऋतुमेंही करना कहा है यह बात आत्मार्थी विवेकी विद्वानोंसें छुपी हुई नही है याने प्रसिद्ध है इसलिये श्रीपर्युषणापर्व अधिक मास हो तो भी वर्षा ऋतुके सिवाय और ऋतुयोंमें कदापि नही हो सकते हैं और मुसल्मान लोग तो सिर्फ एक चन्द्र दर्शनकी अपेक्षासें २९ । ३० दिनका महिना मान्यकरके बारह महिनोंके ३५४ दिनका एक वर्ष मानते है और अधिक मासका भिन्न व्यवहारको नही मानते हैं याने चन्द्रके हिसाबसें बारह बारह महिनोंका एक एक वर्ष मानते चले जाते हैं परन्तु अपने माने मास तारीख नियत ताजियें भी करते रहते हैं और जैन तथा दूसरे हिन्दू अधिक मासको मान्य करके तेरह मासोंका वर्ष मानते हैं तथा अपने माने मास, तिथि नियत पर्व भी करते है इसलिये जैन तथा दूसरे हिन्दूयांके तो ऋतु, मास, तिथि नियत पर्व अधिक मास होतो भी फिरते हुए नही चले जाते है परन्तु मुसल्मान लोग अधिक मासको नही मानते हुए अनुक्रमे सीधा हिसाबसें ही वर्त्तते है इस लिये लौकिकमें अधिक मास होनेसें मुसल्मानोंके ताजिये अमुक ऋतुमें तथा अमुक लौकिक मासमें होते हैं यह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नियम नही रहता है याने हर अधिक मासके हिसाबसें पश्चादानुपूर्वीसें अर्थात् आषाढ़, ज्येष्ठ, वैशाख, चैत्र, फाल्गुन, माघ, पौषादि हरेक मासोंमें होते है इसलिये मुसल्मानोंके ताजिये फिरनेका दृष्टान्त लिखके श्रीपर्युषणापर्व फिरनेका दिखाना सो पूरी अज्ञताका कारण है—इसलिये श्रीसर्वज्ञ कथित श्रीपर्युषणापर्व फिरनेका और अधिक मासको गिनतीमें निषेध करनेके संबन्धी मुसल्मानोंके ताजियांका दृष्टान्त उत्सूत्र भाषणरूप होनेसें न्यायरत्नजीको लिखना उचित नही है इस बातको सज्जन पुरुष उपरके लेखसें स्वयं विचार सकते है ;—

और आगे फिर भी न्यायरत्नजीनें अपनी कल्पनासें लिखा है कि (दूसरा यह भी दूषण अयगा कि वर्षभरमें जो तीन चातुर्मासिक प्रतिक्रमण किये जाते है उसमें पञ्चमासिक प्रतिक्रमणका पाठ बोलना पड़ेगा शीतकालमें और उष्ण-कालमें तो अधिक महिना गिनतीमें नही लाना और चौमासेमें गिनतीमें लाकर श्रावणमें पर्युषणा करना किस न्याय की बात हुई) इस लेखसें न्यायरत्नजीनें जैनशास्त्रों का तथा अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण करने वालोंका तात्पर्य्यको समझे बिना दूसरा दूषण लगाया सो मिथ्या-भाषण करके बड़ी भूल करी है क्योंकि जिस चौमासेमें अधिक मास होता है उसीको अभिवर्द्धित चौमासा कहा जाता है संवत्सरवत् अर्थात् जिस संवत्सरमें अधिक मास होता है उसीको अभिवर्द्धित संवत्सर कहते है इसी ही न्यायानुसार अधिक मास होवे तब उस चौमासेमें पञ्चमास तथा संवत्सरमें तेरह मासका पाठ सर्वत्र प्रतिक्रमणमें अवश्य

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ही बोला जाता है इसका विशेष निर्णय सातमें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी समीक्षामें करनेमें आवेगा ;—

और शीतकाल हो तथा उष्णकाल हो अथवा वर्षाकाल हो परन्तु लौकिक पञ्चाङ्गमें जो अधिकमास होगा उसी कालमें अवश्य ही गिनतीमें करके प्रमाण करना यह तो स्वयं सिद्ध न्याययुक्ति की बात है जैसे वर्षाकालमें श्रावण भाद्रपदादि मास बढ़नेसें गिनतीमें लिये जाते है तैसे ही शीतकालमें तथा उष्णकालमें भी जो मास बढ़े सो ही गिनाजाता है इस लिये न्यायरत्नजीनें उपरका लेखमें शीतकालमें और उष्णकालमें अधिक मासको गिनतीमें नही लानेका लिखती वख्त विवेक बुद्धिसें विचार किया होता तो मिथ्या भाषणका दूषण नही लगता सो पाठकवर्ग विचार लेना,—

•और इसके अगाड़ी फिर भी न्यायरत्नजीनें अपनी विद्वत्ताकी चातुराई को प्रगट करनेके लिये लिखा है कि [अगर कहा जाय कि पचाशदिनकी गिनती लिइजाती है तो पिछले ७० दिनकी जगह १०० दिन होजायेगे उधर दोष आयगा संवत्सरीके बाद ७० दिन शेष रखना यह बात समवायाङ्ग सूत्रमें लिखी हैं उसका पाठ—वासाणं सवीसइराइ मासे वइक्कन्ते सत्तरिराइंदिएहिं सेसेहिं,—इस लिये वही प्रमाणवाक्य रहेगा कि अधिक मास कालपुरुषकी चोटी होनेसें गिनतीमें नही लेना] इस लेखपर मेरेको बड़े अफसोसके साथ लिखना पड़ता है कि न्यायरत्नजीकों विद्वत्ताकी चातुराई किस जगहमें चली गई होगी सो अपने नामके विद्यासागरादि विशेषणेको अनुचितरूप कार्य्यकरके उपरके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लेखमें दो श्रावण होनेसें भाद्रपद तक ८० दिन होते हैं जिसके ५० दिन बनालिये और दो आश्विन होनेसें कार्त्तिक तक १०० दिन होते हैं जिसके ७० दिन अपनी कल्पनासें बना लिये परन्तु श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके कथित सूत्र सिद्धान्तोंके पाठोंका उत्थापनरूप मिथ्यात्वका कुछ भी भय नही किया क्योंकि श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने अनेक सूत्र सिद्धान्तोंमें समयादि सूक्ष्मकालकी गिनतीसें एकयुगके दोनुं ही अधिक मासको गिनतीमें लिये है इसका विस्तार उपरमें अनेक जगह छप गया हैं और षट्द्रव्यरूप वस्तुयोंमे एककाल द्रव्यरूप वस्तु भी शाश्वती है जिसके अनन्ते कालचक्र व्यतीत होगय है और आगे भी अनन्ते कालचक्र व्यतीत होवेंगे जिसमें चन्द्र, सूर्य्यके, शाश्वते विमान होनेसें चन्द्रके गतिका हिसाबसें अनन्ते अधिक मास भी श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके सामनें व्यतीत होगये और आगे भी होवेंगे इस लिये सम्यक्त्वधारी मोक्षाभि-लाषी आत्मार्थी प्राणी होगा सो तो कालद्रव्यकी गिनतीके दो अधिक मास तो क्या परन्तु एक समय मात्र भी गिनती में कदापि निषेध नही कर सकता है तथापि न्यायरत्नजी जैनश्वेताम्बर धर्मोपदेष्टा तथा विद्यासागरका विशेषण धारण करते भी श्रीसर्वज्ञ कथित सिद्धान्तोंमें कालद्रव्य रूप शाश्वती वस्तुका एक समयमात्र भी निषेध नही हो सके जिसके बदले एक दम दो मासकी गिनती निषेध करके श्रीजैनश्वेताम्बरमें उत्सूत्र भाषणरूप मिथ्या-त्वके उपदेष्टा होनेका कुछ भी भय नही करते है, हा अतीव खेदः,—इस लेखका तात्पर्य्य यह है कि जैन शास्त्रानुसार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एक समय मात्र भी जो काल व्यतीत हो जावे उसकी अवश्यही गिनती करनेमें आती है तो फिर दो अधिक मासको गिनतीमें लेने इसमें तो क्याही कहना याने दो अधिक मासकी निश्चय करके अवश्यही गिनती करना सोही सम्यक्त्व धारियोंकों उचित है इसलिये दो अधिक मासकी गिनती निषेध करके ८० दिनके ५० दिन और १०० दिनके ७० दिन न्यायरत्नजीनें उत्सूत्र भाषणरूप अपनी कल्पनासें बनाये सो कदापि नही बन सकते है इसलिये दो श्रावण होनेसें अनेक शास्त्रानुसार पचास दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करना और पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन भी अनेक शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक रहते है जिसको मान्य करनेमें कोई दूषण नही हैं तथापि न्यायरत्नजीनें दूषण लगाया सो मिथ्या है इस उपरके लेखका विशेष विस्तार तीनों महाशयोंके नामकी समीक्षामें इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ११७ सें पृष्ठ १२८ तक तथा चौथे महाशयके नामकी समीक्षामें भी पृष्ठ १७४ से पृष्ठ १८५ तक भी अच्छी तरहसें सूत्रकार श्री गणधर महाराजके तथा वृत्तिकार महाराजके अभिप्राय सहित युक्तिपूर्वक छप चुका है सो पढ़नेसे सर्व निर्णय हो जावेगा ;—

तथा थोड़ासा और भी सुन लिजीयें कि, श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें श्रीगणधर महाराजनें तथा वृत्तिकार महाराजनें अनेक जगह खुलासापूर्वक अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण किया है तथापि न्यायरत्नजी हो करके सूत्रकार महाराजके विरुद्धार्थमें अधिक मासकी गिनती निषेध करके मूलसूत्रके पाठोंको तथा वृत्तिके पाठोंको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्थापन करते है और चार मासके १२० दिनका वर्षाकाल सम्बन्धी उपरका पाठ श्रीगणधर महाराजनें कहा है तथापि इसका तात्पर्य्य समझे बिना दो श्रावण होनेसें पांच मासके १५० दिनका वर्षाकालमें उपरका पाठ सूत्रकार तथा वृत्तिकार महाराजके विरुद्धार्थमें न्यायरत्नजी लिखते हैं इसलिये न्यायरत्नजीको श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठोंका तात्पर्य्य समझमें नही आया मालुम होता है तो फिर न्यायरत्न का और विद्यासागरका जो विशेषण श्रीशान्तिविजयजी ने धारण किया है सो कैसे सार्थक हो सकेगा सो पाठक वर्ग सज्जन पुरुष अपनी बुद्धिसें स्वयं विचार लेना ;—

और न्यायरत्नजी कालपुरुषकी चोटीकी भ्रान्तिसें अधिक मासको गिनतीमें निषेध करते हैं सो भी जैन शास्त्रोंके तात्पर्य्यको समझे बिना उत्सूत्र भाषण करते हैं इसका निर्णय इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ४८ सें ६५ तक तथा चारों महाशयोंके नामकी समीक्षामें और खास न्यायरत्नजीकेही नामकी समीक्षामें उपरमें पृष्ठ २२० । २२१ । २२२ तक अच्छी तरहसें खुलासाके साथ छप गया है सो पढ़नेसें सर्व निर्णय हो जावेगा कि शिखररूप चूलाकी उत्तम ओपमा गिनती करने योग्य दिनी है इसलिये चोटी कहके निषेध करनेवाले मिथ्यावादी है सो उपरोक्त लेख सें पाठकवर्ग स्वयं विचार लेना ;—

और इसके अगाड़ी फिर भी न्यायरत्नजीनें लिखा है कि (अधिक महिनेको गिनतीमें लेनेसें तीसरा यह भी दोष आयगा कि चौइस तीर्थङ्करोंके कल्याणिक जो जिस जिस महिनेकी तिथिमें आते हैं गिनतीमें वे भी बढ़ जायगें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फिर क्या तीर्थङ्करोंके कल्याणिक १२० से भी ज्यादे गिनना होगा कभी नही इस हेतुसे भी अधिक मास नही गिना जाता) इस लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हुं जिसमें प्रथमतो उपरके लेखमें न्यायरत्नजीने अधिकमासको गिनतीमें लेने वालोंको तीसरा दूषण लगाया इस पर तो मेरे कों इतनाही कहना उचित है कि न्यायरत्नजीने श्री अनन्ततीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातना करके खूब मिथ्यात्व वढ़ाया है क्योंकि श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराज अधिक मासको गिनतीमें मान्य करते हैं सो अनेक सिद्धान्तोंमें प्रसिद्ध है और न्यायरत्नजी अधिक मासको गिनतीमें मान्य करने वालोंको दूषण लगाते हैं जिससें श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी प्रत्यक्ष आशातना होती है इसलिये जो न्यायरत्नजीको श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातनासें अनन्त संसार वृद्धिका भय लगता हो तो अधिक मासको गिनतीमें लेने वालोंकों दूषण लगाया जिसकी आलोचना लेकर अपनी आत्माको दुर्गतिसें बचाना चाहिये आगे न्यायरत्नजीकी जैसी इच्छा मेरा तो धर्मबन्धुकी प्रीतिसें लिखना उचित है सो लिख दिखाया है और अधिक मासको श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने गिनतीमें मान्य किया है उसीके अनुसार कालानुसार युक्तिपूर्वक वर्त्तमानमें भी अधिक मासको आत्मार्थी पुरुष मान्य करते हैं जिन्होंको एक भी दूषण नही लग सकता है परन्तु कल्पित दूषणोंकों लगाने वालों को तो उत्सूत्र भाषणरूप अनेक दूषणोंके अधिकारी होना पड़ता है सो आत्मार्थी विवेकी सज्जन पुरुष इन्ही पुस्तकके पढ़नेसे स्वयं विचार सकते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और अनन्ते कालचक्र हुए अधिक मास भी होता रहता है तैसेही अनन्त चौवीशी होगई जिसमें श्रीतीर्थङ्कर महाराजोंके कल्याणक भी होते रहते हैं परन्तु किसीने भी कल्याणक वढ़ जानेके भयसें अधिक मासकी गिनती निषेध नही करी है तथापि इस पञ्चमें कालके विद्यासागर न्याय-रत्नका विशेषण धरानेवाले श्रीशान्तिविजयजी इतने वड़े विद्वान् कहलाते भी जैन शास्त्रोंके गम्भीरार्थको समझे बिना कल्याणक वढ़ जानेके भयसें अधिक मासकी गिनती निषेध करते हैं यह भी एक अलौकिक आश्चर्य्यकी बात है क्योंकि जैन ज्योतिषशास्त्रानुसार मासवृद्धिके कारणसें जब दो पौष अथवा दो आषाढ़ होते थे तब उस समय कोई भव्य जीवोंको श्रीतीर्थङ्कर महाराजोंके कल्याणककी तपश्चर्य्यादि करनेका इरादा होता था तब पहिले श्री-ज्ञानीजी महाराजकों पूछके पीछे करते थे जिसमें दो मासके कारणसें कोई भगवान्का प्रथम मासमें कल्याणक होया होवे उसी कल्याणकको प्रथम मासमें आराधन करते थे और कोई भगवान्का दूसरे मासमें कल्याणक होया होवे उसी कल्याणकको दूसरे मासमें आराधन करते थे जिससें जिन जिन भगवान् का जो जो कल्याणक मास वृद्धिके कारणसें प्रथम मासमें अथवा दूसरे मासमें होया होवे उसीको उसी मुजब श्रीज्ञानीजी महाराजको पूछके आराधन करते थे, पक्षवत्, अर्थात् अमुक भगवान् का अमुक कल्याणक अमुक मासके प्रथम पक्षमें होया होवे उसीकों प्रथम पक्षमें आराधन करते थे और दूसरे पक्षमें होया होवे उसीको दूसरे पक्षमें आराधन करते थे उसी तरह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दो मासके कारणसें श्रीज्ञानीजी महाराजके कहने मुजब कल्याणक आराधन करनेमें आते थे और अधिक मासको गिनतीमें भी करनेमें आता था इसलिये अधिक मासकी गिनती करनेसें श्रीतीर्थङ्कर महाराजोंके कल्याणक गिनतीमें नही वढ़ सकते है और इस पञ्चमें कालमें भरत क्षेत्रमें श्रीज्ञानीजी महाराजका अभाव होनेसें और लौकिक पञ्चाङ्गमें हरेक मासोंकी वृद्धि होनेके कारणसें प्रथम मासका प्रथम कृष्णपक्ष और दूसरे मासका दूसरा शुक्लपक्षमें मास तिथि नियत कल्याणकादि धर्मकार्य्य तथा लौकिक और लोकोत्तर पर्व करनेमें आते है जिसका युक्तिपूर्वक दृष्टान्त सहित सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी समीक्षामें लिखनेमें आवेगा सो पढ़नेसें विशेष निर्णय हो जावेगा इस लिये न्यायरत्नजी कल्याणक बढ़ जानेके भयसें अधिक मासकी गिनती निषेध करते है सो जैन शास्त्रोंके विरुद्ध उत्सूत्र-भाषण करते है सो उपरके लेखसें पाठकवर्ग भी विशेष विचार सकते है ।

और इसके अगाड़ी फिर भी न्यायरत्नजीनें लिखा है कि (अधिक महिनोंके कारणसें कभी दो भाद्वे हो तो दूसरे भाद्रवेमें पर्युषणा करना चाहिये जैसे दो आषाढ़ महिने होते है तब भी दूसरे आषाढ़में चातुर्मासिक कृत्य किये जाते है वैसे पर्युषणा भी दूसरे भाद्रवेमें करना न्याययुक्त है)

उपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हुं कि हे सज्जन पुरुषों उपरके लेखमें न्यायरत्नजीनें मासवृद्धि के कारणसें दो आषाढ़ और दो भाद्रपद लिखे जिससें अधिकमास गिनतीमें सिद्ध होगया फिर अधिक मासको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गिनतीमें लेनेवालोंको दूषण लगाना यह तो न्यायरत्नजीका हठवादसें प्रत्यक्ष अन्यायकारक है सो पाठकवर्ग भी विचार सकते है ।

और भी दूसरा सुनो–खास न्यायरत्नजीनें संवत् १९६६ की सालका बयान याने शुभाशुभका फल संक्षिप्तसें जैनपत्र के साथमें जूदा हेण्डबिलमें प्रसिद्ध किया है उसीमें [इस वर्षमें श्रावण महिना दो है ऐसा लिखा है तथा अधिक मास के कारणसें दोनुंही श्रावणकी गिनती सहित तेरह मासों के प्रमाणसें तेरह अमावस्या और तेरह पूर्णिमाकी सब घड़ियोंकी गिनती दिखाइ है और प्रथम श्रावण वदी ११ तथा १२ के दिन और दूसरे श्रावण वदी १० के दिन अच्छा योग्य बताया है और प्रथम श्रावण शुदीमें सप्त नाड़ीचक्रमें सूर्य्य और गुरु जलनाड़ी पर आनेका लिखा है और प्रथम श्रावण शुदी पञ्चमीके दिन सिंह राशि पर शुक्र आनेका लिखा है फिर दूसरे श्रावण शुक्लपक्षमें बुधका उदय होगा वहां दुनियाके लोग सुखी रहनेका लिखा है फिर प्रथम श्रावण वदी ४ बुधवार तक दुर्मति नामा संवत्सर रहनेका लिखा है बाद याने प्रथम श्रावण वदी पञ्चमी गुरुवारका दुन्दुभि नामका संवत्सर लगनेका लिखा है फिर दूसरे श्रावणमें मीन राशि पर शनि और मङ्गल वक्र होनेका लिखा है] इस तरहसें खुलासाके साथ न्यायरत्नजी अपने स्वहस्ते दोनुं श्रावण महिनोंको बरोबर लिखते है गिनतीमें लेते है छपाके प्रसिद्ध करते है (और दोनुं श्रावणके कारण सें तेरह मासोंके ३८३ दिनका वर्ष दुनियामें प्रसिद्ध है) इस पर निष्पक्षपाती आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंको न्याय दृष्टिसें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विचार करना चाहिये कि न्यायरत्नजी आप स्वयं दोनु श्रावण मासकी हकीकत जूदी जूदी लिखते है फिर गिनतीमें निषेध भी करते है यह तो ऐसे हुवा कि ममजननी वन्ध्या अथवा मम वदने जिह्वा नास्ति, इस तरहसें बाललीलावत् न्यायरत्नजी विद्याके सागर हो करके भी कर दिया हाय अफसोस;—

अब इस जगह मेरेको लाचार होकर लिखना पड़ता है कि न्यायरत्नजीकी विद्वत्ताकी चातुराई किस देशके कोणेमें चली गई होगा सो पूर्वापरका विचार विवेक बुद्धिसें किये बिना श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण करके तेरह मासोंका अभिवर्द्धित संवत्सर अनेक सिद्धान्तोंमें कहा है जिसके उत्थापनका भय न करते उलटा अधिक मासको गिनती करने वालोंको माया-वृत्तिसें मिथ्या दूषण लगादिये और फिर आपभी अधिक मासको प्रमाण करके लोगोमें ज्योतिषशास्त्रके वि-द्वान् भी प्रसिद्ध होते है परन्तु अधिक मासको गिनतीमें करनेवालोंको मिथ्या दूषण लगानेका और पूर्वापर विरोधी विसंवादी रूप मिथ्या वाक्यके फल विपाकका जरा भी भय नही करते है इसलिये जैन शास्त्रानुसार तो दूसरोंको मिथ्या दूषण लगानेके और विसंवादी भाषणके कर्मबन्धकी आलो-चनाके लिये बिना अथवा भावान्तरमें भोगे बिना छूटना बहुत मुश्किल है सो जैन शास्त्रोंका तात्पर्य्यके जानकार विवेकी पुरुष स्वयं विचार सकते है और न्यायरत्नजीको भी उत्सूत्र भाषणका भय हो तो न्याय दृष्टिसें तत्त्वार्थको अवश्य ही ग्रहण करना चाहिये ;—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा और भी न्यायरत्नजीको थोड़ासा मेरा यही कहना है कि अधिकमासको आप कालपुरुषकी चोटी जान कर गिनतीमें नही लेनेका ठहराते हो तब तो दो आषाढ़, दो श्रावण दो भादवेका लिखना आपका वृथा हो जावेगा और दो आषाढ़ादि मासोंको लिखते हो तथा उसी मुजब वर्तते हो तब तो कालपुरुषकी चोटी कहके अधिकमासको गिनतीमें निषेध करते हो सो आपका वृथा है और दो आषाढ़, दो श्रावण, दो भादवे लिखना सब धर्म और कर्मका व्यवहार भी दोनु मासका करना फिर गिनतीमें नही लेना यह तो कभी नही हो सकता है इसलिये दोनु मासका धर्म और कर्मका व्यवहारको मान्य करके दोनु मासको गिनतीमें लेना सो ही न्यायपूर्वक युक्तिकी बात है तथापि निषेध करना धर्मशास्त्रोंके और दुनियाके व्यवहारसे भी विरुद्ध है इस लिये इसका मिथ्या दुष्कृत ही देना आपको उचित है नही तो पूर्वापर विरोधी विसंवादी वाक्यका जो विपाक श्रीधर्मरत्नप्रकणकी वृत्तिमें कहा है सो पाठ इन्ही पुस्तकके पृष्ठ ८६ । ८७ । ८८ में छपगया है उसीके अधिकारी होना पड़ेगा सो आप विद्वान् हो तो विचार लेना ;—

और दो आषाढ़ होनेसे दूसरे आषाढ़में चौमासी कृत्य किये जाते है जिसका मतलब न्यायरत्नजीके समझमें नहीं आया है सो इसका निर्णय सातमें महाशय श्रीधर्मविजयजी के नामकी समीक्षामें करनेमें आवेगा और दो भादवें होनेसें दूसरे भादवेंमें पर्युषणापर्व करना न्याय युक्त न्यायरत्नजी ठहराते है परन्तु शास्त्रसम्मत न्याय युक्त नही है क्योंकि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शास्त्रोंमें आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने अवश्यही पर्युषणा करना कहा है और दो भाद्रवें होनेसें दूसरे भाद्रवेमें पर्युषणा करनेसें ८० दिन होते हैं जिससें दूसरे भाद्रवेमें ८० दिने पर्युषणा करना और ठहराना शास्त्रोंके और युक्तिके विरुद्ध है इसलिये प्रथम भाद्रवेमें ही ५० दिने पर्युषणा करना शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक न्याय सम्मत है इसका विशेष निर्णय तीनों महाशयोंके नामकी समीक्षामें इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १४० । १४१ । १४२ की आदि तक अच्छी तरहसें छप गया है उसीको पढ़नेसें सर्व निर्णय हो जावेगा ।

और फिर भी न्यायरत्नजीनें अपनी बनाई मानवधर्म संहिता पुस्तकके पृष्ठ ८०० की पंक्ति ४ सें १० तक तिथियाँ की हानी तथा वृद्धिके सम्बन्धमें और पृष्ठ ८०१ की पंक्ति २२॥ सें पृष्ठ ८०२ पंक्ति १० तक पर्युषणामें तिथियांकी हानी तथा वृद्धिके सम्बन्धमें शास्त्रोंके प्रमाण बिना अपनी मति कल्पनासें उत्सूत्र भाषणरूप लिखा है जिसकी समीक्षा आगे तिथि निर्णयका अधिकार सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीके नामकी समीक्षामें करनेंमें आवेगा वहां अच्छी तरहसें न्याय रत्नजीकी कल्पनाका (और न्यायाम्भोनिधिजीनें जैन सिद्धान्त समाचारीकी पुस्तकमें जो तिथियांकी हानी तथा वृद्धि सम्बन्धी उत्सूत्र भाषण किया है उसीका भी) निर्णय साथ साथमेंही करनेमें आवेगा सो पढ़नेंसें तिथियांकी हानी तथा वृद्धि होनेसें धर्मकार्य्योमें किसी रीतिसें वर्तना चाहिये जिसका अच्छी तरहसें निर्णय हो जावेंगा ;—

इति पाँचवें महाशय न्यायरत्नजी श्रीशान्तिविजयजीके नामकी पर्युषणा सम्बन्धी संक्षिप्त समीक्षा समाप्ता ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और सप्टेम्बर मासकी २७ मी तारीख सन् १९०८ आश्विन शुक्ल २ वीर संवत् २४३४ के रविवारका मुम्बईसें प्रसिद्ध होनेवाला जैन पत्रके २४ वें अङ्कके पृष्ठ ४ में गत वर्षे न्यायरत्नजीकी तरफसें लेख प्रसिद्ध हुवा हैं जिसमें खास करके श्रीखरतरगच्छ वालोंको श्रीमहावीर स्वामीजीके ६ कल्याणकके सम्बन्धमें पूछा हैं और आपने श्रीहरिभद्र सूरिजी महाराजके तथा श्रीअभयदेवसूरिजी महाराजके विरुद्धार्थमें श्रीपञ्चाशक मूलसूत्रका तथा तद्वृत्तिका अधूरा पाठ लिखके श्रीमहावीर स्वामीजीके पांच कल्याणक स्थापन करके ६ कल्याणकका निषेध किया है सो उत्सूत्र भाषण करके अनेक सूत्र, चूर्णि, वृत्ति, प्रकरणादि शास्त्रोंके पाठोंका उत्थापन करके श्रीगणधर महाराजके, श्रीश्रुत केवली महाराजके, पूर्वधर महाराजोंके और बुद्धिनिधान पूर्वाचार्य्योंके वचनका अनादर करते पञ्चमकालके अपने हठवादकी विद्वत्ता न्यायरत्नजीनें अनन्त संसारकी वढ़ाने वाली प्रसिद्धकरी हैं जिसकी समीक्षा और आगस्ट मासकी २९ वी तारीख सन् १९०९ दूसरे श्रावण सुदी १३ वीर संवत् २४३५ रविवारका जैन पत्रके २१ वें अङ्कके पृष्ठ १५ वा में जो न्यायरत्नजीकी तरफसें फिर भी लेख प्रसिद्ध हुवा हैं उसीमें ‘खरतरगच्छ मीमांसा, नामकी किताब छपवा कर प्रसिद्ध करके [जैसे न्यायाम्भोनिधिजीनें जैन सिद्धान्तसमाचारी, पुस्तकका नाम रखके वास्तविकमें उत्सूत्र भाषण का मिथ्यात्वरूप पाखण्डको प्रगट किया हैं (जिसका किञ्चिन्मात्र इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १५१ और पृष्ट २१५ । २१६ में दिखाया हैं, उसीका नमुनारूप पर्युषणा सम्बन्धी समीक्षा भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इन्ही पुस्तकके पृष्ठ १५७ सें २१४ तक उपरमें छप चुकी हैं) तैसेही न्यायरत्नजीने भी प्राय उन्ही बातोंको अपनी चातुराईसें कुछ कुछ न्यूनाधिक करके] मिथ्यात्वका पीष्ट-पेषणरूप मानु अपनी और अपने गच्छवासी हठग्राही भक्तजनोंकी संसार वृद्धिका कारणरूप, शास्त्रानुसार सत्य बातोंका निषेध और शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें कल्पित बातोंका स्थापनकर पुस्तक प्रगटकरके अविसंवादी अत्युत्तम जैनमें विसंवादरूप मिथ्यात्वका झगड़ा फैलाना न्यायरत्नजी चाहते हैं, जिसकी और गत वर्षके लेखकी समालोचनारूप समीक्षा इस जगह लिखके न्यायरत्नजीके उत्सूत्र भाषणकी तथा कुतर्कोंकी चातुराईका दर्शाव प्रगट करना चाहुं तो जरूर करके २५० अथवा ३०० पृष्ठका यहां विस्तार बढ़ जावें जिससें आठों महाशयोंके नामकी पर्युषणा सम्बन्धी अबी जो समीक्षा सरू हैं उसीमें अन्तर पड़ जावें और यह ग्रन्थ भी बहुत बड़ा हो जावें इसलिये अबी यहां न्याय रत्नजी सम्बन्धी विशेष न लिखते पर्युषणा सम्बन्धी विषय पूरा होये बाद अन्तमें थोड़ासा संक्षिप्तसें लिखनेमें आवेगा जिससें श्रीजिनाज्ञा इच्छक आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंको सत्यासत्यका निर्णय स्वयं मालुम हो सकेगा ;—

और अब छठे महाशय श्रीवल्लभविजयजीकी तरफसें पर्युषणा सम्बन्धी जो लेख जैन पत्रमें प्रगट हुवा है उसीकी समीक्षा करके पाठकवर्गकों दिखाता हुं—जिसमें प्रथमही आगष्ट मासकी ८ वी तारीख संवत् १९०९ गुजराती प्रथम श्रावण वदी ७ रविवारका मुम्बईसें प्रसिद्ध होने वाला जैनपत्रके १८ वें अङ्कके पृष्ठ १० विषे गुजराती भाषामें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रश्नोत्तर छपे हैं जिसमें किसी मुम्बईवाले श्रावकने प्रश्न किया हैं कि (पर्युषणपर्व पेला श्रावणमां करिये तो दोष लागेके केम) इस प्रश्नका श्रीपालणपुरसें श्रीवल्लभविजयजीने यह जवाब दिया कि (पर्युषणपर्व पेला श्रावणमां नज थाय आज्ञाभङ्ग दोष लागे) इस लेखका मतलब ऐसे निकलता हैं कि गुजराती प्रथम श्रावण वदी हिन्दी दूसरे श्रावण वदीसें लेकर दूसरे श्रावण शुदीमें अर्थात् आषाढ़ चतुर्मासीसें पचास दिने पर्युषणा करने वालोंको जिनाज्ञा भङ्गके दूषित ठहराये तब श्रीलश्करसें श्रीबुद्धिसागरजीनें श्रीपालणपुर श्रीवल्लभविजयजीको सुन्दर ओपमा सहित वन्दनापूर्वक विनय भक्तिसें एक पोष्टकार्ड लिख भेजा उसीमें लिखा था कि—आगष्ट मास की-८ वीं तारीखका जैन पत्रके १८ वें अङ्कमें (पर्युषणपर्व पेला श्रावणमां नजथाय आज्ञाभङ्ग दोष लागे) यह अक्षर जिस सूत्र अथवा वृत्तिके आधारसें आपने छपवाये होवें उसी सूत्र अथवा वृत्तिके पाठ लिखकर भेजनेकी कृपा करना आपको मध्यस्थ और विद्वान् सुनते हैं इस लिये आपने शास्त्रके प्रमाण बिना अपनी कल्पनासें झूठ नही छपवाया होगा तो जरूर शास्त्रपाठके अक्षर लिख कर भेजेंगें इत्यादि—इस तरहका पोष्टकार्डमें मतलब लिख कर खानगीमें भेजाथा सो कार्ड श्रीवल्लभविजयजीको श्रीपालणपुरमें खास हाथोहाथ पहुंच गया परन्तु श्रीवल्लभविजयजीनें उस कार्डका कुछ भी पीछा जवाब लिखकर नहीं भेजा जब कितनेही दिन तक तो जवाब आनेकी राह देखी तथापि कुछ भी जवाब नही आया तब फिर भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दूसरा पत्र श्रीवल्लभविजयजीको, उपर लिखे मतलबके लिये भेजनेमें आया तोभी श्रीवल्लभविजयजीनें कुछ भी जबाब नही दिया तब श्रीपालणपुरके प्रसिद्ध आदमी पीताम्बर भाई हाथी भाई महताके नामसें एक पत्र लिखा उसीमें भी विशेष समाचार पर्युषणा सम्बन्धी श्रीवल्लभविजयजीनें दूसरे श्रावणमें आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने पर्युषणा करने वालोंको आज्ञाभङ्गका दूषण लगाया जिसका खुलासे उत्तर पूछाया था और उसी पत्रमें ५० दिने पर्युषणा शास्त्रकारोंने करनेका कहा हैं उसी सम्बन्धी पाठ भी लिख भेजे थे वह पत्र श्रीवल्लभविजयजीको पीताम्बर भाईने पहुंचाया और जबाब भी पूछा इतने पर भी श्रीवल्लभविजयजीनें अपनी बातका जबाब नही दिया और शास्त्रोंके पाठोंको प्रमाण भी नही किये परन्तु स्वपक्षपातका पण्डिताभिमानके जोरसें अन्याय कारक विशेष झगड़ा फैलानेका कारण करके माया वृत्तिसें आप निर्दूषण बन कर श्रीबुद्धिसागरजीकों दूषित ठहरानेके लिये अक्टोबर मासकी ३१ वी तारीख सन् १९०९ आसोज वदी ३ वीर संवत् २४३५ का अङ्क २९ वा के पृष्ठ ४-५ में अपनी चातुराईकों प्रगट करी हैं जिसको इस जगह लिख दिखाता हुं ;—

[खबरदार ! होवो होशियार !! करो विचार ! निकालो सार !!! लेखक—मुनि—वल्लभविजय-पालणपुर,

इसमें शक नहीं कि, अंग्रेज सरकारके राज्यमें, कला-कौशल्यकी अधिकता हो चुकी है, हो रही है और होती रहेगी ! परंतु गाम वसे वहां भङ्गी चमारादि अवश्य होते हैं ! तद्वत् अच्छी अच्छी बातोंकी होशियारीके साथमें बुरी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बुरी बातोंकी होशियारी भी आगे ही आगे बढती हुई नजर आती है ! इस वास्ते खबरदार होकर होशियारीके साथ विचार कर सार निकालनेका ख्याल रखना योग्य है– ताकि पीछेसे पश्चात्ताप करनेकी जरूरत न रहे !

राज्य अंग्रेज सरकारका हैं कानून (कायदे) सबके लिये तैयार है ! चाहे अमीर हो, चाहे गरीबहो ; चाहे राजा हो, चाहे रंक हो ! चाहे शहरी हो, चाहे गँवार हो ! जो एक कहेगा दो सुनेगा !

थोडे समयकी बात है, लश्कर से बुद्धि सागर नामा खरतर गच्छीय मुनिके नामका पत्र हमारे पास आया, जिसमें पर्युषणाकी बाबत कुछ लिखा था, हमने मुनासिब नहीं समजा कि' वृथा समय खोकर परस्पर ईर्षाकी वृद्धि करनेवाला काम किया जावे ! कितनेही समयसे गच्छ संबंधी टंटा प्रायः दबा हुवा है, तपगच्छ खरतरगच्छ दोनो ही गच्छ प्रायः परस्पर संपसे मिले जुलेसे मालुम होते है' उनमें फरक पड़नेसे कुछ दबे हुए जैन शासनके वेरिओंका जोर हो जानेका सम्भव है। यह तो प्रसिद्धही है कि दोनोंकी लड़ाईमें तीसरेका काम हो जाता है। यद्यपि महात्मा मोहनलालजी महाराज खरतर गच्छके थे, तथापि तपगच्छ-वाले उनको अधिकसे अधिक मान देते थे ! यही गच्छ पक्षकी कुछक शांति लोकोंके देखनेमें आती थी ! मरहूम महात्मा भी तपगच्छकी बाबत अपना जुदा ख्याल नहीं जाहिर करते थे ! बलकि खुद आप भी तपगच्छकी समाचारी करते थे जो कि प्रायः प्रसिद्ध ही है परन्तु सूर्पनखा समान जीव उभय पक्षकों दुःखदायी होते हैं तद्वत् बुद्धिसागर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

खरतर गच्छीय मुनि नाम धारकने भी अपनी मन:कामना पूर्ण न होनेसे, रावणके समान ढुंढियांका सरणा लेकर युद्धारंभ करना चाहा है ।]

पाठकवर्गकों छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीके उपर का लेखकी समालोचनारूप समीक्षा करके दिखाता हुं जिसमें प्रथमतो मेरेकों इतना ही कहना उचित हैं कि छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजी साधु नाम धारक होकर खास आप झगड़ेका मूल खड़ा करके दूसरेको दूषित करना और अन्याय कारक माया वृत्तिका मिथ्या भाषणसें आप निर्दूषण बनना चाहते है सो सर्वथा अनुचित हैं क्योंकि प्रथम ही आपने (शास्त्रकारोंकी रीति मूजब श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार आषाढ़ चौमासीसें पचास दिने श्रावणवृद्धिके कारणसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेवालोंकों) आज्ञाभङ्ग का दूषण लगा के जैन पत्रमें छपवा कर प्रगट कराया तब श्रीलश्करसें श्रीबुद्धिसागरजीनें आपकों खानगीमें शास्त्रका प्रमाण पूछा था उन्हीकों शास्त्रका प्रमाण आप खानगीमें पीछा नही लिख सके और अन्यायकी रीतिसें उलटा रस्ता पकड़के खानगीकी बातोंको प्रसिद्धीमें लाकर वृथा निष्प्रयोजनकी अन्यान्य बातोंको और भङ्गी चमार सूर्पनखा वगैरह अनुचित शब्दोंको लिखके विशेष झगड़ेका मूल खड़ा करके भी आप निर्दूषण बनकर अपने अन्यायको न देखते हुए और शास्त्रके पाठकी बात न्याय रीतिसें पूछने वाले को दूषित ठहराते हुए अपने योग्यता माफक शब्द प्रगट किये याने लौकिकमें कहते हैं कि–जैसी होवे कोठे, वैसी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निकले होठे,-अर्थात् जिस आदमीके जैसी बात दिलमें होवे उस आदमीसें वैसेही अन्तरकी बातके सूचकरूप शब्द करके सहित भाषा निकलती है तैसेंही छठे महाशयजीने भी मानु अपनी आत्मामें रहनेवाले गुणोंके सूचक शब्द लिखके प्रसिद्ध किये है सो वह द्रव्य शब्दके भाव गुण छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीमें अवश्य ही दिखते हैं सोही पाठकवर्गकों दिखाता हुं और साथ साथमें छठे महाशयजीकी अन्याय कारक अन्यान्य बातोंकी समीक्षा भी करता हुं ;—

छठे महाशयजीनें (गाम वसे वहाँ भङ्गी चमारादि अवश्य होते हैं) यह अक्षर लिखे हैं इस पर मेरेकों इतना ही कहना उचित हैं कि श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञाके आराधन करनेवाले जो सज्जन है सोही मानों गाम वसता है उसी गामरूपी श्रीजिनशासनमें उत्सूत्र भाषक निन्दकादि भङ्गी चमारोंकी तरह उक्त महाशयजी आदि वसते हैं सो उस गामकी निन्दारूप मलिनताकों उठाते हुए भी आप पवित्र बनना चाहते है सो कदापि नही बन सकते हैं और आगे फिर भी लिखा हैं कि (अच्छी अच्छी बातोंकी होशियारीके साथमें बुरी बुरी बातोंकी होशियारी भी आगे ही आगे बढ़ती हुई नजर आती हैं) छठे महाशयजीके इन अक्षरों पर मेरेको यही कहना पड़ता है कि इस अंग्रेजी राज्यमें कलाकौशल्यता और न्यायशीलताके कारणसें श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञारूपी अच्छी अच्छी होशियारीकी वृद्धिके साथ साथमें बुरी बुरी होशियारीकी तरह प्रथम कदाग्रहके बीज लगानेवाले

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा अन्यायमें चलनेवाले और दूसरोंको मिथ्या दूषण लगानेवाले छठे महाशयजी वगैरह अनेक पक्षपाती पुरुष बुरी बुरी होशियारीकी बातोंका सरणा लेते हैं सो बड़ी ही अफसोसकी बात हैं ;—

और आगे फिर भी छठे महाशयजीने लिखा है कि (खबरदार होकर होशियारीके साथ विचारकर सार निकालनेका ख्याल रखना योग्य हैं ताकि, पीछेसें पश्चात्ताप करनेकी जरूर न रहैं) इन अक्षरोंको लिखके छठे महाशयजी दूसरेकों होशियार होनेका बताते हैं परन्तु अपनी आत्माकी तरफ कुछ भी होशियारी न दिखाते हुए बिन विचारा काम करके इन भव तथा पर भव और भवो भवमें पश्चात्ताप करनेका कुछ भी भय नही रखते हैं क्योंकि श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महान् उत्तम धुरन्धराचार्य्योंने और खास छठे महाशयजीके ही पूर्वज पूज्यपुरुषोंने अनेक सूत्र, वृत्ति, चूर्णि, प्रकरणादि अनेक शास्त्रोंमें आषाढ़ चौमासीसें एक मास और वीश दिने याने पचास दिने श्रीपर्युषणापर्वका आराधन करना कहा है और इस वर्त्तमान कालमें लौकिक पञ्चाङ्गमें श्रावणादि मासोंकी वृद्धि होनेके कारणसें आषाढ़ चौमासीसें पचास दिन दूसरे श्रावणमें पूरे होते हैं तब शास्त्रानुसार पचास दिनकी गिनतीसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेवाले श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञाके आराधक ठहरे और जैन शासनके प्रभावक तथा युगप्रधान और बुद्धिनिधान उत्तमाचार्य्योंकी श्रीजिनाज्ञा मुजब दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेकी अनुक्रमें अखण्डित महत परम्परा (अनुमान १४०० वर्ष हुए जैनपञ्चाङ्गके अभाव

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सें आत्मार्थी पुरुषोंकी) चली आती है उसी मुजब मोक्षाभि-लाषी सज्जन वर्त्तते हैं जिन्होंको छठे महाशयजीनें अपनी क्षुद्रबुद्धिकी तुच्छ विद्वत्ताके अभिमानसें उत्सूत्र भाषणका भय न करते एकदम आज्ञाभङ्गका दूषण लगाके छापामें छपानेकी आज्ञा करी और शास्त्रानुसार चलने वालोंको मिथ्या दूषण लगानेके कारणसें झगड़ा फैलानेके कारण का जरा भी विचार नही किया और अब श्रीतीर्थंङ्कर गणधरादि महाराजोंनें पचास दिने पर्युषणा करनेका कहा है उसीके अनुसारे आत्मार्थी सज्जन पुरुष दूसरे श्रावणमें पचास दिने पर्युषणा करते है जिन्होंको छठे महाशयजी आज्ञाभङ्गका दूषण लगाते है जिससें श्रीतीर्थंङ्कर गणधरादि महाराजोंके वचनका अनादर होकर उन महाराजोंकी महान् आशातना होती है तथा अनेक सूत्र, चूर्णि, वृत्ति, प्रकरणादि शास्त्रोंके पाठोंके मुजब नही वर्त्तनेसें उत्थापन होता है और उन महाराजोंकी आशातना तथा अनेक शास्त्रोंके पाठोंका उत्थापन और उन महाराजोंकी आज्ञानुसार अनेक शास्त्रोंके प्रमाणयुक्त वर्त्तने वालोंको स्वपक्षपातके पंडिताभिमानसें मिथ्या दूषण लगाना सो निःकेवल उत्सूत्र-भाषणरूप है और उत्सूत्र भाषणके लिये ;—

श्रीभगवतीजी सूत्रमें १ तथा तद्वृत्तिमें २ श्रीउत्तरा-ध्ययनजी सूत्रमें ३ तथा तीनकी छ (६) व्याख्यायोंमें ९ श्रीदशवैकालिक सूत्रमें १० तथा तीनकी चार व्याख्यायोंमें १४ श्रीसूयगड़ाङ्गजी (सूत्रकृताङ्गजी) सूत्रकी निर्युक्तिमें १५ तथा तद्वृत्तिमें १६ श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें १७ तथा तद्वृत्तिमें १८ श्रीआवश्यकजी सूत्रकी चूर्णिमें १९ श्रीआवश्यकजी सूत्रकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बृहद्वृत्तिमें २० तथा प्रथम लघु वृत्तिमें २१ और दूसरी लघु वृत्तिमें २२ श्रीविशेषावश्यकमें २३ तथा तद्वृत्तिमें २४ श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रकी वृत्तिमें २५ श्रीमूलशुद्धिप्रकरणमें २६ श्रीमहानिशीथ सूत्रमें २७ श्रीधर्मरत्नप्रकरणमें २८ तथा तद्वृत्तिमें २९ श्रीसङ्घपट्टक बृहद्वृत्तिमें ३० श्रीश्राद्धविधि वृत्तिमें ३१ श्रीआगम अष्टोत्तरीमें ३२ तथा तद्वृत्तिमें ३३ श्रीसन्देहदोलावलीवृत्तिमें ३४ श्रीसम्बोधसत्तरीमें ३५ तथा तद्वृत्तिमें ३६ श्रीवैराग्यकल्पलतामें ३७ श्रीत्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित्रमें ३८ और श्रीकल्पसूत्रकी सात व्याख्यायोंमें ४५ इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें और भाषाके स्तवन, पद, ढाल वगैरहमें भी अनेक जगह लिखा है कि शास्त्रपाठ तथा एकाक्षरमात्रभी प्रमाण नही करनेवाला निन्हव उत्सूत्र भाषककों श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्य परम गुरुजन महाराजोंकी आशातना करने वाला और उन्हीं महाराजोंके वाक्यकों न मानता हुवा उत्थापन करने वाला बहुलकर्मी, माया सहित मिथ्या भाषण करने वाला, संयमसे भ्रष्ट, घोर नरकमें गिरने वाला, चतुरगतिरूप संसारमें कटुक विपाक दारुण (भयङ्कर) फलको भोगने वाला, सम्यग्दर्शनसें भ्रष्ट, मिथ्यात्वी, दुर्लभबोधि, अनन्त संसारी, मोहन्यादि आठ कर्मोंके चीकणे बन्धको बाँधने वाला, पापकारी इत्यादि अनेक विशेषण शास्त्रोंमें कहे हैं जिसके सब पाठ इस जगह लिखनेसें बहुत विस्तार हो जावे तथापि भव्यजीवोंको निःसन्देह होनेके लिये थोड़ेसें पाठ भी लिख दिखाता हुं ;

श्रीलक्ष्मीवल्लभगणिजी कृत श्रीउत्तराध्ययनवृत्तौ अष्टादशाध्ययने—संयतराजर्षिं क्षत्रियमुनिर्वदति हे महामुने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ये पापकारिणो नराः पापं असत् परूपणं कुर्वन्तीत्येवं शीलाः पापकारिणो ये नराः भवन्ति ते नराः घोरे भीषणे (भयङ्करे) नरके पतन्ति च पुनः धर्मं सत् परूपणरूपं चरित्राराध्यदिव्यं दिवः सम्बन्धीमीं उत्तमां गतिं गच्छन्ति इत्यादि ॥ इस पाठमें उत्सूत्र परूपणा करने वालेकों भयङ्कर नरक और सत्य परूपणा करने वालेकों देव लोगकी गति कही हैं । और श्रीशान्तिसूरिजीकृत श्रीधर्मरत्नप्रकरण मूल तथा तद्वृत्ति श्रीदेवेन्द्रसूरिजी कृत भाषा सहित श्री पालीताणासें श्रीजैनधर्म विद्याप्रसारकवर्गकी तरफसें छपके प्रसिद्ध हुवा हैं जिसके तीसरे भागके पृष्ठ ८२ । ८३ । ८४ का पाठ गुजराती भाषा सहित नीचे मुजब जानो ;–

यथा—अइ साहस मेयं जं, उस्सुत्त-परूवणा कडुविवागा ॥
जाणंतेहिवि दिज्जइ, निद्दे सो सुत्तबज्झत्थे ॥१०१॥

मूलनो अर्थ—उत्सूत्रपरूपणा कडवां फल आपनारी छे एवुं जाणतांछतां पण जेओ सूत्रबाह्य अर्थमां निश्चयआपी देछे ते अति साहसछे ॥ १०१ ॥

टीका—ज्वलज्ज्वालानल प्रवेशकारिनर साहसादप्यधिकमतिसाहसमेतद्वर्त्तते यदुत्सूत्रपरूपणा सूत्रनिरपेक्ष देशना कटुविपाका दारुणफला जानानैरवबुध्यमानैरपि दीयते वितीर्य्यते निर्देश्यो निश्चयः सूत्रबाह्ये जिनेन्द्रागमानुक्तेऽर्थे वस्तु विचारे किमुक्तं भवति—

दुब्भासिएण इक्केण, मरीईदुक्खसागरं पत्तो ।
भमिओ कोडाकोडिं, सागरसिरिनामधिज्जाणं ॥१॥
उस्सुत्तमाचरन्तो-बंधइकम्मं सुचिक्कणं जीवो । संसारञ्च पवड्ढइ, मायामोसं च कुव्वइय ॥ २ ॥ उम्मग्गदेसओमग्ग–नास

ओ गूढहिययमाइल्लो। सढसीलोयससल्लो–तिरियाउं बंधए जीवो ॥३॥ उम्मग्गदेसणाए–चरणं नासन्ति जिणवरिंदाणं। वावन्नदंसणा खलु–नहुलब्भातारिसादट्ठुं ॥४॥ इत्याद्यागम वचनानि श्रुत्वापि स्वाग्रहग्रहग्रस्त चेतसो यदन्यथान्यथा व्याचक्षते विदधति च–तन्महासाहसमेवा नर्वाकूपारासार-संसार पारावारोदरविवरभावि भूरिदुःखभाराङ्गीकारादिति।

टीकानो अर्थ—वळती आगममां पैसनारमाफकनासाहस-करतां पण अधिक आ अतिसाहसछे के सूत्रनिरपेक्ष देशना कडवां एटले भयङ्कर फल आपनारीछे एम जाणनारा होइने पण सूत्रबाह्य एटले जिनागममां नही कहेल अर्थमां एटले वस्तु विचारमां निर्देश एटले निश्चय आपीदेछे—एटले-शुंकर्युं तेकहेछे—मरीचि एकदुर्भाषितथी दुःखनादरियामां पडी क्रोडाक्रोडसागरोपम भम्यो। १। उत्सूत्र आचरतां जीव चीकणा कर्म बांधेछे संसारवधारेछे अने मायामृषा करेछे। २। उन्मार्गनी देशना करनार मार्गनो नाशकरनार गूढ-हृदयथी मायावी शठ अने सशल्य जीव तिर्यंचनो आयुष्य बांधेछे।३। जेओ उन्मार्गनी देशनाथी जिनेश्वरना चारित्रनो नाशकरेछे तेवा दर्शनभ्रष्ट लोकोने जोवा पणसारा नहीं।४। आवगेरे आगमना वचनो सांभलीने पण पोताना आग्रहमां ग्रस्त बनी जे कांइ आडुं अवलुं बोलेछे तथा करेछे ते महा साहसजछे केमके एतो अपार अने असार संसाररूप दरियाना पेटमां थनार अनेक दुःखनुंभार एकदम अङ्गीकार करवा तुल्य छे।

और फिर भी तीसरा भागके पृष्ठ २४२ का पाठ भाषा सहित नीचे मुजब जानो यथा—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अयमत्राशयः—सम्यक्त्वं ज्ञानचरणयोः कारणं यतएवमागमः—

ता दंसणिस्सनाणं, नाणेण विणा नहुंति चरणगुणा ॥
अगुणस्स नत्थि मुक्खो, नत्थि अमुक्खस्स निव्वाणं ॥१॥ इति तच्च गुरुबहुमानिन एव भवत्यतो दुःकरकारकोऽपि तस्मिन्नवज्ञानविद्ध्यात् तदाज्ञाकारि च भूयाद्यत उक्तं—

छट्ठट्ठम दसमदुवालसेहिं, मासद्ध मास खमणेहिं ॥
अकरंतो गुरुवयणं, अणंत संसारिओ भणिओ ॥१॥ इत्यादि

इहां आशय एछे के सम्यक्त्व ए ज्ञान अने चारित्रनुं कारणछे जे माटे आगममां आरीते कहेलुंछे—सम्यक्त्व वंतनेज ज्ञान होयछे अने ज्ञान विना चारित्रना गुण होता नथी अगुणीने मोक्ष नथी अने मोक्ष वगरनाने निर्वाण नथी, हवे ते सम्यक्त्व तो गुरुनो बहुमान करनारनेज होयछे एथी करीने दुःकरकारी थईने पण तेनी अवज्ञा नहीं करतां तेना आज्ञाकारी थवुं जे माटे कहेलुंछे के छठ, अठम, दशम, द्वादश तथा अर्द्धमासखमण अने मासखमण करतो थको पण जो गुरुनो वचन नही माने तो अनंत संसारी थायछे।

और श्रीरत्नशेखरसूरिजी कृत श्रीश्राद्धविधिवृत्तिका गुजरातीभाषान्तर शाः—चीमनलाल शांकलचंद मारफतीयाने श्रीमुंबईमें छपवा कर प्रसिद्ध किया है जिसके पृष्ठ १८८ का लेख नीचे मुजब जानो ;—

आशातनाना विषयमां उत्सूत्र [सूत्रमां कहेला आशयथी विरुद्ध] भाषणकरवाथी अरिहंतनी के गुरुनी अवहेलना करवी ए मोटी आशातनाओ अनन्तसंसारनी हेतुछे. जेमके उत्सूत्र प्ररूपणाथी सावद्याचार्य्य, मरीची, जमाली, कुल

कलुआीसंघ विगेरे घणाक जीवो अनन्त संसारी थयाछे कह्युं छे के—उस्सूत्तभासगाणं, बोहिनासो अणंतसंसारो। पाण च्चए वि धिरा उस्सुत्तं ता न भासंति ॥ १ ॥ तित्थयर पवयण सूअं, आयरिअं गणहरं महट्ठीअं। आसायंतो बहुसो, अणंत संसारिओ होई ॥ २ ॥ उत्सूत्रना भाषकने बोधिबीजनो नाश थायछे अने अनन्त संसारनी वृद्धि थायछे माटे प्राणजतां पण धीरपुरुषो उत्सूत्र वचन बोलता नथी तीर्थङ्कर, प्रवचन [जैनशासन] ज्ञान, आचार्य्य, गणधर, उपाध्याय, ज्ञानादिकथी महर्द्धिकसाधु, साधु ए ओनी आशातना करतां प्राणी घणुकरी अनन्त संसारी थायछे।

और सुप्रसिद्ध युगप्रधान श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणजी महाराजनें श्रीआवश्यकभाष्य [विशेषावश्यक] में कहा है यथा—जे जिनवयणु त्तिन्ने, वयणं भासन्ति जे उ मन्नति। सम्मदिट्ठीणं तं, दंसणपि संसार वुड्ढि करंति ॥ १ ॥

भावार्थः—जो प्राणी श्रीजिनेश्वर भगवान् का वचनके विरुद्धवचन [उत्सूत्र] भाषण करता होवे और उसीको जो मानता होवे उस प्राणीका मुख देखना भी सम्यक्त्वधारियोंको संसार वृद्धि करता है ॥ १ ॥

अब आत्मार्थी विवेकी सज्जन पुरुषोंको निष्पक्षपातकी दीर्घदृष्टिसें विचार करना चाहिये कि उत्सूत्र भाषण करने वाला तो संसारमें रूले परन्तु उत्सूत्र भाषकका मुख देखनेवाले अर्थात् उस उत्सूत्र भाषक सम्यग्दर्शनसें भ्रष्ट, दुष्टाचारीको श्रद्धापूर्वक वन्दनादि करने वालोंको भी संसार की वृद्धिका कारण होता है तो फिर इस वर्तमान पञ्चम कालमें उत्सूत्र भाषकोंको परमपूज्यमानके उन्हीके कहने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुजब वर्तने वाले गच्छपक्षी दृष्टिरागी बिचारे भोले जीवोंके कैसे कैसे हाल होवेंगे सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जानें—

उपरमें उत्सूत्र भाषक सम्बन्धी इतना लेख लिखनेका कारण यही है कि उत्सूत्रभाषक पुरुष श्रीतीर्थपती श्री तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी और अपने पूर्वजोंकी आशातना करने वाला और भोले जीवोंको भी उसी रस्ते पहुंचानेके कारणसें संसारकी वृद्धि करता है जिससें उसीकों पर भवमें तथा भवो भवमें नरकादि अनेक विडम्बना भोगनी पड़ती है इसलिये महान् पश्चात्तापका कारण बनता है और इस भवमें भी उत्सूत्र भाषकको अनेक उपद्रव भोगने पड़ते है, तैसे ही छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीने भी उत्सूत्र भाषण करके श्रीजिनेश्वर भगवान् की आज्ञाके आराधक पुरुषोंको मिथ्या आज्ञा-भङ्गका दूषण लगाकर जैनपत्रमें प्रसिद्ध कराके झगड़ेका मूल खड़ा किया और बड़े जोरके साथ पुनः जैनपत्रमें फैलाया जिससें आत्मार्थी निष्पक्षपाती सज्जन-पुरुष तथा अपने [छठे महाशयजीके] पक्षधारी श्रीतप-गच्छके सज्जन पुरुष और खास छठे महाशयजीके मंडलीके याने श्रीन्यायाम्भोनिधिजीके परिवार वाले भी कितने ही पुरुष छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीपर पूरा अभाव करते है कि ना हक वृथा जो संपसे कार्य्य होतेथे जिसमें विघ्नकारक झगड़ा खड़ा किया है इसलिये छठे महाशय-जीको इन भवमें भी पूरे पूरा पश्चात्ताप करनेका कारण होगया है तथा करते भी है।

और उत्सूत्र भाषण करके दूसरोंकी मिथ्या दूषण लगा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नेके कारणसें उपरोक्त शास्त्रोंके प्रमाणानुसार पर भवमें तथा भवोभवमें छठे महाशयजीको पूरे पूरा पश्चात्ताप करना पड़ेगा इस लिये प्रथमही पूर्वापरका विचार किये विना पश्चात्ताप करनेका कार्य्य करना छठे महाशयजी को योग्य नही था तथापि किया तो अब मेरेको धर्मबन्धु की प्रीतिसें छठे महाशयजीको यही कहना उचित है कि आपको उपरोक्त कार्य्योंसें संसार वृद्धिके कारणसें यावत् भवोभवमें पश्चात्ताप करनेका भय लगता होवे तो गच्छका पक्षपात और पण्डिताभिमानको दूरकरके सरलतापूर्वक मन वचन कायासें श्रीचतुर्विध संघसमक्ष उपर कहे सो आपके कार्य्योंका मिथ्या दुष्कृत देकर तथा आलोचना लेकर और अपनी भूल पीछी ही जैनपत्र द्वारा प्रगट करके उपरोक्त उत्सूत्रभाषणके फल विपाकोंसें अपनी आत्माको बचा लेना चाहिये नही तो बड़ी ही मुश्किलीके साथ उपर कहे सो विपाकोंको भवान्तरमें भोक्ते हुए जरूर ही पश्चात्ताप करनाही पड़ेगा वहां किसीका भी पक्षपात नही है इस लिये आप विवेक बुद्धिवाले विद्वान् हो तो हृदयमें विचार करके चेत जावो मैंने तो आपका हितके लिये इतना लिखा है सो मान्य करोगे तो बहुत ही अच्छी बात है आगे इच्छा आपकी ;—

और आगे फिर भी छठे महाशयजी—अंग्रेज सरकारके कायदे कानून दिखाकर एक कहेगा दो सुनेगा—ऐसा लिखते हैं इस पर मेरेको बड़ेही अफसोसके साथ लिखना पड़ता है कि छठे महाशयजी साधु हो करके भी इतना मिथ्यात्वको वृथा क्यों फैलाते हैं क्योंकि सम्यक्त्वधारी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आत्मार्थी सज्जन पुरुष होते हैं सो तो अपनी भूलको मंजूर कर दूसरेकी हितशिक्षारूप सत्य बातको प्रमाण करके उपकार मानते हुए सुख शान्तिसें संप करके वर्तते हैं और मिथ्यात्वी होते है सो सत्य बातकी हितशिक्षाको कहनेवाले पर क्रोध-युक्त हो कर अपनी भूलको न देखते हुए अन्यायसें झगड़े का मूल खड़ा करनेके लिये (हितशिक्षाको ग्रहण नही करते हुए) एककी दो सुनाकर रागद्वेषसें विसंवाद करते हैं तैसेही छठे महाशयजीने भी एककी दो सुनानेका दिखाया परन्तु शास्त्रार्थसें न्याय पूर्वक सत्य बातको ग्रहण करने की तो इच्छा भी न रक्खी, इस बातको दीर्घ दृष्टिसें सज्जन पुरुष अच्छी तरहसें विशेष विचार सकते हैं,--

और सरकारी कानून कायदेका छठे महाशयजीनें लिखा है इस पर भी मेरेको यही कहना पड़ता है कि प्रथम झगड़ा खड़ा करनेवाले और दूसरोंको मिथ्या दूषण लगानेवाले तथा मायावृत्तिकी धूर्ताचारीसें वक्रोक्तिकरके-पण्डिताभिमानसें अनुचित शब्द लिखनेवाले और खानगी में न्याय रीतिसें पूछने वालेको प्रसिद्धीमें लाकर उसीको अयोग्य ओपमा लगाके अवहेलना करने वाले आप जैसोंको हितशिक्षा देनेके लिये तो जरूर करके सरकारी कानून तैयार हैं परन्तु आप साधुपदके भेषधारी हो इसलिये सज्जन पुरुष ऐसा करना उचित नही समझते हैं तथापि आप तो उसीके योग्य हो-महाशयजी याद रक्खो-सरकारके विरुद्ध चलनेसें इसीही भवमें अलदि शिक्षा मिलती है तैसेही श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञाके विरुद्ध चलने वाले उत्सूत्र भाषकको भी इस भवमें लौकिकमें तिर-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्कारादि तथा परभवमें और भवो भवमें खूब गहरी वारं-वार नरकादिमें शिक्षा मिलती है इस बातका विचार सज्जन पुरुष जब करते हैं तब तो आपके गुरुजन न्यायांभोनिधिजी वगैरहको और आपके गच्छवासी हठग्राही जो जो पूर्वे उत्सूत्र भाषक हुए है तथा वर्त्तमानमें आप जैसे है और भी आगे होवेंगे उन्होंको क्या क्या शिक्षा मिलेगा सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने क्योंकि आप लोग उत्सूत्र भाषणकी अनेक बातें कर रहे हो जिसमेंसें थोड़ीसी बातें नमुना रूप इस जगह लिख दिखाता हूं ;—

१ प्रथम—अधिकमासको गिनतीमें निषेध करते हो सो उत्सूत्रभाषण है ।

२ दूसरा—अधिकमास होनेसें तेरह मासोंके पुण्यपापादि कार्य्य करके भी तेरह मासोंके पापकृत्योंकी आलोचना नही करते हो और दूसरे तेरह मासोंके पापकृत्योंकी आलोचना करते है जिन्होंको दूषण लगाके निषेध करते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

३ तीसरा—श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण करनेवालोंको मिथ्या दूषण लगाते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

४ चौथा—जैन ज्योतिषाधिकारे सर्वत्र शास्त्रोंमें अधिक मासको गिनतीमें अच्छी तरहसें खुलासेके साथ प्रमाण करा है तथापि आप लोग जैन शास्त्रोंमें अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण नही करा है ऐसा प्रत्यक्ष महा मिथ्या बोलते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

५ पांचमा—पर्युषणाधिकारे सर्वत्र जैन शास्त्रोंमें आषाढ़

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चौमासीसें दिनोंकी गिनती करके पचास दिनेही निश्चय करके पर्युषणा करनेका कहा है तथापि आप लोग दो श्रावण अथवा दो भाद्रपद होनेसें ८० दिने पर्युषणाकरते हो और ८० दिनके ५० दिन भोले जीवोंको दिखाते हो सो भी माया सहित उत्सूत्र भाषण हैं ।

६ छठा—मासवृद्धिके अभावसें भाद्रपदमें पर्युषणा करनी कही है तथापि आप लोग मासवृद्धि दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा ठहराते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

७ सातमा—श्रीनिशीथ भाष्यमें १ तथा चूर्णिमें २ श्रीवृहत्कल्पभाष्यमें ३ तथा चूर्णिमें ४ और वृत्तिमें ५ श्रीसमवायाङ्गजीमें ६ तथा तद्वृत्तिमें ७ इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें मासवृद्धिके अभावसें चार मासके १२० दिनका वर्षाकालमें पचासदिने पर्युषणा करनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन स्वभाविक रहते हैं जिसको भी आप लोग वर्त्तमानमें दो श्रावणादि होनेसें पांच मासके १५० दिनका वर्षाकालमें भी पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन रहनेका ठहराते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

८ आठमा—अधिक मास होनेसें प्राचीन कालमें भी पर्युषणाके पिछाड़ी १०० दिन रहते थे तथा वर्त्तमानमें भी श्रावणादि अधिक मास होनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी १००दिन शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक रहते हैं जिसको निषेध करते हो और १०० दिन माननेवालोंको दूषण लगाते हो सो भी उत्सूत्र भाषण हैं ।

९ नवमा—अधिक मासके ३० दिनोंका शुभाशुभकृत्य तथा धर्मकर्म और सर्व व्यवहारको गिनतीमें लेकर मान्य करते हो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

न्यायानुसार दो आश्विनमास होनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक १०० दिन होते हैं जिसके ७० दिन अपनी कल्पनासें कहते हो सो भी प्रत्यक्ष अन्यायकारक उत्सूत्र भाषण है ।

१० दशमा–जैन शास्त्रोंमें मास वृद्धिको बारह मासोंके ऊपर शिखररूप अधिक मासको कहा है और लौकिकमें भी पुरुषोत्तम अधिक मास कहा हैं इसलिये धर्म्मव्यवहारमें अधिक मास बारह मासोंसें विशेष उत्तम महान् पुरुषरूप है जिसको भी आप लोग नपुंसक निःसत्व तुच्छादि कहके भोले जीवोंके धर्म्मकार्य्योंमें हानी पहुंचानेका कारण करते हो सो भी उत्सूत्र भाषण हैं ।

११ इग्यारमा–अधिक मासको कालचूलाकी उत्तम ओपमा गिनती करनेयोग्य शास्त्रकारोंने दिनी हैं तथापि आप लोग कालचूला कहनेसें अधिक मास गिनतीमें नही आता है ऐसा कहते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

१२ बारहमा–अधिक मासमें प्रत्यक्ष वनस्पति फल-फूलादिसें प्रफुल्लित होती है तथापि आप लोग नही फूलनेका कहते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

१३ तेरहमा–अधिक मासके कारणसें श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने अभिवर्द्धितसंवत्सर तेरह मासोंका कहा है तथापि आप लोग अधिक मासको गिनतीमें निषेध करके श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महा-राजोंका कहा हुवा अभिवर्द्धित संवत्सरका प्रमाणको तथा अभिवर्द्धित संवत्सरकी संज्ञाको नष्ट कर देते हो इसलिये श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातना कारक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अनन्त संसारकी वृद्धिरूप यह भी महान् उत्सूत्र भाषण है।

१४ चौदहमा-श्रीजैनशास्त्रोंमें षट्द्रव्यरूप शाश्वती वस्तुयोंमेंसें कालद्रव्य रूपभी एक शाश्वती वस्तु है जिसका एक समयमात्र भी जो कालव्यतीत होजावें उसीका गिनती में कदापि निषेध नही हो सकता है यह अनादि स्वयं सिद्ध मर्यादा है तथापि आपलोग समय, आवलिका, मुहूर्त्त, दिन, पक्षसें, दो पक्षका जो एकमास बनता हैं उसी को गिनतीमें निषेध करके अनादि स्वयं सिद्ध मर्य्यादाको अपनी कल्पनासें तोडमोडकरके ३० मासें-एकमासका गिनतीमें निषेध करनेके हिसाबसें, ३० वर्षे-एकवर्ष, ३०युगे-एकयुग, इसी तरहसें, ३० कोडा कोडी सागरोपमें-एक कोडाकोडी सागरोपमके कालको-उडा कर गिनतीमें निषेध करनेका वृथा प्रयास करते हो सो भी यह महान् उत्सूत्र भाषण है।

और १५ पंदरहमा-जैनपञ्चाङ्ग का अबी वर्त्तमानकालमें विच्छेद है तथापि आपलोगोंकी तरफसें मिथ्यात्वकी वृद्धिकारक मनमानी अपनी कल्पनाका पञ्चाङ्गको जैन-पञ्चाङ्ग ठहराकर प्रसिद्ध करवाते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है

१६ सोलहमा-श्रीनिशीथसूत्रके भाष्यादि शास्त्रोंमें सूर्य्योदयकी पर्व तिथिको न माननेवालेको मिथ्यात्वी कहा है और लौकिक पञ्चाङ्गमें दो चतुर्दशी वगैरह तिथियां होती है उसीमें पर्वरूप प्रथम चतुर्दशी सूर्य्योदयसें लेकर अहोरात्रि ६० घडी तक संपूर्ण चतुर्दशीका ही वर्ताव रहता है उसीमें अपर्व रूप त्रयोदशीके वर्तावका गन्ध भी नही है तथापि आप लोग अपने पक्षपातके जोरसें और पण्डिताभिमानका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फन्दसें जबरदस्ति सूर्य्योदयकी पर्वरूप प्रथम चतुर्दशीको पर्वरूप नही मानते हुए, अपर्वरूप त्रयोदशी बनाकरके संख्याते, असंख्याते, अनन्ते जीवोंकी हानी तथा अब्रह्मचर्य्यादि पञ्चाश्रव सेवनका और सब संसार व्यवहारके कार्य्योंसें आरम्भादि होनेका कारणमें अधोगतिके रस्ता की खर्चीरूप कार्य्योंमें आपलोग कटीबद्ध तैयार हो और अपने संयमरूप जीवितव्यके नष्ट होनेका और मिथ्यात्वी बननेका कुछ भी भय नही करतेहो इस लिये यह भी उत्सूत्र भाषण है ।

१७ सतरहमा—भी इसीही तरहसें लौकिक पञ्चाङ्गमें दो दूज, दो पञ्चमी, दो अष्टमी, दो एकादशी, वगैरह सूर्य्योदयकी पर्वतिथियां होती है जिसको बदल कर, अपर्वकी—दो एकम, दो चतुर्थी, दो सप्तमी, दो दशमी वगैरह करके मानते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

१८ अठारहमा—भी इसीही तरहसे विशेष करके लौकिक पञ्चाङ्गमें संपूर्ण चतुर्दशी पर्वरूप तिथि होती है और दो पूर्णिमा तथा दो अमावस्या भी होती है जिसको तोड़मोड़ करके संपूर्ण चतुर्दशीकी, त्रयोदशी और दो पूर्णिमाकी तथा दो अमावस्याकी भी दो त्रयोदशी कोइ भी जैनशास्त्रोंके प्रमाण बिना अपनी कपोल कल्पनासें बना लेते हो सो भी उत्सूत्र भाषण हैं ।

१९ एगुनवीशमा—लौकिक पञ्चाङ्गमें जब कोई कोई वरुत दो पूर्णिमा अथवा दो अमावस्या होती है उसीमें चन्द्र अथवा सूर्य्यका ग्रहण प्रथम पूर्णिमाको अथवा प्रथम अमावस्याको होता है जिसको सब दुनिया मानती है और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शास्त्रोंमें भी पूर्णिमा अथवा अमावस्याके दिन ग्रहण होने का कहा है तथापि आप लोग सब दुनियाके तथा शास्त्रों के भी विरुद्ध होकरके प्रगट पने ग्रहणयुक्त पूर्णिमा अथवा अमावस्याको चतुर्दशी ठहराकर चतुर्दशीकाही ग्रहण मानते हो यह तो प्रत्यक्ष अन्याय कारक उत्सूत्र भाषण है।

२० वीशमा—चतुर्दशी का क्षय होनेसें पाक्षिककृत्य पूर्णिमा अथवा अमावस्याको करनेका जैनशास्त्रोंमें कहा है तथापि आप लोग नही करते हो और दूसरे करने वालोंको दूषण लगाके निषेध करते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है।

२१ एकवीशमा—आप लोग एकान्त आग्रहसें सूर्य्योदयके बिनाकी तिथिको पर्वतिथिमें नही मानना, ऐसा कहते हो परन्तु जब चतुर्दशीका क्षय होता है तब सूर्य्योदयकी त्रयो-दशीको चतुर्दशी कहते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है।

२२ बावीशमा—श्रीजैनज्योतिषकी गिनती मुजब, चन्द्र के गतिकी अपेक्षासें श्रीचन्द्रप्रज्ञप्ति तथा श्रीसूर्य्यप्रज्ञप्ति वृत्ति वगैरह अनेक जैनशास्त्रोंमें पर्वकी तिथियांके क्षय होनेका लिखा है और लौकिक पञ्चाङ्गमें भी कालानुसार पर्वकी तिथियांका क्षय होता है और जैन पञ्चाङ्गके अभावसें लौकिक पञ्चाङ्ग मुजब वर्त्तनेकी पूर्वाचार्य्योंकी खास आज्ञा है, तैसेही आप लोग—दीक्षा, प्रतिष्ठा वगैरह धर्म्म व्यवहारके कार्य्योंमें घड़ी, पल, तिथि, वार, नक्षत्र, योग राशिचन्द्र, शुभाशुभ मुहूर्त्त, दिन, पक्ष, मास वगैरह सब व्यवहार लौकिक पञ्चाङ्गानुसार करते हो तथापि आप लोग, लौकिक पञ्चाङ्गमें जो पर्वतिथियांका क्षय होता है उसीको नही मानते हो और माननेवालोंको दूषण लगाके निषेध करते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२३ तेवीशमा–लौकिक पञ्चाङ्गमें दो चतुर्दशी होती है उन्हीके मुजब आप लोगोंके पूर्वजोंने भी दो चतुर्दशी लिखी है जिसको आप लोग नही मानते हो और लौकिक पञ्चाङ्ग मुजब युक्तिपूर्वक कालानुसार और पूर्वाचार्य्योंकी परम्परासें दो चतुर्दशी वगैरह पर्व तिथियांको माननेवालोंको दूषण लगाके निषेध करते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

२४ चौवीशमा–आपके पूर्वज कृत ग्रन्थमें तिथिका शुद्धाशुद्ध सम्बन्धी जो प्रमाण बताया है उसी मुजब आप लोग नही मानते हो और स्वच्छन्दाचारीसें (अपनी मति की कल्पना करके) संपूर्ण प्रथम पर्वतिथिको अपर्व ठहरा करके दूसरी–दो अथवा तीन पल (एक मिनिट) मात्र की अल्पतर तिथिमें जाते हो और दूसरे–कालानुसार युक्ति पूर्वक तथा विशेष धर्म्मवृद्धिके लाभका कारण जानके प्रथम संपूर्ण ६० घड़ी की पर्वतिथिको मानते हैं तैसेही दूसरी पर्वतिथिको भी यथायोग्य मानते हैं जिन्होको दूषण लगाके निषेध करते हो सो भी उत्सूत्र भाषण है ।

इस तरहकी अनेक बातें आपलोगोंमें उत्सूत्र भाषणकी हो रही है जिसका तथा आपके गुरुजी श्रीन्यायाम्भोनिधिजीनें भी जैनसिद्धान्त समाचारी पुस्तकका नाम रखके अनुमान ५० जगह उत्सूत्र भाषण करा है जिसका भी नमुनारूप थोड़ीसी बातें आगे लिखनेमें आवेंगे और उपरकी सब बातोंका निर्णय शस्त्रोंके प्रमाणसें और युक्तिपूर्वक मेरे लिखीत इन्ही ग्रन्थको आदिसें अन्त तक स्थिरचित्तसें सत्यग्राही होकर निष्पक्षपातसें मध्यस्थ दृष्टि रखकर विशुद्धभावसें पढ़नेवाले आत्मार्थी सज्जन पुरुषोंको अच्छी तरहसें मालूम हो सकेगा ;—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और उत्सूत्र भाषणके फलविपाक सम्बन्धी उपरमें ही पृष्ट २४९ से २५६ तक लिखनेमें आया है उसीका भय लगता हो, तथा श्रीजिनेश्वर भगवान् के वचन पर आपलोगोंकी कुछ भी श्रद्धा हो, और अपनेही श्रीतपगच्छके नायक श्रीदेवेन्द्र सूरिजी तथा श्रीरत्नशेखर सूरिजीके उत्सूत्र भाषक सम्बन्धी उपरोक्त वाक्योंको आपलोग सत्यमानतेहो, और श्रीदेवेन्द्र सूरीजी कृत श्रीधर्मरत्नप्रकरण वृत्ति आपलोगोंके समुदाय में विशेष करके व्याख्यानाधिकारे तथा पठन पाठनमें भी बारंवार आती है उन्हीके वाक्यार्थकी आपके हृदयमें धारणा हो, तो ऊपरका लेखको परमहितशिक्षारूप समझके उत्सूत्र भाषण करते हो जिसको छोड़ो, तथा उत्सूत्र भाषण करा होवे उसीका मिथ्या दुष्कृत देवो, और गच्छके पक्षपात को तथा पण्डिताभिमानको छोड़के श्रीजिनेश्वर भगवान्की आज्ञा मुजब शास्त्रोंके महत् प्रमाणानुसार आषाढ़ चौमासी सें ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेका और अधिक मासको गिनतीमें प्रमाणादि अनेक सत्य बातोंको ग्रहण करो, और भक्तजनोंको करावो जिससें आपकी और आपके भक्तजनोंकी आत्मसिद्धिका रस्तापावो—श्रीजिनाज्ञारूपी सम्यक्त्वरत्नके सिवाय मोक्ष साधनमें गच्छका पक्षपात तथा पण्डिताभिमान कुछ भी काम नही आता है इसलिये गच्छ पक्षको छोड़के श्रीजिनाज्ञा मुजब सत्यबातको ग्रहण करना सोही आत्मार्थी विवेकी विद्वान् सज्जन पुरुषोंको परम उचित है ।

और आगे फिर भी छठे महाशयजीने लिखा है कि (थोड़े समयकी बात हैं बुद्धिसागर नामा खरतरगच्छीय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनिके नामका पत्र हमारे पास आया जिसमें पर्युषणाकी बाबत कुछ लिखाथा हमने मुनासिब नही समजा कि वृथा समय खोकर परस्पर ईर्षाकी वृद्धि करनेवाला काम किया जावे) इस लेखपर मेरेको बड़ाही आश्चर्य्य उत्पन्न होता है कि श्रीवल्लभविजयजीने अपनी मायावृत्तिकी चातुराईको खूब प्रगट करी है क्योंकि प्रथम आपनेंही दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालोंको आज्ञाभङ्गका दूषण लगाया था उसी सम्बन्धी आपको श्रीबुद्धिसागरजीनें शास्त्रका प्रमाण खानगीमें ही पत्र भेजके पूछा था जिसका जबाब पीछा खानगीमें ही लिख भेजनेमें तो छठे महाशयजी आपको बहुत समय वृथा खोनेका और परस्पर ईर्षाकी वृद्धि होनेका बड़ा ही भय लगा परन्तु लम्बा चौड़ा लेख जैनपत्रमें भङ्गी चमारादि शब्दोंसें तथा निष्प्रयोजनकी अन्यान्य बातोंको और श्रीबुद्धिसागरजीको सूर्पनखाकी वृथा अनुचित ओपमा लगाके उन्हकी खानगीकी पूछी हुई बातको (पीछा ही खानगीमें जबाब न देते हुए) प्रसिद्धमें लाकर अन्यायके रस्तेसें उन्हकी अवहेलना करनेमें और श्रीखरतरगच्छवालोंके परमपूज्य प्रभावकाचार्य्यजी श्रीजिनपतिसूरिजी महाराजका श्रीजिनाज्ञा मुजब अनेक शास्त्रोंके प्रमाणयुक्त सत्यवाक्यको पक्षपातके जोरसें अप्रमाण ठहरा कर श्रीखरतरगच्छवालोंके दिलमें पूरे पूरा रंज उत्पन्न करके—और दूसरे गुजराती भाषाके लेखमें भी—सर्व संघको, कान्फरन्सको, शेठियोंको, वकीलको, बेरिस्टरको, नाणाकोथली (रुपैयोंकी थेली) वगैरहको सावधान सावधान करके श्रीसंघके आपसमें और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कोर्ट कचेरीमें बड़ेही भारी झगड़ेके कारण करनेका लेख लिखनेमें तथा प्रसिद्ध करानेमें तो छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजी आपको खूब लम्बा चौड़ा समय भी मिल गया, और परस्पर आपसमें ईर्षाकी वृद्धि होनेका किञ्चित् भी भय न लगा परन्तु श्रीबुद्धिसागरजीके पत्रका जबाब खानगीमें लिखनेसें छठे महाशयजीको वृथा समय खोनेका तथा परस्पर ईर्षाकी वृद्धि करनेवाला काम करने का भय लगा, यह कैसी अलौकिक विद्वत्ताकी चातुराई (सज्जन पुरुषोंको आश्चर्य्य उत्पन्नकारक) छठे महाशयजी आपने गच्छ पक्षी दृष्टिरागी बालजीवोंको दिखाकर अपनी बातको जमाई सो आत्मार्थी विवेकी विद्वान् पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे ।

और आगे फिर भी छठे महाशयजीने लिखा है कि (कितनेही समयसें गच्छ सम्बन्धी टंटा प्राय दबा हुआ है तपगच्छ खरतरगच्छ दोनोंही पक्ष प्रायः परस्पर संपसें मिले जुलेसें मालूम होते हैं) इस लेख पर भी मेरेको यही कहना उचित है कि गच्छ सम्बन्धी टंटा दबाकरके शान्त करनेका और संपसें वर्त्तनेका श्रीखरतगच्छवालोंकी महान् सरलताका कारण है क्योंकि श्रीतपगच्छके तो आप जैसे अनेक महाशय संपके मूलमें अग्नी लगाके श्री खरतरगच्छवालोंकी सत्य बातका निषेध करनेके लिये उत्सूत्र भाषण करके अपनी मति कल्पनाकी मिथ्या बातका स्थापन करनेके लिये विशेष करके हर वर्षे गांम गांममें पर्युषणाके व्याख्यानाधिकारे श्रीजिनेश्वर भगवानकी आज्ञा-नुसार अनेक शास्त्रोंके महत् प्रमाण मुजब अधिक मासकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तिनती अनादि स्वयं सिद्ध है जिसका खण्डन करके और श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महान् धुरन्धराचार्य्योंनें और श्रीखरतरगच्छके तथा श्रीतपगच्छके भी पूर्वाचार्य्योंनें श्रीवीर-प्रभुके, छ कल्याणक अनेक शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक कहे हैं तथापि आप लोग श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी और अपने पूर्वजोंकी आशातनाका भय न करते उन्हीं महाराजोंके विरुद्ध हो करके, छ कल्याणकका निषेध करते हो और श्रीखरतरगच्छवालोंके ऊपर मिथ्या कटाक्ष करते हुए अनेक बातोंका टंटा खड़ा करनेका कारण करनेवाले आप जैसे अनेक कटीबद्ध तैयार है और अपने संसार वृद्धिका भय नही रखते है इस बातको इसीही ग्रन्थको संपूर्ण पढ़नेवाले विवेकी सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे और इसका विशेष विस्तार इसीही ग्रन्थके अन्तमें भी करनेमें आवेगा वहां श्रीखरतरगच्छवालोंकी कैसी सरलता है और श्रीतपगच्छवाले आप जैसोंकी कैसी वक्रता है जिसका भी अच्छी तरहसें निर्णय हो जावेंगा ।

और आगे फिरभी छठे महाशयजीनें लिखा है कि (उनमें–अर्थात्, तपगच्छके खरतरगच्छके आपसमें—फरक पड़नेसें कुछक दबे हुए जैनशासनके वेरियोंका जोर हो जानेका सम्भव है) इस लेख पर भी मेरेको इतनाही कहना पड़ता है कि–छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजी आप श्रीखरतरगच्छके तथा श्रीतपगच्छके आपसमें विरोध बढ़ाकर संपको नष्ठ करना नही चाहते हो और दोनुं गच्छको संपसें मिले जुलेसें रहनेकी जो आप अन्तर भावसें इच्छा रखते हो तबतो श्रीजिनाज्ञा मुजब अनेक महत् शास्त्रोंके प्रमाण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

युक्त श्रीखरतरगच्छवालोंकी सत्य बातोंको प्रमाण करके अपनी कल्पित बातोंको छोड़ दो और श्रीखरतरगच्छवालों पर मिथ्या आक्षेप जो आपने उत्सूत्र भाषण करके करा है तथा श्रीबुद्धिसागरजी पर जो जो अन्यायसें अनुचित लेख लिखके जैनपत्रमें प्रसिद्ध कराया है जिसकी क्षमा मांगकर उत्सूत्र भाषणका मिथ्या दुष्कृत दो और अपनी भूलको पिछीही जैन पत्रमें प्रगट करके सुखशान्तिसें संप करके वर्तो तब दोनुं गच्छके संप रखने सम्बन्धी आपका लिखना सत्य हो सकेगा परन्तु जब तक छठे महाशयजी आपके बिना विचारके करे हुए अनुचित कार्य्योंकी आप क्षमा नही मांगोंगे और सत्य बातोंका ग्रहण भी नही करते हुए अपनी कल्पित बातोंके स्थापन करनेके लिये जो वार्त्ताका प्रकरण चलता होवे उसीको छोड़के अन्यायके रस्तेसें अन्यान्य अनुचित बातोंको लिखके विशेष झगड़ा बढ़ाते रहोंगे तब तो दोनुं गच्छके संप रखने सम्बन्धी आपका लिखना प्रत्यक्ष मायावृत्तिका मिथ्या है और भोले जीवोंको दिखाने मात्रही है अथवा लिखने मात्रही है सो विवेकी सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे और दोनुं गच्छके आपसमें वादविवादके कारणसें दबे हुए जैनशासनके वेरियोंका जोर होनेसें मिथ्यात्व बढ़नेका छठे महाशयजी जो आपको भय लगता होवे तो आपनेही प्रथम जैनपत्रमें शास्त्रानुसार चलनेवालेंाको मिथ्या दूषण लगाके उत्सूत्र भाषणसें झगड़ा खड़ा करा और पुनःपुनः (दीर्घकाल चलने रूप) जैन पत्रमें फैलाया है जिसको पिछीही अपने हाथसें मिथ्या दुष्कृतसें क्षमाके साथ अपनी भूलको जैन-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पत्रमैंही सुधार लो जिससें दोनुं गच्छवालोंके आपसमें संप बना रहेगा और दोनु गच्छके आपसमें संपको नष्ट करनेवाले आप लोगोंकी तरफसें पर्युषणाके व्याख्यानमें तथा छापे द्वारा जो जो कार्य्य करनेमें आते हैं उसको भी बंध कर दीजिये जिससें दोनुं गच्छवालोंके आपसमें जो संप है उसीसें भी खूब गहरा विशेष संप हो जावेगा; तब जैन शासनके वेरियोंका कुछ भी जोर नही हो सकेगा, इतने पर भी आप जैसे शास्त्रानुसार तथा युक्तिपूर्वक सत्य बात को ग्रहण नही करते हुए, अन्यायसें वाद विवाद करके झगड़ेको वढ़ाते रहोंगे जिस पर जो जो जैनशासनके निन्दक शत्रुयोंका जोर वढ़नेका कारण होगा तो जिसके दोषाधिकारी खास आप लोगही होवोंगे सो विवेकबुद्धिसें हृदयमें विचार लेना, और आगे श्रीमोहनलालजीके सम्बन्ध में लिखकर तपगच्छकी समाचारीके बाबत जो आपने लिखा है इसका जबाब—अबी नवमें महाशय श्रीमाणक-मुनिजी प्रगट हुवे हैं जिसनें अपनी अकलका नमुना जैन पत्रमें प्रगट करा है उसीका जबाब आगे लिखनेंमें आवेगा वहां श्रीमोहनलालजी सम्बन्धी भी लिखनेमें आवेगा ;—

और छठे महाशयजीनें फिर भी अपनी विद्वत्ता की चातुराईका दर्शाव दिखाया है कि—(सूर्पनखा समान जीव उभय पक्षको दुःखदायी होते है तद्वत् बुद्धिसागर खरतरगच्छीय मुनि नाम धारकने भी अपनी मनःकामना पूर्ण न होनेसें रावणके समान ढूंढियोंका सरणा लेकर युद्धारम्भ करना चाहा है) इस लेख पर मेरेको इनताही कहना है कि—जैसे किसी पण्डितको किसी आदमीनें कोई

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बातका खुलासा पूछा तब उस पण्डितकी उसी बातका खुलासा करनेकी बुद्धि नही होनेसें अपने विद्वत्ताकी इज़्जत रखनेके लिये उस बातका सम्बन्धको छोड़के निष्प्रयोजन की वृथा अन्यान्य बातोंको लाकर अनुचित शब्दोंसे यावत् क्रोधका सरणा ले करके अपनी विद्वत्ताकी बातको जमाता है परन्तु विवेकी विद्वान् पुरुष उस पण्डितका मिथ्या पण्डिताभिमानको और अन्यायके पाखण्डको अच्छी तरह से समझ लेते हैं—तैसेही छठे महाशयजी आपनें भी करा अर्थात् आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेवालोंको आज्ञाभङ्गका दूषण लगाने सम्बन्धी श्रीबुद्धिसागरजीनें आपको शास्त्रका प्रमाण पूछा उसीको शास्त्रका प्रमाण बतानेकी आपकी बुद्धि नही होनेसें और शास्त्रका प्रमाण भी आपको नही मिलनेसें ऊपर कहे सो नामधारी पण्डितवत् आपने भी अपनी विद्वत्ताकी इज़्जत रखनेके लिये शास्त्रका प्रमाण बतानेके सम्बन्धको छोड़ करके निष्प्रयोजनकी वृथा अन्यान्य बातेंकों लिखकर अनुचित शब्दसें यावत् क्रोधका सरणा लेकर अपनी विद्वत्ताको जमानी चाही परन्तु निष्पक्षपाती विद्वान् पुरुषोंके आगे आपका मिथ्या पण्डिताभिमानका और अन्यायके पाखण्डका दर्शाव अच्छी तरहसें खुल गया हैं कि—छठे महाशयजीके पास शास्त्रका प्रमाण न होनेसें श्रीबुद्धिसागरजीको सूर्पनखाकी ओपमा वगैरह प्रत्यक्ष मिथ्या वाक्य लिखके अपने नामकी हासी कराई है क्योंकि श्रीबुद्धिसागरजीनें सूर्पनखाकी तरह दोनु पक्षको दुःखदाई होनेका कोई भी कार्य्य नही करा है तथा न ढूंढियांका सरणा लिया है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और न युद्धारम्भ करना चाहा है—तथापि श्रीवल्लभविजयजीनें मिथ्या लिखा यह बड़ाही अफसोस है परन्तु 'सतीको' भी–वेश्या अपने जैसी समझती है तद्वत् तैसेही छठे महाशयजीनें भी निर्दोषी श्रीबुद्धिसागरजीको दोषित ठहरानेके लिये अपने कृत्य मुजब सूर्पनखाके समानका तथा ढूंढियांका सरणा लेनेका और युद्धारम्भ करनेका मिथ्या आक्षेप करा मालूम होता है क्योंकि उपरके कृत्य छठे महाशयजीमेंही प्रत्यक्ष है सोही दिखाता हूं ;—

जैसे–सूर्पनखा दोनुं पक्षवालोंको दुःखदाई हुई तैसेही छठे महाशयजी (श्रीवल्लभविजयजी) भी दोनुं गच्छवालोंके आपसका संपको नष्ट करनेके लिये वाद विवादसें झगड़ेका मूल लगाके दोनुं गच्छवालोंको तथा अपने गुरुजनोंके नामको और अपने सम्प्रदायवालोंको भी दुःखदाई हुवे है इस लिये मेरेको भी इस ग्रन्थकी रचना करके आठों महाशयोंके उत्सूत्र भाषणके कुतर्कोंकी (शास्त्रानुसार और युक्तिपूर्वक) समीक्षा करके मोक्षाभिलाषी सज्जनोंको सत्यासत्यका निर्णय दिखानेके लिये इतना परिश्रम करना पड़ा है सो इस ग्रन्थको पढ़नेवाले विवेकी मध्यस्थ पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और छठे महाशयजी आप लोग अनेक बातोंमें ढूंढियांका सरणा ले कर उन्होंकाही अनुकरण करते हो जिसमेंसें थोड़ीसी बातें इस जगह दिखाता हूं ;—

१ प्रथम–श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की प्रतिमाजीको मानने पूजनेका निषेध करनेके लिये ढूंढिये लोग अनेक प्रकारकी श्रीजिनमूर्तिकी निन्दा करते हुए अनेक कुतर्कों करके भोले

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जीवोंके सत्यबातकी श्रद्धारूपी सम्यक्त्व रत्नको, हरण करके मिथ्यात्व बढ़ाते है तैसेही श्रीअनन्त जिनेश्वर भगवानोंका कहा हुवा तथा प्रमाण भी करा हुवा अधिकमासको गिनतीमें निषेध करनेके लिये, आप लोग भी अधिकमासकी अनेक प्रकारसें निन्दा करते हुए अनेक कुतर्कों करके भोले जीवोंके सत्य बातकी श्रद्धारूपी सम्यक्त्व रत्नको हरण करके मिथ्यात्व बढ़ाते हो इसलिये श्रीजैनशासनके निन्दक मिथ्यात्वी ढूंढियांका सरणा आपही लेते हो।

२ दूसरा--श्रीजैनशास्त्रोंमें नाम, स्थापना, द्रव्य, और भाव, यह चारोंही निक्षेपे मान्य करने योग्य, उपयोगी कहे हैं तथापि ढूंढिये लोग उत्सूत्र भाषणका भय न करते अनन्त संसारकी वृद्धि कारक, स्थापनादि निक्षेपोंको निषेध करके बिना उपयोगके ठहराते हैं तैसेही श्रीजैनशास्त्रोंमें द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भावसें, चारोंही प्रकारकी चूलाका प्रमाण गिनती करने योग्य, उपयोगी कहा है और गिनतीमें भी लिया है तथापि आप लोग उत्सूत्र भाषण का भय न करते कालचूलादिका प्रमाणको गिनतीमें निषेध करके प्रमाण नही करते हो सो भी ढूंढियांका सरणा आपही लेते हो।

३ तीसरा–ढूंढिये लोग 'मूलसूत्र मानते हैं मूलसूत्र मानते हैं' ऐसा पुकारते हैं परन्तु अपनी मति कल्पनासें अनेक जगह शास्त्रोंके पाठोंका उलटा अर्थ करते हैं और अनेक शास्त्रोंके पाठोंको तथा अर्थको भी छुपाते हैं और शास्त्रोंके प्रमाण बिना भी अनेक कल्पित बातोंको करके मिथ्यात्वमें फसते हैं और भोले जीवोंको फसाते हैं तैसेही आपलोग भी 'पञ्चाङ्गी मानते हैं पञ्चाङ्गी मानते हैं' ऐसा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुकारते हो परन्तु अपनी मति कल्पनासें अनेक जगह शास्त्रोंके पाठोंका उलटा अर्थ करते हो और अनेक शास्त्रोंके पाठोंको तथा अर्थको भी छुपाते हो और शास्त्रोंके प्रमाण बिना भी अनेक कल्पित बातों करके मिथ्यात्वमें फसते हो और भोले जीवोंको फसाते हो (इसका विशेष खुलासा आगे करनेमें आवेगा) इस लिये भी ढूंढियांका सरणा आपही लेते हो ।

४ चौथा–जैसे ढूंढिये लोगोंकी गांम गांममें वारम्वार श्रीजिन प्रतिमाजीकी और श्रीजैनाचार्य्योंकी निन्दा अवहेलना करनेकी आदत है जिससें अपने संसार वृद्धिका भय नही रखते हैं तैसेही आप लोगोंकी भी गांम गांममें श्रीपर्युषणापर्वका व्याख्यान वगैरहमें श्रीवीरप्रभुके छ (६) कल्याणककी और श्रीजिनेन्द्रभगवान् का तथा पूर्वाचार्य्योंका प्रमाण करा हुवा अधिक मासकी निन्दा अवहेलना करनेकी आदत है जिससें आप लोग भी उत्सूत्र भाषणका भय न करते हुए संसार वृद्धिसें कुछ भी डरते नही हो इस लिये भी ढूंढियांका सरणा आपही लेते हो ।

५ पाँचमा–जैसे ढूंढिये लोग चर्चा करो चर्चा करो ऐसा पुकारते हैं परन्तु चर्चाका समय आनेसें मुख छिपाते हैं और जो बातकी चर्चा करनेकी होवे जिसकी शास्त्रार्थसें न्यायपूर्वक चर्चा करनी छोड़कर अन्यायसें निष्प्रयोजनकी अन्य अन्य बातोंका झगड़ा खड़ा करके यावत् क्रोधका सरणा लेकर–रांड़ नपुती जैसी वृथा लड़ाई करके निन्दा ईर्षासें संसार वृद्धिका कारण करते है परन्तु शास्त्रोक्त चर्चा वार्त्ताकी रीतिसें एक भी बातके सत्यअसत्यका निर्णय करके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

असत्यको छोड़कर सत्यको ग्रहण करनेकी इच्छाही नही रखते हैं तैसेही आप लोगोंके भी कृत्य है (इस बातका इस ग्रन्थके अन्तमें खुलासा करनेमें आवेगा) इस लिये उपरकी बातमें भी ढूंढियांका सरणा आप लोगही लेते हो ।

६ छठा—जैसे कितनेही ढूंढिये लोग शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक श्रीजिनमूर्त्तिको मानने पूजने वगैरहकी सत्य बातोंको जानते हुए भी अपने मत कदा ग्रहकी झालमें फस करके इस लोककी मानता पूजनाके लिये अपने दृष्टि-रागी भक्तजनोंके आगे मिथ्यात्वके उदयसें सत्य बातोंका निषेध करके अपने अन्ध परम्पराकी उत्सूत्र भाषणरूप कल्पित बातोंका स्थापन करके संसार वृद्धिका कार्य्य करते हैं तैसेही कितनीही बातोंमे आपके गुरुजी न्याया-म्भोनिधिजी (श्रीआत्मारामजी) नें भी किया है और आप लोग भी करते हो (जिसका खुलासा आगे करनेमें आता है) इस लिये भी ढूंढियांका सरणा आप लोगही लेते हो ।

७ सातमा—जैसे कितनेही ढूंढिये श्रीजैन तीर्थोंको छोड़के अन्य मतियोंके मिथ्यात्वी तीर्थोंमें जाते हैं तैसेही खास श्रीवल्लभविजयजीनें भी कराया अर्थात् घासीराम और जुगलराम इन दोनुं ढूंढक साधुयोंने (श्रीजिनेश्वर भग-वान् तुल्य श्रीजिनमूर्त्तिकी तथा श्रीजैनशासनके प्रभाविक महान् उत्तम श्रीजैनाचार्य्योंकी) द्वेष बुद्धिसें वृथा निन्दा करनेका और शास्त्रोंके विरुद्ध होकरके उत्सूत्र भाषणका तथा अपनी मति कल्पना मुजब मिथ्या बातोंमें वर्त्तनेका मिथ्यात्वरूप ढूंढक मतका पाखण्डको संसार वृद्धिका कारण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जानकर छोड़ दिया और शास्त्रानुसार सत्य बातोंको ग्रहण करनेकी इच्छासे श्रीवल्लभविजयजीके पास जैन दीक्षा लेने को आये तब श्रीवल्लभविजयजीनें तथा उन्होंके दृष्टिरागी श्रावकोंने विचार किया कि--घासीराम और जुगलरामने ढूंढक मतके साधु भेषमें अनुचित कार्यों (असूचीकी क्रियायों) सें अपने शरीरको अपवित्र किया है इसलिये इन दोनुंका शरीर प्रथम पवित्र कराके पीछे दीक्षा देनी चाहिये ऐसा विचार करके दोनुंको पवित्र करनेके लिये जैन तीर्थोंमें न भेजते हुए अन्य मतियोंके मिथ्यात्वी तीर्थ में काशी गङ्गाजी भेजकरके पवित्र कराये (इसका विशेष आगे लिखनेमें आवेंगा) इसलिये भी ढूंढियांका सरणा आपही लेते हो ।

इत्यादि अनेक बातोंमें छठे महाशयजी आप लोगही ढूंढियांका सरणा लेकर उन्होंकाही अनुकरण करते हो, तथापि आपने श्रीबुद्धिसागरजीको ढूंढियांका सरण लेनेका लिखा है सो प्रत्यक्ष मिथ्या है क्योंकि श्रीबुद्धिसागरजीने ढूंढियांका सरणा लेनेका कोई भी कार्य्य नही करा है इतने पर भी आपके दिलमें यह होगा कि श्रीबुद्धिसागरजीनें ढूंढियाकी मारफत पत्र हमको पहुंचाया इसलिये ढूंढियांका सरणा लेनेका हमने लिखा है तो भी महाशयजी यह आपका लिखना सर्वथा अनुचित है क्योंकि दुनियामें यह तो प्रसिद्ध व्यवहार है कि—कोई गांममें किसी आदमीको एक पत्र भेजा जिसका जबाब नहीं आया तो थोड़े दिनोंके बाद दूसरा भी पत्र भेजनेमें आता है, दूसरे पत्रका भी जबाब नहीं आनेसें तीसरी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बेर उसी गांमका प्रतिष्ठित आदमी मारफत अथवा अपना जानकार संवेगी तथा ढूंढिया तो क्या परन्तु ब्राह्मण, सेवग, वगैरह हरेक जातिका हरेक धर्मवाला पुरुषकी मारफत उसीका निर्णय करनेमें आता है तैसेही श्रीबुद्धिसागरजीनें भी किया अर्थात् दो पत्र आपकी शास्त्रका प्रमाण पूछनेके लिये भेजे तथापि आपका कुछ भी जबाब नहीं आया तब तीसरी बेर प्रसिद्ध आदमी अपना जानकारके मारफत, आपको भेजे हुए पूर्वोक्त पत्रोंका जबाब पूछाया उसमें सरणा लेनेका कदापि नहीं हो सकता है परन्तु आप लोग अनेक बातोंमें ढूंढियांका सरणा लेते हो सो ऊपरमेंही लिख आया हूं सो विचार लेना;—

और दोनु गच्छवालोंके आपसमें वादविवाद तथा कोर्ट कचेरीमें झगडा टंटा रूप वृथा युद्ध करनेको तथा करानेको आपही तैयार हो सो तो आपके लेखसें प्रत्यक्ष दीखता है।

महाशयजी अब--किसकी मनः कामना पूर्ण न होनेसें किसीने ढूंढियांका सरणा लेकर युद्धारम्भ करना चाहा है और सूर्पनखाकी तरह दोनु पक्षको दुःखदाई भी कौन हुवा है सो ऊपरका लेखको तथा आगेका लेखको और इन्ही ग्रन्थको पढ़कर हृदयमें विवेक बुद्धि लाकर विचार कर लीजिये,---

और भी आगे छठे महाशयजी अपने और अपने गुरुजी न्यायाम्भोनिधिजीके उत्सूत्र भाषणके कृत्योंको तथा उन कृत्योंके फल विपाकोंको न देखते हुए श्रीबुद्धिसागरजी ने शास्त्रोंके पाठोंका प्रमाण सहित पत्र लिखकर पालणपुर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निवासी महता पीताम्बरदास हाथीभाईको भेजा था उस पत्रके शास्त्रोंके पाठोंको छोड़करके और छिद्रग्राही हो करके उस पत्रपर द्वेषबुद्धिसें छठे महाशयजीनें वृथाही आक्षेप किया है और उनके साथ कितनीही निष्प्रयोजनकी बातें लिखी है उसीका जबाब आगे (छठे महाशयजीके दूसरे गुजराती भाषाके लेखका जबाब छपेगा) वहां लिखनेमें आवेंगा ;—

और आगे फिर भी छठे महाशयजीनें लिखा है कि (बनारससें प्रसिद्ध हुवा मुनि धर्म्मविजयजीके शिष्य मुनि विद्याविजयजीका, पर्युषणा विचार नामा लेख देख लेना) इसपर भी मेरेको प्रथम इतनाही कहना है कि तीसरे महाशयजी श्रीविनयविजयजीनें श्रीसुखबोधिका वृत्तिमें पर्युषणा सम्बन्धी प्रथम अपने लिखे वाक्यार्थको छोड़ करके गच्छ कदाग्रहके हठवादसें उत्सूत्र भाषणका भय न करते अनेक कुतर्कों करी है (जिसका निर्णय इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ६८ सें १५० तक उपरमेंही छप चुका है) उन्ही कुतर्कोंको देखके सातमें महाशयजी श्रीधर्म्मविजयजी तथा उन्हके शिष्य विद्याविजयजी भी कदाग्रहकी परम्परामें पड़के उत्सूत्र भाषणकेही कुतर्कोंका संग्रह करके, शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्रायके विरुद्ध होकरके अधूरे अधूरे पाठ लिखकर भोले जीवोंकों मिथ्यात्वमें गेरनेंके लिये अपना लेख प्रगट करा है (इसका जबाब आगे छपेगा) उसीकोही गुजराती भाषामें जैन पत्रवालेनेभी अपना संसार बढ़ानेके लिये अपने जैन पत्रमें प्रगट करा है और उसी उत्सूत्र भाषणकी कुतर्कोंको छठे महाशयजी आप भी देखनेका लिखकर उन्हीको पुष्ट

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करके उसी तरहके उत्सूत्र भाषणके फलप्राप्त करनेके लिये आप भी उसीमें फसे, हाय अफसोस–गच्छ कदाग्रहके वस होकरके अपना पक्ष जमानेके लिये सत्य असत्यका निर्णय किये बिना अपनी मतिकल्पनासें इतने विद्वान् कहलाते भी स्वच्छन्दाचारीसें लिखते कुछ भी विचार नही किया यह तो इस कलियुगकाही प्रभाव है,—

और दूसरा यह है कि न्याय अन्यायको न देखने वाले तथा दृष्टिरागके झूठे पक्षग्राही और कदाग्रहके कार्य्यमें आगेवान ऐसे श्रीकलकत्तानिवासी श्रीतपगच्छके लक्ष्मीचंदजी सीपाणीको पालणपुरसें श्रीवल्लभविजयजीकी तरफका पत्र आया था उसी पत्रमें ६–७ जगह मिथ्या बातें लिखी है उसी पत्रके अक्षर अक्षरका उतारा, मेरे (इस ग्रन्थकारके) पास है उसी उतारेकी नकलको यहाँ लिखकर उसीकी समीक्षा करनेका मेरा पूरा इरादा था परन्तु विस्तारके कारणसें सब न लिखते नमुनारूप एक बात लिख दिखाता हूं—

छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजी लक्ष्मीचन्दजी सीपाणीको लिखते हैं कि [बनारससें पर्युषणा विचार नामा ट्रेकट निकला है उसीकाही भाषान्तर छापेवालेने छापा है इसमें हमारा कोई मतलब नही है ना हम इस बातको मन वचन काया करके अच्छी समझते हैं] इस जगह सज्जन पुरुषोंको विचार करना चाहिये कि सीपाणीजीके पत्रमें पर्युषणा विचारको तथा उसीका भाषान्तर छापेवालेनें छापेमें प्रसिद्ध करा है उसीको छठे महाशयजी मन, वचन, कायासें अच्छा नही समझते हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तो फिर उसी बातको याने पर्युषणा विचारको देख लेनेका लिख करके उसीको छापामें पुष्ट किया, यह तो प्रत्यक्ष मायावृत्तिका कारण है इसलिये जो सीपाणीजीके पत्रका वाक्य छठे महाशयजी सत्य मानेंगे तो छापेमें पर्युषणा विचारको पुष्ट करनेका जो वाक्य लिखा है सो वृथा हो जावेंगा और छापेका वाक्य सत्य मानेंगे तो सीपाणीजीके पत्रका वाक्य मिथ्या हो जावेंगा और पूर्वा· पर विरोधी विसंवादी दोनु तरहके वाक्य कदापि सत्य नही हो सकते हैं इसलिये दोनुमेंसें एक सत्य और दूसरा मिथ्या माननाही प्रसिद्ध न्यायकी बात है, जिससें सीपाणी जीके पत्रका वाक्यको सत्य मानोंगे तो छापेका लेख विसं-वादीरूप मिथ्या होनेकी आलोचना छठे महाशयजी आप को लेनी पड़ेगी और छापेका वाक्यको सत्य मानोंगे तो सीपाणीजीके पत्रका वाक्य विसंवादीरूप मिथ्या होनेकी आलोचना लेनी पड़ेगी और पर्युषणा विचारमें उत्सूत्र वाक्य लिखे हैं उसीके अनुमोदनके फलाधिकारी होना पड़ेगा सो विवेक बुद्धि हो तो अच्छी तरह विचार लेना ;—

और छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीके खबरदारका इस लेखमें तथा सावधान सावधानका दूसरा गुजराती भाषाका लेखमें और सीपाणिजीके पत्रका लेखमें इन तीनों लेखोंका वाक्यमें कितनीही जगह मायावृत्ति (कपट) का संग्रह है इससें श्रीवल्लभविजयजीको कपट विशेष प्रिय मालूम होता है और चर्चाचन्द्रोदय की पुस्तकमें भी श्री-वल्लभविजयजीको 'दम्भप्रिय' लिखा है सोही नाम उपरके कृत्योंसें सत्य कर दिखाया है,—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और इसके आगे दम्भप्रियजी श्रीवल्लभविजयजीनें अपने लेखके अन्तमें जो लिखा है उसीको यहां लिखके (पीछे उसीकी समीक्षा कर) दिखाता हूं ;—

[बुद्धिसागर मुनिजी ! याद रखना वो प्रमाण माना जावेगा, जो कि—तुम्हारे गच्छके आचार्योंसें पहिलेका होगा मगर तुम्हारेही गच्छके आचार्यका लेख प्रमाण न किया जावगा ! जैसा कि तुमने श्रीजिनपति सूरिजीकी समाचारीका पाठ लिखा है कि, दो श्रावण होवे तो पीछले श्रावणमें और दो भाद्रपद होवे तो पहिले भाद्रपदमें पर्युषणापर्व—सांवत्सरिक कृत्य—करना ! क्योंकि, यही तो विवादास्पद है कि, श्रीजिनपतिसूरिजीने समाचारीमें जो यह पूर्वोक्त हुकम जारी किया है कौनसे सूत्रके कौनसे दफे मुजिब किया है हां यदि ऐसा खुलासा पाठ पञ्चाङ्गीमें आप कहीं भी दिखा देवें कि, दो श्रावण होवे तो पीछले श्रावणमें और दो भाद्रपद होवे तो पहिले भाद्रपदमें--सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, केशलुञ्चन, अष्टमतपः, चैत्यपरिपाटी, और सर्वसंघके साथ खामणारूप पर्युषणा वार्षिक पर्व करना, तो हम माननेको तैयार है !]

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि—हे सज्जन पुरुषों छठे महाशयजी दम्भप्रियेजीके अन्तरमें कपट भरा हुवा होनेसें ऊपरका लेख भी कपटयुक्त लिखा है क्योंकि (बुद्धिसागर मुनिजी याद रखना वो प्रमाण माना जावेंगा जो कि तुम्हारे गच्छके आचार्योंसे पहिले का होगा) यह अक्षर छठे महाशयजीके मायावृत्तिसें दृष्टिरागी भोले जीवोंको दिखाने मात्रही है नतु प्रमाण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करनेके लिये यदि ऊपरके अक्षर प्रमाण करनेके लिये होवे तो–अधिक मासकी गिनती, तथा पचास(५०) दिने पर्युषणा और श्रीवीरप्रभुके छ (६) कल्याणक, सामयिकाधिकारे प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही वगैरह अनेक बातें श्री तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंनें और पूर्वधरादि श्रीजैन शासनके प्रभाविक पूर्वाचार्य्योंनें पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंमें प्रगटपने खुलासेके साथ कही है जिस पर छठे महाशयजी की श्रद्धा नही जिससें प्रमाण नही करते हुए उलटा निषेध करके उत्सूत्र भाषणसें संसार वृद्धिका भय नही रखते हैं ।

वड़ीही आश्चर्य्यकी बात है कि श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी तथा पूर्वाचार्य्योंकी कथन करी हुई अनेक बातें प्रमाण न करते हुए उत्सूत्र भाषणरूप अपनी मति-कल्पनासें चाहे वैसा वर्त्ताव करना और पूर्वाचार्य्योंका प्रमाण मंजूर करनेका दिखाकर आप भले बनना यह तो प्रत्यक्ष मायावृत्तिसें छठे महाशयजीनें अपने दम्भप्रिये नामको सार्थक करके विशेष पुष्ट करनेके सिवाय और क्या लाभ उठाया होगा सो इन्ही ग्रन्थको पढ़नेवाले सज्जन पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे ;–

और आगे फिर भी दम्भप्रियेजीनें लिखा है कि (तुम्हारेही गच्छके आचार्य्यका लेख प्रमाण न किया जावेंगा) यह लिखना छठे महाशयजी दम्भप्रियेजीको श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातना कारक पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंका उत्थापनरूप मिथ्यात्वको वढ़ाने वाला संसार वृद्धिका कारणभूत हैं क्योंकि–

१ प्रथमतो–श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी परम्

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

परानुसार पञ्चाङ्गीके अनेक प्रमाणयुक्त श्रीखरतरगच्छके बुद्धि निधान प्रभाविकाचार्य्योंने अनेक शास्त्रोंकी रचना भव्य जीवोंके उपगारके लिये करी है जिसको न माननेवाले दम्भप्रियेजी जैसे प्रत्यक्ष श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आशातना करनेवाले पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंके उत्थापक श्रद्धारहित जैनाभास मिथ्यात्वी बनते हैं इस बातको विशेष सज्जन पुरुष अपनी बुद्धिसें स्वयं विचार लेवेंगे,—

२ दूसरा यह है कि--श्रीखरतरगच्छ प्रसिद्ध करनेवाले श्रीजिनेश्वर सूरिजी महाराजकृत श्रीअष्टकजी सूत्रकी वृत्ति तथा श्रीपञ्चलिङ्गी प्रकरण मूल और तद्वृत्ति श्रीखरतरगच्छ के श्रीजिनपति सूरीजी कृत और श्रीखरतरगच्छ नायक सुप्रसिद्ध बुद्धिनिधान महान् प्रभाविक श्रीमदभयदेवसूरिजी महाराजनें श्रीनवाङ्गी वृत्ति उपरान्त श्रीउवाइजी श्रीपञ्चाशक जी श्रीषोड़षकजी वगैरहकी अनेक वृत्ति और प्रकरणस्तोत्रादि बहुतही शास्त्रोंकी रचना करी है तथा और भी श्रीखरतरगच्छके अनेक आचार्य्योंनें सैकड़ो शास्त्रोंकी रचना करी है जिन्हकोमानते हैं व्याख्यानमें बांचते हैं तथापि दम्भप्रियेजी (तुम्हारे गच्छके आचार्य्यका लेख प्रमाण न किया जावेंगा) ऐसा लिखते हैं सो कितनी मायावृत्तिसें अन्याय कारक है इसको भी निष्पक्षपाती सज्जन स्वयं विचार सकते हैं ;—

और श्रीजिनेश्वर सूरिजीसें निश्चय करके श्रीखरतरगच्छ प्रसिद्ध हुवा है इसलिये श्रीनवाङ्गीवृत्तिकार श्रीमदभयदेव सूरिजी भी श्रीखरतरगच्छमें हुवे हैं तथापि श्रीजिनवल्लभ सूरजीसें अथवा श्रीजिनदत्त सूरिजीसें १२०४ में खरतर हुवा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ऐसा कहते हैं सो मिथ्यावादी है इसका विशेष विस्तार शास्त्रोंके प्रमाण सहित इस ग्रन्थके अन्तमें करनेमें आवेंगा,—

३ तीसरा यह है कि—खास दम्भप्रियेजीके गुरुजी श्री-न्यायाम्भोनिधिजीनें चतुर्थ स्तुतिनिर्णयः पुस्तकमें श्रीखर-तरगच्छके श्रीअभयदेव सूरिजी श्रीजिनवल्लभ सूरिजी श्री जिनपतिसूरिजी वगैरह आचार्य्योंकी समाचारियोंके पाठ लिखे हैं और श्रीखरतरगच्छके आचार्य्यका वचनको नही मानने वालोंको पृष्ठ ८८ के मध्यमें मिथ्यात्वी ठहराये हैं (इसका खुलासा इन्ही ग्रन्थके पृष्ठ १५९ । १६० में छपगया है) और दम्भप्रियेजी श्रीखरतरगच्छके आचार्य्यजीका लेख प्रमाण नही करके अपने गुरुजीके लेखसें ही आप मिथ्यात्वी बनते हैं सो भी बड़ीही आश्चर्य्यकी बात है ;—

४ चौथा यह है कि—दम्भप्रियेजी श्रीखरतरगच्छके आचार्य्यजीका लेख प्रमाण नही करते हैं इसको देखके और भी कितनेही अज्ञानी तथा गच्छ कदाग्रही अपने अपने गच्छके आचार्य्योंका लेखको प्रमाण मान करके और सब गच्छवालोंके आचार्य्योंका लेखको प्रमाण नही मानेंगे जिस सें श्रीजिनवाणीरूपी पञ्चाङ्गीके सैकड़ो शास्त्रोंका उत्थापन होगा और अपनी अपनी मतिकल्पना करके चाहे जैसा वर्त्ताव करना सरू करेंगे तो श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की अति उत्तम, अविसंवादी, श्रीजैनशासनकी अखण्डित मर्य्यादा भी नही रहेगी और कदाग्रही लोग अपने अपने पक्षका आग्रह में फसके मिथ्यात्व बढ़ाते हुवे संसार वृद्धि करेंगे जिसके दोषाधिकारी दम्भप्रियेजी वगैरह होवेंगे और आप दूसरे गच्छके आचार्य्यका लेख प्रमाण नही करोगे तो दूसरे गच्छवाले

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आपके गच्छके आचार्य्यका लेख प्रमाण नही करेंगे जिससें भी वृथा वाद् विवाद्सें मिथ्यात्व वढ़ता रहेगा और सत्य असत्यका निर्णय भी नही हो सकेगा और दम्भप्रियजी अनेक गच्छोंके आचार्य्योंका लेखको प्रमाण करते हैं परन्तु श्रीखरतरगच्छके आचार्य्यका लेख प्रमाण नहीं करते हैं यह भी तो प्रत्यक्ष अन्यायकारक हठवाद्का लक्षण है इसलिये दम्भप्रियेजी वगैरह महाशयोंसें मेरा यही कहना है कि–

श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी परम्परा मुजब, पञ्चाङ्गीके प्रमाण पूर्वक कालानुसार, न्यायकी युक्ति करके सहित श्रीखरतरगच्छके आचार्य्योंका तो क्या परन्तु सब गच्छके आचार्य्योंका लेखको प्रमाण करना सोही आत्मार्थी मोक्षाभिलाषी सज्जनोंको परम उचित है ।

वैसेही इस ग्रन्थकारने भी श्रीतपगच्छके श्रीधर्म्मसागर जी तथा श्रीजयविजयजी और श्रीविनयविजयजी इन तीनों महाशयोंके शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक लिखित पाठोंको इसीही ग्रन्थके आदिका भागमें पृष्ठ ९ । १० । ११ में लिखे है और उसीका भावार्थः भी पृष्ठ १२ से १५ तक लिखके उसीका तात्पर्य्यको पृष्ठ १६ में प्रमाण किया हैं (और इन तीनों महाशयोंनें प्रथम अपने लिखे वाक्यार्थको छोड़के गच्छ कदाग्रहका मिथ्या पक्षको स्थापन करनेके लिये उत्सूत्र भाषणरूप अनेक बातें लिखी है जिसकी समीक्षा भी शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ६८ सें १५० तक उपरमें छप गई है) और भी श्रीतपगच्छके अनेक आचार्य्यों के लेख प्रमाण करनेमें आते हैं जैसे इस ग्रन्थकारनें श्रीतपगच्छके आचार्य्योंके शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक लेखोंको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रमाण किये हैं–तैसेही छठे महाशयजी आप भी श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी वाणीरूप पञ्चाङ्गीको श्रद्धापूर्वक प्रमाण करनेवाले आत्मार्थी मोक्षाभिलाषी होवोंगे तो श्रीखरतरगच्छके आचार्य्योंके शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक लेखों को अवश्यही प्रमाण करके अपने मिथ्या हठवादको जलदी ही छोड़ देवोंगे तो ऊपर कहे सो दूषणोंका बचाव होनेसें बहुत लाभका कारण होगा आगे इच्छा आपकी ;—

और आगे फिर भी दम्भप्रियेजीनें लिखा है कि (तुमने श्रीजिनपति सूरिजीकी समाचारीका पाठ लिखा है कि दो श्रावण होवे तो पीछले श्रावणमें और दो भाद्रपद होवे तो पहिले भाद्रपदमें पर्युषणापर्व–सांवत्सरिक कृत्य करना) यह लिखना भी छठे महाशयजी आपका कपटयुक्त है क्योंकि श्रीबुद्धिसागरजीनें पूर्वधरादि महाराजकृत तीन शास्त्रोंके पाठ लिखके भेजे थे जिसमेंके पूर्वधराचार्य्यजी महाराजके मूलसूत्रके तथा चूर्णिके दोनु पाठोंको छुपाते हो सोही छठे महाशयजी आपका कपट है इसलिये में इस जगह प्रथम आपका कपटको खोलकरके पाठक वर्गको दिखाता हूं—

१ प्रथम श्रीचौदह पूर्वधर श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामीजी कृत श्रीकल्पसूत्रका मूलपाठ लिखा था उसी पाठमें आषाढ़ चौमासीसें एकमास और वीशदिने पर्युषणा करना कहा है श्रावण अथवा भाद्रपदका नियम नही कहा है परन्तु ५० दिनका नियम है सोही दिनोंकी गिनतीसें ५० दिने पर्युषणा करना चाहिये श्रीकल्पसूत्रका मूलपाठ भावार्थ सहित इसीही ग्रन्थके आदिमें पृष्ठ ४।५।६में छप गया है सोही पाठ इस वर्त्तमान कालमें आत्मार्थियोंको प्रमाण करने योग्य है ;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२ दूसरा श्रीपूर्वधर पूर्वाचार्य्यजी कृत श्रीवृहत्कल्प-चूर्णिका पाठ लिख भेजा था सोही श्रीवृहत्कल्पचूर्णिके तीसरे उद्देशके पृष्ठ २६४ से २६५ तकका पर्युषणा सम्बन्धी पाठको यहां लिख दिखाता हूं तथाच तत्पाठः—

इदाणिं जंमि काले वासावासं ठाइतव्वं, अच्चिरं वा जाए वा विहीए तं भणन्ति, आसाढ़ गाथा बाहिं ठिया गाथा, उस्सग्गेण जाव आसाढ़पुण्णिमाए चेव पज्जोसवेंति, असत्ति खेत्तस्स बाहिंठाइत्ता, वसभा खेत्तं अतिगन्तुं वासावास-जोग्गाणि, संथारग खेल्लमल्लगादीणि गिण्हन्ति, काइयउच्चा-रणा भूमिओ बंधन्ति, ताहे आसाढ़पुण्णिमाए अतिगन्तुं,पञ्चेहिं दिवसेहिं पज्जोसवणा कप्पं कथित्ता, सावणबहुलपक्खस्स पञ्चमीए पज्जोसवेंति पज्जोसवित्ता, उक्कोसेणं मग्गसिर-बहुलदसमीओ जाव, तत्थ अत्थितव्वं, किंकारणं पच्छिल्लकालं वसति जतिचिक्खल्लो वासं वा पडति, तेण इच्चिरं इधरा कत्तियपुण्णिमाए चेव णिग्गन्तव्वं, एत्थतु गाथा अस्मिन्नत्र पज्जोसवेइ इत्यर्थः॥ अणभिग्गहितं णाम, गिहत्था जति पुच्छन्ति, ठितत्थं वासावासं एवं, पुच्छितेहिं, भणियव्वं, ण ताव ठामो केच्चिरंकालं एवं, वीसतिरायं वा मासं, कथं, जति अधिमासतो पडितो तो वीसतिरायं, गिहिणातं वा कज्जति, किंकारणं, एत्थ अधिमासओ चेव मासो गणि-ज्जति, सो वीसाए समं, वीसतिरातो भवति चेव, अथ ण पडितो अधिमास तो वीसतिरातं मासं, गिहिणातं वा कज्जति, किं पुण एवं उच्यते। असिवादि गाथाद्धं, असिवा-दीणि कारणाणि जाताणि, अथवा ण णिरातं वासं आरद्धं, ताधे लोगो चिंतेज्जा अणावुठित्ति तेण धन्न संगहे करेंति,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

असंथरं ताणं णिग्गमणं दो तेहियभणियं ठियामोत्ति, पच्छा लोगो भणेज्जा एत्तिल्लयंपि एते ण याणन्ति एवं पवयणोवघातो भवति, ठियामोतिय भणि ते लोगो चिंतेइ जाणंते अवस्स वरिसइ ताधे लोगो धरछंदेण हलकुलियादी करेंति, तम्हा सवीसति राते मासे अभिग्रहीतं गृहीज्ञातमित्यर्थः । एत्थउगाथा एत्थेति, आसाढचउम्मासिए पडिक्कंते, पञ्चेहिं पञ्चेहिं दिवसेहिं गतेहिं, जत्थ जत्थ वासावासयोग्गं खेत्तं पडिपुण्णं तत्थ तत्थ पज्जोसवे यव्वं, जाव सवीसइ रातो मासो, उस्सग्गेण पुण आसाढ़सुद्धदसमि पच्छद्धं, इयसत्तरी गाथा, एवं सत्तरी भवति, सवीसति राते मासे पज्जो सवेत्ता, कत्तिय पुण्णिमाए पडिकमित्ता, बितियदिवसे णिग्गयाणं, पञ्चसत्तरी भद्दवयअमावसाए पज्जोसवेताणं, भद्दवयबहुलदसमीए असीत्ति, भद्दवयबहुलपञ्चमीए पञ्चासीति सावणपुण्णिमाए णउत्ति, सावणसुद्धदसमीए पञ्चणउत्ति, सावण सुद्धपञ्चमीए सतं, सावण अमावसाए पंचुत्तरं सयं, सावणबहुलदसमीए दसुत्तरं सतं, सावणबहुलपञ्चमीए पणरसुत्तरं सतं, आसाढ़पुण्णिमाए वीसुत्तरं सतं, कारणे पुण छम्मासितो जेठोत्ति उक्कोसो उग्गहो भवन्ति, कथं जति वा पच्छद्धं अस्य व्याख्या, कत्तिएण गाथा उवट्ठिए, आसाढ मासकप्पए कते वासावासपाउग्ग खेत्तासती, तत्थेव वासो कातव्वो, पञ्चहिं दिवसेहिं पज्जोसवणा कप्पं कथिता, चाउम्मासिए चेव पज्जोसवेंति, तं पुण इमेण कारणेण मग्गसिरं अत्थिज्जइ जति वासति पच्छद्धं आलम्बणं मासं पडेति, चिरकप्पो, आसाढ़े वासा रत्तिया चत्तारि मग्गसिरोय एते छम्मासिओ जेट्ठोग्गहो, पत्थाणेहिं पवत्तेहिंपि णिग्गतव्वं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखिये ऊपरके पाठमें पर्युषणाधिकारे चेव निश्चय करके अधिकमासको गिनतीमें कहा है और पूर्वधरादि उपविहारी महानुभावोंके लिये निवासरूप पर्युषणा (योग्यक्षेत्र तथा उपयोगी वस्तुयोंका योग होनेसें) उत्सर्गसें आषाढ़पूर्णिमाकोही करनी कही परन्तु योग्यक्षेत्रादिके अभावसें अपवादसें पांच पांच दिनकी वृद्धि करते अभि-वर्द्धित संवत्सरमें वीश दिन (श्रावण शुक्लपञ्चमी) तक तथा चन्द्रसंवत्सरमें पचास दिन (भाद्रपदशुक्लपञ्चमी) तक पर्यु-षणा करनी कही–आषाढ़पूर्णिमाकी तथा पांच पांच दिन की वृद्धिकी पर्युषणाको अधिकरणदोषोंकी उत्पत्ति न होनेके कारण गृहस्थी लोगोंके न जानी हुई अज्ञात पर्यु-षणा कही है इसका विशेष खुलासा इन्ही ग्रन्थमें अनेक जगह छपगया है और वीशदिने तथा पचास दिने गृहस्थी लोगोंकी जानी हुई ज्ञातपर्युषणा कही उसीमें वार्षिक कृत्य वगैरह करनेमें आतेथे इसकाभी खुलासा इन्ही ग्रन्थमें अनेक जगह छप गया है जिसमें भी विशेष विस्तार पूर्वक पृष्ठ १०१ सें ११७ तक अच्छी तरहसें निर्णय करनेमें आया है। और मासवृद्धिके अभावसें पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक ७० दिन रहते हैं तैसेही मासवृद्धि होनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक १०० दिन रहते हैं इसका भी विस्तार अनेक जगह छपगया है जिसमें भी विशेष करके पृष्ठ १२० सें १२९ तक और १७४ सें १८३ तक अच्छी तरहसें निर्णयके साथ छपगया है और उत्कृष्टसें १८० दिन का कल्प कहा है ;—

और तीसरा श्रीजिनपतिसूरिजी कृत श्रीसमाचारी ग्रन्थकापाठलिखभेजाथा सोहीपाठ यहां दिखाताहूं यथा :—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सावणे भद्दवएवा, अहिगमासे चाउमासीओ ॥ पन्नास इमे दिणे, पज्जोसवणा कायव्वा न असीमे, इति—

भावार्थः—श्रावण और भाद्रपद मास अधिक होतो भी आषाढ़ चौमासीसें पचासमें दिन पर्युषणा करना चाहिये परन्तु अशीमें दिन नही करना । इस जगह सज्जन पुरुषोंको विचार करना चाहिये कि ऊपरोक्त तीनों शास्त्रोंके पाठ आगमानुसार तथा युक्ति पूर्वक होनेसें छठे महाशयजीको प्रमाण करने योग्य थे तथापि गच्छका पक्षपातके और पण्डिताभिमानके जोरसें ऊपरोक्त शास्त्रोंके पाठोंको प्रमाण न करते हुवे श्रीकल्पसूत्रके मूल पाठको तथा श्रीबृहत्कल्पचूर्णिके पाठको छुपाकरके मायावृत्तिसें श्रीजिनपति सूरिजी की समाचारीके पाठ पर अपने विद्वत्ताकी चातुराई दिखाई है कि (यही तो विवादास्पद है कि श्रीजिनपति सूरिजीनें समाचारीमें जो यह पूर्वोक्त हुकमजारी किया है कौनसे सूत्रके कौनसें दफे मुजिब किया है) छठे महाशयजीके इस लेख पर मेरेको वड़ाही आश्चर्य्य सहित खेदके साथ लिखना पड़ता है कि श्रीवल्लभविजयजीको अनुमान २२। २३ वर्ष दीक्षा लिये हुए है तथा कुछ व्याकरणादि भी पढ़े हुए सुनते हैं परन्तु इस जगह तो श्रीवल्लभविजयजीनें अपनी खूब अज्ञता प्रगट करी हैं क्योंकि श्रीनिशीथसूत्रके लघु भाष्यमें, १ तथा वृहद्भाष्यमें २ और चूर्णिमें ३ श्रीबृहत्कल्पसूत्रके लघु भाष्यमें ४ तथा बृहत्भाष्यमें ५ और चूर्णिमें ६ श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रमें ७ तथा चूर्णिमें ८ श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें ९ तथा तद्वृत्तिमें १० और श्रीस्थानाङ्गजी सूत्रकी वृत्तिमें ११ इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें कहा है कि पचास दिने अवश्यही पर्युषणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करनी चाहिये। तथापि पर्युषणा करने योग्यक्षेत्र नही मिले तो विजन (जङ्गल) में भी वृक्ष नीचे पचास वें दिन जरूर पर्युषणा करनी परन्तु पचासमें दिनकी रात्रिको उल्लङ्घन नही करना यह बात तो प्रसिद्ध है इसीके सम्बन्धमें इन्ही ग्रन्थके आदिमें श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रकी वृत्तिका पाठ पृष्ठ १८।१९ में और श्रीवृहत्कल्पवृत्तिका पाठ पृष्ठ २१ से २५ तक, और श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रकी चूर्णिका पाठ पृष्ठ ९१ से ९४ तक, और श्रीनिशीथसूत्रकी चूर्णिका पाठ पृष्ठ ९५ से ९९ तक, तथा तद्भावार्थ पृष्ठ १०० से १०५ तक छप गया है,—

ऊपरोक्त शास्त्रोंमें आषाढ़ चौमासीसें पांच पांच दिनोंकी वृद्धि करते (दशवें पञ्चकमें) पचासवें दिने प्रसिद्ध पर्युषणा मासवृद्धिके अभावसें चन्द्रसंवत्सरमें करनी कही है और मासवृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित संवत्सरमें पांच पांच दिनोंकी वृद्धि करते (चौथे पञ्चकमें) वीशवें दिने प्रसिद्ध पर्युषणा कही सो प्राचीनकालाश्रय पूर्वधरादि उग्रविहारी महाराजोंके लिये श्रीजैनज्योतिषके पञ्चाङ्ग मुजब वर्त्तनेके सम्बन्धमें कही परन्तु अबी इस वर्त्तमानकालमें जैन पञ्चाङ्ग के अभावसें और पड़ते कालके कारणसें ऊपरका व्यवहार श्रीसन्घकी आज्ञासें विच्छेद हुवा है सोही दिखाता हूं।

श्रीतीत्थोगालिय (तीर्थोद्गार) पयन्नामें कहा है-यथा ;—

वीसदिणेहिं कप्पो, पंचगहाणीय कप्पठवणाय,
नवसय तेणउएहिं, वुच्छिन्ना संघआणाए ॥ १ ॥

देखिये ऊपरकी गाथामें वीश दिनका कल्प, तथा पांच पांच दिनकी वृद्धि करके अज्ञातपर्युषणास्थापन करनेसें पिछाड़ी कालावग्रह संबंधी श्रीवृहत्कलपवृत्ति, श्रीदशाश्रुतचूर्णि,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीनिशीथचूर्णि,श्रीवृहत्कल्पचूर्णिके, पाठ खुलासापूर्वक छप गये हैं सोही पंचकपरिहानीका कल्प, और कल्प स्थापना याने–योग्य क्षेत्रके अभावसें पांच पांच दिनकी वृद्धिसें अज्ञातपर्युषणा स्थापन करे उसी रात्रिको वहां श्रीकल्पसूत्र के पठन करनेका कल्प, यह तीनों बातें वीर संम्वत् ९९३ (विक्रम संम्वत् ५२३) में श्रीसंघकी आज्ञासें विच्छेद हुई। तब चन्द्रसंवत्सरमें और अभिवर्द्धितसंवत्सरमें भी आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने पर्युषणा करनेके कल्पकी मर्य्यादा रही तथा पचासवें दिनही श्रीकल्पसूत्रके पठन करनेके कल्पकी मर्यादा भी रही और उसी वर्ष श्रीमान् परम उपगारी श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणजी महाराजनें श्रीजैन-शास्त्रोंको पुस्तका रूढमें किये उसी समय श्रीदशाश्रुत-स्कन्धसूत्रके आठमें अध्ययनको लिखती वख्त, जिन चरित्र तथा स्थिरावली और साधुसमाचारीका संग्रह करके अष्टम अध्ययनको संपूर्ण किया तब पांच पांच दिनकी वृद्धिसें अभिवर्द्धित सम्वत्सरमें चार पञ्चक वीश दिनका तथा चन्द्र-सम्वत्सरमें दशपञ्चकका (कल्प) व्यवहारको न लिखा और चन्द्रसं० अभिवर्द्धितसं० इन दोनु सम्वत्सरोंमें५० दिनका एकही नियम होनेसें पचास दिनेही प्रसिद्ध पर्युषणा करनेका नियम दिखाया है यह श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रका अष्टमाध्य-यन श्रीकल्पसूत्रजीके नामसें जूदा भी प्रसिद्ध है उसी श्री-कल्पसूत्रका पर्युषणा सम्बन्धी पाठ भावार्थ सहित इन्ही ग्रन्थकी आदिमें पृष्ठ ४।५।६ तक छप चुका है सोही पाठार्थ सूर्य्यकी तरह प्रकाश करता है कि इस वर्त्तमानकालमें आ-षाढ़ चौमासीसें पचास दिन जहां पूरे होवे वहांही पर्यु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षणा करनी चाहिये इसीही श्रीकल्पसूत्रके मूल पाठादिके अनुसार श्रीजिनपतिसूरीजीनें समाचारीमें लिखाहै कि-अधिक मास हो तो भी पचास दिने पर्युषणा करना परन्तु असी दिने नही करना चाहिये-इस लेखको देखके छठे महाशयजी लिखते हैं कि (यहीतो विवादास्पद है श्रीजिन पति सूरिजीने समाचारीमें जो यह पूर्वोक्त हुकम जारी किया है कौनसे सूत्रके कौनसें दफे मुजब किया है) इस पर मेरेको इतनाही कहना है कि श्रीकल्पसूत्रके पर्युषणा सम्बन्धी साधुसमाचारीका मूलपाठ इन्ही ग्रन्थके पृष्ठ ४।५ में छपा है उसी मूलपाठके अनेक दफों मुजब श्रीजिनपति सूरिजीनें समाचारीमें पूर्वोक्त हुकम जारी किया है सो श्रीजैन आगमानुसार है इसका निर्णय ऊपरमेंही कर दिखाया हैं इसलिये छठे महाशयजी आपको श्रीजिनपति सूरिजीके वाक्यमें जो शङ्कारूपी मिथ्यात्वका भ्रम पड़ा है सो उपरका लेखको पढ़के निकालदो और मिथ्या पक्षको छोड़कर सत्य बातको ग्रहण करके, निःसन्देहरूपी सम्यक्त्व रत्नको प्राप्तकरो क्योंकि आपके विवादास्पदका निर्णय उपरमेही होगया है। और पृष्ठ १५७ सें १६५ तक भी पहिले छपगया है।

वड़ेही आश्चर्यकी बात है कि-श्रीवल्लभविजयजीको २२।२३ वर्ष दीक्षा लिये हुवे और हर वर्ष गांम गांममें श्रीपर्युषणापर्वके व्याख्यानमें खुलासा पूर्वक व्याख्या सहित वंचाता हुवा श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठका तथा मूलपाठके व्याख्या का अर्थ भी उन्हकी समझमें नही आया होगा इसलिये ५० दिने पर्युषणा करनेका श्रीजिनपति सूरिजीका लेख पर शङ्का करी इससें मालूम होता है कि पर्युषणा सम्बन्धी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीकल्पसूत्रके पाठसें तथा तद्रूपाठकी व्याख्यासें आप अज्ञ होवेंगे अथवा तो भोले जीवोंको गच्छ कदाग्रहका भ्रममें गेरनेके लिये जानते हुवे भी तीसरे अभिनिवेश मिथ्यात्वके आधिन हो करके मायावृत्तिसें लिखा होगा सो विवेकी विद्वान् स्वयं विचार लेवेंगे :—

और आगे छठे महाशयजी दम्भप्रियजीनें फिरभी लिखा है कि (हाँ यदि ऐसा खुलासा पाठ पञ्चाङ्गीमें आप कहीं भी दिखा देवें कि दो श्रावण होवे तो पीछले श्रावण में और दो भाद्रपद होवें तो पहिले भाद्रपदमें सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, केश लुञ्चन, अष्टमतपः, चैत्यपरिपाटी, और सर्व सङ्घके साथ खामणारूप पर्युषणा वार्षिकपर्व करना तो हम माननेको तैयार है)

श्रीवल्लभविजयजीके इस लेखपर मेरेको प्रथमतो इतना ही कहना है कि ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनें-वालोंको आपने आज्ञा भंगका दूषण लगाया तब श्रीबुद्धि-सागरजीनें आपको पत्र द्वारा पूछा कि कौनसे शास्त्रोंके पाठ मुजब ५० दिने पर्युषणा करनेवालोंको आपने आज्ञा भङ्गका दूषण लगाया है सो बतावो इस तरहसें शास्त्रका प्रमाण पूछा उसीको आप शास्त्रका प्रमाणतो बता सके नहीं तब पंडिताभिमानके जोर की मायावृत्तिसें निष्प्रयो-जनकी अन्य अन्य बातें लिखके उलटा उन्हीसें ही शास्त्रका प्रमाण पूछने लगे सो दंभप्रियजी यह आपका पूछना अन्यायकारक है क्योंकि प्रथम आपने ही आज्ञा भंगका दूषण लगाया है इसलिये प्रथम आपको ही शास्त्रका प्रमाण बताना न्याययुक्त उचित है तथापि जब तक आप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अपनी बात संबन्धी शास्त्रका प्रमाण नही बतावोगे तब तक आपका दूसरोंको पूछना है सो निकेवल बाललीलावत् विवेकशून्यतासें अपने नामकी हासी करनेका कारण है सो विद्वान् पुरुष स्वयं विचार सकते है ;—

दूसरा–श्रीवल्लभविजयजी सें मेरा (इस ग्रन्थकारका) बड़ेही आग्रहके साथ यही कहना है कि आपने ५० दिने पर्युषणा करनेवालोंको आज्ञा भंगका दूषण लगाया सो शास्त्रप्रमाण मुजब और न्यायकी युक्ति करके सहित सिद्ध कर दिखावो अथवा नहीं सिद्धकरसकोतो श्रीचतुर्विध संघ समक्ष मन वचन कायासें अपनी उत्सूत्रभाषणके भूलकी क्षमा मांगकर मिथ्या दुष्कृतसें अपनी आत्माको भवान्तर में उत्सूत्रभाषण की शिक्षा भोगनेसें बचालेवो ;—

और आप इन दोनु मेसें एक भी नही करोगे और इस बातको छोड़ कर निष्प्रयोजनकी अन्य अन्य बातोंसें वृथा वाद् विवाद् खण्डन मण्डन तथा दूसरेकी निन्दा अवहेलनासें झगड़ा टंटा करके आपसमें जो जो संपसें शासन उन्नतिके और भव्य जीवोंके उद्धारके कार्य होते है जिसमें विघ्न कारक राग द्वेष निन्दा ईर्षासें कर्म्म बन्धके हेतु करोगे करावोगे और मिथ्यात्वको बढावोगे जिसके दोषाधिकारी निमित्त भूत दम्भप्रियजी श्रीवल्लभविजयजी खास आपही होवोगे इस लिये निष्प्रयोजनकी अन्याय कारक वृथा अन्य अन्य बातों को छोड़कर अपनी बात संबन्धी शास्त्रका प्रमाण दिखावो अथवा अपनी भूल समझके क्षमाके साथ मिथ्या दुष्कृतदेवो नहीं तो आप आत्मार्थी मोक्षाभिलाषी हो ऐसा कोईभी सज्जन नहीं मान सकेंगे किन्तु इस लौकिकमें दृष्टिरागि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यौंसें पूजता मानताके लिये पण्डिताभिमानके जोरसें उत्सूत्रभाषणसें संसार वृद्धिका भय न करते बालजीवोंकों कदाग्रहमें गेरके मिथ्यात्वको वढानेवाले आप हो सोतो श्रीजैनशास्त्रोंके तात्पर्यको जाननेवाले विवेकी सज्जन अवश्यही मानेंगे यह तो प्रसिद्धही न्यायकी बात है ;—

तीसरा यह है कि दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणापर्व करने संबन्धी पञ्चाङ्गीका पाठ पूछके मानने को छठे महाशयजी आप तैयार हुए हो परन्तु अपनी तरफसें पंचांगीका पाठ बता सकते नहीं हो इससें यह भी सिद्ध होगया कि इस वर्तमान कालमें दो श्रावण अथवा दो भाद्रपद होनेसें पर्युषणापर्व कबकरना जिसकी आपको अबीतक शास्त्रोंके प्रमाण मुजब पूरे पूरी मालूम नहीं है तो फिर दूसरोंको आज्ञा भंगका दूषण लगाके निषेध करना यहतो प्रत्यक्ष आपका महामिथ्या उत्सूत्रभाषणरूप वृथा ही झगड़ेको वढानेवाला हुवा सो विवेकी सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे ;—

चौथा औरभी सुनो यहतो प्रसिद्ध बात है कि आषाढ चौमासीसें ५० दिने श्रीपर्युषणा पर्वका आराधन वार्षिक कृत्यादिसें करना कहा है इस न्यायके अनुसार दूसरे श्रावण में अथवा प्रथम भाद्रपदमें ५० दिने पर्युषणा करना सोतो अल्प बुद्धिवाले भी समझ सक्के है। तो फिर क्या छठे महाशयजीको इतनी भी बुद्धिनहींहै सो ५० दिने दूसरे श्रावण में अथवा प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करने संबंधी पञ्चाङ्गी का पाठ पूछते है। इसपर कोई कहेगा कि छठे महाशयजी की ५० दिने पर्युषणा करनेकी बुद्धि तो हैं। इसपर मेरेको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इतनाही कहना है कि ५० दिने पर्युषणा करनेकी बुद्धि है तो फिर जानते हुवे भी तीसरे अभिनिवेशिक मिथ्यात्वके अधिकारी क्यों बनके पञ्चाङ्गीका प्रमाण पूछकरके भोलेजीवों को संशयरूपी मिथ्यात्वका भ्रममें गेरे है और अधिकमास की गिनती निश्चय करके स्वयं सिद्ध है सो कदापि निषेध नहीं हो सकती है जिसका खुलासा इस ग्रन्थमें अनेक जगह छपगया है इसलिये दो श्रावण होतेभी ८० दिने भाद्रपदमें अथवा दो भाद्रपद होनेसे भी ८० दिने दूसरे भाद्रपदमें पर्युषणा अपनी मति कल्पनासें श्रीजिनाज्ञाविरुद्ध क्यों करते है क्योंकि पचासवें दिनकी रात्रिको भी उल्लङ्घन करनेवालेको शास्त्रोंमें आज्ञा विराधक कहा है इसलिये ८० दिने पर्युषणा करनेवाले अवश्यही आज्ञाके विराधक है यह तो प्रत्यक्ष सिद्ध है और ८० दिने पर्युषणा करनेका कोईभी श्रीजैनशास्त्रोंमें नहीं लिखा है परन्तु ५०दिने पर्युषणा करनेका तो पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंमें लिखा है सो इसीही ग्रन्थमें अनेक जगह छपगया है तथापि दंभप्रियजीनें अभि-निवेशिक मिथ्यात्वसें दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपदमें ५० दिने पांच कृत्योंसें पर्युषणा वार्षिक पर्व करने संबंधी पंचांगीका पाठ पूछके भोले जीवोंको भ्रममें गेरे है सो दंभ-प्रियेजीके मिथ्यात्वका भ्रमको दूर करनेके लिये और मोक्षा-भिलाषी सत्यग्राही भव्यजीवोंको निःसन्देह होनेके लिये इस जगह मेरेको इतनाही कहना है कि—श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठमें ५०दिने पर्युषणा करनी कही है इसलिये श्रावणमासकी वृद्धि होनेसें दूसरे श्रावणमें अथवा भाद्रपदमासकी वृद्धि होनेसें प्रथम भाद्रपदमें जहां ५०दिन पूरे होवे वहांही प्रसिद्ध पर्युषणामें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि पांच कृत्योंसें वार्षिकपर्व करनेका समझना चाहिये क्योंकि जहां प्रसिद्ध पर्युषणा वहांही वार्षिक कृत्यादि करनेका नियम है सो तो श्रीकल्पसूत्रकी नव (९) व्याख्यायोंमें श्रीखरतरगच्छके और श्रीतपगच्छादिके सभी टीकाकारोंनें खुलासा पूर्वक लिखा है इसका विस्तार इसीही ग्रन्थकी आदिसें लेकर पृष्ठ २० तक छप गया है और उन्ही टीकाओंमें पचास दिने भाद्रपद शुक्लपञ्चमीको सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि पांच कृत्योंसें वार्षिक पर्वरूप प्रसिद्ध पर्युषणा करनी कही है सो तो मास वृद्धिके अभावसें चन्द्रसंवत्सरमें नतु मासवृद्धि होते भी अभिवर्द्धित संवत्सरमें क्योंकि प्राचीनकालमें भी पौष अथवा आषाढ़ मासकी वृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीश दिने श्रावणशुक्ल पञ्चमीको सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि पाँच कृत्योंसें प्रसिद्ध पर्युषणा जैनपञ्चाङ्गानुसार करनेमें आती थी इस बातका निर्णय श्रीकल्पसूत्रकी टीकाओंमें तथा इसीही ग्रन्थमें अनेक जगह और विशेष करके पृष्ठ १०७ सें ११७ तक छप गया है परन्तु इस वर्त्तमान कालमें वीश दिने पर्युषणा करनेका कल्पविच्छेद होनेसें तथा जैन पञ्चाङ्गके अभावसें और लौकिक पञ्चाङ्गमें हरेक मासोंकी वृद्धि होनेके कारणसें ५० दिनेही प्रसिद्ध पर्युषणा वार्षिक कृत्यादिसें करनेकी शास्त्रोंकी तथा श्रीखरतरगच्छके और श्रीतपगच्छादिके पूर्वज पूर्वाचार्य्योंकी मर्य्यादा है सो तो इस ग्रन्थकी आदिसेंही लेकर ऊपर तकमें अनेक जगह छप गया है और सातमें महाशयजी श्रीधर्म्मविजयजीके नामकी सभी क्षामें भी छपेगा (और वर्षाकालमें जीवदयादिके लियेही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

खास करके दिनोंकी गिनतीसें पर्युषणा करनेका श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक कहा है) इस लिये इस वर्त्तमान कालमें दूसरे श्रावण में अथवा प्रथम भाद्रपद्में ५० दिनेही प्रसिद्ध पर्युषणा सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि पांच कृत्यों सहित अवश्यही निश्चय करके करनी चाहिये सो पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंके प्रमाणानुसार तथा युक्तिपूर्वक स्वयं सिद्ध है सो तो ऊपरके लेखको तथा इस ग्रन्थको आदिसें अन्ततक आठों महाशयोंके लेखकी समीक्षाको पढ़नेवाले मोक्षाभिलाषी सत्यग्राही सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे तथा छठे महाशयजी आप भी हृदयमें विवेक बुद्धि लाकरके न्याय दृष्टिसें पढ़कर अच्छी तरहसें विचारो और आप सत्यवादी महा व्रतधारी आत्मार्थी होवो तो पञ्चाङ्गीके अनेक प्रमाणानुसार और खास आपके गच्छके भी पूर्वाचार्य्योंकी मर्य्यादानुसार ५० दिने दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रपद्में सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि पाँच कृत्योंसें प्रसिद्ध पर्युषणा वार्षिकपर्व करनेका ऊपरोक्त प्रत्यक्ष न्यायानुसार तथा युक्तिपूर्वक शास्त्रोंके प्रमाणको ग्रहण करो और शास्त्रोंके प्रमाण बिना तथा युक्तिके विरुद्धका मिथ्या कदाग्रहको छोड़ो और ५० दिने पर्युषणापर्व करनेका निषेध करने सम्बन्धी जितनी कुतर्कों करनी है सो सबीही संसारवृद्धिकी हेतुरूप तथा भोले जीवोंकी सत्यबात परसें श्रद्धा भ्रष्ट करके गच्छ कदाग्रहके मिथ्यात्वका भ्रममें गेरनेके लिये अपनी विद्वत्ताकी हासी करानेवाली है सो भवभीरू मोक्षाभिलाषी आत्मार्थियोंको करनी उचित नही है तो फिर छठे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महाशयजीने शास्त्रानुसार ५० दिने पर्युषणा पर्व करने वालोंको मिथ्या आज्ञाभङ्गका दूषण लगाके उत्सूत्र भाषण-रूप ८० दिने पर्युषणा करनेका पुष्टकिया जिसकी आलो-चना लिये बिना कैसे आत्मका सुधारा होगा सो न्यायदृष्टि वाले सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे ;—

अब छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीनें दूसरे गुज-राती भाषाके लेखमें मिथ्यात्वके झगड़ेको बढ़ानेके लिये जो लेख लिखा है उसीका नमूना यहाँ लिख दिखा करके पीछे उसीकी समीक्षा करता हूं—नवेम्बर मासकी ७वीं तारीख सन् १९०९ गुजराती आश्विन वदी १ हिन्दी कार्त्तिक वदी १ वीर संवत् २४३५ का जैनपत्रके ३० वा अङ्कके पृष्ठ पांचमा की आदिमें ही लिखा है कि,—

[वन्दे वीरम्—लेखक मुनि वल्लभविजय मु० पालणपुर

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

आचार्य्य सावधान ! उपाध्याय सावधान ! पन्यास सावधान ! गणी सावधान ! साधुसाध्वी सावधान ! यतीवर्ग सावधान ! श्रावक श्राविका सावधान ! शेठी-याओ सावधान ! कोन्फरन्स सावधान ! वकील प्लीडर सावधान ! बेरिस्टअेटलो सावधान ! नाणा कोथली सावधान ! लागता वलगता सावधान ! कागज कलम सावधान ! खडीओ रुशनाई सावधान ! सावधान ! साव-धान !! सावधान !!! तपगच्छनाम धरावनार सावधान ! खरतरगच्छीय सावधान !]

छठे महाशयजीके इन अक्षरों पर मेरेको बड़ाही आश्चर्य्य उत्पन्न होता है कि श्रीवल्लभविजयजीकी विवेक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बुद्धि कैसी शून्य होगई है सो अपनी हासी करानेवाले बिना विचारे शब्द लिखते कुछ भी लज्जा नही आई क्योंकि श्रीवल्लभविजयजी आत्मार्थी महाव्रतधारी साधु होते तो वकील, बेरिस्टर, और नाणा कोथली, वगैरहको सावधान! सावधान!! पुकारके कोर्ट कचेरीमें झगड़ा वढ़ानेकी तैयारी कदापि नही करते तथापि करी इससें विवेकी सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे कि–श्रीवल्लभविजयजीनें भेष धारण करके साधु नाम धराया परन्तु अन्तरमें श्रद्धारहित होनेसें शास्त्रार्थ पूर्वक सत्य असत्यका निर्णय करना छोड़ करके श्रीखरतरगच्छके और श्रीतपगच्छके आपसमें कोर्ट कचेरीमें झगड़ेको वढ़ानेके लिये श्रीजैनशासनकी निन्दा करानेवाले तथा मिथ्यात्वको वढ़ानेवाले और अपने नामको लज्जनीय शब्द लिखते पूर्वापरका कुछ भी विचार न किया और शक्क दिवाने वड़ेही पागलकी तरह—नाणा कोथली (रुपैयोंकी थेली) तथा कागद कलम और खड़ीओ रुशनाई (द्वात शाही) अचेतन अजीव वस्तुयोंको सावधान! सावधान!! पुकारा–वाह क्या विद्वत्ताकी चातुराईका नमूना छठे महाशयजीने प्रकाशित किया है सो पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे,–

और दूसरा यह है कि खास छठे महाशयजीकी सम्मति पूर्वक पञ्जाब अमृतशहरसें, घासीराम और जुगलरामको गङ्गाजी भेजकर पवित्र करवाये जिसका कारण संक्षिप्तसें इसीही ग्रन्थके पृष्ट १७५–१७६ में छपगया है और विशेष विस्तार पूर्वक पञ्जाब लाहोरसें जसवन्तराय जैनीकी मारफत श्रीआत्मानन्द जैन पत्रिका मासिक पत्र प्रसिद्ध

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होता है उसीमें सन् १९०८ के २-३ अङ्कमें छप चुका है उसी घासीराम और जुगलरामको गङ्गाजी भेजकर पवित्र कराने सम्बन्धी ढूंढकसाधुनामधारक कुंदनमलने १४ पृष्ठकी छोटीसी एक पुस्तक बनाकरके प्रगट कराई है सो पुस्तक छठें महाशयजीनें वांची है और उन्हके पास भी है उसी पुस्तकमें छठे महाशयजीके गुरुजी न्यायाम्भोनिधिजी श्रीआत्मारामजी सम्बन्धी तथा श्रीजैनश्वेताम्बर मूर्त्तिपूजने वालों सम्बन्धी और श्रीसिद्धाचलजी श्रीगीरनारजी श्रीआबूजी श्रीसमेतशिखरजी वगैरह श्रीजैनतीर्थों सम्बन्धी अनेकतरहके अनुचित शब्द लिखके निन्दा करी है उसीके निमित्त भूत छठे महाशयजी वगैर हुवे हैं और उसी पुस्तकके पृष्ठ ३-४में घासीराम और जुगलरामको गङ्गाजीके जलसें पवित्र कराये तैसेही छठे महाशयजीके गुरुजी श्रीआत्मारामजीको गङ्गाजीके जलसें पवित्र न करानेके कारण अपने गुरुजीको और अपने गुरुजीकी सम्प्रदायमें दीक्षा लेनेवालोंको अपवित्र ठहरनेका कलङ्क लगवाया और पृष्ठ ११ में घासीराम, जुगल रामको गङ्गाजी भेजने वालोंको तथा भेजाने वालोंको और सम्मती देकर अच्छा समझने वाले छठे महाशयजी आदिको मिथ्यात्वी, पाखण्डी, वगैरह शब्दोंका इनाम देकर फिर पृष्ठ १३ के अन्तमें गङ्गाजी भेजने वालोंको श्रीजैनशासनको लांछन (कलङ्क) लगानेवाले ठहराकरके तीन वार धीक्कारका इनाम दिया है।

इस जगह निष्पक्षपाती सज्जन पुरुषोंको विचार करना चाहिये कि श्रीजैनतीर्थोंकी तथा श्रीजैनतीर्थोंको मानने वालोंकी द्वेष बुद्धिसें बड़ेही अनुचित शब्दोंसें निन्दा करके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भारी कर्मोंके बंध किये हैं और श्रीजैनशासनके निन्दकोंको भी उसी रस्ते पहुंचानेके लिये नरकादि अधोगतिका सार्थवाह (कुंदनमल्ल ढूंढक) बना है और पुस्तक प्रगट कराई हैं जिसमें छठे महाशयजीके गुरुजीकी तथा उन्होंके सम्प्रदाय वालोंकी भी निन्दा करी हैं तथा खास छठे महाशयजी वगैरहको भी अनेक शब्द लिखते तीनवार धीक्कार भी लिख दिया हैं और श्रीजैनशासनकी निन्दा करके मिथ्यात्व बढ़ानेका कारण किया–उसीको तो छठे महाशयजीने कुछ जबाब भी न दिया और सर्व श्रीसङ्घको तथा वकील, बेरिस्टर वगैरहको सावधान करके कोर्ट कचेरीमें श्रीजैनशासनके निन्दक कुंदनमल्लको शिक्षा दिलानेकी किञ्चिन्मात्र भी बहादुरी न दिखाई परन्तु श्री खरतरगच्छके और श्रीतपगच्छके आपसमें वृथाही कोर्ट कचेरीमें झगड़ा फैलानेके लिये और मिथ्यात्व बढ़ानेके लिये, वकील, बेरिस्टर, वगैरको सावधान करके बड़ीही बहादुरी दिखाई हैं सो बड़ीही आश्चर्यकी बात है कि श्रीजैनशासनके दुशमन निन्दकों से तो मुख छिपाते हैं और आपसमें झगड़ा करनेकी बहादुरी दिखाते कुछ लज्जा भी नहीं पाते है,—

अब छठे महाशयजीको मेरा (इस ग्रन्थकारका) इतनाही कहना है कि–आप सम्यक्त्वी और श्रीजैनशासनके प्रेमी होवो तो प्रथम श्रीखरतरगच्छके और श्रीतपगच्छके आपसमें न्यायानुसार शास्त्रार्थ पूर्वक अन्तरका पक्षपात छोड़कर सत्य असत्यका निर्णय करके असत्यको छोड़के सत्यको ग्रहण करो और श्रीजैनशासनके निन्दक कुंदनमल्लके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिथ्यात्वका पाखण्डको छेदन करनेके लिये अपनी बहादुरी प्रगट करो—जबतक कुंदनमल्लके मिथ्यात्व बढ़ानेवाले लेखका जबाब आप नही देवोगे तबतक आपकी विद्वत्ता वृथाही समझनेमें आवेगी और ढूंढकोंके मुखपर शाही फिरानेके इरादेसें कार्य्य करनेकी अक्कल आपने दोडाई थी परन्तु पूर्वापरका विचार किये बिना कार्य्य कराया जिससें आपकेंही मुखपर शाही फिरने जैसा कारण बनगया और श्रीजैनतीर्थोंकी तथा अपने गुरुजी वगैरहकी निन्दा करानेके निमित्त भूत दोषाधिकारी भी आपकोही बनना पड़ा है और अपने बड़ोंको अपवित्र ठहरानेका कलङ्क भी लगवाया है इसलिये कुंदनमल्ल ढूंढकके निन्दारूपी मिथ्या गप्पोंका जबाब देना आपकोही उचित है तथापि उन्हका जबाब देना आपको मुश्किल होवे तो आपके मण्डलीमें विद्वत्ता का अभिमान धारण करनेवाले बहुतसें साधुजी है उन्हके पास उसीका जबाब दिलाना चाहिये इतने पर भी आप की तथा आपके मण्डलीके साधुओंकी कुंदनमल्लके लेखका जबाब देनेकी बुद्धि नही होवे तो मेरी तरफसें इस ग्रन्थको संपूर्ण हुए बाद "कुंदनमल्लके मिथ्यात्वका पाखण्डच्छेदन कुठार" नामा ग्रन्थ आप लिखो तो बनाकर प्रगट करूं जिसमें श्रीजैनतीर्थों पर तथा श्रीजैनतीर्थोंको माननेवालों पर और आपके गुरुजी वगैरह पर जो जो आक्षेप करके दूषण लगाया है जिसका न्यायानुसार युक्तिपूर्वक अच्छी तरहसें जबाब लिखके सबके आक्षेपको दूर करनेमें आवेगा और कुंदनमल्लने अपने अन्तर गुण युक्त जो जो शब्द लिखे हैं उसीकाही न्याय युक्तिपूर्वक खास कुंदनमल्लकेही ऊपर घटानेमें आवेगा,—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब सत्यग्राही सज्जनपुरुषोंको निष्पक्षपाती होकरके विचार करना चाहिये कि—एक सामायिक विषयमें प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही सम्बन्धी २१ शास्त्रोंके प्रत्यक्ष प्रमाणोंको न्यायके समुद्र हो करके भी श्रीआत्मारामजीने छोड़ दिये और आप उन्ही शास्त्रोंके पाठोंकी श्रद्धा रहित बनकरके उन्ही शास्त्रोंके तथा उन्हीं शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें प्रथम इरियावही स्थापन करनेके लिये ऊपरोक्त कैसा अनर्थ करके कहीं उपधानसम्बन्धी, कहीं साधुके जाने आने सम्बन्धी कहीं चैत्यवन्दनसम्बन्धी, कहीं स्वाध्यायसम्बन्धी, कहीं षड़ावश्यकरूप प्रतिक्रमणसम्बन्धी, कहीं पौषधसम्बन्धी, इत्यादि अनेक तरहके अन्य अन्य विषयोंके सम्बन्धमें शास्त्रकार महाराजोंने इरियावही कही है जिसके बदले उन्हीं शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें सामायिकमें प्रथम इरियावही स्थापन करनेके लिये आगे पीछेके पाठोंकों छोड़ करके अधूरे अधूरे पाठ लिखते न्यायाम्भोनिधिजीको पर भवका कुछ भी भय नही लगा और इस लौकिकमें भी अपनी विद्वत्ताकी हासी करानेके कारणरूप इतना अन्याय करते कुछ शर्म भी नहीं आई इसलिये सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही सबी गच्छोंके प्रभाविक पुरुषोंने अनेक शास्त्रोंमें प्रत्यक्ष पने अविसंवादरूप खुलासा पूर्वक लिखी है जिसको जानते हुवे भी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वके जोरसे श्रीहरिभद्रसूरिजी, श्रीअभयदेवसूरिजी, श्रीदेवेन्द्रसूरिजी वगैरह प्रभाविक पुरुषोंको विसंवादीका मिथ्या दूषण लगा करके सामायिकमें प्रथम इरियावही स्थापनेका विसंवाद-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रूपी मिथ्यात्वको बढ़ाने वाला झगड़ा (अविसंवादी श्री-जैनशासनमें इस वर्त्तमान कालके बालजीवोंकी श्रद्धाभ्रष्ट करनेके लिये) श्रीआत्मारामजीने अपनी विद्वत्ताके अभि मानसें खूबही फैलाया है ;—

और सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण करनेका निषेध करके प्रथम इरियावही स्थापन करने सम्बन्धी ऊपरोक्त जैनसिद्धान्त समाचारी नामक पुस्तकमें जैसे उत्सूत्र भाषणोंसें मिथ्यात्व फैलाया है तैसेही श्रीवीरप्रभुके छ कल्याणक निषेध करके पाँच कल्याणक स्थापन करने वगैरह कितनी बातोंमें भी खूबही उत्सूत्र भाषणोंसे मिथ्यात्व फैलाया है जिसका खुलासा आगे लिखुंगा—

और श्रीआत्मारामजीको अपने पूर्व भवके पापोदयसें पहिले ढूंढियोंके मिथ्या कल्पित मतमें दीक्षा लेनी पड़ी थी वहाँ भी अपने कल्पित मतके कदाग्रहकी बात जमानेके लिये अनेक शास्त्रोंके उलटे अर्थ करते थे तथा अनेक शास्त्रोंके पाठोंको छोड़के अनेक जगह उत्सूत्र भाषण करके संसार वृद्धिका भय न करते हुवे भोले दृष्टिरागियोंको मिथ्यात्वकी भ्रमजालमें गेरते थे और मिथ्यात्वरूप रोगके उदयसें श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञा मुजब सत्य बातोंको कल्पित समझते थे और श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञा विरुद्ध अपने मत पक्षकी कल्पित मिथ्या बातोंकों सत्य समझते थे और हजारों श्रीजैन शास्त्रोंको उत्थापन करके सत्य बातोंके निन्दक शत्रु बनते थे इत्यादि अनेक तरहके कार्य्योंसें अपने ढूंढक मतकी मिथ्या कल्पित बातोंको पुष्ट करके अपने मतको फैलाते थे परन्तु कितनेही वर्षोंके बाद अपने पूर्व भवके महान् पुण्योदय होनेसें ढूंढकमतके पाख-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बहकीसबपोल दिनदिनप्रति खुलतीगई जिससे कल्पित ढूंढकमत को श्रीजैनशास्त्रोंकेविरुद्ध और संसारवृद्धिका हेतु भूत जानकर छोड़दिया और श्रीजैनशास्त्रोंके प्रमाणानुसार सत्यबातोंको ग्रहण करनेके लिये संवेगपक्ष अङ्गीकारकरके अनेकशास्त्रोंका अवलोकनकिया और श्रीजैनतत्त्वादर्श, अज्ञानतिमिरभास्कर, तत्त्वनिर्णयप्रासाद् वगैरह भाषाके ग्रन्थोंका संग्रह करके प्रसिद्धभी कराये जिससे विद्वान्भी कहलाये तथा ढूंढकमतकी मिथ्यात्वरूप पाखन्डके भ्रमजालसे कितनेही भव्यजीवोंका उद्धार भी किया और अनेक भक्तजनोंसे खूबही पूजाये-शिष्य-वर्गका समुदाय भी बहुत हुवा तथा शुद्ध प्ररूपक, उत्कृष्टिक्रिया करने वाले भी कहलाये और श्रीमद्विजयानन्दसूरि-न्यायाम्भो-निधिजीवगैरह पदवियोंकोभी प्राप्तभये जिससे दुनियामें प्रसिद्ध भी हुवे परन्तु यह तो दुनियामें प्रसिद्ध बात है, कि-जिस आदमीका जो स्वभाव पहिलेसे पड़ा होवे उस आदमीको कितनेही अच्छे संयोगोंसे चाहे जितना उत्तम गिनो अथवा श्रेष्ठ पदमें स्थापनकरो तो भी अपना पहिलेका पड़ा हुवा स्वभाव नहीं छुटता है सोही बात नीति शास्त्रोंके 'सुभाषितरत्न भान्डागारम्' नामा ग्रन्थके पृष्ठ १०६ में कही है। तैसाही वर्ताव न्यायाम्भोनिधिजी नामधारक श्रीआत्मारामजीने भी किया है, अर्थात्-पूर्वोक्त ढूंढकमतके साधुपनेमें अनेक शास्त्रोंके विरुद्धार्थ-में अनेक जगह उत्सूत्र भाषणकरने वगैरहके कार्य्योंका जो पहिले स्वभाव था सो नहींजानेके कारणसे उसीमुजबही संवेगपक्षेमें भी अपने विद्वत्ताके अभिमानसे कल्पितबातोंको स्थापन करनेके लिये पर भवका भय न करके एक 'जैनसिद्धान्त समाचारी' परन्तु वास्तवमें "उत्सूत्रोंके कुयुक्तियोंकी भ्रमखाड" नामक पुस्तकमें अनुमान १६० शास्त्रोंकेविरुद्ध लिखके, ६० जगह अन्दाज उत्सूत्र

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भाषण भी लिखे हैं जिसके नमूनारूप एक सामायिक विषय सम्बन्धी संक्षिप्तसे ऊपरमेंही लिखनेमें आया है, और पर्युषणाके विषयमें भी अनेक जगह उत्सूत्र भाषण किये है उसकी भी समीक्षा इसही ग्रन्थके पृष्ट १५१ से २१६ तक छप गई है सो पढ़नेसे निष्पक्षपाती सत्यग्राही सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे।

और 'शुद्धसमाचारी'की पुस्तकमें पौषधाधिकारे, विधिमार्गमें उत्सर्गसे-अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावस्या इनच्यारों पर्वतिथियोंमें पौषध करनेसम्बन्धी श्रीसूयगडांगजी, उत्तराध्ययन जी,उववाईजी, धर्मरत्नप्रकरण वृत्ति, योगशास्त्र वृत्ति, धर्मबिन्दु वृत्ति, नवपद प्रकरण वृत्ति, समवायांग वृत्ति, पंचाशक वृत्ति, आवश्यक चूर्णि, तथा वृहद् वृत्ति, और श्रीभगवतीजीसूत्र वृत्ति, वगैरह शास्त्रोंके पाठ दिखाये थे जिसका तात्पर्यार्थको समझे बिना शास्त्रोंके विरुद्ध होकर हमेशां पौषधकरनेका ठहरानेके लिये श्रीआवश्यकसूत्रकी चूर्णिमें तथा वृहद्वृत्तिमें और लघुवृत्तिमें और श्रीप्रवचनसारोद्धार वृत्तिमें, श्रीसमवायांगजीसूत्रकी वृत्तिमें श्रीपंचाशकजीकी चूर्णिमें तथा वृत्तिमें और श्रीउपाशकदशांग वृत्ति वगैरह अनेक शास्त्रोंमें श्रावककी ११ पडिमाके अधिकारमें पांचवी पडिमाकी विधिमें "श्रावक दीनमें ब्रह्मचर्य व्रत पाले और रात्रिको नियम करे" ऐसे खुलासे पाठ हैं तिसपरभी न्यायांभोनिधिजीने अन्धपरंपरासे विवेक शून्यहोकर शास्त्रकार महाराजोंकेविरुद्धार्थमें अपनीमतिकल्पनासे श्रीआवश्यकवृत्ति वगैरहके पाठका"दिवसका ब्रह्मचर्यपाले रात्रिको कुशीलसेवे" ऐसा वीपरीत अर्थ करके मैथुन सेवनकी हिंसाका उपदेश करनेका शास्त्रकारोंको झूठा दूषण लगाके वडाभारी अनर्थ करके जैनसिद्धांत समाचारी नामक पुस्तकमें दुर्लभबोधिका कारण किया है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इत्यादि, इसी तरहसे अनेक बातोंमें बहुत उत्सूत्रोंसे बड़ा अनर्थ किया है उसके सबका निर्णयतो "आत्मभ्रमोच्छेदन भानुः" के अवलोकनसे अच्छी तरहसे हो जावेगा।

और न्यायाम्भोनिधिजीने 'जैनसिद्धान्त समाचारी' पुस्तकका नाम रक्खा परन्तु वास्तवमें उत्सूत्र भाषणोंके और कुयुक्तियोंके संग्रहकी पुस्तक होनेसे आत्मार्थी भव्यजीवोंके मोक्षसाधन में विघ्नकारक और श्रीजिनाज्ञासे बालजीवोंकी श्रद्धाभ्रष्ट करनेवाली मिथ्यात्वके पाखन्डकी भ्रमजालरूप हैं सो इसके बनानेवालोंको, तथा ऐसी जाल बनानेमें संसारवृद्धिकी हेतु भूत खूबही दलाली कौशिस करनेवालोंकों, और मिथ्यात्वको बढ़ा करके संसारमें भ्रमानेवाली ऐसीजाल प्रगट करनेमें श्रीभावनगरकी श्रीजैनधर्मप्रसारकसभाके मेम्बरलोग उस समय आगेवान् हुए जिन्होंको, और इसके बनानेको खुसीमानकर अनुमोदना करनेवालोंको और इसी मुजब अन्धपरंपराके गड्डरीह प्रवाहकी तरह चलकर श्रीजिनाज्ञानुसार सत्यबातों की निन्दा करनेवालोंको, श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञाके आराधक सम्यक्त्वी आत्मार्थी जैनी कैसे कहे जावे इस बातको तत्त्वग्राही मध्यस्थ सज्जनस्वयं विचारलेवेंगे—

और शास्त्रोंकेविरुद्ध उत्सूत्रप्ररूपणा करनेवालेको मिथ्यात्वी अनन्त संसारी अनेकशास्त्रोंमें कहाहै और न्यायाम्भोनिधिजी नाम धारक श्रीआत्मारामजीने तो एक 'जैनसिद्धान्त समाचारी' नामक पुस्तकमें इतने शास्त्रोंके विरुद्ध लिखके इतने उत्सूत्र भाषण किये हैं तो फिर पहिले ढूंढकमतकी दीक्षामें और अन्यकार्योंमें कितने उत्सूत्रभाषण करकेकितने शास्त्रोंकेविरुद्ध प्ररूपणाकरी होगी जिसके फल विपाकका कितना अनन्त संसार कढ़ाया होगा सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और न्यायाम्भोनिधिजीने श्रीजैनतत्त्वादर्शमें, अज्ञान तिमिर भास्करमें, और श्रीजैनधर्म्मविषयिक प्रश्नोत्तर,नामा पुस्तकमेंजो उत्सूत्रभाषणरूपलिखाहै जिसकेसम्बन्धमें आगे लिखनेमें आवेगा

और इस तरहसे अनेक शास्त्रोंकेपाठोंकी श्रद्धारहित तथा शास्त्रोंके आगेपीछेके सम्बन्धवालेपाठोंको छोड़करके शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें अधूरे अधूरे पाठलिखके उलटे वीपरीत अर्थ करनेवाले और शास्त्रकारमहाराजोंको विसंवादीका-मिथ्या दूषण लगानेवाले और श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार सत्यबातोंका उत्थापन करके अपनी मतिकल्पनासे अन्धपरम्पराकी मिथ्या बातोंको स्थापन करते हुवे। अविधिरूप उन्मार्गके पाखण्डको फैलानेमें सार्थवाहकी तरह आगेवान बननेवाले और अपनेही गच्छके प्रभावक पुरुषों को दूषित ठहरानेवाले और बाल जीवोंको सत्य बातोंके निन्दक बना करके दुर्लभबोधिके कारणसे संसारकीखाड़मे गेरनेवाले ऐसे ऐसे महान् अनर्थ करनेवालेको गच्छपक्षकादृष्टिरागसे-गीतार्थ, न्यायाम्भोनिधिजी (न्यायके समुद्र) और युगप्रधान, कलिकाल सर्वज्ञ समान जैनाचार्य्य वगैरहकी लम्बी लम्बी ओपमालगाके ऐसे उत्सूत्री गाढ़कदाग्रहियोंकी महिमा बढ़ा करके आडंबरसे भोले जीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें फँसानेके लिये उत्सूत्रभाषणोंके महान् अनर्थका विचार न करके उपरोक्त मिथ्या गुण लिखने-वालोंकी क्यागतिहोगी तथा कितनासंसारबढ़ावेंगे औरसम्यक्त्व रत्न कैसे प्राप्तकर सकेंगे सो तो श्रीज्ञानीजीमहाराज जाने।

अब श्रीजिनेश्वर भगवान्की आज्ञाके आराधक सज्जन पुरुषोंको मेरा इतनाही कहना है कि ऊपरके लेखको पढ़के दृष्टिरागके पक्षपातको न रखते हुये संसार वृद्धिकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हेतुभूत मिथ्या बातको छोड़ करके आत्मकल्याणके लिये सत्य बातोंके तत्त्वग्राही होना चाहिये और छठे महाशय जीने ढूंढियांको भी अपने सामिल करके सामायिकसम्बन्धी तथा कल्याणक सम्बन्धी और जैनसिद्धान्त समाचारी सम्बन्धी लिखके अपने पक्षकी बात जमानेका परिश्रम किया इसलिये मेने भी सामायिक सम्बन्धी और जैनसिद्धान्त समाचारी सम्बन्धी ऊपरमें इतना लिखके सत्यग्राही भव्यजीवोंको संक्षिप्तसे शास्त्रार्थ दिखाया है और कल्याणक सम्बन्धी पर्युषणका विषय पूरा हुवे बाद पीछेसे लिखनेमें आवेगा सो पढ़नेसें सर्व निर्णय हो जावेंगा ;—

अब छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीको मेरा (इस ग्रन्थकारका) इतनाही कहना है कि आषाढ़चौमासीसें पचास दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेवालोंको आपने आज्ञा भङ्गका दूषण लगाया तब श्रीलश्करसे श्रीबुद्धिसागरजीनें आपको पत्रद्वारा शास्त्रका प्रमाण पूछा उन्होंको शास्त्रका प्रमाण आपने बताया नहीं और छापेमें भी पर्युषणा विषयसम्बन्धी शास्त्रार्थ पूर्वक निर्णय करना छोड़ करके अपनी बात जमानेके लिये निष्प्रयोजनकी अन्य अन्य बातोंको लिखके प्रगट करी और अन्यायसें विशेष झगड़ा फैलानेका कारण किया इसलिये मेने भी आपके अन्यायको निवारण करनेके लिये मुख्य मुख्य बातोंका संक्षिप्तसें खुलासा करके सत्य तत्त्वग्राही सज्जन पुरुषोंको दिखाया हैं जिसको पढ़नेसे न्याय अन्यायका तथा श्रीजिनाज्ञाके आराधक विराधकका निर्णय निष्पक्षपाती पाठकवर्ग स्वयं कर लेवेंगे और मरिचिनें एक उत्सूत्र भाषणसें एक कोड़ा कोड़ी सागरोपम जितना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संसार बढ़ाया इस न्यायानुसार आपके गुरुजी न्यायाम्भो-निधिजीने इतने उत्सूत्र भाषणोंसें कितना संसार बढ़ाया होगा सो तो आप लोगोंको भी न्याय दृष्टिसें हृदयमें विचार करना उचित है और अब आप लोग भी उसी तरहके उत्सूत्र भाषणोंसें मिथ्या झगड़ा करते हुए श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञानुसार मोक्षमार्गकी हेतुरूप सत्यबातोंका निषेध करके श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध संसार वृद्धिकी हेतुभूत मिथ्या कल्पित बातोंको स्थापन करके बाल जीवोंकी सत्यबात परसे श्रद्धाभ्रष्ट करते हो और मिथ्यात्वको बढ़ाते हो सो कितना संसार बढ़ावोगे सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने-यदि आपको संसार वृद्धिका भय होवे और श्रीजिनाज्ञाके आराधन करनेकी इच्छा होवे तो जमालिके शिष्योंकी तरह आपभी करों तथा न्यायाम्भोनिधिजीके समुदायवालोंको भी ऐसेही करना चाहिये क्योंकि जमालिके उत्सूत्र परूपनाकी उन्हके शिष्योंको जबतक मालूम नही थी तबतक तो जमालिके कहने मुजबकी सत्य माना परन्तु जब अपने गुरुकी श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध उत्सूत्र परूपनाकी मालूम होगई तब उसीको छोड़ करके श्रीवीरप्रभुजीके पास आकर सत्यग्राही होगये तैसेही न्यायाम्भोनिधिजीके शिष्यवर्गमें भी जो जो महाशय आत्मार्थी सत्य ग्राही होवेंगे सो तो दृष्टिरागका पक्षको न रखके अपने गुरुकी उत्सूत्र भाषणकी बातोंको छोड़कर शास्त्रानुसार सत्य बातोंको ग्रहण करके अपनी आत्माका कल्याण करेंगे और भक्तजनोंको करावेंगे ।

इति छठे महाशयजीके लेखकी संक्षिप्त समीक्षा समाप्ता ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजीकी तरफसें 'पर्युषणा विचार' नामा छोटीसी १० पृष्ठकी पुस्तक प्रगट हुई है जिसमें पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंके विरुद्ध तथा श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी और खास अपनेही गच्छके पूर्वाचार्य्योंकी आशातना कारक और सत्य बातका निषेध करके अपने गच्छ कदाग्रहकी मिथ्या कल्पित बातको स्थापन करनेके लिये श्रीजैनशास्त्रोंके अतीव गहनाशयको समझे बिना शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें बिना सम्बन्धके और अधूरे अधूरे पाठ दिखाके उलटे तात्पर्य्यसें उत्सूत्र भाषण रूप अनेक कुतर्कों करके अपने पक्षके एकान्त आग्रहसें दूसरोंको मिथ्या दूषण लगाके भोले जीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें गेरे है और अपनी विद्वत्ताकी हासी कराई है इसलिये अब में इस जगह भव्य जीवोंके मिथ्यात्वका भ्रम दूर होनेसें शुद्ध श्रद्धानरूपी सम्यक्त्वकी प्राप्तिके उपगारके लिये और विद्वत्ताके अभिमानसें उत्सूत्र भाषण करनेवालोंको हित शिक्षाके लिये पर्युषणा विचारके लेखकी समीक्षा करके दिखाता हूं ;—

यद्यपि पर्युषणा विचारकी पुस्तकमें लेखक नाम विद्या विजयजीका छपा है परन्तु यह ग्रन्थकार उसीकी समीक्षा उन्होंके गुरुजी श्रीधर्मविजयजीके नामसें लिखता हैं जिसका कारण इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ६७।६८ में छपगया है और आगे भी छपेगा इसलिये इस ग्रन्थकारको सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजीके नामसेही समीक्षा लिखनी युक्त है सोही लिखता है जिसमें प्रथमही पर्युषणा विचारके लेखकी आदिमें लिखा है कि (आत्मकल्याणाभिलाषी भव्यजीव

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निर्मूलता समूलताका विचार छोड़ अपनी परम्परा पर आरूढ़ होकर धर्मकृत्योंको करते हैं) इस लेखको देखतेही मेरेको बड़ाही विचार उत्पन्न हुवा कि—सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजी और उन्होंकी समुदायवाले साधुजी बहुत वर्षोंसें काशीमें रह करके अभ्यास करते हैं इसलिये विद्वान् कहलाते हैं परन्तु श्रीजैनशास्त्रोंका तात्पर्य्य उन्होंकी समझमें नही आया मालूम होता हैं क्योंकि आत्मार्थी प्राणियोंको निर्मूलता समूलता इन दोनुंका विचार अवश्यमेव करना उचित है और निर्मूलता, याने—शास्त्रोंके प्रमाण बिना गच्छ कदाग्रहके परम्पराकी जो मिथ्या बात होवे उसीको छोड़ देना चाहिये और समूलता, याने शास्त्रोंके प्रमाणयुक्त कदाग्रह रहित गच्छ परम्पराकी जो सत्य बात होवे उसीको ग्रहण करना चाहिये और हेय, ज्ञेय, उपादेय, इन तीनो बातोंकी खास करके प्रथमही विचारनेकी आवश्यकता श्रीजैनशास्त्रोंमें खुलासा पूर्वक दर्शाई है, इसलिये निर्मूलता, हेय त्यागने योग्य होनेसें और समूलता, उपादेय ग्रहण करने योग्यहोनेसें दोनुं का विचार छोड़ देना कदापि नही हो सकता है और आत्मकल्याणाभिलाषी निर्मूलता त्यागने योग्यका तथा समूलता ग्रहण करने योग्यका विचार जबतक नही करेगा तबतक उसीको श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध वर्त्तनेका अथवा श्रीजिनाज्ञा मुजब वर्त्तनेका, बन्धका अथवा मोक्षका, मिथ्यात्वका अथवा सम्यक्त्वका, संसार वृद्धिका अथवा आत्मकल्याणके कार्य्योंका, भेदभावके निर्णयको प्राप्त नही हो सकेगा और जबतक ऊपरकी बातोंकी भिन्नताको नही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समझेगा तबतक उसीको आत्म कल्याणकारस्ता भी नही मिलेगा तो फिर भाव करके श्रीजिनाज्ञा मुजब श्रावकधर्म और साधुधर्म कैसे बनेगा याने–निर्मूलता समूलताका विचार छोड़ करके धर्मकृत्योंके करनेवालोंको मोक्ष साधन नही हो सकेगा है क्योंकि उन्होंका धर्मकृत्य तो तत्वा-तत्वका उपयोगशून्य होजाता है इसलिये आत्मार्थी प्राणियोंको निर्मूलता समूलताका विचार करना अवश्यही युक्त है तथापि सातवे महाशयजीने दोनुंका विचार छोड़नेका लिखा हैं सो जैनशास्त्रोंके विरुद्ध होनेसें मिथ्यात्वका कारणरूप उत्सूत्र भाषण है इस बातको तत्वज्ञ पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और (अपनी परम्परा पर आरूढ़ होकर धर्मकृत्योंको करते हैं) सातवें महाशयजीके इन अक्षरों पर भी मेरेको इतनाही कहना है कि–अपनी परम्परापर आरूढ होकर धर्मकृत्योंको करनेका जो आप कहते हो तब तो पर्युषणा विचारके लेखमें आपको दूसरोंका खण्डन करके अपना मण्डन करना भी नही बनेगा क्योंकि सबी गच्छवाले अपनी अपनी परम्परापर आरूढ़ होकर धर्मकृत्य करते हैं जिन्होंका खण्डन करके अपना मण्डन करना सो तो प्रत्यक्ष अन्याय कारक वृथा है और परम्परा द्रव्य और भावसें दो प्रकारकी शास्त्रकारोंने कही है जिसमें पञ्चाङ्गीके प्रमाण रहित वर्त्ताव सो तो गच्छ कदाग्रहकी द्रव्य परम्परा संसार वृद्धिकी हेतु भूत होनेसें आत्मार्थियोंको त्यागने योग्य है और पञ्चाङ्गीके प्रमाण सहित वर्त्ताव सो भाव परम्परा मोक्षकी कारण होनेसें आत्मार्थियोंको प्रमाण करने योग्य है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और द्रव्य भाव परम्पराका विशेष विस्तार देखनेकी इच्छा होवे तो श्रीखरतरगच्छनायक सुप्रसिद्ध श्रीनवाङ्गी वृत्तिकार श्रीअभयदेवसूरिजीकृत श्रीआगम-अष्टोत्तरी नामा ग्रन्थ 'आत्म-हितोपदेश-नामा पुस्तकमें' गुजराती भाषा सहित श्रीअहमदाबादसें छपके प्रसिद्ध होगया है सो पढ़नेसें अच्छी तरहसें मालूम हो जावेगा।

और श्री सर्वज्ञ कथित श्रीजैनशासन अविसंवादी होनेसें श्रीतीर्थङ्कर भगवानोंके जितने गणधर महाराज होते हैं उतनेही गच्छ कहे जाते हैं उन्ह सबीही गच्छवाले महानुभावोंकी एकही परूपना तथा एकही वर्ताव होता है और इस वर्त्तमान कालमें तो बहुतही गच्छवालोंके आपसमें अनेक तरहके विसंवाद होनेसें जुदी जुदी परूपना तथा जुदा जुदा वर्ताव है और बहुतही गच्छवाले अपने अपने गच्छकी परम्परा मुजब धर्मकृत्य करते हुवे आप श्रीजिनाज्ञाके आराधक बनते हैं और दूसरे गच्छवालोंको झूठे ठहरा करके निषेध करनेके लिये–राग, द्वेष, निन्दा, ईर्षासें खण्डन मण्डन करके, आपसमें बड़ाही भारी विसंवादसें मिथ्यात्वको वढ़ानेवाला झगड़ा करते हैं इसलिये वर्तमान कालमें अपनी अपनी परम्परापर दृढ़ रहने सम्बन्धी सातवें महाशयजीका लिखना मिथ्यात्वका कारणरूप उत्सूत्र भाषण है क्योंकि अपनी अपनी परम्परा पर आरूढ़ होकर धर्मकृत्य करने वाले सबी गच्छवाले श्री जिनाज्ञाके आराधक हो जावेंगे तो फिर अविसंवादी श्री जैनशासनकी मर्य्यादा कैसें रहेगा इसलिये वर्त्तमान कालमें अपने अपने गच्छपरम्पराकी बातोंका पक्षपात न रखते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुवे श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध पञ्चाङ्गीके प्रमाण रहित कल्पित बातोंको छोड़ करके श्रीजिनाज्ञा मुजब पञ्चाङ्गीके प्रत्यक्ष प्रमाण पूर्वक सत्यबातोंको ग्रहण करके अपनी आत्माका कल्याण करनेके कार्य्योंमें उद्यम करना चाहिये जिससें आत्मकल्याण होगा नतु तत्वातत्वका विचारशून्य अन्धपरम्परामें–जैसे कि, ८० दिने पर्युषणा करना १, फिर मायावृत्तिसें अधिक मासका निषेध भी करना २, तथा श्री वीरप्रभुके छ कल्याणकोंका निषेध करना ३, और सामायिक करते पहिलेही इरियावही करना ४, और आंबीलमें अनेक द्रव्य भक्षण करने कराने ५, इत्यादि अनेक बातें शास्त्रोंके प्रमाण बिना गड्डरीह प्रवाहकी तरह आत्मार्थियोंको त्यागने योग्य गच्छ कदाग्रहकी द्रव्य परम्परासें प्रचलित है नतु शास्त्रोंके प्रमाणानुसार भावपरम्परासें क्योंकि श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंमें दिनोंकी गिनतीसें ५० दिने पर्युषणा कही है १, और अधिकमासको भी खुलासा पूर्वक गिनतीमें लिया है २, तथा श्रीवीरप्रभुके छ कल्याणकोंको भी अच्छी तरहसें खुलासा पूर्वक कहे हैं ३,और सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण करना कहा है ४, और आंबीलमें भी दो द्रव्योंका भक्षण करना कहा है ५, सोही ऊपरोक्त बातें शास्त्रानुसार भावपरम्परामें होनेसें आत्मार्थियोंको ग्रहण करने योग्य है इन ऊपरकी बातोंका निर्णय आठोंही महाशयोंके उत्सूत्र भाषणके लेखोंकी समीक्षा सहित इस ग्रन्थको संपूर्ण पढ़नेवाले निष्पक्षपाती तत्वग्राही सज्जन पुरुषोंको स्वयं मालूम हो जावेगा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखिये सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजीने शास्त्र-विशारदकी पदवीको अङ्गीकार करी है तथापि पर्युषणा विचारके लेखकी आदिमेंही श्रीजैनशास्त्रोंके तात्पर्य्यको समझे बिना निर्मूलता समूलताका विचार छोड़ने सम्बन्धी और अपनी२ परम्परा पर आरूढ़ होकर धर्मकार्य कहने सम्बन्धी दो उत्सूत्रभाषण प्रथमही बालजीवोंको मिथ्यात्वमें फँसानेवाले लिख दिये और पूर्वापरका कुछ भी विचार विवेक बुद्धिसें हृदयमें नही किया इसलिये शास्त्रविशारद पदवीको भी लजाया–यह भी एक अलौकिक आश्चर्य्य-कारक विद्वत्ताका नमूना है, खैर—अब पर्युषणा वि-चारके आगेका लेखकी समीक्षा करके पाठक वर्गको दिखाता हूं—

पर्युषणा विचारका प्रथम पृष्ठके मध्यमें लिखा है कि– (पक्षपाती जन परस्पर निन्दादि अकृत्योंमें प्रवर्तमान होकर सत्यधर्मको अवहेलना करते हैं) इस लेखपर भी मेरेको इतनाही कहना है कि सातवें महाशयजीनें अपने कृत्य मुजब तथा अपने अन्तरगुण युक्तही ऊपरका लेख में सत्यही दर्शाया है क्योंकि खास आपही अपने पक्षकी कल्पित बातोंको स्थापन करनेके लिये श्रीजिनाज्ञा मुजब सत्यबातोंको निषेध करके सत्यबातोंकी तथा सत्यबातोंको माननेवालोंकी निन्दा करते हुवे कुयुक्तियोंसें बालजीवों को मिथ्यात्वके भ्रममें गेरनेके लियेही पर्युषणा विचारके लेखमें उत्सूत्र भाषणोंका संग्रह करके अविसंवादी श्रीजैन-शासनमें विसंवादका झगड़ा बढ़ानेसें श्रीजैनशासनरूपी सत्यधर्मकी अवहेलना करनेमें कुछ कम नही किया है सो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तो पर्युषणाविचारके लेखकी मेरी लिखी हुई सब समीक्षाको पढ़नेवाले सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और आगे फिरभी सातवें महाशयजीने पर्युषणा विचारके प्रथम पृष्ठकी पंक्ति १५वीं सें पंक्ति१८ वीं तक लिखा है कि (क्षयोपशमिक मतिज्ञानवान् और श्रुतज्ञानवान् पुरुष वे युक्ति प्रयुक्ति द्वारा अपने अपने मन्तव्यके स्थापन करने के लिये अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करते हुए मालूम पड़ते हैं) सातवें महाशयजीका यह लिखना उपयोगशून्यताके कारणसें है क्योंकि क्षयोपशमिक मतिज्ञानवान् और श्रुतज्ञानवान् पुरुष वे युक्तिप्रयुक्ति द्वारा अपने अपने मन्तव्य को स्थापन करनेके लिये अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करनेवाले सातवें महाशयजी ठहराते है तो क्या वर्त्तमान कालमें साधु और श्रावक श्रीजिनाज्ञाकी सत्यबातरूपी अपना मन्तव्य स्थापन करनेके लिये और श्रीजैनशासनके निन्दक ढूंढिये और तेरहा पन्थी लोगोंको तथा अन्यमतियोंको भी समझानेके लिये युक्ति प्रयुक्ति करनेवाले सबीही अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करनेवाले ठहर जावेंगे सो कदापि नहीं इसलिये सातवें महाशयजीका ऊपरका लिखना उत्सूत्र भाषणरूप भूलका भरा हुवा है क्योंकि जो जो कल्पित बातोंको स्थापन करनेके लिये जानते हुवे भी कुयुक्तियों करके बालजीवोंको मिथ्यात्वमें गेरेंगे सो अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करनेवाले ठहरेंगे किन्तु सब नही ठहर सकते हैं परन्तु यह बात तो सत्य है कि 'जैसा खावे अन्न—तैसा होवे मन्न' इस कहावतानुसार अपने पक्षकी कल्पित बातें जमानेके लिये खास आप अनेक बातोंमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करनेवाले हैं सो आगे लिखनेमें आवेगा ;—

और पर्युषणा विचारके प्रथम पृष्ठकी १९ वीं पंक्तिसें दूसरे पृष्ठकी पंक्ति दूसरी तक लिखाहै कि (सिद्धान्तका रहस्य ज्ञात होने पर भी एकांशको आगे करके असत्य पक्षका स्थापन और सत्य पक्षका निरादर करनेके लिये कटिबद्ध होकर प्रयत्न करते दिखाई पड़ते हैं) इस लेख पर भी मेरेको इतनाही कहना है कि सातवें महाशयजीनें अपने कृत्य मुजबही जैसा अपना वर्ताव था वैसा ही उपरके लेखमें लिख दिखया है इसका खुलासा मेरा आगेका लेख पढ़नेसें पाठकवर्ग स्वयं विचार कर लेवेंगे ;—

और पर्युषणा विचारके दूसरे पृष्ठकी पंक्ति ३सें ६ तक लिखाहैं कि (तत्र वार्षिकंपर्व भाद्रपदसितपञ्चम्यां कालिकसूरेरनन्तरं चतुर्थ्यामेवेति–अर्थात् भाद्रपद सुदी पञ्चमीका साम्वत्सरिक पर्व था पर युगप्रधान कालिकाचार्य्यके समयसे चतुर्थीमें वह पर्व होता है) इस लेख पर भी मेरेको इतना ही कहना है कि–सातवें महाशयजीनें उपरके लेखसें वर्त्तमान कालमें दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा स्थापन करनेके लिये परिश्रम किया सो भी उत्सूत्र भाषण है क्योंकि आषाढ़ चौमासीसें पचास दिने पर्युषणा करनेकी श्रीजैनशास्त्रोंमें मर्य्यादा पूर्वक अनेक जगह व्याख्या है इसलिये दो श्रावण होनेसें ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करना शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक है तथापि मासवृद्धि दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा स्थापन करते हैं सो मिथ्या हठवादसें उत्सूत्र भाषण करते हैं क्योंकि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासवृद्धिके अभावसें पचास दिने भाद्रपदमें पर्युषणा कही है नतु मासवृद्धि दो श्रावण होते भी।

और आगे फिर भी पर्युषणा विचारके दूसरे पृष्ठकी ७ वी पंक्तिसें १८॥ वीं पंक्ति तक लिखा है कि (वासाणं सवीसइराइ मासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं इत्यादि समवायाङ्गसूत्रके पाठका पूर्वभाग 'सवीसइ राइमासे वइक्कंते' पकड़कर उत्तर पाठकी क्या गति होगी इसका विचार न रख मूलमन्त्रको अलग छोड़कर दूसरे श्रावण के सुदीमें पर्युषणापर्वके पाँचकृत्य 'संवत्सरप्रतिक्रान्ति लुंञ्चनंचाष्टमं तपः। सर्वार्हद्भक्तिपूजा च सङ्घस्य क्षामणं मिथः' ॥ १ ॥ अर्थात् १ सांवत्सरिकप्रतिक्रमण, २ केशलुञ्चन, ३ अष्टमतपः, ४ सर्वमन्दिरमें चैत्यवन्दन पूजादि, ५ चतुर्विध सङ्घके साथ क्षामणा करते हैं और भक्तोंको कराते हैं)।

सातवें महाशयजीनें ऊपरके लेखमें दूसरे श्रावण शुदीमें पांचकृत्यों सहित पर्युषणा करनेवालोंको श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठका उत्तर भागको छोड़ करके पूर्वभागको पकड़नेवाले ठहराये है सो अज्ञातपनेसें मिथ्या है क्योंकि श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठ मासवृद्धिके अभावसें श्रीजैनपञ्चाङ्गानुसार चार मासके १२० दिनका वर्षाकालमें चन्द्रसंवत्सरसम्बन्धी प्राचीनकालाश्रयी है और वर्त्तमानकालमें श्रीकल्पसूत्रके मूल पाठानुसार तथा उन्हीकी अनेक व्याख्यायोंके अनुसार आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेमें आती हैं इसलिये श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठका उत्तरभागको छोड़कर पूर्वभागको पकड़ने सम्बन्धी सातवें महाशयजीका लिखना मिथ्या है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और (उत्तरपाठकी क्या गति होगी) सातवें महाशयजीका यह लिखना भी विद्वत्ताके अजीर्णताका है क्योंकि श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठ चार मासके वर्षाकाल सम्बन्धी होनेसें चार मासके वर्षाकालमें उसी मुजब वर्त्ताव होता है परन्तु सातवें महाशयजी श्रीगणधर महाराज श्रीसुधर्मस्वामीजी कृत श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठका तथा श्रीअभयदेवसूरिजी कृत तद्वृत्तिके पाठका अभिप्रायः जाने बिना सूत्रकार तथा वृत्तिकार महाराजके विरुद्धार्थमें दो श्रावणादि होनेसें पाँच मासके १५० दिनका वर्षाकालमें उसी पाठको आगे करके बालजीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें गेरते हुवे उत्सूत्र भाषणरूप कदाग्रह जमाते हैं सो क्या गति होगी सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने ।

देखिये वड़ेही आश्चर्य्यकी बात है कि-अपना कदाग्रहकी उत्सूत्र भाषणरूप कल्पित बातको जमानेके लिये (उत्तरपाठकी क्या गति होगी) ऐसा तुच्छ शब्द लिखके श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रके पाठ पर आक्षेप करते कुछ लज्जा भी नही पाते हैं यह भी एक कलयुगी विद्वत्ताका नमूना है ।

और (मूलमन्त्रको अलग छोड़कर) यह लिखना भी 'चोर डंडे-कोटवालको' इस न्यायानुसार खास सातवें महाशयजी आप अनेक बातोंमें मूलमन्त्ररूप अनेक शास्त्रोंके मूलपाठोंको अलग छोड़ते हैं फिर दूसरोंको मिथ्या दूषण लगाते हैं सो उचित नहीं है क्योंकि दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेवाले श्रीकल्पसूत्रका मूलमन्त्ररूपी पाठके अनुसारही करते हैं और श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठ चार मासके वर्षाकाल-सम्बन्धी होनेसें उसी मुजबही वर्त्तते हैं इसलिये दूसरे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रावणमें पर्युषणा करने वालोंको मूलमन्त्रको अलग छोड़ने सम्बन्धी सातवें महाशयजीका लिखना मिथ्या है और सातवें महाशयजी अनेक बातोंमें मूलमन्त्ररूपी अनेक शास्त्रोंके मूलपाठोंको जानते हुवे भी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वके अधिकारी बन करके अलग छोड़ते हैं सोही दिखाता हूं ;——

१ प्रथम——हर वर्षे गांम गांममें वंचाता हुवा सुप्रसिद्ध श्रीकल्पसूत्रमें पर्युषणा सम्बन्धी मूलमन्त्ररूपी विस्तारसें पाठ है उसीके अनुसार इस वर्तमान कालमें श्रीजिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी प्राणियोंको पर्युषणा करनी चाहिये तथापि सातवें महाशयजी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वको सेवन करते हुवे (श्रीकल्पसूत्रका मूलमन्त्ररूपी पाठ इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ४१५ में छप गया है) उसीको जानते हुवे भी अलग छोड़ते हैं और श्रीकल्पसूत्रके पाठानुसार दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालोंको झूठे ठहराकर मिथ्या दूषण लगाते हुवे निषेध करते हैं इसलिये शास्त्रानुसार वर्त्तने वालोंकी वृथा निन्दा करके श्रीजिनाज्ञारूपी सत्यधर्मकी अवहेलना। (तिरस्कार) करने वाले काशीनिवासी सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजी है।

२ दूसरा—श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने अनन्त काल हुवे अधिकमासको गिनतीमें खुलासा पूर्वक प्रमाण किया है तथा आगे करेंगे और सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, वृत्ति, प्रकरणादि अनेक शास्त्रोंमें अधिक मासको गिनतीमें लेने सम्बन्धी विस्तार पूर्वक पाठ है सो कितनेही तो इसीही ग्रन्थके पृष्ठ २७ सें ६५ तक छप गये हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और भी अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण करने सम्बन्धी अनेक शास्त्रोंके प्रमाण आगे भी लिखनेमें आवेंगे उसीके अनुसार और कालानुसार युक्तिपूर्वक श्रीजिनाज्ञाके आराधन करने वाले आत्मार्थियोंको अधिकमासकी गिनती निश्चय करके प्रमाण करनी चाहिये तथापि सातवें महाशयजी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वको सेवन करते हुवे श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा उत्थापन करके पञ्चाङ्गीके मूलमन्त्ररूपी प्रत्यक्ष पाठोंको जानते हुवे भी अलग छोड़ते हैं और श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार पञ्चाङ्गीके प्रत्यक्ष प्रमाणों सहित कालानुसार और सत्य युक्तिपूर्वक अधिकमासकी गिनती प्रमाण करते हैं जिन्होंको झूठे ठहराकर मिथ्या दूषण लगा करके निषेध करते हैं इसलिये शास्त्रानुसार अधिक मासको प्रमाण करने वालोंकी वृथाही निन्दा करके श्रीजिनाज्ञारूपी सत्यधर्मकी अवहेलना करनेवाले भी सातवें महाशयजी है ।

३ तीसरा—श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने (श्री आचाराङ्गजी सूत्रकी चूलिकाके मूलपाठमें तथा श्रीस्थानाङ्गजी सूत्रके पांचवें ठाणेके मूलपाठमें और श्रीकल्पसूत्रके मूल पाठ वगैरह) पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंके मूलमन्त्ररूपी पाठोंमें चरम तीर्थङ्कर श्रीवीरप्रभुके छ कल्याणकों को खुलासापूर्वक कहे हैं (इसका विशेष निर्णय शास्त्रोंके पाठों सहित आगे लिखनेमें आवेगा) इसलिये श्रीजिनाज्ञाके आराधक पञ्चाङ्गीके शास्त्रोंकी श्रद्धावाले आत्मार्थी पुरुषोंको प्रमाण करने योग्य है तथापि सातवें महाशयजी अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करते हुवे ऊपरोक्त शास्त्रोंके पाठोंकी मूलमन्त्ररूपी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जानते हुवे भी अलग छोड़ते हैं और पञ्चाङ्गीके ऊपरोक्तादि अनेक शास्त्रोंके अनुसार श्रीवीरप्रभुके छ कल्याणकों को मानने वालोंको झूठे ठहराकर मिथ्या दूषण लगा करके निषेध करते हैं इसलिये भी शास्त्रानुसार श्रीवीरप्रभुके छ कल्याणकोंको माननेवालोंकी वृथाही निन्दा करके श्री जिनाज्ञारूपी सत्यधर्मकी अवहेलना करने वाले भी सातवें महाशयजी है ।

४ चौथा—श्रीआवश्यकजी सूत्रकी चूर्णि और बृहद्वृत्ति वगैरह पञ्चांगीके अनेक शास्त्रोंमें सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये पीछे इरियावहीका प्रतिक्रमण खुलासापूर्वक कहा है सोही श्रीजिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी पुरुषोंको प्रमाण करने योग्य है तथापि सातवें महाशयजी अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करते हुवे ऊपरोक्त शास्त्रोंके पाठोंको मूलमन्त्ररूपी जानते हुवे भी अलग छोड़ करके उसीके विरुद्ध बालजीवोंको कराते हैं—देखिये षड़ावश्यक करनेके लिये मूलमन्त्ररूपी श्रीआवश्यकजी है उसीकी चूर्णि और बृहद्वृत्तिके अनुसार उभयकाल (सांम और सवेर दोनु वख्त) षड़ावश्यकरूपी प्रतिक्रमण करनेका मंजूर करते हैं तथापि उसी शास्त्रोंमें सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंतेका उच्चारण किये पीछे इरियावही करना कहा है उसीको मंजूर नही करते हैं जिन्होंको मूलमन्त्ररूपी श्रीआवश्यकादि पञ्चाङ्गीके शास्त्रोंकी श्रद्धावाले श्रीजिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी कैसे कहे जावे और उन्होंके षड़ाश्यवक भी कैसे सार्थक होवेंगे सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने और विशेष आश्चर्यकी बात तो यह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है कि–खास सातवें महाशयजीकेही परमपूज्य श्रीतपगच्छके ही प्रभाविक श्रीदेवेन्द्रसूरिजीने श्रीश्राद्धदिनकृत्य सूत्रकी वृत्तिमें, श्रीकुलमण्डनसूरिजीने श्रीविचारामृतसंग्रहनामा ग्रन्थमें, श्रीरत्नशेखरसूरिजीने श्रीवन्दीता सूत्रकी वृत्तिमें, और श्रीहीरविजय सूरिजीके सन्तानीये श्रीमानविजयजीने तथा श्रीयशोविजयजीने श्रीधर्मसंग्रहकी वृत्तिमें खुलासा पूर्वक सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंते पीछे इरियावही करना कहा है इन महाराजोंको सातवें महाशयजी शुद्ध-परूपक आत्मार्थी श्रीजिनाज्ञाके आराधक बुद्धि निधान कहते हैं जिसमें भी विशेष करके श्रीयशोविजयजीके नाम सें श्रीकाशी (बनारसी) नगरीमें पाठशाला स्थापन करी है तथापि उन महाराजोंके कहने मुजब सामायिकाधि-कारे प्रथम करेमिभंतेको प्रमाण नही करते हैं फिर उन महाराजोंको पूज्य भी कहते हैं यह तो प्रत्यक्ष उन महा-राजोंके कहने पर तथा पञ्चाङ्गीके शास्त्रों पर श्रद्धा रहितका नमूना है। यदि सातवें महाशयजी अपने गच्छके प्रभाविक पुरुषोंके कहने मुजब तथा श्रीयशोविजयजीके नामसें पाठ-शाला स्थापन करी है उन महाराजके कहने मुजब वर्त्तने-वाले, तथा उन महाराजोंके पूर्णभक्त, और पञ्चाङ्गीके शास्त्रों पर श्रद्धा रखने वाले होवेंगे, तब तो सामायिकाधिकारे प्रथम करे-मिभंतेको प्रमाण करके अपने भक्तोंसें जरूरही करावेंगे तो सातवें महाशयजीको आत्मार्थी समझनेमें आवेगा। सामा-यिकाधिकारे प्रथम करेमिभंते २१ शास्त्रोंमें लिखी है परन्तु प्रथम इरियावही किसी भी शास्त्रमें नही लिखी है इसका खुलासा पूर्वक निर्णय इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ३१० सें ३२९ तक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उपरमेंही छपगया है उसीको पढ़ करके भी सातवें महाशय जी अपने कदाग्रहके वस होकरके शास्त्रानुसार सत्यबात को प्रमाण नही करेंगे तो अपने गच्छके प्रभाविक पुरुषोंके वाक्य पर तथा श्रीयशोविजयजीके नामसे पाठशाला स्थापन करी है उन महाराजके वाक्य पर और पञ्चाङ्गीके शास्त्रोंके पाठों पर श्रद्धा रखनेवाले आत्मार्थी है ऐसा कोई भी विवेकी तत्त्वज्ञ पाठकवर्ग नही मान सकेगा जिसके नामसें पाठशाला स्थापन करी है उसी महाराजके वाक्य मुजब प्रमाण नही करना यह तो विशेष लज्जाका कारणहै

इत्यादि अनेक बातोंमें सातवें महाशयजी अभिनिवेशिक मिथ्यात्व सेवन करते हुवे मूलमन्त्ररूपी पञ्चाङ्गीके शास्त्रोंके पाठोंको जानते हुवे भी अलग छोड़ करके शास्त्रोंके प्रमाण बिना अपनी मतिकल्पनासें कुयुक्तियोंका सहारा ले करके उत्सूत्र भाषणमें वर्तते हैं और पञ्चाङ्गीके प्रमाण सहित शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक ऊपरोक्तादि अनेक बातोंको प्रमाण करने वालोंको झूठे ठहरा करके मिथ्या दूषण लगा कर ऊपरोक्त बातोंको निषेध करते हैं इसलिये श्रीजिनेश्वरभगवान्‌की आज्ञानुसार वर्त्तने वालोंकी वृथा निन्दा करके शास्त्रानुसार ऊपरोक्तादि बातोंके विरुद्ध अविसंवादी श्रीजैनशासनमें विसंवादरूपी मिथ्यात्वका झगड़ा बढ़ानेसें अविसंवादी श्रीजैनशासनरूपी सत्यधर्मकी अवहेलना करने वाले भी सातवें महाशयजीही है। और पञ्चाङ्गीके शास्त्रोंके पाठोंकों प्रत्यक्ष देखते हुवे भी प्रमाण नही करते है और अपना कदाग्रहकी कल्पित कुयुक्तियोंको आगे करके दृष्टिरागी झूठे पक्षग्राही बालजीवोंकों मिथ्यात्वमें गेरते हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसलिये सत्यपक्षका निरादर करके असत्य पक्षका स्थापन करनेवाले भी सातवें महाशयजी है इस बातको निष्पक्ष पाती आत्मार्थी विवेकी पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठानुसार तथा उन्हीकी अनेक व्याख्यानुसार आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेवालों पर द्वेष बुद्धि करके आक्षेपरूप सातवें महाशयजीने पर्युषणा विचारके दूसरे पृष्ठकी १८॥ वीं पंक्ति सें २० वीं पंक्ति तक लिखा है कि (वस्तुतः तो भगवान्की आज्ञाके आराधक भव्यजीवों पर कल्पित दोषोंका आरोप करके अपने भक्तोंको भ्रमजालमें फँसाकर संसार बढ़ाते हैं)

सातवें महाशयजीका इस लेखको देखकर मेरेको बड़ाही आश्चर्य्य सहित खेद उत्पन्न होता है कि जैसे ढूंढिये तेरहा पन्थी लोग अपने कदाग्रहकी कल्पित बातोंको स्थापन करनेके लिये श्रीजिनेश्वर भगवान्की आज्ञानुसार वर्त्तने वाले पुरुषोंकी झूठी निन्दा करके संसार वृद्धिका कारण करते हैं तैसेही सातवें महाशयजी भी इतने विद्वान् कहलाते हुवे भी अपने कदाग्रहकी कल्पित बातको स्थापन करनेके लिये श्रीजिनेश्वर भगवान्की आज्ञानुसार वर्तनेवाले पुरुषोंकी जूठी निन्दा करके संसार वृद्धिका कारण करते हैं क्योंकि—श्रीतीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, वृत्ति और प्रकरणादि अनेक शास्त्रमें प्रगटपने आषाढ़ चौमासीसें दिनोंकी गिनतीके हिसाबसें ५० दिने निश्चय करके श्रीपर्युषणापर्वका आराधन करना कहा है उसीके अनुसार श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुजब तथा उन्हींकी अनेक व्याख्यायोंके पाठ मुजब वर्त्त-मान कालमें दो श्रावण होनेसें दूसरे श्रावणमें आषाढ़ चौमासीसें ५० दिने श्रीपर्युषणापर्वका आराधन आत्मार्थी प्राणी करते हैं और दूसरे भव्यजीवोंकों कराते हैं जिन्होंको तो मिथ्या दूषण लगा करके संसार बढ़ाने वाले ठहराना और आप श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा विरुद्ध तथा पञ्चाङ्गीके प्रत्यक्ष प्रमाणोंको छोड़ करके अपनी मति-कल्पनासें यावत् ८० दिने पर्युषणा करते हैं और बाल-जीवोंकों भी कुयुक्तियोंसें भ्रमा करके कराते हैं इसलिये श्रीजिनाज्ञाकी सत्यबातका निषेध करके भी शुद्ध परूपक बनते हुवे संसार वृद्धिका भय नही करना सो मिथ्यात्वीके सिवाय और कौन होगा ।

और आगे फिर भी सातवें महाशयजीनें पर्युषणा विचारके दूसरे पृष्ठके अन्तें २१।२२ वीं पंक्तिमें लिखा है कि (उन जीवों पर भावदया लाकर सिद्धान्तानुसार परोप-कार दृष्टिसें पर्युषणा विचार लिखा जाता है) इस लेखसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालों पर और करानेवालों पर भावदया लाकर सिद्धान्तानुसार परोपकार दृष्टिसें पर्युषणा विचार लिखनेका सातवें महाशयजी ठहराते हैं सो निः-केवल बालजीवोंको कदाग्रहमें फँसाकरके मिथ्यात्ववढ़ानेके लिये संसार वृद्धिके निमित्तभूत उत्सूत्र भाषण करते हैं क्योंकि प्रथमतो दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वाले पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रानुसार करते हैं जिसके सम्बन्धमें इसीही ग्रन्थकी आदिसें २१ पृष्ठ तक अनेक शास्त्रोंके प्रमाण-पाठार्थ सहित छप गये हैं इसलिये शास्त्रानुसार वर्तने वालोंको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

झूठे ठहरा करके भावदया दिखाना सो तो प्रत्यक्ष महा मिथ्या है। और भावदयाका स्वरूप जाने बिना सातवें महाशयजी भावदया वाले बनते हैं सो भी तोतेकी तरह तात्पर्य्य समझे बिना रामराम पुकारने जैसा है क्योंकि सातवें महाशयजी भावदयाका स्वरूपही नही जानते हैं इसलिये अबमें पाठकवर्गकों भावदयाका स्वरूप संक्षिप्तसें दिखाता हूं—

श्रीजैनशास्त्रोंमें भावदया उसीको कहते हैं कि-प्रथमतो चतुर्गतिरूप संसारमें अनन्तकालसें नरकादिमें परिभ्रमणकी वेदना वगैरह स्वरूपको जान करके संसारकी निवृत्तिके लिये श्रीजिनेन्द्र भगवानोंका कहा हुवा आत्महितकारी धर्मको श्रद्धापूर्वक अङ्गीकार करके श्रीजिनेन्द्र भगवानोंके कहने मुजबही धर्म्मकी परूपना करे और मोक्षकी इच्छासें उसी मुजबही प्रवर्ते तथा दूसरोंको प्रवर्त्तावे और सब संसारी प्राणियोंको भी ऐसेही होनेकी इच्छा करे सोही उत्तम पुरुष भावदया कर सकता है, परन्तु सातवें महाशयजी तो उत्सूत्र भाषणोंसें संसार वृद्धिका भय नहीं करने वाले दिखते हैं क्योंकि श्रीजिनेन्द्र भगवानोंने तो अधिक मासको गिनतीमें लेनेका कहा है तथापि सातवें महाशयजी अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण करनेकी श्रद्धा रहित होनेसें उत्सूत्रभाषणरूप अधिक मासको गिनतीमें लेनेका निषेध करते हैं इसलिये सातवें महाशयजी काशीनिवासी श्रीधर्मविजयजी श्रीजिनेन्द्र भगवानोंके कहने मुजब वर्त्तने वाले नहीं है किन्तु श्रीजिनेन्द्र भगवानोंके विरुद्ध अपनी मतिकल्पनासें कुयुक्तियों करके बालजीवोंको मिथ्यात्वके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भ्रममें फँसाने वाले होनेसें उन्होंमें भावदयाका तो सम्भवही नही हो सकता है किन्तु संसार वृद्धिकी हेतुभूत भावहिंसाका कारण तो प्रत्यक्ष दिखता है ।

और सातवें महाशयजीने सिद्धान्तानुसार परोपकार दृष्टिसें पर्युषणा विचार नहीं लिखा है किन्तु पञ्चाङ्गीके सिद्धान्तोंके विरुद्ध बालजीवोंको श्रीजिनाज्ञाकी शुद्ध श्रद्धारूप सम्यक्त्वरत्नसें भ्रष्ट करनेको उत्सूत्र भाषणोंका संग्रह करके अपने कदाग्रहकी कल्पित बात जमानेके आग्रहसें पर्युषणा विचारके लेखमें पर्युषणा सम्बन्धी श्रीजैन-शास्त्रोंके तात्पर्य्यकों समझे बिना अज्ञताके कारणसें कुतर्कोंकाही प्रकाश किया है सो तो मेरा सब लेख पढ़नेसें निष्पक्षपाती सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और आगे फिर भी सातवें महाशयजीनें पर्युषणा विचारके तीसरे पृष्ठकी आदिसे ७ वीं पंक्ति तक लिखा है कि (उत्तम रीतिसें उपदेश करते हुए यदि किसीको राग द्वेषकी प्रणति हो तो लेखक दोषका भागी नही है क्योंकि उत्तम रीतिसें दवा करने पर भी यदि रोगीके रोगकी शान्ति नहो और मृत्यु हो जाय तो वैद्यके सिर हत्याका पाप नहीं है परिणाममें बन्ध, क्रियासें कर्म, उपयोगमें धर्म, इस न्यायानुसार लेखकका आशय शुभ है तो फल शुभ है)

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि हे सज्जन पुरुषों सातवें महाशयजीकी बालजीवों को मिथ्यात्वमें फँसाने वाली मायावृत्तिकी चातुराईका नमूना तो देखो—आप अपने कदाग्रहके पक्षपातसें श्रीजैन-शासनकी उन्नतिके कार्य्योंमें विघ्नकारक संपको नष्ट करके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृथाही आपसमें झगड़ा बढ़ानेके लिये 'पर्युषणा विचारनामा' पुस्तक प्रगट कराई जिसमें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालों पर खूबही आक्षेपरूप अनुचित शब्द लिख करके भी आप निर्दूषण बनना चाहते हैं सो कदापि नहीं हो सकते है क्योंकि पर्युषणा विचारके लेखमें सत्यबातको मानने वालोंकी झूठी निन्दा करके वृथाही अपनी मतिकल्पनासें मिथ्या दूषण लगाये है और उत्सूत्र भाषणोंसें बालजीवों को भी मिथ्यात्वमें फँसाये हैं इसलिये ऊपरकी इन बातों के दोषाधिकारी तो सातवें महाशयजी प्रत्यक्षही दिखते हैं यदि सातवें महाशयजीको ऊपरकी बातोंके दूषणोंसे संसार वृद्धिका भय होवे और आत्मकल्याणकी इच्छा होवे तो अबसें भी झगड़ेके कार्य्योंमें न फँसके इस ग्रन्थको संपूर्ण पढ़ करके सत्यबातको ग्रहण करें और पर्युषणा विचारके लेखकी अपनी भूलोंकी क्षमापूर्वक मिथ्या दुष्कृत सहित आलोचना लेवें तो सातवें महाशयजीको शुभ इरादेसें उत्तम रीतिका उपदेश करनेवाले तथा उत्सूत्र भाषणका भय रखनेवाले समझनेमें आवेंगे इतने पर भी सातवें महाशयजी पर्युषणा विचारके लेखोंको अपने दिलमें सत्य समझते होवें तो श्रीकाशीमें मध्यस्थ विद्वानोंके समक्ष (पर्युषणा विचारके लेखोंको) शास्त्रोंके प्रमाण सहित युक्तिपूर्वक सत्य करके दिखावे अन्यथा कदाग्रहसें सत्य-बातोंको छोड़ करके कल्पित बातोंको स्थापन करनेमें तो संसार वृद्धिके सिवाय और क्या लाभ होगा सो सज्जन पुरुष स्वयं विचार लेवें ;—

और उत्तम रीतिसें दवा करनेके भरोसें विश्वासघात

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करके विष मिश्रित दवा देकर रोगीको मृत्युके सरण प्राप्त करने वाला वैद्य नाम धारक पुरुष महापापी होता है तैसेही कर्मरूपी रोगसें पीड़ित भव्यजीवोंको उत्तम रीतिका उपदेश देनेके भरोसें विश्वासघातसे उत्सूत्र भाषणरूप कल्पित कुयुक्तियोंका विष मिश्रित उपदेश करके भव्य-जीवोंको श्रीजिनाज्ञारूप सम्यक्त्वरत्न जीवतव्यसें भ्रष्ट करके मिथ्यात्वरूप मरणके सरण प्राप्त करनेवाला वेष-धारी साधु नाम धारक पुरुष महापापी होता है तैसेही सातवेंमहाशयजीने भी पर्युषणा विचारके लेखमें भव्यजीवोंको उत्तम रीतिका उपदेश करनेके बहाने उत्सूत्र भाषणरूप कुतर्कोंका विष मिश्रित उपदेश करके भव्यजीवोंको मिथ्यात्वरूप मृत्युके सरण प्राप्त किये हैं इसलिये भव्य जीवोंको मिथ्यात्वरूप मृत्युके सरण प्राप्त कर-नेके दोषाधिकारी सातवें महाशयजी है यदि सातवें महा-शयजीको उपरोक्त दूषणके फल विपाकका भय होवे तो अपने कृत्यकी आलोचना लेवेंगे ;—

और अपने कदाग्रहकी कल्पित बातको जमानेके लिये उत्सूत्र भाषणकी और कुयुक्तियोंकी बातें लिखनेवालेका परिणाम भी अच्छा नही होता है तथा क्रिया भी अच्छी नहीं होती है और उपयोग भी अच्छा नही होता है इसलिये पर्युषणा विचारके लेखक अपनेको अच्छा इस फलकी चाहना करते हैंसो कदापि नही हो सकेगा किन्तु पर्युषणा विचारके लेखमें शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणोंकी तथा कुयुक्तियोंकी और शास्त्रानुसार वर्त्तने वालोंकी झूठी निन्दा करके मिथ्या दूषण लगानेकी कल्पना भरी होनेसें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संसारवृद्धिके फल तो मिलनेका दिखता है इस बातको श्रीजैनशास्त्रोंके तत्त्वज्ञ पुरुष अच्छी तरहसे विचार लेवें ;--

और भी सातवें महाशयजीने पर्युषणा विचारके तीसरे पृष्ठकी ८।९।१० पंक्तियोंमें लिखा है कि (अधिक मासको लेखामें गिनकर पर्युषणा पर्व करनेवाले महानुभावोंको नीचे लिखे हुए दोषों पर पक्षपात रहित विचार करनेकी सूचना दी जाती है)।

इस लेखको देखकर मेरेको बड़ेही खेदके साथ लिखना पड़ता है कि सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजीने श्रीजैन-शास्त्रोंके तात्पर्य्यको बिना समझे ऊपरके लेखमें इन्होंने श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंकी और खास अपनेही गच्छके पूर्वाचार्योंकी आशातनाका कारण रूप संसार वृद्धिके हेतुभूत खूबही अज्ञतासें अनुचित लिखा है क्योंकि अनन्ते काल हुवे श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्य्योंने अधिकमासको लेखामें गिन करही पर्युषणा करते आये हैं तथा वर्त्तमान इस पञ्चम कालमें भी श्रीजिनाज्ञाके आराधक सबीही आत्मार्थी जैनाचा-र्य्योंने अधिक मासको लेखामें गिन करही पर्युषणा करी है और आगे भी श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराज जो जो होवेंगे सो सबीही अधिक मासको गिनतीमें ले करही पर्युषणा करेंगे और अनेक शास्त्रोंमें अधिकमासको गिनतीमें लेकरही पर्युषणा करनी लिखी है इसलिये अधिक मासको गिनतीमें लेकरके जो पर्युषणा करते हैं सोही श्रीजिनाज्ञाके आराधक है और अधिक मासको गिनतीमें छोड़ करके पर्युषणा करते हैं सोही श्रीजिनाज्ञाके विराधक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्सूत्र भाषण करने वाले हैं तैसेही सातवें महाशय जी आप अधिक मासको गिनतीमें नही लेते हुवे अधिक मासको गिनतीमें ले करके पर्युषणा करने वालोंको मिथ्या दूषण लगाके उत्सूत्रभाषणसें ऊपरोक्त महाराजोंकी आशातना करके संसार वृद्धिका कुछ भी भय नही करते हैं। हा अति खेदः ?

और आगे फिर भी सातवें महाशयजीने पर्युषणा विचारके तीसरे पृष्ठकी ११ वीं पंक्तिसें १९ वीं पंक्ति तक लिखा है (प्रथम दोष—आषाढ़ चौमासी बाद पचास दिनके भीतर पर्युषणापर्व करे इस नियमकी रक्षा करते हुए तत्तुल्य दूसरे नियमका सर्वथा भङ्ग होता है क्योंकि पचासवें दिवस संवत्सरी और उसके पीछे सत्तरवें दिन चौमासी प्रतिक्रमण करके पीछे मुनिराजोंको विहार करना चाहिये यदि दूसरे श्रावणमें सांवत्सरिक कृत्य करोगे तो सौ दिन बाकी रहेंगे तब सत्तर दिनका नियम कैसे पालन किया जायगा इसका विचार करो)

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि ऊपरके लेखमें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालों को सातवें महाशयजीने प्रथम दोष लगाया सो निःकेवल अज्ञताके कारणसें मिथ्या लिखके उत्सूत्र भाषण किया है क्योंकि श्रीनिशीथभाष्यमें १, तथा चूर्णिमें २, श्रीबृहत्कल्पभाष्यमें ३, तथा चूर्णिमें ४, और वृत्तिमें ५, श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें ६, तथा वृत्तिमें ७, श्रीस्थानाङ्गजीकी वृत्तिमें ८, श्रीकल्पसूत्रकी निर्युक्तिकी वृत्तिमें ९, श्रीकल्पसूत्रकी पाँच व्याख्यायोंमें १४ श्रीपर्युषणा कल्पचूर्णिमें १५

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीगच्छाचारपयन्नाकी वृत्तिमें १६ इत्यादि शास्त्रोंमें मासवृद्धिके अभावसें चन्द्रसम्वत्सरमें चारमासके १२० दिन का वर्षाकालमें ५० दिने पर्युषणा करनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक ७० दिन रहते है जिसके सम्बन्धमें इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ९४ तथा ९९ और १२० । १२१ वगैरहमें कितनीही जगह पाठ भी छप गये हैं और मासवृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित संवत्सरमें जैनपञ्चाङ्गानुसार आषाढ़ चौमासीसें बीश दिने पर्युषणा करनेमे आती थी तब भी पर्युषणा के पिछाड़ी कार्तिक तक १०० दिन रहते थे इसका भी विशेष खुलासा इसीही ग्रन्थके पृष्ठ १०७ सें १२३ तक छप गया है और वर्तमान कालमें जैनपञ्चाङ्गके अभावसें लौकिक पञ्चाङ्गमें हरेक मासोंकी वृद्धि हो तो भी ५० दिनेही पर्युषणा करनेकी मर्य्यादा है सो भी इसीही ग्रन्थकी आदिसें पृष्ठ २७ तक और छठे महाशयजी श्रीवल्लभविजयजीके लेख की समीक्षामें पृष्ठ २८६ सें २९९ तक छप गया है इसलिये वर्तमानकालमें दो श्रावणादि होनेसें पाँच मासके १५० दिनका वर्षाकालमें ५० दिने पर्युषणा करनेसें पर्युषणाके पिछाड़ी कार्त्तिक तक १०० दिन रहते हैं सो भी शास्त्रानुसार और युक्तिपूर्वक होनेसें कोई भी दूषण नही है इसका भी विशेष निर्णय इसीही ग्रन्थके पृष्ठ १२० सें १२९ तक और पृष्ठ १७७ के अन्तसें १८५ तक छप गया है इसलिये दो श्रावण होनेसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालोंको पर्युषणाके पिछाड़ी ७० दिन रखने सम्बन्धी और १०० दिन होनेसें दूषण लगाने सम्बन्धी सातवें महाशयजी लिखना अज्ञात सूचक और उत्सूत्र भाषण है। सो पाठकवर्ग विचारलेवेंगे,–

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और आगे फिर भी सातवें महाशयजीनें पर्युषणा विचारके तीसरे पृष्ठकी २७वीं पंक्तिसें चौथे पृष्ठकी दूसरी पंक्ति तक लिखा है कि (दूसरा दोष—भाद्रसुदीमें पर्युषणा पर्व कहा हुवा है तत्सम्बन्धी पाठ आगे कहेंगे अधिक-मास मानने वाले श्रावण सुदीमें पर्युषणा करते हैं शास्त्रानु-कूल न होनेसें आज्ञाभङ्ग दोष है) इस लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि हे सज्जनपुरुषों मास वृद्धिके अभावसें चन्द्रसंवत्सरमें भाद्रपदमें पर्युषणा होनेका दोनुं चूर्णिकार महाराजोंने कहा है तथापि सातवें महा-शयजीनें वर्त्तमानकालमें मासवृद्धि दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा स्थापन करनेके लिये आगे पीछेके सम्बन्ध वाले पाठोंको छोड़ करके दोनुं चूर्णिकार महाराजोंके विरुद्ध थोड़ासा अधूरा पाठ मायावृत्तिसें आगे लिखा है जिसकी समीक्षा मैंभी आगेही करूंगा । परन्तु इस जगह तो दो श्रावण होनेसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करने वालों को सातवें महाशयजीने शास्त्र विरुद्ध ठहरा करके आज्ञा भङ्गका दूसरा दूषण लगाया है सो शास्त्रोंके प्रमाणपूर्वक वर्त्तने वालोंको झूठे ठहरा करके मिथ्यादूषण लगाया है तथा उत्सूत्र भाषणसें सत्य बातका निषेध करके मिथ्यात्व बढ़ाया है और अपने विद्वत्ताकी हासी भी कराई है क्योंकि अधिकमासको गिनतीमें लेनेका श्रीजैनशास्त्रानुसार तथा कालानुसार लौकिक पञ्चाङ्ग मुजब और युक्तिपूर्वक निश्चय करके स्वयं सिद्ध है इसलिये अधिक मासकी गिनती निषेध नही हो सकती है इसका विशेष विस्तार छहों महाशयोंके लेखोंकी समीक्षामें अच्छी तरहसें छप गया है

४६

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और आषाढ़ चौमासीसें पचास दिने अवश्यही पर्युषणा पर्व करनेका सर्वत्र शास्त्रोंमें कहा है जिसका भी विशेष विस्तार इसीही ग्रन्थकी आदिसें लेकर ऊपर तकमें अनेक जगह छप गया है इसलिये वर्तमान कालमें ५० दिनके हिसाबसें दूसरे श्रावणमें पर्युषणापर्व करना सो शास्त्रानुसार और युक्तिपूर्वक सत्य होनेसें उसी मुजब वर्तनेवालोंको जो सातवें महाशयजीने दूषण लगाया हैं सो निःकेवल संसार वृद्धिके हेतुभूत उत्सूत्र भाषण किया हैं इस बातको निष्पक्षपाती पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे। और देखिये बड़ेही आश्चर्यकी बात है कि सातवें महाशयजी श्रीधर्मविजयजी इतने विद्वान् कहलाते हैं और हरवर्षे गांव गांवमें श्रीकल्पसूत्रका मूल पाठको तथा उन्हींकी वृत्तिको व्याख्यानमें वाँचते हैं उसी में ५० दिने पर्युषणा करनेका लिखा है उसी मुजबही दूसरे श्रावणमें ५० दिने पर्युषणा करते हैं जिन्होंको अपनी मति कल्पनासें आज्ञाभङ्गका दूषण लगाना सो विवेकशून्य कदाग्रही अभिनिवेशिक मिथ्यात्वी और अपनी विद्वत्ताकी हासी करानेवालेके सिवाय दूसरा कौन होगा सो भी पाठकवर्ग विचार लेवेंगे ;—

और आगे फिर भी सातवें महाशयजीनें पर्युषणा विचारके चौथे पृष्ठकी तीसरी पंक्तिसें चौदह वीं पंक्ति तक लिखा है कि (अधिक मासके मानने वालोंको चौमासी क्षमापनाके समय 'पंचण्हं मासाणं दसण्हं पक्खाणं पञ्चाशु-त्तरसयराइंदिआणमित्यादि' और सांवत्सरिक क्षमापनाके समय 'तेरसण्हं मासाणं छव्वीसण्हं पक्खाणं' पाठकी कल्पना करनी पड़ेगी। यदि ऐसा करोगे तो कल्पित आचार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होनेसे फलसे वञ्चित रहोगे, क्योंकि शास्त्रमें तो 'चउण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाणं' इत्यादि तथा 'बारसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं' इत्यादि पाठ है इसके अतिरिक्त पाठ नहीं है उसके रहने पर यदि नई कल्पना करोगे तो कल्पना-कुशल, आज्ञाका पालन करनेवाला है या नहीं, यह पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं)

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि हे सज्जन पुरुषों सातवें महाशयजीके ऊपरका लेखको देखकर मेरेको बड़ाही आश्चर्य्य उत्पन्न होता है कि सातवें महाशयजीके विद्वत्ताकी विवेक बुद्धि (ऊपरका लेख लिखते समय) किस जगह चली गई होगी सो मासवृद्धिके अभावकी बातको मासवृद्धि होतेभी बाल जीवोंको लिख दिखाकरके अपनी बात जमानेके लिये दूसरोंको मिथ्या दूषण लगाते हुवे उत्सूत्र भाषणसें संसार वृद्धिका भय हृदयमें क्यों नहीं लाते हैं क्योंकि जिस जिस शास्त्रमें सांवत्सरिक क्षामणाधिकारे बारह मास, चौबीश पक्ष लिखे हैं सो तो निश्चय करके मासवृद्धिके अभावसे चन्द्र संवत्सर संबंधी है नतु मास वृद्धि होतेभी अभिवर्द्धित संवत्सर में क्योंकि मास-वृद्धि होनेसें तेरह मास और छबीश पक्ष व्यतीत होने पर भी बारह मास और चौबीश पक्षके क्षामणा करना ऐसा कोई भी शास्त्रमें नहीं लिखा है ।

और श्रीचन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्रमें १, तथा तद्वृत्तिमें २, श्रीसूर्य्य-प्रज्ञप्ति सूत्रमें ३, तथा तद्वृत्तिमें ४, श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रमें ५, तथा तद्वृत्तिमें ६, श्रीनिशीथचूर्णिमें ७, श्रीजंबूद्वीप-प्रज्ञप्ति सूत्रमें ८, तथा तीनकी पांच वृत्तियोंमें १३, श्रीप्रवचन-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सारोद्धारमें १४, तथा तद्वृत्तिमें १५, श्रीज्योतिषकरण्ड-पयन्नामें १६, तथा तद्वृत्तिमें १७, इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें मास वृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित संवत्सरके १३ मास, २६ पक्ष खुलासा पूर्वक लिखे हैं और लौकिकपञ्चाङ्गमें भी अधिक मास होनेसें तेरह मास छवीश पक्षका वर्ष लिखा जाता है और सब दुनिया भी धर्मकर्मके व्यवहारमें अधिकमासके कारणसें तेरह मास छवीश पक्षको मान्य करती है उसी मुजबही सब जैनी लोग भी वर्त्तते हैं इसलिये अधिक मासके होनेसें तेरह मास, छवीश पक्षका धर्म्म, पापको गिनतीमें लेकर उतनेही महिनोंके धर्म्मकार्य्योंकी अनुमोदना और पाप कार्योंकी आलोचना लेनी शास्त्रानुसार और युक्तिपूर्वक है क्योंकि अधिक मास होनेसे तेरह मास छवीश पक्षमें धर्म्म, और अधर्म्म, करके धर्मकार्य्योंकी गिनती नहीं करना और पापकार्य्योंकी आलोचना नहीं करना ऐसातो कदापि नहीं हो सकता है।

और जब श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने अधिकमासको गिनतीमें प्रमाण किया है और अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह मास छवीश पक्षका कहा हैं तो फिर श्री तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंके विरुद्ध अपनी मतिकल्पनासें बारह मास चौवीश पक्ष कहके एक मासके दो पक्षोंको छोड़ देना और श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंका कहा हुवा अभिवर्द्धित संवत्सरके नामका खंडन करना बुद्धिमान कैसे करेंगे अपितु कदापि नहीं। और श्रीअनन्त तीर्थंकर गणधरादि महाराजोंने अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण किया है तथापि साहवें महाशयजी उत्सूत्र भाषक होकरके उसीका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निषेध करनेके लिये कटिबद्ध तैयार है तो फिर तेरह मास छवीस पक्ष कहेंगे ऐसा तो संभव ही नहीं हो सकता है। जब अधिक मासको गिनतीमें लेनेको ही जिन्हको लज्जा आती है तो फिर तेरह मास छवीश पक्ष कहना तो विशेष उन्हको लज्जाकी बात होवे तो कोई आश्चर्य्य नहीं है।

और सातवें महाशयजी शास्त्रोंके पाठ मंजूर करने वाले होवें तो फिर अधिक मासको श्रीअनंत तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने प्रमाण किया है जिसका अधिकार इसी ही ग्रन्थके पृष्ठ ३२ सें ४८ तक वगैरह कितनी ही जगह छप गया है और सामायिकाधिकारे प्रथम करेमिभंते का उच्चारण किये पीछे इरियावही करनी वगैरह अनेक बातें शास्त्रोंमें विस्तारपूर्वक कही है जिसको तो प्रमाण न करते हुवे उलटा उत्थापन करते हैं फिर शास्त्रके पाठकी बात करना सो कैसी विद्वत्ता कही जावे इस बातको पाठकवर्ग भी विचार सकते हैं।

शंका—अजी आप ऊपरमें अनेक शास्त्रोंके प्रमाणोंसें और युक्तियों सें तेरह मास छवीश पक्षकी गिनती करके उतनीही आलोचना लेकर उतनेही क्षामणे सांवत्सरिक प्रतिक्रमणमें करनेका दिखाते हो परन्तु सांवत्सरिक प्रतिक्रमणकी विधिमें १३ मास, २६ पक्षके, क्षामणे करके उतने ही मासोंकी आलोचना लेनी किसी शास्त्रमें क्यों नहीं लिखी है।

समाधान—भो देवानुप्रिय! सांवत्सरिक प्रतिक्रमणकी विधि में १३ मास, २६ पक्ष के क्षामणे करके उतने ही मास पक्षोंकी आलोचना लेनी किसी भी शास्त्र में नहीं लिखी है यह तेरा कहना अज्ञात सूचक है क्योंकि श्रीआव-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्यक चूर्णि में १ तथा वृहद्वृत्ति में २, और लघुवृत्ति में ३ श्रीप्रवचन सारोद्धार में ४, तथा वृहद्वृत्ति में ५, और लघुवृत्तिमें ६, श्रीधर्मरत्न प्रकरणकी वृत्तिमें ७, श्रीअभयदेव सूरिजीकृत समाचारी ग्रन्थ में ८, श्रीजिनप्रभसूरिजीकृत विधि प्रपा समाचारी में ९, श्रीजिनपति सूरिजीकृत समाचारी में १०, श्रीसमाचारी शतकनामा ग्रन्थ में ११, श्रीषडावश्यक ग्रंथ में १२, श्रीतपगच्छ के श्रीजयचन्द्र सूरिजीकृत प्रतिक्रमण गर्भहेतुनामा ग्रंथ में १३, श्रीरत्नशेखरसूरिजीकृत श्रीश्राद्धविद्धि वृत्ति में १४, प्राचीन प्रतिक्रमण गर्भहेतुनामा ग्रंथमें १५, और श्रीपूर्वाचार्योंके बनाये समाचारियोंके चार ग्रंथोंमें १९, इत्यादि अनेक शास्त्रोंमें देवसी और राइ प्रतिक्रमणके अनंतर पाक्षिक प्रतिक्रमणके मुजबही चौमासी और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि कही है और चौमासी सांवत्सरिक शब्दका नामांतर कहके चौमासी में २०, लोगस्स का कायोत्सर्ग तथा पांच साधुओंको क्षमानेकी और सांवत्सरिक में ४० लोगस्सका कायोत्सर्ग तथा ७ वा ९ वगैरह साधुओंको क्षमाणेकी भिन्नता दिखाई है और क्षमाणा के अवसर में संवच्छर शब्द का ग्रहण करने में आता है। संवत्सर कहो। सांवत्सरी कहो। संवच्छरी कहो। वार्षिक कहो। सबका तात्पर्य एक है और संवत्सर शब्द यद्यपि-नक्षत्र संवत्सर १। ऋतु संवत्सर २। सूर्य संवत्सर ३. चंद्र संवत्सर ४. और अभिवर्द्धित संवत्सर ५ इन पांच प्रकार के अर्थों में ग्रहण होता है परन्तु क्षामणा के अवसर में तो दो अर्थ ग्रहण करने में आते हैं जिसमें प्रथम मास वृद्धि के अभावसें चन्द्र संवत्सर के बारह मास और चौवीश पक्ष अनेक शास्त्रों में कहे हैं और दूसरा मास

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित संवत्सरके तेरह मास और छबीश पक्ष भी अनेक शास्त्रोंमें कहे हैं इसलिये सांवत्सरिक क्षामणेमें मास वृद्धिके अभावसें चंद्रसंवत्सर संबन्धी बारह मास चौबीस पक्ष कहने चाहिये और मास वृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित संवत्सर सम्बन्धी तेरह मास छबीश पक्ष कहने चाहिये और जिस शास्त्रमें बारह मास चौबीश पक्ष लिखे होवें सो चन्द्रसंवत्सर सम्बन्धी समझने चाहिये। इतने पर भी मासवृद्धि होनेसें तेरह मास छबीश पक्ष व्यतीत होने पर भी बारह मास चौबीश पक्ष जो बोलते हैं सो कोई भी शास्त्र के प्रमाण बिना अपनी मति कल्पनाका बर्ताव करके श्रीअनन्त तीर्थंकर गणधरादि महाराजोंका कहा हुवा अभिवर्द्धित संवत्सरके नामको खंडन करके उत्सूत्र भाषणसें संसार वृद्धिका कारण करते हुवे गुरुगम रहित श्रीजैनशास्त्रों के तात्पर्यको नहीं जाननेवाले हैं क्योंकि देखो सर्वत्र शास्त्रों में साधुके विहारकी व्याख्यामें नव कल्पि विहार साधुको करनेका कहा है सो मासवृद्धि के अभावसें होता है परन्तु शीतकालमें अथवा उष्णकालमें मासवृद्धि होनेसें अवश्य करके १० कल्पिविहार करनेका प्रत्यक्ष बनता हैं तथापि कोई हठवादी शीतकालमें अथवा उष्णकालमें मास वृद्धि होतेभी नवकल्पि विहार कहनेवालेको माया मिथ्या का दूषण लगता है क्योंकि जैसे कार्त्तिक पीछे साधुने विहार किया और मास कल्पके नियम मुजब विचरता है उसी समय शीतकाल में अथवा उष्णकाल में अधिक मास होगया तो उस अधिक मास में अवश्य करके दूसरे गांव विहार करेगा परन्तु एकही गांव में दो मास तक कदापि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नहीं ठहरेगा जब अधिक मास में विहार करके दूसरे गांव जावेगा तब उसीको दश कल्पि विहार हो जावेगा क्योंकि चारमास शीतकालके चारमास उष्णकालके तथा एक अधिक मासका और एक वर्षाऋतुके चारमासका इस तरहसें अवश्य करके दसकल्पि विहार होता है तथापि नव कल्पि कहने- वाला तो प्रत्यक्ष माया सहित मिथ्याभाषण करनेवाला ठहरेगा सो पाठकवर्ग भी विचार सकते हैं और जैसे मास वृद्धि होनेसे दसकल्पि विहार करने में आता है तैसेही मा- सवृद्धि होनेसें तेरह मास छब्बीश पक्षोंकी गिनती करके उतनेही क्षामणे करने में आते हैं सो आत्मार्थी श्रीजिने- श्वर भगवान् की आज्ञाके आराधक सत्यग्राही भव्यजीव तो मंजूर करते हैं परन्तु उत्सूत्र भाषक कदाग्रही विद्वत्ता के अभिमानको धारण करनेवालोंकी तो बातही जुदी है। और अधिक मासकी गिनती श्रीतीर्थंकर गणधरादि महा- राजोंकी कहीहुई है जिसको संसारगामी मिथ्यात्वी श्रीजि- नाज्ञाका विराधकके सिवाय कौन निषेध करेगा और अधिक मासको माननेवालों को दूषण लगाकरके फिर आप निर्दूषण भी बनेगा। सो विवेकी पाठकवर्ग विचार लेवेंगे। और अधिक मासके कारणसे ही तेरह मास छब्बीश पक्षका अभिवर्द्धित संवत्सर श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महा- राजोंने कहा है इस लिये अवश्य करके पांच मासका एक अभिवर्द्धित चौमासा भी मानना चाहिये।

(शङ्का) अधिक मासके कारणसें पांच मासका अभि- वर्द्धित चौमासा किस शास्त्रमें लिखा है।

(समाधान) भो देवानुप्रिय! ऊपर ही ३६३, ३६५ पृष्ठ में

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१७ शास्त्रोंके प्रमाण अधिक मासके कारणसें तेरह मास छवीश पक्षका अभिवर्द्धित संवत्सर संबंधी छपे हैं उसी शास्त्रोंसे तथा युक्तियोंसें और प्रत्यक्ष अनुभवसें भी अधिक मासके कारणसें पांच मासका अभिवर्द्धित चौमासा प्रत्यक्ष सिद्ध होता है क्योंकि शीतकालके, उष्णकालके, और वर्षाकालके चार चार मासका प्रमाण है परन्तु जैन पंचांगानुसार और लौकिक पंचांगानुसार जिस ऋतुमें अधिक मास होवे उसी ऋतुका अभिवर्द्धित चौमासा पांच मासके प्रमाणका मानना स्वयं सिद्ध है इस लिये अधिकमासके कारणसें चौमासामें पांचमास दशपक्षका और सांवत्सरीमें तेरह मास छवीशपक्षका अवश्य करके व्यवहार करना चाहिये।

शङ्का—अजी आप अधिक मासके कारणसें चौमासामें पांच मास, दशपक्षका और सांवत्सरीमें तेरह मास छवीश पक्षका व्यवहार करना कहते हो सो क्षामणाके अवसरमें तो हो सकता है, परन्तु मुहपत्ती (मुखवस्त्रिका)की प्रतिलेखना करते, वांदणा देते, अतिचारोंकी आलोचना करते वगैरह कार्योंमें चौमासीमें पांच मास, दश पक्षका और सांवत्सरीमें तेरह मास छवीश पक्षका व्यवहार कैसे हो सकेगा।

समाधान—भो देवानुप्रिय—जैसे मास वृद्धिके अभावसें चौमासीमें चार मास, आठ पक्षका और सांवत्सरीमें बारह मास, चौवीश पक्षका, अर्थ ग्रहण करनेमें आता है और मुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखनामें, वांदणा देनेमें, अतिचारोंकी आलोचना वगैरह कार्योंमें उतने ही मास पक्षोंकी भावना होती है,तैसे ही मास वृद्धि होनेके कारणसें चौमासीमें पांच मास,दश पक्षका और सांवत्सरीमें तेरह मास छवीस पक्षका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्थ ग्रहण होता है इसलिये चौमासीमें और सांवत्सरिक कार्योंमें भी उतने ही मास पक्षोंकी भावना करनेमें आती है,

और जैसे चंद्रसंवत्सरमें–सांवत्सरिक प्रतिक्रमणमें क्षामणाधिकारे 'बारसण्हं मासाणं चउव्वीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठी राइंदियाणं' इत्यादि पाठ बोलके बारह मास, चौवीश पक्ष, तीन सौ साठ (३६०) रात्रि दिनोंकी आलोचना करनेमें आती है और चौमासी प्रतिक्रमणमें 'चउण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाणं वीसुत्तरसय राइंदियाणं' इत्यादि पाठ बोलके चार मास, आठ पक्ष, एक सौ वीश रात्रि दिनोंकी आलोचना करनेमें आती है, तैसे ही अभिवर्द्धित संवत्सरमें भी सांवत्सरिक क्षामणाधिकारे 'तेरसण्हं मासाणं छव्वीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयणउ राइंदियाणं' इत्यादि पाठ बोलके तेरह मास,छवीश पक्ष, तीन सौ नव्वे (३९०) रात्रि दिनोंकी आलोचना करनेमें आती है और अभिवर्द्धित चौमासेमें भी 'पंचण्हं मासाणं दसण्हं पक्खाणं पंचासुत्तरसय राइंदियाणं' इत्यादि पाठ बोलके पांच मास, दश पक्ष एक सौ पचास (१५०) रात्रि दिनोंकी आलोचना करनेमें आती है।

ऊपरमें श्रीआवश्यकचूर्णि, श्रीप्रवचनसारोद्धार, श्रीधर्मरत्न प्रकरणवृत्ति और श्रीअभयदेवसूरिजीकृत समाचारी वगैरह शास्त्रोंके प्रमाण प्रतिक्रमण संबंधी लिखनेमें आये हैं, उन्हीं शास्त्रोंके अनुसार (संवच्छर) संवत्सर शब्दके ऊपरोक्त न्यायानुसार चंद्र,अभिवर्द्धित इन दोनुं संवत्सरोंका अर्थ ग्रहण होनेसें क्षामणा संबंधी ऊपरका पाठ ऊपरोक्त शास्त्रोंके अनुसार ही समझना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूर्व पक्ष–अजी आप ऊपरोक्त शास्त्रोंके अनुसार चन्द्र संवत्सरका और अभिवर्द्धित संवत्सरका अर्थ ग्रहण करके चंद्रमें बारह मासादिसें और अभिवर्द्धितमें तेरह मासादिसें सांवत्सरीमें क्षामणा करनेका लिखतेहो परन्तु किसी भी पूर्वाचार्यजीने कोई भी शास्त्रमें ऐसा खुलासा क्यों नहीं लिखा हैं।

उत्तर पक्ष–भो देवानुप्रिय ! तेरेमें श्रीजैनशास्त्रोंके तात्पर्यार्थको समझनेकी गुरुगम बिना विवेक बुद्धि नहीं है इसलिये बालजीवोंको मिथ्यात्वमें फँसानेके लिये वृथा ही ऐसी कुतर्क करता है क्योंकि जब श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने संवत्सर शब्दके चंद्र और अभिवर्द्धितादि जुदे जुदे अर्थ कहे हैं जिसमें चन्द्रके बारह मास,चौवीस पक्ष और अभिवर्द्धितके तेरह मास,छवीश पक्ष खुलासे कह दिये है,इसलिये पूर्वाचार्योंने संवत्सर शब्दको ही ग्रहण करके व्याख्या करी है और यह तो अल्पबुद्धिवाला भी समझ सकता है कि जब अधिक मासकी गिनती शास्त्रोंमें श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने प्रमाण करी है और प्रत्यक्षमें वर्तते हैं इसलिये पापकृत्योंकी आलोचनामें तो जरूर ही अधिक मास गिनतीमें लेना सो तो न्यायकी बात है परन्तु विवेकशून्य हठवादी होगा सो ऐसी कुतर्क करेगा कि—अधिक मासकी आलोचना कहां लिखी है जिसको यही कहना चाहिये कि अधिक मासको गिनतीमें लेकर फिर आलोचना नहीं करनी कहां लिखी है इसलिये ऐसी वृथा कुतर्कोंके करनेसें मिथ्यात्व बढ़ानेके सिवाय और कुछ भी लाभ नहीं उठासकेगा, क्योंकि जब अधिक मासकी गिनती मंजूर है तो फिर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आलोचना तो स्वयं मंजूर हो चुकी और श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंका कहा हुवा तथा प्रमाण भी करा हुवा अधिक मासको उत्सूत्र भाषण करके निषेध करते हैं और प्रमाण करने वालोंको दूषण लगाते हैं सो पुरुष अधिक मासकी आलोचना नहीं करे तो उन्होंके मति कल्पनाकी बातही जुदी है परन्तु श्रीतीर्थङ्करगणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार अधिक मासकी गिनती प्रमाण करने वालोंको तो अवश्य ही अधिक मासकी आलोचना करना उचित है। इतने पर भी जो नहीं करने वाले हैं सो श्रीजिनाज्ञाके उत्थापक हैं।

और श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी भाव परंपरानुसार चंद्रसंवत्सरका और अभिवर्द्धित संवत्सरका यथोचित अवसर पर जुदा जुदा अर्थ ग्रहण करके सांवत्सरीमें क्षामणा करनेकी अनुक्रमे अखंडित मर्यादा चली आती है इसलिये पूर्वाचार्योंने अधिक मासकी गिनती करनेकी तो सभी जगह व्याख्या करी है परन्तु क्षामणा सम्बन्धी संवत्सरशब्द लिखा है जिसका कारण यही है कि अधिक मास प्रमाण हुआ तो क्षामणे करनेका तो स्वयं प्रमाण हो चुका, जब सम्वेगी साधु मान लिया, तब महाव्रतधारी तो स्वयं सिद्ध हो चुका। जब श्रीजिनेश्वर भगवान्की मूर्त्तिको श्रीजिन सदृश मान्य करी तब उसीको वंदना पूजना तो स्वयं सिद्ध होगया। जब व्याख्यान वांचना मंजूर कर लिया, तब जानकार तो स्वयं सिद्ध होगया। ऐसे ऐसे अनेक दृष्टान्त प्रत्यक्ष हैं सो विशेष पाठकवर्गभी विचार सकते हैं।

और श्रीजैनशास्त्रोंके तात्पर्यको नहीं जानने वाले

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हठवादी पुरुषोंको तो श्रीप्रवचनसारोद्धार, तथा वृत्ति, और श्रीधर्मरत्नप्रकरण वृत्ति, और श्रीअभयदेवसूरिजी वगैरह पूर्वाचार्योंके बनाये समाचारियोंके ग्रन्थ और प्रतिक्रमण गर्भ हेतु, श्रीश्राद्धविधिवृत्ति, वगैरह शास्त्रोंके अनुसार सांवत्सरीमें बारह मास चौवीश पक्षके खामणा करनेका ही नहीं बनेगा क्योंकि इन शास्त्रोंमें तो बारह मास चौवीश पक्ष भी नहीं लिखे हैं तो फिर बारह मासादिका अर्थ ऊपरके शास्त्रोंके अनुसार कैसे मान्य करेंगे और पांचोंही प्रतिक्रमणोंकी विधि ऊपरके शास्त्रोंमें कही है इसलिये ऊपर कहे सो शास्त्रोंके अनुसार पांच प्रतिक्रमणोंकी विधिको तो मान्य करनीही पड़ेगी और संवत्सर शब्दसें बारह मासका अर्थ ग्रहण करोंगे तो मासवृद्धि होनेसें तेरह मासका भी अर्थ ग्रहण करनाही पड़ेगा सो तो न्यायकी बात हैं और पहिलेके कालमें ऐसी कुतर्क करनेवाले विवेकशून्य कदाग्रही पुरुष भी नहीं थे नहीं तो पूर्वाचार्य्यजी जरूर करके विस्तारसें खुलासा लिख देते क्योंकि जिस जिस समयमें जैसी जैसी कुतर्क करनेवाले पूर्वाचार्य्योंके समयमें जो जो हठवादी पुरुष थे जिन्होंको समझानेके लिये वैसे वैसेही खुलासा पूर्वाचार्य्योंने विस्तारसे किया है जैसे कि ईश्वरवादी, नास्तिक, वगैरहोके लिये और श्रीजिनमूर्त्तिको तथा जिनमूर्त्तिकी पूजा सम्बन्धी शास्त्रोक्त विधिको वर्णन करी हैं, परन्तु मूर्तिके और पूजाके सम्बन्धमें वर्त्तमान समय जैसी युक्तियां लिखनेकी जरूरत नहीं थी जिसका कारण कि—उस समय श्रीजिनमूर्तिके तथा उसीकी पूजाके निषेधक ढूंढिये, तेरहपन्थी, वगैरह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कुयुक्तियां करने वाले पुरुष नहीं थे परन्तु वर्तमान समयमें श्रीजिनमूर्तिके निन्दक विशेष कुयुक्तियां करने लगे तो वर्तमान कालमें उसीके स्थापनेके लिये विशेष युक्तियां भी होती है।

तैसेही इस वर्तमान कालमें तेरह मास छवीश पक्षके निषेध करने वाले सातवें महाशयजी जैसे शास्त्रोंके तात्पर्य्यको नहीं जानने वाले पैदा हुवे तो उसीको स्थापन करनेके लिये इतनी व्याख्या भी मेरेको इस जगह करनी पड़ी नहीं तो क्या प्रयोजन था, अब न्यायदृष्टिवाले सत्यग्राही भव्यजीवोंको मेरा इतनाही कहना है कि जैसे श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने श्रीसूयगड़ाङ्गजी, श्रीदशवैकालिकजी, श्रीउत्तराध्ययनजी वगैरह शास्त्रोंमें साधुके उद्देश करके व्याख्या करी है उसीको ही यथोचित साध्वीके लिये भी समझना चाहिये और श्रीवन्दीतासूत्रकी—"चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरइओ॥ आयरियमप्पसत्थे, इत्थपमायप्पसंगेणं॥ १५॥ अपरिगहिआ इत्तर" इत्यादि गाथायोंमें और अतिचारोंकी आलोचना वगैरहमें श्रावकका नाम उद्देश करके व्याख्या करी है उसीकोही यथोचित श्राविकाके लियेही समझना चाहिये इतने पर भी कोई विवेक शून्य कुतर्क करे कि— अमुक अमुक बातें साधुके और श्रावकके लिये तो कही है परन्तु साध्वी और श्राविकाके लिये तो नहीं कही है ऐसी कुतर्क करनेवालेको अज्ञानीके सिवाय, तत्त्वज्ञ पुरुष और क्या कहेंगे। तैसेही जिस जिस शास्त्रमें चन्द्रसंवत्सरकी अपेक्षासें जो जो बातें कही है उसीकेही अनुसार यथोचित अवसरमें अभिवर्द्धित संवत्सरसम्बन्धी भी समझनी चाहिये

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथापि विवेकशून्य हठवादी कोई ऐसी कुतर्क करे कि— अमुक शास्त्रमें मासवृद्धिके अभावसें चन्द्रसम्वत्सरके लिये बारह मासके क्षामणे कहे हैं परन्तु मासवृद्धि होनेसें अभिवर्द्धित सम्वत्सरके लिये तो कुछ नही कहा है, ऐसी कुतर्क करने वालेको अज्ञानीके सिवाय, तत्त्वज्ञ पुरुष और क्या कहेंगे क्योंकि एकके उद्देश्यसें जो व्याख्या करी होवे उसीके ही अनुसार दूसरेके लियेही यथोचित समझनेकी श्रीजैन-शास्त्रोंमें मर्य्यादा है इसलिये जूदे नाम उद्देश्य करके जूदी जूदी व्याख्या शास्त्रकार नहीं करते हैं परन्तु जो सत्यग्राही विवेकी आत्मार्थी होवेंगे सो तो सद्गुरुकी सेवासें श्रीजैन-शास्त्रोंके तात्पर्य्यको समझके सत्यबात ग्रहण करेंगे और विवेक रहित हठवादी होगें जिसके कर्मोंका दोष मतु शास्त्रकारोंका, जैसे—श्रीकल्पसूत्रकी व्याख्यायोंमें प्रसिद्ध बात है कि-कोई साधु स्थण्डिले जङ्गलमें गयाथा सो कुछ ज्यादा देरीसें गुरु पास आया तब उस साधुको गुरु महाराजने देरीसें आनेका कारण पूछा तब उस साधुने रस्तेमें नाटकीये लोगोंका नाटक देखनेके कारण देरीसें आना हुवा सो कहा, तब गुरु महाराजने नाटकीये लोगोंका नाटक देखनेकी साधुको मनाई करी तब विवेकी बुद्धिवाले चतुर थे वे तो नाटकणी लुगाइयोंका नाटक वर्जनेका भी स्वयं समझ गये, और विवेक बिनाके थे सो तो नाटकणी लुगाइयोंका नाटक देखनेको खड़े रहे, तब गुरु महाराजके कहने पर विवेक रहित होनेसें बोलेकी आपने नाटकीये लोगोंका नाटक देखनेकी मनाई करीथी परन्तु नाटकणी लुगाईयों का नाटक देखनेकी तो मनाई नही करी थी तब गुरु महा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राजने कहा कि जब नाटकीयें लोगोंका नाटक वर्जन किया तब नाटकणी लुगाइयोंका नाटक तो विशेष रागका कारण होनेसें स्वयं वर्जन समझना चाहिये तब उन्होंने गुरु महाराजके कहने मुजबही मंजूर किया—और हठवादी मूर्ख थे सो तो गुरु महाराजकोही दूषित ठहराने लगे कि आपने नाटकीये लोगोंका नाटक वर्जन किया तो फिर नाटकणी लुगाइयोंका नाटक क्यों वर्जन नहीं किया—

ऊपरके लेखका क्षामणाके सम्बन्धमें तात्पर्य्य ऐसा है जब श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंने संवत्सर शब्दके चन्द्र, अभिवर्द्धितादि जूदे जूदे भेद प्रमाण सहित कहे हैं और सांवत्सरिक क्षामणाके अधिकारमें संवत्सर शब्दसें व्याख्या करी है जिसमें मासवृद्धिके अभावसें चन्द्रसंवत्सरमें बारह मासादिसें क्षामणा करनेमें आते हैं उसीकेही अनुसार विवेक बुद्धिवाले चतुर होवेंगे सो तो मासवृद्धि होनेसें तेरह मासादिसें क्षामणा करनेका स्वयं समझ लेवेंगे और विवेक रहित होवेंगे सो शास्त्रोंके अनुसार युक्तिपूर्वक गुरु-महाराजके समझानेसें मान्य करेंगे और विवेक रहित हठवादी होवेंगे सो तो शास्त्रोंका प्रमाण और युक्ति होने पर भी शास्त्रकार महाराजोंकोही उलटे दूषित ठहरावेंगे कि अधिक मासकी गिनतीको प्रमाण करके तेरह मास छवीश पक्षका अभिवर्द्धित संवत्सरको शास्त्र-कार लिख गये तो फिर अधिकमास होनेसें तेरह मास छवीश पक्षके क्षामणे करनेका क्यों नहीं लिख गये, इस तरहसें अपनी वक्र जड़ता प्रगट करके बालजीवोंको भी मिथ्यात्वमें फँसावेंगे, पर भवका भय नहीं रक्खेंगे,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और शास्त्रकारोंको मिथ्या दूषण लगाके,फिर आप निर्दूषण भी बनेंगे, सो तो कलियुगकाही प्रभावके सिवाय और क्या होगा सो तत्त्वज्ञ पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे।

प्रश्नः—श्रीजैनशास्त्रोंमें चन्द्रसंवत्सरके ३५४ दिनका और अभिवर्द्धित संवत्सरके ३८३ दिनका प्रमाणकहा है फिर सांवत्सरी सम्बन्धी चन्द्रसंवत्सरमें ३६० दिनके और अभिवर्द्धित संवत्सर में ३९० दिनके क्षामणे करनेका आप कैसे लिखते हो।

उत्तरः—भो देवानुप्रिय, श्रीजिनेन्द्र भगवानोंका कहा हुआ नयगर्भित श्रीजिन प्रवचनकी शैली गुरुगम और अनुभव बिना प्राप्त नहीं हो सकती है क्योंकि यद्यपि श्रीजैनशास्त्रोंमें चन्द्रसंवत्सरके ३५४ दिन, ११ घटीका, और ३६ पलका प्रमाण कहा है और अभिवर्द्धित संवत्सरके ३८३ दिन, ४२ घटीका, और ३४ पलका प्रमाण कहा है सो चन्द्रके विमानकी गतिके हिसाबसें निश्चय नय संबन्धी समझना चाहिये और जो चन्द्रसंवत्सरमें ३६० दिनके और अभिवर्द्धितमें ३९० दिनके क्षामणे करनेमें आते हैं सो दुनियाकी रीतिसें, व्यवहार नय करके, लोगोंको सुखसें उच्चारण हो सके इसलिये बहुत अपेक्षासें समझना चाहिये। और व्यवहार नयसें चन्द्रसंवत्सरमें ३६० दिनका और अभिवर्द्धित संवत्सरमें ३९० दिनका उच्चारण करके क्षामणे करनेमें आते हैं परन्तु निश्चय नय करके तो जितने समयसें सांवत्सरीमें क्षामणे करनेमें आवेंगे उतनेही समय तकके पापकृत्योंकी आलोचना हो सकेगी सो विशेष पाठकवर्ग भी स्वयं विचार लेवेंगे और चौमासी पाक्षिक देवसीराइ प्रतिक्रमण सम्बन्धी भी निश्चय नयकी और व्यवहार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नयकी अपेक्षा केलिये आगे लिखुंगा—

अब सत्यग्राही तत्वज्ञ पुरुषोंको न्यायदृष्टिसें विचार करना चाहिये कि अधिक मासके कारणसें चौमासीमें पांच मासादिसें और सांवत्सरिमें १३ मासादिसें क्षामणे करनेका अनेक शास्त्रोंके प्रमाणानुसार युक्तिपूर्वक और प्रत्यक्ष अनुभवसें स्वयं सिद्ध है सो तो मैंने ऊपरमें ही लिख दिखाया है परन्तु सातवें महाशयजी कोई भी शास्त्रके प्रमाण बिना पांच मास होते भी चार मासके क्षामण करने का और तेरह मास होते भी १२ मासके क्षामणे करनेका लिख दिखाके फिर शास्त्रानुसार पांच मासके और तेरह मासके क्षामणे करने वालोंको दूषण लगाते हैं सो अपने विद्वत्ताकी हांसी करा करके, संसार वृद्धिके हेतुभूत उत्सूत्र भाषणके सिवाय और क्या होगा सो पाठकवर्गको विचार करना चाहिये।

और भी आगे पर्युषणा विचारके चौथे पृष्ठकी १५ वीं पंक्तिसें २१वीं पंक्ति तक लिखा है कि–(दूसरी बात यह है किसी समय सोलह (१६) दिनका पक्ष होता है और कभी चौदह दिनका पक्ष होता है उस समय 'एक पक्खाणं पन्नरसण्हं दिवसाणं' इस पाठको छोड़कर क्या दूसरी पाठकी कल्पना करते हो यदि नही करते तो एक दिनका प्रायश्चित्त बाकी रह जायगा जैसे तुम्हारे मतमें 'चउण्हं मासाणं' इत्यादि पाठ कहनेसें अधिकमासका प्रायश्चित्त रह जाता है)—

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि हे सज्जन पुरुषों सातवें महाशयजीके ऊपरका लेखको देखकर मेरेकों बड़ाही विचार उत्पन्न होता है कि—सातवें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महाशयजी इतने विद्वान् कहलाते हैं तथापि श्रीजैन शास्त्रों के तात्पर्य समझे बिना अपने कदाग्रहके कल्पित पक्षको स्थापन करनेके लिये वृथाही क्यों उत्सूत्र भाषण करके अपनी अज्ञता प्रगट करी है क्योंकि लौकिक ज्योतिषके गणित मुजब वर्तमानिक पञ्चाङ्गमें तिथियांकी हानी और वृद्धि होनेका अनुक्रमे नियम है और अधिकमासकी तो सर्वथा करके वृद्धि ही होनेका नियम है परन्तु तिथिकी हानी होनेसें १४ दिन का पक्षकी तरह, मासकी हानी होकर ११ मासका वर्ष कदापि नहीं होता है इसलिये तिथिकी हानी अथवा वृद्धि होवे तो भी दुनियाके व्यवहारमें १५ दिनका पक्ष कहा जाता है जिससे क्षामणे भी १५ दिनके करनेमें आते हैं और मासकी तो हानी न होते, सर्वथा वृद्धिही होती है इसलियें दुनियाके व्यवहारमें भी तेरह मासका वर्ष कहा जाता है परन्तु मासवृद्धि होते भी बारह मासका वर्ष कोई भी बुद्धिमान विवेकी पुरुष नहीं कहते हैं जिससे मासवृद्धि होनेसें क्षामणे भी १३ मासकेही करनेमें आते हैं, परन्तु मासवृद्धि होते भी बारह मासके क्षामणे करनेका कोई भी बुद्धिवाले विवेकी पुरुष नहीं मान्य कर सकते हैं। इसलिये तिथियांकी हानि वृद्धि होनेका नियम होनेसें और मासकेसदा वृद्धि होनेका नियम होनेसे दोनुंका एक सदृश व्यवहार होनेका सातवें महाशयजी ठहराते हैं सो कदापि नहीं हो सकता है।

और निश्चय व्यवहारादि नय करके श्रीजिन प्रवचन चलता है इसलिये लौकिक पञ्चाङ्गमें १६ दिनका अथवा १४ दिनका पक्ष होते भी व्यवहार नयकी अपेक्षासें १५ दिनके क्षामणे करनेमें आते हैं परन्तु निश्चय नयकी अपेक्षासे तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१६ दिनके अथवा १४ दिनके जितने समय तक जितने पुण्य पापादि कार्य करनेमें आये होवे उतनेही पुण्य कार्योंकी अनुमोदना और पापकार्योंकी आलोचना करनेमें आवेगी, देवसी राइ प्रतिक्रमणवत् अर्थात् देवसी और राइप्रतिक्रमणका सांम और सवेरमें चार चार पहरका काल कहा है परन्तु कोई कारण योग संध्या समय देवसी प्रतिक्रमण न होसके तो रात्रिका बारह बजे (मध्यानरात्रि) के समय तक भी प्रतिक्रमण करनेका अवसर मिलनेसे करनेमें आसके तब निश्चय नय करके तो छ पहरके पाप कार्योंकी आलोचना होगी परन्तु व्यवहार नयकी अपेक्षासें चार पहरके अर्थवाला देवसी शब्द ग्रहण करके देवसी क्षामणे करनेमें आवेंगे अब देखिये अर्द्धरात्रि तक छ पहरमें प्रतिक्रमण करके भी व्यवहार नयसे चार पहरके अर्थवाला देवसी शब्द ग्रहण करनेमें आवे और पुनः कारण योगे पहर रात्रि शेष रहते ३ बजेमेंही दूसरीबार राइ (रात्रि) प्रतिक्रमणकरनेका कारण पड़ गया तो एक पहर अथवा सवा पहरमें रात्रि प्रतिक्रमण करती समय निश्चय नय करके तो उतनेही समय तकके पापकार्योंकी आलोचना होगी परन्तु व्यवहार नयसे चार पहरके अर्थवाला राइ शब्दही ग्रहण करनेमेंआवेगा तैसेही लौकिक पंचाङ्ग मुजब १४ दिने किंवा १५ दिने अथवा १६ दिने पाक्षिक प्रतिक्रमण करनेमें आवे तो निश्चय नय करके तो उतनेही दिनोंके पापकार्योंकी आलोचना करनेमें आवेगी परन्तु व्यवहार नयकी अपेक्षासें १५ दिनका पक्ष कहनेमें आता है इसलिये१५ दिनके अर्थवाला पाक्षिक शब्द ग्रहण करके क्षामणे भी करनेमें आते हैं, परन्तु व्यवहार नयका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भङ्गके दूषणसें डरनेवाले अन्य कल्पना कदापि नहीं करेंगे सो विवेकी सज्जन स्वयंविचार लेवेंगे ।

और सातवें महाशयजी १६ दिनका पक्षमें १५ दिनके क्षामणे करनेसें एक दिनका प्रायश्चित बाकी रहने संबंधी और १४ दिनका पक्षमें भी १५ दिनके क्षामणे करनेसें एकदिन का बिना पाप किये भी प्रायश्चित ज्यादा लेने सम्बन्धी ऊपरके लेखसे ठहराते हैं सो निःकेवल अज्ञातपनसे व्यवहार नयका भङ्ग करते हैं जिससे श्रीतीर्थंकर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा उल्लंघन रूप उत्सूत्र भाषक बनते हैं सो भी पाठकवर्ग विचार लेवेंगे ।

और यद्यपि श्रीजैनपञ्चाङ्गकी गिनतीसें तिथिकी वृद्धि होनेका अभाव था तथा पौष और आषाढ़ मासकी वृद्धि होनेका नियम था परन्तु लौकिक पञ्चाङ्गमें तिथि की वृद्धि होनेका गिनती मुजब नियम है और हरेक मासोंकी वृद्धि होनेका भी नियम है । जब जैन पञ्चाङ्गके बिना लौकिक पञ्चाङ्ग मुजब तिथिकी वृद्धिको सातवें महाशयजी मान्य करके सोलह (१६) दिनका पक्षको मंजूर करते हैं तो फिर लौकिक पञ्चाङ्गानुसार श्रावण भाद्रपदादि मासोंकी वृद्धि होती है जिसको मान्य नहीं करते हुवे उलटा निषेध करनेके लिये पर्युषणा विचारके लेखमें वृथा क्यों परिश्रम करके निष्पक्षपाती विवेकी पुरुषोंसे अपनी हांसी करानेमें क्या लाभ उठाया होगा सो मध्यस्थ दृष्टिवाले सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे—

और (जैसे तुम्हारे मतमें 'चउण्हं मासाणं' इत्यादि पाठ कहनेसें अधिक मासका प्रायश्चित्त रह जाता है) सातवें महाशयजीके ऊपरके लेखपर मेरेको इतनाही कहना है कि—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिक मासको मानने वालोंके मतमें तो अधिक मास होने से पांच मासहोते भी चार मास कहनेसें पांचवा अधिक मासका प्रायश्चित्त बाकी रह जाता है इसलिये अधिकमास होनेसें पाँच मास जरूर बोलने चाहिये सो तो बोलतेही हैं इसका विशेष निर्णय ऊपरमें हो गया है, परन्तु पाँच मास होते भी चार मास बोलनेसें पाँचवा अधिक मासका प्रायश्चित्त उसीके अन्तर्गत आजानेका ऊपरके अक्षरोंसें सातवें महाशयजीने अपने मतमें ठहरानेका परिश्रम किया है सो कोई भी शास्त्रके प्रमाण बिना प्रत्यक्ष मायावृत्तिसें मिथ्यात्व बढ़ानेके लिये अज्ञ जीवोंको कदाग्रहमें गेरनेका कार्य्य किया है क्योंकि अधिक मास होनेसें पांचमासके दश पक्ष प्रत्यक्ष में होते हैं और खास सातवें महाशयजी वगैरह भी सब कोई अधिक मासके कारणसें पाँच मासके दश पाक्षिकप्रतिक्रमण भी करते हैं फिर पांचमास दश पक्ष नहीं बोलते हैं सो यह तो 'मम वदने जिह्वा नास्ति' की तरह बाललीलाके सिवाय और क्या होगा सो विवेकी सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे;—

और आगे फिर भी सातवें महाशयजीने पर्युषणा विचारके पाँचवें पृष्ठकी प्रथम पंक्तिसें छट्ठी पंक्तितक लिखा हैं कि (अब लौकिक व्यवहार पर चलिए लौकिक जन अधिक मासमें नित्यकृत्य छोड़कर नैमित्तिककृत्य नहीं करते जैसे यज्ञोपवीतादि अक्षयतृतीया दीपालिका इत्यादि, दिगम्बर लोग भी अधिक मासको तुच्छ मानकर भाद्रपद शुक्लपञ्चमी से पूर्णिमा तक दश लाक्षणिक पर्व मानते है)—

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि हे सज्जन पुरुषों श्रीजिनेन्द्र भगवानोंने तो अधिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासको गिनतीमें ले करकेही पर्युषणा करनेका कहा है तथापि सातवें महाशयजी पर्युषणा सम्बन्धी श्रीजैनशास्त्रों के तात्पर्य्यको समझे बिना अज्ञात पनेसें उत्सूत्र भाषक हो करके अधिक मासका निषेध करनेके लिये गच्छपक्षी बाल-जीवोंको मिथ्यात्वमें फँसाने वाली अनेक कुतर्कोंका संग्रह करते भी अपने मंतव्यको सिद्ध न कर सके तब लौकिक व्यव-हारका सरणा लिया तथापि लौकिक व्यवहारसें भी उलटे वर्त्तते हैं क्योंकि लौकिक जन (वैष्णवादि लोग) तो अधिक मासमें विवाहादि संसारिक कार्य्य छोड़कर संपूर्ण अधिक मासको बारहमासोंसें विशेष उत्तम जान करके 'पुरुषोत्तम अधिक मास' नाम रख के दान पुण्यादि धर्मकार्य्य विशेष करते हैं और अधिक मासके महात्मकी कथा अपने अपने घर घरमें ब्राह्मणोंसें वंचाकर सुनते हैं। अब पाठकवर्गको विचार करना चाहिये कि—लौकिकजन भी जैसे बारह मासोंमें संसारिक व्यवहारमें वर्त्तते हैं तैसेही अधिक मास होनेसें तेरह मासोंमें भी वर्त्तते हैं और बारह मासोंसे भी विशेष करके दानपुण्यादि धर्मकार्य्य अधिक मासमें ज्यादा करते हैं और विवाहादि मुहूर्त्त निमित्तिक कार्य्य नहीं करते हैं परन्तु बिना मुहूर्त्तके धर्मकार्य्योंको तो नही छोड़ते हैं और सातवें महाशयजी लौकिक जनकी बातें लिखते हैं परन्तु लौकिक जनसें विरुद्ध हो करके धर्मकार्य्योंमें अधिक मासके गिनती का सर्वथा निषेध करते कुछ भी विवेक बुद्धिसें हृदयमें विचार नहीं करते है क्योंकि लौकिक जन की बात सातवें महाशयजी लिखते हैं तबतो लौकिकजन की तरहही सातवें महाशयजीको भी वर्त्ताव करना चाहिये सो तो नही करते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुये उलटेही वर्त्तते हैं सो भी बड़ेही आश्चर्य्यकी बात है ।

और यज्ञोपवीत, विवाह वगैरह मुहूर्त्त निमित्तिक कार्य तो चौमासेमें, मलमासमें, सिंहस्थमें, अधिक मासमें, रिक्ता तिथिमें, और ग्रहण वगैरह कितनेही योगोंमें नहीं होते हैं परन्तु बिना मुहूर्त्तका पर्युषणादि धर्म कार्य तो चौमासेमें रिक्ता तिथि होने पर भी करनेमें आते हैं इसलिये मुहूर्त्त निमित्तिक कार्य अधिक मासमें न होनेका दिखाकरके बिना मुहूर्त्तका पर्युषणा पर्वका निषेध करना सो सर्वथा उत्सूत्र भाषण करके भोले जीवोंको मिथ्यात्वमें फंसानेसे संसार वृद्धिका कारण है सो पाठकवर्ग भी विचार सकते हैं ।

और यज्ञोपवीत विवाहादि मुहूर्त्त निमित्तिक कार्य्ये अधिकमासमें नहीं होनेका सातवें महाशयजी लिख दिखा करके पर्युषणा भी अधिक मासमें नहीं होनेका ठहराते हैं तब तो सिंहस्थ, सिंहराशीपर गुरुका आना होवे तब तेरह मासमें यज्ञोपवीत विवाहादि मुहूर्त्त निमित्त कार्य्ये नहीं करनेमें आते हैं उसीकेही अनुसार सातवें महाशयजीको भी तेरह मास में पर्युषणादि धर्म कार्य्ये नहीं करना चाहिये । यदि करते होवे तो फिर गच्छ कदाग्रही बाल जीवोंको मिथ्यात्वमें फँसानेका वृथा क्यों परिश्रम किया सो तत्वज्ञ पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे—और मुहूर्त्त निमित्तिक संसारिक कार्योंके लिये तथा बिना मुहूर्त्तका धर्म कार्योंके लिये विशेष विस्तारसे चौथे महाशयजी न्यायांभोनिधिजीके लेखकी समीक्षामें इसीही ग्रन्थके पृष्ठ १९४ से २०४ तक अच्छी तरहसे छप गया है सो पढ़नेसे सर्व निःसंदेह हो जावेगा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और अक्षयतृतीया दीपालिकादि सम्बन्धी आगे लिख-नेमें आवेगा। और (दिगम्बर लोग भी अधिक मासको तुच्छ मानकर भाद्रपदशुक्ल पञ्चमीसे पूर्णिमा तक दशलाक्ष-णिकपर्व मानते हैं) सातवें महाशयजीका इस लेखपर मेरेको इतनाही कहना है कि–दिगम्बर लोग तो–केवलीको आहार, स्त्रीको मोक्ष, साधुको वस्त्र, श्रीजिनमूर्त्तिको आ-भूषण, नवाङ्गी पूजा वगैरह बातोंको निषेध करते हैं और श्वेताम्बर मान्य करते हैं इसलिये दिगम्बर लोगोंकी अधिक मास सम्बन्धी कल्पनाको श्वेताम्बर लोगोंको मान्य करने योग्य नहीं है क्योंकि श्वेताम्बरमें पञ्चाङ्गीके अनेक प्रमाण अधिक मासको गिनतीमें करने सम्बन्धी मौजूद हैं इसलिये दिगम्बर लोगोंकी बातको लिखके सातवें महाशयजीने अधिक मासको गिनतीमें लेनेका निषेध करनेको उद्यम करके बालजीवोंको कदाग्रहमें गेरे हैं सो उत्सूत्र भाषणरूप है और सातवें महाशयजी दिगम्बर लोगोंका अनुकरण करते होंगे तब तो ऊपरकी दिगम्बर लोगोंकी बातें सातवें महाशयजीको भी मान्य करनी पड़ेंगी यदि नहीं मान्य करते होवें तो फिर दिगम्बर लोगोंकी बात लिखके वृथा क्यों कागद काले करके समयको खोया सो पाठकवर्ग विचार लेवेंगे—

और आगे फिर भी पर्युषणा विचारके पाँचवे पृष्ठकी ७ वीं पंक्तिसे छट्ठे पृष्ठकी पाँचवीं पंक्ति तक लिखा है कि–[अधिकमास संज्ञी पञ्चेन्द्रिय नहीं मानते, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि एकेन्द्रिय वनस्पति भी अधिक मासमें नहीं फलती। जो फल श्रावण मासमें उत्पन्न होने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वाला होगा वह दूसरेही श्रावणमें उत्पन्न होगा न कि पहिलेमें। जैसे दो चैत्र मास होगे तो दूसरे चैत्रमें आम्रादि फलेंगे किन्तु प्रथम चैत्रमें नहीं। इस विषयकी एक गाथा आवश्यकनिर्युक्तिके प्रतिक्रमणाध्ययनमें यह है—

"जइ फुल्ला कणिआरया चूअग अहिमासयंमि घुट्ठंमि।
तुह न खमं फुल्लेउं जइ पच्चंता करिंति डमराइं" ॥ १ ॥

अर्थात् अधिकमासकी उद्घोषणा होनेपर यदि कर्णिकारक फूलता है तो फूले, परन्तु हे आम्रवृक्ष! तुमको फूलना उचित नहीं है, यदि प्रत्यन्तक (नीच) अशोभन कार्य्य करते हैं तो क्या तुम्हें भी करना चाहिये?, सज्जनोंको ऐसा उचित नहीं है।

इस बातका अनुभव पाठकवर्ग करें यदि अभ्यासकी सफलता हो तो जैसे कुशाग्रबुद्धि आज्ञानिबद्ध हृदय आचार्य्योंने अधिक मासको गिनतीमें नहीं लिया है उसी तरह तुम्हें भी लेखामें नहीं लेना चाहिये। जिससे पूर्वोक्त अनेक दोषोंसे मुक्त होकर आज्ञाके आराधक बनोगे।]

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि—हे सज्जन पुरुषो सातवें महाशयजीने गच्छ पक्षी बालजीवोंको मिथ्यात्वमें फँसानेके लिये ऊपरके लेखमें वृथा क्यों परिश्रम किया है क्योंकि प्रथम तो (अधिक मास संज्ञी पञ्चेन्द्रिय नही मानते) यह लिखनाही प्रत्यक्ष महा मिथ्या है क्योंकि सज्ञी पञ्चेन्द्रिय सब कोई अधिक मासको अवश्य करके मानते हैं सो तो प्रत्यक्ष अनुभवसेही सिद्ध है और 'एकेन्द्रिय वनस्पति अधिकमासमें नही लनेका' सातवें महाशयजी लिखते हैं सो भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिथ्या है क्योंकि वनस्पतिका फलना और फूलोंका, फलोंका उत्पन्न होना सो तो समय, हवा, पानी, ऋतुके, कारणसें होता है इसलिये वनस्पतिकी समय (स्थिति) परिपाक न हुई होवे तथा हवा भी अच्छी न होवे जलका संयोग न मिले तो अधिक मासके बिना भी वनस्पति नहीं फूलती है और फल भी उत्पन्न नही होते हैं और अधिक मासमें भी स्थिति परिपक्व होनेसें हवा अच्छी लगनेसें जलका संयोग मिलनेसें फलती है और फूलोंकी, फलोंकी उत्पत्ति भी होती है ।

और जैसे बारह मासोंमें उत्पन्न होना, वृद्धि पामना, फूलना, फलना, नष्ट होना, वगैरह वनस्पतिका स्वभाव है तैसेही अधिक मास होनेसें तेरह मासोंमें भी है सो तो प्रत्यक्ष दिखता है ।

और 'जो फल श्रावण मासमें उत्पन्न होनेवाला होगा सो पहिले श्रावणमें न होते दूसरे श्रावणमें होगा' ऐसा भी सातवें महाशयजीका लिखना अज्ञातसूचक और मिथ्या है क्योंकि जैन पञ्चाङ्गमें और लौकिक पञ्चाङ्गमें अधिक मासका व्यवहार है परन्तु मुसलमानोंमें, बङ्गालामें, अंग्रेजीमें, तो अधिकमासका व्यवहार नहीं है किन्तु अनुक्रमसें मासोंकी तारीख मुजब व्यवहार है जब लौकिकमें अधिक मास होनेसें अधिक मासमें वनस्पतिका फूलना, फलना नही होनेका सातवें महाशयजी ठहराते हैं तो क्या लौकिक अधिकमासमें जो मुसलमानोंकी, बङ्गालाकी और अंग्रेजीकी ३० तारीखोंके ३० दिन व्यतीत होवेंगे उसीमें भी वनस्पतिका फूलना फलना न होनेका सातवें महा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शयजी ठहरा सकेंगे सो ते कदापि नहीं तो फिर वृथा क्यों कदाग्रही बालजीवोंको मिथ्यात्वकी श्रद्धामें गेरनेके लिये अधिक मासमें वनस्पतिको नहीं फलनेका उत्सूत्र भाषणरूप प्रत्यक्ष मिथ्या स्थापन करते हैं सो न्यायदृष्टि वाले विवेकी पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे ॥

और अधिक मासको वनस्पति अङ्गीकार नही करती है इत्यादि लेख चौथे महाशयजी न्यायाम्भोनिधिजीने भी बालजीवोंको मिथ्यात्वमें गेरनेके लिये उत्सूत्र भाषणरूप लिखा था जिसकी भी समीक्षा इसीही ग्रन्थके पृष्ठ २०५ से २१० तक छप गई है सो पढ़नेसें विशेष निर्णय हो जावेगा।

और 'दे। चैत्र मास होंगे तो प्रथम चैत्रमें आम्रादि नहीं फलते दूसरे चैत्रमें फलेगें इस विषय सम्बन्धी आवश्यक निर्युक्तिके प्रतिक्रमण अध्ययनकी एक गाथा' सातवें महाशयजीने लिख दिखाई—सो तो निःकेवल अपने विद्वत्ता की अजीर्णता प्रगट करी है क्योंकि श्रीआवश्यक निर्युक्ति के रचने वाले चौदह पूर्वधरश्रुतकेवली श्रीमान् भद्रबाहु स्वामीजी जैनमें प्रसिद्ध हैं उन्ही महाराजको अनुमान २२७०वर्ष व्यतीत होगये हैं उन्होंके समयमें अठाशी ग्रहोंके गतिकी मर्य्यादा पूर्वक जैनपञ्चाङ्ग सुरूथा उसीमें पौष और आषाढ़ मासके सिवाय चैत्रादि मासोंकी वृद्धिकाही अभाव था तो फिर श्रीआवश्यक निर्युक्तिके गाथाका तात्पर्य्यार्थको गुरु गमसें समझे विना दूसरे चैत्रमें आम्रादि फलनेका सातवें महाशयजी ठहराते हैं सो विवेकी बुद्धिमान् कैसे मान्य करेगें अपितु कदापि नहीं।

और श्रीआवश्यक निर्युक्तिकी गाथा लिखके अधिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासको गिनतीमें लेनेका सातवें महाशयजीने निषेध किया है सो भी निःकेवल गच्छपक्षके आग्रहसे और अपनी विद्वत्ता के अभिमानसें दृष्टिरागी अज्ञजीवोंको मिथ्यात्वमें फँसाने के लिये नियुक्तिकार महाराजके अभिप्रायको जाने बिना वृथाही परिश्रम किया है क्योंकि नियुक्तिकार महाराज चौदह पूर्वधर श्रुतकेवली थे इसलिये श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंका कहा हुवा और गिनतीमें प्रमाण भी करा हुवा अधिक मासको निषेध करके उत्सूत्र भाषण करने वाले बनेंगे यह तो कोई अल्पबुद्धि वाला भी मान्य नहीं करेगा तथापि सातवें महाशयजीने निर्युक्तिकी गाथासे अधिक मासको गिनतीमें लेनेका निषेध करके चौदह पूर्वधर श्रुतकेवली महाराजको भी दूषण लगाते कुछ भी पूर्वापरका विचार विवेक बुद्धिसें हृदयमें नहीं किया यह तो बड़ेही अफसोसकी बात है ।

और खास इसीही श्रीआवश्यक नियुक्तिमें समयादि कालकी व्याख्यासे अधिक मासको प्रमाण किया है उसी नियुक्तिकी गाथा पर श्रीजिनदासगणि महत्तराचार्य्यजीने चूर्णिमें, श्रीहरिभद्र सूरिजीने वृहद्वृत्तिमें, श्रीतिलकाचार्य्यजीने लघुवृत्तिमें, और मलधारी श्रीहेमचन्द्रसूरिजीने श्रीविशेषावश्यकवृत्तिमें, खुलासा पूर्वक व्याख्या करी है उसीसे प्रगट पने अधिक मासकी गिनती सिद्ध हैं सो इस जगह विस्तारके कारणसें ऊपरके पाठोंकों नहीं लिखता हूं परन्तु जिसके देखनेकी इच्छा होवे सो नियुक्तिके चौवीसथा–अध्ययनके पृष्ठ ५१में, वृहद् वृत्तिके पृष्ठ २०६ में और विशेषावश्यकी वृत्तिके पृष्ठ ४९५ में देख लेना ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब इस जगह विवेकी पाठकवर्गको विचार करना चाहिये कि—खास नियुक्तिकार महाराज अधिकमासको प्रमाण करने वाले थे तथा खास श्रीआवश्यक नियुक्तिमेंही अधिक मासको प्रमाण किया है सो तो प्रगट पाठ है तथापि सातवें महाशयजीने गच्छपक्षके कदाग्रहसें दृष्टि-रागियोंको मिथ्यात्वके झगड़ेमें गेरनेके लिये निर्युक्तिकार चौदह पूर्वधर महाराजके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणरूप अपनी मति कल्पनासें, निर्युक्तिकी गाथा लिखके उसीके तात्पर्य्यको समझे बिनाही अधिक मासको गिनतीमें निषेध करनेका वृथा परिश्रम किया सो कितने संसारकी वृद्धि करी होगी सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने और तत्त्वज्ञ पुरुष भी अपनी बुद्धिसें स्वयं विचार लेवेंगे ।

अब इस जगह पाठकवर्गको निःसन्देह होनेके लिये नियुक्तिकी गाथाका तात्पर्य्यार्थको दिखाता हूं ।

श्रीनियुक्तिकार महाराजने श्रीआवश्यक नियुक्तिमें छ (६) आवश्यकका वर्णन करते प्रतिक्रमण नामा चौथा आवश्यकमें "पडिक्कमणं १ पडिअरणा २, पडिहरणा ३ वारणा ४ णियतिय ५ ॥ णिंदा ६ गरहा ७ सोही ८, पडिक्कमणं अट्ठहा होइ" ॥ ३ ॥ इस गाथासे आठ प्रकारके नाम प्रतिक्रमणके कहे फिर अनुक्रमे आठोंही नामोके निक्षेपोंका वर्णन किया हैं और भव्यजीवोंके उपगारके लिये "अद्धाणे १ पासए २ दुद्धकाय ३ विसभोयणा तलाए ४ ॥ दोकन्ना ५ चित्तपुत्ति ६ पइमारियाय ७ वत्थेव ८ अट्ठणय" ॥ १२ ॥ इस गाथासे प्रतिक्रमण सम्बन्धी आठ दृष्टांत दिखाये जिसमें पांचवा णियत्ति अर्थात् निवृत्ति सो उन्मार्गसे हट करके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सन्मार्गमें प्रवर्तने सम्बन्धी दो कन्याका एक दृष्टांत दिखाया है जिसकी चूर्णिकारने, बृहद् वृत्तिकारने और लघुवृत्तिकारने खुलासा पूर्वक, व्याख्या करी है और द्रव्य निवृत्ति पर दृष्टांत दिखाके, फिर भाव निवृत्ति पर उपनय करके दिखाया है, उसीके सब पाठोंको विस्तार के कारणसे इस जगह नहीं लिखता हूं परन्तु जिसके देखनेकी इच्छा होवे सो चूर्णिके २६४ पृष्ठमें, तथा बृहद् वृत्तिके २३३ पृष्ठमें देखलेना। और पाठकवर्गको लघुवृत्तिका पाठ इस जगह दिखाता हूं श्रीतिलकाचार्यजी कृत श्री आवश्यक लघुवृत्तिके १९६ पृष्ठे यथा—

एकत्र नगरे शाला, पतिः शालासु तस्य च ॥ धूर्त्तावयंति तेष्वेको, धूर्त्तो मधुरगी सदा ॥१॥ कुविंदस्य सुता तस्य, तेन सार्द्धमयुज्यत ॥ तेनोचे साथ नश्यामो, यावद्वेत्ति न कश्चनः ॥२॥ तयोचेमे वयस्यास्ति, राजपुत्री तया समं ॥ संकेतोऽस्ति यथा द्वाभ्यां, पतिरेक करिष्यते ॥३॥ तामप्यानयतेनोचे, साथ तामप्यचालयत् ॥ तदा प्रत्यूषे सहति, गीतं केनाप्यदः स्फुटं ॥ ४ ॥ "जइ फुल्ला कणियारया, चूअगअहि मासयं-मिघट्ठंमि ॥ तुह न खमं फुल्लेउ, जइ पच्चंता करिंति डमरा-इं" ॥ "नखमं नयुक्तं प्रत्यंता नीचकाः डमराणि विप्लव-रूपाणि शेषं स्पष्ठं" ॥ श्रुत्वैवं राजकन्या सा दध्यौ चूतं महातरुम् ॥ उपालब्धो वसंतेन, कर्णिकारोऽधमस्तरुः ॥५॥ पुष्पितो यदि किं युक्तं, तवोत्तमतरोस्त्वया ॥ अधिक मास घोषणा, किं न श्रुतेत्यस्यगीः शुभा ॥६॥ चेत्कुविंदी करोत्येवं, कर्त्तव्यं किं मयापि तत् ॥ निवृत्तासामिषाद्रत्न, करंडोमेस्ति विस्मृतः ॥ ७ ॥ राजसूः कोपि तत्राहि, गोत्रजैस्त्रासितो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निर्जैः ॥ तज्ज्ञातं शरणी चक्रे, प्रदत्ता तेनतस्य सा ॥८॥ तेन श्वशुर साहाय्यान्निर्जित्यनिजगोत्रजान् ॥ पुनर्लेभे निजं राज्यं, पट्टराज्ञी बभूव सा ॥ २९ ॥ निवृत्तिर्द्रव्यतोभाणि, भावे चोपनयः पुनः ॥ कन्यास्थानीया मुनयो, विषया धूर्त्त सन्निभाः ॥१०॥ योगीति गानाचार्योपदेशात्तेभ्यो निवर्त्तते ॥ सुगतेर्भोजनं सस्या, दुर्गतेस्त्वपरः पुनः ॥ ११ ॥

अब विवेकी तत्त्वज्ञपुरुषोंको इस जगह विचार करना चाहिये कि राज्यकन्या उन्मार्गमें प्रवर्तने लगी तब उसी को समझानेके लिये कविने चातुराईसे दूसरेकी अपेक्षा ले कर "जइ फुल्ला" इत्यादि गाथा कही है सो तो व्याख्याकारोंने प्रगट करके कहा है तथापि सातवें महाशयजी निर्युक्तिकार महाराजके अभिप्रायको समझे बिनाही राजकन्याके दृष्टान्तका प्रसङ्गको छोड़ करके बिना संबंधकी एक गाथा लिखके अधिक मासमें वनस्पतिको नहीं फूलनेका ठहराया परन्तु दीर्घ दृष्टिसे पूर्वापरका कुछ भी विचार न किया क्योंकि वसन्त ऋतु मुखसे बोलके आम्र को ओलम्भा देती नहीं, तथा आम्र सुनता भी नहीं और जैन ज्योतिषके हिसाबसे वसंत ऋतुमें अधिक मास होता भी नहीं, और अधिक मास होनेसे वनस्पतिको कोई उद्घोषणा करके सुनाता भी नहीं है। परन्तु यह तो ग्रन्थकार महाराजने अपनी उत्प्रेक्षारूप चातुराईसें दूसरेकी अपेक्षा ले करके प्रासङ्गिक उपदेशके लिये कहा है इसलिये वास्तवमें अधिक मासकी उद्घोषणा आम्रको सुना करके वसन्त ऋतुके ओलंभा देने सम्बन्धी नहीं समझना चाहिये क्योंकि वर्त्तमानिक पञ्चाङ्गमें चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रावणादि मासोंकी वृद्धि होनेसे उन अधिक मासोंके समयमें देशदेशान्तरे आम्र वृक्षादिका फूलना, फलना और आमोंका उत्पत्ति होना प्रत्यक्ष देखनेमें और सुननेमें आता है और किसी देशमें माघ, फाल्गुन मासमें तो क्या परंतु हरेक मासोंमें भी आम्र फूलते हैं और अधिक मासके विना भी हरेक मासोंमें कणियर भी फूलता रहता है इसलिये शास्त्र-कार महाराजका अभिप्रायके विरुद्ध और कारण कार्य्य तथा आगे पीछेके सम्बन्धकी प्रस्ताविक बातको छोड़ करके अधूरा सम्बन्ध लेकर शब्दार्थ ग्रहण करनेसे तो बड़ेही अनर्थका कारण होजाता है, जैसे कि–श्रीसूयगड़ाङ्ग-जीमें वादियोंके मत सम्बन्धकी बातको, श्रीरायप्रशेनीमें परदेशी राजाके सम्बन्धकी बातको श्रीआवश्यकजीकी और श्रीउत्तराध्ययनजीकी व्याख्यायोंमें निह्नवोंके सम्बन्धकी बातको, और श्रीकल्पसूत्रकी व्याख्यायोंमें श्रीआदिजिने-श्वर भगवान्के वार्षिक पारणेके अवसरमें दोनुं हाथोका विवादके सम्बन्धकी बातको इत्यादि पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंमें सैकड़ो जगह शब्दार्थ और होता है परन्तु शास्त्र कार महाराजका अभिप्राय औरही होता है इसलिये उस जगहकी व्याख्या लिखते पूर्वापरका सम्बन्ध रहित और शास्त्रकार महाराजके अभिप्राय विरुद्ध निःकेवल शब्दार्थको पकड़ करके अन्य प्रसङ्गकी अन्य प्रसङ्गमें अधूरी बातको लिखने वाला अनन्त संसारी मिथ्या दृष्टि निह्नव कहा जावे, तैसेही श्रीआवश्यक निर्युक्तिकार महाराजके अभिप्रायके विरुद्धार्थमें शब्दार्थको पकड़ करके विना सम्बन्धकी और अधूरी बात लिखके जो सातवें महाशयजीने बालजीवों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को मिथ्यात्वमें फँसानेका उद्यम किया है सो निःकेवल उत्सूत्र भाषण रूप होनेसे संसार वृद्धिका हेतुभूत है सो विवेकी तत्त्वज्ञ पुरुष अपनी बुद्धिसे स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और फिर भी श्रीआवश्यकनिर्युक्तिकी गाथाकी बातपर सातवें महाशयजीने अपनी चातुराई भोले जीवोंको दिखाई है कि (कुशाग्र बुद्धि आज्ञा निबद्ध हृदय आचार्योंने अधिक मासको गिनतीमें नहीं लिया है उसी तरह तुम्हे भी लेखामें नहीं लेना चाहिये जिससे पूर्वोक्त अनेक दोषोंसे मुक्त होकर आज्ञाके आराधक बनोगे)

सातवें महाशयजीका यहभी लिखना अपनी विद्वत्ताके अजीर्णतासे संसार वृद्धिका हेतु भूत उत्सूत्र भाषण है क्योंकि निर्युक्तिकी गाथामें तो अधिक मासकी गिनती निषेध करने वाला एक भी शब्द नहीं है परन्तु श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महाराजोंने अनन्ते कालसे अधिक मासको गिनतीमें लिया है इस लिये तत्त्वज्ञ बुद्धिवाले श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञाके आराधक जितने आत्मार्थी उत्तमाचार्य्य हुवे है उन सबी महानुभावोंने अधिक मासको गिनतीमें लिया है और आगे भी लेवेंगे इसलिये इसकलियुगमें जो जो अधिक मासको गिनतीमें लेनेका निषेध करनेवाले हो गये हैं तथा वर्त्तमानमें सातवें महाशयजी वगैरह है सो सबीही पञ्चाङ्गीकी श्रद्धा रहित श्रीजिनाज्ञाके उत्थापक है क्योंकि अधिक मासको गिनतीमें करने सम्बन्धी २२ शास्त्रोंके प्रमाणतो इसीही ग्रन्थके पृष्ठ २७।२८ में छप गये हैं और श्रीभगवतीजीमें २३, तथा तद्वृत्तिमें २४, श्रीअनुयोगद्वारमें २५, तथा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तद्वृत्तिमें २६, श्रीव्यवहारवृत्तिमें २७, श्रीआवश्यकनिर्युक्तिमें २८, तथा चूर्णिमें २९, बृहद्वृत्तिमें ३०, लघुवृत्तिमें ३१, और श्रीविशेषावश्यकवृत्तिमें ३२, श्रीकल्पसूत्रमें ३३, तथा श्रीकल्पसूत्रकी सात व्याख्यायोंमें ४०, श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिमें ४१, तथा श्रीजम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिकी पांच व्याख्यायोंमें ४६, श्रीगच्छाचार पयन्नाकी वृत्तिमें ४७, श्रीज्योतिषकरण्डपयन्नामें ४८, तथा तद्वृत्तिमें ४९, श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रकी चूर्णिमें ५०, श्रीविधिप्रपामें ५१, श्रीमण्डलप्रकाशमें ५२, सेन प्रश्नमें ५३, और नवतत्त्वकी चार व्याख्यायोंमें ५७, और श्रीतत्त्वार्थकी वृत्तिमें ५८, इत्यादि पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रोंके प्रमाणोंसे अधिक मासकी गिनती स्वयं सिद्ध है।

इसलिये श्रीजिनाज्ञाके आराधक पञ्चाङ्गीकी श्रद्धावाले आत्मार्थी प्राणियोंको तो अधिक मासकी गिनती अवश्यमेव प्रमाण करना चाहिये जिससे कुछ भी दूषण नहीं लग सकता है परन्तु निषेध करने वाले है सो और पञ्चाङ्गी मुजब अधिक मासका प्रमाण करनेवालोंको अपनी कल्पनासे मिथ्या दूषण लगाते हैं सो संसारमें परिभ्रमण करने वाले उत्सूत्र भाषक और अनेक दूषणोंके अधिकारी हो सकते है सो तो पाठकवर्ग भी विचार सकते हैं।

और पञ्चाङ्गीके एक अक्षरमात्रको भी प्रमाण न करने वालेको तथा पञ्चाङ्गीके विरुद्ध थोड़ीसी बातकी भी परूपना करने वालेको मिथ्या दृष्टि निह्नव कहते है सो तो प्रसिद्ध बात है तो फिर पञ्चाङ्गीके अनेक शास्त्रानुसार अधिक मासकी गिनती सिद्ध होते भी, नही मानने वालेको और इतने पञ्चाङ्गीके शास्त्रोंके प्रमाण विरुद्ध परूपना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करने वालेको मिथ्या दृष्टि महानिह्नव कहनेमें कुछ हरजा होवेतो तत्त्वज्ञ पुरुषोंको विचार करना चाहिये।

अब अनेक दूषणौंके अधिकारी कौंन हैं और जिनाज्ञाके आराधक कौंन हैं सो विवेकी पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और भी आगे पर्युषणा विचारके छट्ठे पृष्ठकी ६ पंक्ति से १८ वीं पंक्ति तक लिखा है कि (वादीकी शङ्का यहाँ यह है कि अधिक मासमें क्या भूख नहीं लगती, और क्या पापका बन्धन नहीं होता. तथा देवपूजादि तथा प्रतिक्रमणादि कृत्य नहीं करना? इसका उत्तर यह है कि क्षुधावेदना, और पापबन्धनमें मास कारण नहीं है, यदि मास निमित्त हो तो नारकी जीवोंको तथा अढाईद्वीपके बाहर रहने वाले तिर्यञ्चोंको क्षुधावेदना तथा पापबन्ध नहीं होना चाहिये। वहाँ पर मास पक्षादि कुछ भी कालका व्यवहार नहीं है। देवपूजा तथा प्रतिक्रमणादि दिनसे बद्ध है मासबद्ध नहीं है। नित्यकर्मके प्रति अधिक मास हानिकारक नहीं है, जैसे नपुंसक मनुष्य स्त्रीके प्रति निष्फल है किन्तु लेना ले जाना आदि गृहकार्य्यके प्रति निष्फल नहीं है उसी तरह अधिक मासके प्रति जानों)

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठकवर्गको दिखाता हूं कि हे सज्जन पुरुषों सातवें महाशयजीने प्रथम वादीकी तरफसें शङ्का उठा करके उसीका उत्तर देनेमें खूबही अपनी अज्ञता प्रगटकरी है क्योंकि क्षुधा लगना सो तो वेदनी कर्मके उदयसे सर्व जीवोंको होता है और वेदनी कर्म अधिक मासमें भी समय समय में बन्धाता है तथा उदय भी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आता है और उसकी निवृत्ति भी होती है इसलिये अधिक मासमें क्षुधा लगती है और उसीकी निवृत्ति भी होती है। और पाप बन्धनमें भी मन, वचन, कायाके योग कारण है उसीसे पाप बन्धन रूप कार्य्य होता है और मन, बचन, कायाके, योग समय समयमें शुभ वा अशुभ होते रहते हैं जिससे समय समयमें पुण्यका अथवा पाप का बन्धन भी होता है और समय समय करकेही आवलिका, मुहूर्त्त, दिन, पक्ष, मास, संवत्सर, युगादिसें यावत् अनन्ते काल व्यतीत होगये हैं तथा आगे भी होवेंगे इसलिये अधिक मासमें पुण्य पापादि कार्य्य भी होते हैं और उसीकी निवृत्ति भी होती है और समयादि कालका व्यतीत होना अढ़ाई द्वीपमें तथा अढ़ाई द्वीपके बाहरमें और ऊर्द्ध लोकमें, अधोलोकमें सर्व जगहमें है इसलिये यहांके अधिक मासका कालमें वहां भी समयादिसें काल व्यतीत होता है इसीही कारणसें यहाँके अधिक मासका कालमें यहांके रहने वाले जीवोंकी तरहही वहांके रहनेवाले जीवोंको वहां भी क्षुधा लगती है और पुण्य पापादिका बन्धन होता है और यद्यपि वहां पक्षमासादिके वर्तावका व्यवहार नहीं है परन्तु यहांभी और वहां भी अधिक मासके प्रमाणका समय व्यतीत होना सर्वत्र जगह एक समान है इसीही लिये चारोंही गतिके जीवोंका आयुष्यादि काल प्रमाण यहांके संवत्सर युगादिके प्रमाणसें गिना जाता है जिससे अधिकमासके गिनतीका प्रमाण-संवत्सर, युग, पूर्वाङ्ग, पूर्व, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, वगैरह सबी कालमें साथ गिना जाता है तथापि सातवें महाशयजी अधिकमासके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कालमें नारकी जीवोंको तथा अढ़ाई द्वीपके बाहेर रहने वाले जीवोंको क्षुधा वेदना तथा पापबन्धन नहीं होनेका लिखते हैं सो अज्ञताके सिवाय और क्या होगा सो पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और (देवपूजा प्रतिक्रमणादि दिनसे बद्ध है मास बद्ध नही है नित्य कर्मके प्रति अधिकमास हानिकारक नही है) सातवें महाशयजीका यह भी लिखना मायावृत्तिसे बालजीवोंको भ्रमानेके लिये मिथ्या है क्योंकि देवपूजा प्रतिक्रमणादि जैसे दिनसे प्रतिबद्धवाले है तैसेही पक्ष, मासादिसे भी प्रतिबद्ध वाले है इसलिये पक्ष, मासादिमें जितनी देव पूजा और जितने प्रतिक्रमणादि धर्मकार्य्य किये जावे उतनाही लाभ मिलेगा और पुण्य अथवा पापकार्य्य से आत्माको जैसे दिवस लाभकारक अथवा हानिकारक होता है तैसेही पक्ष मासादिमें पुण्य अथवा पाप होनेसें पक्ष मासादि भी लाभकारक अथवा हानिकारक होता है इसलिये पक्ष मासादिकके पुण्यकार्य्योंकी अनुमोदना करके उस पक्ष मासादिको अपने लाभकारी माने जाते हैं तैसेही पक्ष मासादिमें पापकार्य्य हुवे होवे उसीका पश्चात्ताप करके उसीकी आलोचना लेनेमें आती है और उसी पक्ष मासादिको अपने हानिकारक समझे जाते हैं और एक पक्षके १५ राइ तथा १५ देवसी और एक पाक्षिक प्रतिक्रमण करनेमें आता है तैसेही एक मासमें ३० राइ तथा ३० देवसी और दो पाक्षिक प्रतिक्रमण करनेमें आते हैं सो तो प्रत्यक्ष अनुभवसे प्रसिद्ध है इसलिये एक मासके ३० दिनोंमें सब संसार व्यवहार और पुण्य पापादि कार्य्य होते तो सातवें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महाशयजी उसीकी गिनतीका निषेध करते हैं सो तो प्रत्यक्ष अन्याय कारक वृथा है इस बातको पाठकवर्ग भी स्वयं विचार सकते हैं और तीनो महाशयोंने भी ऊपरकी बात संबन्धी बाललीलाकी तरह लेख लिखा था जिसकी भी समीक्षा इसीही ग्रन्थके पृष्ठ १४२।१४३ में छप गई है सो पढ़नेसें विशेष निःसन्देह हो जावेगा ;—

और (जैसे नपुंसक मनुष्य स्त्रीके प्रति निष्फल है किन्तु लेना लेजाना आदि गृहकार्य्यके प्रति निष्फल नहीं है उसी तरह अधिक मासके प्रति जानों) इन अक्षरों करके सातवें महाशयजीने देवपूजा मुनिदान आवश्यकादि ३० दिनोंमें धर्मकार्य्य होते भी पर्युषणादि धर्मकार्य्योंमें ३० दिनोंका एक मासको गिनतीमें निषेध करनेके लिये अधिक मासको नपुंसक ठहरा करके बालजीवोंको अपनी विद्वत्ताकी चातुराई दिखाई है सो तो निःकेवल उत्सूत्रभाषण करके गाढ़ मिथ्यात्वसे संसार वृद्धिका हेतु किया है क्योंकि श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधर पूर्वधरादि महाराजोंने जैसे मन्दिरजीके ऊपर शिखर विशेष शोभाकारी होता है उसी तरह कालका प्रमाणके ऊपर शिखररूप विशेष शोभाकारी कालचूलाकी उत्तम ओपमा अधिक मासको दिई है और अधिकमास को गिनतीमें सामिल ले करकेही तेरह मासोंका अभि-वर्द्धित संवत्सर कहा है जिसका विस्तारसें खुलासा इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ४८ सें ६५ तक छपगया है तथापि सातवें महा-शयजीने श्रीअनन्त तीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा उल्लङ्घनरूप तथा आशातना कारक और पञ्चाङ्गीके प्रत्यक्ष प्रमाणोंको छोड़ करके अधिक मासको नपंसककी हलकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओपमा लिखके अधिक मासकी हिलना करी और संसार वृद्धिका कुछ भी भय न किया सो वड़ेही अफसोसकी बात है;–

और वैष्णवादि लोग भी अधिकमासको दानपुण्यादि धर्म्मकार्य्योंमें तो बारह मासोंसे भी विशेष उत्तम "पुरुषोत्तम अधिक मास" कहते हैं और उसीकी कथा सुनते हैं और दानपुण्यादि करते हैं और पञ्चाङ्गमें भी तेरह मास, छवीश पक्षका वर्ष लिखते हैं सो तो दुनियामें प्रसिद्ध है तथापि सातवें महाशयजी अधिक मासको नपुंसक कहके उसको गिनतीमें निषेध करते हुवे, तेरहमा अधिक मासको सर्वथाही उड़ा देते हैं और दुनियाके भी विरुद्धका कुछ भी भय नहीं करते हैं सो भी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वका नमूना है क्योंकि सातवें महाशयजी काशीमें बहुत वर्षोंसे ठहरे हैं और अधिक मास होनेसे पुरुषोत्तम अधिक मासके महात्म की कथा काशीमें और सब शहरोंमें अनेक जगह वंचाती है सो तो प्रसिद्ध है और जैनशास्त्रानुसार तथा लौकिक शास्त्रानुसार धर्मकार्य्योंमें अधिक माम श्रेष्ठ है, तथापि सातवें महाशयजी नपुंसक ठहराते हैं सो तो ऐसा होता है कि—

किसी नगरमें एक शेठ रहता था, सो रूपलावण्य करके युक्त और धर्म्मावलम्बी था इसलिये उसीने परस्त्री गमनका और वेश्याके गमनका वर्जन किया था, सो शेठ किसी अवसरमें बजारके रस्तेसे चला जाता था उसी रस्तेमें कोई व्यभिचारिणी स्त्रीका और वेश्याका मकान आया, तब वह शेठ उसीका मकानके पासमें हो करके आगेको चला गया परन्तु उसीके मकानपर न गया तब उस शेठको देखकर वह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व्यभिचारिणी स्त्री और वेश्या कहने लगी कि, यह तो नपुंसक है इसलिये हमारे पास नहीं आता है ।

अब पाठकवर्गको विचार करना चाहिये कि–जैसे उस व्यभिचारिणी स्त्रीका और वेश्याका मन्तव्य उस शेठसे परिपूर्ण न हुवा तब उसीको नपुंसक कहके उसीकी निन्दा करी परन्तु जो विवेकबुद्धि वाले न्यायवान् धर्मी मनुष्य होवेंगे सो तो उस शेठको नपुंसक न कहते हुवे उत्तमपुरुष ही कहेंगे, तैसेही सातवें महाशयजी भी अधिक मासको गिनतीमें लेनेका निषेध करनेके लिये उत्सूत्र भाषणरूप अनेक कुयुक्तियोंका संग्रह करते भी अपना मन्तव्यको सिद्ध नहीं कर सके तब नपुंसक कहके अधिक मासकी निन्दा करी और श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञा उल्लङ्घन होनेसे संसार वृद्धिका भय न किया परन्तु जो विवेक बुद्धि वाले न्यायवान् धर्मी मनुष्य होवेंगे सो तो अधिक मासको नपुंसक न कहते हुवे श्रीतीर्थङ्कर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार विशेष उत्तमही कहेंगे सो तत्त्वज्ञ पाठक वर्ग स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और अधिक मासको नपुंसक कहके धर्म कार्योंमें निषेध करनेके लिये चौथे महाशयजीने भी उत्सूत्र भाषण रूप कुयुक्तियोंके संग्रहवाला लेख लिखके बाल जीवोंको मिथ्यात्वमें गेरनेका कारण किया था जिसकी भी समीक्षा इसीही ग्रन्थके पृष्ट २००से २०४ तक अच्छी तरहसे खुलासा पूर्वक छप गई है सो पढ़नेसे विशेष निःसन्देह हो जावेगा ;—

और जैसे धर्मी पुरुषोंको पर स्त्री देखनेमें अन्धेकी तरह होना चाहिये परन्तु देव गुरुके दर्शन करनेमें तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार आंख वालेकी तरह हो जाना चाहिये तैसेही यह शेठ पुरुष है परन्तु पर स्त्रीके गमनका और वेश्याके गमनका वर्जन करनेवाला धर्मावलम्बी होनेसे उनके साथ मैथुन सेवन करनेमें तो नपुंसककी तरह हैं परन्तु अपने नियमका प्रतिपालन करके ब्रह्मचर्य्य धारण करनेमें तो समर्थ होनेसे उत्तम पुरुषकी तरह है अर्थात् आपही उस गुणसे उत्तम पुरुष हैं इसी न्यायानुसार यद्यपि अधिक मास भी गिनतीके प्रमाणका व्यवहारमें तो बारह मासोंके बरोबरही पुरुष रूप है उसीमें वैष्णव लोग दान पुण्यादि विशेष करते हैं और उसीके महात्म्यकी कथा सुनते हैं इसीलिये उसीको पुरुषोत्तम अधिक मास कहते हैं।

और श्रीजैन शास्त्रोंमें भी मन्दिरके शिखरवत् कालका प्रमाणके शिखर रूप उत्तम ओपमा अधिक मासको है। उसीमें मुहूर्त्त नैमित्तिक विवाहादि आरम्भ वाले संसारिक कार्य्य नहीं होते हैं परन्तु धर्म कार्य्य तो विशेष होते हैं इसलिये उपरोक्त न्यायानुसार मुहूर्त्त नैमित्तिक आरम्भ वाले संसारिक कार्योंमें तो अधिक मास नपुंसककी तरह है परन्तु धर्म कार्योंमें तो विशेष उत्तम होनेसे सबसे अधिक है इसलिये इसका अधिक मास ऐसा नाम भी सार्थक है तथापि धर्म कार्योंमें और गिनतीका प्रमाणमें उसीको नपुंसक ठहरा करके अधिक मासकी निन्दा करते हुए उसीकी गिनती निषेध करते हैं तो वह व्यभिचारिणी स्त्रीका और वेश्याका अनुकरण करनेवालेहैं सो पाठकवर्ग विचार लेवेंगे और अब सातवें महाशयजीके आगेका लेखकी समीक्षा करके पाठक वर्गको दिखाता हूं— पर्युषणा विचारके छट्ठे पृष्टकी १९ वीं पंक्तिसे सातवें पृष्टकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चौथी पंक्ति तक लिखा है कि–(जैन पञ्चाङ्गानुसार तो एक युगमें दो ही अधिक मास आते हैं अर्थात् युगके मध्यमें आषाढ़ दो होते हैं और युगान्तमें दो पौष होते हैं। दो श्रावण दो भाद्र और दो आश्विन वगैरह नहीं होते। इस भावकी सूचना देने वाली पाठ देखोः—
"जई जुग मज्झे तो दोपोसा जई जुग अन्ते दो आसाढ़ा"
यद्यपि जैन पञ्चाङ्गका विच्छेद हो गया है तथापि युक्ति और शास्त्र लेख विद्यमान है) सातवें महाशयजीका इस लेख पर मेरेको इतनाही कहना है कि–शास्त्रके पाठसे एक युगमें दो अधिक मास होनेका आप लिखते हो सो यह दोनों अधिक मास जैन शास्त्रानुसार गिनतीमें लिये जाते थे तो फिर ऊपरमेंही "कुशाग्रह बुद्धि आज्ञा-निबद्ध हृदय आचार्योंने अधिक मासको गिनतीमें नहीं लिया है" ऐसे अक्षर लिखके पर्युषणा विचारके सब लेखमें अधिक मासकी गिनती निषेध क्यों करते हो क्या आपको शास्त्रकी वाक्य प्रमाण नहीं है, यदि है तो आपका निषेध करना संसार वृद्धिका हेतु भूत उत्सूत्रभाषण होनेसे बाल जीवोंको मिथ्यात्वमें फँसाने वाला है सो विवेकी पाठक वर्ग स्वयं विचार सकते हैं;—

और शास्त्रके पाठमें तो युगके मध्यमें दो पौष और युगान्तमें दो आषाढ़ खुलासे कहे हैं तथापि सातवें महा-शयजी युगके मध्यमें दो आषाढ और युगान्तमें दो पौष लिखते हैं सो तो बहुत वर्षोंसे काशीमें अभ्यास करते हैं इसलिये विद्वत्ताके अजीर्णतासे उपयोग शून्यताका कारण है;—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और श्रीचन्द्रप्रज्ञप्ति, श्रीसूर्य्यप्रज्ञप्ति, श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्ति और श्रीज्योतिषकरंडपयन्न वगैरह शास्त्रानुसार तथा उन्होंकी व्याख्यायोंके अनुसार अधिक मास होनेका कारण कार्य्य तथा गिनतीका प्रमाणको जो सातवें महाशयजी किसी सद्गुरुसे पढ़के तात्पर्य्यार्थको समझते और श्री भगवतीजी श्रीअनुयोगद्वार वगैरह शास्त्रानुसार समय, आवलिकादि कालकी व्याख्याको विचारते तो अधिक मासकी गिनती निषेध कदापि नहीं करते और दो श्रावण, दो भाद्र, दो आश्विन वगैरह नहीं होनेका लिखनेके लिये लेखनी भी नहीं चलाते सो पाठक वर्ग विचार लेवेंगे :—

और भी आगे पर्युषणा विचारके सातवें पृष्ठमें लिखा है कि (लौकिक पञ्चाङ्गानुसार अधिक मासको लेखामें गिनने वाले महाशयोंसे पूछता हूं कि यदि आश्विन दो होंगे तो साम्वत्सरिक प्रतिक्रमणान्तर सत्तरवें दिनमें चौमासी प्रतिक्रमण करोगे कि नहीं, यदि नहीं करोगे तो समवायाङ्ग सूत्रके पाठकी क्या गति होगी ? अगर चौमासीका प्रतिक्रमण करोगे तो दूसरे आश्विन सुदी पूर्णमासीके पीछे विहार करना पड़ेगा। आश्विन मासको लेखामें न गिनकर सत्तर दिन कायम रक्खोगे तो श्रावण अथवा भाद्रमासको लेखामें न गिनकर पचास दिन कायम रख कर भगवान्‌की आज्ञाके अनुसार भाद्र सुदी चौथके रोज साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण क्यों नहीं करते)

इस लेख पर भी मेरेको इतनाही कहना है कि–जैन पञ्चाङ्गके अभावसे लौकिक पञ्चाङ्गानुसार वर्ताव करनेकी पूर्वाचार्यों की आज्ञा है इसलिये कालानुसार श्रीजैन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शासनमें लौकिक पञ्चाङ्ग मुजबही तिथि, वार, घड़ी, पल, नक्षत्र, योग, सूर्योदय, दिनमान, तिथिकी हानी, वृद्धि, राशि चन्द्र, पक्ष, मास, मुहूर्त्त वगैरहसे संसार व्यवहारमें और धर्म व्यवहारमें वर्ताव करनेमें आता है इसलिये लौकिक पञ्चाङ्गमें जिस मासकी वृद्धि होवे उसीको मान्य करके उसी मुजब संसार व्यवहारमें और धर्म व्यवहारमें वर्ताव होनेका प्रत्यक्षमें बनता है इसलिये लौकिक पञ्चाङ्गमें दो श्रावण, दो भाद्रपद और दो आश्विन वगैरह होवे उसी के गिनतीको निषेध न करते हुवे प्रमाण करना सो तो पूर्वाचार्योंकी आज्ञानुसार तथा युक्ति पूर्वक और प्रत्यक्ष अनुभवसे स्वयं सिद्ध है इसलिये अधिक मासकी गिनती निषेध करने वाले अभिनिवेशिक मिथ्यात्वको सेवन करने वाले प्रत्यक्षमें बनते है सो तो विवेकी सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और दो आश्विन होनेसे सांवत्सरिक प्रतिक्रमणके बाद ७० दिने चौमासी प्रतिक्रमण करके दूसरे आश्विनमें विहार करनेकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि अधिक मास होनेसे सांवत्सरिक प्रतिक्रमणके बाद १०० दिने कार्त्तिकमें चौमासी प्रतिक्रमण करके विहार करनेमें आता है सो शास्त्रानुसार और युक्ति पूर्वक न्यायकी बात है इसलिये कोई भी दूषण नहीं लग सकता है इसका खुलासा इसी ही ग्रन्थके पृष्ठ ३५९।३६० में छप गया है—

और "समवायाङ्ग सूत्रके पाठकी क्या गति होगी" सातवें महाशयजीका यह लिखना अभिनिवेशिक मिथ्यात्वको प्रगट करने वाला उत्सूत्रभाषण रूप संसार वृद्धिका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हेतुभूत है क्योंकि श्रीसमवायाङ्गजी सूत्रका पाठ तो श्रीगणधर महाराजका कहा हुआ है और चार मासके सम्बन्धवाला है इसलिये उसीकी तो सदाही अच्छी गति है और चार मासके वर्षाकालमें उसी मुजब वर्तनेमें आता है परन्तु सातवें महाशयजी सूत्रकार महाराजके विरुद्धार्थमें पांच मासके वर्षाकालमें भी उसी पाठको स्थापन करनेके लिये सूत्रके पाठ पर ही आक्षेप करते हैं और बाल जीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें गेरते हैं सो क्या गति प्राप्त करेंगे सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने—

और "आश्विन मासको लेखामें न गिनकर सत्तर दिन कायम रक्खोगे" यह भी सातवें महाशयजीका लिखना मिथ्या है क्योंकि हम तो आश्विन मासको लेखामें गिन करके १०० दिन कायम रखते हैं इस लिये मिथ्या भाषण करनेसे महाव्रतके भङ्गका सातवें महाशयजीको भय लगता हो तो मिथ्या दुष्कृत देना चाहिये—

और "श्रावण अथवा भाद्रमासको लेखामें न गिनकर पचास दिन कायम रख कर भगवान्‌की आज्ञाके अनुसार भाद्र सुदी चौथके रोज सम्वत्सरिक प्रतिक्रमण क्यों नहीं करते" सातवें महाशयजीका इस लेख पर मेरेको इतनाही कहना है कि मास वृद्धिके अभावसे आषाढ चौमासीसे पचास दिने भाद्र शुदी चौथको पर्युषणामें सांवत्सरिक प्रतिक्रमण वगैरह करनेकी तो श्रीजिनेश्वर भगवान्‌की आज्ञा है परन्तु पचासवें दिनकी रात्रिकोभी उल्लंघन करना नही कल्पता इसलिये दो श्रावण होनेसे श्री कल्पसूत्रके तथा उन्होंकी व्याख्यायोंके अनुसार ५० दिनकी गिनतीसे दूसरे श्रावणमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथवा प्रथम भाद्रमें पर्युषणा करना चाहिये परंतु मास वृद्धि दो श्रावण होतेभी ८० दिने भाद्र शुदीमें पर्यूषणा करके भी निर्दूषण बननेके लिये अधिक मासके ३० दिनोंको गिनतीमे छोड़करके ८० दिनके ५० दिन गच्छपक्षी बाल जीवोंके आगे कहके आप आज्ञाके आराधक बनना चाहते हैं सो कदापि नहीं हो सकते है क्योंकि श्रीभगवतीजी श्रीअनुयोगद्वार श्रीज्योतिषकरंडपयन्न और नव तत्व प्रकरणादि शास्त्रानुसार तथा इन्हींकी व्याख्यायोंके अनुसार समय, आवलिका, मुहूर्त्त, दिन, पक्ष, मासादिसे जो काल व्यतीत होवे उसी कालका समय मात्रभी गिनतीमें निषेध नहीं हो सकता है तथापि निषेध करनेवाले पंचांगीकी श्रद्धारहित और श्री जिनाज्ञाके उत्थापक निन्हव, मिथ्या दृष्टि-संसार गामी कहे जावे, तो फिर एक मासके ३० दिनोंको गिनतीमें निषेध करने वालेको पंचांगीकी श्रद्धा रहित और श्रीजिनाज्ञाके उत्थापक अभिनिवेशिक मिथ्यात्वी कहनेमें कुछ भी तो दूषण मालूम नही होता है इसलिये अधिक मास के ३० दिनोंकी गिनती निषेध करने वाले मिथ्या पक्षग्राहियोंकी आत्माका कैसे सुधारा होगा सो तो श्रीज्ञानीजी महाराज जाने। इसलिये दो आश्विन होनेसे भाद्र शुदी चौथसे कार्तिक तक १०० दिन होते है जिसके ७० दिन अपनी मति कल्पनासे बनाने वाले और दो श्रावण होनेसे भाद्रतक ८० दिन होते हैं जिसके तथा दो भाद्र होनेसे दूसरे भाद्र तक ८० दिन होते हैं जिसके भी ५० दिन अपनी मति कल्पनासे बनाने वाले अभिनिवेशिक मिथ्यात्वी होनेसे आत्मार्थियोंको उन्होंका पक्ष छोड करके इस ग्रन्थको सम्पूर्ण पढ़

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कर सत्य बातको ग्रहण करना चाहिये जिसमें आत्म-कल्याण है नतु अधिक मासके गिनतीका निषेध रूप अंध परंपराका मिथ्यात्वमें;—

और इसके आगे फिरभी मासवृद्धि होतेभी भाद्र पदमें पर्युषणा ठहरानेके लिये पर्युषणा विचारके सातवें पृष्ठके अन्तसे आठवें पृष्ठ तक लिखा है कि-(पर्युषणाकल्पचूर्णि, तथा महानिशीथचूर्णिके दसवें उद्देशेमें इसी तरहका पाठ है,

"अन्नया पज्जोसवणादिवसे आगए अज्जकालगेण सालवाहणो भणिओ, भद्दवयजुण्हपञ्चमीए पज्जोसवणा" इ०

तथा "तत्थ य सालवाहणो राया, सो अ सावगो, सो अ कालगज्जं इंतं सोऊण निग्गओ, अभिमुहो समणसंघो अ, महाविभूईए पविट्ठो कालगज्जो, पविट्ठे हिंअभणिअं भद्दवयसुद्ध पञ्चमीएपज्जोसविज्जइ समणसंघेण पडिवण्णं ता रण्णाभणिअं तद्दिवसं मम लोगानुवत्तीए इंदो अणुजाणेयव्वो होहित्ति साहू चेइए अणुपज्जुवासिस्सं, तो छट्ठीए पज्जोसवणा किज्जइ, आयरिएहिं भणिअं, न वट्टिढति अतिक्कमितुं, ताहे रण्णा भणिअं, ता अणागए चउत्थीए पज्जोसविति, आयरिएहिं भणिअं, एवं भवउ, ताहे चउत्थीए पज्जोसवियं, एवं जुगप्पहाणेहिं कारणे चउत्थी पवत्तिआ, सा चेवाणुमता सव्वसाहूणमित्यादि" ।

ऊपरकी पाठ साक्षात् सूचित करती है कि भाद्र सुदी चौथको साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण वगैरह करना चाहिये। किन्तु जब दो श्रावण आवें तो श्रावण सुदी चौथके रोज साम्वत्सरिक कृत्य करे ऐसा तो पाठ कोई सिद्धान्तमें नहीं है तो आग्रह करना क्या ठीक है ? दो भाद्र आवेंतो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

किसी तरह पूर्वोक्त पाठका समर्थन करोगे। परञ्चासत्तर दिनमें चौमासी प्रतिक्रमण करना चाहिये)

ऊपरके लेखकी समीक्षा करके पाठक वर्गको दिखाताहूं कि–हे सज्जन पुरुषो सातवें महाशयजीका ऊपरके लेखको मैं देखताहूं तो मेरेकोबड़ेही खेदकेसाथ आश्चर्य्य उत्पन्नहोता है कि, सातवें महाशय श्रीधर्मविजयजीने शास्त्रविशारदजैनाचार्य्यकी पद्वीकोधारणकरीहै परंतुअपनेकदाग्रहके कल्पित पक्षकीबातको मायावृत्तिसे स्थापित करके बालजीवोंको श्रीजिनाज्ञासेभ्रष्टकरनेके लिये उन्होंमें अभिनेवेशिक मिथ्यात्वका बहुतही संग्रहहोनेसे उसपद्वीको सार्थक न करसके परन्तु शास्त्रविराधक उत्सूत्रभाषणाचार्य्यकी पद्वीके गुण तो (सातवें महाशयजीमें) प्रगट दिखते है क्योंकि देखो सातवें महाशयजीने मास वृद्धि दो श्रावण होतेभी भाद्रपदमें पर्युषणा स्थापन करनेके लिये पर्युषणाकल्पचूर्णिका और महानिशीथके दशवे उद्देशकी चूर्णिका पाठ लिख दिखाया परंतु शास्त्रकार महाराजोके विरुद्धार्थमें अधूरी बात भोले जीवोंको दिखानेसे संसारवृद्धिका कुछभी भय हृदयमेंनलाये मालूम होता है क्योंकि प्रथमतो महानिशीथकी चूर्णिका नाम लिखा सोतो उपयोग शून्यताके कारणसे मिथ्या है क्योंकि महानिशीथकी चूर्णि नहीं किंतु निशीथसूत्रकी चूर्णि है और पर्युषणाकल्प चूर्णिमें तथा निशीथसूत्रकीचूर्णिमें खास पर्युषणाकेही संबंधकी व्याख्यामें अधिक मासको गिनतीमें प्रमाण किया है और मास वृद्धि होनेसे अभिवर्द्धित संवत्सरमें वीस दिने पर्युषणाकही है तैसेहीं मास वृद्धिके अभावसे चंद्र संवत्सरमें ५० दिने पर्युषणा कही है और पञ्चक परिहाणीका कालमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्कृष्टसे १८० दिनके छ मासका कल्प कहा है और मास वृद्धिके अभावसे आषाढ़ चौमासीसे पांच पांच दिनकी वृद्धि करते दसवे पञ्चकमें पचासवें दिन भाद्र पद शुक्ल पञ्चमीको पर्युषणा करनेमें आती थी परंतु कारणसे श्रीकालकाचार्य्य-जीने एकौन पञ्चाशवें (४९) दिन भाद्र शुदी चौथको पर्युषणा करी है जिसका संबंधभी विस्तार पूर्वक दोनु चूर्णिमें कहा है सो दोनुं चूर्णिके पर्युषणा सम्बन्धी बिस्तारवाले दोनुं पाठ भावार्थ सहित इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ९२ से लेकर १०४ तक छप गये है सो पढ़नेसे सर्व निर्णय हो जावेगा। परन्तु बड़ेही अफसोसकी बात है कि सातवें महाशयजी दोनुं चूर्णिके आगे पीछेके सब पाठोंको छोड़ करके फिर मास वृद्धिके अभावसे ४९ वे दिने पर्युषणा करनेवाले पाठको मास वृद्धि दो श्रावण होते भी लिखके दोनें चूर्णिकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें यावत् ८० दिने पर्युषणा स्थापन करनेके लिये बाल जीवोंको अधूरे पाठ लिख दिखाते कुछ भी लज्जा नहीं पाते हैं सो भी कलयुगि विद्वत्ताका नमूना है इसलिये मास वृद्धिके अभाव के विस्तार वाले सब पाठोंको छोड़ करके मास वृद्धि होते भी उसीमेंसे अधूरेपाठ सातवेंमहाशयजीने लिखे है सो अभि-निवेशिक मिथ्यात्वसे शास्त्रविराधक उत्सूत्र भाषणाचार्यके गुण प्रगट दिखाये है सो तो विवेकी पाठक वर्ग स्वयं विचार लेवेंगे,—और सुप्रसिद्ध विद्वान् तीसरे महाशयजी श्रीविनय विजयजीने भी, पण्डितहर्षभूषणजीकी और धर्मसागरजीकी धूर्ताईमें पड़कर अभिनिवेशिक मिथ्यात्वसे ऊपरकी दोनों चूर्णिके अधूरे पाठ श्रीसुखबोधिका वृत्तिमें लिखे है उसी तरहसे वर्त्तमानमें सातवें महाशयजीने भी किया परन्तु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर भवका और विद्वानोंके आगे अपने नामकी हासी करानेका कुछ भी पूर्वापरका विचार न किया, अन्यथा अन्ध परम्पराके मिथ्यात्वको पुष्टीकारक शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें ऐसे अधूरे पाठ लिखके और कुयुक्तियोंका संग्रह करके बाल जीवोंको सत्य बात परसे श्रद्धा भ्रष्ट करनेके लिये कदापि परिश्रम नहीं करते, सो तो निष्पक्षपाती सज्जनोंको विचार करना चाहिये;—

और "जब दो श्रावण आवे तो श्रावण सुदी चौथके रोज सांवत्सरिक कृत्य करे ऐसा तो पाठ कोई सिद्धान्तमें नहीं है तो क्या आग्रह करना ठीक है" यह भी सातवें महाशयजीका लिखना गच्छपक्षी बाल जीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें गेरनेके लिये अज्ञताका अथवा अभिनिवेशिक मिथ्यात्वका सूचक है क्योंकि दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा करना ऐसा तो किसी भी शास्त्रमें नहीं लिखा है तो फिर दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा करनेका वृथा क्यों पुकारते है और दो श्रावण होनेसे दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करना सो तो श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठानुसार तथा उन्होंकी अनेक व्याख्यायोंके अनुसार और युक्तिपूर्वक स्वयं सिद्ध है सो तो इसी ग्रन्थकी आदिमेंही विस्तारसे लिखनेमें आया है और खास सातवें महाशयजी भी श्रीकल्पसूत्रके मूलपाठको तथा उसीकी वृत्तिको हर वर्षे पर्युषणामें बांचते हैं उसीमें जैन पञ्चाङ्गके अभावसे "जैनटिप्पनकानुसारेण यतस्तत्र युगमध्ये पौषो युगान्ते च आषाढ एव वर्द्धते नान्येमासास्तट्टिप्पनकंतु अधुना सम्यग् न ज्ञायतेऽतः पञ्चाशद्भिर्दिनैः पर्युषणा सङ्गतेति वृद्धाः—" ऐसे अक्षर किरणावली वृत्तिमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा दीपिका वृत्तिमें और सुखबोधिका वृत्तिमें अपने ही गच्छके विद्वानोंने खुलासा पूर्वक लिखे हैं सो सातवें महाशयजी अच्छी तरहसे जानते हैं और दो श्रावण होनेसे दूसरे श्रावणमें ५० दिन पूरे होते हैं इसलिये "जब दो श्रावण आवे तो श्रावण सुदी चौथके रोज सांवत्सरिक कृत्य करे ऐसा तो पाठ कोई सिद्धान्तमें नहीं है तो आग्रह करना क्या ठीक है" सातवें महाशयजीका यह लिखना मायावृत्तिसे अभिनिवेशिक मिथ्यात्वको प्रगट करनेवाला प्रत्यक्ष सिद्ध होगया सो पाठकवर्ग भी विचार लेवेंगे,—

और (दो भाद्र आवे तो किसी तरह पूर्वोक्त पाठका समर्थन करोगे परन्तु सत्तर दिनमें चौमासी प्रतिक्रमण करना चाहिये) सातवें महाशयजीके इस लेखपर भी मेरेको इतनाही कहना है कि-दो भाद्र आवे तब पूर्वोक्त पाठके अभिप्रायसे ५० दिनकी गिनती करके प्रथम भाद्रपदमें पर्युषणा करना सो तो न्यायकी बात है परन्तु दो भाद्र होते भी पिछाड़ीके ७० दिन रखनेके लिये दूसरे भाद्रमें पर्युषणा करनेवालोंकी बड़ी भूल है क्योंकि पूर्वोक्त पाठमें कारण योगे ४९ वें दिन पर्युषणा करी है परन्तु ५१ वें दिन भी नहीं करी है इस लिये दो भाद्र होनेसे दूसरे भाद्रमें पर्युषणा करने वालोंको ८० दिन होते हैं इसलिये श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध बनता है और चार मासके १२० दिनका वर्षाकालमें ५० दिने पर्युषणा करनेसे पिछाड़ी ७० दिन रहनेका दोनु चूर्णिके पाठमें खुलासा पूर्वक कहा है सो तो इसीही ग्रन्थके पृष्ठ ९४ और ९९ वेंमें पाठ छप गये हैं इसलिये मास वृद्धि होते भी पिछाड़ीके ७० दिन रखनेका आग्रह करने वाले अज्ञानियोंकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पंक्तिमें गिनने योग्य है सो तो इस ग्रन्थको संपूर्ण पढ़नेवाले विवेकी सज्जन स्वयं विचार सकते हैं:—

और दो श्रावण तथा दो भाद्रपद और दो आश्विन हो तोभी आषाढ चौमासीसे ५० दिने दूसरे श्रावणमें अथवा प्रथम भाद्रमें पर्युषणा करनी चाहिये जिससे पिछाड़ी १०० दिने चौमासी प्रतिक्रमण करनेमें आवे तो कोई दूषण नहीं है किन्तु शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक है इसका विशेष विस्तार पहिलेही छप चुका है। और नवमे पृष्ठके मध्यमें तिथिसंबंधी लिखा है जिसकी तो समीक्षा आगे लिखुंगा परन्तु आठवें पृष्ठके अन्तमें तथा नवमे पृष्ठके आदि अन्तमें और दशवे पृष्ठकी आदिमें छट्ठी पंक्ति तक लिखा है कि— (जैसे फाल्गुन और आषाढकी वृद्धि होनेपर दूसरे फाल्गुनमें और दूसरे आषाढमें चौमासी प्रतिक्रमणादि करते हो, उसी तरह अन्य अधिक मासमें भी दूसरेहीमें करना वाजिब है। वैसा नहीं करोगे तो विरोधके परिहार करनेमें भाग्यशाली नहीं बनोगे। एक अधिकमासमाननेमें अनेक उपद्रव खड़े होते हैं और अधिकमासको गिनतीमें न लेनेवालेको कोई दोष नहीं है। उसी तरह तुम भी अधिक मासको निःसत्त्व मानकर अनेक उपद्रव रहित बनो।

इस रीतिकी व्यवस्था रहते हुए कदाग्रह न छूटे तो भले स्वपरम्परा पालो परन्तु स्वमन्तव्यमें विरोध न आवे ऐसा वर्त्तावकरना बुद्धिमानपुरुषोंका काम है। जैसे फाल्गुनके अधिक होनेपर दूसरे फाल्गुनमें नैमित्तिक कृत्य करते हो उसी तरह अन्य अधिकमास आनेपर दूसरे महीनेमें नैमित्तिक कृत्योंके करनेका उपयोग रक्खो कि जिसमें कोई वि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रोध न रहे। दो श्रावण हो, अथवा भाद्र हो तथा दो आश्विन होतेभी कोईविरोध नहीं रहेगा। तीर्थंकर महाराजकी आज्ञा सम्यक् प्रकारसे पलेगी)

ऊपरके लेखमें सातवें महाशयजीने अधिक मासको निःसत्व मान कर गिनतीमें निषेध किया तथा गिनतीमें लेनेवालोंको अनेक उपद्रव दिखाये और गिनतीमें नहीं लेनेवालोंको दूषण रहित ठहराये फिर मास वृद्धि होनेसे दूसरे मासमें नैमित्तिक कृत्य करनेका भी ठहराया इसपर मेरेको बड़ेही आश्चर्य्य सहित खेदके साथ लिखना पड़ता है कि सातवें महाशयजीके विद्वत्ताकी विवेक बुद्धि किस खाड़में चली गई होगी सो ऊपरके लेखमें विवेक शून्य होकर पूर्वापरका विचार किये बिनाही उटपटांग लिख दिया क्योंकि देखो सातवें महाशयजी यदि अधिक मासको निःसत्व मान करके गिनतीमें नहीं लेते होवे तबतो दो श्रावण, दो भाद्र, दो आश्विन, दो फाल्गुण और दो आषाढ़ मासोंका उन्होंका लिखनाही वन्ध्याके पुत्र समान हो जाता है और मास वृद्धि होनेसे दो श्रावणादि लिखते हैं तथा उसी मुजबही वर्त्ताव करते हैं तब तो अधिक मासको निःसत्व मान करके गिनतीमें निषेध करना (गिनतीमें नहीं लेना) सो ममजननीवंध्या समान बाल लीलाकी तरह होजाता है क्योंकि दो श्रावणादि लिखके उसी मुजब वर्त्ताव करना फिर मास वृद्धिकी गिनती निषेध करना यहतो विवेक शून्यके सिवाय और कौन होगा क्योंकि दो श्रावणादि लेखके उसी मुजब वर्त्ताव करते हैं इसलिये उसीकी गिनतीका निषेध करना तथा गिनतीमें लेने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वालोंकी अनेक उपद्रव दिखाने और आप दोनुं मासों को लिखके उसी मुजब वर्त्ताव करते भी, उसीको गिनतीमें न लेते हुये प्रत्यक्ष माया वृत्तिसे दूषण रहित बनना सो सब बाल जीवोंको कदाग्रहमें फंसाकर उत्सूत्र भाषणसे संसार परिभ्रमणका हेतु है सो तो निष्पक्षपाती तत्वज्ञ पुरुष स्वयं विचार लेवेंगे ;—

और मास वृद्धि होनेसे मास तिथि नियत सब नैमित्तिक कृत्योंको दूसरे मासमें करनेका सातवें महाशयजी ठहराते हैं सो भी अज्ञताका सूचक है क्योंकि वर्त्तमानमें मास वृद्धि होनेसे मास तिथि नियत कृत्य, आगे पीछे दोनों मासमें करनेमें आते हैं याने कृष्ण पक्षके तिथि नियत कृत्य प्रथम मासके प्रथम कृष्ण पक्षमें करनेमें आते हैं और शुक्ल पक्षके तिथि नियत कृत्य दूसरे मासके दूसरे शुक्ल पक्षके करनेमें आते हैं :—

मित्रवत् न्यायसे अर्थात्—एक नगरमें सज्जनादि गुनयुक्त व्यवहारिया रहता था उसीने अपने भोजनकी तैयारी करी उसी समय उसीके मित्रका आगमन हुआ तब दूसरा भोजन बनानेका अवसर न होनेसे अपने भोजनमेंसे आधा मित्रको दिया और आधा आपने ग्रहण किया,उसी दृष्टान्तके न्यायसे एक नगर रूपी संवत्सर उसीमें सज्जनादि गुनयुक्त व्यवहारियावत् मास उसीके भोजन रूपी नैमित्तिक कृत्य और अधिक मास रूपी मित्रका आगमन होनेसे आधे आधे नैमित्तिक कार्य बांट लिये समजो जैसे दो कार्त्तिक होवेंगे तब श्रीसंभवनाथस्वामीके केवल ज्ञान कल्याणकके श्रीपद्मप्रभुजीके जन्मकल्याणकके तथा दीक्षाकल्याणकके, श्रीने-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिनाथजीके च्यवन कल्याणकके और श्रीमहावीरस्वामीके मोक्षकल्याणकके उच्छव तपश्चर्यादिकार्य, तथा दीपमालिका (दीवाली) और उसीके सम्बन्धीकार्य प्रथम कार्तिक मासके प्रथम कृष्णपक्षमें करनेमें आवेंगे, दो चैत्र होनेसे श्रीपार्श्वनाथजीके केवल ज्ञानादि कार्य प्रथम चैत्रमें तथा श्रीवर्द्धमानस्वामीके जन्मादिके तथा ओलियों वगैरह दूसरे चैत्रमें और दो आषाढ होनेसे श्रीआदिनाथजीके च्यवनादिके कार्य प्रथम आषाढमें और श्रीवर्द्धमानस्वामीके च्यवनादिके कार्य तथा चौमासी वगैरह दूसरे आषाढमें इसी तरहसे सब अधिक मासोंमें समझना चाहिये।

और इस बातका विशेष खुलासा पांचवें महाशयजी न्यायरत्नजीके लेखकी समीक्षामें भी लिखनेमें आया है सो इसीही ग्रन्थके पृष्ठ २३४।२३५।२३६ में छप गया है सो पढ़नेसे विशेष निर्णय हो जावेगा ;—और मासवृद्धि होनेसे ऊपर मुजबही कल्याणकादि तपश्चर्या करनेके लिये खास सातवें महाशयजीकेही पूर्वज श्रीतपगच्छमें सुप्रसिद्ध श्रीविजयसेनसूरिजीने भी कहा है तथाहि श्रीसेनप्रश्ने सप्तसप्तति (७७) पृष्ठे यथा :—

प्रश्नः—चैत्रमास वृद्धौ कल्याणकादि तपः प्रथमेद्वितीये वा मासिकार्य्या।

उत्तरम्—प्रथमचैत्रासित द्वितीयचैत्रसित पक्षाभ्यां चैत्रमास सम्बन्धी कल्याणकादि तपः श्रीतातपादैरपि कार्यमाणं दृष्टमस्ति तेन तथैवकार्यमित्यादि।

और लौकिकजन भी दो भाद्रपद होनेसे श्रीकृष्णजीकी जन्माष्टमी प्रथम भाद्रपदके प्रथमपक्षमें मानते हैं तथा दो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आश्विन होनेसे श्राद्धपक्ष प्रथम आश्विनमें और दशहरा दूसरे आश्विनमें, इसी तरहसे सब अधिक मासोंके कारणसे मास नैमित्तिक कार्य आगे पीछे दोनोंमें मानते हैं। परन्तु सातवें महाशयजी नैमित्तिक कार्य केवल दूसरे मासमें ही करनेका लिख करके दो कार्त्तिक होवे तब दिवाली वगैरह कृष्णपक्षके नैमित्तिक कार्य दूसरे कार्त्तिकमें तथा दो पौष होवें तब श्रीचन्द्रप्रभुजीके, श्रीपार्श्वनाथजीके जन्म, दीक्षादि कल्याणक दूसरे पौषमें और दो चैत्र होनेसे श्रीपार्श्वनाथजीके केवल ज्ञान कल्याणकको दूसरे चैत्रमें इसी तरहसे कृष्णपक्षके नैमित्तिक कार्य भी दूसरे मासमें ठहराते हैं सो शास्त्रविरुद्ध होनेसे अज्ञताका कारण है क्योंकि ऊपरोक्त लेखानुसार ऊपर के कार्य प्रथम मासके प्रथम कृष्णपक्षमें होने चाहिये सो तो न्याय दृष्टि वाले विवेकी पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे;—

और उपरोक्त नैमित्तिक कार्योंके लेखसे दो भाद्रपद होनेसे पर्युषणा भी दूसरे भाद्रपदके दूसरे शुक्लपक्षमें सातवें महाशयजी ठहराते हैं सो भी निष्केवल अपनी अज्ञानता को प्रगट करते हैं क्योंकि मास नैमित्तिक कार्य अधिक मास होनेसे आगे पीछे दोनों मासमें करनेमें आते हैं परन्तु पर्युषणा वैसे नहीं हो सकती है क्योंकि पर्युषणा तो दिनोंके प्रतिबद्ध होनेसे असाढ़ चौमासीसे ५० दिनकी गिनतीसे अवश्य करके करनेका अनेक शास्त्रोंमें प्रगट पाठ है इसलिये दो भाद्रपद होनेसे पर्युषणा दूसरे भाद्रपदमें नहीं किन्तु प्रथम भाद्रपदमें ५० दिनकी गिनतीसे शास्त्रोंको प्रमाण करने वाले आत्मार्थियोंको करनी चाहिये और प्राचीन कालमें जैन पञ्चांगानुसार मास वृद्धि होनेसे श्रावणमें पर्यु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षणा करनेमे आतीथी तथा वर्तमानकालमें दो श्रावण होनेसे दूसरे श्रावणमें पर्युषणा करनेमें आती है इसलिये मासवृद्धि होतेभी भाद्रपद प्रतिबद्ध पर्युषणा नही ठहर सकती है किन्तु दिनोंके प्रतिबद्धही गिननेसे जहां व्यवहार से ५० दिन पूरे होवे वहांही करनी उचित है इतने परभी सातवें महाशयजी अपने कदाग्रहके हठवादसे शास्त्रोंके प्रमाणोंको छोड़ करके नैमित्तिक कार्यों की तरह दूसरे भाद्रपदमें पर्युषणा करनेका ठहराते हैं तोभी उन्होंको प्रत्यक्ष विरोध आता है सोही दिखावते हैं कि–खास सातवें महाशयजीके पूर्वजने अधिक मास होनेसे कृष्णपक्षके नैमित्तिक कार्य प्रथम मासके प्रथम कृष्णपक्षमें करनेका कहा है उसी मुजब सातवें महाशयजी पर्युषणाकरें तब तो पर्युषणाके आठदिनोके उच्छव का भङ्ग हो जावेगा और पर्युषणामे पहिले कृष्णपक्षके चार दिनोंके कार्य प्रथम भाद्रपदमें करने पड़ेगे फिर एक मास पर्यन्त मौन धारण करके पर्युषणामें पिछाड़ीके चार दिनोंके कार्य दूसरे भाद्रपदमे करें तब तो सातवें महाशयजीकी खूब विटंबना होजावे सो तत्वज्ञ विवेकी जन स्वयं विचार लेवेंगे;–

और ओलियें छठे महीने करनेमें आती है परन्तु अधिक मास होनेसे सातवें महीने करनेमें आती है तथा चौमासी चौथे महीने करनेमें आता है परन्तु अधिक मास होनेसे पांचवें महीने करनेमें आता है सो तो न्यायपूर्वक युक्ति की बात है परन्तु पर्युषणा तो आषाढ चौमासीसे ५० दिने अवश्य करके करनेका कहा है, इसलिये अधिक मास हो तो भी ५० वें दिनकी रात्रिको भी उल्लंघनकरनेसे मिथ्या-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्वकी प्राप्ति होती है तो फिर दूसरे भाद्रपदमें ८० दिने पर्यु-षणा करना सो तो कदापि श्रीजिनाज्ञामें नहीं आ सकता है सो भी विवेकी पाठकगण स्वयं विचार लेवेंगे;—

और शास्त्रानुसार भावपरंपरा करके तथा युक्ति पूर्वक और लौकिक व्यवहार मुजब अधिक मास होनेसे नैमित्तिक कार्य आगे पीछे दोनों मासमे करनेमें आते हैं सोतो सातवें महाशयजीके पूर्वजने भी लिखा है जिसका पाठ ऊपरही लिखनेमें आया है तथापि सातवें महाशयजी प्रथम मासको छोड़करके दूसरे मासमें नैमित्तिक कार्य करनेके लिये “वैसा नहीं करोगे तो विरोधके परिहार करनेमें भाग्य-शाली नहीं बनोगे” ऐसे अक्षर लिखके प्रथम मासमें नैमित्तिक कार्य करने वालोंको विरोध दिखाते हैं सो कोई भी शास्त्रके प्रमाण बिना अपनी मति कल्पनासे भोले जीवोंको भ्रममे गेरनेंके लिये अपने पूर्वजके वचनको भी विरोध दिखाने वाले सातवें महाशयजी जैसे कलियुगि विनीत प्रगट हुवे है सो तो अपने पूर्वजोंको खोटे कहके आप भले बनते हैं इसलिये आत्मार्थियोंको इन्हकी कल्पित बात प्रमाण करने योग्य नही है,—

और (कदाग्रह न छूटे तो भले स्वपरंपरा पालो) सातवें महाशयजीका यह भी लिखना भोले जीवोंको कदाग्रहमें फंसाकर मिथ्यात्वको बढ़ानेवाला है सो तो इसीही ग्रंथके पृष्ठ ३१९ से ३४२ तकका लेख पढनेसे मालूम हो सकेगा परंतु सातवें महाशयजीने ऊपरके लेखमें अपने अक्षरके भावका खून किया मालूम होता है क्योंकि सातवें महाशयजी बहुत वर्षोंसे काशीमें ठहर कर अपनी विद्वत्ता प्रगट कर रहे हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसलिये भोले जीव जानते है कि सातवें महाशयजीकी तरफसे पर्युषणा विचारका लेख प्रगट हुवा है से शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वकही होगा परन्तु उसी लेखको तत्वज्ञ पुरुषोंने देखा तो निष्केवल शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें तथा उत्सूत्रभाषणोंके संग्रह वाला और कुयुक्तियोंके संग्रह वाला होनेसे अज्ञानी जीवोंको मिथ्यात्वमें फंसाने वाला मालूम हुवा तब उसीकी शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक समीक्षा मेरेको भव्यजीवोंके उपकारके लिये इतनी लिखनी पड़ी है इसको बांचकर सातवें महाशयजीको अपनी विद्वत्ताके अभिमानसे और अभिनिवेशिक मिथ्यात्वके करणसे अपना मिथ्यापक्षके कल्पित कदाग्रहको छोड़कर सत्य बात ग्रहण करनी बहुतही मुश्किल होनेसे (कदाग्रह न छूटेतो भले स्व परंपरा पालो) ऐसे अक्षर लिखके कदाग्रहको तथा शास्त्रों के प्रमाण बिना कल्पित बातोंकी अंध परम्पराको पुष्ट करके भोले जीवोंको उसीमें फंसाये और आपनेभी उसीका शरणालेकरके अपना अन्तर मिथ्यात्त्वको प्रगट किया इस-लिये इस ग्रंथकारका सब सज्जन पुरुषोंको यही कहना है कि जो अल्पकर्मी मोक्षाभिलाषी आत्मार्थी होगा सोतो शास्त्रोंके प्रमाण विरुद्ध अपने अपने कदाग्रहकी अन्ध परंपराके पक्षका आग्रहमें तत्पर न बनके इस ग्रंथको सम्पूर्ण पढ़ करके पंचांगी प्रमाण पूर्वक युक्ति सहित सत्य बातोंको ग्रहण करेगा दुसरोंसे करावेगा और बहुल कर्मी मिथ्यात्वी होगा सोतो शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक सत्य बातोंको जानकरकेभी उसीको ग्रहण न करता हुआ अपने कदाग्रहकी अन्ध परम्परामे रहकर उसीको पुष्ट करने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के लिये और सत्य बातोंका निषेध करनेके लिये नवीननवी कुयुक्तियोंके विकल्प खड़े करके विशेष मिथ्यात्व फैलावेगा और दूसरे भोले जीवोंकोभी उसीमें फंसावेगा सोतो उसीकेही निवीड़ कर्मोंका उदय समझना परन्तु उसीमें शास्त्रकारका कोई दोष नहीं है इसलिये यहां मेरा खुलासा पूर्वक यही कहना है कि अधिकमासकी गिनती निषेध करनेवाले और गिनतीप्रमाण करनेवालोंको अनेक कुयुक्तियोंसे कल्पित दूषण लगानेवाले सातवें महाशयजी जैसे विद्वान् कहलाते भी निःकेवल अन्ध परम्पराके कदाग्रहमें पड़के बालजीवोंको भी उसीमें फंसानेके लिये अभिनिवेशिक मिथ्यात्वको सेवन करके श्रीतीर्थंकरगणधरादि महाराजोंकी और अपने पूर्वजोंकी आशातना करते हुवे पञ्चांगीके प्रत्यक्ष प्रमाणोंको छोड़कर फिर शास्त्रकार महाराजोंके विरुद्धार्थमें उत्सूत्र भाषणों करके खूब पाखन्ड फैलाया है और फैलारहेहैं जिससे श्रीतीर्थंकर महाराजकी आज्ञाको उत्थापन करते हैं इसलिये अधिक मासकी गिनती निषेध करनेवाले कदाग्राहियोंको मिथ्यादृष्टि निन्हवोंकी गिनतीमें गिनने चाहिये। यदि श्रीतीर्थंकर महाराजकी आज्ञाको अराधन करके आत्म कल्याणकी इच्छा होवे तो अधिक मासके निषेध करनेसम्बन्धी कार्योंका मिथ्या दुष्कृत देकर उसीकी गिनतीके प्रमाण मुजब वर्तों नहीं तो उत्सूत्र भाषणोंके विपाकतो भोगे बिना छूटने मुशकिल है;—

और फिरभी स्वपरम्परा पालने सम्बन्धी सातवें महाशयजीने लिखा है कि (स्वमंतव्यमे विरोध न आवे ऐसा वर्ताव करना बुद्धिमान पुरुषोंका काम है) इस लेखपर

भी मेरेको इतनाही कहना है कि—यह भी सातवें महाशय-जीका लिखना अज्ञताका सूचक है क्योंकि श्रीजिनेश्वर भगवान्‌का कथन करा हुआ श्रीजिन प्रवचन अविसंवादी होनेसे सब गणधरोंके सबगच्छोंकी एकही समाचारी होती है परन्तु इस वर्तमान कालमें तो सब गच्छ वालोंकी भिन्न भिन्न समाचारी है और शास्त्रोंके प्रमाण विनाही अन्ध परम्परासे कितनीही बातें चल रही है इसलिये शास्त्र प्रमाण बिनाकी द्रव्य परम्परा पालने वालोंको ता श्रीजिनाज्ञा विरुद्ध महान् विरोध प्रत्यक्ष दिखता है तथापि अपने अन्ध परम्परा के कदाग्रहको नही छोड़ते हैं फिर कुयुक्तियोंसे अपना कदाग्रहके मंतव्यको पुष्ट करके विरोध रहित (सातवें महाशयजीकी तरह) बनना चाहते है सो ता बुद्धिमान पुरुष नहीं किन्तु अभिनिवेशिक मिथ्यात्वी पक्के कदाग्रही कहे जाते हैं इसलिये अपने आत्म साधनमें विरोध नही चाहनेवाले तत्वज्ञ पुरुषोंको तो शास्त्र विरुद्ध अपनी परम्पराको छोड़ करके शास्त्रानुसार सत्य बातको ग्रहण करनाही परम उचित है;—

और पर्युषणा विचारके दशवें पृष्ठकी सातवीं पंक्तिसें दशवीं पंक्ति तक लिखा है कि (हित बुद्धिसे लिखे हुए विषय पर समालोचना करना हो तो भले करो किन्तु शास्त्र मार्गसे विपरीत न चलनेके लिये सावधानी रखना समा-लोचनाकी समालोचना शास्त्र मर्यादा पूर्वक करनेको लेखक तैयार है) सातवें महाशयजीके इस लेखपर भी मेरेको इतना ही कहना है कि—जैसे कितनेही ढूंढ़िये तेरहा पंथी वगैरह कदाग्रही मायावृत्तिवाले धूर्त लोग अपने कदाग्रहके पक्षको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बढ़ानेके लिये शास्त्रोंके आगे पीछेके सब पाठोंको छोड़ करके उसीके बीचमेंसे बिना सम्बन्धके अधूरे पाठके फिर उलट अर्थ करके उत्सूत्र भाषणोंसे तथा कुयुक्तियोंसे भोले जीवोंकी सत्य बातों परसे श्रद्धा भ्रष्ट करके अपने मिथ्यात्वके पाखण्डमें गेरके संसार वृद्धिका कारण करते हैं तो भी हितोपदेशसे अच्छा किया ऐसा अज्ञताके कारणसे वृथा पुकार करते हैं ।

तैसेही पर्युषणा विचारके लेखकने भी किया, अर्थात्– अपने कदाग्रहमें मुग्ध जीवोंको फंसानेके लिये श्रीनिशीथ चूर्णि वगैरह शास्त्रोंके आगे पीछेके सब पाठोंको छोड़ करके उसीके बीचमेंसे शास्त्रकारोंके विरुद्धार्थमें बिना सम्बन्धके अधूरे पाठ लिखके उलटे अर्थ करके उत्सूत्र भाषणोंकी तथा कुयुक्तियोंकी कल्पनायोका पर्युषणा विचारके लेखमें संग्रह करके भी अभिनिवेशिक मिथ्यात्वसे हित बुद्धिसे विषय लिखनेका ठहराते हैं सो कदापि नहीं ठहर सकता है क्योंकि हितबुद्धिके बहाने मिथ्यात्वके पाखण्डकी वृद्धिका कारण किया है इसलिये भव्यजीवोंके उपकारके लिये पर्युषणा विचारके लेखकी शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक समालोचना करनी मेरेको उचित थी सो करी है जिसपर भी शास्त्रमार्गसे विपरीत न चलनेके लिये सावधानी रखनेका सातवें महाशयजी लिखते हैं इसपर भी मेरेको इतनाही कहना है कि– खास आपही अभिनिवेशिक मिथ्यात्वसे (शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक अधिक मासकी गिनती प्रमाण तथा श्रावण वृद्धिसे ५० दिने दूसरे श्रावणमें पर्युषणा और मासवृद्धिसे १३ मासके क्षामणे वगैरह) सत्य बातोंको ग्रहण नहीं करते हुए अपने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कदाग्रहकी कल्पनाको स्थापन करनेके लियेऔर सत्यबातों का निषेध करनेके लिये पर्यु षणा विचारके लेखमें उत्सूत्र भाषणोंको और कुयुक्तियोंके विकल्पोंके प्रत्यक्ष मिथ्या गप्पोंको लिखके भी शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक लिखनेवालेको शास्त्र मार्गसे विपरीत न चलनेके लिये सावधानी दिखाते हैं सो तो प्रत्यक्ष धूर्ताचारोका लक्षण है इसको पाठक वर्ग स्वयं विचार लेवेंगे;—

और (समालोचनाकी समालोचना शास्त्र मर्यादा पूर्वक करनेको लेखक तैयार है) सातवें महाशयजीके इस लेख पर भी मेरेको इतनाहीँ कहना है कि—पञ्चांगीकी श्रद्धा रहित कदाग्रहमें आगेवान, अनिनिवेशिक मिथ्यात्वको सेवन करने वाले तथा अन्यायमें प्रवर्तने वाले होकरकेभी शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक मेरे सत्य लेखोंकी समालोचना आप कैसे कर सकोगे क्योंकि जो आप पञ्चांगीकी श्रद्धा वाले आत्मार्थी तथा न्यायमें प्रवर्तने वाले होवो तबतो जो जो मैंने पर्यु षणा विचारके लेखकी पंक्ति पंक्तिकी शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक समालोचना करके आपके लेखोंको उत्सूत्र भाषण रूप प्रत्यक्ष मिथ्या ठहराये है और सत्य बातोंको प्रगट करी है उसीको आद्यन्त पर्यंत पढ़के अपनी उत्सूत्र भाषणोंकी और प्रत्यक्ष मिथ्या लेखोंके भूलोंकी श्रीचतुर्विध संघ समक्ष आलोचना लेकर शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक सत्य बातोंको ग्रहण करो पीछे मेरे लेखकी समालोचना करनेकी आपमें योग्यता प्राप्त होवे तब मेरे लेखकी समालोचना करनेको तैयार होना चाहिये। इतने परभी पर्यु षणा विचार के सब लेखोंको आप सत्य समझते होवें तो पंक्ति पंक्तिके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सब लेखोंकी शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक सिद्धकर दिखावो नहीं दिखाओ तो उसीकी आलोचना लेकर सत्य बातोंको ग्रहण करो और अपने सब लेखोंको शास्त्रानुसार युक्ति पूर्वक सिद्ध नहीं करोंगे तथा अपनी भूलोंकी आलोचना भी नहीं लेवोंगे औरसत्य बातोंको ग्रहण भी नहीं करोंगे तबतक मैंरे लेखकी समालोचना करनेकी आपमें योग्यता प्राप्त नहीं हो सकेगी तथापि आप केवल अपनी विद्वत्ताकी शर्म-केमारे, लौकिक लज्जासे अपनी उत्सूत्र भाषणोंकी तथा प्रत्यक्ष मिथ्या (पर्युषणा विचारके) लेखोंकी भूलोंको छुपा करके शास्त्रा-नुसार युक्ति पूर्वक सत्य बातोंके सम्बन्धका सब लेखको छोड़ करके बिना सम्बन्धका अधूरा लेखकी कुयुक्तियोंके विकल्पों से समालोचना करके शास्त्र मर्य्यादा पूर्वकके बहाने मुग्ध जीवोंको मिथ्यात्वमें फंसानेके लिये पर्युषणा विचार के लेखकी तरह फिर भी उद्यम करोंगे तो उसीके भी सबकी समालोचना करके आपके अन्यायके पाषण्डको शांत करनेके लिये मैंरेको जलदीसे लेखनी चलानी ही पड़ेगी इसमें फरक नहीं समझना ;—

और पर्युषणा विचारके दशवें पृष्टकी ११ वीं पङ्क्तिसे दशवें पृष्टके अन्त तक लिखा है कि (पाठक महाशयोंको पक्षपात शून्य होकर निबन्ध देखने की सूचना दी जाती है स्नेहरागके वस होकर असत्यको सत्य नहीं मानना और गतानुगतिक नहीं बनना तत्त्वान्वेषी बनकर जल्दी शुद्ध व्यवहारको स्वीकार करके भगवान्‌की आज्ञानुसार भाद्र शुदी चौथके दिन सांवत्सरिक वगैरह पांच कृत्योंका आरा-धनकरके थोड़ेभवमें पञ्चमज्ञानके भागीबनो इसतरह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

का धर्मलाभ पाठकवर्गके प्रति लेखकदेताहै) इस रीतिसे सातवें महाशयजीने पर्युषणाविचारके लेखको पूर्ण किया है। अब ऊपरके लेखकी समीक्षा करते हैं कि—गच्छके पक्षपातका स्नेहरागसे असत्यको सत्यमान करके गतानुगतिक गड्डरीह प्रवाहवत् अन्ध परम्पराकोही मानने वाले मिथ्या दृष्टि कहे जाते हैं इसलिये तत्वान्वेषी बन करके शास्त्रानुसार युक्ति सम्मत सत्य बातोंका निर्णयपूर्व्वक ग्रहण करना सोआत्मार्थियोंका काम है इसलिये पक्षपात रहित पर्युषणा विचारके निबन्धको पढ़ा तो साफ मालूम हुआ कि पर्युषणा विचारके लेखकने अपनी अज्ञानताके कारणसे अपने गच्छका पक्षपात करके अन्ध परम्पराका मिथ्यात्वको बढ़ानेके लिये पं० हर्षभूषणजीकी धर्मसागरजीकी और विनयविजयजी वगैरहोंकी, उत्सूत्र भाषणोंकी कल्पनायोंको सत्य मानकर श्रीतीर्थंकर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञाको उत्थापन करके पर्युषणा विचारके लेखमें केवल शास्त्रोंके विरुद्ध उत्सूत्र भाषणोंकी कल्पनायें भरी हुई होनेसे गच्छ पक्षके मिथ्या आग्रह करनेवाले बालजीवोंको श्रीजिनाज्ञासे भ्रष्टकरके मिथ्यात्वमें फंसाने वाला और खास पर्युषणा विचारके लेखकको संसार वृद्धिका हेतु भूत प्रत्यक्ष देखनेमें आया इसलिये पर्युषणा विचारके लेखकके तथा अन्य आत्मार्थियोंके उपकारके लिये उसीकी समालोचना करके निष्पक्षपाती पाठक गणको सत्यबात दिखाई है सो इसको पढ़कर पर्युषणा विचारके लेखक वगैरह यदि आत्मार्थि होवेंगे तब तो गच्छके पक्षपातका आग्रहको न रखके असत्यको छोड़कर सत्यको ग्रहण करके अपनी भूलोंको सुधारेंगे और अपनी विद्वत्ताके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अभिमानी मिथ्यात्वी होवेंगे तो विशेष कदाग्रह बढ़ानेके लिये उद्यम करेंगे (उसीका उत्तर तो देनाही होगा) परन्तु इस ग्रन्थके प्रगट होनेसे सम्यक्त्वी अथवा मिथ्यात्वी की तो परिक्षा अच्छी तरहसे हो जावेगी :—

और सातवें महाशयजी अधिक मासके ३० दिनोंको गिनतीमें छोड़ करके दो श्रावण होते भी भाद्रपदमें पर्युषणा करना सो शुद्ध व्यवहारसे भगवानकी आज्ञामे ठहराते हैं सो तो सोनेकी भ्रांतिसे केवल पीतल ग्रहण करने जैसा करके अपनी पूर्ण अज्ञता प्रगट करते हैं क्योंकि अधिक मासकी गिनती छोड़नेसे तो अनन्त संसारकी वृद्धिका हेतुभूत मिथ्यात्वकी प्राप्ति होती है इसलिये अधिक मासकी गिनती निषेध करने वाले कदापि आज्ञाके आराधक नहीं बन सकते हैं किन्तु शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक और प्रत्यक्ष वर्तावसे अधिकमासके ३० दिनोंको गिनतीमे लेनेसे ही भगवानकी आज्ञाका आराधन हो सकता है इसलिये अधिकमासकी गिनती प्रमाण करना सोही तत्वान्वेषी शुद्ध व्यवहारको ग्रहण करनेवाले भगवानकी आज्ञाके आराधक हो सकेंगे इसलिये मासवृद्धि दो श्रावण होनेसे ५० दिनकी गिनतीसे दूसरे श्रावणमें पर्युषण पर्वमें सांवत्सरिक वगैरह कृत्योंका आराधन करनेवाले आत्मार्थी होनेसे पद्मम केवलज्ञानके भागी हो सकेंगे।

और अन्तमें पाठकवर्गको धर्म्मलाभ लेखकने लिखा है सो भी बुद्धिकी अजीर्णता प्रगट करी मालूम होती है क्योंकि पाठकवर्गमें तो पर्युषणा विचारके लेखको बांचनेवाले आचार्य, उपाध्याय, गणी, पन्यास तथा साधु साध्वी और लेखकसे दीक्षा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर्यायमें अधिक मुनिमयइली वगैरह सब कोई आजाते हैं इसलिये सबको धर्मलाभ देनेकी पर्युषणा विचारके लेखककी ताकत नहीं होते भी देता है तो बुद्धिकी अजीर्णतामें क्या न्यूनता रही है सो विवेकीजन स्वयंविचारसकतेहैं ; और सातवें महाशयजीने पर्युषणाविचारकेलेखमें अधिक मासकी गिनती निषेध करनेके लिये इतना परिश्रम किया है परन्तु अधिक मास किसको कहते हैं जिसकी भी तो उनकों मालूम नहीं है क्योंकि, देखो दुनियाके व्यवहारमें तिथि वृद्धिकी तरह दूसरेको अधिक मास कहते हैं। तथा जैनशास्त्रोंमें भी दूसरेकोंही अधिकमास कहा है॥ और लौकिक पञ्चाङ्गमें दोनों मासके मध्यमें संक्रान्ति रहितकों अधिकमास कहते है परन्तु दिनोंकी गिनतीमें दोनों मासके ६० दिनोंकों बराबर सब कोई लेते हैं इसलिये अधिक मासके दिनोंकी गिनती निषेध नहीं हो सकती है।

और सातवें महाशयजी अधिक मासके ३० दिनोंकों गिनतीमें नहीं लेनेका लिख करके भोले जीवोंको बहकाते हैं परन्तु खास आपही अधिक मासके ३०दिनोंको गिनतीमें ले करके सर्व व्यवहार करते हैं सो तो प्रत्यक्ष दीखता है तथापि अधिक मासके ३० दिनोंको गिनतीमें नहीं लेनेका लिख करके भोले जीवोंको बहकाते हैं सो तो 'ममजननी वन्ध्या'की तरह प्रत्यक्ष धूर्त्तताका नमूना है सो तो विवेकी जन स्वयं विचार लेवेंगे।

और सातवें महाशयजीने अधिकमासको नपुसक निःसत्व ठहराकर उसीको गिनतीमें छोड़देनेका लिखा है परंतु जब दो भाद्रपद होते हैं तब अधिक मास रूप दूसरे भाद्र-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पदमें खास आप पर्युषणा करते हैं और ८।१०।१५।२०।३०।४०।४५ दिनके उपवासोंकी तपस्याकी गिनतीमें अधिक मासके ३० दिनको बराबर गिनते हैं। तो अब पाठकवर्गको विचार करना चाहिये कि खास आप अधिक मासके दिनोंको तपश्चर्याकी गिनतीमें लेते हैं तथा अधिक मासमेंही पर्युषणा करते हैं तथापि उसीको नपुसक निःसत्व ठहराकर दृष्टि-रागी भोले भाले जीवोंको श्रीजिनाज्ञासे भ्रष्ट करते हैं सो अभिनिवेशिक मिथ्यात्व से कितने संसार वृद्धिका हेतु है सो तत्वज्ञ स्वयं विचार लेवेंगे,—

और पर्युषणा विचारका छपाई खर्चा और टपाल खर्चा श्रीयशोविजयजीकी पाठशालाके सम्बन्धसे लगा है सो तो यहांके दलीपसिंहजी जौहरीके पास काशी की पाठशालासे उदयराज कोचरका पोहचाई आया है उसी से तथा और भी कितनेही कारणोंसे सिद्ध होता है उसका विशेष विस्तार अवसर होनेसे पुनरावृत्तिमें लिखने में आवेगा और पर्युषणा बिचारका लेख काशीमें उसी पाठ-शालेसें प्रगट भी हुवा है तथापि सातवें महाशयजी अपनी निन्दाकेभयसे श्री यशोविजयजी की पाठशालाके नामसे पर्युषणा विचारके लेखको प्रगट न कराते उदयराज कोचरके नामसे प्रगट कराया और श्रीकाशी (वाणारसी) का नाम भी न लिखाते प्रत्यक्ष मिथ्या फलोधीका नाम लिखाके मायावृत्ति से फलोधीके नामसे प्रगट कराया तो फिर अनुमान ८० जगह उत्सूत्र भाषणोंवाला तथा १० जगह प्रत्यक्ष मिथ्यालेखवाला और सत्य बात का निषेध करके अपनी कल्पनाकी मिथ्या बातको स्थापने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

की कुयुक्तियों वाला और श्रीजिनाज्ञा मुजब वर्त्तने-वालोंको झूठी कल्पनासे दूषण लगाके अनन्त संसारका हेतु भूत मिथ्यात्वको बढ़ानेवाला पर्युषणा विचारके लेखमें अपना नाम प्रगट करते लज्जा आवे तो निज शिष्यविद्या विजयजीका नाम लिख देवें तोभी कुछ विशेष आश्चर्य नहीं है सो पाठकवर्ग स्वयं विचार लेवेंगे,---

और काशीनिवासी सातवें महाशयजी जैनतत्त्वदिग्दर्शन, आत्मोन्नति दिग्दर्शन, जैनशिक्षादिग्दर्शन वगैरह छोटे छोटे लेखोंको तो अपने नामसे प्रगट करते हैं तथा विद्या-विजयजीभी अपने गुरुजीका लम्बा चौड़ा नाम समेत जैन-पत्रमें अपना लेख प्रगट करते हैं और छोटी छोटी पुस्तकें भी श्रीयशोविजयजीकी पाठशालाके नामसे प्रगट करनेमें आती है परन्तु पर्युषणा विचारके लेखमें न तो सातवें महाशयजीका नाम लिखा तथा विद्याविजयजीनेभी अपने गुरुजीका नाम भी नहीं लिखा और अपना निवास ठिकाना भी नहीं लिखा और श्रीयशोविजयजीकी पाठशालाका नाम भी नहीं लिखा इसपर भी बुद्धिजन विचार करें तो स्वयं मालूम हो सकेगा कि सातवें महाशयजीने दुनियामें अपनी निन्दाकी शर्मके मारे गुपचुप प्रगट कराया है क्योंकि इतने विद्वान् ऐसे प्रसिद्ध आदमी होकरके भी गच्छके पक्षपातसे ऐसा अनर्थ क्यों किया इसका भेद न खुलनेके वास्ते पाठ शालाका तथा पाठशालाके उत्पादकका नाम नहीं लिखा है परन्तु विवेकी बुद्धिजनोंके आगे तो ऐसी धूर्तता नहीं छुप सकती है,--

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और जैनपत्रका अधिपति आठवा महाशय श्रावकनाम धारक भगुभाई फतेचन्दने सेप्टेम्बर मासकी २२वीं तारीख सन् १९०९ दूसरे श्रावण वदी १३, परन्तु हिन्दी भाद्रपद कृष्णा १३ वीर संवत् २४३५ के जैनपत्रका २३ वा अङ्ककी आदिमेंही 'पर्युषणा विषे विचार' नामसे जो लेख प्रगट करा है सो तो सातवें महाशयजीके पर्युषणा विचारके लेखको ही गुजराती भाषामें लिखके प्रगट किया है इसलिये जैनपत्रवालेके लेखकी तो सातवें महाशयजीके लेखकी तरह ऊपर मुजबही समीक्षा समझ लेना और जैनपत्रवाला संप संप पुकारता है परन्तु एकएककी निन्दा करके कुसंपकी वृद्धि करता है तथा गच्छके पक्षपातसे सत्य बातोंका निषेध करके अपना मिथ्यापक्षको स्थापन करनेके लिये उत्सूत्रभाषणोंसे दुर्गतिका रस्ता लेता है और अज्ञानी जीवोंकोभी वहांही पहुंचानेके लिये उत्सूत्र भाषणोंका संग्रह जैनपत्रमें प्रगट करता है और कान्फरन्स सुकृत भण्डारादिसे शासनोन्नतिके कार्योंमें विघ्नकारक गच्छोंके खण्डनमण्डनका झगड़ा एकवार नहीं किन्तु अनेकवार जैनपत्रमें उठाया है क्योंकि देखो पर्युषणा सम्बन्धी भी प्रथमही छठे महाशयजीकी मिथ्या कल्पनाका उत्सूत्र भाषणका लेखको जैनपत्रमें प्रगट करके झगड़ेकी नीव रोपन करी तथा सातवें महाशयजीके भी उत्सूत्र भाषणोंके संग्रहवाला लेखका भाषान्तर प्रगट करके उत्सूत्रभाषणोंके भयङ्कर विपाक लेनेके लिये दुर्गतिका रस्ता लिया और फिर भी छठे महाशयजी की तरफके श्रीखरतरगच्छ वालोंकी निन्दावाले तथा कोर्ट कचेरीमें झगड़ा लड़ाके दीर्घकाल पर्य्यन्त कुसंपकी वृद्धि करनेवाले दो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लेखोंको प्रगट करके अपनी पूर्ण मूर्खता प्रगट करी और पर्युषणा, सामायिक, कल्याणक, वगैरह बातोंका झगड़ा बढ़ाया है (जिसका निर्णय तो इस ग्रन्थके पढ़नेसे मालूम हो सकेगा) इसलिये जैनपत्रवाले आठवें महाशयको जो संसारवृद्धिसे दुर्गतिमें परिभ्रमणका भय होवे तो उत्सूत्र भाषणोंका मिथ्या दुष्कृत देकर श्रीचतुर्विध संघ समक्ष उसीकी आलोचन लेवे तथा फिर कभी खण्डन मण्डन करके दूसरों की निन्दासे गच्छका झगड़ा न उठावे और असत्यको छोड़कर सत्यको ग्रहण करे नहीं तो पक्षपातसे उत्सूत्रभाषणके विपाक तो भोगे बिना कदापि नहीं छुटेंगे ।

और मेरेको बड़ेही खेदके साथ बहुतही लाचार हो करके लिखना पड़ता है कि–अधिक मासके ३० दिनोंकी गिनती निषेध करनेवाले उत्सूत्र भाषक मिथ्या हठग्राही अभिनिवेशिक मिथ्यात्वियोंकी विवेक बुद्धि कैसी नष्ट हो गई है सो पूर्वापरका विचार किये बिनाही अधिक मासके ३० दिनोंमें सर्वकार्य्य करते भी पक्षपातके आग्रहसे गड्डरीह प्रवाहकी तरह मिथ्यात्वकी अन्ध परम्परासे एक एककी देखादेखी तात्पर्य्यार्थके उपयोग शून्य होकरके उसीकोही पकड़कर उसीकी पुष्टि करते हैं परन्तु श्रीजिनाज्ञाका उत्थापन करके बाल जीवोंको मिथ्यात्वमें फंसानेसे अपनी आत्मघातका कुछ भी भय नहीं करते हैं क्योंकि पञ्चाङ्गी प्रमाण पूर्वक और युक्ति सहित श्रीजिनेश्वर भगवानकी आज्ञाके आराधक सबी आत्मार्थी जैनाचार्य्य वगैरह अधिक मासके दिनोंकी गिनती प्रमाण करकेही प्राचीन कालमें पूर्वधरादि महाराज भी पर्युषणा करते थे तथा वर्तमानमेंभी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सब कोई आत्मार्थि जन अधिक मासकी गिनती प्रमाण करकेही पर्युषणा करते हैं और आगे भी ऐसेही करेंगे परन्तु शासननायक श्रीवर्द्धमानस्वामीके मोक्ष पधारे बाद अनुमान एक हजार वर्ष व्यतीत हुए पीछे उत्सूत्र भाषणोंमें आगेवान गच्छ कदाग्रही शिथिलाचारी धर्मधूर्त्त जैनाभास पाखण्डी चैत्य वासियोंने पञ्चाङ्गी प्रमाणपूर्वक प्रत्यक्षसिद्ध होते भी कितनीही सत्य बातोंको निषेध करके अपनी मति कल्पनासे उत्सूत्र भाषणरूप कुयुक्तियों करके श्रीजिनाज्ञाविरुद्ध कल्पित बातोंकी प्ररूपणा करी और अविसंवादी श्रीजैन शासनमें विसंवादके मिथ्यात्वको बढ़ाया था जिसमें शास्त्रानुसार तथा युक्ति पूर्वक अधिक मासकी गिनती तथा आषाढ़ चौमासीसे ५०दिने श्रीपर्युषणा पर्वका आराधन करनेका प्रत्यक्ष दिखते हुए भी लौकिक पञ्चाङ्गमें मासवृद्धि दो श्रावणादि होनेसे प्रत्यक्ष शास्त्रोंके तथा युक्तिके भी विरुद्ध होकर यावत् ८० दिने श्रीपर्युषणा पर्वका आराधन करनेका सरू करके श्रीजिनाज्ञाका उत्थापनसे मिथ्यात्व फैला था और निदूषण बननेके लिये अधिक मासकी गिनती निषेध करके उत्सूत्र भाषणोंकी कुयुक्तियोंसे अज्ञानीजीवोंको अपने मिथ्यात्वकी भ्रमजालमें फसानेके लिये धर्मधूर्ताई करनेमें कुछ कम नहीं किया था सो तो श्रीसंघपट्टककीव्याख्याओंके अवलोकनकरनेसे अच्छी तरहसे मालूम हो सकताहै ।

और कितनेही भारी कर्मे प्राणी तो उपरोक्त मिथ्यात्वकी भ्रमजालमें फसकर अन्धपरम्परासे उसीकोही पुष्ट करते हुए बाल जीवोंको अपने फंदमें फसाते रहते थे उसी मिथ्यात्वकी अन्धपरम्पराकेही अनुसार पं० श्रीहर्षभूषणजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और धर्मसागरजी वगैरह जो जो लेख लिख गये हैं और वर्त्त-मानमें 'शास्त्र विशारद् जैनाचार्य्य' की उपाधिधारक सातवें महाशयजी श्रीधर्म विजयजी जैसे प्रसिद्ध विद्वान् कहलाते भी उसी अन्धपरम्परासे मिथ्यात्वके कदाग्रहको पकड़कर अज्ञ जीवोंको उसीमें फसानेके लिये उसीको विशेष पुष्ट करनेका उद्यम करते हैं परन्तु श्रीजिनेश्वर भगवानकी आज्ञाका उत्थापन करके प्रत्यक्ष पञ्चाङ्गी प्रमाण विरुद्ध प्ररूपणा करते हुए अभिनिवेशिकमिथ्यात्वसे सज्जन पुरुषोंके आगे हास्य काहेतु करनेका कारण करते भी कुछ लज्जा नहीं पाते हैं सो तो इस कलियुगमें पाखण्ड पूजा नामक अच्छेरेका प्रभा-वही मालूम पड़ता है। इसलिये श्रीजिनाज्ञाके आराधक आत्मार्थी पुरुषोंको ऐसे उत्सूत्र भाषकोंकी कुयुक्तियोंके भ्रममें न पड़ना चाहिये और निष्पक्षपातसे इस ग्रन्थको आदिसे अन्त तक बांचकर असत्यको छोड़के सत्यको ग्रहण भी करना चाहिये परन्तु गच्छके आग्रहसे उत्सूत्र भाषणकी बातोंको पकड़कर उसीमें नहीं रहना चाहिये।

और भी श्रीधर्मसागरजीकी तथा श्रीविनयविजयजी-की धर्मधूर्ताई का नमूना पाठक वर्गको दिखाहूं, कि देखो श्रीविनयविजयजीने श्रीलोकप्रकाश नामा ग्रन्थ बनाया है सो प्रसिद्ध है उसीमें अधिक मासकी गिनती प्रमाण करी है अर्थात् समयादि सुक्ष्मकालसे आव-लिका मुहूर्तादिककी व्याख्या करके ३० मुहूर्तोंका एक अहो-रात्रि रूप दिवस, सो १५ दिवसोंसे एकपक्ष, दो पक्षोंसे एकमास बारह मासोंसे चन्द्रसंवत्सर और अधिक मास होनेसे तेरह मासोंका अभिवर्द्धित संवत्सर इन पांचों संवत्सरोंसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एक युगके १८३० दिनोंके ५४९०० (चौपन हजार नौ सौ) मूहूर्तोंकी व्याख्या श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रके अनुसार श्रीविनय विजयजी लोकप्रकाशमें स्वयं लिखते हैं तैसेही श्रीधर्मसागरजीने भी श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिकी वृत्तिमें ऊपर मुजबही पांचवर्षोंके दो अधिकमासोंके दिनोंकी तथा पक्षोंकी और महूर्त्तोंकी गिनती पूर्वक एक युगके १८३० दिनोंके ५४९०० मुहूर्त्त खुलासा पूर्वक लिखे हैं। तथापि वडेही खेदकी बात है कि इन दोनों महाशयोंने गच्छकदाग्रह का पक्ष करके उत्सूत्रभाषणसे संसार वृद्धिका भय न रक्खा और बालजीवोंको श्रीजिनाज्ञाकी सत्य बात परसे श्रद्धाभ्रष्ट करनेके लिये श्रीकल्पसूत्रकी कल्पकिरणावलीवृत्तिमें तथा सुखबोधिका वृत्तिमें काल चूलाके बहानेसे दोनों अधिक मासके ६० दिनोंकी गिनती निषेध करके अपने स्वहस्थे एक युगके दो अधिक मासोंके दिनोंकी मुहूर्त्तोंकी गिनती पूर्वक १८३० दिनोंके ५४९०० मुहूर्त्तोंको श्रीतीर्थंकर गणधर महाराजकी आज्ञानुसार लिखे हैं उसीका भङ्गकारक दो अधिक मासके ६० दिनोंके अनुमान १८०० मुहूर्त्तोंके कालका व्यतीत होना प्रत्यक्ष होते भी उसीको गिनती में से सर्वथा उडादेकर श्रीतीर्थंकरगणधर महाराजके कथनका प्रमाणमें भङ्ग डालने वाले लेख लिखते पूर्वापरका विवेकबुद्धिसे कुछ भी विचार न किया और उत्सूत्र भाषणोंका संग्रह करके कुयुक्तियोंसे अज्ञानीजीवोंको भ्रमाने का कारण किया इसलिये इन दोनों महाशयोंकी धर्मधूर्ताईमें कुछ कम होवे तो न्यायदृष्टिवाले विवेकीसज्जन स्वयं विचार लेवेंगे।

और इन दोनों महाशयोंके अधिक मासके निषेध

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्बन्धी पूर्वापरविरोधि (विषमवादी) तथा उत्सूत्र भाषणोंकी कुयुक्तियोंवाले और सम्यक्त्वसे भ्रष्ट करके मिथ्यात्वमें गेरनेवाले लेखोंको दीर्घ संसारीके सिवाय और कौन मान्य करके श्रीतीर्थंकर गणधरादि महाराजोंकी आशातनाकारक उलटा बर्ताव करेगा सो भी तत्वज्ञ पुरुष न्याय दृष्टि वाले सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे—

और अधिक मासके निषेधक श्रीधर्मसागरजी श्रीजयविजयजी श्रीविनयविजयजी और पं० श्रीहर्षभूषणजी वगैरहोंने जो जो गच्छकदाग्रही दृष्टिरागी मुग्ध जीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें गेरनेके लिये उत्सूत्र भाषणोंका और कुयुक्तियोंका संग्रह करके अपना संसार वृद्धिका कारण करते हुए अपने ऐसे कल्पित लेखोंको सत्य माननेवाले अपने पक्षग्राहियोंका भी संसार वृद्धिका कारण कर गये हैं सो इन सब उत्सूत्र भाषणरूप कल्पित कुयुक्तियोंके लेखोंका निर्णय तो इस ग्रन्थमें अनुक्रमसे सातों महाशयोंके लेखोंकी समीक्षामें होगया है सो इस ग्रन्थको आदिसे अन्त तक पक्षपात रहित होकर न्याय दृष्टिसे पढ़नेसे सब बातोंका अच्छी तरहसे निर्णय मालूम होजावेगा। तथापि जो पं० श्रीहर्षभूषणजीने पर्युषणास्थिति नामक लेख में जो जो उत्सूत्र भाषणोंका और कुयुक्तियोंका संग्रह करके मिथ्यात्वका कारण किया है उसीका दिग्दर्शनमात्र थोड़ासा नमूना इस जगह पाठकगणको दिखाता हूं यथा—

श्रीसीमंधरमरहंतं नत्वापर्युषणास्थितिं ब्रुवेवर्तितमाद्रस्य व्यक्तं युक्त्यागमक्रमैः॥ नन्वशीत्यादिनैः पर्युषणापर्वसिद्धान्ते क्व प्रोक्तमस्तीत्येवंचेत्तर्हि पंच मासात्मकं वर्षा

चतुर्मासिकमपि सिद्धांते कुवर्वर्त्ति सत्यं परमधिकमासोऽस्मा भिर्नगण्यमानोस्ति एवं चेत्तर्हि अस्माभिरपि यदाधिकः श्रावणो भाद्रपदोवावर्द्धते तदा नगण्यते तेनाशीतिदिनानि पञ्चाशद्दिनान्येवेतीत्यादि ।

अब पं० हर्षभूषणजीके ऊपरका लेखको तत्वज्ञ पुरुष निष्पक्षपातसे विचारेंगेतो प्रत्यक्षपने उनके भ्रमजालका परदा खुल जावेगा क्योंकि युक्ति और आगम क्रमके बहाने उत्सूत्र भाषणाका संग्रह करके कुयुक्तियोंकी भ्रमजालमें बालजी-वोंको गेरनेका कारण किया है सो तो प्रत्यक्ष दिखता है क्योंकि ८० दिने पर्युषणा करनेका किसी भी शास्त्रमें नहीं कहा है परन्तु श्रावण भाद्रपदादि अधिक होनेसे पंचमासके १० पक्षोंके १५० दिनका अभिवर्द्धित चौमासा तो प्रत्यक्षपने अनुभवसे देखनेमें आता है इसलिये निषेध नहीं हो सकता है और अधिक मासको गिनतीमें निषेध करके दूसरे श्रावण के ३० दिनोंको गिनतीमें छोड़कर ८० दिनके ५० दिन अपनी मतिकल्पनासे बनाते हैं सो निष्केवल उत्सूत्र भाषण है क्यों कि शास्त्रानुसार तथा युक्तिपूर्वकसे तो ८० दिनके ५० दिन कदापि नहीं हो सकते हैं सो तो इस ग्रन्थको पढ़नेवाले स्वयं विचार लेवेंगे ।

और फिर आगे । ननु 'अभिवड्ढियंमि वीसा इयरेसु सवीसइमासो' निशीथभाष्ये इत्यत्राधिकमासोगणितो-ऽस्ति । इस तरहसे अधिक मासकी गिनती सम्बन्धी पूर्वपक्ष उठाकर उसीका उत्तरमें–'आसाढ़ पुण्णिमाएपविठा' इत्यादि निशीथ चूर्णिका अधूरा पाठसे अज्ञात पर्युषणाकी और 'वीसदिणेहिंकप्पो' इत्यादि बिनाही प्रसङ्गकी विच्छेद

कल्पसम्बन्धीबातलिखके बालजीवोंको भ्रममेंगेरें और अधिक मासकी गिनती निषेध दिखा कर अपनी विद्वत्ताकी चातुराई विवेकी तत्वज्ञपुरुषोंके आगे हास्यकी हेतु रूप प्रगट करी है क्योंकि निशीथचूर्णिमेंही खास अधिक मासको गिनती प्रमाण करीहै और अज्ञात तथा ज्ञात पर्युषणा सम्बन्धी विस्तारसे व्याख्या की है सो पाठ भावार्थ सहित तीनों महाशयों के लेखों की समीक्षामें इसही ग्रन्थके पृष्ठ ९५ से १०४ तक छपगयाहै इसीलिये आगे पीछेके प्रसंग वाले सब पाठको छोड़कर विना सम्बन्धके अधूरे पाठसे बाल जीवोंको भ्रममें गेरने सोभी उत्सूत्र भाषण है।

और आगे फिर भी अधिक मासमें क्या क्षुधा नहीं लगतीहै तथा सूर्योदय नही होताहै और देवसिक पाक्षिक प्रतिक्रमण, देवपूजा मुनिदानादि क्रिया शुद्ध नहीं होतीहै सो गिनतीमें नहीं लेतेहो इस तरहका पूर्वपक्ष उठाकर उसीका उत्तरमें पांचमासके चौमासेमें तुमभी चारमास कहतेहो इत्यादि अज्ञानतासे प्रत्यक्ष मिथ्या और उटपटांग लिखाहै सोतो वृथाही हास्य का हेतु कियाहै। और श्रीउत्तराध्ययनजीके २६ अध्ययनका पौरूष्याधिकारे मासवृद्धिके अभाव सम्बन्धी सविस्तर पाठको छोड़कर "असाढमासे दुप्पया" सिर्फ इतनाही अधूरा पाठ लिखके उत्सूत्र भाषणसे भोले जीवोंको भ्रमानेका कारण कियाहै इसका निर्णयतो तीनों महाशयों के लेखोंकी समीक्षामें इसही ग्रन्थके पृष्ठ १३६। १३७ में छपगयाहै।

और श्रीआवश्यक निर्युक्तिकी गाथाका तात्पर्यार्थको समझे बिना तथा प्रसंगकी बातको छोड़कर 'जइफुल्ला'

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इत्यादि गाथा लिखके उत्सूत्र भाषणसे मिथ्यात्वका कारण कियाहै जिस का निर्णयतो चौथे और सातवें महाराजजी के लेखकी समीक्षामें इसही ग्रन्थके पृष्ठ २०५ से २१० तक और ३८५ से ३९५ तक सविस्तार छपगयाहै सो पढ़नेसे हर्षभूषणजी की शास्त्रार्थ शून्य विद्वत्ताका दर्शन अच्छीतरहसे होजावेगा ।

और श्रीनिशीथ तथा श्रीदशवैकालिकवृत्तिके नामसे चूलासंबंधीकल्पित अधूरा पाठ लिखके उसीपर अपनी मतिसे कुविकल्प उठाकर कालचूलाके बहाने अधिक मासकी गिनती उत्सूत्र भाषणरूप निषेध करके बाल जीवोंके आगे धर्म ठगाई फैलाईहै जिसका निर्णयतो 'जैनसिद्धांत समाचारी'के लेखकी समीक्षामें इसही ग्रन्थ के पृष्ठ ५८ से ६५ तक और पांचवें महाशयजी के लेखकी समीक्षामें पृष्ठ २० से २२३ तक छपगयाहै सो पढनेसे मालूम होजावेगा। और रत्नकोष ज्योतिष् ग्रन्थका १ श्लोक लिखके अधिक मासमें मुहूर्त नैमित्तिक बिवाहादि संसारिक कार्य नहीं होनेका दिखाकर विनामुहूर्तका पर्युषणादि धर्म कार्यभी अधिकमासमें नहोने का दिखाया सोभी उत्सूत्र भाषणहै इस बातका निर्णय चौथे महाशयके लेखकी समीक्षामें पृष्ठ १९४ से २०४ तक छप गयाहै ।

और भी इसीही तरहसे अधिक मासके ३० दिनों को गिनतीमें निषेध करके ८० दिनके ५० दिन बालजीवोंके आगे सिद्ध करनेके लिये कुयुक्तियोंके विकल्पोंका और उत्सूत्र भाषणोंका संग्रह करके भी फिर जोजो मासवृद्धिके अभाव सम्बन्धीश्रीपर्युषणा कल्पचूर्णि, निशीथचूर्णि,पर्युषणा कल्पटिप्पण और संदेहविषौषधिवृत्तिके सविस्तार वाले सब पाठों को छोड़करके उसीके पूर्वापरका संबंध विनाके और

शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय विरुद्ध अधूरे अधूरे पाठोंको लिखके दृष्टिरागी गच्छकदाग्रही विवेकशून्य मुग्ध जीवोंके आगे मास वृद्धि दो श्रावण होतेभी भाद्रपदमें पर्युषणा ठहराकर दिखानेका प्रयास किया जिसका निर्णय तो इस ग्रन्थमें अच्छीतरहसे सविस्तार शास्त्रकार महाराजोंके अभिप्राय सहित शास्त्रोंके संपूर्ण पाठार्थों पूर्वक लिखनेमें आयाहै सो पढनेसे निष्पक्षपाती सज्जन स्वयं विचार करलेवेंगे ।

औरभी सुप्रसिद्ध श्रीकुलमंडनसूरिजीने विचारामृत संग्रह नामा प्रकरणमें पर्युषणाधिकारे पृष्ठ १३ में अधिक मासकी गिनती निषेध करनेके लिये जो लेख लिखाहै उसीका भी नमूना यहाँ दिखाताहूं । यथा—

युगतृतीय पंचम वर्ष संभावीयोऽधिकमासः स्यात् मासौलोके लोकोत्तरेच चतुर्मास सांवत्सरिकादि प्रमाण चिंतायांचनाप्युपयुज्यते, लोके दीपोत्सवाक्षयतृतीया भूमिदोहादिषु शुद्ध द्वादश मासांतर्भाविषु लोकोत्तरेच-चतुर्म्मासिकेषु ‘आसाढमासे दुप्पया’ इत्यादि पौरुषी प्रमाण चिंतायां पदयातायण प्रमाणयां वर्षांतर्भावि जिनजन्मादि कल्याणकेषु वृद्धावासस्थित स्थविर नवविभागक्षेत्र कल्पनायांच नायंगण्यते कालचूलत्वादस्य । तथाहि । निशीथे दशवैकालिकवृत्तौच, चूला चातुर्विध्यं द्रव्यादिभेदात् तत्र द्रव्य चूला ताम्रचूलादि क्षेत्रचूला मेरोश्चत्वारिंशद्योजन प्रमाण चूलिका कालचूला युगेतृतीय पंचमवर्षयोरधिक मासकः भावचूलातु दशवैकालिकस्यचूलिकाद्वयं । नच चूलाचूलावतः प्रमाण चिंतायां पृथक् व्याप्रियते । यथा । लक्षयोजन प्रमाणस्यमेरोः प्रमाणचिंतायां चूलिका प्रमाणमिति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यश्चाधिक मासको जनशास्त्रे पौषाषाढरूपः लौकिक शास्त्रे-
षु चैत्राद्याश्विनमासांत सप्तमासव्यवस्थित मासरूपोऽभिवर्द्धित
मासौवव चित्कृत्येप्रयुज्यते । यदुक्तं रत्नकोशाख्य ज्योतिष-
शास्त्रे । यात्राविवाहमंडनमन्यान्यपि शोभनानि कर्म्माणि
परिहर्त्तव्यानिबुधैः सर्वाणिनपुंसकेमासि ॥ जति अहिमासओ
पडितो तो वीसतीरायं गिहिणायं न कज्जति किं कारणं अथ
अहिमासओ चेव मासो गणिज्जति तोवीसाएसमं सवीसति
रातो मासोभवतिचेव इति बृहत्कल्प चू० पत्र २९५ उ०३ ।
पुनः । जम्हा अभिवढ्ढिय वरिसे गिम्हेचेवसोमासो अइक्कन्तो
तम्हावीस दिणा अणभिग्गहियंकीरइ निशी० चू०उ० १० पत्र
३१७ बृहत्कल्प निशीथ चूर्णिक्रद्भ्यामपिस्वाभिगृहीतगृहस्थ
ज्ञातावस्थान व्यतिरिक्तेषु कार्येषु क्वाप्यधिकमासको
नामग्रहणं प्रमाणीकृतो न दृश्यते- इति ।

अब श्रीकुलमंडनसूरिजी कृत उपरके लेखको देखकर
मेरेको बडेही अफसोसके साथ लिखना पड़ता है कि—ऐसे
सुप्रसिद्ध विद्वान् पुरुष आचार्यपद्केधारक होकरके भी स्वगच्छा
ग्रहका पक्षपात करके उत्सूत्र भाषणोंसे संसारवृद्धिकाभय न
करते हुवे कुयुक्तियोंकासंग्रहसे बालजीवोंको मिथ्यात्वके भ्रममें
गेरनेका उद्यम किया है सो श्रीअनन्त तीर्थंकर गणधरादि
महाराजोंके वचनका उत्थापनरूप है क्योंकि पांच वर्षोंके
एकयुगमें तीसरे तथा पांचवे वर्ष जो पौष तथा आषाढको
अधिकमास जैनशास्त्रोंमेंकहाहै उसीकोही मंदिरोंके शिखर
वत् तथा मेरुचूलिकावत् और दशवैकालिकजी आचा-
रांगजी की चूलिकावत् कालचूलाको उत्तम श्रेष्ठ ओपमा
देकर दिनोंमें पक्षोंमें मासोंमें गिनती करके वर्ष तथा युगादि

५६

कका प्रमाणश्रीअनन्ततीर्थंकर गणधरादि महाराजोंने कहाहै तथा श्रीबृहत्कल्पचूर्णि श्रीनिशीथचूर्णिमें निश्चय अधिक मासको गिन करके वीशदिने ज्ञात पर्युषणा कहीहै तथापि श्रीकुलमंडनसूरिजीने पर्युषणाधिकारे कालचूलाके बहाने अधिक मासको गिनतीमें निषेध किया सो श्रीअनन्त तीर्थंकर गणधरादि महाराजों की आज्ञा उत्थापन रूप उत्सूत्र भाषण है ।

और 'आसाढमासे दुप्पया,संबंधी तो उपरमेंही हर्षभूषणजीके लेखका उत्तर में सूचना करनेमें आगईहै । और स्थिवीर कल्पियोंके अधिकमासहोतेभी नवविभागक्षेत्र याने नवकल्पि विहारकालिखासोभी प्रत्यक्षमिथ्या है क्योंकि १० कल्पिविहारप्रत्यक्षपने होताहै इसका निर्णय तथा दीवाली अक्षय तृतीयादि लौकिक संबंधी लिखाहै जिसका निर्णय और श्रीजिनेश्वर भगवानूके कल्याणक संबंधी लिखा है जिसका भी निर्णय तो सातवें महाशयजीके लेखकी समीक्षामें होगया है ।

और एक युगके दोनों अधिक मासोंके दिनोंकी गिनती पूर्वक १८३० दिनोंमें सूर्यचारके दश [१०] अयण श्रीतीर्थंकरगणधरादि महाराजोंने कहेहैं सो श्रीचंद्रपन्नति श्रीसूर्यपन्नति श्रीजंबूद्वीपपन्नति श्रीज्योतिषकरंडपयन्न तथा इनही शास्त्रोंकी व्याख्यओंमें और श्रीबृहत्कल्पवृत्ति, मंडल प्रकरणादि अनेकशास्त्रमें प्रगटपाठहै और लौकिकमेंभी अधिकमासहोनेसे उसीकेदिनोंकीगिनतीपूर्वक १८३ दिने दक्षिणायणसे उत्तरायणमें सूर्यमंडलहोनेका प्रत्यक्षदेखनेमें आता है इसलिये ६ मासके अयणकाप्रमाणमें अधिकमास नही गिनने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संबंधी श्रीकुलमंडनसूरिजीका लिखना प्रत्यक्ष मिथ्या है।

और जैन पंचांगानुसार पौष तथा आषाढ की वृद्धि होती थी तबभी उसीके दिनोंको पर्युषणादि सब धर्म कार्यों में गिनती करतेथे सोतो उपरमेंही श्रीवृहत्कल्पचूर्णि श्रीनिशीथचूर्णिके पाठसे प्रत्यक्षदिखता है परन्तु वर्तमानकाले जैन पंचांगके अभावसे लौकिक पंचांगानुसार वर्ताव करने में आताहै उसीमें चैत्रादि मासोंकी वृद्धि होतीहै उसी के ३० दिनोंमें दुनियांका सब व्यवहार तथा धर्म व्यवहार प्रत्यक्षपनेहोताहै इसलिये उसीके दिनोंकी गिनती निषेध नहीं होसकती है तथापि जो संक्रांति रहित मलमास केभरोसे अधिक मासके दिनोंकी गिनती निषेध करतेहै सो अपनी पूर्ण अज्ञानतासे भोले जीवोंको गच्छकदाग्रहमें गेरनेका कार्य करतेहैं क्योंकि संक्रांति रहित अधिक मास को मलमास कहा है तैसेही दो संक्रांति वाले क्षय मासको भी मलमास कहा है परन्तु अधिक मासके तथा क्षय मास के दिनोंकी गिनती बरोबर करतेहैं। तथाहि कमलाकर भट विरचित (लौकिक धर्मशास्त्र) निर्णय सिंधीमामा ग्रंथे ।

तत्र संक्षेपतःकालः षोढा—अब्दोयनमृतुर्मासः पक्षदिवस इति ॥ पुनस्तत्र वक्ष्माणैः श्रावणादि द्वादश मासैक्तद्बद् । मलमासेतु उति षष्टिदिनात्मकः एको मासो द्वादश मासत्वमविरुद्धमिति ॥ तथाच व्यासः षष्टयातु दिवसैर्मासःकथितो बादेरायणैः—इति ॥ अथ मलमास क्षयमास निर्णय। अथ मल मासः तत्रैकमात्र संक्रांति रहितःसितादिश्चांदो मासो मल मासः एकमात्र संक्रांति राहित्यमसंक्रांतित्वेन संक्रांति द्वयत्वमव भवतिइति। मल मासो द्वेधा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिक मासः क्षयमासश्चेति । तदुक्तं काठक गृह्ये । यस्मिन् मासे न संक्रांति । संक्रांति द्वयमेववामलमासः। सविज्ञेयो मासः स्यात् त्रयोदशः॥ तथा चोक्तं हेमाद्रि नागर खंडे । नभो वा नभस्योवा मलमासो यदा भवेत् सप्तमःपितृ पक्षस्यादन्यत्रैवतु पंचमः ॥

अब देखिये उपरोक्त शास्त्रोंके पाठोंसे लौकिक शास्त्रों में अधिक मासके दिनोंकी गिनती करीहै इसलिये निषेध करने वाले गच्छकदाग्रहसे अज्ञानता करके प्रत्यक्ष मिथ्या भाषण करने वाले बनतेहैं सोतो पाठक वर्ग स्वयं विचार सकतेहैं ।

और अधिक मासको बारह मासोंसे जूदा गिनके तेरह मासोंका वर्षकहे तथा अधिक मासको जूदा न गिनके संयोगिक मासके साथ गिने तो ६० दिवसका महिना मान के बारह मासका वर्षकहे तोभी तात्पर्यार्थसेतो दोनों तरह करके अधिक मासके दिनोंकी गिनती लौकिक शास्त्रोंमें प्रगटपने कही है इस लिये निषेध नही होसकतीहै ।

और संक्रांति रहित अधिक मासको मलमास कहा तैसेही दो संक्रांति वाले क्षयमासको भी मलमास कहाहै सो चैत्रसे आश्विन तक सात मासोंमें से हरेक अधिक मास होतेहैं तैसेही कार्तिकसे पौष तक तीनमासोंमें से हरेक मास क्षयभी होतेहै और जैसे तीसरे वर्ष अधिक मास होताहै सो प्रसिद्धहै तैसेही कालांतरमें क्षय मासभी होताहै सो लौकिक शास्त्रोंमें प्रसिद्धहै ।

औरमासवृद्धिकेअभावमें आषाढ़चौमासीसेपंचम पितृपक्ष होताहै परंतु श्रावण भाद्रपद मासकी वृद्धि होनेसे अधिक मासके दोनोपक्षोंकी गिनती पूर्वक सप्तम पितृपक्ष लिखा है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और अधिक तथा क्षय संज्ञा वाले मास समुच्चयके व्यव-हारमें तो संयोगिक मासके सामिल गिनेजातेहै परंतु भिन्न भिन्न व्यवहारमें तो दोनों मासोंके दिनोंकी गिनती जूदी जूदी करनेमें आतीहै सो अधिक मास संबधी तो उपरमें तथा इसग्रन्थमें लिखनेमें आगयाहै परंतु क्षयमास संबंधी थोड़ा सा लिखदिखाताहूं कि जब कार्तिक मासका क्षय होवे तब उसीके दिनोंकी गिनतीपूर्वक ओलियोंकी आश्विन पूर्णिमा से १५ दिने दीवाली तथा श्रीवीरप्रभुके निर्वाण कल्याणक तथा २० वे दिन ज्ञानपंचमी और ३० वें दिन कार्तिक पूर्णिमा सो चौमासा पूरा होनेसे मुनि विहार होताहै इस तरहसे मार्गशीर्ष पौषका भी क्षय होवे तब मौन एकादशी, पौष दशमी वगैरह पर्व तथा और श्रीजिनेश्वर भगवान् के जन्मादि कल्याणकोंकी तपश्चर्यादि कार्य करनेमें आतेहैं ।

अब श्रीजिनेश्वर भगवान्की आज्ञाके आराधक सज्जन पुरुषों को न्याय दृष्टिसे विचार करना चाहिये कि–क्षयमास के दिनोंमें दीवाली वगैरह वार्षिक वर्ष किये जातेहै उसी मुजबही श्रीतपगच्छके सबी महाशय करतेहैं इसलिये क्षय मासके दिनों की गिनती निषेधकरनेकातो किसीभी महाशय जीने कुछभी परिश्रम न किया । और पर्युषणामें तथा पर्यु-षणासंबंधी मासिक डेढमासिक तपश्चर्यादि कार्योमें अधिक मासके दिनों की गिनती प्रत्यक्षपने करते हुवेभी दूसरे गच्छ वालों से द्वेषबुद्धि रखके अधिक मासकी गिनती निषेध करनेके लिये उत्सूत्र भाषणोंसे कुयुक्तियोंका संग्रह करनेका श्रीतपगच्छके अनेक महाशयोंने खूबही परिश्रम कियाहै सो तो प्रत्यक्षपने स्वगच्छाग्रहके हठवाद का नमूनाहै सो इस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बातको इस ग्रन्थके पढनेवाले सज्जन स्वयं विचार लेवेंगे।

और अधिक मासको कालचूला कहते हुए भी नपुंसक लिखते हैं सोभी श्रीअनन्ततीर्थंकरगणधरादि महाराजोंकी आशातना करनेके बरोबरहै तथा विवाहादि मुहूर्तनैमित्तिक संसारिककार्योंके लियेभी उपरमेंही हर्षभूषणजीके लेखमेंसूचना करनेमें आगई हैं।

और बीशदिनकी बात पर्युषणाके सिवाय और कार्योंमें अधिकमासको प्रमाण करनेका नही दिखता है यह लिखना भी श्रीकुलमंडनसूरिजी का प्रत्यक्षमिथ्या है क्योंकि दिनों की पक्षोंकी मासोंकी गिनतीका कार्यमें,चौमासेके वर्षक युगके प्रमाणकी गिनतीका कार्यमें, क्षामणोंके कार्यमें, सामायिक प्रतिक्रमण पौषध देवपूजा उपवास शीलव्रतादि नियमोंका प्रत्याख्यानोंके गिनतीका कार्यों में चौमासी छमासी वर्षी तथा वीसस्थानकजीके और पर्युषणादि तप केदिनों की गिनतीके कार्योंमें और आगमोंके योग वहनादि कार्योंमें,अधिक मासके दिनोंकी गिनती को प्रमाण गिननेमें आतीहै सो तो प्रत्यक्ष अनुभव की प्रसिद्ध बात है। और एकजगह अधिकमासको कालचूलालिखते हैंदूसरी जगह नपुंसक लिखते हैं तथा एक-जगह श्रीबृहत्कल्पचूर्णि श्रीनिशीथचूर्णिकेपाठोंसे 'चेव' निश्चय अधिकमासको गिनतीकरनेका लिखते हैं दूसरी जगह नही गिननेका लिखते हैं इसतरहसे बालजीवोंको भ्रममें गेरनेवाले पूर्वापरविरोधि (विसंवादी) लेखलिखते कुछभीविचार न किया सोभी कलयुगीविद्वत्ताका नमूना हैं।

और आगे फिरभी जो जैन पंचाङ्गानुसार प्राचीन कालमें अभिवर्द्धितसम्वत्सरमें वीशदिने अर्थात् श्रावणशुदी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पंचमीको ज्ञात पर्युषणा वार्षिककृत्यादिपूर्वक करनेमें आती थी, उसीको वर्षाकालकी स्थितिरूप गृहस्थी लोगोंके आगे कहने मात्रही वार्षिककृत्योंरहित ठहरानेके लिये और अभिवर्द्धितमेंभी ५० दिने भाद्रपदमें वार्षिक कृत्यों सहित पर्युषणाको ठहरानेकेलिये चूर्णिकारादि महाराओंके अभिप्रायको समझे बिनाही उलटा विरुद्धार्थमें और अधिक मास संबंधी पूर्वापरकी सब व्याख्याके पाठोंको छोड़करके अधिकरण दोषोके तथा उपद्रवादिके संबंध वालेअधूरेपाठ लिखके फिर चंद्रसम्वत्सर में ५० दिन की तरह अभिवर्द्धितसंवत्सर में २० दिने ज्ञात पर्युषणा दिखाकरके ५० दिनकी ज्ञात पर्युषणामें तो वार्षिक कृत्य करनेको सिद्ध करतेहैं परंतु २० दिनकी ज्ञात पर्युषणाको अपनीमतिकल्पनासे गृहस्थी लोगोंके आगे वर्षास्थितिरूप ठहराकर वार्षिक कृत्योंको निषेध करतेहैं सो कदापि नहीं होसकताहै क्योंकि ५० दिनकी ज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्योंकी तरह २० दिनकी ज्ञात पर्युषणामें भी वार्षिक कृत्य शास्त्रानुसार तथा युक्तिपूर्वक स्वयं सिद्ध है इसका सविस्तार निर्णय तीनों महाशयोंके लेखोंकी समीक्षामें इसही ग्रन्थके पृष्ठ १०७ से ११७ तक अच्छी तरहसे छपगया है इस लिये जो श्रीकुलमंडन सूरिजीने २० दिनकी पर्युषणाको वार्षिक कृत्यों रहित ठहरानेके लिये मास वृद्धिके अभाव संबंधी पाठोंको मास वृद्धिहोती भी अधूरे अधूरे लिखके बाल जीवोंको दिखायेहै सो आत्मार्थिपनेका लक्षण नहींहै । सोते न्यायदृष्टिवाले सज्जन स्वयंविचार लेवेंगे ।

और अभिवर्द्धितमें बीश दिने ज्ञात पर्युषणा वार्षिक कृत्यों पूर्वक करनेसे । प्रथम चौथे वर्ष ११ । ११ मासे तथा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दूसरे पंचम वर्षे १३।१३ मासे और तीसरे वर्षे १२ मासें वार्षिक कृत्य होनेका दिखाकर पांच वर्षोंके ६० मास श्रीकुलमंडन सूरिजी लिखतेहैं सोतो श्रीअनंत तीर्थंकर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञाकोप्रत्यक्षपने उत्थापनकरके उत्सूत्रभाषण करनेवाले बनते हैं क्योंकि अभिवर्द्धितमें वीशदिने श्रावणमें पर्युषणा करनेसे जैनशास्त्रानुसारतो प्रथम चौथे वर्षे १३। १३ मासे और दूसरे तीसरे पंचमें वर्षे १२।१२ मासे वार्षिक कृत्य होनेका बनताहै और पांच वर्षोंके ६२ मास श्रीअनंत तीर्थंकर गणधरादि महाराजोंकी आज्ञानुसार जैनशास्त्रोंमें प्रसिद्धहै।

और मासवृद्धिसे तेरहमासहोतेभी १२ मासके क्षामणे लिखतेहैं सोभी अज्ञानताका सूचकहै क्योंकि मासवृद्धि होनेसे तेरहमास छवीशपक्षकेक्षामणे कियेजातेहैं इसका निर्णय सातवे म० ले० समीक्षामें इसही ग्रन्थ के पृष्ठ ३६३ से ३७८ तक छपगयाहै सो पढनेसे सब निर्णय होजावेगा।

और जैनशास्त्रोंमें मुख्य करके एकबातकी व्याख्या करतेहैं उसीकेही अनुसार यथोचित दूसरी बातोंके लियेभी समझा जाताहै इसलिये जिन जिन शास्त्रोंमें चंद्रसंवत्सर में ५० दिने तथा अभिवर्द्धित संवत्सरमें २० दिने ज्ञात पर्युषणा कही सो यावत् कार्तिक तक खुलासा लिखाहै जिसपर विवेक बुद्धिसे विचार किया जावेतो जैसे चंद्रसंवत्सरमें ५० दिन जहां पूरे होवे वहां स्वभावसेही भाद्रपद समजतेहैं तैसेही अभिवर्द्धित संवत्सरमें २० दिन जहां पूरे होवे वहां भी स्वभाविक रीतिसे श्रावण समजना चाहिये। और चार मासके १२० दिनका वर्षा कालमें ५० दिने पर्युषणा करनेसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पिछाडी कार्तिक तक ७० दिन स्वभावसेही रहतेहै तैसेही २० दिने पर्युषणा करनेसे भी पिछाडी कार्तिक तक १०० दिनभी स्वयं समझना चाहिये तथापि चंद्र संवत्सरमें भाद्रपदकी तरह अभिवर्द्धित संवत्सरमें श्रावणमें पर्युषणा करनेका तथा पर्युषणाके पिछाडी ७० दिनकी तरह १०० दिन रहनेका कहां कहा है, ऐसी प्रत्यक्ष अज्ञानताकी सूचक कुयुक्ति करके बाल जीवोंको भ्रमानेसे कर्म बंधके सिवाय और कुछभी लाभ नहीं होने वालाहै । क्योंकि जिन जिन शास्त्रों में चंद्रसंवत्सरमें५० दिने भाद्रपदमें पर्युषणाकरके पिछाडी ७० दिन कार्तिक तकका लिखाहै और अभिवर्द्धितमें २० दिने पर्युषणा करनेका भी लिखदियाहै उसी शास्त्र पाठोंके भावार्थ से अभिवर्द्धितमें २० दिने श्रावणमें पर्युषणा करनेका और पर्युषणा के पिछाडी १०० दिन रहनेका स्वयं सिद्धहै सोतो अल्प मतिवालेभी समझसकते हैं ।

और फिरभी २० दिनकी ज्ञात तथा निश्चय और प्रसिद्ध पर्युषणामें वार्षिक कृत्यों का निषेध करनेके लिये आषाढ पूर्णिमाकी अज्ञात तथा अनिश्चय और अप्रसिद्ध पर्युषणामें वार्षिककृत्यकरनेका दिखातेहै सोभी अज्ञानताकासूचकहै क्यों कि वर्षकी पूरतीहुये बिना तथा अज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्य कदापि नहीं होसकते हैं किन्तु वर्षकी पूर्तिहोनेसे ज्ञात पर्युषणामें वार्षिक कृत्य होते हैं और अधिक मास होनेसे श्रावणमें १२ मासिक वर्ष पूरा होजाता है इसीलिये श्रावणमें ज्ञातपर्युषणा करके वार्षिक कृत्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादिक कार्य करनेमें आते हैं ।

और मासवृद्धि होतेभी भाद्रपदमें पर्युषणा स्थापन करने के लिये श्रीजीवाभिगमजी सूत्रका एकपदमात्र लिखदिखाया

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सोतो अपनी विद्वात्ताकी हासी कराने जैसा कियाहै क्योंकि वहांतो श्रीनन्दीश्वरद्वीपाधिकारे जिन चैत्योंकी व्याख्या करके वहां चौमासीमें तथा संवत्सरीमें और श्रीजिनेश्वर भगवानूके जन्मादि कल्याणकोंमें भुवनपति वगैरह बहुत देवोंको अठाई उच्छव करनेका लिखाहै परन्तु वहां भाद्रपदकातो नाममात्र भी नहींहै सो सूत्र वृत्ति सहित छपाहुवा श्रीजीवाभिगमजीके पृष्ठ ८४३ में खुलासा पूर्वक अधिकारहै इस लिये ऐसे ऐसे पाठोंको लिखके बाल जीवोंको भ्रममें गेरनेसे तो अपने कल्पित बातकी पुष्टि कदापि नहीं हो सकतीहै सो विवेकी पाठक गणभी स्वयं विचार सकतेहैं।

और श्रीकुलमंडन सूरिजीके उपरोक्त लेखके अनुसार ही धर्मसागरजीनेभी तस्करवृत्ति करके धर्म धूर्ताईसे निजको तथा गच्छ कदाग्रही बालजीवोंको दुर्लभबोधिका कारण करनेके लिये 'तत्वतरंगिणी' ग्रन्थका नाम रखके वास्तविक में 'कुयुक्तियोंकी भ्रमजाल' बनाकर उसीमें पर्युषणा संबंधी मिथ्यात्वका कारणरूप जो लेख लिखा है जिसका निर्णय तथा 'प्रवचनपरिक्षा' नामक ग्रन्थमेंभी उत्सूत्र भाषणोंके संग्रहसे कुयुक्तियों करके पर्युषणा संबंधीजो लेख लिखा है जिसका निर्णय तो ऊपरके लेखको तथा इस ग्रन्थको विवेक बुद्धिसे पढ़नेवाले तत्वज्ञ पुरुष स्वयंही समझ लेवेंगे:—

अब पाठकगणको मेरा इतनाही कहना है कि—श्रीजैन शास्त्रोंमें अधिक मासको कालचूलाकी जो उत्तम ओपमा देते हैं उसीके दिनोकी गिनती करनेमें आती है तथा लौकिक शास्त्रानुसार और प्रत्यक्ष पने बर्तावकी सत्ययुक्तियोंके अनुसार करकेभी अधिकमासके दिनोकी गिनती क-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रनेमें आतीहै जिसका विस्तार पूर्वक इस ग्रन्थमें छपगया है इसलिये कालचूला वगैरहके बहाने करके कुयुक्तियों से उसीके दिनो की गिनती निषेध करने वाले श्रीजिनेश्वर भगवानकी आज्ञाके लोपी उत्सूत्रभाषक बनते हैं, सो तो इस ग्रन्थको पढ़ने वाले तत्वज्ञ स्वयं विचार सकते हैं इसलिये श्रीजिनेश्वरभगवान्की आज्ञाके आराधन करनेकी इच्छावाले जो आत्मार्थी सज्जन होवेंगे सो तो अधिकमासके दिनोंकी गिनती निषेध करनेका संसारवृद्धिका हेतुभूत उत्सूत्र भाषणका साहस कदापि नहीं करेंगे, और भव्यजीवोंको इस ग्रन्थको पढ़ करके भी अधिकमासके निषेध करने वालोंका पक्ष ग्रहण करके अभिनिवेशिक मिथ्यात्वसे बालजीवोंको कुयुक्तियोंके भ्रममें गेरनेका कार्य करनाभी उचित नही है और गच्छका पक्षपात छोड़कर न्याय दृष्टिसे इस ग्रन्थका अवलोकन करके अधिकमासके दिनोकी गिनती पूर्वकही पर्युषणादि धर्म व्यवहारमें वर्ताव करना सोही सम्यक्त्वधारी आत्मार्थियोंको परम उचित है इतनेपरभी जो कोई अपने अन्तर मिथ्यात्व के जोरसे अज्ञ जीवोंको भ्रमानेके लिये अधिक मासकी गिनती निषेध संबंधी कुयुक्तियोंका संग्रह करके पूर्वापरका विचार किये बिनाही मिथ्यात्वका कार्य करेगा तो उसीका निवारण करनेके लिये और भव्य जीवोंके उपकारके लिये इस ग्रन्थ कारकी लेखनी तैयारही समझना।

अब पर्युषणासंबंधी लेखकी समाप्तिके अवसरमें पाठक गणको मेरा इतनाही कहना है कि-श्रीतपगच्छके विद्वान् कहलाते जोजोमहाशयजी श्रीअनंततीर्थंकर गणधरादि महाराजोंके विरुद्धार्थमें पंचांगीके अनेक प्रमाणोंको प्रत्यक्षपने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्थापनकरके उत्सूत्रभाषणोंसे कुयुक्तियोंके संग्रह पूर्वक अधिकमासको कालचूला वगैरहके बहानेसे निषेधकरने संबंधी-कल्पकिरणावली तथा सुखबोधिकावृत्तिवगैरहके लेखोंको हरवर्षश्रीपर्युषणापर्वके दिनोंमें बांचतेहैं जिसको गच्छकदाग्रही पक्षपाती अज्ञजीव श्रद्धापूर्वक सत्यमानतेहैं ऐसे उपदेशक तथा श्रोता श्रीजिनाज्ञाके आराधक पंचांगीकी श्रद्धावाले सम्यक्त्वी आत्मार्थी हैं ऐसा कोइभी विवेकीतत्वज्ञ तो नही कहसकेगे। क्योंकि श्रीअनंत तीर्थंकर गणधरादि महाराजोंका प्रमाण कियाहुवा कालचूलाकी श्रेष्ठ ओपमा वाला अधिकमासको निषेधकरने वालोंमें प्रत्यक्षपने श्रीजिनज्ञाका विराधकपना होनेसे मिथ्यात्वसिद्ध होताहै सो तत्वज्ञ स्वयं विचार सकतेहैं। इसलिये मिथ्यात्वसे संसारमें परिभ्रमण करनेका भय करने वाले तथा श्रीजिनाज्ञामुजब वर्तनेकी इच्छा करने वाले विवेकियोंको तो श्रीजिनज्ञा विरुद्ध उपरोक्त कार्य करना तथा उसी मुजब श्रद्धा रखना उचित नही है किंतु श्रीजिनाज्ञामुजब पर्युषणाके व्याख्यान सुनने वाले भव्यजीवोंके आगे अधिक मासकी गिनती करनेका शास्त्र प्रमाणपूर्वक सिद्धकरके दूसरे श्रावणमें वा प्रथम भाद्रपदमें श्रीपर्युषणा पर्वका आराधन करना तथा दूसरोंसे करना सोही आत्महितकारीहै सो तत्वदृष्टिसे विचारना चाहियेः—

इति अधिक मासके निषेधक उत्सूत्र भाषी कुयुक्तियों करनेवाले सातवें महाशयजी वगैरहोंके पर्युषणा सम्बन्धि अज्ञ जीवोंको मिथ्यात्वमें गेरनेके लेखोंकी संक्षिप्त समीक्षा समाप्त ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com